Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यह पञ्चांग भारत सरकार से रजिस्टर्ड हो चुका है। अतः कोई महाशय इसके किसी भी अंश की नकल का साहस न करें। रजिस्टर्ड नं० ७९२४४३

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ज्योतिष ज्ञान प्रचारार्थ आर्य संस्कृति पोषके

श्री आर्यभट्ट पंचांगम् विद्वद् वृन्द समर्पिते

ॐ ह्रीं महासरस्वत्यै नमः

ॐ श्री सरस्वत्यैमया दृष्ट्वा वीणापुस्तक धारिणी।
हंसयुक्त विमानूढा विद्या दान ददातु मे।।

राजा शनि

मन्त्री शनि

श्री आर्यभट्ट पञ्चांगम् नई दिल्ली

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री लक्ष्मीनारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति

भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र के प्रधानाचार्य

श्री आर्यभट्ट-पञ्चांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५९ शकः- १९२४ सन्-२००२-२००३ भारतीय गणराज्य संवत् ५३-५४

प्रधान सम्पादक : पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य

सम्पादकः धर्मपाल अग्रवाल, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

धर्मसन प्रकाशन नई सड़क दिल्ली-११०००६

मूल्यः 30.00

वर्ष १७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

२ खण्डों में लगभग १२०० पृष्ठों के लिए लागत मूल्य मात्र १५००/- रु. है। १९४२ तथा १९५३ दो भाग हैं। पुस्तक की फोटो प्रति भेजी जायेगी। अतएव आज ही ५०० रु. भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करायें। डाक व्यय अलग से है।
Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
प्राप्ति स्थान: धर्मसन प्रकाशन २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : ...

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पंचांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५९ शकः- १९२४ सन्-२००२-२००३ भारतीय गणराज्य संवत् ५३-५४

वैदिक समाज,
वेदविद्यालय संगम विहार, नजफगढ़,
नई दिल्ली-११००४३

—प्रधान सम्पादक —
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली-२८

सम्पादकः—
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू
मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
नाथ पुस्तक भंडार दूरभाष 3275344
194, दरीबा कलां, दिल्ली 110006

धर्मसन प्रकाशन
प्रकाशक : नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुर्लभ लाल किताब

उर्दू भाषा में छपी असली १९४२ तथा १९५२ के प्राचीन दुर्लभ ग्रन्थों का हुबहू

(उर्दू शब्दों में और हिन्दी लिपि में फोटो कापी)

यह ग्रन्थ जिसका अधिकांश भाग हस्त लिखित

बीमारी का बगैर दवाई भी इलाज है,
मगर मौत का कोई इलाज नहीं-
दुनियावी हिसाब-किताब है
कोई दावा-ए-खुदाई नहीं।

Astrology based on Palmistry

ज्योतिष की
मदद से हाथरेखा के जरिये दुरुस्त
की हुई जन्म कुंडली से जिंदगी
के हालात देखने के लिए

लाल किताब

१९४२ तथा १९५२

शर्मा गिरधारी लाल

साकिन फरवाला, डाकखाना नूरमहल
जिला जालन्धर

यह ग्रन्थ २ (दो) और ३ (तीन) भागों में केवल हमारे पास ही उपलब्ध है

उत्तरी और पश्चिमी भारत के साथ ही पाकिस्तान-अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों में भी बेहद मशहूर, प्रामाणिक और लोकप्रिय ग्रंथ जो अब दुर्लभ हो चुका है--अपने असली रूप में हमारे पास उपलब्ध है।

इस ग्रन्थ की विशेषता यह है कि प्राचीन भारतीय ऋषियों के मूलभूत ज्योतिष सिद्धान्तों और अरबी ज्योतिष के नवीन अनुसन्धानों का समीकरण करके इसमें ज्योतिष की ऐसी सहज-सरल विधि बताई गई है, जिसके आधार पर ज्योतिष का साधारण जानकार भी चमत्कारी फलादेश कर सकता है। साथ ही जन्म-कुण्डली की ग्रह स्थिति का हस्त रेखाओं के साथ मिलान करने की विधि इसकी निजी विशेषता है, जो संसार के किसी दूसरे ग्रन्थ में नहीं पाई जाती। जिनकी जन्म-कुण्डली नहीं है या गलत है, उनके मकान की कुण्डली बनाकर ग्रह-स्थिति और उसके फलित का मिलान करने की विधि इसकी दूसरी अनोखी विशेषता है। इसमें वर्ष कुण्डली बनाने और वर्षफल निकालने की एक ऐसी सरल अनोखी विधि बताई गई है, जिससे १० मिनट में किसी भी वर्ष की कुण्डली और फलित निकाला जा सकता है-अर्थात् लम्बे-चौड़े गणित की कोई आवश्यकता नहीं रही।

इस बेजोड़ ग्रन्थ की विशेषताएं अनेक हैं, जो आप स्वयं पढ़कर और आजमाकर ही जान सकते है। इसलिए इसके सम्पादन और मुद्रण के बजाए मूल रूप में फोटो स्टेट करवा कर आपको उपलब्ध कराने की व्यवस्था हमने की है। लगभग ३ खण्डों में १७०० पृष्ठों के लिए लागत मात्र मूल्य १८००/- रु. और लगभग २ खण्डों में १२०० पृष्ठों के लिए लागत मात्र मूल्य १५००/- रु., में यह प्राचीन दुर्लभ सम्पूर्ण ग्रन्थ रत्न २ या ३ खण्डों में प्राप्त करने का सुनहरा अवसर आप छोड़ना नहीं चाहेंगे, अतः आज ही अपना अग्रिम आदेश भेजें।

इसका हिन्दी अनुवाद और तुलनात्मक अनुसंधान विद्वान् ज्योतिषियों द्वारा नए रूप-रंग में तैयार किया है। तीन खण्डों में लगभग १७०० पृष्ठों के लिए लागत मूल्य मात्र १८००/- रु. और २ खण्डों में लगभग १२०० पृष्ठों के लिए लागत मूल्य मात्र १५००/- रु. है। १९४२ तथा १९५२ दो भाग हैं। पुस्तक की फोटो प्रति भेजी जायेगी। अतएव आज ही ५०० रु. भेजकर अपनी प्रति सुरक्षित करायें। डाक व्यय अलग से है।

प्राप्ति स्थान: धर्मसन प्रकाशन

Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री आर्यभट्ट-पञ्चाङ्गम् नई दिल्ली

श्री आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र दिल्ली
द्वारा प्रणीत तथा सम्मानित

श्री आर्यभट्ट-पंचांगम्

श्री विक्रम सम्वत्-२०५९ शकः- १९२४ सन्-२००२-२००३ भारतीय गणराज्य संवत् ५३-५४

वैदिक समाज,
वेदविद्यालय संगम विहार, नजफगढ़,
नई दिल्ली-११००४३

— प्रधान सम्पादक —
पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा ज्योतिष वाचस्पति
बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न प्रधानाचार्य
भारतीय ज्योतिष विद्या केन्द्र, नई दिल्ली-२८

— सम्पादकः —
धर्मपाल अग्रवाल
आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र, २/४५-ए, वैस्ट ऐवन्यू
मार्ग, पंजाबी बाग, नई दिल्ली-२६

पाठ व ज्योतिष पुस्तकों के लिए
नाथ पुस्तक भंडार दूरभाष 3275344
194, दरीबा कलां, दिल्ली 110006

धर्मसन प्रकाशन
प्रकाशक : नई सड़क, दिल्ली-110006 दूरभाष : 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

विषय सूची

विषय | पृष्ठ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥ आर्यभट्ट पंचांग देखने की विधि ॥

१. हमारे "आर्यभट्ट पंचांग" का निर्माण ग्रीनविच (ब्रिटेन) से उत्तर अक्षांश २८°।३८' एवं पूर्व रेखांश ७७°।१२' के आधार पर किया गया है। अतएव इस पंचांग में निर्णीत सूर्योदयास्त भी पूर्वोक्त अक्षांशादि वाले स्थान अर्थात् दिल्ली शहर के हैं।

२. 'आर्यभट्ट पंचांग' के गणित में प्राचीन ज्योतिर्विदों द्वारा प्रमाणित तथा भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त 'सूक्ष्म दृक्गणित' एवं चित्रा पक्षीय 'निरयणपद्धति' को ही अपनाया गया है।

३. पक्षवाले सभी पृष्ठों पर दैनिक सूर्योदय और सूर्यास्त भारतीय समयानुसार दिल्ली शहर के हैं। सूर्योदयास्त में किरण-वक्री-भवन संस्कार के कारण वास्तविक क्षितिज वृत्त के उदयास्त में अन्तर आना स्वाभाविक है। अत: प्रत्यक्ष देखने के लिए सूर्योदय में दो मिनट ऋण (-) तथा सूर्यास्त में दो मिनट योग (+) करने की आवश्यकता है।

४. इस पंचाङ्ग में करण सूर्योदय कालीन दिए गए हैं। अग्रिम करण उससे आगे वर्तमान तिथि के अर्धभाग तक जानें।

५. सूर्य, चन्द्रादि ग्रहों का राश्यादि संचार एवं भद्रा-पंचक, ग्रहों के उदय-अस्त, वक्र मार्गी आदि भा. स्टे. टा. में है। जो भारत में सर्वत्र उसी टाइम में होंगे। यह इस पंचांग की विशेषता है।

६. महीनों में अष्टमी-पूर्णिमा एवं अमावस्या के ग्रह स्पष्टों के राश्यादि स्टे.टा. प्रात: ५ घं. ३० मि. के हैं। नीचे उस दिन की गति और वक्री-मार्गी उदय-अस्त व ग्रहों के नक्षत्र चरण दिये हैं। यह स्पष्टों के साथ कुंडली भी उपरोक्त समय की है।

७. लस्टर में A.B.C.D. * आदि चिन्ह दिए गए हैं, उनका मतलब यह है कि मेटर उस लाईन में नहीं आ सका जो चिन्ह यहां लगाया वैसा ही चिन्ह कहीं दूसरी लाइन में लगाकर शेष मैटर लिखा है। नीचे लिखी संकेतवाली को पंचाङ्ग देखने में काम लेने से सम्पूर्ण विषय समझ में आजावेंगे।

८. वार, तिथि, नक्षत्र, योग तथा करणों के साथ सामने दिये गये घटी पल, उनका समाप्तिकाल दर्शाते हैं जोकि स्थानीय सूर्योदय के उपरान्त से माना जाये। उन घटी पलों के घण्टा मिनट बनाकर उसमें पंचांग के स्थानीय सूर्योदय के घण्टा मिनट जोड़ देने से तिथि, नक्षत्र, योगादि का समाप्ति काल भारतीय स्टैंडर्ड टाइम में ज्ञात हो जायेगा।

९. पाठकों की सुविधा के लिए तिथि नक्षत्रादि के घटी पलों के समाप्ति काल (सूर्योदय संस्कार करके) घण्टा मिनट में भी दे दिये गये हैं जिससे तिथि नक्षत्रादि के समाप्तिकाल को घण्टा मिनट में जानने के लिए कोई परेशानी नहीं हो रही है। सीधे ही तिथ्यादि का समाप्ति काल घंटे मिनट में पढ़ा जा सकता है। जहां २४ लिखा हो वह रात्रि के ठीक १२ बजे समझे जायें। जहां २७।१८ लिखा हो वहां २७ में से २४ घटाकर रात्रि के ३ बजकर १८ मिनट समझे जायें। यह समय भारतीय ज्योतिष परम्परानुसार सूर्योदय से पहले तक पूर्व तिथि में ही माना जायेगा।

१०. पक्षवाले पृष्ठों पर शुक्ल पक्ष में तिथि के कालम में १५ को पूर्णमासी तथा कृष्णपक्ष में ३० को अमावस समझा जाये। शुक्ल पक्ष को सुदी, कृष्ण पक्ष को वदी भी कहते हैं।

११. रा.मि. पहले कॉलम में दी गई हैं। दिनमान घटी-पलों में दिया गया है। करणों के कालम के पश्चात् दि.मा.घ.प. में दिए गए हैं। उसके पश्चात् सूर्योदयास्त, प्रतिष्ठा, मु. तारीखें फिर अंग्रेजी तारीखें अंग्रेजी अंकों में लिखी हैं।

१२. दैनिक ग्रह स्पष्ट भा.स्टे.टा. प्रात: ५-३० बजे (दिल्ली) के दिए गए हैं। और लग्न का समाप्तिकाल लिखा गया है। अपने अभीष्ट समय पर उनको ग्रह की दैनिक गति का संस्कार त्रैराशिक विधि से करके मार्गी ग्रह में युक्त करने, वक्रीग्रह में से घटाने से इष्ट समय के ग्रह स्पष्ट हो जाते हैं।

१३. तिथि के क्षय के आगे (पक्ष वाले पृष्ठों में) शून्य ० चिन्ह लगाया गया है। तिथि, नक्षत्रादि के आगे ६०-०० घटी लिखा है उस तिथि नक्षत्रादि की वृद्धि समझें।

पंचांग में लिखे शब्दों की संकेतावली (अकारादि क्रम से)

अ. = अश्विनी (नक्षत्र), अतिगंड (योग), अग्नि (पंचक), अगस्त, अप्रैल (मास), अक्टूबर
अनु. = अनुराधा (नक्षत्र)
आ. = आर्द्रा न., आयुष्मान् यो., आपा., आश्विन
अं. = अंश, अंग्रेजी (मास तारीख)
उ. = उदय, उपरान्त
उ.फा. = उत्तरा फाल्गुनी (नक्षत्र)
उ.षा. = उत्तराषाढ़ा (नक्षत्र)
उ.भा. = उत्तरा भाद्रपदा (नक्षत्र)
ऐं. = ऐन्द्र (योग)
क. = कर्क, कन्या (राशि), कला
का. = कार्तिक (मास)
क्रांति सा. = साम्य (महापात)
कृ. = कृत्तिका (नक्षत्र), कृष्ण पक्ष
कुं. = कुंभ (राशि),
गु. = गुरु (वार), गुरु ग्रह
गु.दा. = गुरु दान से
गो. = गोधूलि (लग्न)
गं. = गंड (योग)
घ. = घटी
घं. = घन्टा
चि. = चित्रा (नक्षत्र)
चै. = चैत्र (मास)
चौ. = चौर (पंचक)
चं. = चन्द्र (सोमवार), चन्द्र ग्रह
ज. = जयन्ती, जनवरी (मास)
ज. = जून (मास)
जु. = जुलाई (मास)
ज्ये. = ज्येष्ठ (मास), ज्येष्ठा (नक्षत्र)
ता. = तारीख
तु. = तुला (राशि)
दि. ल. = दिन में लग्न
ध. = धनु (राशि) धनिष्ठा (नक्षत्र)
धूलिमु. = धूमिमुख (अन्यगोधूलि) लग्न
ध्रु. = ध्रुव (योग)
धृ. = धृति (योग)
नि. = निम्बार्क (संप्रदाय)
नृ. = नृप (पंचक)
प. = परिघ (योग), पल
प्र. = प्रवेश
प्रा. = प्रारम्भ
प्री. = प्रीति (योग)
पु. = पुष्य (नक्षत्र)
पुन. = पुनर्वसु (नक्षत्र)
पू.फा. = पूर्वा फाल्गुनी (नक्षत्र)
पू.षा. = पूर्वाषाढ़ा (नक्षत्र)
पू.भा. = पूर्वाभाद्रपदा (नक्षत्र)
फाल्गु. = फाल्गुन (मास)
ब्र. = ब्रह्म (योग)
वृ. = वृद्धि (योग)
बु. = बुध (वार), बुध ग्रह
भ. = भरणी (नक्षत्र), भद्रा
भाद्र. = भाद्रपद (मास)
म. = मघा (नक्षत्र), मकर (राशि), मई (मास),
मा. = मार्गशीर्ष, माघ, मार्च (मास)
मि. = मिनट, मिथुन राशि (लग्न), मिति
मी. = मीन (राशि)
मु. = मुहूर्त
मू. = मूल (नक्षत्र)
मे. = मेष (राशि) लग्न
मृ. = मृगशिर (नक्षत्र), मृत्यु (पंचक)
र. = रवि (वार), रवि (ग्रह)
रा. = राहु (ग्रह), राष्ट्रीय, राशि
रे. = रेवती (नक्षत्र)
रो. = रोहणी (नक्षत्र), रोग (पंचक)
ल = लग्न
व. = वज्र, वरियान् यो., वाणिज क., वक्र गति
व्र. = व्रत
व्य. = व्यतिपात (योग)
वृ. = वृद्धि (योग), वृष, वृश्चिक (राशि)
व्या. = व्याघात (योग)
वि. = विशा. (नक्षत्र), विष्कुंभ (योग), विकला
वि. मु. = विवाह मुहूर्त
वै. = वैष्णव संप्र., वैधृति यो., वैशाख मास
श. = शनिवार, शनिग्रह, शतभिषा (नक्षत्र)
शि = शिव (योग)
शु. = शुक्रवार, शुक्र ग्रह, शुभ, शुक्ल (योग), शुक्ल (पक्ष)
श्रा. = श्रावण (मास)
सा. = साध्य (योग)
स्वा. = स्वाती (नक्षत्र)
स्मा. = स्मार्त (संप्रदाय)
सि. = सिद्धि (योग), सितम्बर (मास)
सिं. = सिंह (राशि)
सु. = सुकर्मा (योग)
सौ. = सौभाग्य (योग)
ह. = हस्त (नक्षत्र), हर्षण (योग)
हि. = हिन्दी (मास-तारीख)

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वक्तव्य

श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना सन् १९८३ में हुई और भारत सरकार से इसका पंजीकरण भी यथाविधि हो चुका है। इसका उद्देश्य भारत की प्राचीन विद्याओं, ज्योतिष गणित, सामुद्रिक शास्त्र, हस्तरेखा विज्ञान, अंक ज्योतिष, रमल ज्योतिष, यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र शास्त्र, स्वरोदय, राजयोग आदि का प्रचार-प्रसार करना है। पहले इन विद्याओं को राज्याश्रय प्राप्त था और हिन्दू राजाओं के राज्य काल में इनकी बहुत उन्नति हुई। परन्तु इस्लामी तथा ईसाई धर्मावलम्बी शासन में हमारी प्राचीन संस्कृति का उत्थान तो क्या उत्तरी भारत में प्राचीन ग्रन्थों तथा इनके आश्रय स्थलों का बलात् संहार किया गया। इसके ज्ञाता विद्वानों की संख्या में दिनोदिन कमी होती गई और विदेशी प्रभाव के फलस्वरूप देशी लोगों का इन विद्याओं पर विश्वास कम होता गया। इसमें स्वार्थी ठग व अज्ञानी ज्योतिषियों के व्यवहार ने भी जनता के मानस में इन विद्याओं के प्रति अविश्वास तथा अरुचि की ही वृद्धि की।

स्वाधीनता प्राप्ति के बाद धर्म निरपेक्ष संविधान के अन्तर्गत अन्य धर्मों तथा संस्कृतियों के समान हमको अपने प्राचीन लुप्त गौरव संस्कृति तथा महान् विद्याओं को फिर से उजागर करने की स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। विशेष रूप से जब विदेशी विद्वानों ने हमारे वेद, पुराण, शास्त्रों, उपनिषदों आदि के अध्ययन के पश्चात् हमारी विद्याओं, कलाओं और दर्शन आदि को प्रकाशित तथा प्रशंशित किया तब हमारे देश वासियों को भी अपने यथार्थ का ज्ञान हुआ और हम भी इनकी खोज, अनुसन्धान, प्रचार-प्रसार की ओर अधिक आकर्षित हुये। इस युग के महापुरुष श्री राम कृष्ण परमहंस देव के जीवन दर्शन को मैक्समूलर तथा रोमारोलां जैसे प्रख्यात विदेशी विद्वानों ने विश्व के समक्ष प्रस्तुत किया। परमहंस देव के योग्य शिष्य स्वनाम धन्य स्वामी विवेकानन्द जी ने संयुक्त राज्य अमरीका के शिकागो नगर में विश्व धर्म सम्मेलन में हिन्दू धर्म की विजय पताका फहराई। स्वामी विवेकानन्द जी ने अमरीका, ब्रिटेन, योरोप आदि देशों में घूम-घूम कर हिन्दू धर्म का यथाशक्ति प्रचार किया। तदुपरान्त स्वामी रामतीर्थ जी ने भी विदेशों में यथाशक्ति प्रचार-प्रसार किया। इन महापुरुषों द्वारा स्थापित प्रचार केन्द्र देश-विदेश में आज तक अपना कार्य कर रहे हैं और इनके बताये मार्ग पर चलते हुए प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। उसके बाद तो अनेकों सन्त महापुरुषों तथा योगियों ने इसी मार्ग का अवलम्बन किया। इन सब प्रयासों के फलस्वरूप देश-विदेश में जन मानस में अपनी प्राचीन विद्याओं के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न हुई।

इस समय अपने देश में बहुत सी संस्थायें हैं जो देश के प्राचीन गौरव, संस्कृति, कला कौशल ताथा लुप्त विद्याओं के पुनरुत्थान तथा प्रचार-प्रसार में लगी हुई हैं। ज्योतिष विद्या हमारी प्राचीन विद्याओं में एक मुख्य विद्या है। वैदिक काल से यह चली आ रही है। यह हमारा दुर्भाग्य ही है कि न तो इसे राज्य से कोई संरक्षण या प्रोत्साहन प्राप्त है और न देश के सम्पन्न वर्ग का सहयोग ही। फिर भी कुछ उत्साही जन अपने सीमित साधनों से इसको अपना उचित स्थान दिलाने के प्रयास में लगे हुए हैं। उत्तर भारत पर विदेशी बर्बर जातियों के लगातार आक्रमणों के फलस्वरूप हमारे बहुत से मठ, मन्दिरों, पूजा स्थानों के साथ-साथ बहुत से अमूल्य हस्तलिखित ग्रन्थ नष्ट हो गये। विदेशी प्रभाव से धर्म परिवर्तन से बचे लोगों के मानस पर अपने धर्म ग्रन्थों तथा प्राचीन विद्याओं की ओर रुचि नहीं रही। इस कारणण उत्तर भारत में इस विद्या का सब से अधिक ह्रास हुआ। जबकि दक्षिण भारत में धर्म साहित्य तथा प्राचीन विद्याओं का ज्ञान भण्डार अभी भी बहुत अंशों में सुरक्षित है। उस भू-भाग के कतिपय विद्वान् प्राचीन ग्रंथों को अंग्रेजी भाषा के माध्यम से प्रचारित व प्रसारित करने के प्रयत्नों में लगे हुए हैं। उत्तर भारत में विशेष रूप से हिन्दी भाषी जनता को इन विद्याओं का ज्ञान कराने की बहुत आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए देश के केन्द्र राजधानी दिल्ली में कुछ उत्साही जिज्ञासुओं ने आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र को पंजीकृत कराया है। इस केन्द्र ने ज्योतिष प्रेमी सज्जनों के लिये अत्यन्त उपयोगी ग्रन्थ **''शतक मार्त्तण्ड''** का सम्पादन व प्रकाशन करवाया है।

ज्योतिष शास्त्र आज जिस स्थान पर है, उसको इस स्तर तक पहुंचने में सैकड़ों वर्ष लगे हैं। समय-समय पर जिन विद्वानों ने नई खोजों, आविष्कारों तथा गणित के नियमों द्वारा इसकी प्रगति में सहयोग किया है उनका नाम ज्योतिष इतिहास में सदा अमर रहेगा। ऐसे ही एक महापुरुष ज्योतिष शास्त्र के परम ज्ञाता श्री आर्यभट्ट थे, जिनका जन्म ४७६ ई. में हुआ था। उन्होंने ज्योतिष का प्रसिद्ध ग्रन्थ ''आर्य भटीय'' कुसुमपुर (पटना) में लिखा। इसमें सूर्य और तारागणों के स्थिर होने और पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन है। सूर्य और चन्द्र ग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या है। स्वर और व्यञ्जनों की सहायता से बड़ी-बड़ी संख्याओं की गणना करने की रीति बनाई है। वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल आदि गणित विद्याओं का वर्णन सर्व प्रथम इसी ग्रन्थ में मिलता है। इन्हीं महापुरुष के नाम पर **''आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र''** का नाम रखा गया है। आशा है इनके नाम से प्रोत्साहन पाकर अर्वाचीन विद्वान नये-नये प्रयोग व आविष्कार करने में सफल होंगे।

''शतक मार्त्तण्ड'' जैसे उपयोगी ग्रन्थ का प्रकाशन करने के बाद एक ऐसे पंचांग के प्रकाशन का निर्णय लिया गया जिसमें ज्योतिषियों के लिए उपयोगी अधिक से अधिक विषय सरल सुलभ भाषा में समाविष्ट किये जा सकें। अतः हमने ''श्री आर्यभट्ट पंचांग'' ज्योतिषियों के लाभार्थ सम्पादन तथा प्रकाशन आरम्भ किया। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों तथा विद्वानों से हमारा विनम्र निवेदन है कि वे त्रुटियों के लिये क्षमा प्रदान करते हुए अपने सुझाव तथा परामर्शों द्वारा प्रोत्साहन प्रदान करेंगे ताकि अगले अंक में अधिक से अधिक परम उपयोगी विषयों का समावेश किया जा सके।

–सम्पादक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनमत

"श्री आर्यभट् पंचांग" के सम्बन्ध में ज्योतिषाचार्यों, विद्वानों तथा ज्योषि प्रेमी सज्जनों के अनेकों पत्र पंचांग के सम्पादक, व्यवस्थापक, प्रकाशक तथा अनुसंधान केन्द्रों को प्राप्त हुए। हम उन सभी महानुभावों को उनके आशीर्वचनों, शुभकामनाओं, प्रशस्ति वाक्यें तथा उपयोगी परामर्शों के लिए हार्दिक धन्यवाद समर्पित करते हैं। आपके अधिकांश सुझावों को हमने इस वर्ष के पंचांग में सम्मिलित कर दिया है और हमारा यह प्रयास रहेगा कि पाठकों के उपयोगी सुझावों को यथाशक्ति कार्यरूप में परिणित किया जाये। हमारे पास आए पत्रों के अंश आपकी सूचना के लिए हम यहां उद्धृत कर रहे हैं:—

❖ **डॉ. बी. एन. जोशी, जोशी औषधालय, सदर बाजार, रोपड़ (पं.) से-** श्री आर्यभट्ट पंचांग में देखा, उसकी सूक्ष्म गणित व सारगर्भित करते देख मन अति प्रसन्न हुआ। वास्तव में आप प्रशंसा व सम्मान के पात्र है।

❖ **के.सी. शर्मा, अनाज मंडी, शाहदरा, दिल्ली से-** यह पंचांग भी अति सूक्ष्म अति सुन्दर एवं अति आवश्यक है। मेरे विचार से यह लघु पंचांग भी जनता के लिए अति उपयोगी है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश, ग्राम कालेवाला, मुरादाबाद (उ.प्र.) से-**पंचांग की जो सामग्री है वह अत्यन्त प्रिय है। पंचांग दिवाकर का मुकाबला आपके इस आर्यभट्ट पंचांग ने ही किया है। हम तो यही कहेंगे कि भगवान् आपके इस कार्यक्षेत्र को और आगे बढ़ाए।

❖ **पं. लेखराज द्विवेदी, जोधपुर (राज.) से-** वास्तव में आर्यभट्ट पंचांग तारीफ के योग्य है। इसमें आपने सभी पूर्णताएं भर दी हैं। सभी तरह के वर्गों के लिए पंचांग संग्रहणीय है।

❖ **आचार्य हर्षवर्धन मधुर (प्रवक्ता), हिन्दी आदर्श संस्कृत महाविद्यालय जांगला-शिमला से-** आप द्वारा रचित आर्यभट्ट पंचांग अध्ययन किया जो कि ज्योतिष कार्य के लिए विशेष लाभप्रद है।

❖ **शुभ कर्ण ज्योतिषी अरुण ज्योतिष कार्यालय, तिलक नगर, नई दिल्ली से-** ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आपका श्री आर्यभट्ट पंचांग सदैव उन्नति करता रहे व इसी प्रकार सफलता अर्जित करे।

❖ **पं. पी. के. शर्मा व्याकरणाचार्य, संस्कृत-हिन्दी एम. ए. ज्योतिष, शास्त्री साहित्याचार्य, अलीगढ़ से-**आपका प्रयास सराहनीय हैं। आपने यह पंचांग गागर में सागर भरकर एक ऐसा दीपक प्रज्वलित किया है जैसे एक भानु की किरणें सर्वत्र प्रसारित कर सम्पूर्ण अंधकार मिटा दिया हो। अत: हमारी कामना यह है कि यह दीपक सदैव इस देश में प्रज्वलित रहे और अंधकार मिटता रहे।

❖ **कलानाथ शास्त्री, अध्यक्ष, राजस्थान संस्कृत अकादमी, जयपुर, (राज.) से-** इस अत्यन्त्युपयोगी पंचांग के प्रकाशन के लिए आप बधाई के पात्र हैं।

❖ **राजेश कुमार कन्दोई, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली से-**सामान्य व विशिष्ट सभी प्रकार की सूचनाओं को समेटते हुए यह अनमोल पंचांग अनुपम ही है। सचमुच यह गागर में सागर कहा जा सकता है।

❖ **कमलचन्द भूरा, किशन नगर, गुवाहाटी (आसाम) से-**श्री आर्यभट्ट पंचांगम् की अतुलनीय सामग्री ज्ञानवर्धक व नई-नई उपलब्धियों के लिए विशेष अनुकरणीय है। ज्योतिषीय जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम शायद यही पंचांग है।

❖ **पं. बी. एस. शर्मा (ज्योतिष), मुराद अली लेन, लखनऊ से-**आर्यभट्ट पंचांग में अनेक महत्वपूर्ण बिन्दुओं का समावेश है। जिससे इस पंचांग की महत्ता स्वत: ही बढ़ जाती है।

❖ **भगवती प्रसाद मयगाई, रुद्र प्रयाग-गढ़वाल (उ.प्र.) से-**आपके पंचांग सामग्री के लिए सभी पाठक आभारी अवश्य होंगे। सम्पूर्ण सामग्री उपयोगी एवं ग्राह्य है। मनन करने योग्य है तथा जीवन में प्रत्येक स्तर पर सार्थक है।

❖ **श्री आनन्द प्रकाश प्रजापति-(मुरादाबाद) उत्तर प्रदेश से-**आर्यभट्ट पंचांग एक ज्योतिष की किताब है। साधारण पढ़ा-लिखा आदमी भी एक प्रकार का ज्योतिषी बन सकता है। "आर्यभट्ट पंचांग" जहाँ भी होता है वहाँ उजाला ही उजाला है। आर्यभट्ट पंचांग को छोड़कर बाकी मकड़ियों का जाला है।

❖ **अशोक कौशिक, सम्पादक आर्य जगत, शाश्वत वाणी, विकासपुरी, नई दिल्ली से-**'आर्यभट्ट पंचांग' वर्तमान में प्रचलित पंचांगं में अग्रणी है। आप द्वारा प्रकाशित होने पर 'स्वर्ण में सुहागा' का संयोग बन गया है।

❖ **डा. डी. एन. सक्सेना (आर.ए.एस., से नि.) जयपुर से-** आपका 'श्री आर्यभट्ट पंचांगम्' अति सुन्दर है। इसमें काफी सामग्री है।

❖ **पं. द्वारका प्रसाद पाटोदिया (एम.ए., एल.एल.बी., डिप मॉन्ट) किशनगढ़, अजमेर से-** अपने देश की अधिकांश जनता गरीब होने के कारण कम मूल्य का यह प्रामाणिक पंचांग अति शीघ्र ही लोकप्रिय हो जावेगा। व्रतोत्सव, त्यौहार, पर्व आदि का प्रारम्भ में ही संकलित प्रकाशन का इस पंचांग में वैशिष्टय है।

❖ **डॉ. शिव कुमार मिश्र, 'मधुप', प्रो. एम.ए. संस्कृत-हिन्दी, गोल्ड मेडिल प्राप्त, साहित्याचार्य पी.एच.डी., इलाहाबाद से-**इस पंचांग में ज्ञातव्य प्राय: समसत विषयों का सरल, सुगम भाषा में सर्वदोष मुक्त आंकलन किया गया है। यह शीघ्र ही लोकप्रिय होगा, ऐसी हमारी शुभाशंसा है।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५०६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६ ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❖ **बालकृष्ण इन्दोरिया, चुरु, राजस्थान से-** 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' परिपूर्ण व विस्तृत पंचांग है। अत: सर्वोत्कृष्ट है। आप निरन्तर प्रगति कर सफल हों ऐसी कामना है।

❖ **प्रो. आचार्य चन्द्रहास शर्मा, शिक्षा शास्त्र विभागाध्य एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान संकाय प्रमुख, जीवन पार्क, पंखा रोड, नई दिल्ली से-**यह पंचांग साधारण व्यक्ति से लेकर विद्वत्समुदाय तक सभी के लिए उपादेय है। औषधि प्रयोग, तंत्र-मंत्र तथा फलादेश आदि व्यवहारिक जनजीवनोपयोगी प्रकरणों का सन्निवेश सोने में सुहागे का काम करता है।

❖ **ब्रह्म ऋषि कश्मीरी लाल शास्त्री, संकीर्तनाचार्य, ज्योतिष रत्न, बस्ती गुंजा, जालन्धर से-**माँ वीणा पाणी की कृपा से श्री आर्यभट्ट पंचांग की ज्योतिष जगत में ज्योतिर्विदों ने प्रशंसा की है। भारत के हर प्रान्त में यह प्राप्त है।

❖ **डॉ. कुंज बिहारी तिवारी ज्योतिष शिरोमणि, ज्योतिष भूषण, मानस रत्न, ज्यो. तीर्थ पर्यावरण मनीषि, महाराजपुर (म.प्र.) से-**यह पंचांग अपने आप में परिपूर्ण है, साथ ही सुगंधित पुष्पों की एक माला है, जिसमें भांति-भांति के गुंथे हुए सुगंधित पुष्प अनूठे हैं, जो अपनी सुगंध से इस देश को ही नहीं विश्व को सुगंधित करेंगे।

❖ **बी.पी. उपाध्याय, टीचर्स कॉलोनी, उदयपुर, राजस्थान से-**आपके द्वारा प्रकाशित 'श्री आर्यभट्ट पंचांग' अत्यन्त ही उपयोगी पंचांग है। इसकी जितनी भी प्रशंसा करेंगे कम ही होगी। इतनी मूल्यवान सामग्री देकर तथा कम मूल्य लेकर आप ज्योतिषों की महान सेवा कर रहे हैं।

❖ **डॉ. सत्येन्द्र सर्राफ, लक्ष्मीपुरा, सागर (म.प्र.) से-**श्री आर्यभट्ट पंचांग में संकलित सामग्री। तालिकाएं ज्योतिष कर्मियों के लिए निरन्तर उपयोगी है। सर्वजनोपयोगी सामग्री जैसे व्रत-पर्व-त्यौहारादि का संकलन इसे सामान्य पाठक, गृहस्थ को भी उपयोगी बना देता है, जहाँ मासिक राशि-फलादेश उनके आकर्षण का विषय बनता है।

❖ **प्रो. जवाहर मुथा, सम्पादक एवं अध्यक्ष ज्योतिष पत्रिका, नर्वी पेठ, अहमद नगर से-**यह कहने में भी सानंद हर्ष होता है कि आर्यभट्ट पंचांग सर्वांग सुन्दर और पूर्णरूपेण है। भारत की सभी भाषाओं में इसका अनुवाद होना चाहिए, ऐसा हम समझते हैं। यह पंचांग गणित में अत्यंत शुद्ध होने के कारण विश्वसनीय एवं लोकोपयोगी है।

❖ **सुरशे चन्द्र तिवारी, भीमगोडा-हरिद्वार (उ.प्र.) से-**पंचांग में अत्यधिक सामग्री एवं जानकारी होने से लगभग सब प्रकार की शंकाओं का समाधान आपके प्रकाश व मंडल एवं विद्वानों द्वारा किया गया जिससे मन प्रसन्न हो उठा।

❖ **श्री जितेन्द्र जोशी, ज्योतिष, दहिसर (पश्चिम.) मुंबई से-**पंचांग बहुत उपयोगी रहेगा, सर्व चीजें इसमें उपलब्ध हैं।

❖ **S.Mathu Ratnam From BEML Layout, Bangalore-** We are very much impressed by your Panchang which also includ monthly forecasts for different Rashi.

❖ **पं. श्यामनन्दन मिश्र, ज्योतिष सा. आचार्य), अजमेर विश्वविद्यालय से-**आपने आधुनिक प्रकार में पंचांग विषयों का समावेश करते हुए जनता जनार्दन को शास्त्रोचित दिशा निर्देश देने का प्रयास किया है। एतदर्थ मेरी हार्दिक शुभ कामना है।

❖ **अचलेश्वर त्रिपाठी, साहित्य शास्त्री, ब्यावर (राज.) से-**पंचांग में आपने अनेक ज्योतिष के लिए ज्ञानवर्द्धन तथा सरलीकरण का प्रयास किया है। ज्योतिष अनेक बातों का ज्ञान प्राप्त करते हुए सफल व कारगर जीवन में ला सकते हैं।

❖ **प्रो. आर. सी. दिवाकर (एम.ए.बी. एस. सी) गणित, ज्योतिष, हस्त रेखा विशेषज्ञ तथा तान्त्रिक, ब्यावर राज. से-**आपका पंचांग पढ़ने के बाद मुझे अब अन्य पंचांगों की आवश्यकता मालूम नहीं पड़ती है।

❖ **चिन्तामणि रा. केलकर, बासगांव, गोवा से-**श्री आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही उपयुक्त है, इसमें कोई शंका नहीं।

❖ **रोशन लाल दुकानदार, शिमला से-**पंचांग बहुत ही उपयोगी है। क्योंकि इसकी भाषा शैली आधुनिक तथा सरल है।

❖ **पं. नन्दकुमार जमुनाधर त्रिपाठी, ज्योतिष साहित्य आयुर्वेद विशारद, संस्कृत प्रथमा, संगीत, सत्यनारायण कथा वाचक, जलगाँव, महाराष्ट्र से-**श्री आर्यभट्ट पंचांग आदि से अंत तक देखा तो पाया कि पंचांग परिपूर्ण है। सू.उ. सारणी, अंक विचार, लग्न विचार, सू.उ. परिवर्तन पद्धति, यंत्र-मंत्र-तंत्र साधना, रत्नों का प्रभाव, उपयोगी विषयों का समालोचन कर समावेश किया है।

❖ **पं. शान्ता प्रसाद पाराशर, एम.ए. साहित्यरत्न, ज्योतिष वाचस्पति, ग्वालियर, म.प्र. से-**पंचांग का गणित एवं विस्तृत कलेवर निश्चय ही श्रेष्ठ एवं सराहनीय है।

❖ **परमानन्द शास्त्री, राजस्थान संस्कृत विद्यालय, तारानगर चुरू से-**आप लोगों ने आर्यभट्ट की विस्मृति को फिर स्मरण करा कर अनुकरणीय कार्य किया है तथा कुछ अहंकारू पंचांगकारों की मूर्खता को भी उजागर किया है।

❖ **पं. प्रेमसुख ओझा, शास्त्री, एम.ए. संस्कृत, बी.एड., तारानगर, चुरु, राजस्थान से-** पंचांग की सामग्री बहुत ही उपयुक्त एवं लाभदायक है। आपका प्रयास सराहनीय है। गागर में सागर भरने का प्रयास है।

❖ **सुजानमल जैन ज्योतिष, अर्थ टू स्टार ज्योतिष एवं शिक्षा केन्द्र, बियाबानी, इन्दौर (म.प्र.) से-**पंचांग अवलोकन के बाद हमें कोई त्रुटी नहीं लगी तथा साथ ही-टू-इन-वन तथा कीमत भी दूसरे पंचांगों के मुकाबले कम है।

❖ **मधुकर गोविंद हुपरीकर-ज्योतिर्विद्या भूषण, कोल्हापुर से-**पंचांग का अभ्यास किया, इसमें जो जानकारी है बहुत ही उपयुक्त है। इसका गणित विभाग अत्यंत शुद्ध है। जानकारी उपयोगी तथा सरल है।

❖ **मधुकर मुकंदराव हिरे-इंजीनियर, ज्यों. विशारद, बांदे पूर्व मुंबई से-** आर्यभट्ट पंचांग बहुत ही शास्त्र शुद्ध जानकारी देता है। कृपया मेरी शुभकामनाएं स्वीकार करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

❖ **अरुण सदाशिव जोशी-ज्यो.भास्कर, नासिक, महाराष्ट्र** से-ज्योतिष शास्त्र और पंचांग के साहित्य में आपके प्रयास सराहनीय हैं। अक्षांशादि सारणी का उपयोग तथा ज्योतिर्विदों को बहुत होगा। सर्वदृष्टि से आपका पंचांग बहुत अच्छा है। इस काम में आपको सफलता मिले, यही भगवान से प्रार्थना करता हूँ।

❖ **एम.एम.श्रीवास्तव, भवेश ज्यों अनुसंधान केन्द्र, भोपाल (म.प्र.)** से-पंचांग की छपाई और इसमें दी गई जानकारी बहुत महत्वपूर्ण है।

❖ **डॉ. बी. शामसखा-डायरेक्टर, मोतीबाग, नई दिल्ली** से-अपने दैनिक कार्यों में उपयोग के लिए मुझे ऐसे ही संक्षिप्त पंचांग की खोज थी। इस उपयोगी सुन्दर, संक्षिप्त और जानकारी पूर्ण पंचांग के प्रकाशन के लिए बधाई।

❖ **वैद्य पं. नारायण शर्मा कौशिक, प्रधान सम्पादक (अवैतनिक) वेदांग ज्योति एवं श्री सालासर पंचांग मेड़ता सिटी नागौर** से-श्री आर्यभट्ट पंचांग गागर में सागर युक्त अतुलित ज्योतिषी सामग्री की जानकारी देने वाला विश्व में प्रथम पंचांग दृष्टिगोचर हुआ। इसकी प्रशंसा एवं उपादेयता स्वत: उजागर होती है।

❖ **संतोष राम (हस्त रेखा विशेषज्ञ) मॉडल टाउन, दिल्ली** से-आपका पंचांग भारतीय ज्योतिष विद्या की प्राचीन परंपरा को बनाए रखने का सराहनीय प्रयास है। पंचांग के प्रकाशन हेतु कोटि-कोटि सधन्यवाद।

❖ **रामजीलाल शर्मा, रतलाम (म.प्र.)** से-आपके द्वारा निर्मित पंचांग देखा व काम में लिया आपका प्रयास व साहित्य सराहनीय है।

❖ **पं. गिरि मोहन गुरु-गोस्वामी सेवाश्रम-होशंगाबाद (म.प्र.)** से-पंडितों के हितार्थ अनेक अन्य सामग्री देकर गागर में सागर वाली उक्ति चरितार्थ कर दी है।

❖ **निशिकान्त जोशी (ज्यो. शास्त्री), ठाणा (महाराष्ट्र)** से-आपका पंचांग आम जनता तथा ज्योतिष के लिए कुंडली बनाने के लिए भी उपयुक्त है। पंचांग चन्द्र-सूर्य की तरह पृथ्वी पर चमकता रहे यही हमारी शुभ कामना है।

❖ **डॉ. राजकुमार रत्नप्रिय, सम्पा.-कॉस्मो इण्डिया-कानपुर** से-अधिकाधिक विषयों का श्रेष्ठ समायोजन निश्चय ही पंचांग को सर्वोपयोगी और लोकप्रिय बनाता व इसका मुझे पूर्ण विश्वास है। मेरी शुभ कमनाएं।

❖ **किशन लाल उपाध्याय शास्त्री, मन्थन ज्यो. कार्यालय, चुरू (राज.)** से-यह पंचांग वर्ष की अत्यन्त महत्वपूर्ण कृति होती है। विस्तृत क्रमवद्ध होड़ाचक्र इसी पंचांग की अतुलनीय विशिष्ट विशेषताएं है।

❖ **डॉ.भालचन्द्र शंकर शास्त्री (ज्योतिषाचार्य, ज्यो. अलंकार, ज्यो. तीर्थ, राज ज्यो. म.प्र. शासन, लश्कर ग्वालियर** से-पंचांग ज्योतिष के लिए परमोपयोगी है। छपाई अति सुन्दर, स्वच्छ एवं स्पष्ट होने से बाल-वृद्ध मानवों को पठनीय है। मुख्य-मुख्य सभी विषय इस पंचांग में आपने भर दिए हैं। जैसे गागर में सागर।

❖ **पं. चन्द्रिका प्रसाद वाजपेयी-भोपाल, मध्य प्रदेश** से-आर्यभट्ट पंचाग के अतिरिक्त ग्रहों की स्थिति, मुहूर्त्त की शुद्धता, ज्यो. संबंधी विविध जानकारी का संग्रह यहाँ उपलब्ध अन्य पंचांगों में नहीं मिलता है।

❖ **प्रकाश नाथ चौहान (तंत्र ज्योतिषाचार्य साहित्य कला सरस्वती प्राच्य विद्या महामहोपाध्याय तांत्रिक मार्तण्ड आदि उपाधि से विभूषित तथा रजत एवं स्वर्ण पदक से सम्मानित, ब्यावर (अजमेर-) राज.** से-'श्री आर्यभट्ट पंचांग' में ज्योतिष विषयक भव्य सामग्री देखकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो गागर में सागर भरने का प्रयास किया गया है। पंचांग का आलोक विश्व के कोने-कोने में प्रसारित हो यह मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

❖ **पं. शिवचरण लाल शर्मा, ज्यो. कुम्भराजज-गुना (म.प्र.)** से-यह पंचांग निर्माणात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिपादन करते हुए भारत की समस्याओं का समाधान व उत्थान का काम करेगा। आपके इस प्रयास के लिए शुभकामनाएँ।

❖ **लक्ष्मीचन्द्र गुप्ता (तांत्रिक एवं पत्रकार, बी.ए. विद्यारत्न, ज्यो. तन्त्र मार्तण्ड, बी.ए. एम.एस. (कल). आयुर्वेद रत्न (प्रयाग), फार्मासिस्ट एवं परामर्शदाता चिकित्सक), पीलीभीत (उ. प्र.)** से-पंचांग कुछ नवीनताएं लिए हुए हैं जो अन्यों में नहीं मिलती जैसे ग्रहों का भावानुसार, गोचर फल, वर्ष फल, जन्म कुण्डली फल (पु. स्त्री का इसके अतिरिक्त इसकी पाठ्य सामग्री व सारणियां भी कम उपयोगी नहीं है।

❖ **भालचन्द म. लेम्भ, एम.ए. (साहित्य विशारद (मराठी), रा.भा. रत्न, शनिवार पेठ, पुणे** से-दैनंदिनी घरेलू जीवन में जितनी बातों की आवश्यकता होती है उन सभी का इस पंचांग में अंतर्भाव किया है। ज्योतिष के लिए तो यह अत्यंत उपयुक्त है।

❖ **इन्दरमल चौधरी (ज्यो. भूषण, ज्यो. मनीषी, ज्यो. मार्तण्ड, ज्यो. दिवाकर, जो. श्री, दैवज्ञ श्री उपाधियां एवं रजत पदक प्राप्त), समया. एवं प्रकाशक, 'ज्यो.रत्न' पत्रिका, सादड़ी-राजसमन्द (राज.)** से-आर्यभट्ट पंचांग की गणित शुद्ध है, सारगर्भित विषय वस्तु ज्योतिष प्रेमियों के लिए सुबोध है। पंचांग का प्रारूप तैयार करने में आपका श्रम सराहनीय है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका पंचांग देश में प्रथम स्तर का पंचांग साबित होकर ज्योतिष जगत में अक्षम ख्याति प्राप्त करेगा।

❖ **कपिल देव मिश्र (साहित्य रत्न, भा. रत्न, फेस रीडर, ज्योतिर्विद, मंत्र-तंत्र-यन्त्र विशेषज्ञ), कुलावा, मुंबई** से-भारत के कर्मकाण्ड एवं ज्योतिषियों के लिए यह पंचांग सहायक ही नहीं पूर्णरूप से मार्गदर्शन करने वाला है। इसका एक-एक पृष्ठ ज्यो. जगत के लिए वरदान साबित होगा।

❖ **महर्षि पं. मदन मोहन एस. जोशी (स्वर्ण पदक से विभूषित, ज्योतिषाचार्य, रमलाचार्य)** -श्री आर्यभट्ट पंचांग में सूक्ष्म गणित वास्तव में ज्योतिषियों के गणित भाव हेतु पूर्ण लाभप्रद साबित हो रहा है। ❑

प्रकाशक: **धर्मसन प्रकाशन**, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महर्षि आर्यभट्ट

वराहमिहिर और आर्यभट्ट हमारे प्राचीनतम आचार्यों में से हैं। वराहमिहिर ने प्रसिद्ध ज्योतिष ग्रन्थ 'वृहत् जातक' की रचना की और आर्यभट्ट प्रथम ने 'आर्यभटीय' ग्रन्थ लिखा। ज्योतिष का क्रमबद्ध इतिहास आर्यभट्ट के समय सेही मिलता है; यद्यपि वेदों के समय से ज्योतिष का ज्ञान आरम्भ हो गया था और ज्योतिष वेद के प्रमुख अंगों में से एक है। तब से आर्यभट्ट के समय तक सूर्यादि ग्रह, काल बोध, ग्रह-नक्षत्र, धूमकेतु, ग्रहण, ग्रहनक्षत्रों की गति स्थिति का ज्ञान, सिद्धान्त, होरा, प्रश्न, शकुन, ज्योतिष आदि का आविष्कार हो गया था। नक्षत्रों की आकृति, स्वरूप, गुण, प्रभाव आदि की परिभाषा, ऋतु, अयन, दिनमान लग्नादि के शुभाशुभ फलों का ज्ञान, राशियों और ग्रहों के स्वरूप, रंग, दिशा, तत्व, धातु आदि का विवेचन, ब्राह्मण और आरण्यक ग्रन्थों की रचना काल तक पूर्णरुप से ज्ञात हो गये थे। ग्रहों की गति, स्थिति, अयनांश, मुहूर्त, शुभाशुभ समय का निर्णय, यथा ज्योतिष के पांचों अंगों-होरा, सिद्धान्त, गणित, संहिता, मुहूर्त, फलित, प्रश्न तथा शकुन शास्त्र की निरन्तर उन्नति होती गई थी।

अन्य शास्त्रों के समान ज्योतिष के आविष्कर्त्ता भी भारतीय ही हैं। योगाभ्यास द्वारा प्राचीन ऋषियों ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा से शरीर के अन्दर ही समस्त सौर मण्डल के दर्शन किये और आत्म-निरीक्षण से आकाशीय सौर मण्डल की व्याख्या की। अंक विद्या ही इस शास्त्र का आधार है और इसका श्री गणेश भारत में ही हुआ था। प्रचीन भारत में तक्षशिला, नालन्दा आदि स्थानों पर विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षण संस्थायें थीं, जहां पर दूर-दूर देशों के विद्यार्थी विद्याध्ययन करने के लिए आते थे और अपने देशों में जाकर इसका प्रचार करते थे। ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मण के अध्ययन से पता चलता है कि कम-से-कम २८००० वर्ष पहले भी भारतीयों ने खगोल तथा ज्योतिष-शास्त्र का पूर्ण रूप से मन्थन कर लिया था।

आर्यभट्ट नाम के दो विद्वान् ज्योतिषी हुए हैं। आर्यभट्ट प्रथम का जन्म ईस्वी सन् ४७६ में हुआ था। अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आर्यभटीय' में इन्होंने सूर्य एवं तारागण के स्थिर होने तथा पृथ्वी के घूमने के कारण दिन और रात होने का वर्णन किया है। इन्होंने पृथ्वी की परिधि ४९६७ योजन बताई है, सूर्य और चन्द्रग्रहण के वैज्ञानिक कारणों की व्याख्या की है। काल-क्रिया पाद में युग के दो समान भाग करके पूर्व भाग को उत्सर्पिणी तथा उत्तर भाग को अवसर्पिणी संज्ञा दी है तथा प्रत्येक के छः छः भेद बताये हैं। ग्रहों को स्पष्ट करने की विधि बतलाई है। बुध और शुक्र को विलक्षण संस्कार से स्पष्ट करना बताया है। सबसे महत्वपूर्ण कार्य इन्होंने यह किया कि अंक (संख्या) के द्योतक क, ख, ग आदि वर्णो की कल्पना की और अ, आ, इ, ई आदि स्वर वर्ण तथा क, ख, ग आदि व्यंजन वर्णो को एक-एक संख्या-वाचक अर्थ देकर बड़ी-बड़ी संख्याओं को लिखने की विधि का आविष्कार किया। इसी विधि को बाद में रोमनों ने अंग्रेजी अक्षरों में भी लिया; जैसे-पांच के लिए V, दस के लिए X आदि-आदि।

महर्षि आर्यभट्ट ने क = १, ख = २, ग = ३, घ = ४, ङ = ५, च = ६, छ = ७, ज = ८ इसी प्रकार क्रम से म = २५, य = ३०, र = ४०, ल = ५०, व = ६०, श = ७०, ष = ८०, स = ९०, ह = १००; क = एक, कि = सौ, कु = दस हजार, कृ = दस लाख, क्लृ = दस करोड़, के = दस अरब, कै = दस खरब, को = दस नील, कौ = दस शंख; इसी प्रकार ख = दो, खि = दो सौ, खु = बीस हजार आदि-आदि। इसी प्रकार वर्णो द्वारा संख्यायें लिखने की विधि विस्तार से समझायी है। आर्यभट्ट ने अपने विख्यात ग्रन्थ 'आर्यभटीय' की रचना प्राचीन कुसुमपुर में (जो आज का पटना नगर है) रहकर की थी। इस ग्रन्थ के गणित पाद (प्रकरण) में वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल एवं अन्य व्यवहार श्रेणियों का विशद विवेचन किया है।

आर्यभट्ट द्वितीय ब्रह्मगुप्त के बाद, यानि ५९८ ई. के बाद और भास्कराचार्य, जिनका काल ११४४ ई. के पहले का है। इन दोनों के मध्य कभी हुए थे। इनका रचित ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' है। इसमें १८ अध्याय हैं, जिनमें पाटी गणित, क्षेत्र व्यवहार तथा बीज गणित भी सम्मिलित है। प्रथम आर्यभट्ट के सिद्धान्तों में इन्होंने कई संशोधन किये। इस ग्रन्थ की परम्परा को बाद के अनेक ज्योतिषियों ने अपनाया। इसी कारण इनका ग्रन्थ 'महा आर्यभटीय' भी बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। इनके जीवन के विषय में विशेष कुछ ज्ञात नहीं है, परन्तु इनकी अपूर्व विद्वता तथा महान पाण्डित्य इनके अनुपम ग्रन्थ से ही ज्ञात हो जाता है। दोनों ही आर्यभट्ट ज्योतिष के महान् विद्वान थे और इसी कारण भारत ने अपने उपग्रह का नाम इनके नाम पर रखा। ये दोनों विद्वान् महान गणितज्ञ थे और आधुनिक वैज्ञानिक उपग्रह प्रणाली आदि उन्हीं के द्वारा बताये गणित को और आगे बढ़ाते हुए आज की उच्च अवस्था तक पहुंची है।

हमने अपनी अनुसंधान संस्था का नामकरण इन्हीं विभूतियों के नाम पर किया है और आशा करते हैं कि इनके आशीर्वाद से हम ज्योतिष विद्या में नई-नई बातों का शोध व आविष्कार करने में सफलता प्राप्त करेंगे और इनके नाम के अनुसार प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। हम ज्योतिष-प्रेमियों से पूर्ण सहयोग की आशा करते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करें।

-लक्ष्मी नारायण शर्मा
बी.ए. प्रभाकर, साहित्यरत्न
ज्योतिष वाचस्पति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

एक और प्रयास ज्योतिष सेवा के निमित्त

आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र की स्थापना श्री धर्मपाल जी अग्रवाल के विशेष परिश्रम तथा सहयोग से ही सम्भव हो सकी है। श्री धर्मपाल जी मै. धर्मसन प्रकाशन के वरिष्ठ भागीदार हैं। धर्मसन प्रकाशन गत २०-२२ वर्षों से कतिपय श्रेष्ठ पंचांगों का उच्चस्तर का प्रकाशन करता आ रहा है। विभाजन से पूर्व लाहौर में इनके पूज्य पिताजी की प्रकाशन संस्था मै. मेहरचन्द एण्ड सन्स भी तत्कालीन उच्च-कोटि के हिन्दी, श्री विश्व मार्तण्ड पंचांग तथा उर्दू मेहर आलम आदि जन्त्रियों के प्रकाशक थे। पैतृक व्यवसाय होने के कारण पंचांग प्रकाशन कार्य इनको रक्त में ही उत्तराधिकार स्वरूप मिला। आप अब तक ५० वर्ष का व्यक्तिगत अनुभव भी अर्जित कर चुके हैं।

श्री मार्तण्ड परिवार के उर्दू, पंजाबी, हिन्दी भाषा में प्रकाशित श्री मार्तण्ड आलम जन्त्री (मेहर आलम जन्त्री), शिरोमणि तिथि प्रत्रिका और श्री बटुक पंचांग आदि विभाजन पूर्व श्री मेहरचन्द एण्ड सन्स लाहौर के द्वारा प्रकाशित होते रहे हैं। और आजकल सं. २०४२ से धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित किये जाते हैं। उपरोक्त पंचांग व जन्त्रियों के प्रकाशन स्तर में गत ४ वर्षों में ही अभूतपूर्व प्रगति हुई है। सं. २०३३ से श्री विश्वविजय पंचाग का प्रकाशन भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा आरम्भ किया गया और सं. २०४१ तक यह पंचांग इसी प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित किया जाता रहा। इन वर्षों में इस पंचांग की लोक प्रियता में जो गुणात्मक वृद्धि हुई उसका श्रेय अधिकांश में इसकी सुचारू प्रकाशन व्यवस्था को ही है। धर्मसन प्रकाशन इस वर्ष से (श्री प्रेमपाल कौशिक जी का) राजधानी पंचांग भी प्रकाशित कर रहा है, गत ४-५ वर्षों से पं. जीयालाल जी के असली पंचांग तथा मशहूर आम जन्त्री हिन्दी, उर्दू और सं. २०३६ (सन् १९७९) से लाहौर के प्रसद्धि पं. देवीदयाल जी के पंचांग दिवाकर, मुफीद आलम जन्त्री हिन्दी, उर्दू प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा उत्तरी भारत के अधिकांश प्रमुख पंचांग भी धर्मसन प्रकाशन द्वारा प्रकाशित होते हैं।

आजकल पंचांग तो काफी संख्या में प्रकाशित हो रहे हैं परन्तु अच्छे स्तर के पंचांगों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती है। इनमें भी दिल्ली के अक्षांश पर आधारित पंचांग तो एकाध ही हैं। कुछ समय पहिले तक ज्योतिष के शास्त्रोक्त ग्रंथ संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध थे और भाषा टीका सहित पुस्तकों को भाषा भी संस्कृत निष्ठ कठिन भाषा ही रहती थी। अभी गत कुछ वर्षों से ज्योतिष शास्त्र पर हिन्दी में पुस्तकों का प्रकाशन आरम्भ हुआ है। जिनके द्वारा सर्वसाधारण में भी ज्योतिष के गूढ़ तत्वों के ज्ञान का प्रचार हुआ है। परन्तु अधिकांश पंचांगों में अभी तक बहुत से विषयों की जानकारी केवल संस्कृत भाषा में अथवा संस्कृत निष्ठ क्लिष्ठ हिन्दी में दी जाती है। इस कारण हिन्दी जानने वाले ज्योतिष प्रेमीजन तो उसे समझ ही नहीं पाते, बहुत से पंडित और ज्योतिषी भी कठिनाई का अनुभव करते हैं। संस्कृत देवभाषा है और हमारा बहुत सा ज्ञान भण्डार इस भाषा में संचित है इसमें कोई भी संदेह नहीं। परन्तु खेद है कि इस भाषा को पढ़ने व जानने वालों की संख्या दिन प्रतिदिन कम होती जा रही है। आज आवश्यकता इस बात की है कि प्राचीन संचित ज्ञान भण्डार को सरल सुबोध भाषा में वर्तमान परिपेक्ष्य में हिन्दी भाषी जनता को उपलब्ध कराया जाय। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन आरम्भ किया गया है।

इस पंचांग के सम्पादक पं. लक्ष्मीनारायण शर्मा बी.ए. प्रभाकर साहित्यरत्न ज्योतिष वाचस्पति की ज्योतिष प्रथमा, गणित ज्योतिष प्रथमा गणित, फलित, अंक ज्योतिष, हाथ की रेखाएं, स्वरोदय शिक्षा, राजयोग शिक्षा, मंत्र-तन्त्र साधना और तंत्र विद्या नाम से पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। सौ साल के पंचांग **'शतक मार्तण्ड'** का सम्पादन भी किया है। ज्योतिष प्रेमी सज्जनों ने उनकी सरल सुबोध भाषा तथा विषय प्रतिपादन शैली की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। इस पंचांग के पाठकों को उनके अध्ययन अनुभव भाषा व शैली का दिग्दर्शन स्थान-२ पर प्राप्त होगा।

श्री आर्यभट्ट पंचांग का प्रकाशन कार्य श्री आर्यभट्ट अनुसन्धान केन्द्र के अन्तर्गत प्रकाशन कार्य के अनुभवी श्री धर्मपाल जी के निर्देशन में ही किया गया है। आशा है ज्योतिष प्रेमी सज्जन इसके मुद्रण औ साज सज्जा को सन्तोष जनक पायेंगे। हमारा प्रयास रहेगा कि आगामी वर्षों में और भी अधिक उपयोगी सामग्री सम्मिलित करें और पंचांग का स्तर उत्तरोत्तर उत्तम बनाया जाये। इस विषय में आपके सुझाव आमन्त्रित हैं। पंचांग का अभी शैशव काल है। त्रुटियों का रहना स्वाभाविक है। आशा है विद्वज्जन त्रुटियों को क्षमा करते हुए इन्हें प्रोत्साहित करेंगे ताकि ज्योतिष प्रेमी जनता की वृहत्तर सेवा कर सकें।

आर.एन. पाण्डे
दिल्ली

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्रतोत्सव, अवकाश दिन तथा वर्गीकृत त्यौहारादि सं. २०५९ विक्रमी, शाके १९२४, सन् २००२-२००३ ई.

व्रतोत्सव	तिथि
नववर्षारंभ, नवरात्रा प्रा., गुड़ी पड़वा	१३ अप्रै.
आर्य समाज स्थापना दि., गौतम जयंती	१३ ''
सिन्धारा, चेटीचंड, झूलेलाल जयंती	१४ ''
बैशाखी पं., डॉ. अम्बेडकर ज., मेषादि	१४ ''
विगु विधु, विशु, वैशाखादि	१४ ''
मत्स्य ज., मनोरथ ३, सौभाग्य तृतीया	१५ ''
गणगौर पूजन	१५ ''
हय व्रत पंचमी, स्कन्द षष्ठी	१८ ''
जैन आयंबिल ओली प्रारम्भ	१९ ''
दुर्गा ८, अन्नपूर्णा पूजा	२० ''
श्री राम नवमी, नवरात्रा समाप्त	२१ ''
कामदा एकादशी व्रत	२३ ''
हरिदमनोत्सव	२४ ''
प्रदोष व्रत, महावीर जयंती जैन	२५ ''
दमनक चतुर्दशी, सत्यव्रत	२६ ''
चैत्री पूर्णिमा, हनुमान जयंती	२७ ''
आयंबिल, ओली समा.,बैशाख स्नान प्रा.	२७ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	३० ''
विश्व मजदूर दिवस	१ मई
शीतला पूजन	३ ''
रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ ''
वरूथिनी एकादशी व्रत	७-८ ''
श्री बल्लभाचार्य जयंती	८ ''
प्रदोष व्रत	९ ''
देवपितृकार्य अमावस्या, मेला पिंजोर	१२ ''
श्री शुकदेव जयंती, शहादते इमाम हसन	१२ ''
देव दामोदर तिथि	१३ ''
शिवाजी ज., परशुराम जय.	१४ ''
अक्षय तृतीया, मातंगी जय.	१५ ''
वैनायक चतुर्थी व्रत	१६ ''
आद्य शंकराचार्य जय.	१७ ''
श्री रामानुजाचार्य जय.	१८ ''
गंगा सप्तमी पूजन	१९ ''
दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जय., सीताष्टमी	२० ''
मोहिनी एकादशी व्रत	२२-२३ ''
राधा द्वादशी	२३ ''
प्रदोष व्रत	२४ ''
श्री नृसिंह जयंती, छिन्नमस्ता जय.	२५ ''
वैशाखी पूर्णिमा, सत्यव्रत	२६ ''
बुद्ध पूर्णिमा, कूर्म जयंती	२६ ''
वैशाख स्नान पूर्ति	२६ ''
श्री नारद जयंती, नेहरू पुण्य दिवस	२७ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२९ ''

व्रतोत्सव	तिथि
कालाष्टमी, मेला चानानी माताजी	३ जून
विश्व पर्यावरण दिवस	५ ''
अपरा एका. व्रत, भद्रकाली एका.	६ ''
प्रदोष व्रत, वट सावित्री व्रतारंभ	८ ''
सोमवती-भावुका अमा.	१० ''
बड़ पूजन-देवपितृकार्य अमावस्या	१० ''
करवीर व्रत	११ ''
रंभा व्रत, प्रताप जंयती	१३ ''
श्रुति पंचमी (जैन), मिथुन संक्रान्ति	१५ ''
विन्ध्यवासिनी पूजा, अरण्य छठ	१६ ''
दुर्गाष्टमी, धूमावती जयंती	१८ ''
श्री माहेश्वरी नवमी	१९ ''
गंगा दशहरा, मेला हरिद्वार	२० ''
निर्जला एका. व्रत, चम्पक द्वादशी	२१ ''
शनि प्रदोष व्रत, बट सावित्री व्रतारंभ गुज.	२२ ''
वट सावित्री व्रत पूर्ति (गुज.), सत्यव्रत	२४ ''
ज्येष्ठी पूर्णिमा, कबीर जयंती	२४ ''
गु. हरगोविन्द सिंह जयंती	२५ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२८ ''
योगिनी एकादशी व्रत, दादा मेला अजमेर	६ जुला.
प्रदोष व्रत	७ ''
देवपितृकार्याऽमावस्या	१० ''
मनोरथ द्वितीया व्रत (बंगाल)	१२ ''
श्री जगदीश रथ यात्रा (उड़ीसा)	१२ ''
स्कन्द पंचमी	१४ ''
कुमार षष्ठी व्रत	१५ ''
विवस्वत सप्तमी, सूर्य पूजा	१६ ''
दुर्गाष्टमी, खरसी पूजा	१७ ''
भड्डुली नवमी, मेला शरीफ भवानी (क.)	१८ ''
देवशयनी एकादशी, दादा मेला अजमेर	२० ''
प्रदोष व्रत	२१ ''
जया पार्वती व्रतारंभ	२२ ''
चौमासी चौदश (जैन), वायु परीक्षा	२३ ''
गुरु पूर्णिमा, सत्यव्रत	२४ ''
आषाढ़ी पूर्णिमा, व्यास पूजा	२४ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२७ ''
नाग पंचमी (बंगाल व राज.)	२९ ''
श्रावण सोमवार व्रत	२९ ''
कालाष्टमी, मस्त्यर दिवस	१ अग.
गुरु हरिकिशन जयंती	२ ''
कामदा एका. व्रत, श्रावण सोमवार व्रत	५ ''
भौम प्रदोष व्रत	६ ''
देवपितृकार्या अमा., हरियाली अमा.	८ ''

व्रतोत्सव	तिथि
नक्त व्रत प्रारम्भ, सोमेश्वर पूजा	९ अग.
हरियाली तीज, मधुश्रवा तीज	११ ''
श्रावण सोमवार व्रत,विनायक ४, वरद ४	१२ ''
नाग पंचमी देशाचारे	१३ ''
भारतीय स्वतंत्रता दिवस	१५ ''
कल्की जयंती	१७ ''
पवित्रा एकादशी व्रत (पुत्रदा)	१८ ''
श्रावण सोमवार व्रत	१९ ''
भौम प्रदोष व्रत	२० ''
ओनम् पर्व (केरला-तमिलनाडु)	२१ ''
श्रावणी पूर्णिमा, रक्षाबन्धन	२२ ''
सत्यव्रत, अमरनाथ दर्शन	२२ ''
सातुड़ी तीज, कजली तृतीया व्रत	२६ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला चौथ	२६ ''
रक्षा पंचमी (उड़ीसा), चन्द्र षष्ठी	२८ ''
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त	३० ''
श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वैष्णव	३१ ''
गोगा नवमी, नन्दोत्सव	१ सितं.
अजा एकादशी व्रत	३ ''
प्रदोष व्रत, पर्युषण पर्व प्रा. (जैन)	४ ''
वत्स द्वादशी, बच्छ बारस	४ ''
अघोरा चतुर्दशी व्रत, शिक्षक दिवस	५ ''
पिठौरी ३०, पितृकार्या अमावस	६ ''
देवकार्य अमा., कुशाग्रहणी ३०, सती पूजन	७ ''
मेला सुधरेशाह दिल्ली, नक्त व्रत समाप्त	७ ''
विश्व साक्षरता दिवस, रुणिचा मेला प्रा.	८ ''
हरितालिका ३ व्रत, अजमेर का उर्स प्रा.	९ ''
श्री गणेश चतुर्थी व्रत, साम श्रावणी	१० ''
ऋषि पंचमी, जैन सम्वत्सरी	११ ''
सूर्य षष्ठी, बलदेव छठ	१२ ''
मुक्ताभरण ७, सन्तान सप्तमी	१३ ''
दुर्गाष्टमी, राधाष्टमी, दूर्वा अष्टमी	१४ ''
दधीची ज., श्री महालक्ष्मी व्रत प्रा.	१४ ''
इन्जिनियर्स दिवस	१५ ''
चन्द्र नवमी, अदुःख नवमी	१५ ''
पद्मा (जलझूलनी) एकादशी व्रत	१७ ''
विश्वकर्मा पूजा, मेला चार भुजानाथ	१७ ''
वामन जयंती, प्रदोष व्रत	१८ ''
गोत्रि रात्रि व्रतारंभ	१९ ''
अनन्त चतुर्दशी व्रत	२० ''
सत्यव्रत, गोत्रि रात्रि व्रत समाप्त	२१ ''
भाद्रपद १५, महालयारंभ, ज.दि.हज.अली	२१ ''
पितृ पक्ष प्रा.	२२ ''

व्रतोत्सव	तिथि
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२५ सित.
कालाष्टमी, महालक्ष्मी व्रत समाप्त	२९ ''
मातृ नवमी, भूदान जयंती, बैंक होली डे	३० ''
महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ अक्टू.
इन्दिरा एकादशी व्रत	२-३ ''
प्रदोष व्रत	४ ''
देवपितृ कार्यऽमा. सर्वपितृ ३०	६ ''
शारदीय नवरात्रा प्रा.,अग्रसेन जयंती	७ ''
वायु सेना दिवस	८ ''
उपांग ललिता पंचमी व्रत	१० ''
सरस्वती आवाहन, अन्नपूर्णा परिक्रमा	१२ ''
श्री सरस्वती पू., दुर्गाष्टमी	१३ ''
सरस्वती विसर्जन, महानवमी	१४ ''
विजया दशमी, माधवाचार्य जयंती	१५ ''
पापांकुशा एकादशी व्रत	१६ ''
प्रदोष व्रत	१८ ''
शरद पूर्णिमा, सत्यव्रत, कोजागरी व्रत	२० ''
बाल्मीकि जयंती, कार्तिक स्नान प्रा.	२१ ''
करक, करवा चतुर्थी व्रत	२५ ''
अहोई अष्टमी	२९ ''
सरदार पटेल जयंती-इंदिरा गांधी पुण्य	३१ ''
रमा एकादशी व्रत	१ नवं.
शनि प्रदोष व्रत, गोवत्स पूजा	२ ''
धन तेरस, धन्वन्तरी जयंती	२ ''
नरक चतुर्दशी, रूप चतुर्दशी	३ ''
महालक्ष्मी पूजन, दीपावली	४ ''
सोमवती ३०, देवपितृकार्यऽमा.	४ ''
गोवर्धन पूजा, अन्नकूट	५ ''
भैया दूज, विश्वकर्मा पूजा	६ ''
रोजे शुरू	७ ''
पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी	९ ''
सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छट	१० ''
गोपाष्टमी, दुर्गाष्टमी	१२ ''
कुष्मांड नवमी, आंवला नवमी, अक्षय ९	१३ ''
पं. नेहरू जयंती, बाल मेला	१४ ''
देव प्रबोधिनी एका., तुलसी विवाह	१५ ''
प्रदोष व्रत	१७ ''
वैकुण्ठ १४ व्रत, चौमासी चौदश	१८ ''
गुरु नानक जयंती, सत्यव्रत	१९ ''
देव दिवाली, कार्तिक स्ना. समा.	२० ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२३ ''
श्री महाकाल भैरवाष्टमी	२७ ''
जुमातुल विदा	२९ ''
उत्पत्ति एकादशी व्रत	३० ''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रदोष व्रत	२ दिसं.
देव पितृकार्याऽमावस्या	४ ''
ईदुलफितर ईद (मु.)	६ ''
झंडा दिवस	७ ''
गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस	८ ''
चम्पा षष्ठी	९ ''
मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती	१० ''
महानन्दा नवमी	१२ ''
मोक्षदा एका. व्रत, श्री गीता जयंती	१५ ''
प्रदोष व्रत, अनंग १३	१७ ''
सत्यव्रत, अन्नपूर्णा जयंती	१९ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२३ ''
क्रिसमस डे, बडा दिन	२५ ''
सफला एकादशी व्रत	३० ''

सन् २००३ ई.

प्रदोष व्रत, ईसाई नववर्ष प्रारम्भ	१ जन.
देव पितृकार्याऽमा., वकुला अमा. उड़ी.	२ ''
गुरु गोविन्द सिंह जयंती	९ ''
दुर्गाष्टमी, शाकंभरी यात्रा	१० ''
लोहड़ी उत्सव (पंजाब)	१३ ''
मकर संक्रांति, पौंगल पर्व	१४ ''
पवित्रा एकादशी व्रत, माघ विहू केरला	१४ ''
प्रदोष व्रत	१५ ''
पौषी १५, सत्यव्रत, माघ स्नान प्रा.	१८ ''
संकष्ट चतुर्थी व्रत	२१ ''
श्री सुभाष चन्द्र बोस जयंती	२३ ''
स्वा. विवेकानन्द व रामानन्दाचार्य ज.	२५ ''
भा. गणतन्त्र दिवस	२६ ''
षट्तिला एकादशी व्रत	२८ ''
प्रदोष व्रत, महात्मा गांधी पुण्य दिवस	३० ''
मौनी अमावस्या, देवपितृकार्यऽमा.	१ फर.
बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन	६ ''
आरोग्य सप्तमी, रथ सप्तमी	८ ''
जया एकादशी व्रत, ईदुल जुहा (बकरीद)	१३ ''
प्रदोष व्रत	१४ ''
माघी पूर्णिमा, सत्यव्रत, रविदास ज.	१६ ''
माघ स्नान समाप्त	१६ ''
कृष्ण चतुर्थी व्रत	२० ''
जानकी जयंती	२४ ''
विजया एकादशी व्रत	२६-२७ ''
प्रदोष व्रत	२८ ''
महाशिवरात्रि व्रत	१ मार्च
सोमवती-देवपितृकार्यऽमा.	३ ''
फुलरिया दोज, हिजरी सन् प्रारम्भ	५ ''
मेला श्यामजी खाटू प्रारम्भ (राज.)	१३ ''
आमला एकादशी व्रत, मुहर्रम ताजिए	१४ मार्च
गोविन्द द्वादशी	१५ ''
प्रदोष व्रत	१६ ''
होलिका दहन	१७ ''
फूलडोल, सत्यव्रत, छारेंडी	१८ ''
चैतन्य महाप्रभु ज., होला मे. आनन्दपुर (पं.)	१८ ''
संत तुकाराम जयंती	२० ''
शीतला पूजन	२४ ''
पापमोचनी एकादशी व्रत	२८ ''
प्रदोष व्रत, नौचन्दी मेला मेरठ	३० ''
देवपितृकार्याऽमावस्या	१ अप्रै.
चान्द्र संवत्सर समाप्त	१ ''

इस्लामी त्यौहार

चैहल्लम शहीद करबला	४ मई
आखरी चहारशम्बा	८ ''
शहादते इमाम हसन	१२ ''
फतीहायजदहूम (११वीं शरीफ)	२४ ''
ईद-ए-मिलाद (बारावफात)	२५ ''
ईद-ए-मौजाद	३० ''
उर्स निजामुद्दीन ओलिया प्रा.	२८ जून
वफात् सरसैयद हैमद खाँ	८ अग.
उर्स ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती अजमेर	१३ सितं.
हजरत अली जन्म	२१ ''
शब्बे मिराज	५ अक्टू.
शब्बे रात	२१ ''
रमजान (रोजा) प्रा.	७ नवं.
उर्स अलीशाह कलन्दर पानीपत	१९ ''
शहादते हजरती अली	२७ ''
जुमातुल विदा	२९ ''
शब-ए-कद्र	२ दिसं.
ई-दुल-फितर	६ ''
उर्स ख्वाजा अमीर खुसरो दिल्ली	२३ ''

सन् २००३ ई.

वफात् कायदे आजम मोहम्मद अली	११ जन.
हज्ज	११ फर.
ईद-उल-जुहा (बकरीद)	१३ ''
मोहर्रम हिजरी सन् १४२४ प्रा.	५ मार्च
मुहर्रम ताजिया	१४ ''

महापुरुष जयन्तियाँ (जैन)

मुनि सुमति नाथ	जयंती	२३ अप्रै.
'' महावीर स्वामी	''	२५ ''
'' सुव्रत नाथ	''	७ मई
'' कुन्थ नाथ	''	१३ ''
'' अनन्त नाथ	''	७ जून
मुनि शान्ति नाथ	जयंती	१० जून
'' सुपार्श्वनाथ	''	२२ ''
'' नमिनाथ	''	५ जुला
'' नेमिनाथ	''	१३ अग.
'' पद्मप्रभुनाथ	''	२ नवं.
'' सम्भवनाथ	''	२० ''
'' पुष्पदन्तनाथ	''	५ दिसं.
'' मल्लिनाथ	''	१५ ''
'' अरहनाथ	''	१८ ''
'' पार्श्वनाथ	''	२९ ''
'' चन्द्र प्रभु	''	३१ ''

सन् २००३ ई.

'' यतीन्द्र सुरीश्वरनाथ	''	५ जन.
'' राजेन्द्र सुरीश्वरनाथ	''	९ ''
'' शीतलनाथ	''	२९ ''
'' विमलनाथ	''	५ फर.
'' अजितनाथ	''	११ ''
'' अभिनन्दन नाथ	''	१३ ''
'' धर्मनाथ	''	१५ ''
'' श्रेयांशनाथ	''	२६ ''
'' वासुपूज्यनाथ	''	१ मार्च
'' ऋषभनाथ	''	१२ ''

महापुरुषों के जन्म दिन

श्री गौतम जयंती	१३ अप्रै.
श्री झूलेलाल जयंती	१४ ''
डॉ. अम्बेडकर जयंती	१४ ''
श्री राम जयंती	१८ ''
श्री हनुमान जयंती	२७ ''
कवि रविन्द्रनाथ टैगोर जयंती	७ मई
श्री वल्लभाचार्य जयंती	८ ''
श्री शुकदेव जयंती	१२ ''
देव दामोदर जयंती	१३ ''
श्री शिवाजी जयंती	१४ ''
श्री परशुराम जयंती	१४ ''
श्री मातंगी जयंती	१५ ''
श्री आद्य शंकराचार्य जयंती	१७ ''
श्री रामानुजाचार्य जयंती	१७ ''
बाबू कुँवर सिंह जयंती	१७ ''
श्री नृसिंह जयंती	२५ ''
छिन्नमस्ता जयंती	२५ ''
श्री बुद्ध जयंती	२६ ''
देव ऋषि नारद जयंती	२८ ''
श्री मां आनन्दमयी जयंती	२९ ''
श्री शनि जयंती	१० जून
श्री महाराणा प्रताप जयंती	१३ ''
श्री गायत्री जयंती	२१ जून
सन्त कबीर जयंती	२४ ''
श्री लोकमान्य तिलक जयंती	२३ जुला
सरस माधुरी जयंती	८ अग.
श्री कल्की जयंती	१४ ''
गो. तुलसीदास जयंती	१४ ''
संत ज्ञानेश्वर जयंती	३१ ''
श्री कृष्ण (मथुरा) जयंती	३१ ''
डॉ. राधाकृष्णन जयंती	५ सितं
सन्त सुथरेशाह जयंती	७ ''
श्री वाराह जयंती	९ ''
श्री गणेश जयंती	१० ''
श्री विनोबा भावे जयंती	११ ''
श्री दधीचि जयंती	१४ ''
श्री महात्मा गांधी व शास्त्री जयंती	२ अक्टू.
श्री अग्रसेन जयंती	७ ''
श्री माधवाचार्य जयंती	१५ ''
महर्षि बाल्मीकि जयंती	२१ ''
श्री सरदार पटेल जयंती	३१ ''
श्री धन्वन्तरि जयंती	२ नवं.
श्री विश्वकर्मा जयंती	७ ''
श्री जलाराम जयंती	११ ''
श्री नेहरू जयंती	१४ ''
श्री कवि कालीदास जयंती	१६ ''
श्रीमती इन्दिरा गांधी जयंती	१९ ''
गुरु नानक जयंती	२० ''
डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जयंती	३ दिसं
नरसी मेहता जयंती	१० ''
श्री गीता जयंती	१५ ''
श्री दत्तात्रेय जयंती	१९ ''
महामना मदनमोहन मालवीय ज.	२५ ''
श्री ईसा जयंती	२५ ''

सन् २००३ ई.

गु. गोबिन्द सिंह जयंती	९ जन.
श्री नेताजी सुभाष जयंती	२३ ''
स्वा. विवेकानन्द जयंती	२४ ''
श्री रामानन्दाचार्य जयंती	२४ ''
श्री लाला लाजपतराय जयंती	२८ ''
योगी बाबा लालदायल जी	३ फर.
श्री माधवाचार्य जयंती	८ ''
गुरु रविदास जयंती	१६ ''
स्वामी दयानन्द सरस्वती जयंती	२६ ''
श्री रामकृष्ण परमहंस जयंती	५ मार्च
श्री दादूदयाल जयंती	११ ''
श्री चैतन्य महाप्रभु जयंती	१८ ''
श्री संत तुकाराम जयंती	२० ''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्राचीन मेला-दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला आर्यसमाज स्थापना दि.	१३ अप्रै.
" चीमा नानक सर (पंजाब)	१३ "
" गणगौर जयपुर (राज.)	१५ "
" माई सरखाना (पंजाब)	१९ "
" मनसा देवी (हरियाणा)	२० "
" बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	२० "
" ज्वालामुखी (हरचोवाल)	२० "
" ज्वालामुखी (गुरदासपुर)	२० "
" रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	२१ "
" कांसा देवी (रोपड़ कांसल)	२५ "
" देवी थीहरा (कैथल)	२६ "
" बाला सुन्दरी देवबन्द (उ.प्र.)	२६ "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	२७ "
" कशाधा नहयाणी सह-कुल्लू	३ मई
" पिंजोर (हरियाणा)	१२ "
" पीपल जातर (कुल्लू)	१७ "
" आनी आउडर सिराज (कुल्लू)	२६ "
" डूंगरीजातर (मनाली)	२ जून
" बंजार (कुल्लू)	२ "
" चनानी माताजी	३ "
" शाढी जातर नगर (हि.प्र.)	५ "
" हल्दीघाटी (राज.)	१३ "
" क्षीरभवानी कश्मीर	१८ "
" गंगादशहरा (हरिद्वार)	२० "
" सपोर यात्रा धारलदा-बुधमपुर	२० "
" बहिरे भटिण्डा (पंजाब)	२१ "
" पिपलू (ऊना, हि.प्र.)	२१ "
" शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	२४ "
" भून्तर (हि.प्र.)	३ जुला
" शरीफ भवानी (कश्मीर)	१८ "
" ज्वालामुखी (कश्मीर)	२३ "
" नैमिषारण्य (उ.प्र.)	२४ "
" गुरु पूर्णिमा (कुराली)	२४ "
" नानकसर (चीमा)	२८ "
" हरियाली अमा. (उदयपुर)	८ अग.
" चिन्तपूर्णी व नयना देवी-हि.प्र.	१५ "
" अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	२२ "
" द्रोण दनकौर (उ.प्र.)	२९ "
" जन्माष्टमी (मथुरा)	३१ "
" कैलाश यात्रा (कश्मीर) प्रा.	५ सितं.
" सुथरेशाह (दिल्ली)	७ "
" गुसांई आंणा (कुराली)	८ "
" रुणीचा रामदेव (जैसलमेर) प्रा.	८ "
मेला गणेशोत्सव मण्डी (हि.प्र.)	१० सित.
" गणेशोत्सव (महाराष्ट्र)	१० "
" पात (कश्मीर) प्रा.	११ "
" ब्रजमण्डल (उ.प्र.)	१२ "
" रामदेव (जैसलमेर)	१६ "
" चारभुजा नाथ (मेवाड़)	१७ "
" वामन द्वादशी (पटियाला)	१८ "
" सोडल (जालन्धर)	२० "
" छपार (पंजाब)	२० "
" गोयन्दवाल (पंजाब)	२१ "
" श्री आशापति यात्रा (का.)	५ अक्टू
" ज्वाला मुखी (हि.प्र.)	१३ "
" तारा देवी (हि.प्र.)	१३ "
" हरचोवाल (गुरदासपुर)	१३ "
" दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	१५ "
" शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	२० "
" देवी थीहरा (कैथल)	२० "
" दीपावली (अमृतसर)	४ नवं.
" अन्नकूट (गोवर्धन) पूजा	५ "
" बाल मेला (दिल्ली)	१४ "
" बाबा रुद्रानंद नारी ऊना, हि.प्र.	१५ "
" रेणुका नाहन (हि.प्र.)	१५ "
" वीरवैरागी नकोदर (पं.)	१७ "
" पुष्करराज (राज.)	२० "
" रामतीर्थ (अमृतसर)	२० "
" कपालमोचन (हरियाणा)	२० "
" गढ़गंगा (उ.प्र.)	२० "
" पुरमण्डल देविका स्ना. (ज.)	३ दिसं.
" जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)	१५ "
" संगीत हरबल्लभ प्रा.	१६ "

सन् २००३ ई.

" लोहड़ी (पंजाब)	१३ जन.
" मुक्तसर (पंजाब)	१४ "
" मस्तुआणां (पंजाब)	२२ "
" मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	१ फर.
" बसंत पंचमी (हि.प्र.)	६ "
" पंचखण्ड पीठ विराटनगर	१५ "
" डेजर्ट उत्सव जैसलमेर (रा.)	१५ "
" वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	१६ "
" महाशिवरात्रि मण्डी (हि.प्र.)	१ मार्च
" नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी)	१ "
" श्यामजी खाटू (राज.)	१३-१५ "
" होलामेला आनन्दपुर सा. पं.	१९ "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	१९ "
मेला पंखा (झझर)	१९ मार्च
" बीरमदास बछौली (पटि.)	२२ "
" गुरुरामराय (देहरादून)	२२ "
" शीतला माता (कुराली) पंजाब	२४ "
" पिहोवा (हरियाणा)	३१ "

क्रिश्चियन त्यौहार

रोगेशन सण्डे	५ मई
ऐसेन्शन होली थर्स डे	९ "
व्हीट सण्डे पेन्टेकोस्ट	१९ "
ट्रीनीटी सण्डे	२६ "
कोरपस क्रीस्टी	३० "
अडवेण्डमां प्रथम सण्डे	१ दिस.
क्रिसमस डे पहली सांझ	२४ "
क्रिसमस डे	२५ "
ईस्वी सन् प्रारंभ की पहली सांझ	३१ "
ईस्वी नव वर्ष २००३ प्रारंभ	१ जन.
ऐपीफेनी	६ "

सिक्खों के गुरु पर्व

गुरु तेगबहादुर जी	जन्म	१ मई
" अर्जुनदेव जी	"	३ "
" अंगद देव जी	"	१३ "
" अमरदास जी	"	२५ "
" हरगोविन्द जी	"	२५ जून
" हरकिशन जी	"	२ अग.
" रामदास जी	"	२३ अक्टू
" नानकदेव जी	"	२० नवं.

सन् २००३ ई.

" गोविन्द सिंह जी	"	९ जन.
" हरराय जी	"	१५ फर.

गुरुयाई मिली

गुरु अमरदास जी	१३ अप्रै.
" तेगबहादुर जी	२१ "
" हरराय जी	३० "
" हरगोविन्द जी	३ जून
" अर्जुनदेव जी	८ सितं.
" रामदास जी	१९ "
" अंगद देव जी	२६ "
" हरकिशन जी	३० अक्टू
" गोविन्द सिंह जी	६ दिसं.

ज्योति जोत समाए

गुरु अंगद देव जी	१६ अप्रै
गुरु हरगोविन्द जी	१८ अप्रैल
" हरकिशन जी	२६ "
" अर्जुनदेव जी	१४ जून
" रामदास जी	९ सितं.
" अमरदास जी	२१ "
" नानकदेव जी	२ अक्टू
" हरराय जी	३० "
" गोविन्द सिंह जी	९ नवं.
" तेग बहादुर जी	८ दिसं.

दशावतार जयन्तियाँ

श्री मत्स्य जयंती	१५ अप्रै.
श्री राम जयंती (राम नवमी)	२१ "
श्री परशुराम ज.	१४ मई
श्री नृसिंह जयंती	२५ "
श्री कूर्म जयंती	२६ "
श्री बुद्ध जयंती	२६ "
श्री कल्कि जयंती	१४ अग.
श्री कृष्ण जयंती	३०-३१ "
श्री वराह जयंती	९ सितं.
श्री वामन जयंती	१८ "

संक्रान्तियाँ

मेष	रविवार	१४ अप्रै.
वृष	मंगलवार	१४ मई
मिथुन	शनिवार	१५ जून
कर्क	मंगलवार	१६ जुला.
सिंह	शुक्रवार	१६ अग.
कन्या	सोमवार	१६ सितं.
तुला	गुरुवार	१७ अक्टू
वृश्चि.	शनिवार	१६ नवं.
धनु	सोमवार	१६ दिसं.
मकर	मंगलवार	१४ जन.
कुम्भ	गुरुवार	१३ फर.
मीन	शुक्रवार	१४ मार्च

व्रत पूर्णिमा

चैत्र	२६ अप्रै.	आश्विन	२० अक्टू.
वैशाख	२५ मई	कार्तिक	१९ नवं.
ज्येष्ठ	२४ जून	मार्गशीर्ष	१९ दिसं.
आषाढ़	२३ जुला.	पौष	१७ जन.
श्रावण	२२ अग.	माघ	१६ फर.
भाद्रपद	२१ सितं.	फाल्गुन	१७ मार्च

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गणेश चतुर्थी व्रत

मास	तिथि
वैशाख	३० अप्रैल
ज्येष्ठ	२९ मई
आषाढ़	२८ जून
श्रावण	२७ जुला.
श्रावण वरद चतुर्थी	१२ अग.
भाद्रपद	२६ अग.
भाद्रपद पत्थर चौथ	१० सित.
आश्विन	२५ सित.
कार्तिक करवा चौथ	२५ अक्टू.
मार्गशीर्ष	२३ नवं.
पौष	२३ दिसं.
माघ संकट चौथ	२१ जन.
फाल्गुन	२० फर.
चैत्र	२१ मार्च

अमावस्याएं

मास		तिथि
वैशाख		१२ मई
ज्येष्ठ	सोमवती	१० जून
आषाढ़		१० जुलाई
श्रावण		८ अगस्त
भाद्रपद		७ सितं.
अश्विन		६ अक्टू.
कार्तिक	सोमवती	४ नवं.
मार्गशीर्ष		४ दिसं.
पौष		२ जन.
माघ		१ फर.
फाल्गुन	सोमवती	३ मार्च
चैत्र	भौमवती	१ अप्रैल

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

श्राद्ध	तिथि
पूर्णिमा का श्राद्ध	२१ सितं.
प्रतिपदा का श्राद्ध	२२ "
द्वितीया का श्राद्ध	२३ "
तृतीया का श्राद्ध	२४ "
चतुर्थी का श्राद्ध	२५ "
पंचमी का श्राद्ध	२६ "
षष्ठी का श्राद्ध	२७ "
सप्तमी का श्राद्ध	२८ "
अष्टमी का श्राद्ध	२९ "
नवमी का श्राद्ध	३० "
दसमी का श्राद्ध	१ अक्टू.
एकादशी का श्राद्ध	२ "
द्वादशी का श्राद्ध	३ "
त्रयोदशी का श्राद्ध	४ "
चतुर्दशी का श्राद्ध	५ "
अमा. व सर्वपितृ श्राद्ध	६ "

एकादशी व प्रदोष व्रत

मास व पक्ष	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	
चैत्र शुक्ल	२३ अप्रैल	२४ अप्रैल	
बैशाख कृष्ण	७-८ मई	९ मई	
" शुक्ल	२२-२३ "	२४ "	
ज्येष्ठ कृष्ण	६ जून	८ जून	शनि प्रदोष
" शुक्ल	२१ "	२२ "	शनि प्रदोष
आषाढ़ कृष्ण	६ जुला.	७ जुला.	
" शुक्ल	२० "	२१ "	
श्रावण कृष्ण	५ अग.	६ अग.	भौम प्रदोष
" शुक्ल	१८ "	२० "	भौम प्रदोष
भाद्रपद कृष्ण	३ सितं.	४ सितं.	
" शुक्ल	१७ "	१८ "	
आश्विन कृष्ण	२-३ अक्टू.	४ अक्टू.	
" शुक्ल	१६ "	१८ "	
कार्तिक कृष्ण	१ नवं.	२ नवं.	शनि प्रदोष
" शुक्ल	१५ "	१७ "	
मार्गशीर्ष कृष्ण	३० "	२ दिसं.	सोम प्रदोष
" शुक्ल	१५ दिसं.	१७ "	भौम प्रदोष
पौष कृष्ण	३० "	३१ "	भौम प्रदोष
" शुक्ल	१४ जन.	१५ जन.	
माघ कृष्ण	२८ "	३० "	
" शुक्ल	१३ फर.	१४ फर.	
फाल्गुन कृष्ण	२६-२७ "	२८ "	
" शुक्ल	१४ मार्च	१६ मार्च	
चैत्र कृष्ण	२८ "	३० "	

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता. मास		घं.मि.	से	ता. मास		घं.मि.	तक
५ मई	२००२ ई	९।०२	"	१० मई	२००२ ई.	९।५३	"
१ जून	"	१७।०३	"	६ जून	"	१७।२६	"
२८ जून	"	२५।३५	"	३ जुलाई	"	२५।३२	"
२६ जुलाई	"	९।४२	"	३१ जुलाई	"	९।२७	"
२२ अगस्त	"	१६।४५	"	२७ अगस्त	"	१६।३८	"
१८ सितम्बर	"	२२।४६	"	२३ सितम्बर	"	२३।०१	"
१५ अक्टूबर	"	२८।३४	"	२० अक्टूबर	"	२९।०५	"
१२ नवम्बर	"	११।१६	"	१७ नवम्बर	"	११।३३	"
९ दिसम्बर	"	१९।३६	"	१४ दिसम्बर	"	१८।५१	"
५ जनवरी	२००३ ई.	२८।५९	"	१० जनवरी	२००३ ई.	२६।५४	"
२ फरवरी	"	१४।००	"	७ फरवरी	"	११।०६	"
१ मार्च	"	२१।२३	"	६ मार्च	"	१८।४५	"
२८ मार्च	"	२७।१४	"	२ अप्रैल	"	२५।२९	"

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
११ अप्रैल	२४।२८	"	१३ अप्रैल	२९।४५	"
२१ "	१२।१३	"	२३ "	९।००	"
२९ "	१६।३३	"	१ मई	१५।३५	"
९ मई	७।१०	"	११ "	१२।१८	"
१८ "	१७।५७	"	२० "	१५।४६	"
२६ "	२६।४१	"	२८ "	२५।१५	"
५ जून	१४।४०	"	७ जून	१९।५३	"
१४ "	२३।३१	"	१६ "	२१।११	"
२३ "	११।२५	"	२५ "	१०।२६	"
२ जुलाई	२२।३९	"	४ जुलाई	२८।०९	"
१२ "	६।३४	"	१३ "	२७।१३	"
२० "	१८।०८	"	२२ "	१८।०३	"
३० "	६।२७	"	१ अगस्त	१२।१९	"
८ अगस्त	१५।३९	"	१० "	११।१७	"
१६ "	२३।३६	"	१८ "	२४।०४	"
२६ "	१३।३६	"	२८ "	१९।४०	"
४ सितं.	२५।५७	"	६ सितं.	२१।२२	"
१२ "	२९।३२	"	१४ "	२९।३३	"
२२ "	२०।००	"	२४ "	२६।०४	"
२ अक्टू.	११।४९	"	४ अक्टूबर	८।०८	"
१० "	१३।३२	"	१२ "	१२।११	"
१९ "	२६।०५	"	२२ "	८।०३	"
२९ "	१९।४७	"	३१ "	१७।४०	"
६ नवम्बर	२३।४७	"	८ नवम्बर	२१।००	"
१६ "	८।३१	"	१८ "	१४।२८	"
२५ "	२५।४२	"	२७ "	२४।४५	"
४ दिसं.	१०।४६	"	६ दिसम्बर	७।२७	"
१३ "	१५।४८	"	१५ "	२१।४९	"
२३ "	७।१७	"	२४ "	३०।११	"
३१ "	२०।१७	"	२ जनवरी २००३	१७।३७	"
९ जनवरी २००३	२३।५५	"	११ "	२९।५८	"
१९ "	१४।३२	"	२१ "	१२।२१	"
२७ "	२७।१०	"	२९ "	२५।४२	"
६ फरवरी	८।१५	"	८ फरवरी	१४।१२	"
१५ "	२३।५८	"	१७ "	२०।५४	"
२४ "	८।३१	"	२६ "	७।३६	"
५ मार्च	१५।५८	"	७ मार्च	२१।४९	"
१५ "	१०।१७	"	१७ "	७।२१	"
२३ "	१४।४८	"	२५ "	१३।५	"
१ अप्रैल	२२।३९	"	३ अप्रैल	२८।३२	"

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्राचीन मेला-दशहरा तथा अन्य उत्सव

मेला	तिथि
मेला आर्यसमाज स्थापना दि.	१३ अप्रै.
" चीमा नानक सर (पंजाब)	१३ "
" गणगौर जयपुर (राज.)	१५ "
" माई सरखाना (पंजाब)	१९ "
" मनसा देवी (हरियाणा)	२० "
" बाहुफोर्ट (जम्मू-कश्मीर)	२० "
" ज्वालामुखी (हरचोवाल)	२० "
" ज्वालामुखी (गुरदासपुर)	२० "
" रामजन्मोत्सव (अयोध्या)	२१ "
" कांसा देवी (रोपड़ कांसल)	२५ "
" देवी थीहरा (कैथल)	२६ "
" बाला सुन्दरी देवबन्द (उ.प्र.)	२६ "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	२७ "
" कशाधा नहयाणी सह-कुल्लू	३ मई
" पिंजोर (हरियाणा)	१२ "
" पीपल जातर (कुल्लू)	१७ "
" आनी आउडर सिराज (कुल्लू)	२६ "
" डूंगरीजातर (मनाली)	२ जून
" बंजार (कुल्लू)	२ "
" चनानी माताजी	३ "
" शाढी जातर नगर (हि.प्र.)	५ "
" हल्दीघाटी (राज.)	१३ "
" क्षीरभवानी कश्मीर	१८ "
" गंगादशहरा (हरिद्वार)	२० "
" सपोर यात्रा धारलदा-बुधमपुर	२० "
" बहिरे भटिण्डा (पंजाब)	२१ "
" पिपलू (ऊना, हि.प्र.)	२१ "
" शुद्ध महादेव यात्रा (ऊधमपुर)	२४ "
" भून्तर (हि.प्र.)	३ जुला
" शरीफ भवानी (कश्मीर)	१८ "
" ज्वालामुखी (कश्मीर)	२३ "
" नैमिषारण्य (उ.प्र.)	२४ "
" गुरु पूर्णिमा (कुराली)	२४ "
" नानकसर (चीमा)	२८ "
" हरियाली अमा. (उदयपुर)	८ अग.
" चिन्तपूर्णी व नयना देवी-हि.प्र.	१५ "
" अमरनाथ दर्शन (कश्मीर)	२२ "
" द्रोण दनकौर (उ.प्र.)	२९ "
" जन्माष्टमी (मथुरा)	३१ "
" कैलाश यात्रा (कश्मीर) प्रा.	५ सितं.
" सुथरेशाह (दिल्ली)	७ "
" गुसांई आंणा (कुराली)	८ "
" रुणीचा रामदेव (जैसलमेर) प्रा.	८ "
मेला गणेशोत्सव मण्डी (हि.प्र.)	१० सितं.
" गणेशोत्सव (महाराष्ट्र)	१० "
" पात (कश्मीर) प्रा.	११ "
" ब्रजमण्डल (उ.प्र.)	१२ "
" रामदेव (जैसलमेर)	१६ "
" चारभुजा नाथ (मेवाड़)	१७ "
" वामन द्वादशी (पटियाला)	१८ "
" सोडल (जालन्धर)	२० "
" छपार (पंजाब)	२० "
" गोयन्दवाल (पंजाब)	२१ "
" श्री आशापति यात्रा (का.)	५ अक्टू.
" ज्वाला मुखी (हि.प्र.)	१३ "
" तारा देवी (हि.प्र.)	१३ "
" हरचोवाल (गुरदासपुर)	१३ "
" दशहरा कुल्लू (हि.प्र.)	१५ "
" शाकम्भरी देवी (उ.प्र.)	२० "
" देवी थीहरा (कैथल)	२० "
" दीपावली (अमृतसर)	४ नवं.
" अन्नकूट (गोवर्धन) पूजा	५ "
" बाल मेला (दिल्ली)	१४ "
" बाबा रुद्रानंद नारी ऊना, हि.प्र.	१५ "
" रेणुका नाहन (हि.प्र.)	१५ "
" वीरवैरागी नकोदर (पं.)	१७ "
" पुष्करराज (राज.)	२० "
" रामतीर्थ (अमृतसर)	२० "
" कपालमोचन (हरियाणा)	२० "
" गढ़गंगा (उ.प्र.)	२० "
" पुरमण्डल देविका स्ना. (ज.)	३ दिसं.
" जोड़ फतेहगढ़ साहिब (पं.)	१५ "
" संगीत हरबल्लभ प्रा.	१६ "

सन् २००३ ई.

मेला	तिथि
" लोहड़ी (पंजाब)	१३ जन.
" मुक्तसर (पंजाब)	१४ "
" मस्तुआणां (पंजाब)	२२ "
" मौनी अमावस्या (हरिद्वार)	१ फर.
" बसंत पंचमी (हि.प्र.)	६ "
" पंचखण्ड पीठ विराटनगर	१५ "
" डेज़र्ट उत्सव जैसलमेर (रा.)	१५ "
" वेणेश्वर बांसवाड़ा (राज.)	१६ "
" महाशिवरात्रि मण्डी (हि.प्र.)	१ मार्च
" नीलकण्ठ महादेव (पौड़ी)	१ "
" श्यामजी खाटू (राज.)	१३-१५ "
" होलामेला आनन्दपुर सा. पं.	१९ "
" मानकपुर शरीफ (रोपड़)	१९ "
मेला पखा (झझर)	१९ मार्च
" बीरमदास बछौली (पटि.)	२२ "
" गुरुरामराय (देहरादून)	२२ "
" शीतला माता (कुराली) पंजाब	२४ "
" पिहोवा (हरियाणा)	३१ "

क्रिश्चियन त्यौहार

त्यौहार	तिथि
रोगेशन सण्डे	५ मई
ऐसेन्शन होली थर्स डे	९ "
व्हीट सण्डे पेन्टेकोस्ट	१९ "
ट्रीनीटी सण्डे	२६ "
कोरपस क्रीस्टी	३० "
अडवेण्डमां प्रथम सण्डे	१ दिस.
क्रिसमस डे पहली सांझ	२४ "
क्रिसमस डे	२५ "
ईस्वी सन् प्रारंभ की पहली सांझ	३१ "
ईस्वी नव वर्ष २००३ प्रारंभ	१ जन.
ऐपीफेनी	६ "

सिक्खों के गुरु पर्व

गुरु		तिथि
गुरु तेगबहादुर जी	जन्म	१ मई
" अर्जुनदेव जी	"	३ "
" अंगद देव जी	"	१३ "
" अमरदास जी	"	२५ "
" हरगोविन्द जी	"	२५ जून
" हरकिशन जी	"	२ अग.
" रामदास जी	"	२३ अक्टू.
" नानकदेव जी	"	२० नवं.

सन् २००३ ई.

गुरु		तिथि
" गोविन्द सिंह जी	"	९ जन.
" हरराय जी	"	१५ फर.

गुरुयाई मिली

गुरु	तिथि
गुरु अमरदास जी	१३ अप्रै.
" तेगबहादुर जी	२१ "
" हरराय जी	३० "
" हरगोविन्द जी	३ जून
" अर्जुनदेव जी	८ सितं.
" रामदास जी	१९ "
" अंगद देव जी	२६ "
" हरकिशन जी	३० अक्टू.
" गोविन्द सिंह जी	६ दिसं.

ज्योति जोत समाये

गुरु	तिथि
गुरु अंगद देव जी	१६ अप्रै.
गुरु हरगोविन्द जी	१८ अप्रैल
" हरकिशन जी	२६ "
" अर्जुनदेव जी	१४ जून
" रामदास जी	९ सितं.
" अमरदास जी	२१ "
" नानकदेव जी	२ अक्टू.
" हरराय जी	३० "
" गोविन्द सिंह जी	९ नवं.
" तेग बहादुर जी	८ दिसं.

दशावतार जयन्तियाँ

जयंती	तिथि
श्री मत्स्य जयंती	१५ अप्रै.
श्री राम जयंती (राम नवमी)	२१ "
श्री परशुराम ज.	१४ मई
श्री नृसिंह जयंती	२५ "
श्री कूर्म जयंती	२६ "
श्री बुद्ध जयंती	२६ "
श्री कल्कि जयंती	१४ अग.
श्री कृष्ण जयंती	३०-३१ "
श्री वराह जयंती	९ सितं.
श्री वामन जयंती	१८ "

संक्रान्तियाँ

राशि	वार	तिथि
मेष	रविवार	१४ अप्रै.
वृष	मंगलवार	१४ मई
मिथुन	शनिवार	१५ जून
कर्क	मंगलवार	१६ जुला.
सिंह	शुक्रवार	१६ अग.
कन्या	सोमवार	१६ सितं.
तुला	गुरुवार	१७ अक्टू.
वृश्चि.	शनिवार	१६ नवं.
धनु	सोमवार	१६ दिसं.
मकर	मंगलवार	१४ जन.
कुम्भ	गुरुवार	१३ फर.
मीन	शुक्रवार	१४ मार्च

व्रत पूर्णिमा

मास	तिथि	मास	तिथि
चैत्र	२६ अप्रै.	आश्विन	२० अक्टू.
वैशाख	२५ मई	कार्तिक	१९ नवं.
ज्येष्ठ	२४ जून	मार्गशीर्ष	१९ दिसं.
आषाढ़	२३ जुला.	पौष	१७ जन.
श्रावण	२२ अग.	माघ	१६ फर.
भाद्रपद	२१ सितं.	फाल्गुन	१७ मार्च

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गणेश चतुर्थी व्रत

वैशाख	३० अप्रैल
ज्येष्ठ	२९ मई
आषाढ़	२८ जून
श्रावण	२७ जुला.
श्रावण वरद चतुर्थी	१२ अग.
भाद्रपद	२६ अग.
भाद्रपद पत्थर चौथ	१० सित.
आश्विन	२५ सित.
कार्तिक करवा चौथ	२५ अक्टू.
मार्गशीर्ष	२३ नवं.
पौष	२३ दिसं.
माघ संकट चौथ	२१ जन.
फाल्गुन	२० फर.
चैत्र	२१ मार्च

अमावस्याएं

वैशाख		१२ मई
ज्येष्ठ	सोमवती	१० जून
आषाढ़		१० जुलाई
श्रावण		८ अगस्त
भाद्रपद		७ सितं.
आश्विन		६ अक्टू.
कार्तिक	सोमवती	४ नवं.
मार्गशीर्ष		४ दिसं.
पौष		२ जन.
माघ		१ फर.
फाल्गुन	सोमवती	३ मार्च
चैत्र	भौमवती	१ अप्रैल

आश्विन कृष्ण पक्ष के श्राद्ध

पूर्णिमा का श्राद्ध	२१ सित.
प्रतिपदा का श्राद्ध	२२ ''
द्वितीया का श्राद्ध	२३ ''
तृतीया का श्राद्ध	२४ ''
चतुर्थी का श्राद्ध	२५ ''
पंचमी का श्राद्ध	२६ ''
षष्ठी का श्राद्ध	२७ ''
सप्तमी का श्राद्ध	२८ ''
अष्टमी का श्राद्ध	२९ ''
नवमी का श्राद्ध	३० ''
दसमी का श्राद्ध	१ अक्टू
एकादशी का श्राद्ध	२ ''
द्वादशी का श्राद्ध	३ ''
त्रयोदशी का श्राद्ध	४ ''
चतुर्दशी का श्राद्ध	५ ''
अमा. व सर्वपितृ श्राद्ध	६ ''

एकादशी व प्रदोष व्रत

मास व पक्ष	एकादशी व्रत	प्रदोष व्रत	
चैत्र शुक्ल	२३ अप्रैल	२४ अप्रैल	
बैशाख कृष्ण	७-८ मई	९ मई	
'' शुक्ल	२२-२३ ''	२४ ''	
ज्येष्ठ कृष्ण	६ जून	८ जून	शनि प्रदोष
'' शुक्ल	२१ ''	२२ ''	शनि प्रदोष
आषाढ़ कृष्ण	६ जुला.	७ जुला.	
'' शुक्ल	२० ''	२१ ''	
श्रावण कृष्ण	५ अग.	६ अग.	भौम प्रदोष
'' शुक्ल	१८ ''	२० ''	भौम प्रदोष
भाद्रपद कृष्ण	३ सितं.	४ सितं.	
'' शुक्ल	१७ ''	१८ ''	
आश्विन कृष्ण	२-३ अक्टू.	४ अक्टू.	
'' शुक्ल	१६ ''	१८ ''	
कार्तिक कृष्ण	१ नवं.	२ नवं.	शनि प्रदोष
'' शुक्ल	१५ ''	१७ ''	
मार्गशीर्ष कृष्ण	३० ''	२ दिसं.	सोम प्रदोष
'' शुक्ल	१५ दिसं.	१७ ''	भौम प्रदोष
पौष कृष्ण	३० ''	३१ ''	भौम प्रदोष
'' शुक्ल	१४ जन.	१५ जन.	
माघ कृष्ण	२८ ''	३० ''	
'' शुक्ल	१३ फर.	१४ फर.	
फाल्गुन कृष्ण	२६-२७ ''	२८ ''	
'' शुक्ल	१४ मार्च	१६ मार्च	
चैत्र कृष्ण	२८ ''	३० ''	

पंचक आरम्भ व समाप्ति काल

ता. मास		घं.मि.	से	ता. मास		घं.मि.	तक
५ मई	२००२ ई	९।०२	''	१० मई	२००२ ई.	९।५३	''
१ जून	''	१७।०३	''	६ जून	''	१७।२६	''
२८ जून	''	२५।३५	''	३ जुलाई	''	२५।३२	''
२६ जुलाई	''	९।४२	''	३१ जुलाई	''	९।२७	''
२२ अगस्त	''	१६।४५	''	२७ अगस्त	''	१६।३८	''
१८ सितम्बर	''	२२।४६	''	२३ सितम्बर	''	२३।०१	''
१५ अक्टूबर	''	२८।३४	''	२० अक्टूबर	''	२९।०५	''
१२ नवम्बर	''	११।१६	''	१७ नवम्बर	''	११।३३	''
९ दिसम्बर	''	१९।३६	''	१४ दिसम्बर	''	१८।५१	''
५ जनवरी	२००३ ई.	२८।५९	''	१० जनवरी	२००३ ई.	२६।५४	''
२ फरवरी	''	१४।००	''	७ फरवरी	''	११।०६	''
१ मार्च	''	२१।२३	''	६ मार्च	''	१८।४५	''
२८ मार्च	''	२७।१४	''	२ अप्रैल	''	२५।२९	''

गंडमूल नक्षत्रों का प्रारम्भ व समाप्ति काल

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि.	तक
११ अप्रैल	२४।२८	''	१३ अप्रैल	२९।४५	''
२१ ''	१२।१३	''	२३ ''	९।००	''
२९ ''	१६।३३	''	१ मई	१५।३५	''
९ मई	७।१०	''	११ ''	१२।१८	''
१८ ''	१७।५७	''	२० ''	१५।४६	''
२६ ''	२६।४१	''	२८ ''	२५।१५	''
५ जून	१४।४०	''	७ जून	१९।५३	''
१४ ''	२३।३१	''	१६ ''	२१।११	''
२३ ''	११।२५	''	२५ ''	१०।२६	''
२ जुलाई	२२।३९	''	४ जुलाई	२८।०९	''
१२ ''	६।३४	''	१३ ''	२७।१३	''
२० ''	१८।०८	''	२२ ''	१८।०३	''
३० ''	६।२७	''	१ अगस्त	१२।१९	''
८ अगस्त	१५।३९	''	१० ''	११।१७	''
१६ ''	२३।३६	''	१८ ''	२४।०४	''
२६ ''	१३।३६	''	२८ ''	१९।४०	''
४ सितं.	२५।५७	''	६ सितं.	२१।२२	''
१२ ''	२९।३२	''	१४ ''	२९।३३	''
२२ ''	२०।००	''	२४ ''	२६।०४	''
२ अक्टू.	११।४९	''	४ अक्टूबर	८।०८	''
१० ''	१३।३२	''	१२ ''	१२।११	''
१९ ''	२६।०५	''	२२ ''	८।०३	''
२९ ''	१९।४७	''	३१ ''	१७।४०	''
६ नवम्बर	२३।४७	''	८ नवम्बर	२१।००	''
१६ ''	८।३१	''	१८ ''	१४।२८	''
२५ ''	२५।४२	''	२७ ''	२४।४५	''
४ दिसं.	१०।४६	''	६ दिसम्बर	७।२७	''
१३ ''	१५।४८	''	१५ ''	२१।४९	''
२३ ''	७।१७	''	२४ ''	३०।११	''
३१ ''	२०।१७	''	२ जनवरी २००३	१७।३७	''
९ जनवरी २००३	२३।५५	''	११ ''	२९।५८	''
१९ ''	१४।३२	''	२१ ''	१२।२१	''
२७ ''	२७।१०	''	२९ ''	२५।४२	''
६ फरवरी	८।१५	''	८ फरवरी	१४।१२	''
१५ ''	२३।५८	''	१७ ''	२०।५४	''
२४ ''	८।३१	''	२६ ''	७।३६	''
५ मार्च	१५।५८	''	७ मार्च	२१।४९	''
१५ ''	१०।१७	''	१७ ''	७।२१	''
२३ ''	१४।४८	''	२५ ''	१३।५	''
१ अप्रैल	२२।३९	''	३ अप्रैल	२८।३२	''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दैवज्ञ की दृष्टि में संसार चक्र

विक्रम संवत् २०५९ (दिनांक १३ अप्रैल २००२ ई. से १ अप्रैल २००३ ई. तक)

- वर्ष के राजा मंत्री शनि व दश अधिकारियों, वर्ष लग्न, जगल्लग्न, एवं अन्यान्यग्रह योगों का सामूहिक प्रभाव सम्पूर्ण विश्व के लिए अनेक चुनौतियों सहित अग्नि परीक्षा तुल्य रहेगा।
- अरब, ईरान, इराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, चीन, ब्रिटेन, अफ्रीका और अमेरिका, रूस आदि बड़े राष्ट्रों के प्रधान शासकों को अनेक राजनैतिक संकट, युद्धोन्माद व प्रजा चिन्तित।
- कई राष्ट्रों में अर्थ संकट गहरा कर मंहगाई, बेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार गतिविधियों से जनाक्रोश।
- संसार के अधिकतर भूभागों में भूकम्प-भूस्खलन, तूफान, बाढ़, महामारी आदि प्राकृतिक विपत्तियाँ तथा वाहन-यान व रेल दुर्घटनाओं से जनता विक्षिप्त।
- भारतीय वैज्ञानिकों की नवीन चमत्कारिक प्रगति से पाश्चात्य राष्ट्र स्तब्ध।
- देश के कई प्रान्तों में चोरी, लूट, डाका, दुराचार व पाखण्ड का आतंक प्रधान शासकों के लिए चुनौतीपूर्ण रहेगा।
- विरोधी दल सक्रिय होगा, अपना वर्चस्व बढ़ाने की सफल व सार्थक भूमिका।
- शनि राहु के सामञ्जस्य से पश्चिमोत्तर सीमाओं व पड़ोसी राष्ट्रों से तनाव एवं युद्धोन्मादकारी योगप्रद।

विगत डेढ़ दशक से "**श्री आर्यभट्ट पंचांग**" द्वारा ज्योतिष शास्त्र का अध्ययन अनुशीलन करके विश्व व भारत के सम्बन्ध में जो भविष्यवाणियां की गई उससे सभी पाठक परिचित हैं। निराश्रित ज्योतिष विज्ञान ने आज गणित के विभाग में शत-प्रतिशत सत्यता सिद्ध कर दी हैं एवं गणित द्वारा वर्षों पूर्व सूर्य-चन्द्रग्रहणों का प्रारम्भ व समाप्ति काल का समय निर्धारित किया है उसमें एक मिनट का भी अन्तर नहीं होता है। परन्तु फलित के विभाग में अभी पूर्ण शोध चल रहा है। वैसे फलित ज्योतिष को इष्ट साधन व दैवविद्या कहा जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। अत: संसार, राष्ट्र व राज्य के अलावा व्यक्ति के सम्बन्ध में भविष्य बताने वाले को दैवज्ञ माना गया है। साधना, तपस्या व अनुभव से प्राप्त दैवविद्या पर शोध करने वाला व्यक्ति आज के युग में साधनाहीन है। ग्रहों की गति व इष्ट संकेतों को समझने में भूल हो सकती है। अत: समस्त की गयी भविष्यवाणियां सदा सत्य ही हों की कसौटी पर उतारना उचित नहीं होगा। ज्योतिष ज्ञान द्वारा अनन्त आकाश में जो ग्रह, नक्षत्र, तारागण अपनी-अपनी वक्र-मार्गी गति से विचरण करते हुए आकर्षण-विकर्षण के द्वारा भूमण्डल पर होने वाले परिवर्तन एवं प्रभाव को जाना जाता है। अनन्त आकाश में कोई भी ग्रह कितनी ही दूरी पर क्यों न हो जब वह अपनी स्थिति बदलता है तो विश्व की परिस्थिति को अवश्य प्रभावित करता है। प्रतिवर्ष आकाशी परिषद् को गति प्रदान करने के लिए ग्रह परिषद् की नव नियुक्ति होती है। इस ग्रह परिषद् के बलाबल और वर्षलग्न, जगत् लग्न में उनका स्थान होने से प्राचीन ग्रन्थ वराह मिहिराचार्य कृत "**वाराही संहिता**" के आधार पर "**दैवज्ञ**" वर्ष के शुभाशुभ फल जानने में सक्षम होते हैं। ग्रहों के उदयास्त, वक्र-मार्ग, परस्पर अंशयोग, सम-सप्तम योग (प्रतियोग) से संसार में कहां-कहां अशांति या शांति उत्पन्न होगी। इसके लिए संघट्ट चक्र, सर्वतोभद्र चक्र, कूर्मचक्र आदि को आधार मानकर हम अपनी स्वल्प बुद्धि से जो कुछ लिखते आ रहे हैं। वे सभी अभी तक ७०-८० प्रतिशत सत्य साबित हुई हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवीन विक्रम संवत् २०५९ का भली भाँति फल जानने के लिए ग्रहों की सूक्ष्म स्थिति का विवेचन और पर्यवेक्षण होना परमावश्यक होता है। अत: हम यहाँ प्रमुख ग्रहों की वर्षारंभ एवं वर्ष समाप्ति काल की ग्रह स्थिति का उल्लेख कर रहे है। जो चित्रापक्षीय निरयन मान से निम्न प्रकार हैं:--

वर्ष प्रारंभ १३ अप्रैल २००२ ई. प्रात: ५.३० बजे वर्षान्त १ अप्रैल २००३ ई. प्रात: ५.३० बजे

राशि	अंश	कला	विकला	वक्री/मार्गी	प्रमुख ग्रहा:	राशि	अंश	कला	विकला	वक्री/मार्गी
१	५	३६	५२	मार्गी	← मंगल →	८	२३	१३	११	मार्गी
२	१४	२९	३६	मार्गी	← गुरू →	३	१४	१०	४३	वक्री
१	१७	३९	४५	मार्गी	← शनि →	१	२९	३१	४८	मार्गी
१	२५	२८	२३	वक्री	← राहु →	१	८	२२	८	वक्री
७	२५	२८	२३	वक्री	← केतु →	७	८	२२	८	वक्री
१०	३	५५	२९	मार्गी	← हर्षल →	१०	७	११	३८	मार्गी
९	१६	५०	४०	मार्गी	←नेपच्यून→	९	१८	४४	४४	मार्गी
७	२३	३५	४६	वक्री	← प्लूटो →	७	२६	१	५१	वक्री

मंगल— वर्ष प्रारंभ में वृष राशि में ता. १९ मई को मिथुन में, ४ जुलाई को कर्क में, १९ अगस्त को सिंह में, ६ अक्टूबर को कन्या में, २२ नवम्बर को तुला में, ७ जनवरी २००३ को वृश्चिक में व ता. २३ फरवरी से वर्ष समाप्ति तक धनु राशि में गोचरीय भ्रमण करेगा। ता. १७ जून से ता. ३० सितम्बर तक पश्चिम में अस्तंगत रहेगा।

गुरु— वर्ष के शुरू से ता. ४ जुलाई तक मिथुन में तथा ता. ५ जुलाई से वर्ष समाप्ति काल तक कर्क राशि में रहेगा। ता. ९ जुलाई से ३१ जुलाई तक पश्चिमास्त रहेगा। ता. ५ दिसम्बर से वर्षान्त तक वक्र गति रहेगा।

शनि— वर्ष प्रारम्भ से वृष राशि पर, ता. २३ जुलाई से मिथुन में रहकर ता. १० अक्टूबर को वक्री तथा ता. ८ जनवरी को पुन: वृष राशि में वर्ष समाप्ति तक रहेगा और ता. २२ फरवरी को मार्गी होगा।

राहु केतु— वर्ष आरम्भ से समाप्ति तक राहु वृष राशि में एवं केतु वृश्चिक राशि में रहेगा।

हर्षल— सम्पूर्ण वर्ष कुम्भ राशि में रहेगा। ता. ३ जून से ता. ४ नवम्बर तक वक्री रहेगा।

नेपच्यून— पूर्ण वर्ष में मकर राशि में गोचर भ्रमण करेगा। ता. १३ मई से ता. २० अक्टूबर तक वक्र गति रहेगा।

प्लूटो— वर्षारंभ से वर्षान्त तक वृश्चिक राशि में रहेगा और वर्ष प्रारंभ से वक्री रहकर ता. २६ अगस्त को मार्गी होगा तथा ता. २३ मार्च को वक्री होगा। जो वर्ष समाप्ति तक चलेगा।

नवीन वर्ष के शुभाशुभ फल

संवत् २०५९ विक्रमी में ग्रहों की आकाशी कौंसिल में छ: अधिकार क्रूर ग्रहों को तथा चार अधिकार सौम्य ग्रहों को प्राप्त हुए हैं। तेजस्वी ग्रह सूर्य देव को केवल धान्याधिप का एक अधिकार मिला है और निशिपति चन्द्रदेव को भी धनेश का एक अधिकार प्राप्त हुआ है। मंगल दो अधिकारों नीरसेश व सस्याधिप पदों से विभूषित हुआ है। बुध को अधिकार नहीं मिला। गुरु रस स्वामी बने हैं। शुक्र फलेश व दुर्गेश अधिकारी हुए हैं। राजा व मंत्री एवं मेघेश इन ३ प्रमुख पदों पर स्वयं शनि देव विराजमान हुए हैं। इस प्रकार क्रूर ग्रहों का वर्ष में विशेष अधिकारी होना, अन्तर्राष्ट्रीय जगत में आश्चर्यजनक व अकल्पित दुर्घटनाएं, घोर अशान्ति, आतंकवादी उपद्रव, प्रजा में कष्ट व भय, प्राकृतिक आपदायें, चक्रवात, तूफान, भूकम्प, रोगोपद्रव आदि अनिष्टकारी फलों की विशेषता कारक रहेगा। विश्व के अनेक राष्ट्रों में आर्थिक मन्दी से संकट का दौर बढ़ेगा। वर्ष प्रारम्भ काल में अशुभ ग्रह योगों के प्रभाव से विश्व के अनेक राष्ट्रों में आन्तरिक कलह व सीमा विवाद बढ़कर युद्धाग्नि भड़केगी। देश के विभिन्न प्रान्तों में उग्रवाद की वृद्धि होकर अराजकता, उत्पात, चोरी, लूट व हिंसा की घटनाओं से शासकों में चिन्ताएं बढ़ेंगी। शेष चार ग्रह जो सौम्य स्वभाव के हैं अपने प्रभुत्व से देश की वैज्ञानिक ज्ञान प्रतिभा, औद्योगिक विकास और शांति वार्ता के नये आयाम से संसार में ख्याति अर्जित कर पायेंगे।

वर्ष प्रवेश कुण्डली
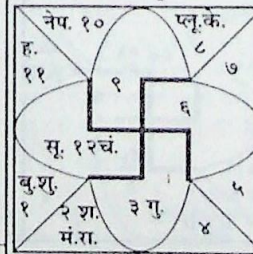
विक्रम संवत् २०५९ का प्रारम्भ सं. २०५८ के चैत्र कृष्ण अमावस्या शुक्रवार ता. १२ अप्रैल २००२ई. के रात्रि २४ बजकर ५३ मिनट पर इष्ट घट्यादि ४७।१० लग्न धनु में प्रवेश हो रहा है। जिसकी तात्कालिक कुण्डली सामने दी जा रही है। जिसका शास्त्रों में फल इस प्रकार लिखा है। यथा-

धनुर्लग्नेतूत्तरस्यां पूर्वस्यां च सुखं नृणाम्।
दुर्भिक्षं प्रबला वृष्टिर्मध्य देशे सरोगता॥
पश्चिमायां घृतं धान्यं समर्घ मास पंचकम्।
दक्षिणस्यां सुखं लोके किंचित् पीडा चतुष्पदे॥

वर्ष लग्न स्वामी चतुर्थेश बनकर सप्तम भाव में बैठकर लग्न को देखने से विश्व में शक्तिशाली राष्ट्रों के शासकों में अहं की वृद्धिकारक है और षष्ठ (शत्रु) भाव में मंगल, राहु व शनि तीन पाप ग्रहों का योग अनेक राष्ट्रों में प्राकृतिक प्रकोप व रोगोपद्रव, भूकम्प, बाढ़, चक्रवात, तूफान तथा वाहन यान रेल आदि यातायात साधनों की दुर्घटनाएं एवं युद्धादि उन्मादकारी फलप्रद है। मंगल व शुक्र का राशि परिवर्तन योग से बड़े राष्ट्रों अमेरिका, बेलजियम, इंग्लैण्ड, फ्रांस, अफ्रीका और यवन राष्ट्र अरब, इरान, ईराक, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, चीन, रूस आदि में आन्तरिक कलह, विस्फोटक घटनाएं, अग्निकाण्ड, हिंसाएं और सैनिक संघर्ष होंगे। यद्यपि शुक्र व बुध लाभेश दशमेश होने के कारण षडयंत्रकारी गिरोह व स्वार्थ लोलुप शासकों का पर्दा फास करेगा। न्यायपालिकाओं के वर्चस्व में वृद्धि होगी।

वर्ष का राजा शनि व मंत्री भी शनि और मन्मथ नाम के संवत्सर से आरम्भ में ही विश्व की आतंकवादी ताकतों पर अंकुश लगाने के लिए संयुक्त राष्ट्र द्वारा नवीन कानून व्यवस्था जो कठोर और सद्य प्रभावी बनायी जायेगी। चैत्र मास के उत्तरार्द्ध में श+शु+मं.+रा+बु. पंचग्रही योग विनाशकारी उपद्रव के फलदाता हैं। यह ता. २० अप्रैल से १५ मई तक रहेगा। **एकराशौ यदा यान्ति चत्वार: पंच खेचरा। प्लावयंति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥** वैशाख शुक्ल पक्ष तक का उक्त योग अकल्पित घटनाकारी रहेगा। ता. १६ मई से ता. ९ जून ज्येष्ठ कृष्ण तक गुरु, शुक्र योग युद्ध विभीषिका से प्रजा में भय कारक रहेगा। **गुरु शुक्रौ यदैकस्थो नर युद्धं तदा भवेत्। अकाले वा भवेद् वृष्टि: जगत्यां नात्र संशय:॥** धार्मिक-साम्प्रदायिक कटुता गहराकर यवन राष्ट्रों में घोर अशांति का वातावरण बढ़ेगा। शुक्र दुर्गेश व गुरु वर्ष लग्नेश दोनों का एक साथ भ्रमण हिंसा के अलावा असामयिक सत्ता परिवर्तन अथवा कहीं किसी शासक की अकल्पित मृत्यु संभव फलप्रद है। श्रावण शुक्ल में ता. २० अगस्त से भाद्रपद शुक्ल की ता. १७ सितम्बर तक सूर्य, मंगल योग यूरोप, फ्रांस, इटली, जर्मनी, इजरायल, श्रीलंका, नेपाल, वर्मा, जापान व चीन, तिब्बत तथा भारत के दक्षिणी राज्यों में भूकम्प, चक्रवात, समुद्री तूफान, रोगोपद्रव आदि प्राकृतिक विपत्तियां पैदा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

करने का फल कारक है। **सिंह राशि स्थितो भानु भूमि पुत्रस्तथैव च। प्रजाकष्टं छत्रभंगं भयभीता च मेदिनी॥** इस वर्ष शनि का मिथुन राशि में आना पाश्चात्य व शक्तिशाली राष्ट्रों के लिए विशेष अनिष्टकारी रहेगा। अमेरिका, ब्रिटेन, पश्चिमी यूरोप, अरब राष्ट्र, मोरक्को, सूडान, तुर्कीस्तान तथा जापान व वियतनाम आदि राष्ट्रों में राजनैतिक उथल-पुथल, अनैतिक वारदात, विमान घटनाएं, दुर्भिक्ष एवं प्रजा को संताप रहेगा। **मिथुने च यदा सौरि दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्। पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥** ता. २३ जुलाई सेता. ८ जनवरी २००३ तक शनि मिथुन राशि में रहेगा। वर्ष की समाप्ति समय राहु शनि का योग एवं गुरु शुक्र का सम सप्तक योग प्राकृतिक प्रकोपकारी फलप्रद रहेगा।

जगत् लग्न कुण्डली

सू.चं.बु.शु. १ | ११ ह. | १० नेप. | मं.श. रा.२ | १२ | ९ | गु. ३ | ४ | ६ | प्लू.८ के. | ५ | ७
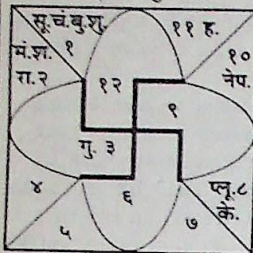
संवत् २०५९ चैत्र शुक्ला १ शनिवार ता. १३ अप्रैल २००२ई. की रात्रि अर्थात् सूर्योदय से पूर्व ता. १४ अप्रैल को ५ बजकर ५१ मिनट पर मीन लग्न में श्री सूर्य भगवान् सप्ताश्वजुत रथ की सवारी से मेष राशि में प्रवेश करेंगे। जिसकी जगत् लग्न कुण्डली सामने दी जा रही है। लग्न स्वामी गुरु अपनी शत्रु ग्रह राशि मिथुन पर चतुर्थ में स्थित है जो विश्व शांति में साम्प्रदायिक व धार्मिक उपद्रवों से विग्रहकारी है। मंगल, शुक्र का राशि परिवर्तन योग होने से अमेरिका, दक्षिणी अफ्रीका, श्रीलंका, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी भारत के अनेक स्थानों में भूगर्भ सम्पत्ति व खनिज पदार्थों की खोज से अर्थ संकट में कमी होगी। पराक्रम भाव में मंगल, शनि व राहु तीन क्रूर ग्रहों का योग भारत को विज्ञान क्षेत्र में विश्व के सामने चर्चित अन्वेषण प्रस्तुति से सम्मान प्राप्ति करवायेगा। तृतीय भाव से अष्टम भाव तक के स्वामियों का धन भाव में जाने से देश की न्यायपालिकाएं प्रशंसनीय फैसले कर प्रशंसित होगी। चोर, डाकू, लुटेरे व पाखण्ड रत बड़े व्यक्तियों के अहं का संहरण होगा। भाग्य व लाभेश का पराक्रम भाव में योग भारत को अन्तर्राष्ट्रीय परिषद में स्थाई व सम्माननीय पद प्राप्ति का योग प्रद है।

भारतीय गणतन्त्र का ५३वां वर्ष

गणतंत्र लग्न कुण्डली
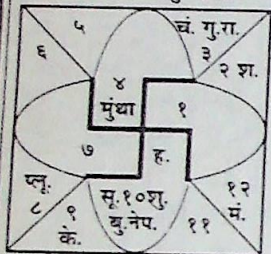
विक्रम संवत् २०५८ पौष शुक्ला १२ शनिवार को वेध सिद्ध नवीन मान से इष्ट २६ घटी ४० पल ५७ विपल पर कर्क लग्न में भारतीय गणतंत्र का ५३वां वर्ष प्रवेश कर रहा है। जिसकी तात्कालिक कुण्डली का लग्नेश चन्द्र भाग्येश गुरु व राहु के साथ व्यय भाव में स्थित है। अत: देश में अपूज्यों का पूजन, पाखण्ड, दम्भी, छल, छद्मी और कपटी तथा दुराचारियों के प्रभाव की वृद्धि रहेगी। राहु के साथ गुरु का योग चाण्डाल संज्ञात्मक व क्षुद्र माना जाता है। लग्न स्वामी निर्बल होने से प्रधान शासकों के मनोबल में न्यूनता रखकर स्पष्ट निर्णय में बाधक रहेगा। सप्तम स्थान में सूर्य, बुध, शुक्र का मकर राशि में योग होने से प्रमुख शासकों को विशेष सावधानी की आवश्यकता रहेगी। अपने ही दल के व्यक्तियों से धोखा मिलना संभव रहेगा। विकसित राष्ट्र अपने हित के लिए शासकों के समक्ष विषम स्थितियां पैदा करेंगे। शनि, शुक्र का राशि परिवर्तन योग भारत को विज्ञान व नवीन अन्वेषण से विश्व के महान राष्ट्रों के मध्य श्रेष्ठ सम्मान की वृद्धि करवायेगा। मीन राशि का मंगल भाग्यस्थ हुआ है जो पड़ोसी राष्ट्रों से तनाव-युद्ध व आतंकवादी ताकतों पर विजयकारी फलप्रद है। भारत की प्रभाव राशि मकर का स्वामी शनि इस वर्ष वृष व मिथुन राशि में भ्रमण करेगा। जिससे देश के उच्च शासकों के स्वास्थ्य हेतु चिन्तन शीलता कारक है। राहु व केतु की गिरफ्त में सभी ग्रहों के आ जाने से भारतीय राजनीति में अकस्मात अकल्पित उलटफेर होंगे। भारत के भू-भाग पर विदेशी तकनीकियों के फैलते जाल से कई प्रदेशों में भयंकर अग्निकाण्ड, बम विस्फोट व उत्पातिक घटनाओं से जनता में भय पैदा होगा। काश्मीर, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, गुजरात, बंगाल व आन्ध्र प्रदेशों में साम्प्रदायिक दंगे, आतंकवादी गतिविधियां और कर्मचारियों द्वारा उपद्रव होंगे। देश में यत्र-तत्र चक्रवात, तूफान, भूकम्प व बाढ़ आदि प्रकोपों से जन धन की हानि होगी। उच्च राशि के षष्ट भाव में केतु से रोगोत्पात होकर जीव जन्तु व मनुष्यों के जीवन पर कुप्रभाव का चक्र गम्भीरता लेगा। इस वर्ष मुन्था का लग्नस्थ होना विपक्षी दल को सबलता देगा। कई प्रान्तीय सरकारों में सत्ता परिवर्तन व मंत्री मण्डल में उलटफेर होगी। माननीय प्रधानमंत्री जी को स्वनियंत्रित निर्णय लेकर पद की गरिमा बढ़ाना एवं इस वर्ष की समयावधि में अपने स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना देश की जनता के लिए उत्तम श्रेयस्कर होगा। देश को कुशल शासक व विशुद्ध निर्णायक नीतिज्ञ की इस वर्ष विशेष आवश्यकता रहेगी।

भारतीय वायु मण्डल एवं वर्षादि योग

वर्ष में वायुमण्डल एवं वर्षादि योग जानने के लिए भारतीय शास्त्रों के अनुसार प्रत्येक नगर व राज्य में प्रतिदिन की वायु-मेघ गर्जना-बादल वर्षा की परीक्षा द्वारा वृष्टि गर्भ लक्षण का उल्लेख मिलता है। जैसे-आषाढ़ी पूर्णिमा की वायु परीक्षा अंतरिक्ष लक्षण जहां शुभ शकुन का आभास करायेंगे। वहां सुभिक्ष व सुवृष्टि का संचार होगा। इस वर्ष आषाढ़ी पूर्णिमा (ता. २३ जुलाई) मंगलवार को पूर्व-उत्तर-पश्चिम व ईशान कोण की हवा चले तो सुभिक्ष माना गया है। जबकि शेष कोण की हवा दुर्भिक्ष-उत्पात-रोग व भयकारक मानी गई है। विद्वान विज्ञों को वर्ष भर के गर्भ लक्षण नोट करने चाहिए। वर्ष पर्यन्त नहीं कर सके तो आषाढ़ी पूर्णिमा को सायं सूर्य अस्त के समय खुले स्थान में जाकर ध्वजा की विधिवत् पूजा करके वायु परीक्षा कर अपने नगर-देश व राज्य के लिए शुभाशुभ फल का निर्णय करना चाहिए।

आर्द्रा प्रवेश कुण्डली
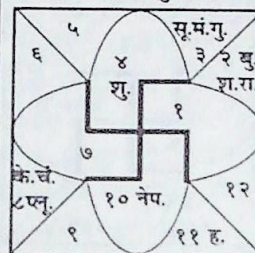
वर्षादि योग के लिए सूर्य आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश से आगामी दस नक्षत्र में भ्रमण करने तक वर्षा के द्योतक माने जाते हैं। नवीन वर्ष में सूर्य का आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश ज्येष्ठ शुक्ला १२ शनिवार ता. २२ जून को प्रात: ८ बजकर ५२ मिनट पर कर्क लग्न में प्रवेश करेगा। जिसकी सामने तात्कालिक कुण्डली लिख रहे हैं। लग्नेश चन्द्र अपनी नीच राशि में केतु के साथ व शनि बुध से दृष्ट है। अत: देश में कहीं-कहीं तेज वायु के साथ वर्षा होगी तथा कहीं पश्चिमी प्रान्तों में वर्षा की कमी से मंहगाई व बेरोजगारी बढ़ेगी। मेघेश शनि राजा व मंत्री पद के साथ होने से दक्षिणी व पर्वतीय प्रान्तों में भीषण वर्षा व तूफानी हवाओं से हानि योगप्रद है। लग्न का शुक्र व रोहिणी का वास संधि में **''खण्डवृष्टिश्च संधिषु''** के अनुसार पंजाब, राजस्थान, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में खण्डवृष्टि होगी। ता. ९ जुलाई से ता. १५ अगस्त तक सूर्य पुनर्वसु-पुष्य-आश्लेषा नक्षत्र में रहकर पूर्वी प्रान्तों में अतिवृष्टि व पश्चिमी प्रान्तों में खण्डवर्षा कारक फलप्रद रहेंगे। इसके बाद वर्षा की खैंच मध्यम उपजकारक रहेगी। शरद् कालीन समय में माघ मास में बुध शुक्र का युति योग वर्षा के साथ हिमपात फल कारक रहेगा। अत्यधिक शीतलहर फसलों में हानिप्रद रहेगी। **ग्रह योग से फल लिखा आगे ईश्वर हाथ। गोपीनाथ रटते रहो उन्हे नवाओ माथ॥** *इति शुभं भूयात्*

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फल लिखा आगे ईश्वर हाथ। गोपीनाथ रटते रहो उन्हें नवाओ माथ॥ इति शुभं भूयात्

व्यापार भविष्य वैज्ञानिक अनुसंधान पर
(जन. २००२ से मार्च 2003 तक)

परिलेखकर्ता —अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले सुपुत्र पी.सी. जैन पोरसा वाले
इंदौर बैंक के पीछे बारादरी चौराहा मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४००६
एस.टी.डी.-०७५१ फोन : पी.पी. ३६७१८२ दिन श्री गुप्ता जी व पी.पी. ४२२२७९ रात ११ बजे

जनवरी (JANUARY) 2002

जनवरी २००२ से १५ जनवरी २००२ तक लहसुन Garlic में तेजी, गुड़ ७७, गुवार cluster seed, सुपारी, तिल तेल ५६० की भड़कती तेजी तथा चावल २०५ , सुपारी, पिपरमेंट, केशर ९९९ की तेजी। पोस्तादाना ९९९ की तेजी, छोटी-बड़ी इलायची ७००, सूत, सौंफ, सुपारी, सोंठ में जोरदार तेजी आ सकती है। ७ से २९ जनवरी तक मसूर २५०, अरहर ४६१, राजमा ५०६, चावल, देशी घी में जोरदार गिरावट का दौर चल सकता है। १८ जन. से ५ फर. २००२ तक सुपारी ५०६, चांदी ३०६, गुवार, जौ ७७, बड़ी इलायची १४९९ की भड़कती तेजी, पिस्ता, काजू, पिपरमेंट, पोस्तादाना, सौंठ, जीरा में अच्छी तेजी आ सकती है। १५ जनवरी से २ फरवरी तक लौंग, दाल चीनी, काली मिर्च, बादाम में मंदी का झटका लग सकता है। चांदी-सोना में तेजी आ सकती है। २७ जन. से ११ फर. तक पोस्तादाना २२०१, अरण्डी तेल, राजमा में जोरदार मंदी आ सकती है। १५ जनवरी से ५ अप्रैल २००२ तक पिस्ता, गुड़ में घटबढ़ से अच्छी तेजी आ सकती है। २७ जन. सूर्य बुध की इनफेरियर ७ दिन पहले से ११ दिन बाद तक ए.सी.सी. रिलाइंस शेयर में अच्छी तेजी आवे तो आगे १५ दिन में तेजी आवेगी। ८ फरवरी २००२ को शनि मार्गी होने से अरहर, सरसों तेजी आ सकती है।

फरवरी (FEBRUARY)

२५ जनवरी २००२ से ९ फरवरी के मध्य गुड़, जीरा, धनियां, बाजरा, इमली २९५, सौंफ में ५५० की मन्दी, गेहूं, गोला, तैल, पोस्तादाना, चना ८१ की मन्दी, काबुली चना, मटर १५०, सुपारी, लाल मिर्च ९९९ की झटके दार मंदी आ सकती है। उड़द, मूंग, मटर में भी मंदी आ सकती है। २०-१-२००२ से ११ फरवरी तक मूंगफली तेल ५६० की मंदी, उड़द ७७ , बाजरा २५, देशी घी, बड़ी इलायची १५०१, बारदाना, हैसियन में जोरदार गिरवाट का दौर चल सकता है। मगर चीनी १६५, रुई में अच्छी तेजी आ सकती है। २७-१-२००२ से १५ फरवरी तक गुवार, पोस्तादाना, अजवाइन, मैथी, मक्का, जौ आदि में मन्दी तो शेयर मार्केट में एल.एन.टी., टिस्को, एस.बी.आई., आई.टी.सी. रिलाइंस में आगे अब घटबढ़ से तेजी आ सकती है। ७ से २१ फरवरी तक खोपरा तेल, गुड़, जीरा ५०६, राजमा २५० की तेजी चालू हो सकती है। २१ फरवरी से २ मार्च तक सुपारी, अरण्डी तेल, काली मिर्च ५०६ , मक्का, मूंगफली तेल में अच्छी तेजी आ सकती है। १९ फरवरी से ५ मार्च तक बाजरा, मक्का, उड़द ४६१, देशी घी १७० में तेजी तो अलसी तेल १०० की जोरदार मन्दी आ सकती है। व्यापार में लाभ हानि की कभी किसी हालत में जिम्मेदारी नहीं होगी ।

मार्च (MARCH)

२७ फर. से १५ मार्च तक अरहर, मसूर १५०, लाल मिर्च ५०६ की जोरदार तेजी आ सकती है। सुपारी ५०६, ग्वार में अच्छी तेजी आ सकती है। २ मार्च से १५ मार्च तक गुड़, पिस्ता ५२, पिपरमेन्ट, रुई, बारदाना, हैसियन, शेयर में रिलाइंस ए.सी.सी., टाटा स्टील, एस.बी.आई., ब्रा.स.श. इन्डैक्स में अच्छी बढ़ोत्तरी हो सकती है। ५ मार्च से ५ अप्रैल तक अमचूर, चीनी में १६५ की जोरदार तेजी आ सकती है।

अप्रैल (APRIL)

१५ फर. से १५ अप्रैल तक उड़द, चना, मूंग, खोपरा, गोला ४०३, बाजरा, गुड़, सुपारी, मक्का में अच्छी तेजी आ सकती है। कहीं-कहीं ओलापात भी हो सकता है। २१ मार्च से २५ अप्रैल तक हल्दी, लौंग, जावित्री, चांदी ९९, सुपारी तेजी आ सकती है। सोयाबीन, बिनौला तेल में जोरदार तेजी आ सकती है। १५ अप्रैल से २१ मई तक सरसों, फली तेल ५६० की मंदी, धनियां ३६०, अरहर ३६०, हल्दी २०५, मसूर ९९ की जोरदार धमाकेदार मन्दी का धमाका हो सकता है। २५ अप्रैल से ३० मई तक चांदी में ५६० की तूफानी मन्दी आ सकती है। ९ अप्रैल से २९ अप्रैल तक गुवार ४५५ की, सोंठ ५००, अजवाइन ५०६, सुपारी ७०२, सौंफ ५०६ की तेजी, किसमिस ९९९ में अच्छी तेजी आ सकती है। १५ अप्रैल से ५ मई तक हल्दी, मिर्च में जोरदार मन्दी आ सकती है। २५ अप्रैल से मई तक गेहूं, जौ, सुपारी में तेजी, चना, गुवार २०५, तिल १५० की जोरदार तेजी आ सकती है। ११ अप्रैल से २० जून तक काजू, प्याज, रुई, लोबिया में भारी तेजी आवेगी। ८-४-२००२ सूर्य-बुध २९ मार्च से ११ अप्रैल तक शेयर्स मार्केट में अच्छी मंदी, तैल, तिलहन, चांदी, सोना में अच्छी तेजी आ सकती है। काली मिर्च में अच्छी तेजी आ सकती है।

मई (MAY)

२-५-२००२ से ५ जून तक चांदी, सोना में अच्छी मंदी आ सकती है। २७ अप्रैल से ११ मई तक चिरौंजी, धनियां, मिर्च ५०६, सरसों तेल ३०६ की मंदी, किशमिश में ९९९ की मंदी आ सकती है। आलू, प्याज में जोरदार मंदी आ सकती है। मगर खण्डसारी गुड़ ५, चीनी ७७, गेहूं ५६, देशी घी में ४५, सौंफ ५०६ की तेजी, कभी भी ७-११ दिन की आकर मंदी आवेगी। ११ मई से १८ मई तक उड़द, चना, मूंग ७५ तेजी, मक्का, जई ७०, अरहर दाल १५०, बाजरा, इमली में तेजी, काली मिर्च, सुपारी ५०६, सौंठ ५०६ की तेजी, छोटी इलाइची २-७ में अच्छी तेजी, गुवार Cluster Seed, तेलों में जोरदार मंदी, अमचूर में मंदी आ सकती है। १५ मई से ५ जून तक अरण्ड में तेजी सौंठ, बड़ी इलायची, ज्वार ७०, धनिया २९९ की तेजी आ सकती है। २३-५-२००२ से २५ जून तक शनि ग्रह अस्त होने से अरहर, सरसों, मसूर में अच्छी तेजी, १५ मई से ९ जून तक शेयर्स में अच्छी तेजी का उछाला आवे तो आगे मंदी आवेगी। हल्दी, बड़ी इलायची में भारी तेजी बन सकती है। २५-५-२००२ सूर्य, बुध इनफेरियर युति १६-१८ मई २००२ तक शेयर्स में अच्छी तेजी आई तो २५ मई तक ए.सी.सी., रिलाइंस शेयर्स में भयंकर मंदी, सोयाबीन तैल में १५-२१ जून भयंकर तेजी आ सकती है।

जून (JUNE)

१ जून से १५ जून तक गेहूं, सोयाबीन में तेजी, राजमा, जीरा, नारियल, गुड़ ५०, बड़ी इलायची, इमली, सौंफ ५०६ की तेजी तथा कलौंजी, मैथी, अजवाइन, तिल, किसमिस काजू, अरहर १५० की तेजी आ सकती है। तो पिपरमेंट, मोम, सूत में मंदी आ सकती है। ९ जून से ३० जून तक चावल बासमती, तिल, गेहूं, इमली, खण्डसारी में अच्छी तेजी आ सकती है। ५ से १३ जून तक लाल मिर्च, महुआ तैल २५०, अलसी तैल, गुड़ में अच्छी तेजी आ सकती है। १५ जून से ५ जुलाई २००२ तक जौ २५, पोस्तादान, ५०२, लहसुन, सौंफ में तेजी, सरसों १५० की भारी तेजी आ सकती है। २१ जून से ३० तक सुपारी, इमली, अजवाइन ३६०, चना ७७, मूंग ९९, चाय २५०, मटर, गेहूं में अच्छी तेजी आ सकती है। १५ जून से ५ जुलाई तक मूंगफली, तैल, सोयाबीन, अरण्डी में अच्छी तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

जुलाई (JULY)

२७ जून २००२ से ९ जुलाई तक देशी घी, ज्वार में १४५०, सरसों ४० मंदी, पिपरमेंट में भारी तेजी आ सकती है। उड़द २०० तेजी, मसूर दाल में ८०० रु. की तेजी, अरहर १७५ रु. तेजी, अरहर दाल २००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

की, राजमा १५० की तेजी, जई १०० की तेजी, गुड़ २५ की तेजी, बड़ी इलायची १५ तेजी, लौंग १२, मलका मसूर १०० की तेजी, ३-७-२००२ अरहर २२५ की मंदी, मसूर में १९० रु., चना में १०० तेजी आ सकती है। तिल २०० की मंदी, बिनौला तैल ५०० की मंदी, मलका मसूर १०० की तेजी आ सकती है। १६ को जीरा जरूर २०० रु., हल्दी ३०० रु. की तेजी आ सकती है।

अगस्त (AUGUST)

१९ जुलाई से ६ अगस्त २००२ तक बड़ी इलायची ९९९ की तेजी तथा अरहर, मक्का, तिल में अच्छी तेजी आ सकती है। पानी वर्षा हो सकती है। हल्दी २५०, अरहर ९९, किसमिस ७००, छुआरे ३०० की मंदी आ सकती है। २१ जुलाई से ११ अगस्त तक छोटी इलायची, गुड़, खोपरा २१-७ गोला Coco Nut में अच्छी तेजी का उछाला आ सकता है। ४-८-२००२ से १८-८-२००२ तक लौंग, २९-९-२००२ तक हल्दी २५०-३६० की तेजी, बड़ी इलायची तेजी, पोस्तादाना, प्याज, लहसुन Garlic में जोरदार तेजी आ सकती है। इसके अलावा काबुली चना ५००, चना १५० की तेजी आ सकती है। १५ अगस्त से २७ सितम्बर २००२ तक लौंग, पोस्तादाना, प्याज में भारी तेजी तो अरहर, चना में जोरदार मंदी आ सकती है। २१-७-२००२ सूर्य-बुध सुपीरियर युति होने से १४ जुलाई से २३ जुलाई तक Reliance रिलाइंस, ए.सी.सी. शेयर्स में मन्दी आवे तो आगे ७-१५ दिन में अच्छी तेजी, २१ जून से ११ अगस्त देशी घी में तूफानी तेजी, चांदी-सोना में २५०-५७१ की तेजी चल सकती है। ९ जुलाई २००२ के आसपास अलसी, अरण्ड, अरहर के नीचे भाव बने हों तो ९-७-२००२ से अगस्त २००२ तक १५०-२५० की भयंकर तेजी आ सकती है। २१-७-२००२ से गुवार में तेजी चल सकती है।

सितम्बर (SEPTEMBER)

१८-९-२००२ से ३०-९-२००२ सौंफ, पोस्तादाना में तेजी तो अलसी, अरण्ड, सरसों में १५०-२५० की मंदी आ सकती है। मगर छोटी इलायची, बड़ी इलायची, सोयाबीन ५००-११०० की जोरदार तेजी बन सकती है। मैंथी २०५, सौंफ ५००, लौंग २५ की जोरदार तेजी आ सकती है। लाल मिर्च में मंदी आ सकती है। १५-९-२००२ से १५-११-२००२ के बीच पोस्तादाना ९९९ की भड़कती तेजी, इलायची, खोपरागोला ७००, सौंठ में ७९९ की भड़कती तेजी आ सकती है। २८-९-२००२ को इनफेरियर युति से शेयर्स मार्केट में १५-९-२००२ से ११-११-२००२ के बीच ७००-९०० प्वाइन्ट की भयंकर मंदी, मगर अरहर ५६०, मसूर २५०, सरसों २५०-१५० की तेजी आ सकती है। ११-१०-०२ से २१ नवम्बर तक शुक्र ग्रह वक्री होने से चांदी-सोना में ५०० की तेजी, फलों का उत्तम उत्पादन होने से फल, सब्जी, चना, शेयर्स मार्केट में नीचे भाव बने तो खरीदो तो आगे तेलों, अरहर में एक बार तेजी आ कर फिर मंदी आवेगी। गुवार में ५००-७०० की तेजी बन सकती है।

अक्टूबर (OCTOBER)

१२-१०-२००२ से ३१-१०-२००२ तक काली मिर्च में तेजी आ सकती है। काजू, किसमिस में अच्छी तेजी, पोस्तादाना ९९९, अरण्ड ७०, सरसों, सूजी ७५, गुड़ ७५ की अच्छी तेजी का झटका लग सकता है। मगर मूंग १७५ की मंदी, काबुली चना २५०, चना ९०, लाल मिर्च १५० की मंदी बन सकती है। धनियां, सौंफ ५००, कलौंजी ११०० की धमाकेदार मंदी आ सकती है। १६ अक्टूबर मंगलवार विजय दशहरा है।

नवम्बर (NOVEMBER)

अरण्ड २००, मक्का, सुपारी ५०६, गेहूं, गुड़, सरसों में तेजी, तो पोस्तादाना Popy Seeds, बड़ी इलायची में मंदी का रिएक्शन लग सकता है। चना, सरसों की फसल को कीड़ा आदि से नुकसान हो सकता है। ११ से २७ दिसम्बर तक मूंगफली, तेल Ground Nut २५०, गुड़ ७०, चीनी, छोटी इलायची, काजू आदि में जोरदार तेजी आ सकती है। २७ अक्टूबर से २७ दिसम्बर तक काली मिर्च ९९९, बड़ी इलायची, सौंठ Dry Ginger ५००, छोटी इलायची २१० की जोरदार तेजी आने की आशा है। मसूर, चना में घट बढ़ से तूफानी मंदी चल सकती है। व्यापार में किसी प्रकार की जिम्मेदारी नहीं होगी। ३ नवम्बर से ३ दिसम्बर के बीच मक्का, बाजरा, गेहूं, काली मिर्च, पिस्ता में अच्छी तेजी आ सकती है। २ जुलाई से १४ सितम्बर गेहूं, अरण्ड, चीनी में १५ की तेजी और अरहर Pigeon peal ५०, जीरा २५०, कलौंजी ५०० तथा लहसुन, प्याज Onion में अच्छी तेजी तो छोटी इलायची १५, लौंग में मंदी, हल्दी, सरसों ९९, की मंदी आ सकती है। पानी वर्षा हो सकती है। १५ से २३ नवम्बर तक लाल मिर्च २५०, बादाम २००, किसमिस ९९९ की तेजी, इसके अलावा पिपरमेंट, जावित्री २०, हल्दी, चांदी १५५, काबुली चना २५० की तेजी, तो अरहर १५०, उड़द २५, मूंग ५६ मंदी आ सकती है। १५ से २७ नवम्बर तक तेलों में ५ दिसम्बर तक पिपरमेंट ४१, सौंफ, जीरा ९९, उड़द ७०, चांदी-सोना में २७ की मंदी आ सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। १५ सितम्बर से १५ दिसम्बर तक काली मिर्च ५००-७०० की भड़कती तेजी आ सकती है। १४ नवम्बर को सूर्य-बुध की सुपीरियर युति १० दिन पूर्व से ३ दिन बाद तक शेयर्स मार्किट में भयंकर मंदी मगर २० अक्टूबर से १० नवम्बर के बीच तेल, शेयर्स में अच्छी तेजी की संभावना है। ४ नवम्बर २००२ सोमवार की दीपावली मंगल कन्या राशि की होने से जनवरी, फरवरी २००३ में सरसों, अलसी में भयंकर मंदी मगर चांदी-सोना में तेजी चल सकती है।

दिसम्बर (DECEMBER)

२ दिस. जौ ६५, उड़द ७५, जीरा ९९, मसूर ७५, की तेजी आ सकती है। चीनी १५, गेहूं २५, ५ से ११ दिसम्बर तक जीरा, काली मिर्च ४, लौंग, काबुली चना में भारी तेजी, अरहर २६१, देशी घी में मंदी आ सकती है। १५ दिस. से २३ जन. २००३ तक अरहर में मंदी, फिर भी यदि तेजी की लाइन चल पड़े तो फिर तेजी का व्यापार करना। २५ नवम्बर से २७ दिसम्बर तक काली मिर्च ५००-७७७, मसूर ७०, गेहूँ २५, किसमिस, छुआरे में अच्छी तेजी आ सकती है। ५ से २० दिसम्बर तक छोटी इलायची ६३, पिपरमेंट ९९, मूंगफली २५०, इमली ५६, रुई, तेल, अरण्डी में ७० की जोरदार मंदी आ सकती है। लौंग, काबुली चना, काली मिर्च, चीनी, प्याज में तेजी, गुड़ में तेजी आ सकती है।

जनवरी (JANUARY) 2003

२७ दिसम्बर २००२ से २१ जनवरी २००३ के मध्य बड़ी इलायची ९९९ की भड़कती तेजी, इसके साथ जावित्री १५, मूंगफली, सोयाबीन तेजी काबुली चना ३५०, नारियल गोला २५०, पिपरमेंट ४५, की जोरदार तेजी तो मसूर दाल ४५०, देशी घी १५०, इमली १००, अरहर २७५ की जोरदार मंदी आ सकती है। १-१-२००३ से १५ जनवरी तक गेहूं, चांदी, मक्का, बादाम, नारियल में तेजी, तो जीरा में ५००-७००, लाल मिर्च ५०६ की जोरदार तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी नहीं होगी। २०-१-२००३ से ७ फरवरी मूंगफली तैल, बिनौला तेल में जोरदार तेजी आ सकती है। १४ जनवरी से १६ फरवरी तक अजवाइन ५०० की मंदी। ५ फरवरी से १५ अप्रैल २००३ तक अजवाइन, हल्दी, धनिया, नारियल तैल, लाल मिर्च में तूफानी तेजी आ सकती है। २ जनवरी, गुरुवारी, मूल नक्षत्रयुक्त पौष अमावस्या है।

फरवरी (FEBRUARY)

१४ जनवरी २००३ से २५ फरवरी तक अरण्डी, तैल ३६०, हल्दी ३००-४११ की जोरदार तेजी, सरसों, सोयाबीन ४००-५०० जोरदार मंदी, बासमती चावल में मंदी, पिपरमेंट में मंदी चल सकती है। १५-२-२००३ से २७ फरवरी तक उड़द, मसूर ७७ की तेजी आ सकती है। ११ फरवरी से ७ मार्च तक काबुली चना ४५०, तिल तैल ५६०, पोस्तादाना में जोरदार तेजी आ सकती है। मगर बारदाना, हैंसियन व चावल में तेजी आ सकती है। २५ जनवरी से २५ फरवरी तक सौंठ, चाय में मंदी आ सकती है। १५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फरवरी से ३ मार्च तक चीनी, गुड़ ७० में चांदी ३६० की तेजी आ सकती है।

मार्च (MARCH)

२० फरवरी से ११ मार्च तक लौंग, जायफल, जावित्री, लौबिया, राजमा ५००, छोटी इलायची २५, रु. की तेजी, तथा मसूर, अरहर में तेजी आ सकती है। ३ से २९ मार्च तक उड़द, अरहर, बाजरा, मक्का अच्छी तेजी बन सकती है। १५ मार्च से २१ अप्रैल तक हल्दी, लाल मिर्च, धनिया, सरसों में अच्छी तेजी आ सकती है। २७ फरवरी से ५ अप्रैल गुड़, चीनी, खण्डसारी ७०, छोटी इलायची ७०, अच्छी तेजी आ सकती है। १५ मार्च से ५ अप्रैल तक लौंग, बादाम, ईसबगोल, जावित्री, जौ ३६ तेजी आ सकती है। २५ फरवरी से १५ अप्रैल तक गुवार ७०२, सोयाबीन, रुई में तेजी, मूंगफली ७००-९०० की तूफानी तेजी आ सकती है। इसके अलावा नारियल तेल, लौंग, रुई में तेजी बन सकती है।

अप्रैल (APRIL)

२७ मार्च से ११ अप्रैल अजवाइन, छोटी इलायची, गुड़, उड़द, बारदाना, हल्दी में तेजी, मगर गुवार, काबुली चना, गेहूं ३६२, राजमा २५० की मंदी चल सकती है।

शेयर्स मार्केट

२५ दिसम्बर २००१ से ७ जनवरी २००२ तक शेयर्स ए.सी.सी., रिलाइंस, डी.एस.क्यू., इनफोसेस टैक्नोलोजी, जी टैली फिल्म, शेयर्स तक तेजी तो ७ जनवरी से २१ जनवरी २००२ तक बी.एस.ई. इन्डैक्स में ५००-९०० पोइन्ट की जोरदार मन्दी, २१ से २७ जनवरी तक तेजी आवे तो २१ फरवरी २००२ तक Infosys Technology ९९९, रिलाइंस शेयर ७७ की मंदी तथा बी.एस.ई. इन्डैक्स २५०-५७७ प्वाइन्ट की गिरावट आ सकती है। २१ फरवरी से १ मार्च के मध्य शेयर्स मार्किट में ३९९ प्वांइट की तेजी आ सकती है। ६ से २७ फरवरी तक जोरदार मंदी आ सकती है। तो २७ फरवरी से ५ मार्च २००२ तक अचानक अच्छी तेजी बन सकती है। ७ से २१ मार्च २००२ तक भीषण मंदी का दौर चल सकता है। ये मंदी आगे बढ़ी तो १५ अप्रैल तक चल सकती है। अथवा २३ मार्च से ७ अप्रैल तक ९०० पोइन्ट की तेजी, Infosys Technology सेयर ९९९, रिलाइन्स में ७१ की भड़कती तेजी आ सकती है। बाजार लाइन जैसी चले वैसा व्यापार करें। व्यापार में लाभ हानि को किसी प्रकार की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी। १५ अप्रैल से ९ मई तक घटबढ़ से ए.सी.सी. ७३ की भड़कती तेजी इनफोसिस में ७७७ की तेजी, इन्डैक्स में २९९-३७७ पोइन्ट की बढ़ोत्तरी हो सकती है। ११ मई से मंदी अथवा १५ से २० मई के बीच तेजी तो २१ मई से १५ जून तक ५-७ धमाके की मन्दी इनफोसिस शेयर ७९९, रिलाइंस ९९, ए.सी.सी. ७९ की मंदी आ सकती है। ग्राफीकल सदस्य बन कर ताजी सलाह मंगा लें। ०७५१ पी.पी. ३६७१८२ दिन श्री अशोक कुमार गुप्ता जी ५४०३८९ रात ९ बजे बाद पी.पी. ३४३२८३ दिन जानकारी ज्ञात कर सकते हैं। २३ मई से ७ जून तक शायद मंदी चले। बाजार जैसा चले वैसा व्यापार करें। ७ जून से ११ जुलाई तक ७०७ प्वाइन्ट की तेजी, रिलाइंस १११, ए.सी.सी. ९९, टेल्को में ७७ की, जे.पी. ४५ की तेजी आ सकती है। १५ से २५ जुलाई तक मंदी। २५ जुलाई से १२ अगस्त तक तेजी आवे तो १२ से २९ अगस्त तक मंदी, २९ अगस्त से २१ सितम्बर २००२ के मध्य ए.सी.सी. १५०, रिलाइंस १३९ की तेजी, बी.एस.ई. इन्डेक्स में ७००-१११ प्वाइन्ट की भयंकर तेजी तो बाद में एक महीना भयंकर मन्दी का दौर चल सकता है। ९ से २७-१०-२००२ के बीच ९९९-१११ प्वाइन्ट की खतरनाक मंदी चल सकती है। (६६९ डी) २७ अक्टूबर से ७ नवम्बर तक अच्छी तेजी, १५ नवम्बर से ३ दिसम्बर तक तेजी तो १५ दिसम्बर से ७ जनवरी या २१ जनवरी तक एक बार भीषण मंदी का झटका लग सकता है। अथवा ५ से ११ जनवरी तक तेजी, ७ से २१ जनवरी २००३ तक भीषण मंदी, २१ जनवरी से ६ फरवरी तक अच्छी तेजी, ६ फरवरी से २१ फरवरी तक मंदी, २१ फरवरी से ५ मार्च तक तेजी, ११ से २५ मार्च तक मंदी, २५ मार्च से ७ अप्रैल तक तेजी चल सकती है। दान-पुण्य-धर्म करने, पुन्य राशि में बढ़ोत्तरी होकर व्यापार में लाभ वृद्धि हो सकती है। शेयर मार्किट में बी.एस.ई. इंडैक्स ३९९ से ७०७ पोइन्ट की मन्दी, ५-७ दिन में जब नीचे के भाव बनें तब खरीदें। ५ दिन व २३-३८ दिन की तेजी आने (५००-९०० प्वाइन्ट की तेजी आने पर) ४५ से ७७% माल बेचें। तब भले शायद लाभ कमा सकते हैं। रोजाना लाभ की संभावना कम रहती है।

मंगल वक्री का प्रभाव

२९ नवम्बर १९९२ से १५ फरवरी १९९३ तक मंगल वक्री, ६ दिसम्बर १९९२ को अयोध्या में राम मंदिर, बाबरी मस्जिद भयंकर विवाद से झगड़ा चला तो साढ़े सात साल पहले ६ अप्रैल १९८४ से २० जून १९८४ तक मंगल वक्री, ३ जून १९८४ को पंजाब में अमृतसर में स्वर्ण मंदिर में मिशन ब्लू स्टार हुआ। सन् १९८४ में जीरा, चना में भयंकर तेजी चली। तेलों में भयंकर आई। सन् १९९२ जीरा १४७, रिकार्ड ऊंचे भाव बने। चना में भयंकर तेजी, तैल, शेयर मार्किट में भयंकर मंदी का दौर चला तो सन् १९९२ के अयोध्या-बाबरी मस्जिद काण्ड के साढ़े ८ वर्ष बाद ११ मई २००१ से १९ जुलाई तक मंगल वक्री तो १ जून २००१ शुक्रवार की रात नेपाल महाराज परिवार की हत्या से तहलका मचा, आपके सामने ही जीरा, चना में भयंकर तेजी तो तैल, शेयर मार्किट में मंदी, आपके सामने है। डी.एस.क्यू. शेयर जो कभी ३२००-२९०० के ऊंचे भाव थे वो २७ जुलाई २००१ के बीच ३६-४१ नीचे भाव बने। कहां शेयर तीन हजार और कहां ३६-४१ के भाव। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी नहीं होगी।

व्यापार दिग्दर्शिका, वैज्ञानिक अनुसंधान पर
जनवरी २००२ से जून २००३ तक, १८ महीने की तेजी-मंदी
पुस्तक मूल्य १५१, मगर रियायती चार्ज १४.०० रजिस्ट्री सहित
परिलेखकर्ता—श्रीमती चम्पादेवी जैन ध.प. प्रेम चन्द्र जैन पोरसा वाले

कुछ धारणा ऐसी बनी हुई है कि हर वस्तु में हर साल तूफानी तेजी आती हैं। मगर ऐसा नहीं है। २८ अक्टूबर सन् १९९८ को सरसों भाव २७९९ के थे—सन् २००० में सरसों भाव १०२५ के रह गए मतलब कहने का यह हर वर्ष ऐसा नहीं होता। सरसों १००० नीचे बिक जावे और वर्ष के अन्त में १९००-२९०० बिक जावे ऐसा हर साल नहीं होता है। प्राय: उस वस्तु का व्यापार करें। जिसमें ड्योढ़े, दो गुणा-तीन गुणा की तेजी आवे-ऐसी वस्तु का व्यापर करें। तो व्यापार उस वर्ष बहुत लाभकारी सिद्ध हो सकता है। जैसे २३ अक्टूबर १९९८ ए.सी.सी. शेयर नीचे ८३ के करीब थे। २७ दिसम्बर १९९९ को ३०३ के भाव हुए। चौदह महीने में ३.६५ गुणे हुए। अर्थात् तूफानी तेजी के वर्ष में ही बड़ा लाभ व्यापार में मिल सकता है।

इस पुस्तक में सरसों, तिलहन तेल, दालधाना, अरहर, मसूर, चना, लाल मिर्च, जीरा, हल्दी, काली मिर्च, सोना, चांदी, शेयर्स मार्किट, गुड़, खांड, चीनी, ग्वार, लहसुन आदि के प्रमुख मोटे रूप से तेजी-मन्दी के चांस पुस्तक में प्रकाशित किये गए हैं। व्यापार में लाभ-हानि की जिम्मेदारी कभी भी किसी हालत में नहीं होगी। इसके अलावा कौन-कौन से स्वप्न दिखने से तैल तिलहन, गुड़, खांड में तेजी आती है। गल्ला स्टाक, व्यापार करने के सफल तरीके, तेजी-मंदी ज्ञात करने के तरीके पुस्तक में समझाए गए हैं। तेजी-मंदी ज्ञात करने के तरीके सैकड़ों साल में काम में आवेंगे। सन् २००२ से २००३ के बीच का समय भयंकर घटाबढ़ी का है। सरसों डेढ़ वर्ष में १२०१ वाली १९००-२९००, चना २३०० होकर फिर २ वर्ष में ७००-९९९ के नीचे भाव, लहसुन १५-२० वाला ५५-८१ रुपये किलो, हल्दी १५ रुपये किलो वाली ढाई वर्ष में ३५-४३ के भाव बनने का अनुमान है। तूफानी चांस पुस्तक मंगाकर पढ़ें। गुवार ७७७-९०० वाली २०९९-३२९९ के भाव ३ वर्ष के अन्दर होने का अनुमान है। पुस्तक बी.पी द्वारा नहीं भेजी जायेगी। मनीआर्डर कूपन पर आप अपना नाम पता लिखना भूलें नहीं।

१. श्रीमती चम्पा देवी जैन ध.प. प्रेमचन्द्र जैन पोरसा वाले, इंदौर बैंक कैम्पस, ग्रोवर हॉस्पीटल के पीछे, बारादरी चौराहा, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४००६
२. अखिलेश कुमार जैन पोरसा वाले, इन्दौर बैंक के पीछे, बारादरी चौराहा मुरार, ग्वालियर (म.प्र)-४७४०६
३. रेनू कुमारी जैन सुपुत्री पी.सी. जैन पोरसा वाले, लाल कोठी के सामने, इन्दौर बैंक के पीछे,बारादरी चौराहा मुरार, (ग्वालियर) (म.प्र.)-४७४०११
४. मनीष कुमार जैन-पोरसा वाले द्वारा लाइट मशीनरी,चम्बल कॉलोनी, ठाटीपुर, ग्वालियर (म.प्र.)-४७४०११

शेष पृष्ठ २०९ पर देखें..

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

त्रिबल शुद्धि कोष्ठक सम्वत् २०५९ विक्रमी (दिनांक १३ अप्रैल २००२ से १ अप्रैल २००३ ई. तक)

विवाह के लिए श्रेष्ठ समय के ज्ञानार्थ कोष्ठक (वर को सूर्य व कन्या को गुरु बल विचार सहित) बन्द कोष्ठकों में घंटा मिनट लिखे गये हैं।

इस पंचांग में विवाह के लिए तत्काल तारीख ज्ञानार्थ त्रिबल शुद्धि कोष्ठक पाठकों की सुविधा हेतु विगत वर्षों से देते आ रहे हैं। किस-किस महीने की किस-किस तारीख को किन-किन राशि वाले लड़के-लड़कियों के विवाह हो सकते हैं। इन सबकी जानकारी इस त्रिबल शुद्धि कोष्ठक से मिलेगी। जिससे साधारण व्यक्ति भी एक नजर में जान सकता है कि अनुक राशि वाले लड़के व लड़की की शादी इस वर्ष किन-किन तारीखों में हो सकती है। वर के लिए ''सूर्य की पूजा'' तथा कन्या के लिए ''गुरु की पूजा'' वाला समय भी लिख दिया गया है। वर व कन्या की राशियों वाले कालम में जो तारीखें एक समान मिलें उन तारीखों में उस राशिवाले लड़के-लड़की का विवाह सम्पन्न हो सकता है। मेषादि राशि वाले लड़कों के लिए चौथे, आठवें तथा बारहवें सूर्य व ४, ८ चन्द्र परित्याग कर शेष सभी महीनों में मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं। वर्तमान समय में लड़कियों का विवाह बड़ी आयु में किया जाता है, अतः चतुर्थ, अष्टम और बारहवें गुरु की शास्त्रानुसार विशेष पूजा करके नेष्टता को दूर किया जा सकता है तथा चतुर्थ, अष्टम और बारहवें चन्द्रमा को छोड़कर विवाह मुहूर्तों की तारीखें लिखी गयी हैं।

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
मेष—अप्रैल—२२, २५, २६, २७, ३०, मई—१, ४, ५, १९, २०, २१. २२, २३, २४, २८, ३०, ३१, जून—१, ६, ७, १५, १८, १९, २०. २१, २२, २७, २८, जुलाई—१, जन. २०, २२, २३, २९, फर.—१६, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ९, १० शुभ हैं।	१३ अप्रैल से १४ जून तक	**मेष**—अप्रैल—२२,२५,२६,२७,३०,मई—१,४,५,१९,२०,२१, २२,२३,२४,२८,३०,३१,जून—१,६,७,१५,१८,१९,२०,२१,२२,२७, २८,जुलाई—१,नवम्बर—२७,२८,२९,३०,दिसम्बर—१,८,९, जनवरी—२०,२२,२३,२९,फरवरी—१६,१८,१९,२०,२८,मार्च—४,९,१० शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से वर्ष समाप्ति तक
वृष—मई—१९, २१, २२, २३, २४, २६, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६. १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, जुलाई—१, २, नवम्बर—१६, १७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९. १२, १३, जन.—२०, २२, २३, २९, फरवरी—५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ५, ६ शुभ हैं।	१४ मई से १५ जून तक १६नव. से १५ दिस. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**वृष**—अप्रैल—२२, २५, २६, २७, ३०, मई—४, ५, ८, ९, १०, १९, २१, २२, २३, २४, २६, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६, १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, जुलाई—१, २, ३, १६, १७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ५, ६, ९ शुभ हैं।	५ जुलाई से वर्ष समाप्ति तक
मिथुन—अप्रैल—२२, २६, २७, ३०, मई—१, ५, ८, ९, १०, जून—१५, १९, २०, २१, २२, २३, २८, जुलाई—१, २, ३, ४, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, दिसम्बर—१, ९, १२, १३, फरवरी—१६, १८, २०, मार्च—४, ५, ६, ७, ९ शुभ हैं।	१५ जून से १६ जुलाई तक १४ जन. से १२ फर. तक	**मिथुन**—अप्रैल—२२,२६,३०,मई—१,५,८,९,१०,१९,२०,२१,२३,२४, २६,२८,३०,जून—१,४,५,६,७,१५,१९,२०,२१,२२,२३,२८,जुलाई—१,२, ३,४,नवम्बर—१६,१७,२७,२८,दिसम्बर—१,९,१२,१३,जनवरी—२०,२२, फरवरी—५,६,७,८,१६, १८,२०,मार्च—४,५,६,७,९ शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से ५ जुलाई तक
कर्क—अप्रैल—२२, २५, २६, ३०, मई—१, ४, ५, ८, ९, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६, ७, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—५, ६, ७, ८ शुभ हैं।	१६ नव. से १५ दिस. तक १४ जन. से १२ फर. तक	**कर्क**—अप्रैल—२२, २५, २६, ३०, मई—१, ४, ५, ८, ९, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६, ७, १५, १८, १९, २२, २३, २७, २८, जुलाई—१, २, ३, ४, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—५, ६, ७, ८, १६, १९, २०, २८, मार्च—४, ५, ६, ७, ९, १० शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से वर्ष समाप्ति तक
सिंह—अप्रैल—२५, २६, २७, ३०, मई—१, ४, ५, १०, २१, २२, २३, २४, २८, ३०, ३१, जून—१, ६, ७, १४, १८, १९, २०, २१, २२, २७, २८, जुलाई—१, ३, ४, जनवरी—२२, २६, २९, फरवरी—७, ८, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ६, ७, ९, १० शुभ हैं।	१३ अप्रैल से १४ मई तक १२ फर. से १४ मार्च तक	**सिंह**—अप्रैल—२५, २६, २७, ३०, मई—१, ४, ५, १०, २१, २२, २३, २४, २८, ३०, ३१, जून—१, ६, ७, १८, १९, २०, २१, २२, २७, २८, जुलाई—१, ३, ४, नवम्बर—१७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, जनवरी—२२, २३, २९, फरवरी—७, ८, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ६, ७, ९, १० शुभ हैं।	५ जुलाई से वर्ष समाप्ति तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर (लड़का)	वर के लिए पूज्य सूर्य	कन्या (लड़की)	लड़की के लिए पूज्य गुरु
कन्या—मई—१९, २३, २४, २६, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६, १५, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, जुलाई—१, २, ३, नवम्बर—१६, १७, दिसम्बर—१, ८, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २९, फरवरी—५, ६, ७, १६, २०, २८, मार्च—४, ५, ६, ९, १० शुभ हैं।	१४ मई से १५ जून तक १४ जन. से १२ फर. तक	**कन्या**—अप्रैल—२२, २६, २७, ३०, मई—४, ५, ८, ९, १०, १९, २३, २४, २६, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६, १५, १९, २०, २१, २२, २३, २७, २८, जुलाई—१, २, ३, नवम्बर—१६, १७, दिसम्बर—१, ८, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २९, फरवरी—५, ६, ७, २०, २८, मार्च—४, ५, ६, ९, १० शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से ५ जुलाई तक
तुला—अप्रैल—२२, ३०, मई—१, ५, ८, ९, १०, जून—१५, २२, २८, जुलाई—१, २, ३, ४, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, दिसम्बर—१, ९, १२, १३, फरवरी—१६, १८, मार्च—४, ५, ६, ७ शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से वर्ष समाप्ति तक	**तुला**—अप्रैल—२२, ३०, मई—१, ५, ८, ९, १०, १९, २०, २१, २६, २८, ३०, जून—१, ४, ५, ६, ७, १५, २२, २३, २८, जुलाई—१, २, ३, ४, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, दिसम्बर—१, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, फरवरी—५, ६, ७, ८, १६, १८, मार्च—४, ५, ६, ७, ९ शुभ हैं।	५ जुलाई से वर्ष समाप्ति तक
वृश्चिक—अप्रैल—२२, २५, २६, ३०, मई—१, ४, ५, ८, ९, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २८, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६, ७, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—५, ६, ७, ८ शुभ हैं।	१४ मई से १५ जून तक १६ नवं. से १५ दिसं. तक	**वृश्चिक**—अप्रैल—२२, २३, २६, ३०, मई—१, ४, ५, ८, ९, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २८, ३०, ३१, जून—१, ४, ५, ६, ७, १५, १८, १९, २७, २८, जुलाई—१, २, ३, ४, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—५, ६, ७, ८, १६, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ५, ६, ७, ९, १० शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से ५ जुलाई तक
धनु—अप्रैल—२२, २५, २६, २७, मई—४, ५, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, जून—१, ६, ७, १५, १८, १९, २०, २१, २२, २७, २८, जुलाई—१, ३, ४, जनवरी—२०, २२, २३, फरवरी—७, ८, १६, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ६, ७, ९, १० शुभ हैं।	१३ अप्रै. से १४ मई तक १५ जून से १६ जुलाई तक १४ जन. से १२ फर. तक	**धनु**—अप्रैल—२२, २५, २६, २७, मई—४, ५, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २४, ३०, ३१, जून—१, ६, ७, १५, १८, १९, २०, २१, २२, २७, २८, जुलाई—१, ३, ४, नवम्बर—१७, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, जनवरी-२०, २२, २३, फरवरी—७, ८, १६, १८, १९, २०, २८, मार्च—४, ६, ७, ९, १० शुभ हैं।	५ जुलाई से वर्ष समाप्ति तक
मकर—मई—१९, २१, २२, २३, २४, २६, जून—१, ४, ५, ६, १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, जुलाई—१, २, ३, नवम्बर—१६, १७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, २३, २८, फरवरी—५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, मार्च—४, ५, ६, ९, १० शुभ हैं।	१४ मई से १५ जून तक १४ जन. से १४ मार्च तक	**मकर**—अप्रैल—२२, २५, २६, २७, ३०, मई—५, ८, ९, १०, १९, २१, २२, २३, २४, २६, जून—१, ४, ५, ६, १५, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २८, जुलाई—१, २, ३, नवम्बर—१६, १७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ९, १२, १३, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—५, ६, ७, १६, १८, १९, २०, मार्च—४, ५, ६, ९, १० शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से ५ जुलाई तक
कुंभ—अप्रैल—२२, २६, २७, ३०, मई—१, ८, ९, १०, जून—१५, १९, २०, २१, २२, २३, जुलाई—१, २, ३, ४, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, दिसम्बर—१, १२, १३, फरवरी—१६, १८, २०, मार्च—४, ५, ६, ७ शुभ हैं।	१५ जून से १६ जुला. तक १२ फर. से १४ मार्च तक	**कुंभ**—अप्रैल—२२, २६, २७, ३०, मई—१, ८, ९, १०, १९, २०, २१, २३, २४, २६, २८, ३०, जून—४, ५, ६, ७, १५, १९, २०, २१, २२, २३, जुलाई—१, २, ३, ४, नवम्बर—१६, १७, २७, २८, दिसम्बर—१, १२, १३, जनवरी—२०, २२, फररवरी—५, ६, ७, ८, १६, १८, २०, मार्च—५, ६, ७, ९ शुभ हैं।	५ जुलाई से वर्ष समाप्ति तक
मीन—अप्रैल—२२, २५, २६, ३०, मई—१, ४, ५, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३०, ३१, जून—१, ६, ७, १५, नवम्बर—१७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—७, ८ शुभ हैं।	१३ अप्रैल से १४ मई तक १६ नव. से १५ दिस. तक	**मीन**—अप्रैल—२२, २५, २६, ३०, मई—१, ४, ५, १०, १९, २०, २१, २२, २३, २६, २८, ३०, ३१, जून—१, ६, ७, १५, १८, १९, २२, २३, २७, २८, जुलाई—३, ४, नवम्बर—१७, २७, २८, २९, ३०, दिसम्बर—१, ८, ९, जनवरी—२०, २२, २३, २९, फरवरी—७, १६, १८, १९, २०, २८, मार्च—६, ७, ९, १० शुभ हैं।	वर्ष प्रारम्भ से वर्ष समाप्ति तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

✲ विक्रम संवत् २०५९ शाके १९२४ मध्ये विवाहादि मुहूर्त्ताः ✲

समय शुद्धिः

शुक्र अस्त—इस वर्ष सम्वत् २०५९ वि. में कार्तिक कृष्णा २ बुधवार दिनांक २३ अक्टूबर २००२ ई. से कार्तिक शुक्ल २ बुधवार दिनांक ६ नवम्बर २००२ ई. तक शुक्र पश्चिमास्त रहेगा।

गुरु अस्त--इस वर्ष संवत् २०५९ वि. में आषाढ़ कृष्ण १४ मंगलवार दिनांक ९ जुलई २००२ ई. से श्रावण कृष्ण ९ शनिवार दिनांक ३ अगस्त २००२ ई. तक गुरु पश्चिमास्त रहेगा।

धनु राशि में सूर्य (मलमास)—मार्गशीर्ष शुक्ला ११ रविवार दिनांक १५ दिसम्बर २००२ ई. से पौष शुक्ला ११ मंगलवार दिनांक १४ जनवरी २००३ ई. तक।

होलाष्टक—फाल्गुन शुक्ला ८ मंगलवार दिनांक ११ मार्च २००३ ई. से फाल्गुन शुक्ला १४ सोमवार दिनांक १७ मार्च २००३ ई. तक।

इस पंचांग में गुरु-शुक्र का उदयास्त ज्योतिर्गणित की सूक्ष्म उन्नतांश पद्धति से लगाया गया है। गुरु-शुक्र के अस्तकाल से ३ दिन पूर्व के वृद्धत्वकाल से तथा उदय के बाद ३ दिन तक बाल्यत्व दोष में विवाहादि शुभ कर्म नहीं करने चाहिए तदनुसार ही मुहूर्तादि लिखे गये हैं।

नोट:-नीचे लिखे विवाह मुहूर्तों में जहाँ कहीं युति, वेध और दग्धा तिथि दोषों में परिहार वाक्य मिले हैं वे विवाह मुहूर्त भी लिखे गये हैं। यहां क्रांति साम्य दोष स्थूल न लेकर सूक्ष्म गणितागत लिया गया है।

अथ शुद्ध विवाह मुहूर्त्ताः

चैत्र शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
१०	सोम	२२	अप्रै.	मघा	रे.६।ऽ॥।ऽरो।ऽऽ।ल.मिथुन कर्क, दिवा१०।५३ से १३।३२ तक ल. गोधूलि वेला सायं-कुंभे रात्रौ २६।३० से २७।५८ तक चन्द्र ७ पूज्य (गणित से क्रांति साम्याऽभावः)
१३	गुरु	२५	अप्रै.	हस्त	रे. ७ऽरा॥।ऽअग्नि ऽ॥ल.कर्क सिंह दिवा ११।०० से १५।२९ तक गोधूलि वेलायां सायं
१३	गुरु	२५	अप्रै.	चित्रा	रे ७ ।ऽ।।ऽअग्निऽ॥ल.मकर रात्री २५।२१ से २६।१८ तक ल.मीन रात्रि २७।४६ से २९।११ तक चन्द्र ७ पूज्य
१४	शुक्र	२६	अप्रै.	चित्रा	रे.७।ऽ॥।ऽ अग्निऽ॥ल.मिथुन दिवा ८।४३ से १०।५२ तक ल. कर्क दिवा ११।५७ तक
१४	शुक्र	२६	अप्रै.	स्वाती	रे. ७॥।ऽसू.।ऽऽ॥ लग्न मकर रात्रौ २४।३१ बजे
१५	शनि	२७	अप्रै.	स्वाती	रे.७॥।ऽसू.।ऽऽ।लग्न मिथुन दिवा ८।३९ से १०।५२ तक

वैशाख कृष्ण पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
४	मंगल	३०	अप्रै.	मूल	रे. ८॥।ऽरा॥ऽ।ल. मकर कुम्भ मीन रात्री २४।१५ से २८।५५ तक (मकरे १२ चन्द्र पूज्य कुंभे शनि राहु दानं)
५	बुध	१	मई	मूल	रे. ८॥।ऽरा॥ऽ।ल. मिथुन दिवा ८।२२ से १०।३६ तक चंद्र ७ पूज्य सिंह १२।५५ से १५।१३ तक
८	शनि	४	मई	धनिष्ठा	रे. ८॥॥ऽग्नि।ऽ।ल. गोधूलि वेला सायं मकर रात्रि २३।५९ से २५।४१ तक, मीन २७।९ से २८।३४ तक (मीने रिक्ता दोष)
९	रवि	५	मई	धनिष्ठा	रे.८॥॥ऽग्नि।ऽ।ल. मिथुन दिवा ८।७ से १०।२१ तक, गोधूली वेला सायं
११	बुध	८	मई	उ.भा.	रे.८।ऽ॥॥ऽ॥ लग्न मिथुन-कर्क दिवा ७।५५से १२।२८ तक रात्रि रेखा ह्रास चौर बाण प्रा. रेखा ७ ल. मकर कुंभ रात्रौ २३।४४ से २६।५४ तक (कुंभे ४ शनि राहु दान)
१२	गुरु	९	मई	रेवती	रे. ७ऽमृ.॥।ऽचौ.ऽ॥ल. मिथुन,कर्क दिवा ७।५१ से १२।२४ तक रात्रौ रेखा ८ चौ.बाण ल.मकर, कुंभ रात्रौ २३।४० से २६।५० तक (कुंभ ४ शनि राहु दान)
१३	शुक्र	१०	मई	रेवती	रे. ९॥॥ऽ॥ल. मिथुन दिवा ७।४७ से १०।१ तक

वैशाख शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
७	रवि	१९	मई	मघा	रे. ८॥॥ऽनृ.।ऽ॥ कुंभ रात्रौ २४।४३ से २६।११ तक चन्द्र ७ पूज्य, मेष २७।३६से २९।१२ तक
८	चन्द्र	२०	मई	मघा	रे. ९॥॥॥ऽ।ल. कर्क दिवा ९।२२ से ११।४१ तक
९	मंग.	२१	मई	उ.फा.	रे. ६ऽबृ.ऽ॥ऽचौ.।ऽ।ल. गोधूलि वेला सायं, मीन२६।३ से २७।२८ तक चन्द्र ७ पूज्य
१०	बुध	२२	मई	उ.फा.	रे. ७ऽबृ.ऽ॥॥ऽ।ल. कर्क दिवा ९।१४ से ११।३३ तक १२ चन्द्र दान
१०	बुध	२२	मई	हस्त	रे. ८ऽरा.॥॥ऽ॥ल. सिंह दिवा १२।१४से १३।५१ तक
१२	गुरु	२३	मई	चित्रा	रे. ९॥॥ऽरो.॥।ल. सिंह दिवा ११।२९ से १३।४७ गोधूलि वेला, सायं कुम्भ रात्रौ २४।२७ से २५।५५ (४ शनि राहु दान) मेष रात्रौ २७।२० से २८।५६ तक (चन्द्र ७ पूज्य)
१३	शुक्र	२४	मई	स्वाति	रे. ७।ऽ॥।ऽरो.ऽ॥। ल.कर्क दिवा ९।६ से ११।२५ तक
१३	शुक्र	२४	मई	स्वाति	रे.८।ऽ॥।ऽ॥ल. सिंह कन्या दिवा ११।२५से १६।०० तक गोधूलि वेला सायं कुंभ रात्रौ २४।२३ से २५।५१ तक (४ शनि राहु दान) मेष रात्रौ २७।१६ से २८।५२ तक चन्द्र ७ पूज्य
१५	रवि	२६	मई	अनु.	रे. ८॥॥ऽग्नि.।ऽ।ल. सिंह दिवा १२।४७ से १३।३५ तक कन्या दिवा १३।१५ से १५।५२ तक कुंभ रात्रौ २४।१५ से २५।४३ तक (४ शनि राहु दान)

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२	मंग.	२८	मई	मूल	रे. ६।ऽ।ऽनृ.ऽभौ.रा.॥।ल. सिंह दिवा ११।१० से १३।२८ तक (गुरु पादेन वेधाऽभाव)
४	गुरु	३०	मई	श्रवण	रे. ६॥।ऽऽचौ.।ऽऽ।ल. मीन. मेष रात्रौ २६।२५ से २८।२९ तक (गणितेन क्रांति साम्याऽभाव)
५	शुक्र	३१	मई	श्रवण	रे. ८॥॥।ऽऽ।ल.गोधूलि वेला सायं, मीन रात्रौ २५।२४ से २६।४९ तक (गणितेन क्रांति साम्याऽभाव)
५	शुक्र	३१	मई	धनि.	रे. ८॥॥।ऽ।ऽ। ल. मेष रात्रौ २८।२ से २८।२० तक (गणितेन क्रांति साम्याऽभाव)
६	शनि	१	जून	धनि.	रे.८॥॥।ऽ।ऽ।ल. कर्क दिवा. ८।३३ से १०।५३ तक चन्द्र ७ पूज्य (गणितेन क्रांति साम्याऽभाव)
९	मंग.	४	जून	उ.भा.	रे. ८॥॥ऽग्नि।ऽ।ल. कुंभ रात्रौ २३।३९ से २५।६ तक मेष रात्रौ २६।३२ से २८।४ तक
१०	बुध	५	जून	उ.भा.	रे. ८॥॥ऽग्नि।ऽ।ल. कर्क दिवा ८।१८ से १०।१६ तक
१०	बुध	५	जून	रेवती	रे. ९॥॥॥ऽ।ल. कुंभ रात्रौ २३।३६ से २५।३ तक मेष रात्रौ २६।२९ से २८।५ तक चन्द्र १२ दान
११	गुरु	६	जून	रेवती	रे. ९॥॥॥ऽ।ल. कर्क दिवा ८।१४ से १०।३४ तक कन्या दिवा १२।५१ से १५।४ तक चन्द्र ७ पूज्य
११	गुरु	६	जून	अश्वि.	रे. ८॥॥ऽनृ.।ऽ।ल. कुंभ मीन रात्रौ २३।३२ से २६।३२
१२	शुक्र	७	जून	अश्वि.	रे. ८॥॥ऽनृ.।ऽ।ल. कर्क सिंह दिवा ८।१० से १२।४७ तक

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
५	शनि	१५	जून	मघा	रे. ९।ऽ॥॥॥ ल.मेष रात्री २५।५० से २७।२६ तक
८	मंग.	१८	जून	हस्त	रे. ७ऽऽ॥।ऽ॥। ल.मीन रात्री २४।१३ से २५।३९ तक (चन्द्र ७ पूज्य)
९	बुध	१९	जून	हस्त	रे ७ऽऽ॥।ऽ॥ल. कर्क सिंह कन्या दिवा ७।२४ से १४।१८ तक
९	बुध	१९	जून	चित्रा	रे. ८॥॥ऽनृप।ऽ।ल. गोधूलि वेलायां सायं ल. मीन रात्रि २४।९ से २५।३५ तक
१०	गुरु	२०	जून	चित्रा	रे. ८॥॥ऽनृप.।ऽ।ल. कर्क सिंह दिवा ७।२० से ११।५७ तक (सिंहे शुक्र दान) ल. कन्या दिवा ११।५८ से १४।१४ तक
१०	गुरु	२०	जून	स्वाती	रे. ९॥॥।ऽ॥ल. गोधूलि वेला सायं ल. कुम्भ रात्री २२।३८ से २३।२ तक पश्चात् भद्रा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
११	शुक्र	२१	जून	स्वाती	रे. ९॥॥ऽ॥ल.कर्क सिंह दिवा ९।५५ से ११।५३ तक (सिंहे शुक्र दान) ल. कन्या दिवा ११।५३ से/१३।४३ तक
१२	शनि	२२	जून	अनु.	रे.७ऽसू.ऽ।।ऽचौ.॥ल. कन्या दिवा १२।२६ से १४।६ तक ल. तुला १४।७ से १६।२६ तक
१२	शनि	२२	जून	अनु.	रे. ८ऽसू.ऽ॥॥॥ल. गोधूलि वेला सायं ल.कुंभ मीन मेष रात्रि २२।३० से २।५९ तक।
१३	रवि	२३	जून	अनु.	रे. ८ऽसू.ऽ॥॥॥ल.कर्क सिंह दिवा ७।९ से ११।२५ तक।

आषाढ़ कृष्ण पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
३	गुरु	२७	जून	श्रवण	रे. ८।ऽ॥।ऽअग्नि॥ल.कन्या तुला दिवा ११।३० से १४।३१ तक ल. मेष रात्रि २६।४९ से ४।३९ तक
४	शुक्र	२८	जून	श्रवण	रे. ९।ऽ॥॥॥ लग्न कर्क दिवा ६।४९ से ९।९ तक (रिक्ता आव.)
४	शुक्र	२८	जून	धनि.	रे. ६॥।ऽशुऽशु।ऽऽ।ल.कन्या दिवा १२।४३ से १३।४३ तक ल. तुला दिवा १३।४४ से १६।३ तक, गोधूलि वेला सायं (पाद वेध से शुक्र वेधाऽभाव)
६	सोम	१	जुला.	उ.भा.	रे. ७ऽबु॥।ऽचौ.।ऽ।ल.कुंभ रात्री २१।५५से २३।२३ तक ल.मेष रात्री २४।४८ से २६।२४ तक (चन्द्र१२ पूज्य)
७	मंग.	२	जुला.	रेवती	रे. ७॥॥ऽऽ।ऽ ल. कुंभ रात्री २२।३९ से २३।१९ तक। ल. मेष रात्री २४।४४ से २६।२० तक (दग्धा तिथि आवश्यके)
८	बुध	३	जुला.	रेवती	रे.६॥॥ऽरोगऽऽ।ऽ ल. कर्क दिवा ६।२९ से ८।४९ तक। ल. कन्या दिवा ११।७ से १३।२३ तक (चन्द्र ७ पूज्य) दग्धा आवश्यके
८	बुध	३	जुला.	रेवती	रे. ७॥॥ऽरोगऽऽ॥ ल. गोधूलि वेला सायं। ल.कुम्भ रात्री २१।४७ से २३।१५ तक
९	गुरु	४	जुला.	अश्वि.	रे. ९॥॥॥ऽ॥ल. सिंह दिवा ८।४५ से ११।३ तक। ल. तुला दिवा १३।१९ से १५।३९ (चन्द्र ७ पूज्य)। गोधूलि वेला सायं। ल. मीन रात्री २३।११ से २४।३६ तक।

पंजाब आदि त्रिगर्त देशीय प्रान्तों हेतु विवाह मुहूर्त

श्रावण शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२	शनि	१०	अग.	मघा	रे.९॥ऽबु.।॥॥ ल.कन्या दिवा ८।३८ से १०।५५ तक बुध युति
३	रवि	११	अग.	उ.फा.	रे. ८ऽश.रा.॥॥ऽचौ.॥ल. कन्या दिवा ८।५० से १०।५१ तक गोधूलि वेला सायं कुंभ रात्री १९।१४ से २०।४२ तक बुध ७ पूज्य
५	मंग.	१३	अग.	चित्रा	रे.७।ऽ॥।ऽरो.॥।ऽल.कन्या दिवा ८।२६ से १०।४३ तक धनु दिवा १५।२० से १७।२४ तक, गोधूलि वेला सायं, कुंभ रात्री १९।६ से २०।३४ तक बुध ७ पूज्य मेष रात्री २२।०० से २३।३५ तक चन्द्र ७ पूज्य दग्धा आव.
६	बुध	१४	अग.	स्वाति	रे. ९॥॥॥ऽ।ल. कन्या दिवा ८।२२ से १०।३९ तक धनु दिवा १५।१६ से १७।२० तक गोधूली वेला सायं कुंभ रात्री १९।२ से २०।३० तक बुध ७ पूज्य मेष रात्री २१।५६ से २३।३१ तक चन्द्र ७ पूज्य
१५	गुरु	२२	अग.	धनि.	रे. ९।॥॥ऽ।ल.धनु दिवा १५।१८ से १६।४९ तक गोधूलि वेला सायं मेष रात्री २१।२५ से २३।०० तक

भाद्रपद कृष्ण पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२	रवि	२५	अग.	उ.भा.	रे.८ ॥।ऽबु.ऽरोग॥।ल.धन दिवा १४।३३ से १६।३७ तक। गोधूलि वेला सायं काले
५	बुध	२८	अग.	अश्वि.	रे. ६।ऽ।॥ऽऽ। अग्नि।ऽऽ। ल. मकर दिवा १४।२२ से १६।२६ तक

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२	रवि	८	सित.	उ.फा.	रे. ८ऽमं.श.रा.ऽ॥॥॥ल.वृश्चिक धन दिवा ११।२१ से १५।४२ तक (धन ७ शनि दान)
२	रवि	८	सित.	हस्त	रे. ७ऽगु।ऽबु॥ऽनृप॥।लग्न कर्क रात्री २६।३ से २८।२२ तक
३	सोम	९	सित.	हस्त	रे. ७ऽगु।ऽबु॥ऽनृप॥।। लग्न तुला दिवा ८।५७ से ११।१७ तक
३	सोम	९	सित.	चित्रा	रे. ९॥॥ऽनृप॥।। ल.धन मकर दिवा १३।३४ से १७।२१ तक ल. कर्क रात्री २५।५९ से २८।१८ तक।
६	गुरु	१२	सित.	अनु.	रे. ७।ऽ॥॥ऽऽ।ल.कन्या तुला दिवा ६।२७ से ११।४ तक। ल.धन दिवा १३।२१ से १५।२५ तक। गोधूलि वेला सायं काले।
६	गुरु	१२	सित.	अनु.	रे. ६।ऽ॥।ऽरोग ऽऽ॥ ल. कर्क रात्री २५।४६ से २८।५ तक
८	शनि	१४	सित.	मूल	रे. ८॥॥ऽश॥ऽ।ल. कन्या तुला दिवा ६।१९ से १०।५६ तक। ल.मकर दिवा १५।१७ से १७।०० तक। गोधूलि वेला सायं।

आश्विन शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
१	सोम	७	अक्टू.	स्वाती	रे. ८।ऽ॥ऽ अग्नि॥।ल. कर्क रात्री २४।७ से २६।२७ तक
२	मंग.	८	अक्टू.	स्वाती	रे. ८।ऽ॥ऽ अग्नि॥।ल.धन मकर कुंभ दिवा ११।३९ से १६।५३ तक
५	गुरु	१०	अक्टू.	अनु.	रे. ८॥॥ऽनृप।ऽ।ल. तुला दिवा ६।५३ से ९।१३ तक। ल. धन दिवा ११।३१ से १३।३२ तक
६	शुक्र	११	अक्टू.	मूल	रे. ८॥॥ऽशऽचौ.॥।ल. कुंभ दिवा १५।१३ से १६।४१ तक। ल. गोधूलि वेला सायं। ल. सिंह रात्री २६।११ से २८।२८ तक।
७	शनि	१२	अक्टू.	मूल	रे. ८॥॥ऽशऽचौ.॥।ल.तुला दिवा ६।४५ से ९।५ तक।
९	सोम	१४	अक्टू.	श्रव.	रे. १०॥॥॥॥ल. कुंभ दिवा १५।१ से १६।२९ तक। गोधूलि वेला सायं। ल. कर्क रात्री २३।३९ से २५।५९ तक (चन्द्र ७ पूज्य)
१०	मंग.	१५	अक्टू.	श्रव.	रे. १०॥॥॥॥ ल. धन दिवा ११।११ से १३।१४ तक
१३	बुध	१९	अक्टू.	उ.भा.	रे.७।॥ऽबुऽमं.ऽअग्नि॥।ल.कर्क रात्री २३।१९ से २५।३९ तक।(पादवेध से बुध वेधाऽभाव:)

कार्तिक शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
६	रवि	१०	नव.	श्रव.	रे. ७।ऽ॥ऽचौ.।ऽ।ल. कर्क रात्री २१।५३ से २४।१२ तक (चन्द्र ७ पूज्य)
७	सोम	११	नव.	श्रव.	रे. ७।ऽ॥ऽ चौ.।ऽ॥ ल. धन दिवा ९।२४ से ११।२८ तक
८	मंग.	१२	नव.	धनि.	रे. ७॥ऽ गु. ऽ।।ऽ।ल.धन दिवा ९।२० से ११।२४ तक

कार्तिक शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
१२	शनि	१६	नव.	रेवती	रे.८ऽसू.॥॥ऽ॥ल.कर्क रात्री २१।३० से २३।४९ तक (रवि निरंश)
१३	रवि	१७	नव.	रेवती	रे. ८ऽ सू.॥॥ऽ॥ल. मकर दिवा ११।५ से ११।३३ तक (पश्चात्मृत्युबाण)

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
७	बुध	२७	नव.	मघा	रे. ९॥॥ऽअग्नि॥।ल. गोधूलि वेला सायं
८	गुरु	२८	नव.	उ.फा.	रे. ८ऽबु॥॥ऽ।ल. कन्या रात्री २५।२० से २७।३६ तक
१०	शुक्र	२९	नव.	उ.फा.	रे. ६ऽबु॥॥ऽनृप।ऽ।ऽ ल. मकर दिवा १०।१८ से १२।०० तक (गुरु ७ पूज्य) गोधूलि वेला सायं
११	शनि	३०	नव.	हस्त	रे. ७॥॥ऽनृपऽऽ।ल. मकर दिवा. १०।१४ से ११।५६ तक (गुरु ७ पूज्य)
११	शनि	३०	नव.	हस्त	रे. ८॥॥॥ऽऽ।ल. गोधूलि वेला सायं
११	शनि	३०	नव.	चित्रा	रे. ९॥॥॥ऽ।ल. कर्क, सिंह रात्री २०।३५ से २२।५४ तक
१२	रवि	१	दिस.	चित्रा	रे. ९॥॥॥ऽ॥ ल. मकर दिवा १०।१० से ११।५३ तक (गुरु ७ पूज्य) ल.कुम्भ दिवा ११।५४ से १३।२० तक (चौर बाण रेखा ८)
१२	रवि	१	दिस.	स्वाती	रे. ८॥ऽशु.।चौ.॥।ल.कर्क रात्री २२।५१ से २५।८ तक

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
५	रवि	८	दिस.	श्रव.	रे. ८॥॥ऽनृप।ऽ।। ल.कुंभ दिवा ११।२६ से १२।५३ तक। गोधूलि वेला सायं। ल. कर्क रात्री २०।४ से २२।२४ तक (गुरु ७ पूज्य) ल.कन्या रात्री २४।४२ से २६।५८ तक।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
६	सोम	९	दिस.	धनि.	रे. ७॥ऽगुऽगु।ऽ॥ल.सिंह रात्री २२।२० से २४।३८ तक (चन्द्र ७ पूज्य) (पाद वेधेन गुरु वेधाऽभाव)
८	गुरु	१२	दिस.	उ.भा.	रे. ९॥॥ऽरोग॥।ल. गोधूलि वेला सायं। ल. कर्क १९।४८ से २२।८ तक। ल.कन्या २४।२६ से २६।४२ तक (चन्द्र ७ पूज्य)
९	शुक्र	१३	दिस.	उ.भा.	रे. १०॥॥॥॥।ल. कुम्भ दिवा ११।६ से १२।३३ तक।
९	शुक्र	१३	दिस.	रेवती	रे. ६।ऽ॥॥ऽऽ।ऽल. कर्क रात्रौ १९।४४ से २२।४ तक। ल. कन्या रात्रौ २४।२१ से २६।३८ तक। (चन्द्र ७ पूज्य)

माघ कृष्ण पक्ष 2003 ई.

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२	सोम	२०	जन.	मघा	रे. ९॥॥ऽचौ.॥।ल.गोधूलि वेला सायं। ल.कन्या रात्री २१।५३ से २४।९ तक
४	बुध	२२	जन.	उ.फा.	रे. ६ऽश.रा.॥॥ऽरो.ऽऽ।ल. गोधूलि वेला सायं तुला रात्रौ २४।१ से २६।२१ तक। धनु रात्रौ २८।३८ से ३०।४२ तक
५	गुरु	२३	जन.	हस्त	रे. ७॥॥ऽरोऽऽ।ल.मीन दिवा ९।५३ से ११।१८ तक चन्द्र ७ पूज्य
५	गुरु	२३	जन.	हस्त	रे. ८।॥॥ऽरो.।ऽ।ल. गोधूलि वेला सायं तुला रात्रौ २३।५७ से २६।१७ तक चन्द्र १२ दान धनु रात्रौ २८।३४ से २९।११ तक
१२	बुध	२९	जन.	मूल	रे.६ऽभौ.॥॥ऽचौ.ऽऽ।ल.कन्या रात्रौ २१।१८ से २३।३४ तक तुला रात्रौ २३।३४ से २५।५४ तक।

माघ शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
४	बुध	५	फर.	उ.भा.	रे. ८॥॥ऽनृ.।ऽ।ल.धनु रात्री २७।४४ से २९।४७ तक
५	गुरु	६	फर.	रेवती	रे. ८।ऽ॥॥ऽ।ल.गोधूलि वेला सायं कन्या रात्रौ २०।४६ से २३।३ तक चन्द्र ७ पूज्य धनु रात्रौ २७।४० से २९।४३ तक
६	शुक्र	७	फर.	अश्वि.	रे.९॥॥ऽचौ.॥।ल.गोधूलि सायं तुला रात्रौ २२।५९ से २५।१८ तक चन्द्र ७ पूज्य धनु रात्रौ २७।३६ से २९।३९ तक
७	शनि	८	फर.	अश्वि.	रे. १०॥॥॥॥।ल.मीन दिवा ८।५१ से १०।१७ तक
१४	रवि	१६	फर.	मघा	रे. ७॥ऽबु.ऽसू.॥ऽ।ल. तुला रात्रौ २२।३९ से २४।४२ तक धनु रात्रौ २७।०० से २९।०३ तक

फाल्गुन कृष्ण पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
२	मंग.	१८	फर.	उ.फा.	रे. ९ऽश.रा.॥॥॥। ल. तुला रात्रौ १९।५८ से २२।१५ तक धनु रात्रौ २६।५२ से २८।५५ तक मकर रात्रौ २८।५५ से ३०।३९ तक (मकर रे. ८ चौर बाण)
३	बुध	१९	फर.	उ.फा.	रे. ८ऽश.रा.॥॥ऽचौ.॥॥ ल. मीन दिवा ८।७ से ९।३३ तक चन्द्र ७ पूज्य
४	गुरु	२०	फर.	चित्रा	रे. ७।ऽ॥॥ऽऽ। ल.गौधूलि वेला सायं तुला रात्री २२।६ से २४।२५ तक, धनु रात्रौ २६।४३ से २८।४६ तक (रो. बाण रेखा ६)
१३	शुक्र	२८	फर.	श्रव.	रे. ८॥॥ऽचौ.ऽ॥ल. कन्या, तुला रात्रौ १९।१८ से २३।५४ तक

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	रेखा लग्न शुद्धि तथा अन्य विवरण
१	मंग.	४	मार्च	उ.भा.	रे. ८।ऽ॥ऽग्नि॥॥ ल.मकर रात्री २८।१ से २९।४३ गुरु ७ पूज्य
२	बुध	५	मार्च	उ.भा.	रे. ८।ऽ॥ऽग्नि॥॥ ल.मेष दिवा ८।३८ से १०।१४ तक
२	बुध	५	मार्च	रेवती	रे. १०॥॥॥॥ ल. मकर रात्रौ २७।५७ से २९।३९ तक
३	गुरु	६	मार्च	रेवती	रे. १०॥॥॥॥ ल. मेष दिवा ८।३४ से १०।१० तक
३	गुरु	६	मार्च	अश्वि.	रे. ९॥॥॥॥ऽल. तुला रात्रौ २१।१२ से २३।३२ तक चन्द्र ७ पूज्य व दग्धा आवश्यके
४	शुक्र	७	मार्च	अश्वि.	रे. ९॥॥ऽरो.॥।ल. गोधूलि वेला सायं
६	रवि	९	मार्च	रोहि.	रे. ८॥॥ऽ के.।ऽ॥। ल. मकर रात्रौ २८।१ से २९।२३ तक गुरु ७ पूज्य
७	चन्द्र	१०	मार्च	रोहि.	रे. ८॥॥ऽके.।ऽ॥। ल. मेष दिवा ८।१८ से ९।५४ तक गोधूलि वेला सायं

यज्ञोपवीत (उपनयन) मुहूर्त्ताः

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	व लग्नादि
वैशा.	कृ.	३	सोम	२९	अप्रै.	अनु.	मिथुन अभिजित्
वैशा.	कृ.	५	बुध	१	मई	मूल	मिथुन
वैशा.	कृ.	६	गुरु	२	मई	पू.षा.	मिथुन-कर्क
वैशा.	शु.	५	शुक्र	१७	मई	पुनर्वसु	सिंह
वैशा.	शु.	१०	बुध	२२	मई	उ.फा.	सिंह
वैशा.	शु.	१२	गुरु	२३	मई	हस्त	मिथुन
ज्येष्ठ	कृ.	५	शुक्र	३१	मई	श्रवण	अभिजित्
ज्येष्ठ	शु.	२	बुध	१२	जून	आर्द्रा	कर्क-सिंह
ज्येष्ठ	शु.	३	गुरु	१३	जून	पुनर्वसु	कर्क-सिंह
ज्येष्ठ	शु.	१०	गुरु	२०	जून	चित्रा	कर्क-सिंह-कन्या
ज्येष्ठ	शु.	११	शुक्र	२१	जून	स्वाती	अभिजित्
पौष	शु.	१२	बुध	१५	जन.	रोहिणी	मीन
माघ	कृ.	४	बुध	२२	जन.	उ.फा.	मीन
माघ	शु.	२	सोम	३	फर.	शत.	कुम्भ
माघ	शु.	५	गुरु	६	फर.	रेवती	मीन-मेष
माघ	शु.	६	शुक्र	७	फर.	रेवती	मीन
माघ	शु.	११	गुरु	१३	फर.	आर्द्रा	अभिजित्
फाल्गु.	कृ.	३	बुध	१९	फर.	उ.फा.	मीन
फाल्गु.	कृ.	५	शुक्र	२१	फर.	चित्रा	मेष
फाल्गु.	शु.	२	बुध	५	मार्च	उ.भा.	मेष
फाल्गु.	शु.	३	गुरु	६	मार्च	रेवती	अभिजित्

देव प्रतिष्ठा मुहूर्त्ताः

मास	पक्ष	ति.	वार	ता.	मास	नक्षत्र	व लग्नादि
चैत्र	शु.	९	रवि	२१	अप्रै.	पुष्य	अभिजित्
चैत्र	शु.	१२	बुध	२४	अप्रै.	उ.फा.	मिथुन
चैत्र	शु.	१३	गुरु	२५	अप्रै.	हस्त	अभिजित्
चैत्र	शु.	१५	शनि	२७	अप्रै.	स्वाती	अभिजित्
वैशा.	कृ.	३	सोम	२९	अप्रै.	अनु.	अभिजित्
वैशा.	कृ.	५	बुध	१	मई	मूल	मिथुन
वैशा.	कृ.	८	शनि	४	मई	श्रवण	अभिजित्
वैशा.	कृ.	१२	गुरु	९	मई	रेवती	मिथुन-कर्क
वैशा.	शु.	५	शुक्र	१७	मई	पुन.	अभिजित्
वैशा.	शु.	१२	गुरु	२३	मई	हस्त	मिथुन
वैशा.	शु.	१२	गुरु	२३	मई	चित्रा	अभिजित्
वैशा.	शु	१३	शुक्र	२४	मई	स्वाती	अभिजित्
वैशा.	शु.	१५	रवि	२६	मई	अनु.	अभिजित्
ज्येष्ठ	कृ.	६	शनि	१	जून	धनि.	मिथुन-अभिजित्
ज्येष्ठ	कृ.	१०	बुध	५	जून	उ.भा.	कर्क-सिंह
ज्येष्ठ	शु.	३	गुरु	१३	जून	पुन.	सिंह
ज्येष्ठ	शु.	१०	गुरु	२०	जून	चित्रा	सिंह
ज्येष्ठ	शु.	११	शुक्र	२१	जून	स्वाती	अभिजित्
आषाढ़	कृ.	५	शनि	२९	जून	धनि.	अभिजित्
आषाढ़	कृ.	६	रवि	३०	जून	शत.	अभिजित्
पौष	शु.	१५	शनि	१८	जन.	पुन.	मीन-अभिजित्
माघ	कृ.	४	बुध	२२	जन.	उ.फा.	वृष
माघ	कृ.	५	गुरु	२३	जन.	हस्त	मीन-अभिजित्
माघ	कृ.	८	शनि	२५	जन.	स्वाती	अभिजित्
माघ	शु.	२	सोम	३	फर.	शत.	मीन
माघ	शु.	५	गुरु	६	फर.	रेवती	अभिजित्
माघ	शु.	६	शुक्र	७	फर.	रेवती	मीन
माघ	शु.	१२	शुक्र	१४	फर.	पुन.	अभिजित्
माघ	शु.	१३	शनि	१५	फर.	पुष्य	मीन (आवश्यके)
फाल्गु.	कृ.	३	बुध	१९	फर.	उ.फा.	मीन
फाल्गु.	कृ.	५	शुक्र	२१	फर.	चित्रा	वृष
फाल्गु.	शु.	२	बुध	५	मार्च	उ.भा.	मीन
फाल्गु.	शु.	३	गुरु	६	मार्च	रेवती	मीन-अभिजित्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

७ चन्द्र १० मार्च रोहि. रे. ८॥१५के. १५॥१ ल. मेष दिवा ८।१८ से ९।५४ तक गोधूलि बेला सायं

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मास पक्ष ति. वार ता. मास नक्षत्र व लग्नादि

गृहारम्भ (भूमि पूजन) मुहूर्त्ताः

चैत्र शु. १२ बुध २४ अप्रै. उ.फा. ल. सिंह
चैत्र शु. १३ गुरु २५ अप्रै. हस्त अभिजित्
वैशा. कृ. ३ सोम २९ अप्रै. अनु. अभिजित्
वैशा. शु. १२ गुरु २३ मई चित्रा अभिजित्
वैशा. शु. १३ शुक्र २४ मई स्वाती अभिजित्
भाद्र. कृ. १ शुक्र २३ अग. शत. अभिजित्
मार्ग. शु. १० शनि १४ दिसं. रेवती अभिजित्
फाल्गु. कृ. ३ बुध १९ फर. उ.फा. मीन
फाल्गु. कृ. ५ शुक्र २१ फर. चित्रा अभिजित्

अन्य गृहारंभ मुहूर्त्ताः (अति आवश्यकता में)

वैशा. कृ. ११ बुध ८ मई उ.भाद्र. ल. कन्या
वैशा. कृ. १२ गुरु ९ मई रेवती अभिजित्
वैशा. कृ. १३ शुक्र १० मई रेवती ल. चिन्तनीयम्
ज्येष्ठ कृ. १० बुध ५ जून उ.भाद्र. ल. चिन्तनीयम्
श्राव. शु. ४ सोम १२ अग. हस्त अभिजित्
श्राव. शु. ६ बुध १४ अग. स्वाती कन्या लग्ने
भाद्रपद शु. ३ सोम ९ सित. हस्त अभिजित्
भाद्रपद शु. ६ गुरु १२ सित. अनु. लग्न चिन्तनीयम्
मार्ग. कृ. ५ सोम २५ नव. पुष्य लग्न चिन्तनीयम्
मार्ग. कृ. १० शुक्र २९ नव. उ.फा. अभिजित्
मार्ग. कृ. १३ सोम २ दिस. स्वाती अभिजित्
माघ कृ. ४ बुध २२ जन. उ.फा. लग्न मीन
फाल्गु. शु. २ बुध ५ मार्च उ.भा. लग्न मीन
फाल्गु. शु. ३ गुरु ६ मार्च रेवती अभिजित्

गृह प्रवेश मुहूर्त्ताः

वैशा. कृ. १० सोम ६ मई शत. अभिजित् (जीर्ण)
वैशा. कृ. १२ गुरु ९ मई रेवती अभिजित्
वैशा. कृ. १३ शुक्र १० मई रेवती लग्न मिथुन
वैशा. शु. १२ गुरु २३ मई चित्रा अभिजित्
वैशा. शु. १३ शुक्र २४ मई स्वाती अभिजित् (जीर्ण)
ज्येष्ठ कृ. ११ गुरु ६ जून रेवती अभिजित्
माघ शु. ५ गुरु ६ फर. रेवती अभिजित्
फाल्गु. शु. ३ गुरु ६ मार्च रेवती अभिजित्

अन्य गृह प्रवेश मुहूर्त्ता (अति आवश्यकता में)

वैशा. कृ. ३ सोम २९ अप्रै. अनु. अभिजित्
ज्येष्ठ कृ. ६ शनि १ जून धनि. अभिजित् (जीर्ण)
श्राव. कृ. २ शुक्र २६ जुला. धनि. अभिजित् (जीर्ण)
माघ कृ. ५ गुरु २३ जन. उ.फा. लग्न चिन्तयेत्
माघ कृ. ८ शनि २५ जन. स्वाती अभिजित् (जीर्ण)
माघ शु. २ सोम ३ फर. शत. अभिजित् (जीर्ण)
माघ शु. ६ शुक्र ७ फर. रेवती लग्न चिन्तयेत्
फाल्गु. कृ. ५ शुक्र २१ फर. चित्रा अभिजित्
फाल्गु. कृ. ५ शुक्र २१ फर. स्वाती लग्न मिथुन (जीर्ण)

ग्रहण विवरण संवत् २०५९ वि.

विक्रम संवत् २०५९ (दिनांक १३ अप्रैल २००२ ई. से दिनांक १ अप्रैल २००३ ई. तक) सम्पूर्ण विश्व में दो ग्रहण सूर्य के दिखाई देंगे। जिसमें एक ग्रहण भारत के ईशान कोण के आंशिक भागों में दिखाई देगा और एक ग्रहण भारत में नहीं दिखाई देगा। विस्तृत विवरण इस प्रकार है:-

(१) ग्रस्तोदित कंकणाकृति सूर्य ग्रहण—ज्येष्ठ कृष्णा ३० सोमवार दिनांक १० जून २००२ ई.

(२) खग्रास सूर्यग्रहण—मार्गशीर्ष कृष्णा ३० बुधवार दिनांक ४ दिसम्बर २००२ ई.

उक्त दोनों सूर्य ग्रहणों में से ग्रस्तोदित कंकणाकृति सूर्यग्रहण भारत के पूर्वी भाग में दिखाई देगा। जो खग्रास सूर्यग्रहण है वह भारत में नहीं देखा जायेगा।

(१) ग्रस्तोदित कंकणाकृति सूर्यग्रहण—यह ग्रहण ज्येष्ठ कृष्णा ३० सोमवार दिनांक १० जून, २००२ ई. को मृगशिरा नक्षत्र व वृष राशि में होगा। इसका ग्रास मान ०.९९६ है। यह ग्रहण कंकण की आकृति में पश्चिमी अमेरिका, पूर्वी आस्ट्रेलिया, फिलीपीन के द्वीपों व पूर्वी चीन में दिखाई उत्तर अक्षांश ३४° से ४०° तथा रेखांश १७८° से ३६° के बीच दिखाई देने के कारण भारत के पूर्वोत्तर कोण अरुणाचल, मेघालय व पूर्वी आसाम के डिब्रूगढ़ सम्भाग तक आंशिक ग्रस्तोदय दिखाई देगा। इसका पर्व व पुण्य दिखाई देने वाले स्थानों पर ही माना जायेगा। सम्पूर्ण भारत में पुण्यादि की मान्यता नहीं होगी।

ग्रहण प्रारम्भ—रात्री २६.२१ बजे स्टे. टा.।

मध्यकाल-रात्री २९.१४ बजे स्टे. टा.

भूमण्डल में ग्रहण समाप्ति—प्रात: ८.०६ बजे स्टे. टा. (भारत में ग्रहण समाप्ति प्रात: ४.२६ बजे स्टे. टा.)

(२) खग्रास सूर्य ग्रहण—मार्गशीर्ष कृष्णा ३० बुधवार दिनांक ४ दिसम्बर २००२ ई. को ज्येष्ठा नक्षत्र व वृश्चिक राशि में होगा। इसका ग्रासमान १.०२४ है। यह खग्रास ग्रहण दक्षिण अफ्रीका, उत्तरी आस्ट्रेलिया, हिन्दमहासागर, अन्टार्टिका और इण्डोनेशिया आदि क्षेत्रों पर दिखाई देगा। दक्षिण अक्षांश ३९° से ३०° व पूर्वी रेखांश ५९° से ३०° के मध्य दिखाई देगा। भारत में कहीं भी दिखाई नहीं देगा।

ग्रहण का आरम्भ—१०.२१ बजे स्टे. टा.।

खग्रासारंभ—१२.२५ बजे स्टे. टा.

ग्रहण का मध्य—१३.१ बजे स्टे टा.।

खग्रास समाप्ति—१३.३६ बजे स्टे. टा.।

ग्रहण समाप्ति—१५.४१ बजे स्टे. टा. □

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश मासिक राशिफल संवत् २०५९ विक्रमी

मेष-चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अप्रैल-व्यवसायों की उन्नति से स्वाभिमान की विशेषता रहेगी। कौटुम्बिक जनों व पारिवारिक व्यक्तियों से तनाव बनेगा। राजकीय कामों में प्रभाव बढ़कर सफलता प्राप्त होगी। नवीन कार्य योजनाएं बनेंगी।

मई—यात्रा व भ्रमण के कामों से लाभ, जीवन साथी का सहयोग व सुख बढ़ेगा। कलात्मक कामों की रुचि के साथ अध्यात्म की ओर झुकाव बनकर धार्मिक कामों में व्यय होगा। मानसिक प्रसन्नता रहेगी।

जून—कानूनी कामों में विजय, उच्च पदाधिकारी अथवा सम्मानित व्यक्तियों से सम्पर्क बढ़ कर समाज व परिवार में प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। घर में अतिथि आगमन मास में विशेष प्राय: बना रहेगा।

जुलाई—तीर्थाटन-भ्रमण के कामों की विशेषता घरेलू सदस्यों के प्रति चिन्ताएं और मानसिक अस्थिरता रहेगी। शुभ चिन्तकों का सहयोग रहने पर भी श्रम साधना विशेष रूप से करनी पड़ेगी। कामों में अवरोध रहेगा।

अगस्त—नवीन गुप्त शत्रुओं का उदय, सामाजिक व व्यवसायिक समस्याएं, स्वजनों से तनाव तथा विवाद बनेगा। मासान्त में कामों के सुधार से मनोबल बढ़ेगा और आर्थिक लाभ भी होगा।

सितम्बर—विशेष भागदौड़ और परिश्रम करने पर अर्थोपार्जन कामों में सफलता बनेगी। स्वजनों से विरोध व स्वयं को मानसिक तनाव एवं मनोभ्रम की वृद्धि से अस्थिरता रहेगी। राज्य अधिकारियों से मेलन व उनके हेतु व्यय विशेष रहेगा।

अक्टूबर—मासारंभ में कौटुम्बिक व्यक्तियों के साथ मनोमालिन्यता व व्यर्थ चिन्ताएं होंगी। किन्तु मध्य मास से स्थिति में सुधार बनकर आय के नये स्रोत बढ़ेंगे और कार्य क्षेत्र में प्रशंसा बनेगी।

नवम्बर—अनावश्यक परामर्श देने से प्रतिष्ठा की हानि संभव है। अत: नियमित कार्य रत रहना हितकर रहेगा। स्वजनों या मित्रों से लेन-देन कार्य में सतर्कता न रखने से हानि होगी। सामान्यत: अस्वस्थता रहेगी।

दिसम्बर—गुप्तांगों व उदर रोगों के प्रति सचेत रहें। आर्थिक आय के कामों की रुकावटों से स्वयं को मानसिक चिन्ताएं रहेंगी। संतान स्त्री आदि के सहयोग से मनोबल बना रहकर कई कामों में मासान्त में सफलता बनेगी।

जनवरी २००३-मित्रों के सहयोग से मनोबल एवं स्वाभिमान की बढ़ोत्तरी होगी। दौड़-धूप एवं परिश्रम विशेष रहेगा। जिससे लोगों से सम्पर्क वृद्धि एवं आय कामों में श्रेष्ठ सफलता मिलेगी।

फरवरी—गोचर ग्रहानुसार मास में स्वास्थ्य हीनता रहते हुए भी भ्रमण व भागदौड़ के कार्य विशेष रहकर व्यवसाय व राज्यादिक कामों में लाभ होगा। कौटुम्बिक जनों को रोगोपद्रव तथा उनके लिए व्यय विशेष रहेगा।

मार्च—मित्र वर्ग से मनोरंजक आयाम, मनोहर्ष, स्थान परिवर्तन का सुखद अनुभव तथा व्यवसायों में नवीन परिवर्तन से श्रेष्ठ लाभ बनेंगे। स्त्री संतान व स्वजनों का श्रेष्ठ सहयोग व सुख बनेगा।

वृष-ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अप्रैल—सामाजिक व पारिवारिक प्रतिष्ठा के साथ आर्थिक प्रगति के लिए नवीन योजनाएं बनेंगी। आत्मविश्वास की दृढ़ता बनकर शत्रुओं को परास्त करने की क्षमता बढ़ेगी। उच्चाधिकारी वर्ग से उत्तम सम्पर्क बनेंगे।

मई—अधूरे रहे कामों की पूर्ति पुराने धन की प्राप्ति और समाज व परिवार में प्रभाव की वृद्धि रहेगी। मास के उत्तरार्द्ध भाग में शत्रुओं द्वारा अपवाद व मान-सम्मान को ठेस पहुँचाने के प्रयास किये जायेंगे। सामान्य अस्वस्थता रहे।

जून—घरेलू खर्च विशेष, राजकीय कामों में अधिक परिश्रम एवं परेशानियां तथा मानसिक उद्विग्नता रहेगी। सन्तान सहयोग से मनोबल बढ़ा रहकर कामों में सफलता रहेगी। मासान्त में धन लाभ उत्तम बनेगा।

जुलाई—जमीन-जायदाद के खरीद फरोख्त से धन-लाभ, स्त्री-सन्तानादि का सहयोग व सुख और राजनैतिक कामों में प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की वृद्धि रहेगी। मास में जन सम्पर्क तथा दौड़ धूप प्रायश: विशेष रहेगी।

अगस्त—रिश्ते-नातेदारों व स्वजनों से मिथ्या विवाद-स्वयं को क्रोध वृद्धि, व्यवसाय व आपके कामों में अवरोध रहेगा। स्वास्थ्य में भी बार-बार न्यूनाधिक्यता रहेगी।अपव्यय से मानसिक अशान्ति का वातावरण रहे।

सितम्बर—कानूनी कामों में श्रेष्ठ सफलता से मन में हर्ष व उत्साह बढ़ेगा। स्वजनों पर प्रभाव बढ़कर सुसम्पर्क बनेंगे। विरोधी पक्ष परास्त से समाज परिवार में सम्मान बढ़ेगा। विशेष जन सम्पर्क बनकर आय की वृद्धि होगी।

अक्टूबर—स्त्री-सन्तान व स्वजनों का सहयोग रहकर नवीन व्यवसायिक योजना सफल होगी। शारीरिक अस्वस्थता रहते हुए भी सार्वजनिक व सामायिक कामों में दौड़-धूप रहेगी जिससे प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

नवम्बर—समय का दुरुपयोग, अनावश्यक भाग दौड़ व परिश्रम रहेगा। नित्य कामों की अनियमित स्थिति वश स्वास्थ्य लाभप्रद रहेंगे। मास के मध्यकाल में मेहमानों का आवागमन रहकर इज्जत की वृद्धि बनेगी।

दिसंबर—यात्रादि कार्यों में वाहनादि से सतर्कता रखें। व्यर्थ के प्रदर्शन से आर्थिक हानि और स्वास्थ्य पर कुप्रभाव होने के योग हैं। स्त्री-संतान एवं सज्जनों के स्वास्थ्य हेतु मानसिक चिन्ता बनी रहेगी। लाभ पैदा करने वाले कामों में प्रायश: रुकावटें चलेंगी।

जनवरी २००३ ई.-मास के पूर्वार्द्ध में कामों की व्यग्रता, राज्यादि कामों की चिन्ता और व्यर्थ की दौड़धूप रहेगी। उत्तरार्द्ध में मनोनुकूल परिवर्तन बनकर मन प्रसन्न होगा। आत्म विश्वास बढ़कर आर्थिक प्रगति होगी। अपने व्यक्तियों का उत्तम सहयोग मिलेगा।

फरवरी—लम्बी यात्राएं बनकर अर्थ लाभ के कार्य बनेंगे। मांगलिक-उत्सवों में सहयोग तथा व्यय रहेगा। स्वजनों के सम्पर्क एवं सहयोग से समाज परिवार में सम्मान बढ़ेगा। शत्रु जन भयभीत होंगे। स्वयं के स्वास्थ्य में सामान्य न्यूनता होगी।

मार्च—जीवन साथी के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव रहने से मानसिक चिन्ताएं रहेंगी। आय कामों में अस्थिरता व रुकावटें, घरेलू खर्च ज्यादा और मनोशान्ति की कमी रहेगी। रिश्ते-नातेदारों तथा सन्तानादि स्वजनों का श्रेष्ठ सहयोग रहने से दृढ़ता बनी रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिथुन-क, की, कु, घ, ङ, छ, के, को, ह

अप्रैल—राजकीय परेशानियां, घरेलू खर्च की अधिकता, मनोबल में गिरावट तथा समाज व परिवार के व्यक्तियों से मनमुटाव एवं मिथ्या विवाद रहेगा। देह में आलस्यता व अस्वस्थता प्रायश: बनी रहेगी।

मई—विशेष दौड़ धूप बनकर कामों से लाभ, यात्रादिक खर्च अधिक रहते हुए कार्य संलग्नता बढ़ेगी। मित्रों का सहयोग एवं उच्चाधिकारियों से अच्छे सम्पर्क बनकर कानूनी कामों में सुसफलता प्राप्त होगी।

जून—व्यापारिक लेन-देन के कामों से अर्थ-लाभ किन्तु भागीदारों व रिश्ते-नातेदारों से सचेत रहना हितकर होगा। स्त्री-सन्तान का सुख व उनकी प्रगति होगी। नये रोजगार अथवा कार्य की योजना से मनोबल बढ़ेगा।

जुलाई—शुभ समाचारों की प्राप्ति, गृहस्थ में नवीन खुशियां एवं मांगलिकोत्सव कामों में व्यस्तता बढ़ेगी। मासान्त में शत्रुवर्ग की नई चाल से परेशानियां एवं मानसिक अशांति होगी। अचानक व्यय भार बढ़ेगा।

अगस्त—यात्राएं, विशेष भागदौड़ एवं स्वयं के स्वास्थ्य में न्यूनता बनकर खर्च की अधिकता होगी। पारिवारिक सदस्यों से तनाव, क्रोध की विशेषता और आय के काम में रुकावटों से मन अशान्त रहेगा।

सितम्बर—कौटुम्बिक लोगों का सहयोग व सज्जन पुरुषों से मित्रता बनकर स्थिति में परिवर्तन बनेगा। स्वयं की लापरवाही के दुष्परिणामों का परिहार होगा। अन्दरूनि घात करने वाले व्यक्तियों का पर्दाफाश होकर श्रेष्ठ सफलता बनेगी।

अक्टूबर—ग्रह चाल के अनुसार सन्तान स्त्री आदि स्वजनों को अस्वस्थता, धन का अपव्यय और मनोस्थिति में अस्थिरता होगी। येन-केन विशेष भागदौड़ होकर न्याय सम्बन्धी कार्यों में आंशिक सफलता होगी।

नवम्बर—स्वास्थ्य उत्तम, आत्म विश्वास बढ़ कर भाग्य शक्ति की वृद्धि होगी। कामों में सफलता, घरेलू सहयोग तथा व्यवसायिक कार्यों से आर्थिक लाभ बनेगा। मेहमानों के आगमन से मनोहर्ष की वृद्धि रहेगी।

दिसम्बर—बनते कामों में रुकावटें, गुप्त शत्रु जनों का उदय, अपने ही व्यक्तियों से निराशा तथा विवादकता होगी। राजकीय पक्ष कमजोर होकर मानसिक विचारों में अधीरता बढ़ेगी। व्यर्थ खर्च की चिन्ताएं परेशान करेंगी।

जनवरी २००३—मानसिक खिन्नता से प्राय: सभी कामों में भूल व हानि बनेगी। स्वयं का सन्तुलन अस्थिर होकर क्रोध वृत्ति से बार-बार स्वजनों से टकराव, निवास बदलने या स्थानान्तरण के तेज योग बनेंगे।

फरवरी—ग्रह परिस्थिति में परिवर्तन से भूमि भवन का सुख, लोकोपद्रव की कमी और नवीन व्यापारिक काम की रुचि तथा स्त्री सन्तानों का सहयोग बनकर आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शारीरिक स्वस्थता भी श्रेष्ठ बनेगी।

मार्च—मानसिक शान्ति, व्यवसायों में तरक्की, सामाजिक लोगों के बीच मान-सम्मान की वृद्धि रहेगी। किन्तु स्वयं को उदर विकार व रक्तविकारी उपद्रवों से परेशानी बढ़कर व्यर्थ व्यय की वृद्धि रहेगी। यात्रादि कार्य भी विशेष प्राय: होंगे।

कर्क-ही, हु, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अप्रैल—व्यवसायों में विस्तार एवं स्वजनों का सहयोग रहेगा। यात्रादिक कामों की दौड़ धूप से अर्थ वृद्धि एवं लोगों में यश की बढ़ोत्तरी बनेगी। विरोधी पक्ष परास्त होगा। स्वयं का आत्मविश्वास उत्तम बढ़ेगा।

मई—भूमि-भवनादि कामों में हर्ष के साथ तेज खर्च, मित्र जनों से सहयोग और आय कामों में सफलता मिलेगी। दाम्पत्य जीवन का सुख प्राप्त होगा। मासान्त में वाहन यान आदि से चोट चपेट लगने के योगों से बचाव रखना श्रेयस्कर रहेगा।

जून—पारिवारिक जनों से कलह व क्लेश, यात्रादिक कामों में परेशानियां रहेंगी। किन्तु आय कार्य लाभदायी रहकर मानसिक स्थिरता बनी रहेगी। राज्यादिक कामों में उलझनों के बावजूद सफलता रहेगी।

जुलाई—ग्रहचाल श्रेष्ठ व अनुकूल होने से कामों में सिद्धि, राज्यादिक कामों की समस्याओं का समाधान बनेगा। व्यर्थ के खर्चों पर नियंत्रण रहकर जमापूंजी की वृद्धि होगी। स्वजनों में सम्मान की वृद्धि रहेगी। घर में हर्षोत्साह रहेगा।

अगस्त—आर्थिक कामों में प्रगति, उच्च पदासीन लोगों से सम्पर्क और घरेलू कामों में व्यस्तता रहेगी। पारिवारिक सदस्यों में स्वास्थ्यहीनता अथवा रोगोपद्रव से बीच-बीच में मन की स्थिरता में कमी आयेगी। दाम्पत्य सुख की न्यूनता रहेगी।

सितम्बर—वाहन-यान दुर्घटनादि योग चल रहे हैं। अत: सतर्कता आवश्यक है। जबकि यात्रा व भ्रमण के कार्य ज्यादा रहेंगे। जमीन भवनादि के खरीद में उलझनें और विवाद बनने के योग हैं तदनुसार सन्तुलित विचारशील रहकर कार्य करना शुभ होगा।

अक्टूबर—भाई-बन्धु एवं कुटुम्बी जनों का सहयोग और सौहार्द्र पूर्ण वातावरण रहेगा। आत्मविश्वास की जागृति होकर आय के कामों से धनार्जन होगा। नवीन व्यक्तियों से मधुर सम्पर्क बनेंगे।

नवम्बर—मनोविनोद एवं मंगलोत्सव कामों में संलग्नता बनेगी। छोटी यात्राएं बनकर लाभ रहेगा। पत्नी स्वास्थ्य में कमजोरी एवं व्यवसाय के कामों में सामान्य बाधाएं आयेंगी। कानूनी काम में सफलता रहेगी।

दिसम्बर—गुप्त विरोधियों की चालों से बनते कामों की रुकावटों से मन में उद्विग्नता, क्रोध एवं तनाव बनेगा। स्वयं के विशेष परिश्रम से व्यवसायिक हानियों में रुकावट रहेगी। स्वजनों का सहयोग समयानुकूल प्राय: मिलता रहेगा।

जनवरी २००३—मित्रों व स्वजनों से पर्याप्त सहयोग रहेगा। राज्यादि कामों में सफलता व यश-वृद्धि रहेगी। व्यवसाय कामों से आर्थिक लाभ किन्तु पारिवारिक लोगों से मतभेद बन कर कलह व विवाद होगा।

फरवरी—मास में ग्रह चाल वश आर्थिक कष्ट बनेगा। रुके धन प्राप्त होने में कठिनाईयों से मानसिक चिन्ता एवं घरेलू खर्च की विशेषता बनेगी। राजनैतिक लोगों के सम्पर्कों से कार्यों में सफलता होगी।

मार्च—आय व्यय के लेन-देन कामों में व्यस्तता, भ्रमण अथवा यात्रा के कामों से लाभ और शुभ समाचारों की प्राप्ति होगी। स्वजनों का सहयोग एवं स्वयं की स्वस्थता श्रेष्ठ रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सिंह- मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे

अप्रैल— मित्रों स्वजनों अथवा उच्चाधिकारियों से विवाद रहेगा। स्त्री-सन्तानादि पारिवारिक व्यक्तियों को अस्वस्थता से व्यर्थ की व्यय वृद्धि होगी। मानसिक उतार-चढ़ाव से अशांति प्राय: मास भर बनी रहेगी।

मई—कानूनो व राजकीय कामों में सुसम्पर्क बनकर विजय-सफलता होगी। धान्य, धन प्राप्ति के नये स्रोत बनकर आर्थिक प्रगति होगी। सामाजिक व पारिवारिक जनों में मान-सम्मान की वृद्धि होगी।

जून—स्वास्थ्य पक्ष कमजोर रहते हुए भी कार्य व्यस्तता विशेष बनकर धनलाभ होगा। भूमि भवनादि सम्बन्धी घरेलू तनाव बनेंगे। किन्तु प्रभाव स्थिति तेज रहने के कारण उग्रता पर रोक रहेगी।

जुलाई— विरोधी पक्ष तेज होगा। वाद-विवाद की घटनाओं से मनोबल में गिरावट और मानसिक अशान्ति बनेगी। वाणी पर नियंत्रण हितकर रहेगा। आय व व्यवसाय के कामों में अवरोध तथा आर्थिक चिन्ता बनी रहेगी।

अगस्त— ग्रहगोचर फलानुसार व्यर्थ के कामों की उलझनें, मान-सम्मान को ठेस एवं मिथ्या खर्च की अधिकता रहेगी। स्वजनों से व्यवसायादि कामों व कानूनी कामों में अड़चनें बनेंगी।

सितम्बर— देह में आलस्यता व स्वास्थ्य हीनता रहेगी। अनेक कल्पनाओं से मानसिक भ्रम व भय की वृद्धि रहेगी। जबकि आय के कामों में मास के उत्तरार्द्ध में सुधार होकर श्रेष्ठ अर्थोपार्जन होगा।

अक्टूबर— उच्चाधिकारियों, मित्रों आदि का सहयोग बनकर समाज व परिवार में इज्जत वृद्धि होगी। मनोबल बढ़ेगा। दाम्पत्य सुख-उत्तम होगा। कानूनी कामों में विजय एवं लाभ के काम बनकर धनार्जन होगा।

नवम्बर— अत्यधिक कार्य वश व्यस्तता रहेगी। खानपान व दिनचर्या की अनियमितता होगी। स्वजनों का सहयोग व कार्य क्षेत्र पर प्रभाव की वृद्धि रहेगी। आय के साधन बढ़े हुए रहेंगे।

दिसम्बर— घर में नवीन आगन्तुकों के आगमन से स्वयं का कार्यभार बढ़ेगा और व्यय की अधिकता रहेगी। मासान्त में स्वजनों से मनमुटाव बनकर घरेलू परिस्थितियों में तनाव उभरेगा।

जनवरी २००३— धार्मिक व शुभ कामों में खर्च-मंगल उत्सव कामों में संलग्नता एवं आमोद-प्रमोद रहेगा। व्यवसाय के कामों में अवरोध तथा व्यर्थ व्यय रहकर मानसिक उद्विग्नता रहेगी।

फरवरी— पुराने शत्रुओं की नवीन चालों से मानसिक तनाव, दौड़धूप विशेष तथा अदालती कामों में उलझनें बनेंगी। स्वयं का धर्म व वाक्पटुता रहकर कामों की कठिनाई पूर्ण सफलता होगी।

मार्च— परिश्रम विशेष रहकर आय के कामों में सुधार होगा। कानूनी कामों में शुभ सम्पर्क बनकर सफलता बनेगी। नवीन कार्य

कन्या-टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अप्रैल— रिश्ते-नातेदारों, मित्रों तथा कुटुम्बीजनों के साथ वाद-विवाद होकर स्वयं में क्रोध की वृद्धि रहेगी। व्यवसायादि आय के कामों में अवरोध तथा मन में अशांति रहेगी।

मई— मास में स्वास्थ्य हीनता तथा स्वजनों से तनाव रहेगा। परिश्रम विशेष से आय कामों में सुधार होकर उत्तरार्द्ध में आर्थिक आय बनेगी। घरेलू दायित्व निभाने के लिए भ्रमणादि कार्य अथवा यात्रादि कार्य करने होंगे।

जून— विशेष सज्जन के सहयोग अथवा परामर्श से विवादों का सुलझाव बनेगा। रोजगार के कामों में प्रगति होगी। लोगों से सुसम्पर्क बनेगा। वाहनादि का सुख बनेगा।

जुलाई— स्थाई सम्पत्ति की वृद्धि, समाज एवं परिवार में सम्मान व यश की प्राप्ति होगी। स्त्री-सन्तान आदि का सुख श्रेष्ठ रहे। राज्यादि के कामों की बाधाएं हट कर सभी कामों में सफलता मिलेगी।

अगस्त— व्यवसाय के कामों में प्रतिस्पर्धा और विरोध की शुरुआत होगी। जिससे मन विचलित होगा। किन्तु वाणी मधुरता व धैर्य से आर्थिक लाभ बढ़कर मनोबल की वृद्धि होगी।

सितम्बर— स्वास्थ्य में गड़बड़ी, आलस्य की अधिकता रहते हुए भी स्वजनों के सहयोग से आर्थिक उन्नति होगी। नये कामों में रुचि बनकर दौड़ धूप से योजना सफल होगी।

अक्टूबर— राज्य कामों में विजय, सामाजिक एवं पारिवारिक जनों में इज्जत, व्यवसायों में प्रगति और रिश्ते-नातेदारों के सम्पर्कों में मधुर सम्बन्ध बनेंगे। भूमि भवनादि का सुख होगा। पत्नी स्वास्थ्य कमजोर रहेगा।

नवम्बर— आमोद-प्रमोद व वासना भावों में बढ़ोत्तरी होगी। भौतिक सुख साधन की वस्तुओं की खरीद में तेज खर्च होगा। मन में उत्साह एवं हर्ष की वृद्धि रहेगी।

दिसम्बर— रक्त विकार अथवा पेट के रोगों का प्रकोप रहकर देह कष्ट रहेगा। व्यर्थ खर्च के लिए चिन्ताएं तथा व्यवसाय के कामों की रुकावट रहेगी। मेहमानों के आगमन से क्षणिक क्रोध अभिवृत्ति बढ़ेगी।

जनवरी २००३— भाग्य वृद्धि, स्वास्थ्य में सुधार, व्यवसाय के कामों में नवीनता बनकर धन लाभ रहेगा। संतानादि का सहयोग एवं दाम्पत्य सुख बढ़ेगा।

फरवरी— गुप्त शत्रु अनेक चाल-चलकर परेशान करने की कोशिश करेंगे। धर्म रुचि बढ़ेगी जिससे स्वजनों के मध्य इज्जत व यश की वृद्धि होगी। मनोबल तेज रहेगा।

मार्च— ग्रहचाल अनुसार वाहनादि की यात्रा समय सावधानी रखें। चोट-चपेट के योग हैं। व्यापार व व्यवहार उत्तम रह कर धनार्जन उत्तम होगा।

तुला-रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अप्रैल— विरोधियों से कामों में परेशानियाँ, घरेलू सदस्यों के स्वास्थ्य की चिन्ताएं तथा आय कामों में कमी रहेगी। उच्च पदाधिकारियों से मनमुटाव रहेगा।

मई— राजनैतिक जनों से सम्पर्क होकर शत्रुओं पर विजय, आमदनी के कामों में सुधार और आत्म विश्वास बढ़ेगा। पारिवारिक जनों के लिए व्यय विशेष रहेगा।

जून— उच्च आकांक्षाओं की पूर्ति होगी। नवीन कार्य शैली से आर्थिक लाभ, कानूनी कामों में प्रभाव की वृद्धि होगी। उत्सवों व मांगलिक कामों के द्वारा मन प्रसन्नता बढ़ेगी।

जुलाई— भूमि भवनादि का सुख बनेगा। शुभ समाचारों की प्राप्ति, अधूरे कार्य पूर्ण होकर धन लाभ होगा। सामाजिक व्यक्तियों का सहयोग रहेगा व समाज में प्रशंसा बढ़ेगी।

अगस्त— भ्रमण व यात्रा के कामों में व्यय विशेष रहेगा। मनोबल उन्नत रहेगा। किन्तु अस्वस्थता एवं व्यवसायिक कामों में रुकावटों से मानसिक अशान्ति रहेगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर—वाणी की कठोरता से राजकीय कामों में परेशानी, अपव्यय तथा व्यर्थ भागदौड़ बनेगी। पेट रोगों की वजह से होते कामों में रुकावट एवं क्रोध की अधिकता रहेगी।

अक्टूबर—कामकाज अस्त व्यस्त होने से मनोमालिन्य एवं चिन्ताएं रहेंगी। मासान्त में ग्रहचाल बदलने पर शत्रुओं पर विजय, अदालती कामों में सफलता होकर व्यवसाय लाभ में वृद्धि होगी।

नवम्बर—सन्तान व स्त्री का सहयोग, व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा में सफलता व आर्थिक लाभ रहेगा। कार्य भार विशेष रहने के कारण व्यस्तता विशेष रहेगी।

दिसम्बर—कामों में प्रगति, राजकीय स्थानों पर प्रभाव और उच्चाधिकारियों का सहयोग रहेगा। पारिवारिक सदस्यों की अस्वस्थता से मन मलीन होगा।

जनवरी २००३-लेन-देन के कामों में उलझनें बनकर लाभ होगा। यात्रादि कामों से लाभ होगा। खुशी के समाचार मिलने पर हर्ष वृद्धि तथा राज्यादिक कानूनी कामों के मसलों में सफलता मिलेगी।

फरवरी—इष्ट मित्रों का आगमन, भूमि, भवन का लाभ और उत्तम स्वस्थता रहेगी। स्त्री सन्तानों का सहयोग रहेगा। व्यवसाय के कामों से श्रेष्ठ लाभ रहेगा। नवीन जन संपर्क बनेगा।

मार्च—समाज परिवार में यशोपलब्धि रहेगी। व्यवसायिक कामों में उतार-चढ़ाव तथा स्वयं की तबियत नम्र चलेगी। भौतिक सुख साधन खरीद में तेज खर्चा होगा। दाम्पत्य सुख श्रेष्ठ रहेगा।

वृश्चिक-तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अप्रैल—पित्त प्रकोप से शारीरिक परेशानी, स्वजनों से मनमुटाव, रिश्ते-नातेदारों से लांछन व उलझनें पैदा होंगी। आय के कामों में रुकावटें तथा हानि होने से मन अस्थिर एवं क्रोध वृद्धि रहेगी।

मई—मानसिक चंचलता से बनते कामों में बिगाड़, कुटुंबीजनों से अपयश तथा व्यर्थ श्रम रहेगा। स्त्री सन्तानादि से भी मतभेद होकर वाद-विवाद चलेगा। मास में प्रायश: अशान्ति रहेगी।

जून—सज्जन पुरुष के मेल से मित्रों का सहयोग एवं विवादक परिस्थितियों का निपटारा होगा। उच्चाधिकारियों से शुभ सम्पर्क होकर आर्थिक चिन्ताओं से मुक्ति बनेगी। व्यवसायों में प्रगति होगी।

जुलाई—नवीन कार्य योजना बनकर सफलता मिलेगी। स्वजनों का सहयोग, अदालती कामों में विजय तथा लेन-देन के कार्यों द्वारा उत्तम लाभ होगा। स्वास्थ्य स्थिति व मनोबल श्रेष्ठ रहेगा।

अगस्त—विशेष प्रगित के अवसर प्राप्त होंगे। नवीन कार्य से आर्थिक लाभ और प्रशंसा वृद्धि होगी। भूमि, भवन का सुख रहे। पत्नी स्वास्थ्य की गड़बड़ी से उत्तरार्द्ध में मानसिक चिन्ता बनेगी।

सितम्बर—यात्रा जन्य कार्यों में परेशानी, दुर्जन सहयोग से धन-हानि और भूमि सम्बन्धी विवाद बनेगा। विघ्न बाधाएं रहते हुए भी व्यवसायों से आय अच्छी रहेगी।

अक्टूबर—सार्वजनिक एवं सामाजिक कार्यों में सहयोग देने से इज्जत व प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। व्यापारिक कामों में नीति बदलाव से आर्थिक लाभ श्रेष्ठ रहेगा। घरेलू वातावरण में शांति एवं हर्ष रहेगा।

नवम्बर—लेन-देन के कामों में धोखा होने के योग हैं। सतर्कता आवश्यक है। गृहस्थी लोगों से मतभेद होकर मिथ्या प्रपंच बनेगा। किन्तु आय कार्य उत्तम रहेंगे। राज्यादि स्थानों पर प्रभाव वृद्धि रहेगी।

दिसम्बर—पारिवारिक विवाद होकर अन्तर विरोध बढ़ेगा। जिससे मन:स्थिति उद्वेगपूर्ण रहेगी फिर भी आर्थिक आय के कार्यों के अनेक स्रोत बनकर धनार्जन रहेगा।

जनवरी २००३—अचानक लाभालाभ योग से घर परिवार में आश्चर्य, मित्रों का सहयोग व शुभ परामर्श बनकर तीर्थाटन व देवदर्शन की यात्रा रहेगी। देह में स्फूर्ति व चंचलता होगी।

फरवरी—इच्छित कामों की पूर्ति से मन में हर्ष, व्यापार-व्यवहार से भाग्य वृद्धि एवं घर में मंगलोत्सव का वातावरण बनेगा। वाहन सुख बनेगा। शुभ समाचार प्राप्ति से खुशी रहेगी।

मार्च—राजकीय स्थानों पर प्रभाव व रुतबा बढ़ेगा। व्यवसाय उत्तम किन्तु स्वयं को रक्त विकार अथवा रक्त पातादि रोगों से देह में निर्बलता होगी। जन सम्पर्क का सुख मिलेगा।

धनु-ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढा, भे

अप्रैल—व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता तथा तरक्की रहेगी। घरेलू समस्याओं का निपटारा बनकर शान्ति बनेगी और भौतिक सुख साधनों की वृद्धि होगी। मानसिक संतोष पैदा होगा।

मई—शत्रु पक्ष भयभीत रहेगा, सार्वजनिक व धार्मिक कामों में रुचि बनकर यश की वृद्धि होगी। शुभ कामों में खर्च करके मन हर्ष व उत्साह बढ़ेगा। परिवार में मेल मिलाप शुभ बना हुआ रहेगा।

जून—आय व्यय लगभग बराबर रहेगी। नये कामों के लिए सफल योजनाएं बनेंगी। जन सम्पर्क से उत्तम परामर्श प्राप्त होंगे। उच्चाधिकारियों या संरक्षकों का सहयोग रहेगा।

जुलाई—यात्रा एवं भ्रमण के कामों से आर्थिक लाभ रहेगा। गृहस्थ जीवन में सुख, उत्साह एवं शान्ति का वातावरण रहेगा। भूमि-भवन व वाहनादि का सुख बढ़ेगा। पारिवारिक व्यक्तियों पर प्रभाव वृद्धि रहेगी।

अगस्त—मित्रों व रिश्तेदारों के सहयोग से कामों की प्रगति तथा यशोपलब्धि रहेगी। पूंजी जमाव होकर आत्म विश्वास बढ़ेगा। देह में स्फूर्ति व स्वस्थता रहेगी। मासान्त में राज्यादिक परेशानियों के योग हैं।

सितम्बर—किसी बनते कार्य में रुकावटें बनने से भीतरी क्रोध व झुंझलाहट बढ़ेगी। गुप्त शत्रुवर्ग समक्ष आयेंगे तथा वाद-विवाद होंगे। परिश्रम विशेष से थकान की अनुभूति प्रायश: रहेगी।

अक्टूबर—स्त्री सन्तानादि के स्वास्थ्य में नम्रता रहने से उदासीनता रहेगी। आय के कामों में बाधाएं उत्पन्न होंगी। पुराने दिये गये धन राशि के लिए चिन्ताएं उभरेंगी। मनोभ्रम पैदा होंगे।

नवम्बर—व्यवसायिक समस्याओं का मित्रों या स्वजनों के सहयोग से समाधान होगा। घरेलू वातावरण में शुभ परिवर्तन बनने से धैर्य की वृद्धि होगी। यद्यपि परिश्रम अधिक रहेगा।

दिसम्बर—व्यर्थ के खर्चे बढ़ते से मन में उद्विग्नता बढ़ेगी। रिश्तेदारों के मिथ्या आरोप व विवादों का दुष्प्रभाव बनकर कार्यादिकों में मनोच्चाटन रहेगा।

जनवरी २००३-रहवास में परिवर्तन या स्थानान्तरण के योग हैं। जायदाद सम्बन्धी झगड़ों का सुलझाव होगा। नये कार्य हेतु योजनाएं तथा भागीदारी सहयोग प्राप्त होगा। पत्नी व संतान सहयोग श्रेष्ठ रहे।

फरवरी—स्वास्थ्य की हीनता रहते हुए भी श्रम विशेष से आर्थिक लाभ होगा। कामों की व्यस्तता विशेष रहेगी। छोटी व्यापारिक यात्राएं अर्थोपार्जन में सहायक सिद्ध होंगी।

मार्च—दौड़-धूप विशेष, नवीन व्यक्तियों से सम्पर्क तथा नम्र व्यवहारिकता से लोगों में यश की वृद्धि होगी। व्यवसायों में गतिशीलता बढ़कर आर्थिक लाभ होगा। स्वास्थ्य में सुधार बने।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मकर- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी

अप्रैल — गृहस्थ कामों में व्यय विशेष, आर्थिक कामों में रुकावटें तथा परिश्रम विशेष से मानसिक बेचैनी रहेगी। यात्रादि कामों के द्वारा लाभरूपी परिवर्तन बनेगा।

मई — वाणी की कठोरता बनकर व्यवसायिक नीतियों में बदलाव होकर आय की वृद्धि होगी। शत्रुवर्ग परास्त होंगे। घरेलू व्यक्तियों का सहयोग रहेगा। शुभ समाचारों से मानसिक हर्ष बढ़ेगा।

जून — ऋण मुक्ति का सुअवसर प्राप्त होगा। व्यवसायों में दौड़धूप विशेष से आर्थिक लाभ रहेगा। राजकीय कामों में उच्चाधिकारियों के सहयोग से धनोपार्जन होगा। मनोबल में सतेजता आयेगी।

जुलाई — वाहनादि यात्रा जन्य स्थिति में चोट चपेट के योग बन रहे हैं। अतः सतर्कता रखना हितकर होगा। पारिवारिक व्यक्तियों के सहयोग से आय कामों में उत्तम सफलता रहेगी।

अगस्त — अचानक आय के कामों में रुकावटें होंगी और खर्च भार बढ़ेगा। स्वजन शत्रुता पर उतारू होकर परेशानियां पैदा करेंगे जिससे कलह-क्लेश व विवाद बढ़ेंगे।

सितम्बर — आत्म विश्वास से शत्रु वर्ग का सामना करके विजय प्राप्ति होगी। व्यापारिक कामों में मनोनुकूल लाभ बनेगा और कौटुम्बिक जनों पर प्रभाव बढ़ेगा।

अक्टूबर — कानूनी कामों में सफलता होगी जिससे मनोबल बढ़ेगा। शत्रु वर्ग परास्त होगा। जमीन वाहन की प्राप्ति होगी। दाम्पत्य सुख बनेगा तथा मानसिक सन्तुलन स्थिर रहेगा।

नवम्बर — नवीन मित्रों से सम्पर्क बढ़कर व्यवसायिक कामों में लाभ होगा। यद्यपि स्त्री सन्तानादि के स्वास्थ्य हेतु मानसिक चिन्ता रहेगी। व्यर्थ के व्यय विशेष रहेंगे।

दिसम्बर — आय के कामों में उतार-चढ़ाव से दौड़धूप विशेष रहेगी। कामों में सतर्क रहकर कार्य करें। अन्यथा धोखा होकर हानि होने के योग हैं। अन्य घरेलू कामों में भी रुकावटें रहेंगी।

जनवरी २००३ — पड़ोसियों से अनबन तथा विकास कामों में उनके द्वारा बाधाएं होंगी। फिर भी उच्च महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। स्वास्थ्य में ढीलापन व आलस्य प्रमादकता रहेगी।

फरवरी — कानूनी कार्यों में अड़चनें, दौड़ धूप अधिक, अपने ही व्यक्तियों के द्वारा परेशानियां बढ़ेंगी। स्त्री स्वास्थ्य के लिए तेज व्यय तथा मानसिक अस्थिरता रहेगी।

मार्च — मित्रों व भागीदारों का सहयोग होकर आर्थिक संकट से मुक्ति, व्यवसायों में परिवर्तन तथा अदालती कामों में सफलता से मनोबल की वृद्धि रहेगी।

कुंभ-गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अप्रैल- अधिक परिश्रम से कठिन कार्य करने की भी क्षमता बढ़कर धन संग्रह होगा। अधूरे कामों की पूर्ति होगी। मनोबल बढ़ेगा। शारीरिक स्वस्थता उत्तम रहेगी।

मई — यात्राएं व देशान्तर भ्रमण होकर आत्म विश्वास की वृद्धि होगी तथा आर्थिक लाभ रहेगा। स्वजनों, रिश्ते नातेदारों के हित में सहयोग करना पड़ेगा। जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

जून — रुके हुए कामों की पूर्ति होगी। मेहमानों के आगमन का हर्ष बढ़कर घर में मंगलोत्सव रहेंगे। शारीरिक स्वस्थता रहकर कार्यों की लग्नशीलता बढ़ेगी। मास उत्तरार्द्ध में दाम्पत्य सुख में न्यूनता होगी।

जुलाई — संतान स्त्री आदि से तनाव, राज्यादिक कार्यों की परेशानियां तथा अपव्यय की विशेषता रहने से मानसिक चिन्ताएं एवं क्रोध की अभिवृद्धि रहेगी। आपके कामों में अवरोध पैदा होंगे।

अगस्त — नये अनेक मित्रों के कारण-व्यवसायिक राजकीय तथा सामाजिक कामों की परेशानियां बढ़ेंगी। गृहस्थ जीवन में क्लेश बढ़कर अशांति का वातावरण होगा। नवीन काम की योजना बनाना हानिप्रद रहेगा।

सितम्बर — मास का पूर्वार्द्ध कलह, परेशानी तथा अशान्ति फलप्रद रहेगा। मासान्त में मित्रों-संबंधीजनों का सहयोग बनकर क्लेशों की निवृत्ति होगी। आय साधनों में सुधार होंगे।

अक्टूबर — ऋण कारक कामों में रुकावटें होकर ऋण मुक्ति होगी। विरोधियों के प्रयास असफल होने से परास्त होंगे। रुके कामों में अनायास परिवर्तन होकर अर्थ लाभ रहेगा।

नवम्बर — भाई बन्धु आदि कुटुम्बिक जनों से सम्पर्कों में सुधार होकर घरेलू शान्ति बढ़ेगी। स्त्री-संतान आदि के लिए स्वास्थ्य चिन्ता तथा खर्च की अधिकता रहेगी। व्यापारिक कार्य श्रेष्ठ रहेंगे।

दिसम्बर — स्वजनों व सामाजिक जनों में इज्जत वृद्धि, स्वयं का मनोबल तेज तथा धार्मिक कार्यों में खर्चा रहेगा। परिश्रम, दौड़ धूप एवम् भ्रमण के विशेष कार्य रहकर उत्तम आय होगी। मन प्रसन्न होगा।

जनवरी २००३ — मान-सम्मान की वृद्धि होगी। नये कामों के लिए विशेष सहयोग होकर सफलता बनेगी। मास उत्तरार्द्ध में अदालती कामों की परेशानियां बनकर मनोस्थिति में विचलितता पैदा होगी।

फरवरी — गृहस्थ की समस्याएं सुलझेंगी। व्यर्थ का व्यय बढ़ा रहेगा। कार्य योजनाओं में रुकावटें होंगी तथा मिथ्या भ्रमणादि की परेशानी बढ़ी हुई रहेगी।

मार्च — उच्चाधिकारियों के सहयोग से कार्यों में सुधार होकर उत्तम धनार्जन होगा। राजकाज में विजय, स्त्री-संतानादि सहयोग और रुके कामों में प्रगति होगी।

मीन-दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, च, ची-

अप्रैल-मित्रों के सहयोग से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। स्त्री सन्तानादि गृहस्थ जनों का सुख रहेगा। अदालती कामों में सफलता बनकर मानसिक हर्ष की वृद्धि होगी।

मई — व्यापारिक प्रतिस्पर्धा बढ़ने पर भी आय कामों की वृद्धि रहेगी। राजकीय सहयोग एवं मनोनुकूल प्रभुत्व बनकर लोगों पर प्रभाव वृद्धि होगी। जिम्मेदारी के कामों में प्रशंसा व यश प्राप्ति रहेगी।

जून — विकास के कामों में अचानक रुकावटें व राजकीय परेशानियां, विशेष भागदौड़ और मानसिक भय की वृद्धि होगी। स्वजनों से तनाव बढ़कर सम्बन्धों में दरार पैदा होने के योग हैं।

जुलाई — पारिवारिक सम्बन्धों में बिगाड़, व्यापार के कामों में विपरीत कल्पना के दुष्परिणाम से आर्थिक हानि एवं स्वयं में क्रोध वृद्धि बनकर अनेक लोगों से वाद-विवाद व तनाव बनने के योग हैं।

अगस्त — राज्यादि कार्यों को खुद ब खुद बनने से मानसिक सन्तोष होगा। आजीविका हेतु नवीन कार्य योजना के प्रति झुकाव बनेगा तथा व्यवसायादि कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मनोबल सामान्य रहेगा।

सितम्बर — व्यय की अधिकता एवं आय की कमी से मानसिक अस्थिरता बढ़ेगी। यात्रा व आय के कामों में असफलता रहेगी। सामाजिक मान सम्मान में भी न्यूनता प्रायः रहेगी।

अक्टूबर — छोटे कार्य से श्रेष्ठ लाभ बनने का हर्ष बढ़ेगा। मासारम्भ की बाधाएं समाप्त होकर नवीन व्यवसायों का लाभ रहेगा। मानसिक स्थिति साफ न होने से भ्रम व सन्देह विशेष रहेंगे।

नवम्बर — मनोवृत्ति स्वार्थपूर्ण तथा संकुचित रहने पर भी मिथ्या आडम्बर से नवीन सज्जनों से सम्पर्क करके आर्थिक लाभ होगा। आत्म विश्वास की गिरावट में पुनः जागृति बनेगी।

दिसम्बर — संरक्षकों व सामाजिक व्यक्तियों द्वारा मान-सम्मान की वृद्धि होगी। स्वयं को शारीरिक स्वास्थ्य हीनता रहेगी। घरेलू व्यक्तियों से बोलचाल होकर मन क्षुब्ध होगा। संयम रखना हितकर रहेगा।

जनवरी २००३ - अधूरे कामों की पूर्ति होगी। मंगलोत्सव के कामों का समाचार प्राप्त होने से मानसिक खुशियां बढ़ेंगी। आर्थिक पक्ष प्रायशः इस समय कमजोर रहते हुए भी मनोबल बढ़ा हुआ रहेगा।

फरवरी — उच्चवर्ग के लोगों से मेलजोल बढ़कर मान-सम्मान की वृद्धि तथा धनार्जन के कामों में सुधार होगा। परिवार एवं स्वजनों का सहयोग बढ़कर अपव्यय पर रुकावटें होंगी।

मार्च — आय व व्यय की समानता रहेगी। मनोबल बढ़ा रह कर मन में हर्ष वृद्धि रहेगी तथा भूमि-भवन व वाहनादि कामों में सफलता मिलेगी। राज्यादि कामों में परिश्रम विशेष से लाभ रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

में विपरीत कल्पना के दुष्परिणाम से आर्थिक हानि एवं स्वयं में क्रोध। आत्म विश्वास की गिरावट में पुनः जागृति बनेगी।

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विक्रम संवत् २०५९ में बनने वाले सर्वार्थ सिद्धि, अमृत सिद्धि, रवि पुष्य, गुरु पुष्य व द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर आदि योगों का विवरण

प्रत्येक मास की अंग्रेजी तारीखों में बनने वाले भा.स्टैं. टाइम से शुभ योगों में किए गये सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

सर्वार्थ सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि. तक
१६ अप्रै.	५:५६	से	१६ अप्रै.	९:५८ तक
१७ "	५:५५	"	१८ "	५:५४ "
१९ "	२६:४२	"	२० "	५:५२ "
२१ "	५:५१	"	२१ "	१२:१३ "
२५ "	२८:५	"	२५ "	५:४७ "
२६ "	५:४७	"	२६ "	२२:३९ "
२९ "	५:४४	"	२९ "	१६:३३ "
३ मई	१७:४३	"	४ मई	१९:४८ "
७ "	२८:१५	"	८ "	५:३७ "
९ "	७:१०	"	११ "	५:३५ "
१३ "	१६:१	"	१४ "	५:३३ "
१५ "	५:३२	"	१५ "	१८:५ "
१६ "	१८:२९	"	१७ "	१८:२६ "
२२ "	१२:१४	"	२३ "	५:२८ "
२५ "	५:२७	"	२५ "	६:०० "
३१ "	५:२६	"	३१ "	२८:२ "
४ जून	११:४५	"	५ जून	५:२५ "
६ "	५:२४	"	७ "	१९:५३ "
१० "	५:२४	"	११ "	५:२४ "
१३ "	५:२४	"	१४ "	५:२४ "
१९ "	५:२५	"	१९ "	१६:४१ "
२८ "	५:२७	"	२८ "	१२:४३ "
२ जुला.	५:२९	"	२ जुला.	२२:३९ "
४ "	५:२९	"	४ "	२८:१ "
८ "	५:३१	"	९ "	५:३२ "
११ "	५:३२	"	१२ "	५:३३ "
१४ "	२५:२५	"	१५ "	५:३४ "
१९ "	१८:४१	"	२० "	५:३७ "
२१ "	१७:५५	"	२२ "	५:३८ "
२८ जुला.	२७:३४	"	२९ जुला.	५:४२ "
३० "	५:४२	"	३० "	६:२७ "
१ अग.	५:४४	"	१ अग.	१२:१९ "
३ "	१६:४७	"	४ "	५:४५ "
५ "	५:४६	"	५ "	१८:३२ "
८ "	५:४८	"	८ "	१५:३९ "
११ "	८:५०	"	१२ "	५:५० "
१५ "	२४:४	"	१६ "	२३:३६ "
१८ "	५:५३	"	१८ "	२४:४ "
२५ "	१०:४३	"	२६ "	५:५७ "
२७ "	१६:३८	"	२७ "	२९:५६ "
३१ "	६:०	"	३१ "	२६:४३ "
८ सित.	६:४	"	९ सित.	६:४ "
१२ "	६:३०	"	१२ "	२९:३२ "
२२ "	६:११	"	२२ "	२०:०० "
२४ "	६:१२	"	२४ "	२:४ "
२५ "	२९:००	"	२६ "	६:१३ "
२८ "	६:१४	"	२८ "	९:५७ "
६ अक्टू.	६:१८	"	६ अक्टू.	२३:२२ "
९ "	१५:१६	"	१० "	१३:३२ "
१३ "	१२:३८	"	१४ "	६:२२ "
१४ "	१३:४७	"	१५ "	६:२३ "
२० "	२९:५	"	२१ "	६:२७ "
२२ "	६:२७	"	२२ "	८:३ "
२३ "	१०:५४	"	२४ "	६:२९ "
२८ "	१९:४७	"	२९ "	६:३२ "
२९ "	१९:४७	"	३० "	६:३३ "
३ नव.	६:३६	"	३ नव.	१०:२८ "
६ "	६:३८	"	६ "	२३:४७ "
१० "	६:४१	"	१० "	२१:११ "
११ "	६:४२	"	११ "	२२:२४ "
१७ "	११:३३	"	१८ "	६:४७ "
१९ "	१७:११	"	२१ "	६:५० "
२४ "	२५:२४	"	२५ "	२५:४२ "
२६ "	६:५४	"	२६ "	२५:२९ "
४ दिस.	७:००	"	४ दिस.	१०:४६ "
७ "	३०:२७	"	८ "	७:३ "
१३ "	१५:४८	"	१४ "	७:७ "
१५ "	७:८	"	१५ "	२१:४९ "
१७ "	७:९	"	१७ "	२६:५२ "
१८ "	७:९	"	१९ "	७:१० "
२० "	३०:५५	"	२१ "	७:११ "
२२ "	७:१८	"	२३ "	७:१२ "
२८ "	२५:८	"	२९ "	७:१४ "
४ जन.	१६:२५	"	५ जन.	७:१६ "
९ "	२३:५५	"	११ "	७:१७ "
१४ "	७:१७	"	१४ "	११:१९ "
१५ "	७:१७	"	१६ "	७:१६ "
१७ "	१५:५	"	१८ "	७:१६ "
१९ "	७:१६	"	१९ "	१४:३२ "
२५ "	७:१४	"	२५ "	२९:१९ "
२७ "	७:१३	"	२७ "	२७:१० "
३१ "	२५:१७	"	१ फर.	२५:३८ "
४ फर.	२९:४७	"	५ "	७:९ "
६ "	८:१५	"	८ "	७:७ "
१० "	२०:३	"	११ "	७:५ "
१२ "	७:४	"	१२ "	२३:५३ "
१३ "	२४:४१	"	१४ "	२४:४१ "
१९ "	१६:४१	"	२०	६:५७ "
२२ "	६:५५	"	२२ "	१०:५४ "
२४ "	६:५३	"	२४ "	८:३१ "
२८ "	८:५	"	१ मार्च	८:५२ "
४ मार्च	१३:३३	"	४ "	६:४४ "
६ "	६:४३	"	७ "	६:४२ "
१० "	६:३९	"	११ "	६:३८ "
१२ "	६:३६	"	१२ "	८:४८ "
१३ "	१०:८	"	१४ "	१०:३८ "
१९ "	६:२८	"	१९ "	२३:४४ "
२८ "	६:१९	"	२८ "	१४:३४ "
१ अप्रै.	६:१३	"	१ अप्रै.	२२:३९ "

अमृत-सिद्धि योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि. तक
१० जून	२४:१९	से	११ जून	५:२४ तक
१३ "	२४:१८	"	१४ "	५:२४ "
८ जुला.	८:५१	"	९ जुला.	५:३१ "
११ "	७:५३	"	१२ "	५:३३ "
३ अग.	१६:४७	"	४ अग.	५:४५ "
५ "	५:४९	"	५ "	१८:३२ "
८ "	५:४८	"	८ "	१५:३९ "
२७ "	१६:३८	"	२८ "	५:५८ "
३१ "	६:००	"	३१ "	२:४३ "
८ सित.	१५:३६	"	९ सित.	६:४ "
२४ "	६:१२	"	२४ "	२६:४ "
२८ "	६:१४	"	२८ "	९:५७ "
६ अक्टू.	६:१८	"	६ अक्टू.	२३:२२ "
९ "	१५:१६	"	१० "	६:२० "
२२ "	६:२७	"	२२ "	८:३ "
३ नव.	६:३६	"	३ नव.	१०:८ "
६ "	६:३८	"	६ "	२३:४७ "
४ दिस.	७:०	"	४ दिस.	१०:४६ "
१३ "	१५:४८	"	१४ "	७:७ "
१० जन.	७:१७	"	१० जन.	२६:५४ "
७ फर.	७:७	"	७ फर.	११:६ "

रवि पुष्य योग

ये योग केवल विवाह को छोड़कर अन्य सभी कार्यों में सिद्धिदायक होते हैं। रविपुष्य योग यंत्र, तंत्र, मंत्रों में सिद्धिदायक तथा रत्न धारण व जड़ी-बूटी ग्रहण करने में श्रेयष्कर होते हैं। गुरु पुष्य योग व्यापारिक कार्यों में अधिक फलीभूत होते हैं।

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि. तक
२१ अप्रै.	५:५१	से	२१ अप्रै.	१२:१३ तक
२४ नव.	२५:२४	"	२५ नव.	६:५३ "
२२ दिस.	७:१८	"	२३ दिस.	७:१२ "
१९ जन.	७:१६	"	१९ जन.	१४:३२ "

गुरु पुष्य योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि. तक
१३ जून	२४:१८	से	१४ जून	५:२४ तक
११ जुला.	७:५३	"	१२ जुला.	५:३३ "
८ अग.	५:४८	"	८ अग.	१५:३९ "

द्विपुष्कर योग

तिथि, वार एवं नक्षत्र आदि के संयोग से बनने वाले द्विपुष्कर योग अपने नामानुसार द्विगुणित तथा त्रिगुणित फल प्रत्येक काम में दिया करते हैं। व्यापार में लगाया या बैंक आदि में जमा किया धन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता है।

द्विपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि. तक
१४ मई	१६:१	से	१४ मई	१७:१७ तक
१ जून	१४:४६	"	२ जून	६:१३ "
१६ जुला.	२१:११	"	१६ जुला.	२१:२३ "
२८ सित.	९:५७	"	२९ सित.	१०:१९ "
३० नव.	२५:१०	"	१ दिस.	१७:४० "
१० दिस.	७:४	"	१० दिस.	८:२१ "
२ फर.	१६:२३	"	२ फर.	२६:२९ "
२९ मार्च	६:१७	"	२९ मार्च	२६:१ "

त्रिपुष्कर योग

ता. मास	घं.मि.	से	ता. मास	घं.मि. तक
२० अप्रै.	५:५२	से	२० अप्रै.	६:५४ तक
२७ "	२९:२५	"	२८ "	१८:५ "
२२ जून	५:२६	"	२२ जून	७:५० "
६ जुला.	१७:२०	"	७ जुला.	७:५५ "
३ सित.	१९:५४	"	३ सित.	२७:२१ "
७ "	२८:५९	"	८ "	१५:३६ "
२७ अक्टू.	१९:५	"	२७ अक्टू.	२३:१८ "
२ नव.	६:३५	"	२ नव.	१२:५६ "
५ "	२२:३९	"	५ "	२६:३ "
१० "	१३:५३	"	१० "	२०:४२ "
२१ दिस.	७:११	"	२१ दिस.	२५:०० "
४ जन.	७:१६	"	४ जन.	१६:२५ "
१८ फर.	१८:५१	"	१८ फर.	२३:५९ "
२२ "	१३:१३	"	२३ "	९:३२ "
४ मार्च	९:३०	"	४ मार्च	१३:३३ "
९ "	२१:३०	"	९ "	२८:१ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को सम्वत्सर फल श्रवण

अचिन्त्या व्यक्त रूपाय निर्गुणाय गुणात्मने। समस्त जगदाधार मूर्तये ब्रह्मणे नमः॥ १॥
विनायकं प्रणम्यादौ देवी वाग्देवतां गुरुम्। संवत्सर फलं वक्ष्ये लोकानां हितकाम्यया॥ २॥

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नूतन सम्वत्सर प्रारम्भ होता है, उस दिन प्रति घर पर ध्वज लगावें। तोरणादि से गृह सुशोभित करें, मंगल स्नान कर देवता, ब्राह्मण, गुरु की पूजा करें। स्त्रियां, शिशु आदि वस्त्र-आभूषण आदि धारण करके उत्सव मनावें, ज्योतिषी जी का सत्कार कर उनसे सम्वत्सर का फल श्रवण करें।

प्रातःकाल में कटु नीम के कोमल पत्ते और पुष्प लेकर उसमें काली मिर्च, हींग, नमक (सेंधा), आजवायन, जोरा और खांड मिलाकर चूर्ण बनावें, कुछ इमली मिलावें और वह भक्षण करें, इस प्रयोग से अनेक रोगों की शान्ति होती है।

सम्वत्सर के फल श्रवण का माहात्म्य—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को नव सम्वत् का वर्षफल किसी ब्राह्मण या ज्योतिषी द्वारा सुनें एवं गायत्री मंत्र **"ॐ भूर्भुवः स्वः सम्वत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च"** मंत्र का जप कर पूजन करें तथा पंचांगस्थ गणेश जी और ब्राह्मण ज्योतिषी की पूजा कर याचकों को दान मिष्ठान्नादि युक्त भोजन करवा कर उन्हें नव वर्ष पंचांग, वस्त्र, फल, मिठाई आदि दक्षिणा सहित यथाशक्ति दान देकर उनका आशीर्वाद ग्रहण करें, तदुपरान्त सम्वत्सर फल श्रवण कर सम्पूर्ण दिन आनन्द पूर्वक व्यतीत करें, जैसे कहा है—

"यश्चैव शुक्ल प्रतिपदे धीमान् शृंणोति वार्षीय फल पवित्रं भवेद् धनाढ्यों बहुसस्य भोगो जह्याश्च पीड़ां तनुजां च वार्षिकीम्।"

अर्थात् जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल का श्रवण करता है, वह बहुत धन धान्य से युक्त होता है और उसके अनेक दुःखों की निवृत्ति होती है। इस दिन से श्रीराम नवमी तक श्री दुर्गा पूजन एवं पाठादि का भी विशेष माहात्म्य होता है।

अथ युग व्यवस्था—(काल गणना) चारों युग एक हजार बार बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन पूरा होता है। चतुर्युगी का मान ४३,२०,००० सौर वर्ष है। इस प्रकार १००० चतुर्युगी बीत जाने पर ब्रह्मा जी का एक दिन होता है। ब्रह्माजी के एक दिन में १४ मन्वन्तर होते हैं। एक मन्वन्तर में ७१ महायुग (चतुर्युगी) होती है। अब तक ६ मन्वन्तर के २६ महायुग बीत गये हैं और २७वाँ महायुग चल रहा है। इस महायुग में सतयुग, त्रेता, द्वापर बीत गये हैं। कलियुग की आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें ५१०३ वर्ष बीत गये हैं। ब्रह्माजी की आयु का ५३वां वर्ष चल रहा है, प्रथम दिन का उदय होकर १३ घड़ी ४२ पल ३ विपल ४३ प्रतिपल बीत गये हैं।

चतुर्युगानां व्यवस्था

सतयुग—इसकी उत्पत्ति कार्तिक शुक्ल नवमी को हुई। इसकी आयु १७,२८,००० वर्ष की थी। इसमें मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह यह चार अवतार हुए, मत्स्य जी ने वेदों का उद्धार किया, नृसिंह जी ने हिरण्यकश्यप का वध किया। इस युग में हर जाति अपने-अपने धर्म पर स्थिर थी, ब्राह्मण लोग वेदों के ज्ञाता और सत्य बोलने वाले तथा त्यागी होते थे। शाप और वरदान देने में समर्थ होते थे। क्षत्रिय अपने बाहुबल से संसार की मर्यादा को बांधे हुए थे। वैश्य व्यापार में तत्पर, सत्यवक्ता थे। शूद्र सेवा करते हुए अपने धर्म में तत्पर थे। समय पर वर्षा होती थी। फसलें अच्छी होती थीं। स्त्रियाँ पतिव्रता होती थीं। गौएं दूध अधिक देती थीं। मनुष्य की परमायुः १,००,००० वर्ष, बाल्यावस्था १०,००० वर्ष, देह की लम्बाई २१ हाथ थी। पुण्य २० विश्वे, पाप का नाम तक भी न था। सुवर्ण और रत्नादि का व्यवहार था और पुष्कर तीर्थ प्रधान था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण २,००० थे।

त्रेतायुग—वैशाख शुक्ल तृतीया को त्रेतायुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु १२,९६,००० वर्ष थी। इस युग में तीन अवतार—वामन, परशुराम, रामचन्द्र हुए। श्री वामन जी ने राजा बलि से तीन पैर पृथ्वी दान लेकर बाद में समस्त पृथ्वी को तीन पैर में नाप कर राजा बलि को पाताल का राज्य दिया। श्री परशुराम जी ने अभिमानी क्षत्रियों का २१ बार बध करके ब्राह्मण राज्य स्थापित किया था। श्री रामचन्द्रजी ने रावणादि राक्षसों का वध किया। मनुष्य की परमायुः १०,००० वर्ष और बाल्यावस्था १,००० वर्ष थी। पुण्य १५ विश्वे, पाप ५ विश्वे था। पुरुष का देहमान १४ हाथ था, ब्राह्मण वेदों के ज्ञाता थे और किंचिन्नचून तपोनिष्ट त्यागी थी। वे शाप देने में समर्थ थे। स्त्रियां पतिव्रता थीं। सुवर्ण का सिक्का चलता था। सूर्य ग्रहण २०,००० और चन्द्र ग्रहण ३०,००० थे। तीर्थ नैमिषारण्य प्रधान था।

द्वापर युग—माघ कृष्ण ३० को द्वापर युग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ८,६४,०० वर्ष थी। इसमें २ अवतार श्री कृष्ण जी ने कंस, शिशुपालादि का वध किया और बलराम ने धर्म का उद्धार किया। पुरुष की परमायु १,००० वर्ष थी। बाल्यावस्था १०० वर्ष थी। पुरुष का देहमान ७ हाथ था। ब्राह्मण कुछ धर्म में तत्पर कुछ सत्यवक्ता, कुछ झूठ भी बोलते थे। अपने धर्म-कर्म पर स्थित परन्तु लोभयुक्त थे। चांदी के सिक्के का व्यवहार अधिक था। कुरुक्षेत्र तीर्थ प्रधान था। पुण्य १० विश्वे था। सूर्यग्रहण २४,००० और चन्द्र ग्रहण ३६,००० थे।

कलियुग—भाद्र कृष्ण १३ को कलियुग की उत्पत्ति हुई। इसकी आयु ४,३२,००० वर्ष है। इसमें बुद्ध व कल्कि अवतार हैं। उनका काम धर्म का उद्धार करना है। मनुष्य की परमायु १२० वर्ष और बाल्यावस्था १० वर्ष है। पुरुष का देहमान साढ़े तीन हाथ है। पुण्य ५ विश्वे, पाप १५ विश्वे है। गंगा तीर्थ प्रधान है। इस युग में मिट्टी के पात्र और पत्र व ताम्र का सिक्का व्यवहार में लाया जाएगा। सब जाति के लोग अपने धर्म से गिर जायेंगे। ब्राह्मण लोग वेदों से विमुख तप, यज्ञादि धर्म-कर्म से विमुख शाप देने में असमर्थ होंगे। क्षत्रिय लोग अपने धर्म को छोड़ देंगे। वैश्य लोग व्यवहार में खोटे होंगे। धूर्त विद्या की पूजा होगी। सूर्य और चन्द्र ग्रहण ४६,००० होंगे। सं. २०५९ में कलियुग के ५१०३ वर्ष व्यतीत हो चुके हैं और शेष कलियुग के ४,२६,८९७ वर्ष रह रहे हैं। कलियुग के अंत में सम्भल ग्राम में विष्युयश नामक ब्राह्मण के घर में कल्कि अवतार होगा। कलियुग में नीच लोगों की पूजा होगी। अनेक कुकर्मों की वृद्धि होगी। व्यभिचारी स्त्रियाँ अपने को सती कहेंगी। पुरुष स्त्रियों के वश में चलेंगे। पिता कन्या को बेचेंगे। स्त्रियों को छोटी आयु में गर्भ होने लगेंगे। लोग गौ, ब्राह्मण की हत्या से भय नहीं करेंगे। संतान का माता-पिता के साथ धन के कारण ही प्रेम रहेगा। धर्म गौण व अर्थ प्रधान रहेगा। मुख्य तीर्थ श्रीगंगा होंगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सम्वत् २०५९ वि. मध्ये सम्वत्सर राजादि फलम्

अथास्मिन् सम्वत्सर २०५९ वर्षे सृष्टितोगताब्दा सौर वर्ष संख्या १९५५८८५१०३, तत्र कृतयुग प्रमाणम् १७२८०००, त्रेतायुग प्रमाणम् १२९६०००, द्वापर युग प्रमाणम् ८६४०००, कलियुग प्रमाणम् ४३२०००, तन्मध्ये गतकलि: ५१०३, भौग्यकलि: सौर वर्ष संख्या ४२६८९७, श्रीकृष्ण जन्मतोगताब्दा:५२३८, श्रीमन्नृपति वीर विक्रमादित्य राज्यात् गताब्दा: २०५९, शकाब्दा: १९२४, बार्हस्पत्यमानेन वर्षनाम मार्गशीर्ष:, ईस्वीय सन २००२-२००३, हिजरी सन १४२२-२३, श्रीमहावीर निर्वाण जैन संवत् २५२८-२९, भारतीय गणराज्य सम्वत् ५३-५४ प्रवर्तते।

समय विश्वा ८, समय वाहन महिष:, स्तम्भ दो वायु व अन्न, सोमवती अमावस्या ३, सोमवती पंचमी ०, अंगार की चतुर्थी २, भानु सप्तमी १, बुधाष्टमी १, रवि दशमी ०, समय मुहूर्त्ता: ३१५, समय दिनानि ३५४, तिथि क्षय: १८, तिथि वृद्धि: १२, उत्पत्ति विश्वा ९३, खपति विश्वा ९३, वर्षा विश्वा १३, धान्यम् ७, तृण ९, शीत १५, तेज ११, वायु १३, वृद्धि १५, क्षय १५, विग्रह ११, तयोरेक्यम् १०९, सत्य आधा, धर्म ड्योढ़ा, पाप १८, शनि दृष्टि पूर्वे नेष्टं, अस्मिन् वर्षे भारते ग्रहण १ सूर्यस्य (पूर्वी भारते) । मेघनाम पुष्कर, रोहिणी संधि, समय निवासो वणिक गृहे। दैवज्ञं शुभाशुभ चिन्तनीयम्।

वर्षारम्भ में गुरुमान से विष्णुविंशति का ९वां "मन्मथ" नाम का सम्वत्सर है। जिसका पूर्वाचार्यों ने फल कथन इस प्रकार लिखा है।

मन्मथ संवत्सर फलम्

मन्मथाब्दे जना: सर्वे तस्करा अति लोलुपा:।
शालीक्षु यव गोधूमैर्नयनाभि नवा धरा॥

जिस वर्ष मन्मथ नाम संवत्सर हो तो विश्व में चोरी करने की प्रवृत्ति एवं महा लोभ की वृत्ति लोगों में बढ़ती है। राज्य सेवी व व्यवसायी धन वृद्धि हेतु नैतिक पथ से च्युत होंगे। जबकि पृथ्वी पर गेहूं, जौ, ईख व अनेक धान्यों की उपज उत्तम रहेगी।

अखिलेश्वर काल के कर्त्ता, अभियन्ता, लोकनायक, परमपिता परमात्मा की आज्ञा से चुने गये वर्ष के दशाधिकारी राजा-मन्त्री आदि का फल न्यूनाधिक मात्रा में सर्वत्र होता है। किन्तु राजा का प्रभाव सर्वाधिक वसुन्धरा का स्वर्ग, भारत का ताज काश्मीर व अफगानिस्तान में होता है। ऐसे ही मन्त्री का पूर्व के देश कलिंग में, सस्येश का ईशान (पूर्वोत्तर के मध्य) विदर्भ देश में, धान्येश का नर्मदा तट मध्यप्रदेश में, मेघेश का मगध देश में, रसेश का कोंकण व गोआ में, नीरसेश का उज्जैन, इन्दौर व मालवा देश में, फलेश का पश्चिमी भूभाग के साथ कश्मीरादि प्रदेशों में विशेष शुभाशुभ प्रभाव पड़ता है। धान्येश तथा दुर्गेश का फल सर्वत्र एक समान होता है।

राजा शनि: तत्फलम्

शनैश्चरे भूमि पती सकृज्जलं प्रभूत रोगै परिपीडयंते जन:।
युद्धं नृपाणां गद तस्कराद्यैर्भ्रमन्ति लोका: क्षुधिताश्चदेशान॥

वर्ष का राजा शनि का फल—राजा शनि है इसलिए वर्षा कहीं-कहीं होगी, जनता में रोगोत्पात विशेष रहेगा। राजाओं में परस्पर युद्ध रहेगा। लोग डाकू, चोर व लुटेरों से भयभीत होकर बार-बार स्थान परिवर्तन करेंगे।

मंत्री शनि: तत्फलम्

रवि सुते यदि मंत्रिणि पार्थिवा विनयं संरहिता बहु दुखदा।
न जलदा जनता पदा जनपदेषु सुखं धनजं क्वचित्॥

मंत्री शनि का फल—शनि मंत्री पदासीन होने पर विश्व में जल की कमी से सुखों की हानि और मनुष्य का विनम्र भाव नष्ट होकर विग्रह की वृद्धि होती है। शासक चिंतित रहते हैं।

सस्येश भौमस्तत्फलम्

प्रथम धान्यपतौ धरणी सुते गज तुरंग खरोष्ट्र गवामपि।
प्रभवदो बहुरोगं घनो जलं न सम सौख्य करं तुषधान्यहत्॥

सस्येश मंगल का फल—सस्येश मंगल होने पर ऊंट, हाथी, घोड़ा, गाय आदि चतुष्पदों में रोग बढ़ते हैं। प्रजा में क्रांति का उदय होता है व धान्य की फसलों को प्राकृतिक प्रकोप से हानि होती है।

धान्येशो रविस्तस्य फलम्

पश्चाद्धान्याधिपे सूर्ये पश्चाद्धान्यं तदा न हि।
विग्रहं भूभृतां धान्यं महर्घं ज्वर पीडनम्॥

धान्येश सूर्य का फल—सूर्य धान्येश होने पर शरद कालीन फसलों की उपज कम होती है। विश्व की जनता में रोगवृद्धि, वस्तुओं व धान्य भावों में तेजी होती है तथा शासकों में कलह, विग्रह बढ़ता है।

मेघेश शनिस्तत्फलम्

रवि सुते जलदस्य पतौ भवेद्विरलवृष्टिवती वसुधा तदा।
मनसि ताप करो नृपतिस्तदा विविध रोग युता जनपदा:॥

मेघेश शनि का फल—सूर्यात्मज शनि के मेघेश होने पर कहीं-कहीं सामान्य वर्षा होती है, जनता में अनेक उपद्रव व रोग बढ़ते हैं और राजाओं (शासकों) में मानसिक भय एवं चिन्ता रहती है।

रसेशो गुरुस्तत्फलम्

यदि गुरु: रसपोजन सौख्यद: कमलवन्ति सरांसि तृणानि च।
जनपदा: द्विजपूजन तत्परा गज सुवाजि रथोष्ट्र युता नृपा:॥

रसेश गुरु का फल—रसपति गुरु हो तो जनता में सुखोपभोग बढ़ता है, तृण व जल की वृद्धि होती है, लोग देवता, विद्वानों का सम्मान करते हैं और शासकों को हर प्रकार के वाहनों का सुख प्राप्त होता है।

नीरसेश भौमस्तत्फलम्

निरसेशो यदा भौम: प्रवाल रक्त वाससाम्।
रक्त चन्दन ताम्राणां महर्घं वृद्धि दिने दिने॥

निरसेश मंगल का फल—मंगल निरसपति होने पर मूंगा-चन्दन ताम्बा, लाल वस्त्र एवं लाल रंग की वस्तुओं के भावों में तेजी होती है।

फलेशो शुक्रस्तत्फलम्

यदि फलस्यपतौ भृगुजे धरा मृदु कुमार महीरूह राशय:।
बहुफला नरनाथ सुभोगदा द्विजवराश्रुति पाठपरायण:॥

फलेश शुक्र का फल—वर्ष में फलेश शुक्र हो तो पृथ्वी पर वृक्ष मधुर व अधिक फल पैदा करते हैं। शासक वर्गों को अनेक भौतिक सुख प्राप्त होंगे। विद्वद् वर्ग शास्त्रों के पठन-पाठन में विमग्न रहते हैं।

धनेश: चन्द्रस्तत्फलम्

धन पतिर्मृगलोचनको यदा रसचयात्क्रय विक्रयो धनम्।
वसन शालि सुगंध रस बहु द्रविण तैल घृतं नृप सौख्यदम्॥

धनेश चन्द्र का फल—धन स्वामी चन्द्रमा जिस वर्ष हो तो व्यापारी जनों को सुगंधि की वस्तुएं तेल-वस्त्र और रस पदार्थों के क्रय विक्रय से श्रेष्ठ धनार्जन होगा। शासक चिन्ता मुक्त होकर सुखी होंगे।

दुर्गेशो शुक्रस्तत्फलम्

नगर देश विदेश पतिर्यदा भृगुसुतो बहुसौख्य करो मत:।
विनय वणिज गेह सम: सुखे नगवने निकटेपि च दूरत:॥

दुर्गेश शुक्र का फल—जिस वर्ष सुरक्षा स्वामी शुक्र हो उस वर्ष जनता में सुख की वृद्धि होती है। व्यवसायिक लोगों को लाभ विशेष होगा और आवागमन के साधन बढ़ेंगे।

वर्षनाम मार्गशीर्ष फलम्

कार्पासादि महर्घस्याद्गोधूमाष तिलादिकम्।
मेघोवर्षंति देवो वा मार्गशीर्षे विशेषत:॥

वर्षनाम मार्गशीर्ष का फल—वर्षा की कमी के कारण उपज न्यून रहती है जिससे धान्यों गेहूं, उड़द, तिल, बिनौला व रुई आदि के भावों में प्रायश: तेजी रहेगी। आयात-निर्यात के कार्यों की वृद्धि विशेष रहेगी।

मेघनाम पुष्करस्तत्फलम्—"पुष्करे मन्द वृष्टिश्च" के अनुसार इस वर्ष चतुर्मेघों में से पुष्कर नामक मेघ होने के कारण देश के अनेक भागों में सूखा, वर्षा की कमी रहकर पैदावार की न्यूनता रहेगी। जिससे तृण व अन्न के भाव मंहगे रहेंगे।

रोहिणी निवास: संधि:तस्य फलम्—इस वर्ष रोहिणी का निवास "संधि" में है। जिसका फल—"**खण्डवृष्टिश्च संधिषु॥**" शास्त्रों में लिखा है इसलिए कुछ स्थानों पर सामान्य वर्षा और अनेक स्थानों पर शुष्कता रहेगी। जिससे कृषकों को मनोद्वेग व चिन्ता वृद्धि रहेगी। देश की आर्थिक नीति से शासकों को भय बना रहेगा।

समय निवासो वैश्य गृह तत्फलम्—समय का निवास वैश्य के घर होने पर समस्त व्यापारों में तेजी का संचार होकर जनता में अशान्ति व दूषित भावनाओं की वृद्धि से उपद्रव बढ़ते हैं। यथा—**सर्वधान्यं महर्घस्याद्वणिक्वेश्मनि संस्थिते॥**

समय वाहन: महिषस्तत्फलम्—महिष का समय वाहन होना लोगों में रोग, उपद्रव, राजनायकों में आपसी मतभेद होकर विवाद व फिसाद बनने के योगप्रद है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ (विन्ध्य से दक्षिण वासियों के लिए) अष्टोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	१४	८	११	५	८	११	८	१४	२	५	५	२
व्यय	१४	८	५	५	१४	५	८	१४	८	२	२	८

अथ (विन्ध्य से उत्तर वासियों के लिए) विंशोत्तरी मत से आय-व्यय चक्रम्॥

राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चि.	धनु	मकर	कुंभ	मीन
आय	८	२	८	२	५	८	२	८	५	१४	१४	५
व्यय	५	१४	२	८	५	११	१४	५	११	११	११	११

आय-व्यय देखने की विधि—अपनी राशि के आय-व्यय अंकों को जोड़कर उसमें १ घटा दें, शेष में ८ का भाग देने पर यदि अंक १।२।६।७ शेष बचें तो उस वर्ष में लाभ उत्तम रहेगा। व्यापार धन्धों में बढ़ोत्तरी होगी। यदि अंक ३।४।५ या ८ (०) शेष रहे तो वर्ष नेष्ट फलप्रद रहेगा। लाभ कम खर्चा अधिक होगा। व्यापार में मन्दी का दौर चलेगा। दौड़धूप की अधिकता एवं अनावश्यक चिन्ताओं में बढ़ोत्तरी होगी।

शनि की साढ़ेसाती ढैय्या और लघु कल्याणी ढैय्या विचार

वर्ष प्रारम्भ में शनि वृष राशि पर चलता आ रहा है जो ता. २३ जुलाई २००२ ई. को मिथुन राशि में प्रवेश करेगा। तब तक मेष-वृष व मिथुन राशि वालों को क्रमशः उतरती मध्य कालीन एवं प्रारम्भिक साढ़ेसाती रहेगी। तुला व कुम्भ राशि वालों को ढैय्या (लघु-कल्याणी) रहेगा। अतः वृष राशि के शनि का गोचरीय प्रभाव पृथक-पृथक राशियों पर इस प्रकार रहेगा।

मेष-लोह पाये पैरों पर उतरती साढ़ेसाती से शत्रुओं द्वारा कार्यावरोध, अपव्यय विशेष, शारीरिक पीड़ा और स्वजनों से मानसिक तनाव एवं अशांति रहेगी। लाभ मध्यम प्रायः होगा।

वृष-ताम्बा के पाये, हृदय पर, मध्यकालीन साढ़ेसाती से स्वास्थ्य न्यूनाधिक्य के साथ पारिवारिक सुख की कमी अनुभव होगी। यद्यपि विशेष श्रम एवं धर्मरुचि के साथ धैर्यशीलता से अनेक कामों में लाभ रहेगा।

मिथुन-चांदी के पाये, मस्तक पर, प्रारंभिक साढ़ेसाती से आर्थिक व शारीरिक कष्ट, स्वजनों से तनाव-मनमुटाव, शत्रु वृद्धि होकर मन विचलित एवं राजकीय परेशानियां बनेंगी।

कर्क-सोने के पाये लाभ स्थान का शनि श्रम विशेष से आर्थिक प्रगति, अध्यात्म व धार्मिक कामों में रुचि, पारिवारिक जनों से सम्मान वृद्धि के साथ सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

सिंह-लोहे के पाये कर्म भावस्थ शनि से लम्बी यात्राएं, उच्चाधिकारियों में प्रभाव वृद्धि एवं भौतिक सुविधाओं के लिए मानसिक चिन्तन शीलता बढ़ती रहेगी तथा अपव्यय ज्यादा रहेगा।

कन्या-सोने के पाये भाग्य भाव स्थित शनि से शारीरिक न्यूनाधिक्यता, श्रम विशेष के साथ आय में कमी एवं पारिवारिक जनों से आकांक्षित सुख की कमी रहेगी।

तुला-ताम्बे के पाये ढैय्या (लघु कल्याणी) से गृह क्लेश, क्रोधाधिक्यता एवं खानपान की अनियमितता वश रोगोत्पत्ति, कार्यवरोध रहेगा। मित्रों व स्वजनों से तनाव रहेगा।

वृश्चिक-चांदी के पाये सप्तम भाव के शनि से मिथ्या खर्च विशेष से मनोबल की गिरावट, नौकरी व व्यवसायों में सामान्य आय एवं देह में निर्बलता प्रायशः चलेगी।

धनु-लोहे के पाये छठे स्थान स्थित शनि से मित्रों-रिश्तेदारों व पारिवारिक जनों से विवाद व झंझट बन कर अशांति व धन हानि होगी। सामाजिक कामों में रुचि व सफलता बनेगी।

मकर-ताम्बे के पाये पंचम भाव के शनि से भागदौड़ विशेष, मनोबल तेज, आय के कामों में सफलता तथा सामाजिक जनों में इज्जत वृद्धि रहेगी।

कुंभ-सोने के पाये ढैय्या (लघु कल्याणी) से उदर विकार, पारिवारिक संघर्ष, शत्रुवर्ग प्रभावी और मिथ्या दौड़ धूप से मनोबल में कमी होगी। होते कामों में विघ्न बाधा प्रायः रहेगी।

मीन-चांदी के पाये पराक्रम स्थान के शनि से व्यावसायों में प्रगति, धनार्जन, मंगलोत्सवों में सहयोग एवं उच्चाधिकारियों से सम्मेलनता बढ़ेगी। स्वजनों में सम्मान वृद्धि रहेगी।

वृष राशि के शनि का गोचर फल

वृषे सौरिर्यदा याति विनश्यन्ति चतुष्पदाः।
सप्तधान्य महर्घ च नृपाणां विग्रहो भवेत्॥

गोचर में शनि वृष राशि पर भ्रमण करता है तो सभी प्रकार के धान्य मंहगे होते हैं। जीव जन्तु व चौपायों में रोग वृद्धि होकर हानि होगी तथा शासकों में युद्धोन्माद बढ़ेगा।

दिनांक २३ जुलाई २००२ ई. को शनि धनु राशि के चन्द्रमा की सानिध्यता में मिथुन राशि पर प्रवेश करेगा। जिससे वृष-मिथुन, कर्क राशिवालों को क्रमशः उतरती मध्यकालीन एवं प्रारंभिक साढ़े साती होगी। वृश्चिक व मीन राशि वालों को ढैय्या (लघु कल्याणी) होगी। पुनः दिनांक ८ जनवरी २००३ ई. को वक्री शनि वृष राशि पर आ जायेगा जो सर्व साधारण हेतु शुभ नहीं होगा।

मिथुन के शनि की साढ़ेसाती का विवरण

वृष को लोहे के पाये पैरों पर मिथ्या भ्रमण व चिंताप्रद मिथुन को ताम्बे के पाये, हृदय पर मध्यम फलप्रद कर्क को सोने के पाये मस्तक पर हानि व दुखानुभूतिप्रद।

मिथुन के शनि का ढैय्या (लघु कल्याणी) विवरण—वृश्चिक राशि को चांदी के पाये शुभ फलप्रद, मीन राशि वालों को ताम्बे के पाये मध्यम फलप्रद है।

मिथुन राशि के शनि का गोचर फल

मिथुने च यदा सौरिर्दुर्भिक्षं तत्र रौरवम्।
पश्चिमे दारुणं युद्धं नृपाणां च महद्भयम्॥

जब मिथुन राशि में शनि भ्रमण करता है तो विश्व में भयावह दुर्भिक्ष होता है तथा पाश्चात्य राष्ट्रों व पश्चिमी सीमाओं पर दुखदायी युद्धोन्माद बढ़ता है। जिससे शासक भी भयभीत होते हैं।

गुरु संचार का फल

सम्वत् २०५९ वि. के प्रारंभ में गुरु मिथुन राशि में भ्रमण करते हुए दिनांक ५ जुलाई २००२ ई. को कर्क राशि में प्रवेश करेगा। उक्त समय मेष राशि का चन्द्रमा व भरणी नक्षत्र रहेगा। गतवर्ष दिनांक १६ जून २००१ ई. को रेवती नक्षत्र व मीन के चन्द्रमा सानिध्य रखते हुए मिथुन में प्रवेश किया था जो मिथुन-कन्या-मकर राशि वालों को ताम्रपाद से श्रम विशेष से सुख सौभाग्यवर्द्धक है। वृष तुला और मीन राशि वालों हेतु स्वर्ण पाद से मनोद्वेग, अशांति व शत्रु वृद्धिकारक है। मेष-सिंह-धनु वालों को लोह पाद से स्वास्थ्य हीनता-घुटन एवं न्यून मनोबल प्रद है। कर्क-वृश्चिक-कुंभ वालों के लिए रजत पाद से प्रगति, अर्थ लाभ व प्रतिष्ठा वृद्धि फलप्रद है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिथुन राशि के गुरु का गोचर फल–

मिथुने च गुरुर्याति, तत्राब्दे दारुणं भयम्।
नृपाणां विग्रहस्तत्र, स्वल्पं तोयं भविष्यति॥

मिथुन राशि पर गुरु के भ्रमण काल में वर्षा की कमी रहती है। लोगों में युद्ध विभीषिका का महान भय फैलता है। शासकों में आपसी मतभेद बढ़ते हैं।

दिनांक ४ जुलाई २००२ ई. तक गुरु मिथुने तस्य फलम्

मेष—लोह पाये से तीसरे स्थान पर मान-सम्मान पर ठेस, मानसिक घुटन एवं आलस्य की वृद्धि रहेगी। मनोभ्रम के साथ शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी।

वृष—सोने के पाये धन भाव में होने से खर्च तेज, व्यय भार वश ऋण वृद्धि किन्तु विशेष श्रम व संघर्ष से अधूरे कामों की पूर्ति होती रहेगी।

मिथुन—ताम्बे के पाये जन्म राशि के भ्रमण से मनोबल तेज, धैर्य व गंभीरता से रुके कामों की पूर्ति एवं स्वजनों का सहयोग रहेगा।

कर्क—चांदी के पाये १२वें स्थान पर होने के कारण मांगलिक कामों व उत्सवों में खर्च, समाज परिवार में प्रशंसा वृद्धि व स्वयं को मनोशांति बनेगी।

सिंह—लोह पाये से लाभ भाव में अति श्रम होकर अर्थ लाभ रहेगा। स्वजनों से व गृहस्थ जीवन में तनाव का वातावरण रहेगा। भूमि भवनादि के विवादों से बचें।

कन्या—ताम्बे के पाये कर्म भावस्थ होने से जमीन मकानादि स्थायी सम्पत्तियों का लाभ तथा मानसिक प्रसन्नता रहेगी। अर्थोपार्जन के कामों में सफलता रहे।

तुला—सोने के पाये भाग्य भाव में होने से उच्च अधिकारियों से मेल, अधिक भागदौड़ से आर्थिक लाभ किन्तु स्वजनों से मनोमालिन्यता व व्यवसायों में अवरोधक घटनाएं रहेंगी।

वृश्चिक—चांदी के पाये अष्टम स्थान में होने से देह कष्ट, कौटुम्बिक विवाद एवं राजकाज से परेशानियां होंगी। फिर भी तेज मनोबल से सफलता रहेगी।

धनु—लोहे के पाये सप्तम स्थान में है। अतः पारिवारिक कलह क्लेश एवं अपव्यय बढ़ कर ऋण वृद्धि कारक है। व्यवसाय क्षेत्र में तनाव व परिश्रम विशेष रहे।

मकर—ताम्बे के पाये छठे स्थान पर शत्रु वर्ग पर प्रभाव वृद्धि प्रद है। व्यवसायों में श्रेष्ठ सफलता होकर आर्थिक उन्नति होगी।

कुम्भ—चांदी के पाये पंचम स्थान पर नवीन अध्ययन या जानकारियां बढ़कर सम्मान वृद्धि फलकारक है। राजकीय कामों में सफलता व स्वजनों का सहयोग रहेगा।

मीन—सोने के पाये चौथे स्था पर होने से पारिवारिक विवाद, भूमि भवनादि के मिथ्या झगड़े झंझटों से मानसिक अशांति रहेगी। आय कार्यों में रुकावटें तथा खर्च की अधिकता रहेगी।

दिनांक ५ जुलाई २००२ को कर्क राशि में गुरु प्रवेश करेगा। जिसका सार्वभौम गोचरफल इस प्रकार है—

कर्क राशि के गुरु का गोचर फल–

बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पं मेघः प्रवर्षति।
राजभिर्विग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते॥

कर्क राशि में देवगुरु का भ्रमण शासकों में आपसी तनाव, विग्रह तथा युद्धादिक विचारों की प्रवृत्ति बढ़ती है तथा वर्षा की कमी रहेगी।

ता. ५ जुलाई २००२ ई. से गुरु कर्के तस्य फलम्

मेष—लोह के पाये चौथे स्थान पर देह कष्ट एवं मानसिक उद्वेग एवं आर्थिक चिन्ताओं की वृद्धि रहेगी।

वृष—ताम्बे के पाये पराक्रम में राज्यादि कामों में विजय, लोगों में प्रशंसा व मनोबल उत्तम बढ़ेगा।

मिथुन—चांदी के पाये धन भाव में व्यवसायों में लाभ, स्वजनों का सहयोग एवं उच्चाधिकारियों से सुसम्मेलन बनेगा।

कर्क—सोने के पाये जन्म-राशि पर उत्तमअध्ययन व नवीन जानकारियां बढ़कर प्रगति बनेगी।

सिंह—लोहे के पाये १२वें स्थान में होने से मिथ्या खर्च बढ़ेगा। कौटुम्बिक जनों व स्वयं को देह कष्ट रहे।

कन्या—सोने के पाये लाभ स्थान पर रहेगा। अतः विशेष श्रम से कामों की सफलता व अर्थ लाभ रहे।

तुला—ताम्बे के पाये कर्म स्थान में होने से नवीन कार्य बनकर प्रगति, समाज व परिवार में प्रतिष्ठा वृद्धि रहेगी।

वृश्चिक—चांदी के पाये भाग्य भाव में होने पर आर्थिक उन्नति, मनोबल तेज एवं प्रभाव वृद्धि बनेगी।

धनु—लोहे के पाये अष्टम स्थान पर शारीरिक पीड़ा, आर्थिक कष्ट एवं मनोबल में गिरावट योगप्रद है।

मकर—ताम्बे के पाये सप्तम स्थान पर शुभ फलप्रद है। पारिवारिक सुख व भौतिक संपदा की वृद्धि रहे।

कुम्भ—सोने के पाये छठे स्थान पर शत्रुओं द्वारा उपद्रव मानसिक खिन्नता एवं कामों में रुकावटें रहेंगी।

मीन—चांदी के पाये पंचम स्थान पर होने से कामों में सफलता-आर्थिक आय व आत्मबल तेज रहेगा।

राहु केतु राशि चार फल

विक्रमी सं. २०५९ के सम्पूर्ण वर्ष राहु वृष राशि में तथा केतु वृश्चिक राशि में रहेगा। जिसका गोचर विश्व पर प्रभाव इस प्रकार है।

वृष राशि के राहु का गोचर फल–

वृषे राहुर्यदा याति, दुःखं सर्व जनेषु च।
दुर्लभानि च धान्यानि, नान्यथा ऋषि भाषितम्॥

राहु के वृष राशि भ्रमण काल में प्रजा अनेक प्रकार से दुखी होती है और धान्यादि की उत्पत्ति कम होकर मंहगाई की विशेष वृद्धि होती है।

वृश्चिक राशि के केतु का गोचर फल

वृश्चिके च शिखीर्याति स्वल्पवृष्टिर्तदा भवेत्।
महर्घं सर्व द्रव्याणां, नृपाणां कोपमादिशेत्॥

केतु के वृश्चिक राशि काल में पृथ्वी पर वर्षा की कमी रहती है और सभी व्यापारिक वस्तुओं के भाव तेज रहते हैं। शासकों में क्रोध वृद्धि होकर युद्धोन्माद बढ़ता है।

राहु-केतु का पाये विचार से राशियों पर प्रभाव

मेष—सिंह, धनु को लोह पाये से कष्टप्रद
वृष—तुला, मीन को सोने पाये से साधारण
मिथुन—कन्या, मकर को ताम्र पाये से शुभपलप्रद
कर्क—वृश्चिक-कुम्भ को चांदी पाये से उत्तम फलप्रद रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०५९ वि.

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१४ अप्रैल	अश्वि.	१ मेष
१७ "	"	२ "
२१ "	"	३ "
२४ "	"	४ "
२७ "	भरणी	१ "
१ मई	"	२ "
४ "	"	३ "
८ "	"	४ "
११ "	कृति.	१ "
१५ "	"	२ वृष
१८ "	"	३ "
२२ "	"	४ "
२५ "	रोहि.	१ "
२८ "	"	२ "
१ जून	"	३ "
४ "	"	४ "
८ "	मृग.	१ "
११ "	"	२ "
१५ "	"	३ मिथु.
१८ "	"	४ "
२२ "	आर्द्रा	१ "
२५ "	"	२ "
२९ "	"	३ "
२ जुला.	"	४ "
६ "	पुन.	१ "
९ "	"	२ "
१३ "	"	३ "
१६ "	"	४ कर्क
२० "	पुष्य	१ "
२३ "	"	२ "
२७ "	"	३ "
३० "	"	४ "
३ अग.	आश्ले.	१ "
६ "	"	२ "
१० "	"	३ "

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१३ अग.	आश्ले.	४ कर्क
१७ "	मघा	१ सिंह
२० "	"	२ "
२४ "	"	३ "
२७ "	"	४ "
३१ "	पू.फा.	१ "
३ सितंबर	"	२ "
६ "	"	३ "
१० "	"	४ "
१३ "	उ.फा.	१ "
१७ "	"	२ कन्या
२० "	"	३ "
२४ "	"	४ "
२७ "	हस्त	१ "
३० "	"	२ "
४ अक्टू.	"	३ "
७ "	"	४ "
१० "	चित्रा	१ "
१४ "	"	२ "
१७ "	"	३ तुला
२१ "	"	४ "
२४ "	स्वाती	१ "
२७ "	"	२ "
३१ "	"	३ "
३ नवंबर	"	४ "
६ "	विशा.	१ "
१० "	"	२ "
१३ "	"	३ "
१६ "	"	४ वृश्चि
१९ "	अनु.	१ "
२३ "	"	२ "
२६ "	"	३ "
२९ "	"	४ "
३ दिसंबर	ज्ये.	१ "
६ "	"	२ "

सूर्य नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
९ दिसंबर	ज्ये.	३ वृश्चि.
१३ "	"	४ "
१६ "	मूल	१ धन
१९ "	"	२ "
२२ "	"	३ "
२६ "	"	४ "
२९ "	पू.षा.	१ "
सन् २००३ई.		
१ जनवरी	"	२ "
४ "	"	३ "
८ "	"	४ "
११ "	उ.षा.	१ "
१४ "	"	२ मकर
१८ "	"	३ "
२१ "	"	४ "
२४ "	श्रवण	१ "
२७ "	"	२ "
३१ "	"	३ "
३ फरवरी	"	४ "
६ "	धनिष्ठा	१ "
९ "	"	२ "
१३ "	"	३ कुंभ
१६ "	"	४ "
१९ "	शत.	१ "
२३ "	"	२ "
२६ "	"	३ "
१ मार्च	"	४ "
५ "	पू.भा.	१ "
८ "	"	२ "
११ "	"	३ "
१५ "	"	४ मीन
१८ "	उ.भा.	१ "
२१ "	"	२ "
२५ "	"	३ "
२८ "	"	४ "
३१ "	रेवती	१ "

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१४ अप्रैल	कृति.	४ वृष
१९ "	रोहि.	१ "
२४ "	"	२ "
२९ "	"	३ "
४ मई	"	४ "
९ "	मृग.	१ "
१४ "	"	२ "
१९ "	"	३ मिथु.
२४ "	"	४ "
२९ "	आर्द्रा	१ "
३ जून	"	२ "
८ "	"	३ "
१३ "	"	४ "
१८ "	पुन.	१ "
२४ "	"	२ "
२९ "	"	३ "
४ जुला.	"	४ कर्क
९ "	पुष्य	१ "
१४ "	"	२ "
१९ "	"	३ "
२५ "	"	४ "
३० "	आश्ले.	१ "
४ अगस्त	"	२ "
९ "	"	३ "
१५ "	"	४ "
२० "	मघा	१ सिंह
२५ "	"	२ "
३० "	"	३ "
४ सितंबर	"	४ "
१० "	पू.फा.	१ "
१५ "	"	२ "
२० "	"	३ "
२५ "	"	४ "
१ अक्टू.	उ.फा.	१ "

मंगल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
६ अक्टू.	उ.फा.	२ कन्या
११ "	"	३ "
१६ "	"	४ "
२२ "	हस्त	१ "
२७ "	"	२ "
१ नवंबर	"	३ "
६ "	"	४ "
११ "	चित्रा	१ "
१७ "	"	२ "
२७ "	चित्रा	३ तुला
२ दिसंबर	स्वाती	१ "
७ "	"	२ "
१३ "	"	३ "
१८ "	"	४ "
२३ "	विशा.	१ "
२८ "	"	२ "
सन् २००३ ई.		
२ जनवरी	विशा.	३ "
७ "	"	४ वृश्चि.
१३ "	अनु.	१ "
१८ "	"	२ "
२३ "	"	३ "
२८ "	"	४ "
२ फरवरी	ज्ये.	१ "
७ "	"	२ "
१३ "	"	३ "
१८ "	"	४ "
२३ "	मूल	१ धन
२८ "	"	२ "
६ मार्च	"	३ "
११ "	"	४ "
१६ "	पू.षा.	१ "
२१ "	"	२ "
२७ "	"	३ "
१ अप्रैल	"	४ "

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१३ अप्रैल	अश्वि.	३ मेष
१५ "	"	४ "
१७ "	भरणी	१ "
१८ "	"	२ "
२० "	"	३ "
२२ "	"	४ "
२४ "	कृति.	१ "
२६ "	"	२ वृष
२८ "	"	३ "
३० "	"	४ "
३ मई	रोहि.	१ "
७ "	"	२ "
२५ "	व.रोहि	१ "
३१ "	" कृति.	४ "
१७ जून	मा.रोहि.	१ "
२१ "	"	२ "
२४ "	"	३ "
२७ "	"	४ "
२९ "	मृग.	१ "
२ जुलाई	"	२ "
४ "	"	३ मिथु.
६ "	"	४ "
७ "	आर्द्रा	१ "
९ "	"	२ "
११ "	"	३ "
१३ "	"	४ "
१४ "	पुन.	१ "
१६ "	"	२ "
१७ "	"	३ "
१९ "	"	४ कर्क
२० "	पुष्य	१ "

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२२ जुलाई	पुष्य	२ कर्क
२४ "	"	३ "
२५ "	"	४ "
२७ "	आश्ले.	१ "
२८ "	"	२ "
३० "	"	३ "
१ अगस्त	"	४ "
३ "	मघा	१ सिंह
५ "	"	२ "
६ "	"	३ "
८ "	"	४ "
१० "	पू.फा.	१ "
१३ "	"	२ "
१५ "	"	३ "
१७ "	"	४ "
१९ "	उ.फा.	१ "
२२ "	"	२ कन्या
२४ "	"	३ "
२७ "	"	४ "
३० "	हस्त	१ "
३ सितंबर	"	२ "
७ "	"	३ "
२१ "	व.हस्त	२ "
२५ "	"	१ "
२८ "	उ.फा.	४ "
१ अक्टू.	"	३ "
१२ " मार्गी	उ.फा.	४ "
१५ "	हस्त	१ "
१७ "	"	२ "
२० "	"	३ "
२२ "	"	४ "
२४ "	चित्रा	१ "

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२६ अक्टू.	चित्रा	२ कन्या
२८ "	"	३ तुला
३० "	"	४ "
१ नवंबर	स्वाती	१ "
३ "	"	२ "
५ "	"	३ "
७ "	"	४ "
९ "	विशा.	१ "
११ "	"	२ "
१३ "	"	३ "
१५ "	"	४ वृश्चि.
१७ "	अनु.	१ "
२० "	"	२ "
२२ "	"	३ "
२४ "	"	४ "
२६ "	ज्ये.	१ "
२८ "	"	२ "
३० "	"	३ "
२ दिसंबर	"	४ "
५ "	मूल	१ धन
७ "	"	२ "
९ "	"	३ "
११ "	"	४ "
१३ "	पू.षा.	१ "
१६ "	"	२ "
१८ "	"	३ "
२० "	"	४ "
२३ "	उ.षा.	१ "
२६ "	"	२ मकर
३० "	"	३ "
सन् २००३ ई.		
६ जनवरी	व.उ.षा.	२ "
९ "	"	१ धन
१२ "	पू.षा.	४ "

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यादि ग्रहों के राशि, नक्षत्र चरण संचार, मार्गी-वक्री व उदयास्त सं. २०५९ वि.

बुध नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१५ जनवरी	पू.षा.	३ धन
१८ ''	''	२ ''
२८ ''	मा.पू.षा.	३ ''
१ फरवरी	पू.षा.	४ ''
५ ''	उ.षा.	१ ''
८ ''	''	२ मकर
११ ''	''	३ ''
१३ ''	''	४ ''
१६ ''	श्रवण	१ ''
१८ ''	''	२ ''
२० ''	''	३ ''
२३ ''	''	४ ''
२५ ''	धनि.	१ ''
२७ ''	''	२ ''
१ मार्च	''	३ कुम्भ
३ ''	''	४ ''
५ ''	शत.	१ ''
७ ''	''	२ ''
९ ''	''	३ ''
११ ''	''	४ ''
१३ ''	पू.भा.	१ ''
१५ ''	''	२ ''
१६ ''	''	३ ''
१८ ''	पू.भा.	४ मीन
२० ''	उ.भा.	१ ''
२२ ''	''	२ ''
२३ ''	''	३ ''
२५ ''	''	४ ''
२६ ''	रेवती	१ ''
२८ ''	''	२ ''
३० ''	''	३ ''
३१ ''	''	४ ''

गुरु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२८ अप्रैल	आर्द्रा	४ मिथुन
१८ मई	पुन.	१ ''
४ जून	''	२ ''
२० ''	''	३ ''
५ जुलाई	''	४ कर्क
२० ''	पुष्य	१ ''
४ अगस्त	''	२ ''
१९ ''	''	३ ''
४ सितंबर	''	४ ''
२२ ''	आश्ले.	१ ''
१२ अक्टू.	''	२ ''
११ नवंबर	''	३ ''
२७ दिसंबर	व.आ.	२ ''
सन् २००३ ई.		
२७ जनवरी	''	१ ''
२२ फरवरी	पुष्ये	४ ''

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१५ अप्रैल	भरणी	४ मेष
१८ ''	कृति.	१ ''
२० ''	''	२ वृष
२३ ''	''	३ ''
२६ ''	''	४ ''
२९ ''	रोहि.	१ ''
१ मई	''	२ ''
४ ''	''	३ ''
७ ''	''	४ ''
१० ''	मृग.	१ ''
१२ ''	''	२ ''

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
१५ मई	मृग	३ मिथु.
१८ ''	''	४ ''
२१ ''	आर्द्रा	१ ''
२४ ''	''	२ ''
२६ ''	''	३ ''
२९ ''	''	४ ''
१ जून	पुन.	१ ''
४ ''	''	२ ''
७ ''	''	३ ''
९ ''	''	४ कर्क
१२ ''	पुष्य	१ ''
१५ ''	''	२ ''
१८ ''	''	३ ''
२१ ''	''	४ ''
२४ ''	आश्ले.	१ ''
२७ ''	''	२ ''
२९ ''	''	३ ''
२ जुलाई	''	४ ''
५ ''	मघा	१ सिंह
८ ''	''	२ ''
११ ''	''	३ ''
१४ ''	''	४ ''
१७ ''	पू.फा.	१ ''
२० ''	''	२ ''
२३ ''	''	३ ''
२६ ''	''	४ ''
२९ ''	उ.फा.	१ ''
१ अगस्त	''	२ कन्या
४ ''	''	३ ''

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ अगस्त	उ.फा.	४ कन्या
११ ''	हस्त	१ ''
१४ ''	''	२ ''
१७ ''	''	३ ''
२१ ''	''	४ ''
२४ ''	चित्रा	१ ''
२८ ''	''	२ ''
१ सितंबर	''	३ तुला
४ ''	''	४ ''
९ ''	स्वाती	१ ''
१३ ''	''	२ ''
१८ ''	''	३ ''
२३ ''	''	४ ''
१ अक्टू.	विशा.	३ ''
२० ''	व.स्वा.	४ ''
२७ ''	''	३ ''
१ नवंबर	''	२ ''
७ ''	''	१ ''
१६ ''	चित्रा	४ ''
२६ ''	मा.स्वा.	१ ''
५ दिसंबर	''	२ ''
११ ''	''	३ ''
१६ ''	''	४ ''
२१ ''	विशा.	१ ''
२५ ''	''	२ ''
२८ ''	''	३ ''
सन् २००३ ई.		
१ जनवरी	विशा.	४ वृश्चि.
४ ''	अनु.	१ ''

शुक्र नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
८ जनवरी	अनु.	२ वृश्चि.
११ ''	''	३ ''
१४ ''	''	४ ''
१८ ''	ज्ये.	१ ''
२१ ''	''	२ ''
२४ ''	''	३ ''
२७ ''	''	४ ''
३० ''	मूल	१ धन
२ फरवरी	''	२ ''
५ ''	''	३ ''
८ ''	''	४ ''
११ ''	पू.षा.	१ ''
१४ ''	''	२ ''
१६ ''	''	३ ''
१९ ''	''	४ ''
२२ ''	उ.षा.	१ ''
२५ ''	''	२ मकर
२८ ''	''	३ ''
३ मार्च	''	४ ''
६ ''	श्रावण	१ ''
८ ''	''	२ ''
११ ''	''	३ ''
१४ ''	''	४ ''
१७ ''	धनि.	१ ''
२० ''	''	२ ''
२२ ''	''	३ कुम्भ
२५ ''	''	४ ''
२८ ''	शत.	१ ''
३१ ''	''	२ ''

शनि नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
४ मई	रोहि.	४ वृष
३१ ''	मृग.	१ ''
२५ जून	''	२ ''
२३ जुलाई	''	३ मिथुन
२६ अगस्त	''	४ ''
२७ नवंबर	व.मृग.	३ ''
सन् २००३ ई.		
८ जनवरी	''	२ वृष

राहु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२० अप्रैल	मृगशिरा	१ वृष
२२ जून	रोहिणी	४ ''
२४ अगस्त	''	३ ''
२६ अक्टू.	''	२ ''
२८ दिसंबर	''	१ ''
सन् २००३ ई.		
१ मार्च	कृति.	४ ''

केतु नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२० अप्रैल	ज्येष्ठा	३ वृश्चि.
२२ जून	''	२ ''
२४ अगस्त	''	१ ''
२६ अक्टू.	अनु.	४ ''
२८ दिसंबर	''	३ ''
सन् २००३ ई.		
९ मार्च	अनु.	२ ''

हर्षल नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
११ अगस्त	वक्री धनि.	३ कुंभ
सन् २००३ ई.		
२१ जनवरी	मा.धनि.	४ ''
२१ मार्च	शतभिषा	१ ''

हर्षल नक्षत्र चार

ता. मास नक्षत्र पाद

नेपच्यून नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२३ जून	वक्री श्रव.	२ मकर
सन् २००३ ई.		
२८ जनवरी	मार्गी श्रव.	३ ''

प्लूटो नक्षत्र चार

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२९ अप्रैल	वक्री ज्ये.	२ वृश्चि.
४ दिसंबर	मार्गी ज्ये.	३ ''

मंगल का उदयास्त

ता. मास		
१७ जून	अस्त	पश्चिम
३० सितंबर	उदय	पूर्व

बुध का उदयास्त

ता. मास		
१९ अप्रैल	उदय	पश्चिम
१७ मई	अस्त	''
५ जून	उदय	पूर्व
९ जुलाई	अस्त	''
२ अगस्त	उदय	पश्चिम
२१ सितंबर	अस्त	''
५ अक्टू.	उदय	पूर्व
२२ ''	अस्त	''
७ दिसंबर	उदय	पश्चिम
सन् २००३ ई.		
५ जनवरी	अस्त	पश्चिम
१७ ''	उदय	पूर्व
६ मार्च	अस्त	पूर्व

गुरु का उदयास्त

ता. मास		
९ जुलाई	अस्त	पश्चिम
३ अगस्त	उदय	पूर्व

शुक्र का उदयास्त

ता. मास		
२३ अक्टू.	अस्त	पश्चिम
६ नवंबर	उदय	पूर्व

शनि का उदयास्त

ता. मास	नक्षत्र	पाद
२२ मई	अस्त	पश्चिम
२७ जून	उदय	पूर्व

मंगल वक्री-मार्गी

मंगल इस वर्ष सं. २०५९ में वक्री नहीं होगा

बुध वक्री-मार्गी

ता. मास	
१५ मई	वक्री
८ जून	मार्गी
१४ सितम्बर	वक्री
६ अक्टूबर	मार्गी
सन् २००३ ई.	
२ जनवरी	वक्री
२३ जनवरी	मार्गी

गुरु वक्री-मार्गी

ता. मास	
४ दिसम्बर	वक्री

शुक्र वक्री-मार्गी

ता. मास	
१० अक्टूबर	वक्री
२१ नव.	मार्गी

शनि वक्री-मार्गी

ता. मास	
११ अक्टूबर	वक्री
सन् २००३ ई.	
२२ फरवरी	मार्गी

हर्षल वक्री-मार्गी

ता. मास	
३ जून	वक्री
४ नवंबर	मार्गी

नेपच्यून वक्री-मार्गी

ता. मास	
१३ मई	वक्री
२० अक्टूबर	मार्गी

प्लूटो वक्री-मार्गी

ता. मास	
२६ अगस्त	मार्गी
सन् २००३ ई.	
२३ मार्च	वक्री

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साढ़े पांच बजे (प्रातः ५ बजकर ३० मिनट) के अतिरिक्त अन्य समय के लिए ग्रह स्पष्ट करना

नीचे दी गई सारणी द्वारा यदि आपको भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम साढ़े पांच बजे के ग्रह स्पष्टों के अलावा किसी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट करने हों तो आप नीचे लिखी सारणी द्वारा समुचित संस्कार करके अभिष्ट समय के ग्रह स्पष्ट कर सकते हैं। आपने **१५ अगस्त १९९६ शाम ८ बजकर ४५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करना है।** इसके लिए १६ अगस्त प्रातः ५-३० बजे के सूर्य स्पष्ट में से ८-४५ घंटे की गति घटायेंगे। १६ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२९-३५-४५) में से१५ अगस्त के सूर्य स्पष्ट (३-२८-३८-०४) घटा देने से २४ घंटे की गति पता चलेगी जोकि ५७।४१ कलादि प्राप्त हुई। सारणी में देखने से हमें ५७ कला के सामने ८ घंटे के नीचे हमें १९.०० मिले। इसमें ४५ मिनट की गति १।४७ कलादि जमा कर देने से हमें २०।४७ कलादि योग प्राप्त हुआ। अब ४१ विकला (५४।४१) के संस्कार समीपस्थ ४१ कला के (८।४५ घंटे) संस्कार १५ विकला जमा कर देने से हमें २१।०२ कलादि ८ घण्टे ४५ मिनट की गति प्राप्त हुई इसको १६ अगस्त साढ़े पांच के सूर्य स्पष्ट (३।२९।३५।४५) में से घटा देने से शाम **८ बजकर ४५** मिनट का सूर्य स्पष्ट **३/२९/१४/४३** राशि अंश आदि प्राप्त हुआ। इस प्रकार किसी भी अन्य समय के ग्रह स्पष्ट निकाले जा सकते हैं। **मार्गी ग्रहों के किसी अन्य समय के स्पष्ट करने के लिए अगले दिन के ग्रह स्पष्ट में घटाने से प्राप्त होता है। वक्री ग्रह के लिए घटाने के स्थान पर जोड़ने से स्पष्ट होता है।**

कृपया पाठक इन (✤ को १/४) (★ को १/२) (● को ३/४) पढ़ें।

५.३० बजे के ग्रह स्पष्ट में किसी दो दिनों के बीच के किसी भी समय का गृह स्पष्ट करना बहुत सरल है। इसके लिए आप बिना सारणी को उपयोग में लाए, नीचे दिए गए उदाहरणों के द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं। मार्गी और वक्री ग्रहों के स्पष्ट करने की क्रिया प्रथक-प्रथक नीचे के उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगी। मान लीजिये **१५ अगस्त सन् १९९६ को शाम के ८ बजकर ४५ मिनट** के ग्रह स्पष्ट करने हैं।

मार्गी ग्रहों के लिए: सूर्य: १५ अग. के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२८।३८।४ है और अगले दिन १६ अगस्त के प्रातः ५-३० बजे का सूर्य स्पष्ट ३।२९।३५।४५ है। मार्गी ग्रहों के लिए अगले दिन के ग्रहस्पष्ट में से पहले दिन के ग्रह स्पष्ट घटाये जाते हैं - यहां १६ तारीख के सूर्य स्पष्ट में से १५ तारीख का सूर्य स्पष्ट घटायें:-

	रा.	अं.	क.	वि.
१६ ता. को सूर्य स्पष्ट	३	२९	३५	४५
१५ ता. के सूर्य स्पष्ट घटाएं (-)	३	२८	३८	०४
	०	०	५७	४१

अतः ५७' कला ४१'' विकला सूर्य की दैनिक गति हुई। ५७'-४१'' के विकला बनाये: ५७x६०+४१= ३४६१ विकला। सूर्य की यह गति १५ ता. के ५-३० बजे से १६ ता. के ५-३० बजे तक २४ घंटे (१४४० मि.) की है। अब अपने इष्ट समय ८ बजकर ४५ मिनट में से ५-३० बजे को घटाया तो समयान्तराल १५ घंटे१५ मिनट (९१५ मिनट) आया। अब त्रैराशिक से गणना की - १४४० मि. में सूर्य की गति ३४६१ विकला है। ९१५ मि. में सूर्य की गति=३४६१×९१५ ÷ १४४० = २१९९ विकला = २१९९÷६० कला = ३६ कला ३९ विकला ३६'३९'' इसको १५ अग. के सूर्योदय में जोड़ दें। (३-२८-३८-४)+(३६-३९)=३-२९-१४-४३ अतः १५ अगस्त की **शाम ८ बजकर १५ मिनट का सूर्य स्पष्ट ३-२९-१४-४३ बना।** इसी प्रकार अन्य सभी मार्गी ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।

वक्री ग्रहों के लिए:- शनि वक्री अतः उलटी क्रिया करनी होगी अर्थात् १५ अगस्त के शनिस्पष्ट में १६ अगस्त के शनि स्पष्ट घटाने होंगे:- **१५ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५८-२२ में से **१६ अगस्त** के शनि स्पष्ट ११-१२-५५-३४ को घटायें = २-४८ यह शनि की दैनिक वक्र गति हुई। २ क. ४८ वि. = १६८ विकला अतः क्रिया पूर्ववत १६८×९१५÷१४४० = १०७ वि.=१ क. ४७ वि.। १'४७'' को १५ अगस्त के शनि-स्पष्ट में से घटाया (११-१२-५८-२२)-(१-४७)=११-१२-५६-३५ अतः **१५ अगस्त को ८ बजकर ४५ मि. पर वक्री शनि स्पष्ट ११-१२-५६-३५** आया।

यदि ग्रह स्पष्ट सूर्योदय कालीन दिये हों तो ५-३० बजे के बजाय सूर्योदय काल लेकर ग्रह स्पष्ट इसी प्रकार किये जा सकते हैं। **इस प्रकार अन्य सभी ग्रहों के किसी भी समय के ग्रह स्पष्ट किये जा सकते हैं।**

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९ घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
१	०।०१ ✤	०।०२ ★	०।०५	०।०७ ★	०।१०	०।१२ ★	०।१५	०।१७ ★	०।२०	०।२२ ★	०।२५	०।२७ ★	०।३०
२	०।०२ ★	०।०५	०।१०	०।१५	०।२०	०।२५	०।३०	०।३५	०।४०	०।४५	०।५०	०।५५	१।००
३	०।०३ ●	०।०७ ★	०।१५	०।२२ ★	०।३०	०।३७ ★	०।४५	०।५२ ★	१।००	१।०७ ★	१।१५	१।२२ ★	१।३०
४	०।०५	०।१०	०।२०	०।३०	०।४०	०।५०	१।००	१।१०	१।२०	१।३०	१।४०	१।५०	२।००
५	०।०६ ✤	०।१२ ★	०।२५	०।३७ ★	०।५०	१।०२ ★	१।१५	१।२७ ★	१।४०	१।५२ ★	२।०५	२।१७ ★	२।३०
६	०।०७ ★	०।१५	०।३०	०।४५	१।००	१।१५	१।३०	१।४५	२।००	२।१५	२।३०	२।४५	३।००
७	०।०८ ●	०।१७ ★	०।३५	०।५२ ★	१।१०	१।२७ ★	१।४५	२।०२ ★	२।२०	२।३७ ★	२।५५	३।१२ ★	३।३०
८	०।१०	०।२०	०।४०	१।००	१।२०	१।४०	२।००	२।२०	२।४०	३।००	३।२०	३।४०	४।००
९	०।११ ✤	०।२२ ★	०।४५	१।०७ ★	१।३०	१।५२ ★	२।१५	२।३७ ★	३।००	३।२२ ★	३।४५	४।७ ★	४।३०
१०	०।१२ ★	०।२५	०।५०	१।१५	१।४०	२।०५	२।३०	२।५५	३।२०	३।४५	४।१०	४।३५	५।००
११	०।१३ ●	०।२७ ★	०।५५	१।२२ ★	१।५०	२।१७ ★	२।४५	३।१२ ★	३।४०	४।७ ★	४।३५	५।२ ★	५।३०
१२	०।१५	०।३०	१।००	१।३०	२।००	२।३०	३।००	३।३०	४।००	४।३०	५।००	५।३०	६।००
१३	०।१६ ✤	०।३२ ★	१।०५	१।३७ ★	२।१०	२।४२ ★	३।१५	३।४७ ★	४।२०	४।५२ ★	५।२५	५।५७ ★	६।३०
१४	०।१७ ★	०।३५	१।१०	१।४५	२।२०	२।५५	३।३०	४।०५	४।४०	५।१५	५।५०	६।२५	७।००
१५	०।१८ ●	०।३७ ★	१।१५	१।५२ ★	२।३०	३।०७ ★	३।४५	४।२२ ★	५।००	५।३७ ★	६।१५	६।५२ ★	७।३०
१६	०।२०	०।४०	१।२०	२।००	२।४०	३।२०	४।००	४।४०	५।२०	६।००	६।४०	७।२०	८।००
१७	०।२१ ✤	०।४२ ★	१।२५	२।०७ ★	२।५०	३।३२ ★	४।१५	४।५७ ★	५।४०	६।२२ ★	७।०५	७।४७ ★	८।३०
१८	०।२२ ★	०।४५	१।३०	२।१५	३।००	३।४५	४।३०	५।१५	६।००	६।४५	७।३०	८।१५	९।००
१९	०।२३ ●	०।४७ ★	१।३५	२।२२ ★	३।१०	३।५७ ★	४।४५	५।३२ ★	६।२०	७।७ ★	७।५५	८।४२ ★	९।३०
२०	०।२५	०।५०	१।४०	२।३०	३।२०	४।१०	५।००	५।५०	६।४०	७।३०	८।२०	९।१०	१०।००
२१	०।२६ ✤	०।५२ ★	१।४५	२।३७ ★	३।३०	४।२२ ★	५।१५	६।०७ ★	७।००	७।५२ ★	८।४५	९।३७ ★	१०।३०
२२	०।२७ ★	०।५५	१।५०	२।४५	३।४०	४।३५	५।३०	६।२५	७।२०	८।१५	९।१०	१०।०५	११।००
२३	०।२८ ●	०।५७ ★	१।५५	२।५२ ★	३।५०	४।४७ ★	५।४५	६।४२ ★	७।४०	८।३७ ★	९।३५	१०।३२ ★	११।३०
२४	०।३०	१।००	२।००	३।००	४।००	५।००	६।००	७।००	८।००	९।००	१०।००	११।००	१२।००
२५	०।३१ ✤	१।०२ ★	२।०५	३।०७ ★	४।१०	५।१२ ★	६।१५	७।१७ ★	८।२०	९।२२ ★	१०।२५	११।२७ ★	१२।३०
२६	०।३२ ★	१।०५	२।१०	३।१५	४।२०	५।२५	६।३०	७।३५	८।४०	९।४५	१०।५०	११।५५	१३।००
२७	०।३३ ●	१।०७ ★	२।१५	३।२२ ★	४।३०	५।३७ ★	६।४५	७।५२ ★	९।००	१०।७ ★	११।१५	१२।२२ ★	१३।३०
२८	०।३५	१।१०	२।२०	३।३०	४।४०	५।५०	७।००	८।१०	९।२०	१०।३०	११।४०	१२।५०	१४।००
२९	०।३६ ✤	१।१२ ★	२।२५	३।३७ ★	४।५०	६।०२ ★	७।१५	८।२७ ★	९।४०	१०।५२ ★	१२।५	१३।१७ ★	१४।३०
३०	०।३७ ★	१।१५	२।३०	३।४५	५।००	६।१५	७।३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दैनिक गति (२४घंटे)	गति (३०मि.) क. वि.	गति (१ घं.) क. वि.	गति (२ घं.) क. वि.	गति (३ घं.) क. वि.	गति (४ घं.) क. वि.	गति (५ घं.) क. वि.	गति (६ घं.) क. वि.	गति (७ घं.) क. वि.	गति (८ घं.) क. वि.	गति (९घं.) क. वि.	गति (१०घं.) क. वि.	गति (११घं.) क. वि.	गति (१२घं.) क. वि.
३१	०।३८ ●	१।१७ ★	२।३५	३।५२ ★	५।१०	६।२७ ★	७।४५	९।०२ ★	१०।२०	११।३७ ★	१२।५५	१४।१२ ★	१५।३०
३२	०।४०	१।२०	२।४०	४।००	५।२०	६।४०	८।००	९।२०	१०।४०	१२।००	१३।२०	१४।४०	१६।००
३३	०।४१ ✤	१।२२ ★	२।४५	४।०७ ★	५।३०	६।५२ ★	८।१५	९।३७ ★	११।००	१२।२२ ★	१३।४५	१५।०७ ★	१६।३०
३४	०।४२ ★	१।२५	२।५०	४।१५	५।४०	७।०५	८।३०	९।५५	११।२०	१२।४५	१४।१०	१५।३५	१७।००
३५	०।४३ ●	१।२७ ★	२।५५	४।२२ ★	५।५०	७।१७ ★	८।४५	१०।१२ ★	११।४०	१३।०७ ★	१४।३५	१६।०२ ★	१७।३०
३६	०।४५	१।३०	३।००	४।३०	६।००	७।३०	९।००	१०।३०	१२।००	१३।३०	१५।००	१६।३०	१८।००
३७	०।४६ ✤	१।३२ ★	३।०५	४।३७ ★	६।१०	७।४२ ★	९।१५	१०।४७ ★	१२।२०	१३।५२ ★	१५।२५	१६।५७ ★	१८।३०
३८	०।४७ ★	१।३५	३।१०	४।४५	६।२०	७।५५	९।३०	११।०५	१२।४०	१४।१५	१५।५०	१७।२५	१९।००
३९	०।४८ ●	१।३७ ★	३।१५	४।५२ ★	६।३०	८।०७ ★	९।४५	११।२२ ★	१३।००	१४।३७ ★	१६।१५	१७।५२ ★	१९।३०
४०	०।५०	१।४०	३।२०	५।००	६।४०	८।२०	१०।००	११।४०	१३।२०	१५।००	१६।४०	१८।२०	२०।००
४१	०।५१ ✤	१।४२ ★	३।२५	५।०७ ★	६।५०	८।३२ ★	१०।१५	११।५७ ★	१३।४०	१५।२२ ★	१७।०५	१८।४७ ★	२०।३०
४२	०।५२ ★	१।४५	३।३०	५।१५	७।००	८।४५	१०।३०	१२।१५	१४।००	१५।४५	१७।३०	१९।१५	२१।००
४३	०।५३ ●	१।४७ ★	३।३५	५।२२ ★	७।१०	८।५७ ★	१०।४५	१२।३२ ★	१४।२०	१६।०७ ★	१७।५५	१९।४२ ★	२१।३०
४४	०।५५	१।५०	३।४०	५।३०	७।२०	९।१०	११।००	१२।५०	१४।४०	१६।३०	१८।२०	२०।१०	२२।००
४५	०।५६ ✤	१।५२ ★	३।४५	५।३७ ★	७।३०	९।२२ ★	११।१५	१३।०७ ★	१५।००	१६।५२ ★	१८।४५	२०।३७ ★	२२।३०
४६	०।५७ ★	१।५५	३।५०	५।४५	७।४०	९।३५	११।३०	१३।२५	१५।२०	१७।१५	१९।१०	२१।०५	२३।००
४७	०।५८ ●	१।५७ ★	३।५५	५।५२ ★	७।५०	९।४७ ★	११।४५	१३।४२ ★	१५।४०	१७।३७ ★	१९।३५	२१।३२ ★	२३।३०
४८	१।००	२।००	४।००	६।००	८।००	१०।००	१२।००	१४।००	१६।००	१८।००	२०।००	२२।००	२४।००
४९	१।०१ ✤	२।०२ ★	४।०५	६।०७ ★	८।१०	१०।१२ ★	१२।१५	१४।१७ ★	१६।२०	१८।२२ ★	२०।२५	२२।२७ ★	२४।३०
५०	१।०२ ★	२।०५	४।१०	६।१५	८।२०	१०।२५	१२।३०	१४।३५	१६।४०	१८।४५	२०।५०	२२।५५	२५।००
५१	१।०३ ●	२।०७ ★	४।१५	६।२२ ★	८।३०	१०।३७ ★	१२।४५	१४।५२ ★	१७।००	१९।०७ ★	२१।१५	२३।२२ ★	२५।३०
५२	१।०५	२।१०	४।२०	६।३०	८।४०	१०।५०	१३।००	१५।१०	१७।२०	१९।३०	२१।४०	२३।५०	२६।००
५३	१।०६ ✤	२।१२ ★	४।२५	६।३७ ★	८।५०	११।०२ ★	१३।१५	१५।२७ ★	१७।४०	१९।५२ ★	२२।०५	२४।१७ ★	२६।३०
५४	१।०७ ★	२।१५	४।३०	६।४५	९।००	११।१५	१३।३०	१५।४५	१८।००	२०।१५	२२।३०	२४।४५	२७।००
५५	१।०८ ●	२।१७ ★	४।३५	६।५२ ★	९।१०	११।२७ ★	१३।४५	१६।०२ ★	१८।२०	२०।३७ ★	२२।५५	२५।१२ ★	२७।३०
५६	१।१०	२।२०	४।४०	७।००	९।२०	११।४०	१४।००	१६।२०	१८।४०	२१।००	२३।२०	२५।४०	२८।००
५७	१।११ ✤	२।२२ ★	४।४५	७।०७ ★	९।३०	११।५२ ★	१४।१५	१६।३७ ★	१९।००	२१।२२ ★	२३।४५	२६।०७ ★	२८।३०
५८	१।१२ ★	२।२५	४।५०	७।१५	९।४०	१२।०५	१४।३०	१६।५५	१९।२०	२१।४५	२४।१०	२६।३५	२९।००
५९	१।१३ ●	२।२७ ★	४।५५	७।२२ ★	९।५०	१२।१७ ★	१४।४५	१७।१२ ★	१९।४०	२२।०७ ★	२४।३५	२७।०२ ★	२९।३०
६०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

✡ दैनिक ग्रह-स्पष्ट ✡

इस पंचांग में नीचे यहाँ सभी ग्रहों के राशि, अंश, कला, विकला सूक्ष्म गणितागत दिये गये हैं। प्रत्येक तारीख के सामने उस दिन के प्रात: ५।३० बजे के भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम की ग्रह स्थिति विकला पर्यन्त अंकित है। यह ग्रह स्थिति समस्त भूमण्डल पर सभी स्थानों के लिए स्वीकार्य है। केवल अन्य देशों के लिए उचित समय का संस्कार कर लें। जैसे-जापान के स्टैं. टा. का भारतीय स्टैं.टा. से अन्तर +३ घं. ३० मि. है। अत: ये स्पष्ट ग्रह जापान के स्टैं.टा. के अनुसार प्रात: ९ घं. ०० मि. के हैं। किसी भी समय के तात्कालिक ग्रह स्पष्ट जानने के लिए समय के अन्तर के घटी पल बनाकर उस दिन की दैनिक ग्रह गति के साथ त्रैराशिक विधि से गुणा करने पर प्राप्त लब्धि को मार्गी ग्रह में जोड़ने से एवं वक्री ग्रह में घटाने से उस दिन के अभीष्ट समय की ग्रह स्थिति प्राप्त होगी। ग्रहों की दैनिक गति जानने के लिए अभीष्ट दिन के ग्रहों को अगले दिन के स्पष्ट ग्रहों में से घटाने से जो शेष रहे वह गति होगी।

अप्रैल सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।०९"

ता. अप्रैल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता. अप्रैल
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	
१३	११ २९ ०० २१	० ०१ ०७ २९	१ ०५ ३६ ५२	० ०५ १३ ३५	२ १४ २९ ३६	० २० ३१ ५३	१ १७ ३९ ४५	१ २७ ०४ ३३	१० ०३ ५५ २९	९ १६ ५० ४०	७ २३ ३५ ४६	१३
१४	११ २९ ५९ १०	० १३ ११ १२	१ ०६ १७ ५१	० ०७ १८ ५५	२ १४ ३७ ०१	० २१ ४५ २७	१ १७ ४५ ४८	१ २७ ०१ २२	१० ०३ ५७ ४६	९ १६ ५१ ३८	७ २३ ३५ ०१	१४
१५	० ०० ५७ ५८	० २५ २१ ४२	१ ०६ ५८ ४८	० ०९ २३ ३५	२ १५ ४४ ३५	० २२ ५८ ५९	१ १७ ५१ ५५	१ २६ ५८ ११	१० ०४ ०० ०२	९ १६ ५२ ३४	७ २३ ३४ १४	१५
१६	० ०१ ५६ ४३	१ ०७ ४० ३६	१ ०७ ३९ ४३	० ११ २७ १५	२ १४ ५२ १६	० २४ १२ ३०	१ १७ ५८ ०५	१ २६ ५५ ०१	१० ०४ ०२ १५	९ १६ ५३ २९	७ २३ ३३ २५	१६
१७	० ०२ ५५ २६	१ २० ०९ ५७	१ ०८ २० ३५	० १३ २९ ३५	२ १५ ०० ०६	० २५ २५ ५७	१ १८ ०४ १९	१ २६ ५१ ५०	१० ०४ ०४ २६	९ १६ ५४ २१	७ २३ ३२ ३४	१७
१८	० ०३ ५४ ०८	२ ०२ ५२ १८	१ ०९ ०१ २६	० १५ ३० १६	२ १५ ०८ ०४	० २६ ३९ २३	१ १८ १० ३७	१ २६ ४८ ३९	१० ०४ ०६ ३४	९ १६ ५५ १२	७ २३ ३१ ४२	१८
१९	० ०४ ५२ ४७	२ १५ ५० २९	१ ०९ ४२ १४	० १७ २८ ५७	२ १५ १६ ०९	० २७ ५२ ४६	१ १८ १६ ५८	१ २६ ४५ २८	१० ०४ ०८ ४०	९ १६ ५६ ०१	७ २३ ३० ४८	१९
२०	० ०५ ५१ २३	२ २९ ०७ ३०	१ १० २३ ०१	० १९ २५ १७	२ १५ २४ २२	० २९ ०६ ०७	१ १८ २३ २३	१ २६ ४२ १७	१० ०४ १० ४४	९ १६ ५६ ४८	७ २३ २९ ५३	२०
२१	० ०६ ४९ ५८	३ १२ ४५ ५६	१ ११ ०३ ४५	० २१ १९ ००	२ १५ ३२ ४३	१ ०० १९ २५	१ १८ २९ ५०	१ २६ ३९ ०६	१० ०४ १२ ४५	९ १६ ५७ ३३	७ २३ २८ ५६	२१
२२	० ०७ ४८ ३०	३ २६ ४७ १५	१ ११ ४४ २६	० २३ ०९ ४६	२ १५ ४१ ११	१ ०१ ३२ ४०	१ १८ ३६ २१	१ २६ ३५ ५६	१० ०४ १४ ४४	९ १६ ५८ १६	७ २३ २७ ५८	२२
२३	० ०८ ४७ ००	४ ११ ११ ०७	१ १२ २५ ०६	० २४ ५७ २१	२ १५ ४९ ४६	१ ०२ ४५ ५३	१ १८ ४२ ५५	१ २६ ३२ ४५	१० ०४ १६ ४०	९ १६ ५८ ५७	७ २३ २६ ५८	२३
२४	० ०९ ४५ २८	४ २५ ५४ ३७	१ १३ ०५ ४३	० २६ ४१ २९	२ १५ ५८ २८	१ ०३ ५९ ०४	१ १८ ४९ ३२	१ २६ २९ ३४	१० ०४ १८ ३४	९ १६ ५९ ३६	७ २३ २५ ५६	२४
२५	० १० ४३ ५३	५ १० ५२ ०२	१ १३ ४६ १८	० २८ २१ ५७	२ १६ ७ १७	१ ०५ १२ ११	१ १८ ५६ १२	१ २६ २६ २४	१० ०४ २० २५	९ १७ ०० १३	७ २३ २४ ५३	२५
२६	० ११ ४२ १७	५ २५ ५५ १४	१ १४ २६ ५१	० २९ ५८ ३४	२ १६ १६ १३	१ ०६ २५ १६	१ १९ ०२ ५५	१ २६ २३ १३	१० ०४ २२ १४	९ १७ ०० ४८	७ २३ २३ ४९	२६
२७	० १२ ४० ३९	६ १० ५४ ५०	१ १५ ०७ २२	१ ०१ ३१ १०	२ १६ २५ १७	१ ०७ ३८ १९	१ १९ ०९ ४१	१ २६ २० ०२	१० ०४ २४ ००	९ १७ ०१ २१	७ २३ २२ ४३	२७
२८	० १३ ३८ ५९	६ २५ ४१ ४१	१ १५ ४७ ५०	१ ०२ ५९ ३७	२ १६ ३४ २६	१ ०८ ५१ १९	१ १९ १६ २९	१ २६ १६ ५१	१० ०४ २५ ४४	९ १७ ०१ ५३	७ २३ २१ ३६	२८
२९	० १४ ३७ १७	७ १० ०८ १७	१ १६ २८ १७	१ ०४ २३ ४७	२ १६ ४३ ४३	१ १० ०४ १७	१ १९ २३ २१	१ २६ १३ ४१	१० ०४ २७ २५	९ १७ ०२ २२	७ २३ २० २७	२९
३०	० १५ ३५ ३४	७ २४ ०९ ५१	१ १७ ०८ ४१	१ ०५ ४३ ३४	२ १६ ५३ ०६	१ ११ १७ १२	१ १९ ३० १५	१ २६ १० ३०	१० ०४ २९ ०३	९ १७ ०२ ५०	७ २३ १९ १७	३०

अप्रैल सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।५२"

ता. अप्रैल	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता. अप्रैल
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	
१	११ १६ ५७ १६	११ ८ ३ ३६	८ २३ १३ ११	११ २७ १५ ४१	३ १४ १० ४३	१० ११ ११ १६	१ २९ ३१ ४८	१ ८ २२ ८	१० ७ ११ ३८	९ १८ ४४ ४४	७ २६ १ ५१	१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५३' ०३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो (वक्री)	ता.
मई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	मई
१	० १६ ३३ ४९	८ ०७ ४४ २९	१ १७ ४९ ०४	१ ०६ ५८ ५२	२ १७ ०२ ३५	१ १२ ३० ०४	१ १९ ३७ १२	१ २६ ०७ १९	१० ०४ ३० ३९	९ १७ ०३ १५	७ २३ १८ ०६	१
२	० १७ ३२ ०३	८ २० ५२ ५३	१ १८ २९ २४	१ ०८ ०९ ३५	२ १७ १२ ११	१ १३ ४२ ५४	१ १९ ४४ ११	१ २६ ०४ ०८	१० ०४ ३२ १२	९ १७ ०३ ३९	७ २३ १६ ५४	२
३	० १८ ३० १५	९ ०३ ३७ ४०	१ १९ ०९ ४३	१ ०९ १५ ४०	२ १७ २१ ५३	१ १४ ५५ ४१	१ १९ ४१ १३	१ २६ ०० ५७	१० ०४ ३३ ४२	९ १७ ०४ ००	७ २३ १५ ४०	३
४	० १९ २८ २५	९ १६ ०२ ४०	१ १९ ४९ ५९	१ १० १७ ०१	२ १७ ३१ ४१	१ १६ ०८ २६	१ १९ ५८ १७	१ २५ ५७ ४६	१० ०४ ३५ १०	९ १७ ०४ २०	७ २३ १४ २५	४
५	० २० २६ ३४	९ २८ १२ २५	१ २० ३० १४	१ ११ १३ ३४	२ १७ ४१ ३५	१ १७ २१ ०९	१ २० ०५ २३	१ २५ ५४ ३६	१० ०४ ३६ ३५	९ १७ ०४ ३८	७ २३ १३ ०९	५
६	० २१ २४ ४२	१० १० ११ ३७	१ २१ १० २७	१ १२ ०५ १६	२ १७ ५१ ३५	१ १८ ३३ ४९	१ २० १२ ३२	१ २५ ५१ २५	१० ०४ ३७ ५७	९ १७ ०४ ५३	७ २३ ११ ५२	६
७	० २२ २२ ४८	१० २२ ०४ ५१	१ २१ ५० ३९	१ १२ ५२ ०३	२ १८ ०१ ४१	१ १९ ४६ २७	१ २० १९ ४३	१ २५ ४८ १४	१० ०४ ३९ १७	९ १७ ०५ ०७	७ २३ १० ३३	७
८	० २३ २० ५३	११ ०३ ५६ १६	१ २२ ३० ४८	१ १३ ३३ ५१	२ १८ ११ ५३	१ २० ५९ ०२	१ २० २६ ५७	१ २५ ४५ ०४	१० ०४ ४० ३४	९ १७ ०५ १९	७ २३ ०९ १४	८
९	० २४ १८ ५६	११ १५ ४९ २७	१ २३ १० ५६	१ १४ १० ३८	२ १८ २२ ११	१ २२ ११ ३४	१ २० ३४ १२	१ २५ ४१ ५३	१० ०४ ४१ ४८	९ १७ ०५ २९	७ २३ ०७ ५३	९
१०	० २५ १६ ५८	११ २७ ४७ २०	१ २३ ५१ ०१	१ १४ ४२ २२	२ १८ ३२ ३४	१ २३ २४ ०४	१ २० ४१ २९	१ २५ ३८ ४२	१० ०४ ४२ ५९	९ १७ ०५ ३६	७ २३ ०६ ३१	१०
११	० २६ १४ ५९	० ०९ ५२ १५	१ २४ ३१ ०५	१ १५ ०९ ००	२ १८ ४३ ०३	१ २४ ३६ ३१	१ २० ४८ ४९	१ २५ ३५ ३२	१० ०४ ४४ ०७	९ १७ ०५ ४२	७ २३ ०५ ०८	११
१२	० २७ १२ ५८	० २२ ०५ ५८	१ २५ ११ ०७	१ १५ ३० ३१	२ १८ ५३ ३७	१ २५ ४८ ५६	१ २० ५६ १०	१ २५ ३२ २१	१० ०४ ४५ १३	९ १७ ०५ ४६	७ २३ ०३ ४५	१२
१३	० २८ १० ५५	१ ०४ २९ ४९	१ २५ ५१ ०८	१ १५ ४६ ५६	२ १९ ०४ १६	१ २७ ०१ १७	१ २१ ०३ ३३	१ २५ २९ १०	१० ०४ ४६ १५	९ १७ ०५ ४८व.	७ २३ ०२ २०	१३
१४	० २९ ०८ ५१	१ १७ ०४ ४८	१ २६ ३१ ०६	१ १५ ५८ १६	२ १९ १५ ०१	१ २८ १३ ३६	१ २१ १० ५८	१ २५ २५ ५९	१० ०४ ४७ १५	९ १७ ०५ ४७	७ २३ ०० ५५	१४
१५	१ ०० ०६ ४५	१ २९ ५१ ४७	१ २७ ११ ०३	१ १६ ०४ ३५व.	२ १९ २५ ५०	१ २९ २५ ५२	१ २१ १८ २५	१ २५ २२ ४८	१० ०४ ४८ १२	९ १७ ०५ ४५	७ २२ ५९ २८	१५
१६	१ ०१ ०४ ३८	२ १२ ५१ ३८	१ २७ ५० ५८	१ १६ ०५ ५८	२ १९ ३६ ४५	२ ०० ३८ ०५	१ २१ २५ ५३	१ २५ १९ ३७	१० ०४ ४९ ०६	९ १७ ०५ ४१	७ २२ ५८ ०१	१६
१७	१ ०२ ०२ २९	२ २६ ०५ १४	१ २८ ३० ५१	१ १६ ०२ ३४	२ १९ ४७ ४५	२ ०१ ५० १५	१ २१ ३३ २३	१ २५ १६ २६	१० ०४ ४९ ५७	९ १७ ०५ ३५	७ २२ ५६ ३३	१७
१८	१ ०३ ०० १९	३ ०९ ३३ २६	१ २९ १० ४२	१ १५ ५४ ३१	२ १९ ५८ ४९	२ ०३ ०२ २२	१ २१ ४० ५४	१ २५ १३ १६	१० ०४ ५० ४५	९ १७ ०५ २७	७ २२ ५५ ०४	१८
१९	१ ०३ ५८ ०६	३ २३ १६ ५३	१ २९ ५० ३१	१ १५ ४२ ०५	२ २० ०९ ५८	२ ०४ १४ २६	१ २१ ४८ २७	१ २५ १० ०५	१० ०४ ५१ ३०	९ १७ ०५ १७	७ २२ ५३ ३४	१९
२०	१ ०४ ५५ ५२	४ ०७ १५ ३८	२ ०० ३० १९	१ १५ २५ २९	२ २० २१ ११	२ ०५ २६ २६	१ २१ ५६ ०१	१ २५ ०६ ५४	१० ०४ ५२ १३	९ १७ ०५ ०५	७ २२ ५२ ०४	२०
२१	१ ०५ ५३ ३६	४ २१ २८ ४८	२ ०१ १० ०४	१ १५ ०५ ०५	२ २० ३२ २९	२ ०६ ३८ २४	१ २२ ०३ ३६	१ २५ ०३ ४३	१० ०४ ५२ ५२	९ १७ ०४ ५१	७ २२ ५० ३३	२१
२२	१ ०६ ५१ १९	५ ०५ ५४ १२	२ ०१ ४९ ४८	१ १४ ४१ १५	२ २० ४३ ५२	२ ०७ ५० १७	१ २२ ११ १२	१ २५ ०० ३३	१० ०४ ५३ २८	९ १७ ०४ ३६	७ २२ ४९ ०२	२२
२३	१ ०७ ४९ ००	५ २० २८ ०९	२ ०२ २९ २९	१ १४ १४ २३	२ २० ५५ १८	२ ०९ ०२ ०७	१ २२ १८ ५०	१ २४ ५७ २२	१० ०४ ५४ ०२	९ १७ ०४ १८	७ २२ ४७ २९	२३
२४	१ ०८ ४६ ३९	६ ०५ ०५ ३५	२ ०३ ०९ ०९	१ १३ ४४ ५९	२ २१ ०६ ४९	२ १० १३ ५४	१ २२ २६ २९	१ २४ ५४ ११	१० ०४ ५४ ३३	९ १७ ०३ ५९	७ २२ ४५ ५७	२४
२५	१ ०९ ४४ १७	६ १९ ४० २६	२ ०३ ४८ ४७	१ १३ १३ ३५	२ २१ १८ २४	२ ११ २५ ३७	१ २२ ३४ ०८	१ २४ ५१ ००	१० ०४ ५५ ००	९ १७ ०३ ३७	७ २२ ४४ २३	२५
२६	१ १० ४१ ५४	७ ०४ ०६ २३	२ ०४ २८ २४	१ १२ ४० ४२	२ २१ ३० ०३	२ १२ ३७ १७	१ २२ ४१ ४९	१ २४ ४७ ५०	१० ०४ ५५ २५	९ १७ ०३ १४	७ २२ ४२ ५०	२६
२७	१ ११ ३९ ३०	७ १८ १७ ४३	२ ०५ ०७ ५८	१ १२ ०६ ५७	२ २१ ४१ ४६	२ १३ ४८ ५३	१ २२ ४९ ३०	१ २४ ४४ ३९	१० ०४ ५५ ४७	९ १७ ०२ ४९	७ २२ ४१ १६	२७
२८	१ १२ ३७ ०४	८ ०२ १० ०२	२ ०५ ४७ ३१	१ ११ ३२ ५५	२ २१ ५३ ३३	२ १५ ०० २६	१ २२ ५७ १३	१ २४ ४१ २८	१० ०४ ५६ ०६	९ १७ ०२ २२	७ २२ ३९ ४१	२८
२९	१ १३ ३४ ३७	८ १५ ४० ४६	२ ०६ २७ ०२	१ १० ५९ १२	२ २२ ०५ २३	२ १६ ११ ५५	१ २३ ०४ ५६	१ २४ ३८ १७	१० ०४ ५६ २२	९ १७ ०१ ५३	७ २२ ३८ ०६	२९
३०	१ १४ ३२ ०९	८ २८ ४९ १०	२ ०७ ०६ ३२	१ १० २६ २३	२ २२ १७ १८	२ १७ २३ २१	१ २३ १२ ४०	१ २४ ३५ ०६	१० ०४ ५६ ३४	९ १७ ०१ २३	७ २२ ३६ ३१	३०
३१	१ १५ २९ ४१	९ ११ ३६ १६	२ ०७ ४६ ००	१ ०९ ५५ ००	२ २२ २९ १५	२ १८ ३४ ४३	१ २३ २० २५	१ २४ ३१ ५५	१० ०४ ५६ ४५	९ १७ ०० ५०	७ २२ ३४ ५५	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जून सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५३' ०९"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो(वक्री)	ता.
जून	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जून
१	१ १६ २७ ११	९ २४ ०४ २९	२ ०८ २५ २७	१ ०९ २५ ३६	२ २२ ४१ १७	२ १६ ४६ ०१	१ २३ २८ १०	१ २४ २८ ४४	१० ०४ ५६ ५३	९ १७ ०० १६	७ २२ ३३ २०	१
२	१ १७ २४ ४१	१० ०६ १७ १७	२ ०९ ०४ ५२	१ ०८ ५८ ३८	२ २२ ५३ २२	२ २० ५७ १६	१ २३ ३५ ५६	१ २४ २५ ३३	१० ०४ ५६ ५७	९ १६ ५९ ४०	७ २२ ३१ ४३	२
३	१ १८ २२ १०	१० १८ १८ ५०	२ ०९ ४४ १५	१ ०८ ३४ ३४	२ २३ ०५ ३०	२ २२ ०८ २७	१ २३ ४३ ४२	१ २४ २२ २३	१० ०४ ५६ ५९व.	९ १६ ५९ ०२	७ २२ ३० ०७	३
४	१ १९ १९ ३८	११ ०० १३ ४०	२ १० २३ ३७	१ ०८ १३ ४६	२ २३ १७ ४२	२ २३ १९ ३५	१ २३ ५१ २९	१ २४ १९ १२	१० ०४ ५६ ५७	९ १६ ५८ २३	७ २२ २८ ३१	४
५	१ २० १७ ०६	११ १२ ०६ २१	२ ११ ०२ ५८	१ ०७ ५६ ३३	२ २३ २९ ५७	२ २४ ३० ३८	१ २३ ५९ १६	१ २४ १६ ०१	१० ०४ ५६ ५३	९ १६ ५७ ४२	७ २२ २६ ५४	५
६	१ २१ १४ ३३	११ २४ ०१ १७	२ ११ ४२ १७	१ ०७ ४३ १३	२ २३ ४२ १५	२ २५ ४१ ३८	१ २४ ०७ ०३	१ २४ १२ ५१	१० ०४ ५६ ४५	९ १६ ५६ ५९	७ २२ २५ १८	६
७	१ २२ ११ ५९	० ०६ ०२ २७	२ १२ २१ ३५	१ ०७ ३३ ५८	२ २३ ५४ ३७	२ २६ ५२ ३५	१ २४ १४ ५१	१ २४ ०९ ४०	१० ०४ ५६ ३५	९ १६ ५६ १४	७ २२ २३ ४१	७
८	१ २३ ०९ २४	० १८ १३ १७	२ १३ ०० ५२	१ ०७ २८ ५९मा.	२ २४ ०७ ०१	२ २८ ०३ २७	१ २४ २२ ३९	१ २४ ०६ २९	१० ०४ ५६ २२	९ १६ ५५ २८	७ २२ २२ ०४	८
९	१ २४ ०६ ४९	१ ०० ३६ ३०	२ १३ ४० ०७	१ ०७ २८ २३	२ २४ १९ २९	२ २९ १४ १५	१ २४ ३० २७	१ २४ ०३ १८	१० ०४ ५६ ०६	९ १६ ५४ ४०	७ २२ २० २७	९
१०	१ २५ ०४ १३	१ १३ १४ ०७	२ १४ १९ २१	१ ०७ ३२ १५	२ २४ ३१ ५९	३ ०० २५ ००	१ २४ ३८ १५	१ २४ ०० ०७	१० ०४ ५५ ४७	९ १६ ५३ ५०	७ २२ १८ ५१	१०
११	१ २६ ०१ ३६	१ २६ ०७ ११	२ १४ ५८ ३३	१ ०७ ४० ३८	२ २४ ४४ ३२	३ ०१ ३५ ४०	१ २४ ४६ ०२	१ २३ ५६ ५७	१० ०४ ५५ २५	९ १६ ५२ ५८	७ २२ १७ १४	११
१२	१ २६ ५८ ५९	२ ०९ १५ ५५	२ १५ ३७ ४४	१ ०७ ५३ ३३	२ २४ ५७ ०८	३ ०२ ४६ १६	१ २४ ५३ ५०	१ २३ ५३ ४६	१० ०४ ५५ ००	९ १६ ५२ ०५	७ २२ १५ ३८	१२
१३	१ २७ ५६ २१	२ २२ ३९ ४२	२ १६ १६ ५४	१ ०८ १० ५९	२ २५ ०९ ४६	३ ०३ ५६ ४८	१ २५ ०१ ३८	१ २३ ५० ३५	१० ०४ ५४ ३२	९ १६ ५१ ११	७ २२ १४ ०१	१३
१४	१ २८ ५३ ४२	३ ०६ १७ १५	२ १६ ५६ ०२	१ ०८ ३२ ५५	२ २५ २२ २७	३ ०५ ०७ १५	१ २५ ०९ २६	१ २३ ४७ २४	१० ०४ ५४ ०२	९ १६ ५० १५	७ २२ १२ २५	१४
१५	१ २९ ५१ ०२	३ २० ०६ ४७	२ १७ ३५ ०९	१ ०८ ५९ १७	२ २५ ३५ १०	३ ०६ १७ ३८	१ २५ १७ १३	१ २३ ४४ १३	१० ०४ ५३ २९	९ १६ ४९ १७	७ २२ १० ४९	१५
१६	२ ०० ४८ २१	४ ०४ ०६ ११	२ १८ १४ १४	१ ०९ ३० ०२	२ २५ ४७ ५६	३ ०७ २७ ५६	१ २५ २४ ५९	१ २३ ४१ ०२	१० ०४ ५२ ५३	९ १६ ४८ १८	७ २२ ०९ १४	१६
१७	२ ०१ ४५ ३९	४ १८ १३ १२	२ १८ ५३ १८	१ १० ०५ ०६	२ २६ ०० ४४	३ ०८ ३८ ०९	१ २५ ३२ ४६	१ २३ ३७ ५१	१० ०४ ५२ १४	९ १६ ४७ १७	७ २२ ०७ ३९	१७
१८	२ ०२ ४२ ५७	५ ०२ २५ २८	२ १९ ३२ २०	१ १० ४४ २५	२ २६ १३ ३४	३ ०९ ४८ १७	१ २५ ४० ३२	१ २३ ३४ ४१	१० ०४ ५१ ३२	६ १६ ४६ १५	७ २२ ०६ ०४	१८
१९	२ ०३ ४० १३	५ १६ ४० २९	२ २० ११ २२	१ ११ २७ ५५	२ २६ २६ २६	३ १० ५८ २०	१ २५ ४८ १७	१ २३ ३१ ३०	१० ०४ ५० ४८	९ १६ ४५ ११	७ २२ ०४ २९	१९
२०	२ ०४ ३७ २९	६ ०० ५५ ४१	२ २० ५० २१	१ १२ १५ ३२	२ २६ ३९ २०	६ १२ ०८ १८	१ २५ ५६ ०१	१ २३ २८ १९	१० ०४ ५० ०१	९ १६ ४४ ०६	७ २२ ०२ ५५	२०
२१	२ ०५ ३४ ४४	६ १५ ०८ १८	२ २१ २९ १९	१ १३ ०७ ११	२ २६ ५२ १६	३ १३ १८ १०	१ २६ ०३ ४५	१ २३ २५ ०८	१० ०४ ४९ ११	९ १६ ४३ ००	७ २२ ०१ २२	२१
२२	२ ०६ ३१ ५८	६ २९ १५ २४	२ २२ ०८ १६	१ १४ ०२ ४९	२ २७ ०५ १४	३ १४ २७ ५७	१ २६ ११ २९	१ २३ २१ ५८	१० ०४ ४८ १८	९ १६ ४१ ५२	७ २१ ५९ ४९	२२
२३	२ ०७ २९ १२	७ १३ १३ ५९	२ २२ ४७ १२	१ १५ ०२ २१	२ २७ १८ १४	३ १५ ३७ ३८	१ २६ १९ ११	१ २३ १८ ४७	१० ०४ ४७ २३	९ १६ ४० ४३	७ २१ ५८ १७	२३
२४	२ ०८ २६ २५	७ २७ ०१ ०३	२ २३ २६ ०६	१ १६ ०५ ४४	२ २७ ३१ १६	३ १६ ४७ १४	१ २६ २६ ५३	१ २३ १५ ३६	१० ०४ ४६ २५	९ १६ ३९ ३२	७ २१ ५६ ४५	२४
२५	२ ०९ २३ ३८	८ १० ३४ ०१	२ २४ ०४ ५९	१ १७ १२ ५५	२ २७ ४४ १९	३ १७ ५६ ४४	१ २६ ३४ ३३	१ २३ १२ २५	१० ०४ ४५ २५	९ १६ ३८ २०	७ २१ ५५ १३	२५
२६	२ १० २० ५१	८ २३ ५० ५४	२ २४ ४३ ५१	१ १८ २३ ५१	२ २७ ५७ २४	३ १९ ०६ ०८	१ २६ ४२ १३	१ २३ ०९ १४	१० ०४ ४४ २२	९ १६ ३७ ०७	७ २१ ५३ ४३	२६
२७	२ ११ १८ ०३	९ ०६ ५० ३९	२ २५ २२ ४१	१ १९ ३८ २८	२ २८ १० ३१	३ २० १५ २७	१ २६ ४९ ५२	१ २३ ०६ ०३	१० ०४ ४३ १७	९ १६ ३५ ५३	७ २१ ५२ १३	२७
२८	२ १२ १५ १५	९ १९ ३३ १४	२ २६ ०१ ३१	१ २० ५६ ४४	२ २८ २३ ३९	३ २१ २४ ३९	१ २६ ५७ २९	१ २३ ०२ ५२	१० ०४ ४२ ०९	९ १६ ३४ ३७	७ २१ ५० ४४	२८
२९	२ १३ १२ २७	१० ०१ ५९ ४८	२ २६ ४० १९	१ २२ १८ ३७	२ २८ ३६ ४८	३ २२ ३३ ४६	१ २७ ०५ ०६	१ २२ ५९ ४२	१० ०४ ४० ५८	९ १६ ३३ २१	७ २१ ४९ १५	२९
३०	२ १४ ०९ ३९	१० १४ १२ ३४	२ २७ १९ ०७	१ २३ ४४ ०४	२ २८ ४९ ५९	३ २३ ४२ ४६	१ २७ १२ ४१	१ २२ ५६ ३१	१० ०४ ३९ ४५	९ १६ ३२ ०३	७ २१ ४७ ४७	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जुलाई सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५३' ५४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल (वक्री)	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
जुलाई	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जुलाई
१	२ १५ ०६ ५१	१० २६ १४ ३७	२ २७ ५७ ५३	१ २५ १३ ०३	२ २९ ०३ १२	३ २४ ५१ ४०	१ २७ २० १५	१ २२ ५३ २०	१० ०४ ३८ ३०	९ १६ ३० ४४	७ २१ ४६ २०	१
२	२ १६ ०४ ०४	११ ०८ ०९ ५२	२ २८ ३६ ३८	१ २६ ४५ ३०	२ २९ १६ २५	३ २६ ०० २८	१ २७ २७ ४८	१ २२ ५० ०९	१० ०४ ३७ १२	९ १६ २९ २४	७ २१ ४४ ५४	२
३	२ १७ ०१ १६	११ २० ०२ ४३	२ २९ १५ २३	१ २८ २१ २२	२ २९ २९ ४०	३ २७ ०९ १०	१ २७ ३५ १९	१ २२ ४६ ५९	१० ०४ ३५ ५२	९ १६ २८ ०३	७ २१ ४३ २९	३
४	२ १७ ५८ २९	० ०१ ५७ ५१	२ २९ ५४ ०६	२ ०० ०० ३६	२ २९ ४२ ५६	३ २८ १७ ४५	१ २७ ४२ ४९	१ २२ ४३ ४८	१० ०४ ३४ २९	९ १६ २६ ४०	७ २१ ४२ ०५	४
५	२ १८ ५५ ४१	० १४ ०० ०१	३ ०० ३२ ४९	२ ०१ ४३ ०८	२ २९ ५६ १३	३ २९ २६ १४	१ २७ ५० १८	१ २२ ४० ३७	१० ०४ ३३ ०४	९ १६ २५ १७	७ २१ ४० ४१	५
६	२ १९ ५२ ५४	० २६ १३ ४०	३ ०१ ११ ३०	२ ०३ २८ ५०	३ ०० ०९ ३०	४ ०० ३४ ३६	१ २७ ५७ ४४	१ २२ ३७ २६	१० ०४ ३१ ३७	९ १६ २३ ५३	७ २१ ३९ १९	६
७	२ २० ५० ०८	१ ०८ ४२ ४६	३ ०१ ५० ११	२ ०५ १७ ३८	३ ०० २२ ४९	४ ०१ ४२ ५१	१ २८ ०५ १०	१ २२ ३४ १५	१० ०४ ३० ०७	९ १६ २२ २७	७ २१ ३७ ५७	७
८	२ २१ ४७ २१	१ २१ ३० २५	३ ०२ २८ ५१	२ ०७ ०९ २२	३ ०० ३६ ०९	४ ०२ ५१ ००	१ २८ १२ ३३	१ २२ ३१ ०५	१० ०४ २८ ३५	९ १६ २१ ०१	७ २१ ३६ ३७	८
९	२ २२ ४४ ३५	२ ०४ ३८ ३२	३ ०३ ०७ ३०	२ ०९ ०३ ५३	३ ०० ४९ २९	४ ०३ ५९ ०१	१ २८ १९ ५५	१ २२ २७ ५४	१० ०४ २७ ०१	९ १६ १९ ३४	७ २१ ३५ १७	९
१०	२ २३ ४१ ४९	२ १८ ०७ ३०	३ ०३ ४६ ०८	२ ११ ०१ ०१	३ ०१ ०२ ५१	४ ०५ ०६ ५५	१ २८ २७ १५	१ २२ २४ ४३	१० ०४ २५ २५	९ १६ १८ ०६	७ २१ ३३ ५९	१०
११	२ २४ ३९ ०३	३ ०१ ५५ ५८	३ ०४ २४ ४५	२ १३ ०० ३१	३ ०१ १६ १२	४ ०६ १४ ४२	१ २८ ३४ ३३	१ २२ २१ ३२	१० ०४ २३ ४७	९ १६ १६ ३७	७ २१ ३२ ४२	११
१२	२ २५ ३६ १७	३ १६ ०० ५०	३ ०५ ०३ २१	२ १५ ०२ १०	३ ०१ २९ ३५	४ ०७ २२ २०	१ २८ ४१ ४९	१ २२ १८ २१	१० ०४ २२ ०६	९ १६ १५ ०८	७ २१ ३१ २६	१२
१३	२ २६ ३३ ३२	४ ०० १७ ४०	३ ०५ ४१ ५६	२ १७ ०५ ४२	३ ०१ ४२ ५७	४ ०८ २९ ५१	१ २८ ४९ ०३	१ २२ १५ १०	१० ०४ २० २४	९ १६ १३ ३८	७ २१ ३० ११	१३
१४	२ २७ ३० ४६	४ १४ ४१ १३	३ ०६ २० ३१	२ १९ १० ५०	३ ०१ ५६ २१	४ ०९ ३७ १४	१ २८ ५६ १५	१ २२ १२ ००	१० ०४ १८ ३९	९ १६ १२ ०६	७ २१ २८ ५७	१४
१५	२ २८ २८ ०१	४ २९ ०६ १३	३ ०६ ५९ ०४	२ २२ १७ १५	३ ०२ ०९ ४४	४ १० ४४ २९	१ २९ ०३ २४	१ २२ ०८ ४९	१० ०४ १६ ५३	९ १६ १० ३५	७ २१ २७ ४५	१५
१६	२ २९ २५ १६	५ १३ २८ ०३	३ ०७ ३७ ३७	२ २३ २४ ४०	३ ०२ २३ ०८	४ ११ ५१ ३४	१ २९ १० ३२	१ २२ ०५ ३८	१० ०४ १५ ०४	९ १६ ०९ ०२	७ २१ २६ ३४	१६
१७	३ ०० २२ ३०	५ २७ ४३ ०९	३ ०८ १६ ०८	२ २५ ३२ ४६	३ ०२ ३६ ३२	४ १२ ५८ ३१	१ २९ १७ ३७	१ २२ ०२ २७	१० ०४ १३ १४	९ १६ ०७ २९	७ २१ २५ २४	१७
१८	३ ०१ १९ ४५	६ ११ ४९ १०	३ ०८ ५४ ३९	२ २७ ४१ १५	३ ०२ ४९ ५५	४ १४ ०५ १९	१ २९ २४ ३९	१ २१ ५९ १७	१० ०४ ११ २२	९ १६ ०५ ५६	७ २१ २४ १५	१८
१९	३ ०२ १७ ००	६ २५ ४४ ४७	३ ०९ ३३ ०८	२ २९ ४९ ४९	३ ०३ ०३ १९	४ १५ ११ ५७	१ २९ ३१ ३९	१ २१ ५६ ०६	१० ०४ ०९ २८	९ १६ ०४ २२	७ २१ २३ ०८	१९
२०	३ ०३ १४ १५	७ ०९ २९ २३	३ १० ११ ३७	३ ०१ ५८ १२	३ ०३ १६ ४३	४ १६ १८ २६	१ २९ ३८ ३७	१ २१ ५२ ५५	१० ०४ ०७ ३२	९ १६ ०२ ४७	७ २१ २२ ०२	२०
२१	३ ०४ ११ ३०	७ २३ ०२ ४१	३ १० ५० ०५	३ ०४ ०६ ०९	३ ०३ ३० ०७	४ १७ २४ ४४	१ २९ ४५ ३२	१ २१ ४९ ४४	१० ०४ ०५ ३५	९ १६ ०१ १२	७ २१ २० ५८	२१
२२	३ ०५ ०८ ४५	८ ०६ २४ २८	३ ११ २८ ३२	३ ०६ १३ २७	३ ०३ ४३ ३१	४ १८ ३० ५२	१ २९ ५२ २५	१ २१ ४६ ३३	१० ०४ ०३ ३६	९ १५ ५९ ३६	७ २१ १९ ५५	२२
२३	३ ०६ ०६ ०१	८ १९ ३४ २२	३ १२ ०६ ५८	३ ०८ १९ ५३	३ ०३ ५६ ५४	४ १९ ३६ ५०	१ २९ ५९ १५	१ २१ ४३ २२	१० ०४ ०१ ३६	९ १५ ५८ ००	७ २१ १८ ५३	२३
२४	३ ०७ ०३ १८	९ ०२ ३१ ५६	३ १२ ४५ २४	३ १० २५ १७	३ ०४ १० १७	४ २० ४२ ३७	२ ०० ०६ ०२	१ २१ ४० ११	१० ०३ ५९ ३४	९ १५ ५६ २४	७ २१ १७ ५३	२४
२५	३ ०८ ०० ३५	९ १५ १६ ४७	३ १३ २३ ४९	३ १२ २९ ३१	३ ०४ २३ ४०	४ २१ ४८ १४	२ ०० १२ ४७	१ २१ ३७ ०१	१० ०३ ५७ ३०	९ १५ ५४ ४८	७ २१ १६ ५५	२५
२६	३ ०८ ५७ ५२	९ २७ ४८ ५०	३ १४ ०२ १३	३ १४ ३२ २७	३ ०४ ३७ ०२	४ २२ ५३ ३९	२ ०० १९ २८	१ २१ ३३ ५०	१० ०३ ५५ २६	९ १५ ५३ ११	७ २१ १५ ५८	२६
२७	३ ०९ ५५ ११	१० १० ०८ ३५	३ १४ ४० ३६	३ १६ ३४ ००	३ ०४ ५० २४	४ २३ ५८ ५३	२ ०० २६ ०७	१ २१ ३० ३९	१० ०३ ५३ १९	९ १५ ५१ ३४	७ २१ १५ ०२	२७
२८	३ १० ५२ ३०	१० २२ १७ १६	३ १५ १८ ५९	३ १८ ३४ ०५	३ ०५ ०३ ४५	४ २५ ०३ ५५	२ ०० ३२ ४३	१ २१ २७ २८	१० ०३ ५१ १२	९ १५ ४९ ५६	७ २१ १४ ०८	२८
२९	३ ११ ४९ ५०	११ ०४ १६ ५९	३ १५ ५७ २२	३ २० ३२ ३९	३ ०५ १७ ०६	४ २६ ०८ ४५	२ ०० ३९ १६	१ २१ २४ १८	१० ०३ ४९ ०३	९ १५ ४८ १९	७ २१ १३ १६	२९
३०	३ १२ ४७ ११	११ १६ १० ३९	३ १६ ३५ ४४	३ २२ २९ ३९	३ ०५ ३० २७	४ २७ १३ २४	२ ०० ४५ ४५	१ २१ २१ ०७	१० ०३ ४६ ५२	९ १५ ४६ ४१	७ २१ १२ २५	३०
३१	३ १३ ४४ ३४	११ २८ ०२ ०३	३ १७ १४ ०५	३ २४ २५ ०४	३ ०५ ४३ ४६	४ २८ १७ ५०	२ ०० ५२ १२	१ २१ १७ ५६	१० ०३ ४४ ४१	९ १५ ४५ ०३	७ २१ ११ ३६	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगस्त सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५३' १८"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो (वक्री)	ता.
अगस्त	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अगस्त
१	३ १४ ४१ ५७	० ०९ ५५ ३५	३ १७ ५२ २६	३ २६ १८ ५३	३ ०५ ५७ ०५	४ २९ २२ ०३	२ ०० ५८ ३५	१ २१ १४ ४६	१० ०३ ४२ २८	९ १५ ४३ २५	७ २१ १० ४८	१
२	३ १५ ३९ २१	० २१ ५६ १०	३ १८ ३० ४६	३ २८ ११ ०४	३ ०६ १० २३	५ ०० २६ ०४	२ ०१ ०४ ५५	१ २१ ११ ३५	१० ०३ ४० १५	९ १५ ४१ ४७	७ २१ १० ०२	२
३	३ १६ ३६ ४६	१ ०४ ०८ ५२	३ १९ ०९ ०६	४ ०० ०१ ३७	३ ०६ २३ ३९	५ ०१ २९ ५१	२ ०१ ११ १२	१ २१ ०८ २४	१० ०३ ३८ ००	९ १५ ४० ०९	७ २१ ०९ १८	३
४	३ १७ ३४ १३	१ १६ ३८ ३८	३ १९ ४७ २५	४ ०१ ५० ३४	३ ०६ ३६ ५५	५ ०२ ३३ २५	२ ०१ १७ २५	१ २१ ०५ १३	१० ०३ ३५ ४४	९ १५ ३८ ३१	७ २१ ०८ ३५	४
५	३ १८ ३१ ४१	१ २९ २९ ४८	३ २० २५ ४४	४ ०३ ३७ ५३	३ ०६ ५० १०	५ ०३ ३६ ४५	२ ०१ २३ ३५	१ २१ ०२ ०२	१० ०३ ३३ २७	९ १५ ३६ ५३	७ २१ ०७ ५४	५
६	३ १९ २९ १०	२ १२ ४५ ३४	३ २१ ०४ ०३	४ ०५ २३ ३५	३ ०७ ०३ २४	५ ०४ ३९ ५०	२ ०१ २९ ४१	१ २० ५८ ५१	१० ०३ ३१ १०	९ १५ ३५ १५	७ २१ ०७ १५	६
७	३ २० २६ ४०	२ २६ २७ २०	३ २१ ४२ २१	४ ०७ ०७ ४२	३ ०७ १६ ३७	५ ०५ ४२ ४१	२ ०१ ३५ ४४	१ २० ५५ ४१	१० ०३ २८ ५१	९ १५ ३३ ३७	७ २१ ०६ ३८	७
८	३ २१ २४ ११	३ १० ३४ ०६	३ २२ २० ३९	४ ०८ ५० १३	३ ०७ २९ ४८	५ ०६ ४५ १७	२ ०१ ४१ ४३	१ २० ५२ ३०	१० ०३ २६ ३२	९ १५ ३२ ००	७ २१ ०६ ०२	८
९	३ २२ २१ ४३	३ २५ ०२ ०६	३ २२ ५८ ५७	४ १० ३१ १०	३ ०७ ४२ ५८	५ ०७ ४७ ३७	२ ०१ ४७ ३८	१ २० ४९ १९	१० ०३ २४ १२	९ १५ ३० २२	७ २१ ०५ २८	९
१०	३ २३ १९ १७	४ ०९ ४५ ०३	३ २३ ३७ १४	४ १२ १० ३३	३ ०७ ५६ ०६	५ ०८ ४९ ४१	२ ०१ ५३ ३०	१ २० ४६ ०८	१० ०३ २१ ५१	९ १५ २८ ४५	७ २१ ०४ ५६	१०
११	३ २४ १६ ५१	४ २४ ३४ ५६	३ २४ १५ ३०	४ १३ ४८ २२	३ ०८ ०९ १३	५ ०९ ५१ २९	२ ०१ ५९ १७	१ २० ४२ ५८	१० ०३ १९ ३०	९ १५ २७ ०८	७ २१ ०४ २६	११
१२	३ २५ १४ २६	५ ०९ २३ २१	३ २४ ५३ ४६	४ १५ २४ ३७	३ ०८ २२ १८	५ १० ५२ ५९	२ ०२ ०५ ०१	१ २० ३९ ४७	१० ०३ १७ ०९	९ १५ २५ ३२	७ २१ ०३ ५८	१२
१३	३ २६ १२ ०३	५ २४ ०२ ५१	३ २५ ३२ ०१	४ १६ ५९ १९	३ ०८ ३५ २२	५ ११ ५४ १२	२ ०२ १० ४०	१ २० ३६ ३६	१० ०३ १४ ४६	९ १५ २३ ५६	७ २१ ०३ ३१	१३
१४	३ २७ ०९ ४०	६ ०८ २७ ५८	३ २६ १० १६	४ १८ ३२ २८	३ ०८ ४८ २३	५ १२ ५५ ०६	२ ०२ १६ १५	१ २० ३३ २५	१० ०३ १२ २४	९ १५ २२ २०	७ २१ ०३ ०६	१४
१५	३ २८ ०७ १८	६ २२ ३५ ४०	३ २६ ४८ ३१	४ २० ०४ ०३	३ ०९ ०१ २३	५ १३ ५५ ४१	२ ०२ २१ ४६	१ २० ३० १५	१० ०३ १० ०१	९ १५ २० ४५	७ २१ ०२ ४३	१५
१६	३ २९ ०४ ५७	७ ०६ २५ ०७	३ २७ २६ ४५	४ २१ ३४ ०४	३ ०९ १४ २१	५ १४ ५५ ५६	२ ०२ २७ १३	१ २० २७ ०४	१० ०३ ०७ ३८	९ १५ १९ १०	७ २१ ०२ २२	१६
१७	४ ०० ०२ ३७	७ १९ ५७ ०२	३ २८ ०४ ५९	४ २३ ०२ ३१	३ ०९ २७ १७	५ १५ ५५ ५०	२ ०२ ३२ ३६	१ २० २३ ५३	१० ०३ ०५ १४	९ १५ १७ ३६	७ २१ ०२ ०३	१७
१८	४ ०१ ०० १८	८ ०३ १३ ०३	३ २८ ४३ १२	४ २४ २९ २३	३ ०९ ४० ११	५ १६ ५५ २४	२ ०२ ३७ ५४	१ २० २० ४२	१० ०३ ०२ ५१	९ १५ १६ ०२	७ २१ ०१ ४६	१८
१९	४ ०१ ५८ ००	८ १६ १५ ०१	३ २९ २१ २५	४ २५ ५४ ३८	३ ०९ ५३ ०३	५ १७ ५४ ३५	२ ०२ ४३ ०८	१ २० १७ ३१	१० ०३ ०० २७	९ १५ १४ २९	७ २१ ०१ ३१	१९
२०	४ ०२ ५५ ४३	८ २९ ०४ ३८	३ २९ ५९ ३७	४ २७ १८ १५	३ १० ०५ ५२	५ १८ ५३ २४	२ ०२ ४८ १८	१ २० १४ २१	१० ०२ ५८ ०३	९ १५ १२ ५६	७ २१ ०१ १७	२०
२१	४ ०३ ५३ २७	९ ११ ४३ १२	४ ०० ३७ ४९	४ २८ ४० १३	३ १० १८ ४०	५ १९ ५१ ४९	२ ०२ ५३ २३	१ २० ११ १०	१० ०२ ५५ ३९	९ १५ ११ २५	७ २१ ०१ ०६	२१
२२	४ ०४ ५१ १३	९ २४ ११ ३८	४ ०१ १६ ०१	५ ०० ०० २९	३ १० ३१ २४	५ २० ४९ ५१	२ ०२ ५८ २४	१ २० ०७ ५९	१० ०२ ५३ १६	९ १५ ०९ ५३	७ २१ ०० ५६	२२
२३	४ ०५ ४९ ००	१० ०६ ३० ३७	४ ०१ ५४ १३	५ ०१ १९ ०२	३ १० ४४ ०७	५ २१ ४७ २७	२ ०३ ०३ २०	१ २० ०४ ४८	१० ०२ ५० ५२	९ १५ ०८ २३	७ २१ ०० ४९	२३
२४	४ ०६ ४६ ४९	१० १८ ४० ४७	४ ०२ ३२ २४	५ ०२ ३५ ४८	३ १० ५६ ४७	५ २२ ४४ ३८	२ ०३ ०८ ११	१ २० ०१ ३८	१० ०२ ४८ २९	९ १५ ०६ ५३	७ २१ ०० ४३	२४
२५	४ ०७ ४४ ३९	११ ०० ४३ ००	४ ०३ १० ३५	५ ०३ ५० ४३	३ ११ ०९ २५	५ २३ ४१ २३	२ ०३ १२ ५७	१ १९ ५८ २७	१० ०२ ४६ ०६	९ १५ ०५ २४	७ २१ ०० ३९	२५
२६	४ ०८ ४२ ३०	११ १२ ३८ ४१	४ ०३ ४८ ४६	५ ०५ ०३ ४५	३ ११ २२ ००	५ २४ ३७ ४०	२ ०३ १७ ३९	१ १९ ५५ १६	१० ०२ ४३ ४३	९ १५ ०३ ५६	७ २१ ००३७मा.	२६
२७	४ ०९ ४० २३	११ २४ २९ ५५	४ ०४ २६ ५७	५ ०६ १४ ४९	३ ११ ३४ ३२	५ २५ ३३ २९	२ ०३ २२ १६	१ १९ ५२ ०६	१० ०२ ४१ २१	९ १५ ०२ २९	७ २१ ०० ३७	२७
२८	४ १० ३८ १८	० ०६ १९ ३५	४ ०५ ०५ ०८	५ ०७ २३ ४९	३ ११ ४७ ०१	५ २६ २८ ४९	२ ०३ २६ ४८	१ १९ ४८ ५५	४० ०२ ३८ ५८	९ १५ ०१ ०३	७ २१ ०० ३९	२८
२९	४ ११ ३६ १५	० १८ ११ २३	४ ०५ ४३ १८	५ ०८ ३० ४१	३ ११ ५९ २८	५ २७ २३ ३९	२ ०३ ३१ १५	१ १९ ४५ ४४	१० ०२ ३६ ३७	९ १४ ५९ ३७	७ २१ ०० ४३	२९
३०	४ १२ ३४ १३	१ ०० ०९ ४७	४ ०६ २१ २९	५ ०९ ३५ १८	३ १२ ११ ५२	५ २८ १७ ५८	२ ०३ ३५ ३७	१ १९ ४२ ३४	१० ०२ ३४ १६	९ १४ ५८ १३	७ २१ ०० ४९	३०
३१	४ १३ ३२ १४	१ १२ १९ ४५	४ ०६ ५९ ४०	५ १० ३७ ३४	३ १२ २४ १२	५ २९ ११ ४५	२ ०३ ३९ ५४	१ १९ ३९ २३	१० ०२ ३१ ५५	९ १४ ५६ ५०	७ २१ ०० ५७	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५३' २३"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
सितं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	सितं.
१	४ १४ ३० १६	१ २४ ४६ ३२	४ ०७ ३७ ५०	५ ११ ३७ २१	३ १२ ३६ ३०	६ ०० ०४ ५८	२ ०३ ४४ ०६	१ १९ ३६ १२	१० ०२ २९ ३५	९ १४ ५५ २७	७ २१ ०१ ०७	१
२	४ १५ २८ २०	२ ०७ ३५ १४	४ ०८ १६ ०१	५ १२ ३४ २९	३ १२ ४८ ४५	६ ०० ५७ ३७	२ ०३ ४८ १२	१ १९ ३३ ०१	१० ०२ २७ १६	९ १४ ५४ ०६	७ २१ ०१ १९	२
३	४ १६ २६ २६	२ २० ५० ०८	४ ०८ ५४ ११	५ १३ २८ ५०	३ १३ ०० ५६	६ ०१ ४९ ४१	२ ०३ ५२ १४	१ १९ २९ ५०	१० ०२ २४ ५७	९ १४ ५२ ४५	७ २१ ०१ ३३	३
४	४ १७ २४ ३४	३ ०४ ३४ ०१	४ ०९ ३२ २२	५ १४ २० १४	३ १३ १३ ०४	६ ०२ ४१ ०८	२ ०३ ५६ १०	१ १९ २६ ३९	१० ०२ २२ ४०	९ १४ ५१ २६	७ २१ ०१ ४९	४
५	४ १८ २२ ४४	३ १८ ४७ ०८	४ १० १० ३३	५ १५ ०८ २८	३ १३ २५ ०८	६ ०३ ३१ ५७	२ ०४ ०० ००	१ १९ २३ २९	१० ०२ २० २३	९ १४ ५० ०८	७ २१ ०२ ०६	५
६	४ १९ २० ५५	४ ०३ २६ २८	४ १० ४८ ४३	५ १५ ५३ २०	३ १३ ३७ ०९	६ ०४ २२ ०६	२ ०४ ०३ ४५	१ १९ २० १८	१० ०२ १८ ०७	९ १४ ४८ ५१	७ २१ ०२ २६	६
७	४ २० १९ ०९	४ १८ २५ ३५	४ ११ २६ ५४	८ १६ ३४ ३५	३ १३ ४९ ०६	६ ०५ ११ ३४	२ ०४ ०७ २५	१ १९ १७ ०७	१० ०२ १५ ५२	९ १४ ४७ ३५	७ २१ ०२ ४८	७
८	४ २१ १७ २४	५ ०३ ३५ १३	४ १२ ०५ ०४	५ १७ १२ ००	३ १४ ०१ ००	६ ०६ ०० १९	२ ०४ १० ५९	१ १९ १३ ५७	१० ०२ १३ ३८	९ १४ ४६ २१	७ २१ ०३ १२	८
९	४ २२ १५ ४१	५ १८ ४४ ४६	४ १२ ४३ १४	५ १७ ४५ १७	३ १४ १२ ४९	६ ०६ ४८ २०	२ ०४ १४ २७	१ १९ १० ४६	१० ०२ ११ २५	७ १४ ४५ ०८	७ २१ ०३ ३७	९
१०	४ २३ १३ ५९	६ ०३ ४४ ०७	४ १३ २१ २५	५ १८ १४ ०९	३ १४ २४ ३५	६ ०७ ३५ ३४	२ ०४ १७ ४९	१ १९ ०७ ३५	१० ०२ ०९ १४	९ १४ ४३ ५६	७ २१ ०४ ०५	१०
११	४ २४ १२ १९	६ १८ २५ २१	४ १३ ५९ ३५	५ १८ ३८ १९	३ १४ ३६ १७	६ ०८ २२ ००	२ ०४ २१ ०६	१ १९ ०४ २५	१० ०२ ०७ ०३	९ १४ ४२ ४५	७ २१ ०४ ३४	११
१२	४ २५ १० ४१	७ ०२ ४३ ४४	४ १४ ३७ ४५	५ १८ ५७ २५	३ १४ ४७ ५५	६ ०९ ०७ ३५	२ ०४ २४ १७	१ १९ ०१ १४	१० ०२ ०४ ५४	९ १४ ४१ ३६	७ २१ ०५ ०६	१२
१३	४ २६ ०९ ०४	७ १६ ३७ ३८	४ १५ १५ ५५	५ १९ ११ ०९	३ १४ ५९ २८	६ ०९ ५२ १७	२ ०४ २७ २२	१ १८ ५८ ०३	१० ०२ ०२ ४७	९ १४ ४० २८	७ २१ ०५ ४०	१३
१४	४ २७ ०७ २९	८ ०० ०७ ५९	४ १५ ५४ ०५	५ १९ १९ १०	३ १५ १० ५७	६ १० ३६ ०५	२ ०४ ३० २१	१ १८ ५४ ५२	१० ०२ ०० ४०	९ १४ ३९ २२	७ २१ ०६ १५	१४
१५	४ २८ ०५ ५५	८ १३ १७ १३	४ १६ ३२ १५	५ १९ २१ ०१७	३ १५ २२ २२	६ ११ १८ ५५	२ ०४ ३३ १५	१ १८ ५१ ४१	१० ०१ ५८ ३६	९ १४ ३८ १७	७ २१ ०६ ५३	१५
१६	४ २९ ०४ २३	८ २६ ०८ २८	४ १७ १० २४	५ १९ १६ ४७	३ १५ ३३ ४२	६ १२ ०० ४६	२ ०४ ३६ ०२	१ १८ ४८ ३१	१० ०१ ५६ ३२	९ १४ ३७ १४	७ २१ ०७ ३२	१६
१७	५ ०० ०२ ५३	९ ०८ ४४ ५४	४ १७ ४८ ३४	५ १९ ०५ ५७	३ १५ ४४ ५८	६ १२ ४१ ३५	२ ०४ ३८ ४३	१ १८ ४५ २०	१० ०१ ५४ ३०	९ १४ ३६ १२	७ २१ ०८ १३	१७
१८	५ ०१ ०१ २४	९ २१ ०९ २२	४ १८ २६ ४४	५ १८ ४७ ५७	३ १५ ५६ ०९	६ १३ २१ २०	२ ०४ ४१ १९	१ १८ ४२ ०९	१० ०१ ५२ ३०	९ १४ ३५ ११	७ २१ ०८ ५७	१८
१९	५ ०१ ५९ ५७	१० ०३ २४ १७	४ १९ ०४ ५४	५ १८ २३ ०९	३ १६ ०७ १६	६ १३ ५९ ५७	२ ०४ ४३ ४८	१ १८ ३८ ५८	१० ०१ ५० ३२	९ १४ ३४ १२	७ २१ ०९ ४२	१९
२०	५ ०२ ५८ ३२	१० १५ ३१ ३२	४ १९ ४३ ०४	५ १७ ५१ २०	३ १६ १८ १७	६ १४ ३७ २५	२ ०४ ४६ ११	१ १८ ३५ ४८	१० ०१ ४८ ३५	९ १४ ३३ १५	७ २१ १० २९	२०
२१	५ ०३ ५७ ०८	१० २७ ३२ ३१	४ २० २१ १४	५ १७ १२ ३८	३ १६ २९ १४	६ १५ १३ ४०	२ ०४ ४८ २८	१ १८ ३२ ३७	१० ०१ ४६ ४०	९ १४ ३२ १९	७ २१ ११ १८	२१
२२	५ ०४ ५५ ४७	११ ०९ २८ ३०	४ २० ५९ २४	५ १६ २७ १८	३ १६ ४० ०६	६ १५ ४८ ४०	२ ०४ ५० ३९	१ १८ २९ २६	१० ०१ ४४ ४७	९ १४ ३१ २५	७ २१ १२ ०९	२२
२३	५ ०५ ५४ २७	११ २१ २० ४४	४ २१ ३७ ३४	५ १५ ३५ ५१	३ १६ ५० ५३	६ १६ २२ २१	२ ०४ ५२ ४३	१ १८ २६ १६	१० ०१ ४२ ५५	९ १४ ३० ३३	७ २१ १३ ०१	२३
२४	५ ०६ ५३ १०	० ०३ १० ४९	४ २२ १५ ४४	५ १४ ३८ ५९	३ १७ ०१ ३५	६ १६ ५४ ४२	२ ०४ ५४ ४२	१ १८ २३ ०५	१० ०१ ४१ ०५	९ १४ २९ ४२	७ २१ १३ ५६	२४
२५	५ ०७ ५१ ५४	० १५ ०० ५२	४ २२ ५३ ५५	५ १३ ३७ ४०	३ १७ १२ ११	६ १७ २५ ३८	२ ०४ ५६ ३४	१ १८ १९ ५४	१० ०१ ३९ १८	९ १७ २८ ५२	७ २१ १४ ५२	२५
२६	५ ०८ ५० ४१	० २६ ५३ ४२	४ २३ ३२ ०६	५ १२ ३३ ०४	३ १७ २२ ४३	६ १७ ५५ ०६	२ ०४ ५८ १९	१ १८ १६ ४४	१० ०१ ३७ ३२	९ १४ २८ ०५	७ २१ १५ ५१	२६
२७	५ ०९ ४९ ३०	१ ०८ ५२ ५०	४ २४ १० १७	५ ११ २६ ३७	३ १७ ३३ ०८	६ १८ २३ ०४	२ ०४ ५९ ५८	१ १८ १३ ३३	१० ०१ ३५ ४८	९ १४ २७ १९	७ २१ १६ ५१	२७
२८	५ १० ४८ २१	१ २१ ०२ २५	४ २४ ४८ २९	५ १० १९ ५५	३ १७ ४३ २९	६ १८ ४९ २८	२ ०५ ०१ ३१	१ १८ १० २२	१० ०१ ३४ ०७	९ १४ २६ ३५	७ २१ १७ ५३	२८
२९	५ ११ ४७ १४	२ ०३ २७ ०९	४ २५ २६ ४०	५ ०९ १४ ३९	३ १७ ५३ ४३	६ १९ १४ १४	२ ०५ ०२ ५८	१ १८ ०७ ११	१० ०१ ३२ २७	९ १४ २५ ५३	७ २१ १८ ५६	२९
३०	५ १२ ४६ १०	२ १६ ११ ५३	४ २६ ०४ ५२	५ ०८ १२ ३३	३ १८ ०३ ५२	६ १९ ३७ १९	२ ०५ ०४ १७	१ १८ ०४ ००	१० ०१ ३० ५०	९ १४ २५ १२	७ २१ २० ०२	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्टूबर सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।२६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध (वक्री)	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून (वक्री)	प्लूटो	ता.
अक्टू.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	अक्टू.
१	५ १३ ४५ ०८	२ २९ २१ १३	४ २६ ४३ ०५	५ ०७ १५ १९	३ १८ १३ ५५	६ १९ ५८ ३९	२ ०५ ०५ ३१	१ १८ ०० ५०	१० ०१ २९ १४	९ १४ २४ ३३	७ २१ २१ ०९	१
२	५ १४ ४४ ०८	३ १२ ५८ ४१	४ २७ २१ १७	५ ०६ २४ ३२	३ १८ २३ ५२	६ २० १८ १२	२ ०५ ०६ ३८	१ १७ ५७ ३९	१० ०१ २७ ४१	९ १४ २३ ५६	७ २१ २२ १८	२
३	५ १५ ४३ १०	३ २७ ०५ ५१	४ २७ ५९ ३०	५ ०५ ४१ ३३	३ १८ ३३ ४३	६ २० ३५ ५३	२ ०५ ०७ ३८	१ १७ ५४ २८	१० ०१ २६ ११	९ १४ २३ २१	७ २१ २३ २९	३
४	५ १६ ४२ १५	४ ११ ४१ २२	४ २८ ३७ ४३	५ ०५ ०७ ३०	३ १८ ४३ २८	६ २० ५१ ३८	२ ०५ ०८ ३१	१ १७ ५१ १७	१० ०१ २४ ४२	९ १४ २२ ४८	७ २१ २४ ४२	४
५	५ १७ ४१ २२	४ २६ ४० २०	४ २९ १५ ५७	५ ०४ ४३ १३	३ १८ ५३ ०७	६ २१ ०५ २५	२ ०५ ०९ १८	१ १७ ४८ ०७	१० ०१ २३ १६	९ १४ २२ १६	७ २१ २५ ५६	५
६	५ १८ ४० ३१	५ ११ ५४ ३०	४ २९ ५४ ११	५ ०४ २९ १७मा.	३ १९ ०२ ३९	६ २१ १७ ०८	२ ०५ ०९ ५८	१ १७ ४४ ५६	१० ०१ २१ ५२	९ १४ २१ ४६	७ २१ २७ १२	६
७	५ १९ ३९ ४२	५ २७ १३ १२	५ ०० ३२ २४	५ ०४ २५ ५७	३ १९ १२ ०४	६ २१ २६ ४६	२ ०५ १० ३२	१ १७ ४१ ४५	१० ०१ २० ३१	९ १४ २१ १९	७ २१ २८ ३०	७
८	५ २० ३८ ५६	६ १२ २५ १५	५ ०१ १० ३९	५ ०४ ३३ १६	३ १९ २१ २३	६ २१ ३४ १३	२ ०५ १० ५९	१ १७ ३८ ३५	१० ०१ १९ १२	९ १४ २० ५३	७ २१ २९ ५०	८
९	५ २१ ३८ ११	६ २७ २० ४८	५ ०१ ४८ ५३	५ ०४ ५० ५९	३ १९ ३० ३६	६ २१ ३९ २८	२ ०५ ११ १९	१ १७ ३५ २४	१० ०१ १७ ५६	९ १४ २० २९	७ २१ ३१ ११	९
१०	५ २२ ३७ २८	७ ११ ५२ ५३	५ ०२ २७ ०७	५ ०५ १८ ४२	३ १९ ३९ ४१	६ २१ ४२ २६व.	२ ०५ ११ ३२	१ १७ ३२ १३	१० ०१ १६ ४२	९ १४ २० ०७	७ २१ ३२ ३४	१०
११	५ २३ ३६ ४६	७ २५ ५७ ५९	५ ०३ ०५ २२	५ ०५ ५५ ५३	३ १९ ४८ ३९	६ २१ ४३ ०४	२ ०५ ११ ३९व.	१ १७ २९ ०२	१० ०१ १५ ३१	९ १४ १९ ४७	७ २१ ३३ ५८	११
१२	५ २४ ३६ ०७	८ ०९ ३५ ४४	५ ०३ ४३ ३७	५ ०६ ४१ ५२	३ १९ ५७ ३०	६ २१ ४१ २१	२ ०५ ११ ३९	१ १७ २५ ५२	१० ०१ १४ २२	९ १४ १९ २९	७ २१ ३५ २४	१२
१३	५ २५ ३५ २९	८ २२ ४८ ०४	५ ०४ २१ ५२	५ ०७ ३५ ५४	३ २० ०६ १५	६ २१ ३७ १५	२ ०५ ११ ३२	१ १७ २२ ४१	१० ०१ १३ १६	९ १४ १९ १३	७ २१ ३६ ५२	१३
१४	५ २६ ३४ ५३	९ ०५ ३८ १६	५ ०५ ०० ०७	५ ०८ ३७ १२	३ २० १४ ५१	६ २१ ३० ४३	२ ०५ ११ १९	१ १७ १९ ३०	१० ०१ १२ १३	९ १४ १८ ५९	७ २१ ३८ २१	१४
१५	५ २७ ३४ १९	९ १८ १० १०	५ ०५ ३८ २२	५ ०९ ४५ ००	३ २० २३ २१	६ २१ २१ ४५	२ ०५ १० ५९	१ १७ १६ १९	१० ०१ ११ १३	९ १४ १८ ४६	७ २१ ३९ ५२	१५
१६	५ २८ ३३ ४७	१० ०० २७ ४३	५ ०६ १६ ३८	५ १० ५८ ३१	३ २० ३१ ४३	६ २१ १० २१	२ ०५ १० ३३	१ १७ १३ ०८	१० ०१ १० १५	९ १४ १८ ३६	७ २१ ४१ २४	१६
१७	५ २९ ३३ १६	१० १२ ३४ ३४	५ ०६ ५४ ५४	५ १२ १७ ०२	३ २० ३९ ५७	६ २० ५६ ३२	२ ०५ ०९ ५९	१ १७ ०९ ५८	१० ०१ ०९ २०	९ १४ १८ २८	७ २१ ४२ ५८	१७
१८	६ ०० ३२ ४७	१० २४ ३३ ५७	५ ०७ ३३ १०	५ १३ ३९ ५०	३ २० ४८ ०४	६ २० ४० २१	२ ०५ ०९ २०	१ १७ ०६ ४७	१० ०१ ०८ २८	९ १४ १८ २२	७ २१ ४४ ३३	१८
१९	६ ०१ ३२ २०	११ ०६ २८ ३०	५ ०८ ११ २६	५ १५ ०६ १६	३ २० ५६ ०३	६ २० २१ ४८	२ ०५ ०८ ३३	१ १७ ०३ ३६	१० ०१ ०७ ३८	९ १४ १८ १८	७ २१ ४६ १०	१९
२०	६ ०२ ३१ ५५	११ १८ २० २५	५ ०८ ४९ ४३	५ १६ ३५ ४७	३ २१ ०३ ५४	६ २० ०० ५९	२ ०५ ०७ ४०	१ १७ ०० २६	१० ०१ ०६ ५१	९ १४ १८ १६	७ २१ ४७ ४८	२०
२१	६ ०३ ३१ ३२	० ०० ११ २८	५ ०९ २८ ००	५ १८ ०७ ५१	३ २१ ११ ३७	६ १९ ३७ ५८	२ ०५ ०६ ४१	१ १६ ५७ १५	१० ०१ ०६ ०८	९ १४ १८ १५	७ २१ ४९ २८	२१
२२	६ ०४ ३१ ११	० १२ ०३ २०	५ १० ०६ १७	५ १९ ४१ ५९	३ २१ १९ १२	६ १९ १२ ५१	२ ०५ ०५ ३५	१ १६ ५४ ०४	१० ०१ ०५ २७	९ १४ १८ १७	७ २१ ५१ ०९	२२
२३	६ ०५ ३० ५२	० २३ ५७ ४५	५ १० ४४ ३५	५ २१ १७ ४८	३ २१ २६ ३९	६ १८ ४५ ४५	२ ०५ ०४ २२	१ १६ ५० ५४	१० ०१ ०४ ४८	९ १४ १८ २१मा.	७ २१ ५२ ५२	२३
२४	६ ०६ ३० ३५	१ ०५ ५६ ४६	५ ११ २२ ५३	५ २२ ५४ ५६	३ २१ ३३ ५८	६ १८ १६ ४९	२ ०५ ०३ ०३	१ १६ ४७ ४३	१० ०१ ०४ १३	९ १४ १८ २७	७ २१ ५४ ३५	२४
२५	६ ०७ ३० २०	१ १८ ०२ ४६	५ १२ ०१ १२	५ २४ ३३ ०६	३ २१ ४१ ०८	६ १७ ४६ १३	२ ०५ ०१ ३७	१ १६ ४४ ३२	१० ०१ ०३ ४१	९ १४ १८ ३५	७ २१ ५६ २१	२५
२६	६ ०८ ३० ०७	२ ०० १८ ३८	५ १२ ३९ ३१	५ २६ १२ ०२	३ २१ ४८ १०	६ १७ १४ ०७	२ ०५ ०० ०५	१ १६ ४१ २१	१० ०१ ०३ ११	९ १४ १८ ४५	७ २१ ५८ ०७	२६
२७	६ ०९ २९ ५७	२ १२ ४७ ४३	५ १३ १७ ५०	५ २७ ५१ ३१	३ २१ ५५ ०३	६ १६ ४० ४२	२ ०४ ५८ २७	१ १६ ३८ १०	१० ०१ ०२ ४५	९ १४ १८ ५७	७ २१ ५९ ५५	२७
२८	६ १० २९ ४८	२ २५ ३३ ३८	५ १३ ५६ १०	५ २९ ३१ २२	३ २२ ०१ ४७	६ १६ ०६ १२	२ ०४ ५६ ४२	१ १६ ३४ ५९	१० ०१ ०२ २१	९ १४ १९ ११	७ २२ ०१ ४४	२८
२९	६ ११ २९ ४२	३ ०८ ४० ०२	५ १४ ३४ ३१	६ ०१ ११ २५	३ २२ ०८ २३	६ १५ ३० ५०	२ ०४ ५४ ५१	१ १६ ३१ ४९	१० ०१ ०२ ०१	९ १४ १९ २७	७ २२ ०३ ३४	२९
३०	६ १२ २९ ३८	३ २२ १० ०२	५ १५ १२ ५२	६ ०२ ५१ ३४	३ २२ १४ ४९	६ १४ ५४ ५०	२ ०४ ५२ ५४	१ १६ २८ ३८	१० ०१ ०१ ४३	९ १४ १९ ४५	७ २२ ०५ २६	३०
३१	६ १३ २९ ३६	४ ०६ ०५ ३८	५ १५ ५१ १३	६ ०४ ३१ ४१	३ २२ २१ ०७	६ १४ १८ २६	२ ०४ ५० ५१	१ १६ २५ २७	१० ०१ ०१ २८	९ १४ २० ०५	७ २२ ०७ १८	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नवम्बर सन् २००२ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।२९"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र (वक्री)	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल (वक्री)	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
नवं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	नवं.
१	६ १४ २९ ३७	४ २० २६ ३४	५ १६ २९ ३५	६ ०६ ११ ४२	३ २२ २७ १५	६ १३ ४१ ५४	२ ०४ ४८ ४१	१ १६ २२ १६	१० ०१ ०१ १७	९ १४ २० २७	७ २२ ०९ १२	१
२	६ १५ २९ ३९	५ ०५ १० १८	५ १७ ०७ ५७	६ ०७ ५१ ३२	३ २२ ३३ १३	६ १३ ०५ २७	२ ०४ ४६ २५	१ १६ १९ ०६	१० ०१ ०१ ०८	९ १४ २० ५१	७ २२ ११ ०७	२
३	६ १६ २९ ४४	५ २० ११ ०५	५ १७ ४६ २०	६ ०९ ३१ ०९	३ २२ ३९ ०३	६ १२ २९ २२	२ ०४ ४४ ०३	१ १६ १५ ५५	१० ०१ ०१ ०३	९ १४ २१ १७	७ २२ १३ ०३	३
४	६ १७ २९ ५०	६ ०५ २० ४०	५ १८ २४ ४३	६ ११ १० २९	३ २२ ४४ ४२	६ ११ ५३ ५१	२ ०४ ४१ ३५	१ १६ १२ ४४	१० ०१ ०१००मा.	९ १४ २१ ४५	७ २२ १५ ०१	४
५	६ १८ २९ ५९	६ २० २९ १७	५ १९ ०३ ०६	६ १२ ४९ ३२	३ २२ ५० १२	६ ११ १९ ०९	२ ०४ ३९ ०१	१ १६ ०९ ३४	१० ०१ ०१ ०१	९ १४ २२ १६	७ २२ १६ ५९	५
६	६ १९ ३० ०९	७ ०५ २७ १४	५ १९ ४१ ३०	६ १४ २८ १५	३ २२ ५५ ३२	६ १० ४५ ३०	२ ०४ ३६ २१	१ १६ ०६ २३	१० ०१ ०१ ०४	९ १४ २२ ४८	७ २२ १८ ५९	६
७	६ २० ३० २१	७ २० ०६ १८	५ २० १९ ५४	६ १६ ०६ ३८	३ २३ ०० ४२	६ १० १३ ०५	२ ०४ ३३ ३५	१ १६ ०३ १२	१० ०१ ०१ ११	९ १४ २३ २२	७ २२ २० ५९	७
८	६ २१ ३० ३५	८ ०४ २० ५९	५ २० ५८ १८	६ १७ ४४ ४०	३ २३ ०५ ४३	६ ०९ ४२ ०७	२ ०४ ३० ४४	१ १६ ०० ०१	१० ०१ ०१ २१	९ १४ २३ ५९	७ २२ २३ ०१	८
९	६ २२ ३० ५०	८ १८ ०८ ४१	५ २१ ३६ ४३	६ १९ २२ २०	३ २३ १० ३३	६ ०९ १२ ४७	२ ०४ २७ ४७	१ १५ ५६ ५०	१० ०१ ०१ ३४	९ १४ २४ ३७	७ २२ २५ ०३	९
१०	६ २३ ३१ ०७	९ ०१ २९ २९	५ २२ १५ ०८	६ २० ५९ ४०	३ २३ १५ १२	६ ०८ ४५ १४	२ ०४ २४ ४५	१ १५ ५३ ३९	१० ०१ ०१ ५०	९ १४ २५ १७	७ २२ २७ ०६	१०
११	६ २४ ३१ २५	९ १४ २५ ३१	५ २२ ५३ ३३	६ २२ ३६ ३८	३ २३ १९ ४२	६ ०८ १९ ३७	२ ०४ २१ ३७	१ १५ ५० २८	१० ०१ ०२ ०९	९ १४ २६ ००	७ २२ २९ ११	११
१२	६ २५ ३१ ४५	९ २७ ०० १२	५ २३ ३१ ५८	६ २४ १३ १६	३ २३ २४ ०१	६ ०७ ५६ ०४	२ ०४ १८ २४	१ १५ ४७ १८	१० ०१ ०२ ३१	९ १४ २६ ४४	७ २२ ३१ १६	१२
१३	६ २६ ३२ ०६	१० ०९ १७ ३८	५ २४ १० २४	६ २५ ४९ ३४	३ २३ २८ १०	६ ०७ ३४ ४१	२ ०४ १५ ०६	१ १५ ४४ ०७	१० ०१ ०२ ५७	९ १४ २७ ३०	७ २२ ३३ २२	१३
१४	६ २७ ३२ २८	१० २१ २२ १४	५ २४ ४८ ४९	६ २७ २५ ३३	३ २३ ३२ ०८	६ ०७ १५ ३६	२ ०४ ११ ४३	१ १५ ४० ५६	१० ०१ ०३ २५	९ १४ २८ १९	७ २२ ३५ २८	१४
१५	६ २८ ३२ ५२	११ ०३ १८ १७	५ २५ २७ १६	६ २९ ०१ १३	३ २३ ३५ ५६	६ ०६ ५८ ५१	२ ०४ ०८ १४	१ १५ ३७ ४५	१० ०१ ०३ ५६	९ १४ २९ ०९	७ २२ ३७ ३६	१५
१६	६ २९ ३३ १८	११ १५ ०९ ४५	५ २६ ०५ ४२	७ ०० ३६ ३५	३ २३ ३९ ३२	६ ०६ ४४ ३०	२ ०४ ०४ ४१	१ १५ ३४ ३५	१० ०१ ०४ ३१	९ १४ ३० ०१	७ २२ ३९ ४४	१६
१७	७ ०० ३३ ४४	११ २७ ०० ०३	५ २६ ४४ ०९	७ ०२ ११ ४१	३ २३ ४२ ५९	६ ०६ ३२ ३६	२ ०४ ०१ ०३	१ १५ ३१ २४	१० ०१ ०५ ०८	९ १४ ३० ५५	७ २२ ४१ ५३	१७
१८	७ ०१ ३४ १२	० ०८ ५२ ०८	५ २७ २२ ३६	७ ०३ ४६ ३१	३ २३ ४६ १४	६ ०६ २३ ११	२ ०३ ५७ २१	१ १५ २८ १३	१० ०१ ०५ ४९	९ १४ ३१ ५१	७ २२ ४४ ०३	१८
१९	७ ०२ ३४ ४२	० २० ४८ २३	५ २८ ०१ ०४	७ ०५ २१ ०६	३ २३ ४९ १८	६ ०६ १६ १४	२ ०३ ५३ ३४	१ १५ २५ ०३	१० ०१ ०६ ३३	९ १४ ३२ ४९	७ २२ ४६ १४	१९
२०	७ ०३ ३५ १३	१ ०२ ५० ५२	५ २८ ३९ ३२	७ ०६ ५५ २८	३ २३ ५२ ११	६ ०६ ११ ४७	२ ०३ ४९ ४२	१ १५ २१ ५२	१० ०१ ०७ १९	९ १४ ३३ ४९	७ २२ ४८ २५	२०
२१	७ ०४ ३५ ४६	१ १५ ०१ १६	५ २९ १८ ००	७ ०८ २९ ३७	३ २३ ५४ ५४	६ ०६ ०९ ४९मा.	२ ०३ ४५ ४६	१ १५ १८ ४१	१० ०१ ०८ ०९	९ १४ ३४ ५०	७ २२ ५० ३६	२१
२२	७ ०५ ३६ २०	१ २७ २१ ०८	५ २९ ५६ २९	७ १० ०३ ३४	३ २३ ५७ २५	६ ०६ १० १७	२ ०३ ४१ ४६	१ १५ १५ ३०	१० ०१ ०९ ०२	९ १४ ३५ ५४	७ २२ ५२ ४८	२२
२३	७ ०६ ३६ ५५	२ ०९ ५१ ५७	६ ०० ३४ ५९	७ ११ ३७ २०	३ २३ ५९ ४५	६ ०६ १३ ११	२ ०३ ३७ ४२	१ १५ १२ १९	१० ०१ ०९ ५७	९ १४ ३६ ५९	७ २२ ५५ ०१	२३
२४	७ ०७ ३७ ३३	२ २२ ३५ १४	६ ०१ १३ २८	७ १३ १० ५६	३ २४ ०१ ५३	६ ०६ १८ २८	२ ०३ ३३ ३४	१ १९ ०९ ०८	१० ०१ १० ५६	९ १४ ३८ ०६	७ २२ ५७ १५	२४
२५	७ ०८ ३८ १२	३ ०५ ३२ ३७	६ ०१ ५१ ५९	७ १४ ४४ २२	३ २४ ०३ ५०	६ ०६ २६ ०६	२ ०३ २९ २२	१ १८ ०५ ५७	१० ०१ ११ ५८	९ १४ ३९ १५	७ २२ ५९ २८	२५
२६	७ ०९ ३८ ५२	३ १८ ४५ ४३	६ ०२ ३० ३०	७ १६ १७ ४०	३ २४ ०५ ३६	६ ०६ ३६ ०१	२ ०३ २५ ०७	१ १५ ०२ ४७	१० ०१ १३ ०२	९ १४ ४० २६	७ २३ ०१ ४३	२६
२७	७ १० ३९ ३४	४ ०२ १६ ००	६ ०३ ०९ ०१	७ १७ ५० ५१	३ २४ ०७ १०	६ ०६ ४८ ०९	२ ०३ २० ४८	१ १४ ५९ ३६	१० ०१ १४ १०	९ १४ ४१ ३९	७ २३ ०३ ५८	२७
२८	७ ११ ४० १८	४ १६ ०४ २१	६ ०३ ४७ ३३	७ १९ २३ ५५	३ २४ ०८ ३३	६ ०७ ०२ २८	२ ०३ १६ २५	१ १४ ५६ २५	१० ०१ १५ २०	९ १४ ४२ ५३	७ २३ ०६ १३	२८
२९	७ १२ ४१ ०३	५ ०० १० ४५	६ ०४ २६ ०५	७ २० ५६ ५२	३ २४ ०९ ४४	६ ०७ १८ ५३	२ ०३ ११ ५९	१ १४ ५३ १४	१० ०१ १६ ३४	९ १४ ४४ ०९	७ २३ ०८ २८	२९
३०	७ १३ ४१ ५०	५ १४ ३३ ५१	६ ०५ ०४ ३८	७ २२ २९ ४३	३ २४ १० ४३	६ ०७ ३७ २१	२ ०३ ०७ ३०	१ १४ ५० ०४	१० ०१ १७ ५०	९ १४ ४५ २७	७ २३ १० ४४	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दिसम्बर सन् २००२ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।३४"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
दिसं.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	दिसं.
१	७ १४ ४२ ३९	५ २९ १० ३२	६ ०५ ४३ ११	७ २४ ०२ २८	३ २४ ११ ३०	६ ०७ ५७ ४८	२ ०३ ०२ ५८	१ १४ ४६ ५३	१० ०१ १९ ०९	९ १४ ४६ ४६	७ २३ १३ ००	१
२	७ १५ ४३ २८	६ १३ ५५ ५८	६ ०६ २१ ४४	७ २५ ३५ ०७	३ २४ १२ ०६	६ ०८ २० ०९	२ ०२ ५८ २३	१ १४ ४३ ४२	१० ०१ २० ३२	९ १४ ४८ ०८	७ २३ १५ १७	२
३	७ १६ ४४ २०	६ २८ ४३ ४६	६ ०७ ०० १८	७ २७ ०७ ४१	३ २४ १२ २९	६ ०८ ४४ २१	२ ०२ ५३ ४६	१ १४ ४० ३१	१० ०१ २१ ५७	९ १४ ४९ ३१	७ २३ १७ ३३	३
४	७ १७ ४५ १२	७ १३ २६ ४२	६ ०७ ३८ ५२	७ २८ ४० ०८	३ २४ १२ ४१व.	६ ०९ १० १९	२ ०२ ४९ ०६	१ १४ ३७ २०	१० ०१ २३ २५	९ १४ ५० ५५	७ २३ १९ ५०	४
५	७ १८ ४६ ०६	७ २७ ५७ ३८	६ ०८ १७ २६	८ ०० १२ २७	३ २४ १२ ४१	६ ०९ ३८ ००	२ ०२ ४४ २३	१ १४ ३४ ०९	१० ०१ २४ ५५	९ १४ ५२ २२	७ २३ २२ ०८	५
६	७ १९ ४७ ००	८ १२ १० ३५	६ ०८ ५६ ०१	८ ०१ ४४ ३९	३ २४ १२ २९	६ १० ०७ २०	२ ०२ ३९ ३९	१ १४ ३० ५९	१० ०१ २६ २९	९ १४ ५३ ५०	७ २३ २४ २५	६
७	७ २० ४७ ५६	८ २६ ०१ १९	६ ०९ ३४ ३६	८ ०३ १६ ४१	३ २४ १२ ०५	६ १० ३८ १५	२ ०२ ३४ ५२	१ १४ २७ ४८	१० ०१ २८ ०५	९ १४ ५५ १९	७ २३ २६ ४२	७
८	७ २१ ४८ ५२	९ ०९ २७ ४८	६ १० १३ १०	८ ०४ ४८ ३३	३ २४ ११ २९	६ ११ १० ४२	२ ०२ ३० ०४	१ १४ २४ ३७	१० ०१ २९ ४५	९ १४ ५६ ५०	७ २३ २९ ००	८
९	७ २२ ४९ ४९	९ २२ ३० ०७	६ १० ५१ ४६	८ ०६ २० ११	३ २४ १० ४२	६ ११ ४४ ३६	२ ०२ २५ १४	१ १४ २१ २६	१० ०१ ३१ २७	९ १४ ५८ २३	७ २३ ३१ १७	९
१०	७ २३ ५० ४७	१० ०५ १० १०	६ ११ ३० २१	८ ०७ ५१ ३४	३ २४ ०९ ४२	६ १२ १९ ५६	२ ०२ २० २३	१ १४ १८ १५	१० ०१ ३३ ११	९ १४ ५९ ५७	७ २३ ३३ ३५	१०
११	७ २४ ५१ ४६	१० १७ ३१ १३	६ १२ ०८ ५६	८ ०९ २२ ३८	३ २४ ०८ ३१	६ १२ ५६ ३८	२ ०२ १५ ३०	१ १४ १५ ०४	१० ०१ ३४ ५९	९ १५ ०१ ३३	७ २३ ३५ ५३	११
१२	७ २५ ५२ ४५	१० २९ ३७ २६	६ १२ ४७ ३२	८ १० ५३ १९	३ २४ ०७ ०७	६ १३ ३४ ३८	२ ०२ १० ३६	१ १४ ११ ५४	१० ०१ ३६ ४९	९ १५ ०३ ११	७ २३ ३८ १०	१२
१३	७ २६ ५३ ४५	११ ११ ३३ ३१	६ १३ २६ ०८	८ १२ २३ ३३	३ २४ ०५ ३२	६ १४ १३ ५५	२ ०२ ०५ ४१	१ १४ ०८ ४३	१० ०१ ३८ ४१	९ १५ ०४ ४९	७ २३ ४० २८	१३
१४	७ २७ ५४ ४५	११ २३ २४ १५	६ १४ ०४ ४४	८ १३ ५३ १३	३ २४ ०३ ४६	६ १४ ५४ २४	२ ०२ ०० ४६	१ १४ ०५ ३२	१० ०१ ४० ३७	९ १४ ०६ २९	७ २३ ४२ ४५	१४
१५	७ २८ ५५ ४६	० ०५ १४ १८	६ १४ ४३ २०	८ १५ २२ १३	३ २४ ०१ ४७	६ १५ ३६ ०३	२ ०१ ५५ ५०	१ १४ ०२ २१	१० ०१ ४२ ३५	९ १५ ०८ ११	७ २३ ४५ ०२	१५
१६	७ २९ ५६ ४७	० १७ ०७ ५४	६ १५ २१ ५६	८ १६ ५० २६	३ २३ ५९ ३७	६ १६ १८ ५०	२ ०१ ५० ५३	१ १३ ५९ ११	१० ०१ ४४ ३५	९ १५ ०९ ५४	७ २३ ४७ १९	१६
१७	८ ०० ५७ ४९	० २९ ०८ ४६	६ १६ ०० ३३	८ १८ १७ ४०	३ २३ ५७ १६	६ १७ ०२ ४२	२ ०१ ४५ ५६	१ १३ ५६ ००	१० ०१ ४६ ३८	९ १५ ११ ३८	७ २३ ४९ ३६	१७
१८	८ ०१ ५८ ५१	१ ११ १९ ५५	६ १६ ३९ १०	८ १९ ४३ ४६	३ २३ ५४ ४३	६ १७ ४७ ३७	२ ०१ ४० ५९	१ १३ ५२ ४९	१० ०१ ४८ ४३	९ १५ १३ २४	७ २३ ५१ ५२	१८
१९	८ ०२ ५९ ५४	१ २३ ४३ ३६	६ १७ १७ ४७	८ २१ ०८ ३०	३ २३ ५१ ५८	६ १८ ३३ ३२	२ ०१ ३६ ०२	१ १३ ४९ ३८	१० ०१ ५० ५१	९ १५ १५ ११	७ २३ ५४ ०९	१९
२०	८ ०४ ०० ५८	२ ०६ २१ १२	६ १७ ५६ २५	८ २२ ३१ ३७	३ २३ ४९ ०२	६ १९ २० २६	२ ०१ ३१ ०५	१ १३ ४६ २७	१० ०१ ५३ ०२	९ १५ १६ ५९	७ २३ ५६ २५	२०
२१	८ ०५ ०२ ०२	२ १९ १३ १६	६ १८ ३५ ०३	८ २३ ५२ ४९	३ २३ ४५ ५५	६ २० ०८ १५	२ ०१ २६ ०९	१ १३ ४३ १६	१० ०१ ५५ १४	९.१५ १८ ४९	७ २३ ५८ ४०	२१
२२	८ ०६ ०३ ०६	३ ०२ १९ ३६	६ १९ १३ ४१	८ २५ ११ ४५	३ २३ ४२ ३७	६ २० ५६ ५८	२ ०१ २१ १३	१ १३ ४० ०५	१० ०१ ५७ २९	९ १५ २० ४०	७ २४ ०० ५६	२२
२३	८ ०७ ०४ १२	३ १५ ३९ २७	६ १९ ५२ २०	८ २६ २८ ०२	३ २३ ३९ ०८	६ २१ ४६ ३३	२ ०१ १६ १८	१ १३ ३६ ५४	१० ०१ ५९ ४७	९ १५ २२ ३२	७ २४ ०३ ११	२३
२४	८ ०८ ०५ १७	३ २९ ११ ४४	६ २० ३० ५९	८ २७ ४१ १२	३ २३ ३५ २७	६ २२ ३६ ५७	२ ०१ ११ २४	१ १३ ३३ ४४	१० ०२ ०२ ०७	९ १५ २४ २५	७ २४ ०५ २५	२४
२५	८ ०९ ०६ २४	४ १२ ५५ ११	६ २१ ०९ ३८	८ २८ ५० ४३	३ २३ ३१ ३६	६ २३ २८ १०	२ ०१ ०६ ३१	१ १३ ३० ३३	१० ०२ ०४ २९	९ १५ २६ १९	७ २४ ०७ ३९	२५
२६	८ १० ०७ ३१	४ २६ ४८ ३४	६ २१ ४८ १८	८ २९ ५६ ०१	३ २३ २७ ३४	६ २४ २० ०९	२ ०१ ०१ ३९	१ १३ २७ २२	१० ०२ ०६ ५३	९ १५ २८ १५	७ २४ ०९ ५३	२६
२७	८ ११ ०८ ३९	५ १० ५० ३३	६ २२ २६ ५८	९ ०० ५६ २५	३ २३ २३ २१	६ २५ १२ ५२	२ ०० ५६ ४८	१ १३ २४ ११	१० ०२ ०९ २०	९ १५ ३० १२	७ २४ १२ ०६	२७
२८	८ १२ ०९ ४७	५ २४ ५९ ४७	६ २३ ०५ ३८	९ ०१ ५१ ११	३ २३ १८ ५८	६ २६ ०६ १७	२ ०० ५१ ५९	१ १३ २१ ०१	१० ०२ ११ ४८	९ १५ ३२ ०९	७ २४ १४ १९	२८
२९	८ १३ १० ५६	६ ०९ १४ ३५	६ २३ ४४ १८	९ ०२ ३९ ३०	३ २३ १४ २४	६ २७ ०० २३	२ ०० ४७ १२	१ १३ १७ ५०	१० ०२ १४ १९	९ १५ ३४ ०८	७ २४ १६ ३१	२९
३०	८ १४ १२ ०६	६ २३ ३२ ४७	६ २४ २२ ५९	९ ०३ २० ३२	३ २३ ०९ ४०	६ २७ ५५ ०८	२ ०० ४२ २७	१ १३ १४ ३९	१० ०२ १६ ५२	९ १५ ३६ ०८	७ २४ १८ ४२	३०
३१	८ १५ १३ १६	७ ०७ ५१ ३१	६ २५ ०१ ४०	९ ०३ ५३ २२	३ २३ ०४ ४६	६ २८ ५० ३१	२ ०० ३७ ४३	१ १३ ११ २८	१० ०२ १९ २७	९ १५ ३८ ०९	७ २४ २० ५३	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ।५३' ।४०"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
जन.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	जन.
१	८ १६ १४ २६	७ २२ ०७ ०४	६ २५ ४० २१	९ ०४ १७ ०४	३ २२ ५९ ४२	६ २९ ४६ ३०	२ ०० ३३ ०२	१ १३ ०८ १७	१० ०२ २२ ०५	९ १५ ४० ११	७ २४ २३ ०३	१
२	८ १७ १५ ३७	८ ०६ १५ १२	६ २६ १९ ०२	९ ०४ ३० ४८व.	३ २२ ५४ २८	७ ०० ४३ ०३	२ ०० २८ २३	१ १३ ०५ ०६	१० ०२ २४ ४४	९ १५ ४२ १३	७ २४ २५ १२	२
३	८ १८ १६ ४७	८ २० ११ ३०	६ २६ ५७ ४३	९ ०४ ३३ ४४	३ २२ ४९ ०५	७ ०१ ४० १०	२ ०० २३ ४७	१ १३ ०१ ५५	१० ०२ २७ २५	९ १५ ४४ १७	७ २४ २७ २१	३
४	८ १९ १७ ५८	९ ०३ ५२ ०१	६ २७ ३६ २४	९ ०४ २५ १६	३ २२ ४३ ३२	७ ०२ ३७ ४८	२ ०० १९ १४	१ १२ ५८ ४५	१० ०२ ३० ०८	९ १५ ४६ २२	७ २४ २९ २९	४
५	८ २० १९ ०९	९ १७ १३ ४८	६ २८ १५ ०५	९ ०४ ०५ ००	३ २२ ३७ ५०	७ ०३ ३५ ५७	२ ०० १४ ४३	१ १२ ५५ ३४	१० ०२ ३२ ५३	९ १५ ४८ २७	७ २४ ३१ ३६	५
६	८ २१ २० १९	१० ०० १५ २४	६ २८ ५३ ४५	९ ०३ ३२ ५२	३ २२ ३२ ००	७ ०४ ३४ ३५	२ ०० १० १६	१ १२ ५२ २३	१० ०२ ३५ ४०	९ १५ ५० ३३	७ २४ ३३ ४२	६
७	८ २२ २१ २९	१० १२ ५६ ५६	६ २९ ३२ २६	९ ०२ ४९ १४	३ २२ २६ ००	७ ०५ ३३ ४२	२ ०० ०५ ५२	१ १२ ४९ १२	१० ०२ ३८ २९	९ १५ ५२ ४०	७ २४ ३५ ४८	७
८	८ २३ २२ ३९	१० २५ २० ०९	७ ०० ११ ०७	९ ०१ ५४ ५५	३ २२ १९ ५३	७ ०६ ३३ १६	२ ०० ०१ ३१	१ १२ ४६ ०१	१० ०२ ४१ २०	९ १५ ५४ ४८	७ २४ ३७ ५२	८
९	८ २४ २३ ४९	११ ०७ २८ ०९	७ ०० ४९ ४७	९ ०० ५१ १६	३ २२ १३ ३७	७ ०७ ३३ १६	१ २९ ५७ १४	१ १२ ४२ ५१	१० ०२ ४४ १२	९ १५ ५६ ५७	७ २४ ३९ ५६	९
१०	८ २५ २४ ५८	११ १९ २५ ०४	७ ०१ २८ २८	८ २९ ४० ०५	३ २२ ०७ १४	७ ०८ ३३ ४२	१ २९ ५३ ००	१ १२ ३९ ४०	१० ०२ ४७ ०६	९ १५ ५९ ०६	७ २४ ४१ ५९	१०
११	८ २६ २६ ०६	० ०१ १५ ४५	७ ०२ ०७ ०८	८ २८ २३ ३३	३ २२ ०० ४३	७ ०९ ३४ ३२	१ २९ ४८ ५१	१ १२ ३६ २९	१० ०२ ५० ०२	९ १६ ०१ १६	७ २४ ४४ ०१	११
१२	८ २७ २७ १४	० १३ ०५ २१	७ ०२ ४५ ४९	८ २७ ०४ १०	३ २१ ५४ ०५	७ १० ३५ ४६	१ २९ ४४ ४५	१ १२ ३३ १८	१० ०२ ५२ ५९	९ १६ ०३ २७	७ २४ ४६ ०१	१२
१३	८ २८ २८ २२	० २४ ५९ ०७	७ ०३ २४ २९	८ २५ ४४ २८	३ २१ ४७ १९	७ ११ ३७ २३	१ २९ ४० ४३	१ १२ ३० ०८	१० ०२ ५५ ५८	९ १६ ०५ ३८	७ २४ ४८ ०१	१३
१४	८ २९ २९ २९	१ ०७ ०२ ०२	७ ०४ ०३ ०९	८ २४ २६ ५७	३ २१ ४० २७	७ १२ ३९ २२	१ २९ ३६ ४६	१ १२ २६ ५७	१० ०२ ५८ ५८	९ १६ ०७ ४९	७ २४ ५० ००	१४
१५	९ ०० ३० ३५	१ १९ १८ २८	७ ०४ ४१ ४९	८ २३ १३ ४९	३ २१ ३३ २९	७ १३ ४१ ४३	१ २९ ३२ ५३	१ १२ २३ ४६	१० ०३ ०२ ००	९ १६ १० ०२	७ २४ ५१ ५७	१५
१६	९ ०१ ३१ ४०	२ ०१ ५१ ५६	७ ०५ २० ३०	८ २२ ०६ ५६	३ २१ २६ २४	७ १४ ४४ २५	१ २९ २९ ०४	१ १२ २० ३५	१० ०३ ०५ ०३	९ १६ १२ १४	७ २४ ५३ ५३	१६
१७	९ ०२ ३२ ४६	२ १४ ४४ ४०	७ ०५ ५९ १०	८ २१ ०७ ४५	३ २१ १९ १४	७ १५ ४७ २६	१ २९ २५ २०	१ १२ १७ २४	१० ०३ ०८ ०८	९ १६ १४ २८	७ २४ ५५ ४९	१७
१८	९ ०३ ३३ ५०	२ २७ ५७ २२	७ ०६ ३७ ५०	८ २० १७ १५	३ २१ ११ ५८	७ १६ ५० ४७	१ २९ २१ ४०	१ १२ १४ १३	१० ०३ ११ १४	९ १६ १६ ४१	७ २४ ५७ ४३	१८
१९	९ ०४ ३४ ५४	३ ११ २९ ००	७ ०७ १६ ३०	८ १९ ३६ ००	३ २१ ०४ ३६	७ १७ ५४ २७	१ २९ १८ ०६	१ १२ ११ ०२	१० ०३ १४ २२	९ १६ १८ ५५	७ २४ ५९ ३६	१९
२०	९ ०५ ३५ ५७	३ २५ १६ ५८	७ ०७ ५५ ११	८ १९ ०४ १२	३ २० ५७ १०	७ १८ ५८ २६	१ २९ १४ ३६	१ १२ ०७ ५२	१० ०३ १७ ३१	९ १६ २१ १०	७ २५ ०१ २८	२०
२१	९ ०६ ३७ ००	४ ०९ १७ २४	७ ०८ ३३ ५१	८ १८ ४१ ४९	३ २० ४९ ३९	७ २० ०२ ४२	१ २९ ११ ११	१ १२ ०४ ४१	१० ०३ २० ४१	९ १६ २३ २५	७ २५ ०३ १८	२१
२२	९ ०७ ३८ ०२	४ २३ २५ ५२	७ ०९ १२ ३१	८ १८ २८ ३४	३ २० ४२ ०४	७ २१ ०७ १५	१ २९ ०७ ५१	१ १२ ०१ ३०	१० ०३ २३ ५२	९ १६ २५ ४०	७ २५ ०५ ०७	२२
२३	९ ०८ ३९ ०४	५ ०७ ३८ ०२	७ ०९ ५१ ११	८ १८ २३ ५१मा.	३ २० ३४ २५	७ २२ १२ ०५	१ २९ ०४ ३७	१ ११ ५८ १९	१० ०३ २७ ०४	९ १६ २७ ५५	७ २५ ०६ ५५	२३
२४	९ ०९ ४० ०६	५ २१ ५० १३	७ १० २९ ५२	८ १८ २७ ३४	३ २० २६ ४२	७ २३ १७ ११	१ २९ ०१ २८	१ ११ ५५ ०९	१० ०३ ३० १८	९ १६ ३० ११	७ २५ ०८ ४२	२४
२५	९ १० ४१ ०७	६ ०५ ५९ ४८	७ ११ ०८ ३२	८ १८ ३८ ४५	३ २० १८ ५५	७ २४ २२ ३२	१ २८ ५८ २४	१ ११ ५१ ५८	१० ०३ ३३ ३२	९ १६ ३२ २७	७ २५ १० २७	२५
२६	९ ११ ४२ ०७	६ २० ०५ ०८	७ ११ ४७ १२	८ १८ ५६ ५७	३ २० ११ ०६	७ २५ २८ ०८	१ २८ ५५ २६	१ ११ ४८ ४७	१० ०३ ३६ ४८	९ १६ ३४ ४३	७ २५ १२ ११	२६
२७	९ १२ ४३ ०७	७ ०४ ०५ २०	७ १२ २५ ५२	८ १९ २१ ३३	३ २० ०३ १४	७ २६ ३३ ५९	१ २८ ५२ ३३	१ ११ ४५ ३६	१० ०३ ४० ०५	९ १६ ३६ ५९	७ २५ १३ ५३	२७
२८	९ १३ ४४ ०७	७ १७ ५९ ४९	७ १३ ०४ ३२	८ १९ ५२ ०२	३ १९ ५५ २०	७ २७ ४० ०३	१ २८ ४९ ४६	१ ११ ४२ २५	१० ०३ ४३ २२	९ १६ ३९ १६	७ २५ १५ ३५	२८
२९	९ १४ ४५ ०६	८ ०१ ४७ ५१	७ १३ ४३ १२	८ २० २७ ५१	३ १९ ४७ २३	७ २८ ४६ २१	१ २८ ४७ ०५	१ ११ ३९ १५	१० ०३ ४६ ४१	९ १६ ४१ ३२	७ २५ १७ १४	२९
३०	९ १५ ४६ ०४	८ १५ २८ १२	७ १४ २१ ५१	८ २१ ०८ ३१	३ १९ ३९ २५	७ २९ ५२ ५१	१ २८ ४४ २९	१ ११ ३६ ०४	१० ०३ ५० ०१	९ १६ ४३ ४९	७ २५ १८ ५२	३०
३१	९ १६ ४७ ०१	८ २८ ५९ ०८	७ १५ ०० ३०	८ २१ [illegible] ३६	३ १९ ३१ [illegible]	[illegible] ५९ ३३	१ २८ ४२ ००	१ ११ ३२ ५३	१० ०३ ५३ २१	९ १६ ४६ ०६	७ २५ २० २९	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फरवरी सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशा २३° ५३' ४६"

ता.	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि (वक्री)	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता.
फर.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	फर.
१	९ १७ ४७ ५८	९ १२ १८ ३६	७ १५ ३९ ०८	८ २२ ४२ ४०	३ १९ २३ २६	८ ०२ ०६ २७	१ २८ ३९ ३७	१ ११ २९ ४२	१० ०३ ५६ ४२	९ १६ ४८ २२	७ २५ २२ ०४	१
२	९ १८ ४८ ५३	९ २५ २४ ३१	७ १६ १७ ४६	८ २३ ३५ २३	३ १९ १५ २६	८ ०३ १३ ३२	१ २८ ३७ २०	१ ११ २६ ३१	१० ०४ ०० ०४	९ १६ ५० ३९	७ २५ २३ ३८	२
३	९ १९ ४९ ४८	१० ०८ १५ २०	७ १६ ५६ २४	८ २४ ३१ २४	३ १९ ०७ २५	८ ०४ २० ४८	१ २८ ३५ ०९	१ ११ २३ २०	१० ०४ ०३ २७	९ १६ ५२ ५६	७ २५ २५ १०	३
४	९ २० ५० ४१	१० २० ५० २५	७ १७ ३५ ०१	३ २५ ३० २५	३ १८ ५९ २५	८ ०५ २८ १५	१ २८ ३३ ०४	१ ११ २० १०	१० ०४ ०६ ५०	९ १६ ५५ १२	७ २५ २६ ४१	४
५	९ २१ ५१ ३३	११ ०३ १० १७	७ १८ १३ ३७	८ २६ ३२ १३	३ १८ ५१ २५	८ ०६ ३५ ५२	१ २८ ३१ ०६	१ ११ १६ ५९	१० ०४ १० १४	९ १६ ५७ २९	७ २५ २८ १०	५
६	९ २२ ५२ २३	११ १५ १६ ४५	७ १८ ५२ १३	८ २७ ३६ ३१	३ १८ ४३ २६	८ ०७ ४३ ३८	१ २८ २९ १४	१ ११ १३ ४८	१० ०४ १३ ३९	९ १६ ५९ ४५	७ २५ २९ ३७	६
७	९ २३ ५३ १३	११ २७ १२ ५१	७ १९ ३० ४९	८ २८ ४३ ०९	३ १८ ३५ २९	८ ०८ ५१ ३४	१ २८ २७ २८	१ ११ १० ३८	१० ०४ १७ ०४	९ १७ ०२ ०१	७ २५ ३१ ०३	७
८	९ २४ ५४ ००	० ०९ ०२ ३८	७ २० ०९ २३	८ २९ ५१ ५५	३ १८ २७ ३४	८ ०९ ५९ ३९	१ २८ २५ ४९	१ ११ ०७ २७	१० ०४ २० २९	९ १७ ०४ १७	७ २५ ३२ २७	८
९	९ २५ ५४ ४७	० २० ५० ५८	७ २० ४७ ५८	९ ०१ ०२ ३९	३ १८ १९ ४०	८ ११ ०७ ५३	१ २८ २४ १७	१ ११ ०४ १६	१० ०४ २३ ५५	९ १७ ०६ ३२	७ २५ ३३ ४९	९
१०	९ २६ ५५ ३१	१ ०२ ४३ १३	७ २१ २६ ३१	९ ०२ १५ १४	३ १८ ११ ४९	८ १२ १६ १६	१ २८ २२ ५१	१ ११ ०१ ०५	१० ०४ २७ २१	९ १७ ०८ ४८	७ २५ ३५ ०९	१०
११	९ २७ ५६ १४	१ १४ ४४ ५७	७ २२ ०५ ०४	९ ०३ २९ ३१	३ १८ ०४ ०१	८ १३ २४ ४७	१ २८ २१ ३१	१ १० ५७ ५५	१० ०४ ३० ४८	९ १७ ११ ०३	७ २५ ३६ २८	११
१२	९ २८ ५६ ५६	१ २७ ०१ ३४	७ २२ ४३ ३६	९ ०४ ४५ २५	३ १७ ५६ १६	८ १४ ३३ २६	१ २८ २० १८	१ १० ५४ ४४	१० ०४ ३४ १४	९ १७ १३ १७	७ २५ ३७ ४५	१२
१३	९ २९ ५७ ३६	२ ०९ ३७ ५३	७ २३ २२ ०८	९ ०६ ०२ ४९	३ १७ ४८ ३५	८ १५ ४२ १३	१ २८ १९ १२	१ १० ५१ ३३	१० ०४ ३७ ४२	९ १७ १५ ३१	७ २५ ३९ ०१	१३
१४	१० ०० ५८ १४	२ २२ ३७ ३२	७ २४ ०० ४०	९ ०७ २१ ३९	३ १७ ४० ५७	८ १६ ५१ ०८	१ २८ १८ १३	१ १० ४८ २२	१० ०४ ४१ ०९	९ १७ १७ ४५	७ २५ ४० १४	१४
१५	१० ०१ ५८ ५१	३ ०६ ०२ २६	७ २४ ३९ १०	९ ०८ ४१ ५०	३ १७ ३३ २३	८ १८ ०० १०	१ २८ १७ २०	१ १० ४५ ११	१० ०४ ४४ ३६	९ १७ १९ ५९	७ २५ ४१ २६	१५
१६	१० ०२ ५९ २६	३ १९ ५२ ०९	७ २५ १७ ४१	९ १० ०३ १९	३ १७ २५ ५४	८ १९ ०९ २०	१ २८ १६ ३४	१ १० ४२ ०१	१० ०४ ४८ ०४	९ १७ २२ १२	७ २५ ४२ ३६	१६
१७	१० ०४ ०० ००	४ ०४ ०३ ४२	७ २५ ५६ १०	९ ११ २६ ०२	३ १७ १८ ३०	८ २० १८ ३७	१ २८ १५ ५५	१ १० ३८ ५०	१० ०४ ५१ ३२	९ १७ २४ २४	७ २५ ४३ ४४	१७
१८	१० ०५ ०० ३२	४ १८ ३१ ३७	७ २६ ३४ ३९	९ १२ ४९ ५७	३ १७ ११ १०	८ २१ २८ ०१	१ २८ १५ २२	१ १० ३५ ३९	१० ०४ ५४ ५९	९ १७ २६ ३६	७ २५ ४४ ५१	१८
१९	१० ०६ ०१ ०३	५ ०३ ०८ ५४	७ २७ १३ ०८	९ १४ १५ ०१	३ १७ ०३ ५६	८ २२ ३७ ३१	१ २८ १४ ५६	१ १० ३२ २८	१० ०४ ५८ २७	९ १७ २८ ४७	७ २५ ४५ ५५	१९
२०	१० ०७ ०१ ३२	५ १७ ४७ ५९	७ २७ ५१ ३६	९ १५ ४१ १३	३ १६ ५६ ४८	८ २३ ४७ ०९	१ २८ १४ ३७	१ १० २९ १८	१० ०५ ०१ ५५	९ १७ ३० ५८	७ २५ ४६ ५८	२०
२१	१० ०८ ०२ ००	६ ०२ २२ ०७	७ २८ ३० ०४	९ १७ ०८ ३०	३ १६ ४९ ४५	८ २४ ५६ ५३	१ २८ १४ २४	१ १० २६ ०७	१० ०५ ०५ २२	९ १७ ३३ ०८	७ २५ ४७ ५९	२१
२२	१० ०९ ०२ २६	६ १६ ४६ १६	७ २९ ०८ ३१	९ १८ ३६ ५३	३ १६ ४२ ४८	८ २६ ०६ ४३	१ २८ १४ १९मा.	१ १० २२ ५६	१० ०५ ०८ ५०	९ १७ ३५ १७	७ २५ ४८ ५८	२२
२३	१० १० ०२ ५२	७ ०० ५७ २९	७ २९ ४६ ५७	९ २० ०६ १८	३ १६ ३५ ५८	८ २७ १६ ४०	१ २८ १४ २०	१ १० १९ ४६	१० ०५ १२ १७	९ १७ ३७ २६	७ २५ ४९ ५५	२३
२४	१० ११ ०३ १६	७ १४ ५४ ४०	८ ०० २५ २२	९ २१ ३६ ४६	३ १६ २९ १५	८ २८ २६ ४२	१ २८ १४ २७	१ १० १६ ३५	१० ०५ १५ ४४	९ १७ ३९ ३४	७ २५ ५० ५०	२४
२५	१० १२ ०३ ३८	७ २८ ३८ ०७	८ ०१ ०३ ४७	९ २३ ०८ १७	३ १६ २२ ३९	८ २९ ३६ ५०	१ २८ १४ ४२	१ १० १३ २४	१० ०५ १९ ११	९ १७ ४१ ४२	७ २५ ५१ ४३	२५
२६	१० १३ ०३ ५९	८ १२ ०८ ४२	८ ०१ ४२ ११	९ २४ ४० ४९	३ १६ १६ १०	९ ०० ४७ ०४	१ २८ १५ ०४	१ १० १० १३	१० ०५ २२ ३८	९ १७ ४३ ४८	७ २५ ५२ ३४	२६
२७	१० १४ ०४ १९	८ २५ २७ २३	८ ०२ २० ३४	९ २६ १४ २२	३ १६ ०९ ४८	९ ०१ ५७ २२	१ २८ १५ ३२	१ १० ०७ ०२	१० ०५ २६ ०४	९ १७ ४५ ५४	७ २५ ५३ २४	२७
२८	१० १५ ०४ ३८	९ ०८ ३४ ५०	८ ०२ ५८ ५५	९ २७ ४८ ५७	३ १६ ०३ ३४	९ ०३ ०७ ४६	१ २८ १६ ०७	१ १० ०३ ५१	१० ०५ २९ ३०	९ १७ ४७ ५९	७ २५ ५४ १२	२८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च सन् २००३ ई. प्रातः स्टैण्डर्ड टाईम ५ घं. ३० मि. के दैनिक सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, मासारम्भे स्पष्ट अयनांशाः २३° ५३' ४९"

ता. मार्च	[illegible]	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु (वक्री)	शुक्र	शनि	राहु	हर्शल	नेपच्यून	प्लूटो	ता. मार्च
	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	रा. अं. क. वि.	
१	१० १६ ०४ ५४	९ २१ ३१ १६	८ ०३ ३७ १६	९ २९ २४ ३३	३ १५ ५७ २९	९ ०४ १८ १५	१ २८ १६ ४९	१ १० ०० ४१	१० ०५ ३२ ५५	९ १७ ५० ०३	७ २५ ५४ ५७	१
२	१० १७ ०५ ०९	१० ०४ १६ ३३	८ ०४ १५ ३५	१० ०१ ०१ १२	३ १५ ५१ ३१	९ ०५ २८ ४८	१ २८ १७ ३७	१ ०९ ५७ ३०	१० ०५ ३६ २०	९ १७ ५२ ०७	७ २५ ५५ ४१	२
३	१० १८ ०५ २३	१० १६ ५० २३	८ ०४ ५३ ५३	१० ०२ ३८ ५२	३ १५ ४५ ४३	९ ०६ ३९ २५	१ २८ १८ ३३	१ ०९ ५४ १९	१० ०५ ३९ ४४	९ १७ ५४ ०९	७ २५ ५६ २२	३
४	१० १९ ०५ ३४	१० २९ १२ ३८	८ ०५ ३२ १०	१० ०४ १७ ३५	३ १५ ४० ०३	९ ०७ ५० ०७	१ २५ १९ ३५	१ ०९ ५१ ०९	१० ०५ ४३ ०८	९ १७ ५६ १०	७ २५ ५७ ०२	४
५	१० २० ०५ ४४	११ ११ २३ ४१	८ ०६ १० २५	१० ०५ ५७ २१	३ १५ ३४ ३२	९ ०९ ०० ५२	१ २८ २० ४४	१ ०९ ४७ ५८	१० ०५ ४६ ३१	९ १७ ५८ ११	७ २५ ५७ ३९	५
६	१० २१ ०५ ५२	११ २३ २४ ४१	८ ०६ ४८ ४०	१० ०७ ३८ १२	३ १५ २९ १०	९ १० ११ ४२	१ २८ २२ ००	१ ०९ ४४ ४७	१० ०५ ४९ ५४	९ १८ ०० १०	७ २५ ५८ १५	६
७	१० २२ ०५ ५८	० ०५ १७ ४१	८ ०७ २६ ५२	१० ०९ २० ०६	३ १५ २३ ५७	९ ११ २२ ३५	१ २८ २३ २२	१ ०९ ४१ ३७	१० ०५ ५३ १६	९ १८ ०२ ०९	७ २५ ५८ ४८	७
८	१० २३ ०६ ०१	० १७ ०५ ४४	८ ०८ ०५ ०३	१० ११ ०३ ०७	३ १५ १८ ५५	९ १२ ३३ ३२	१ २८ २४ ५१	१ ०९ ३८ २६	१० ०५ ५६ ३७	९ १८ ०४ ०६	७ २५ ५९ २०	८
९	१० २४ ०६ ०३	० २८ ५२ ४५	८ ०८ ४३ १३	१० १२ ४७ १३	३ १५ १४ ०१	९ १३ ४४ ३३	१ २८ २६ २६	१ ०९ ३५ १५	१० ०५ ५९ ५७	९ १८ ०६ ०२	७ २५ ५९ ४९	९
१०	१० २५ ०६ ०३	१ १० ४३ २६	८ ०९ २१ २१	१० १४ ३२ २७	३ १५ ०९ १८	९ १४ ५५ ३६	१ २८ २८ ०८	१ ०९ ३२ ०४	१० ०६ ०३ १७	९ १८ ०७ ५८	७ २६ ०० १७	१०
११	१० २६ ०६ ००	१ २२ ४३ ०१	८ ०९ ५९ २८	१० १६ १८ ४८	३ १५ ०४ ४५	९ १६ ०६ ४४	१ २८ २९ ५७	१ ०९ २८ ५४	१० ०६ ०६ ३६	९ १८ ०९ ५२	७ २६ ०० ४२	११
१२	१० २७ ०५ ५५	२ ०४ ५७ ०१	८ १० ३७ ३३	१० १८ ०६ १७	३ १५ ०० २२	९ १७ १७ ५४	१ २८ ३१ ५२	१ ०९ २५ ४३	१० ०६ ०९ ५३	९ १८ ११ ४५	७ २६ ०१ ०५	१२
१३	१० २८ ०५ ४८	२ १७ ३० ४६	८ ११ १५ ३६	१० १९ ५४ ५६	३ १४ ५६ ०९	९ १८ २९ ०८	१ २८ ३३ ५४	१ ०९ २२ ३२	१० ०६ १३ १०	९ १८ १३ ३६	७ २६ ०१ २७	१३
१४	१० २९ ०५ ३९	३ ०० २८ ५८	८ ११ ५३ ३८	१० २१ ४४ ४५	३ १४ ५२ ०७	९ १९ ४० २४	१ २८ ३६ ०२	१ ०९ १९ २१	१० ०६ १६ २६	९ १८ १५ २७	७ २६ ०१ ४६	१४
१५	११ ०० ०५ २७	३ १३ ५४ ५५	८ १२ ३१ ३९	१० २३ ३५ ४३	३ १४ ४८ १६	९ २० ५१ ४४	१ २८ ३८ १६	१ ०९ १६ १०	१० ०६ १९ ४१	९ १८ १७ १६	७ २६ ०२ ०३	१५
१६	११ ०१ ०५ १४	३ २७ ४९ ४०	८ १३ ०९ ३८	१० २५ २७ ५०	३ १४ ४४ ३५	९ २२ ०३ ०७	१ २८ ४० ३७	१ ०९ १३ ००	१० ०६ २२ ५४	९ १८ १९ ०४	७ २६ ०२ १९	१६
१७	११ ०२ ०४ ५८	४ १२ ११ २४	८ १३ ४७ ३५	१० २७ २१ ०८	३ १४ ४१ ०४	९ २३ १४ ३३	१ २८ ४३ ०४	१ ०९ ०९ ४९	१० ०६ २६ ०७	९ १८ २० ५१	७ २६ ०२ ३२	१७
१८	११ ०३ ०४ ४०	४ २६ ५५ ०८	८ १४ २५ ३१	१० २९ १५ ३४	३ १४ ३७ ४५	९ २४ २६ ०१	१ २८ ४५ ३७	१ ०९ ०६ ३८	१० ०६ २९ १८	९ १८ २२ ३६	७ २६ ०२ ४३	१८
१९	११ ०४ ०४ २०	५ ११ ५३ ०७	८ १५ ०३ २५	११ ०१ ११ ०७	३ १४ ३४ ३६	९ २५ ३७ ३३	१ २८ ४८ १६	१ ०९ ०३ २८	१० ०६ ३२ २८	९ १८ २४ २०	७ २६ ०२ ५२	१९
२०	११ ०५ ०३ ५८	५ २६ ५५ ५८	८ १५ ४१ १७	११ ०३ ०७ ४५	३ १४ ३१ ३९	९ २६ ४९ ०७	१ २८ ५१ ०१	१ ०९ ०० १७	१० ०६ ३५ ३७	९ १५ २६ ०३	७ २६ ०३ ००	२०
२१	११ ०६ ०३ ३४	६ ११ ५४ १७	८ १६ १९ ०८	११ ०५ ०५ २७	३ १४ २८ ५२	९ २८ ०० ४४	१ २८ ५३ ५३	१ ०८ ५७ ०६	१० ०६ ३८ ४५	९ १८ २७ ४४	७ २६ ०३ ०५	२१
२२	११ ०७ ०३ ०९	६ २६ ४० १०	८ १६ ५६ ५७	११ ०७ ०४ ०७	३ १४ २६ १७	९ २९ १२ २४	१ २८ ५६ ५०	१ ०८ ५३ ५६	१० ०६ ४१ ५२	९ १८ २९ २४	७ २६ ०३ ०८	२२
२३	११ ०८ ०२ ४१	७ ११ ०८ १२	८ १७ ३४ ४५	११ ०९ ०३ ४२	३ १४ २३ ५२	१० ०० २४ ०७	१ २८ ५९ ५४	१ ०८ ५० ४५	१० ०६ ४४ ५७	९ १८ ३१ ०३	७ २६ ०३ ०९	२३
२४	११ ०९ ०२ १२	७ २५ १५ ३९	८ १८ १२ ३०	११ ११ ०४ ०५	३ १४ २१ ३९	१० ०१ ३५ ५२	१ २९ ०३ ०३	१ ०८ ४७ ३४	१० ०६ ४८ ०१	९ १८ ३२ ४०	७ २६ ०३ ०९व.	२४
२५	११ १० ०१ ४२	८ ०९ ०२ ०७	८ १८ ५० १४	११ १३ ०५ ०९	३ १४ १९ ३७	१० ०२ ४७ ४०	१ २९ ०६ १९	१ ०८ ४४ २३	१० ०६ ५१ ०३	९ १८ ३४ १६	७ २६ ०३ ०६	२५
२६	११ ११ ०१ ०९	८ २२ २८ ४५	८ १९ २७ ५५	११ १५ ०६ ४५	३ १४ १७ ४७	१० ०३ ५९ ३०	१ २९ ०९ ४०	१ ०८ ४१ १२	१० ०६ ५४ ०४	९ १८ ३५ ५०	७ २६ ०३ ०१	२६
२७	११ १२ ०० ३५	९ ०५ ३७ ३०	८ २० ०५ ३४	११ १७ ०८ ४४	३ १४ १६ ०७	१० ०५ ११ २३	१ २९ १३ ०७	१ ०८ ३८ ०१	१० ०६ ५७ ०४	९ १८ ३७ २३	७ २६ ०२ ५४	२७
२८	११ १२ ५९ ५९	९ १८ ३० ३३	८ २० ४३ ११	११ १९ १० ५१	३ १४ १४ ४०	१० ०६ २३ १८	१ २९ १६ ४०	१ ०८ ३४ ५१	१० ०७ ०० ०२	९ १८ ३८ ५४	७ २६ ०२ ४६	२८
२९	११ १३ ५९ २१	१० ०१ १० ०२	८ २१ २० ४५	११ २१ १२ ५४	३ १४ १३ २३	१० ०७ ३५ १४	१ २९ २० १९	१ ०८ ३१ ४०	१० ०७ ०२ ५८	९ १८ ४० २४	७ २६ ०२ ३५	२९
३०	११ १४ ५८ ४१	१० १३ ३७ ४५	८ २१ ५८ १६	११ २३ १४ ३५	३ १४ १२ १९	१० ०८ ४७ १३	१ २९ २४ ०३	१ ०८ २८ २९	१० ०७ ०५ ५३	९ १८ ४१ ५२	७ २६ ०२ २२	३०
३१	११ १५ ५७ ५९	१० २५ ५५ १२	८ २२ ३५ ४५	११ २५ १५ ३७	३ १४ ११ ३५	१० ०९ ५९ १४	१ २९ २७ ५३	१ ०८ २५ १९	१० ०७ ०८ ४६	९ १८ ४३ १९	७ २६ ०२ ०८	३१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांगम्

चैत्र शुक्ल पक्ष-१

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. १३ से २७ अप्रैल सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २३ चैत्र से ७ बैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, बसंत-ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रात: ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि	प्र	मु	अं	भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	रा	अं	क	वि		घं	मि	घं	मि	
२३	१	श	५२	१६	२६	५८	अ	५९	२५	२९	४५	वि	५९	२२	२९	४५	कि	१९	४९	१३	५५	३१	५१	६	०	१८	४४	१	२९	13	मेष	११	२९	०	२१	[illegible]	०६	२५	१९	१८	नूतन संवत्सरारम्भः, बसन्त नवरात्रारम्भः, वर्षफल श्रवण, गुड़ी पड़वा, A
२४	२	र	५६	४०	२८	३९	भ	६०	०	-	-	प्री	६०	०	-	-	बा	२४	३५	१५	४९	३१	५५	५	५९	१८	४५	२	३०	14	मेष	११	२९	५९	१०	४८	०६	५६	२०	१२	चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घता, सिंधारा, चेटी चंड सिंध, श्री झूलेलाल जयंती B
२५	३	चं	६०	०	-	-	भ	५	१०	८	२	प्री	०	१६	६	४	तै	२८	३६	१७	२४	३१	५९	५	५७	१८	४५	३	स१	15	वृ. १४।३३	०	०	५७	५८	४५	०७	३०	२१	०८	सफर मु. मास २, मत्स्य जयन्ती, गणगौरी पूजा, अरुन्धती व्रत, मनोरथ ३. C
२६	३	मं	०	१७	६	३	कृ	१०	३	९	५८	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	०	१७	६	३	३२	३	५	५६	१८	४६	४	२	16	वृष	०	१	५६	४३	४३	०८	०७	२२	०६	भ. १८।३७ से, भरणी में बुध २७।२७. **विनायक ४ व्रत, अंगार की ४**
२७	४	बु	२	५०	७	३	रो	१३	५५	११	३०	शो	५८	२१	२९	१६	वि	२	५०	७	३	३२	७	५	५५	१८	४६	५	३	17	मि. [illegible]	०	२	५५	२६	४२	०८	४९	२३	०४	भ. ७।३ तक, कृत्ति. में शुक्र २९।४३. श्री लक्ष्मी पूजारंभ, राम जन्मोत्सव प्रा.
२८	५	गु	४	१०	७	३४	मृग	१६	३६	१२	३३	अति	५५	४७	२८	१३	बा	४	१०	७	३४	३२	११	५	५४	१८	४७	६	४	18	मिथुन	०	३	५४	८	३९	०९	३७	२४	००	कल्पादि ५. डोलोत्सव, हय पंचमी व्रत, स्कन्द षष्ठी
२९	६	शु	४	७	७	३२	आ	१७	५४	१३	३	सु	५२	३	२६	४२	तै	४	७	७	३२	३२	१५	५	५३	१८	४८	७	५	19	मिथुन	०	४	५२	४७	३६	१०	३१	२४	०२	रोहिणी में मंगल प्रवेश १५।५८. जैन आयंबिल ओली प्रा., मेला माई D
३०	७	श	२	३३	६	५४	पुन	१७	४१	१२	५७	धृ	४७	२	२४	४१	व	२	३३	६	५४	३२	१९	५	५२	१८	४८	८	६	20	क. [illegible]	०	५	५१	२३	३५	११	३१	२४	५८	भ. ६।५४ से १८।२० तक, मृगशिरा १ में राहु: ज्येष्ठा ३ में केतु: २२।४२. E
०	८	श	५९	२१	२९	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	अष्टमी तिथि क्षय: D सरखाना अमृतसर, **बुध उदय पश्चि.** १५।२
वै१	९	र	५४	३८	२७	४३	पु	१५	५३	१२	१३	शू	४०	४६	२२	१०	बा	२७	१२	१६	४४	३२	२३	५	५१	१८	४९	९	७	21	कर्क	०	६	४९	५८	३२	१२	३५	२५	५०	श्री राम जन्मोत्सव, राम नवमी व्रत, नवरात्र पूर्ति, भारतीय वैशाख प्रा.
२	१०	चं	४८	३०	२५	२४	श्ले	१२	३५	१०	५३	गं	३३	१८	१९	१०	तै	२१	४५	१४	३२	३२	२७	५	५०	१८	४९	१०	८	22	सिं. १०।५३	०	७	४८	३०	३०	१३	४१	२६	३७	ज्वालामुखी योग १०।५३ तक
३	११	मं	४१	२०	२२	१७	म	७	५७	९	०	वृ	२८	४४	१५	४५	व	१४	५९	११	४९	३२	३१	५	४९	१८	५०	११	९	23	सिंह	०	८	४७	०	२८	१४	४८	२७	२०	भ. ११।४९ से २२।१७ तक, कृत्तिका में बुध २९।१०, कामदा एका. व्रत सबका. F
४	१२	बु	३२	५८	१९	०	पूफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ध्रु	१५	३०	१२	०	ब	७	१०	८	४१	३२	३५	५	४८	१८	५१	१२	१०	24	कं. [illegible]	०	९	४५	२८	२५	१५	५५	२८	०१	हरिदमनोत्सव, प्रदोष व्रत F लक्ष्मीकांत दोलोत्सव, महापात ११।३१ से १५।३९ तक
५	१३	गु	२४	१४	१५	२९	ह	४८	५३	२५	२१	व्या	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	२४	१४	१५	२९	३२	३९	५	४७	१८	५१	१३	११	25	कन्या	०	१०	४३	५३	२४	१७	०२	२८	३९	**महावीर जयन्ती जैन**, अनंग त्रयोदशी, मीनाक्षी कल्याणम्
६	१४	शु	१५	२५	११	५७	चि	४२	१०	२२	३९	ह	४५	३९	२४	२	व	१५	२५	११	५७	३२	४३	५	४७	१८	५२	१४	१२	26	तु. ११।५९	०	११	४२	१७	२२	१८	०९	२९	१३	भ. ११।५७ से २२।१३ तक, पूर्णिमा व्रतं, **सत्य व्रतम्**, वृष में बुध प्र. ५।५२ G
७	१५	श	६	५५	८	३२	स्वा	३६	१	२०	१०	सि	३६	१२	२०	१५	ब	६	५५	८	३२	३२	४६	५	४६	१८	५२	१५	१३	27	तुला	०	१२	४०	३९	२०	१९	१७	०५	५५	**श्री हनुमान ज.**, वैशाख स्नानारंभ, मेला सालासर (राज.) मन्वादि १५ H

A अश्विनी मेष में सूर्य २९।५१. मु. १५ बैठी, घट स्थापन, आर्य समाज स्थापना दिवस, गौतम जयन्ती, मेला चोमा नानक सर (पंजाब), बैशाखी (पं.) B उत्सव सिंध सम्प्रदाय C आन्दोलन ३ (बिहार), E दुर्गाष्टमी, भवान्युत्पत्ति, वृष में शुक्र प्रवेश २३।९, श्री दुर्गा पूजन, मेला मनसा देवी, मेला बहू फोर्ट (का.), सायन वृष में सूर्य ११।५४, ग्रीष्म ऋतु प्रा. G बाला सुन्दरी मेला देवबन्द (उ.प्र.), दमनक चतुर्दशी H पुण्यम्, सूर्य भरणी में २१।४१, चैत्री पूर्णिमा, जैन आयंबिल ओली समाप्त, सिद्धांचल यात्रा, मेला मानकपुर-शरीफ रोपड़

चैत्र शु. ७ शनि प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० अप्रैल

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	२	१	०	२	०	१	१	७	१०	९	७
५	२९	२०	२९	१५	२९	१८	२६	२६	४	१६	२३
५१	७	२३	२५	२४	६	२३	४२	४२	१०	५६	२९
२३	३०	१	१७	२२	७	२३	१७	१७	४४	४८	५३
५८	८१४	४०	११३	८	७३	६	३	३	२	०	०
३५	२६	४४	४३	२१	१८	२७	११	११	१	४५	५७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रात:काल की हैं।]

मं.श.रा.२ | १२ | ३ चं. गु. | सू.बु.१ शु. | ११ ह. | ४ | १०ने. | ५ | ७ | ९ | ६ | ८के.प्लू.

२मं.श.शु.रा. | १२ | ३ गु. | १सू. | ११ ह. | १०ने. | ४ | ५ | ७ चं. | ९ | ६ | ८के.प्लू.

ता. २७ अप्रैल ❖ चैत्र शु. १५ शनि प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	६	१	१	२	१	१	१	७	१०	९	७
१२	१०	१५	१	१६	७	१९	२६	२६	४	१७	२३
४०	५४	७	३१	२५	३८	९	२०	२०	२४	१	२२
३९	५०	२२	१०	१७	१९	४१	२	२	०	२१	४३
५८	८८६	४०	८८	९	७३	६	३	३	१	०	१
२०	५१	२८	२७	९	०	४८	११	११	४४	३२	७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

नव संवत्सर का शनिवार के दिन आरम्भ होना वर्ष में अनेक घटना प्रद रहेगा। वर्षारम्भ से जनता में रोगोत्पत्ति, प्राकृतिक आपदायें एवं शासकों में आपसी मतभेद बनकर तनाव बढ़ेंगे। चैत्रे वा **श्रावणे मासि यदा पंचार वासरा: ।राजानश्च क्षयं यान्ति मन्दा दुर्भिक्ष कारका: ॥** मं.-श.-रा का एक राशि पर योग होना सीमावर्ती क्षेत्रों पर घुस पैठ व आतंकवादी गतिविधियों में विशेषता कारक है। मुस्लिम राष्ट्रों अरब-ईरान-ईराक-पाकिस्तान-अफगानिस्तान देशों में अराजकता व लोक विग्रह से प्रशासन में अस्थिरता व भय रहेगा। शनिवारी संक्रान्ति तथा पक्ष में तिथि का क्षय और वृद्धि होना देश के उत्तरी-पश्चिमी राज्यों में हिंसक आन्दोलन, राजविग्रह एवं प्राकृतिक प्रकोप से प्रजा में भय वृद्धि रहेगी। व्यापारियों को अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ेगा। **तेजी मन्दी विचार**-मेष संक्रान्ति मु. १५ रस पदार्थ, सरसों, अलसी, कपास, रुई, बिनौला में तेजी कारक है। शुक्ला ३ वृद्धि चना, उड़द, गेहूँ में घटाबढ़ी होकर तेजी फलप्रद है। वृष के शुक्र से श्वेत वस्तुएं चांदी, सूती वस्त्रादि में मन्दी का रुख बनेगा। **भृगुपुत्रो वृषे स्थित्वा सुभिक्षं पृथ्वी तले। प्रजानां सुखमुत्पन्नं किंचिद् विग्रह कारणम् ॥** सोना, पीतल, मूंग, मोंठ, नारियल, घृत आदि पदार्थों एवं किराना सामान में घटाबढ़ी रहेगी। **आकाश लक्षण**-बुध-शुक्र सहित पंचग्रही योग पक्ष में अनेक स्थानों पर ओला वर्षा से फसलों को हानिप्रद है। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब एवं गुजरात व उत्तर प्रदेश के कई स्थानों पर तेज वायु के साथ वर्षा होगी। पर्वतीय क्षेत्रों पर हिमपात एवं दक्षिणी प्रान्तों में समुद्र तट पर तूफानी हवाओं के साथ वर्षा होगी। **शकुन विचार**-चैत्र मास में वर्षा होने पर चतुर्मास (वर्षा काल) में वर्षा की न्यूनता रहती है। **चैत्र सुदी जो पंचमी दक्षिण पूर्व वाय। वर्षा भी होवे कुछ भादो तेज विकाय॥ चैत्र सुदी त्रयोदशी धूल उड़े दरम्यान। आगे वर्षा हो नहीं ऐसा लो तुम जान॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख कृष्ण पक्ष-२

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २८ अप्रैल से १२ मई सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ८ से २२ वैशाख तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
०	१	श	५९	७	२९	२५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	२	र	५२	३१	२६	४५	वि	३०	५०	१८	५	व्य	२७	३५	१६	४७	तै	२५	४०	१६	१
९	३	चं	४७	२५	२४	४२	अनु	२७	२	१६	३३	वरि	२०	४	१३	४६	व	१९	४६	१३	३८
१०	४	मं	४४	६	२३	२१	ज्ये	२४	५५	१५	४१	प	१३	५५	११	१७	बव	१५	३२	११	५६
११	५	बु	४२	४५	२२	४८	मू	२४	४३	१५	३५	शि	९	१७	९	२५	कौ	१३	१२	१०	५९
१२	६	गु	४३	२४	२३	३	पू.षा	२६	२८	१६	१७	सि	६	१५	८	११	ग	१२	५१	१०	५०
१३	७	शु	४५	५६	२४	३	उ.षा	३०	६	१७	४३	सा	४	४६	७	३५	वि	१४	२८	११	२८
१४	८	श	५०	२	२५	४१	श्र	३५	२१	१९	४८	शुभ	४	४०	७	३२	बा	१७	५०	१२	४८
१५	९	र	५५	१९	२७	४७	ध	४१	४९	२२	२३	शु	५	४३	७	५६	तै	२२	३५	१४	४१
१६	१०	चं	६०	०	-	-	श	४९	३	२५	१५	ब्र	७	३५	८	४०	व	२८	१६	१६	५७
१७	१०	मं	१	१९	६	९	पू.भा	५६	३३	२८	१५	ऐं	९	५३	९	३५	वि	१	१९	६	९
१८	११	बु	७	२८	८	३६	उ.भा	६०	०	-	-	वै	१२	१७	१०	३१	बा	७	२८	८	३६
१९	१२	गु	१३	२२	१०	५७	उ.भा	३	५५	७	१०	वि	१४	२९	११	२३	तै	१३	२२	१०	५७
२०	१३	शु	१८	४२	१३	४	रे	१०	४४	९	५३	प्री	१६	१४	१२	५	व	१८	४२	१३	४
२१	१४	श	२३	१३	१४	५२	अ	१६	४८	१२	१८	आ	१७	२४	१२	३२	श	२३	१३	१४	५२
२२	३०	र	२६	४७	१६	१७	भ	२१	५८	१४	२१	सौ	१७	५०	१२	४२	ना	२६	४७	१६	१७

रा. मि.	दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	प्रतिपदा तिथि क्षय:
८	३२	५०	५	४५	१८	५३	१६	१४	28	वृ. १२।३३	०	१३	३८	५९	[illegible]	२०	२५	०६	३७	रोहिणी में शुक्र प्रवेश २८।६, आर्द्रा ४ गुरु: प्रवेश १९।५३, A
९	३२	५४	५	४४	१८	५३	१७	१५	29	वृश्चिक	०	१४	३७	१७	१७	२१	३२	०७	२२	भ. १३।३८ से २४।४२ तक, वक्री ज्ये. २ प्लूटो १४।११
१०	३२	५८	५	४३	१८	५४	१८	१६	30	ध. १५।४१	०	१५	३५	३४	१५	२२	३५	०८	११	अनसूया जयन्ति, **कृष्ण चतुर्थी व्रतम्**
११	३३	१	५	४२	१८	५५	१९	१७	1M	धनु	०	१६	३३	४९	१४	२३	३४	०९	०३	मई मास प्रा. ता. ३१, गुरु तेग बहादुर जयंती (प्रा. मत से), B
१२	३३	५	५	४१	१८	५५	२०	१८	2	म. [illegible]	०	१७	३२	३	१२	२४	००	०९	५९	भ. २३।३ से, मुनि सुव्रतनाथ जन्म जैन
१३	३३	८	५	४०	१८	५६	२१	१९	3	मकर	०	१८	३०	१५	१०	००	२५	१०	५६	भ. ११।२८ तक, रोहिणी में बुध प्रवेश २२।४०, गुरु अर्जुन देव C
१४	३३	१२	५	४०	१८	५६	२२	२०	4	मकर	०	१९	२८	२५	९	०१	११	११	५३	रोहिणी ४ में शनि: ११।१८, **कालाष्टमी**, चेहल्लम शहीद करबला
१५	३३	१५	५	३९	१८	५७	२३	२१	5	कुं. [illegible]	०	२०	२६	३४	८	०१	५१	१२	४९	**पंचक ९।२ से प्रारम्भ**, महापात १७।३ से २२।५६ तक
१६	३३	१९	५	३८	१८	५७	२४	२२	6	कुंभ	०	२१	२४	४२	६	०२	२७	१३	४३	भ. १६।५७ से, मुनि सुव्रतनाथ जन्म जैन
१७	३३	२२	५	३७	१८	५८	२५	२३	7	मी. २१।३०	०	२२	२२	४८	५	०२	५९	१४	३६	भ. ६।९ तक, **वरूथिनी एका. व्रत (स्मार्त)**, रवीन्द्र नाथ टैगोर D
१८	३३	२६	५	३७	१८	५९	२६	२४	8	मीन	०	२३	२०	५३	३	०३	२९	१५	२८	वरूथिनी एका. व्रत (वै), श्री वल्लभाचार्य ज., आखरी चहार शम्बा
१९	३३	२९	५	३६	१९	०	२७	२५	9	मीन	०	२४	१८	५६	२	०३	५८	१६	१९	मृगशिरा में मंगल प्रवेश १०।५६, मृगशिरा में शुक्र प्रवेश २८।१०, E
२०	३३	३२	५	३५	१९	०	२८	२६	10	मे. ९।५३	०	२५	१६	५८	१	०४	२७	१७	१२	भ. १३।४ से २६।० तक, **पंचक ९।५३ तक, मास शिवरात्री व्रत**
२१	३३	३५	५	३५	१९	१	२९	२७	11	मेष	०	२६	१४	५९	[illegible]	०४	५८	१८	०६	सूर्य कृत्तिका में १५।५२
२२	३३	३९	५	३४	१९	१	३०	२८	12	वृ. २०।४८	०	२७	१२	५८	५७	०५	३०	१९	०२	देव पितृकार्ये अमावस्या, श्री शुकदेव ज., मेला पिंजोर (हरि.) F

A व्यतिपात योग १६।४७ तक B विश्व मजदूर दिवस C जयंती (प्राचीन मत से), शीतला पूजन (बूढ़ा बासोड़ा), ठंडा (बासी) भोजन करना
D जयन्ति, दशमी तिथि वृद्धि E प्रदोष व्रतम् F शहादते ईमाम हसन (मु.)

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

वैशाख कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ४ मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	९	१	१	२	१	१	१	७	१०	९	७
१९	१६	१९	१०	१७	१६	१९	२५	२५	४	१७	२३
२८	२	४९	१७	३१	८	५८	५७	५७	३५	४	१४
२५	४०	५९	१	४१	२६	१७	४६	४६	१०	२०	२५
५८	[illegible]	४०	५६	९	३२	७	३	३	१	०	१
९	४५	१५	३३	५४	४३	६	११	११	२५	१८	१६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मं.बु.शु.श. रा.२ | १२ | ११ ह. | गु. ३ | १सू. | ४ | १०चं.ने. | ५ | ७ | ९ | ६ | ८के.प्लू.

ता. १२ मई ❖ वैशाख कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

मं.बु.शु.श. रा.२ | १२ | १सू. चं. | ११ ह. | गु. ३ | ४ | १० ने. | ५ | ७ | ९ | ६ | ८ के.प्लू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
०	०	१	१	२	१	१	१	७	१०	९	७
२७	२२	२५	१५	१८	२५	२०	२५	२५	४	१७	२३
१२	५	११	३०	५३	४८	५६	३२	३२	४५	५	३
५८	५८	७	३१	३७	५६	१०	२१	२१	१३	४६	४५
५७	[illegible]	४०	१६	१०	७२	७	३	३	१	०	१
५७	५१	१	२५	३९	२१	१३	११	११	२	२	२५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वैशाख मास में ५ रविवार होना शुभ नहीं है। पंचार्क योग वैशाख **वृष्टिगर्भ विनाशिनी**। अतः वर्षा की कमी से मौसम गर्म होकर चौपायों, बालकों व वृद्धों में रोगोत्पत्ति एवं प्रकृति प्रकोप से धन जन हानि होगी। वृष राशि पर पांच ग्रहों का योग पश्चिमी राष्ट्रों व चीन, जापान तथा आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में युद्धोन्मादकारी फल कारक है। **एक राशौ यदा यान्ति चत्वार पंच खेचराः। प्लावयन्ति मही सर्वा रुधिरेण जलेन वा॥** पक्ष में राजनैतिक हलचल बढ़ कर कई राज्यों में सत्ता परिवर्तन होगी और पूर्वी राज्यों में आतंकवादी गतिविधियां तेज होंगी। तेज गर्म वायु के तूफानी प्रकोप से आकाशीय यात्राओं में अनियमितता बनेगी। व्यापारियों को भावों के उतार-चढ़ाव से दिशा शून्यता बनकर मानसिक भय व्याप्त होगा। **तेजी मन्दी विचार**-वक्री ज्येष्ठा २ में प्लूटो का प्रवेश सभी व्यापारिक वस्तुओं में विपरीत परिवर्तन करेगा। रुई, सूत, कपास व वस्त्रों में तेजी तथा गेहूँ, चावल, मूंग, मोंठ, चना में मन्दी कारक फल होगा। गुड़, चीनी, शक्कर के भावं में उतार-चढ़ाव से व्यापारियों में खलबली रहेगी। **शनि सौम्य कुजाश्चैव शुक्र युक्तो भवेद्यदि। तदाऽति वायुर्दुर्भिक्षं जलनाशकरास्तथा॥** मास में अन्नादि के भावों में अस्थिरता रहेगी। पक्षान्त में चावल, गेहूँ, गुड़, सरसों में तेजी के झटके आयेंगे। **आकाश लक्षण**-रोहिणी में शुक्र का प्रवेश व पक्ष में तिथि वृद्धि होने से गर्मी का प्रकोप बढ़ेगा। गर्म लू चलेगी। बिहार, हिमाचल प्रदेश, पश्चिमी बंगाल आदि प्रान्तों में खण्ड वर्षा होगी। राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, गुजरात व पंजाब के कुछ स्थानों पर बूंदा-बांदी व बादल घटाएं रहेंगी। पक्ष में वायु प्रकोप से आंध्रा, महाराष्ट्र, केरल, तमिलनाडु में जन धन क्षति योग है। **शकुन विचार**-वैशाख कृष्ण ११ को मेघ या बादल चाल हो तो आने वाला वर्ष धान्यादि के उत्पादन हेतु उत्तम रहेगा। यथा-**वैशाख बदी एकादशी प्रबल मेघ को जान। धान्य बीज खेती करो अच्छा संवत् जान॥** अमावस्या को आंधी तूफान आने पर तेजी की संभावना होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वैशाख शुक्ल पक्ष-3

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. १३ से २६ मई सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २३ वैशाख से ५ ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२३	१	चं	२९	१९	१७	१७	कृ	२६	८	१६	१	आ	१७	२९	१२	३३	बव	२९	१९	१७	१७	३३	४२	५	३३	१९	२	३१	२९	13	वृष	०	२८	१०	५५	[illegible]	०६	०६	२०	००	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, देवदामोदर पुण्यम्, वक्री नेप. १८।१६
२४	२	मं	३०	४८	१७	५२	रो	२९	१७	१७	१५	अति	१६	१९	१२	४	बा	०	१२	५	३८	३३	४५	५	३३	१९	३	[illegible]	[illegible]	14	वृष	०	२९	८	५१	५४	०६	४७	२०	५९	परशुराम जयंती, रवि उल्ल अव्वल मु. मास ३ प्रा., सूर्य वृष में A
२५	३	बु	३१	११	१८	१	मृग	३१	२२	१८	५	सु	१४	१८	११	१५	तै	१	८	५	५९	३३	४८	५	३२	१९	३	२	२	15	मि. ५।४३	१	०	६	४५	५३	०७	३३	२१	५८	संक्रांति पुण्यकाल, अक्षय तृतीया (आखा तीज), त्रेता युगादि B
२६	४	गु	३०	२८	१७	४३	आ	३२	२३	१८	२९	धृ	११	२६	१०	६	व	०	५९	५	५५	३३	५१	५	३१	१९	४	३	३	16	मिथुन	१	१	४	३८	५१	०८	२६	२२	५५	भ. ५।५५ से १७।४३ तक, वैनायक ४ व्रत
२७	५	शु	२८	३९	१६	५८	पुन	३२	१८	१८	२६	शू	७	४१	८	३५	बा	२८	३९	१६	५८	३३	५४	५	३१	१९	४	४	४	17	क. १२।५९	१	२	२	२९	५०	०९	२४	२३	४८	श्री आद्यशंकराचार्य जयंती, श्री सूरदास जयंती, श्री रामानुजाचार्य C
२८	६	श	२५	४३	१५	४८	पु	३१	८	१७	५७	गं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	२५	४३	१५	४८	३३	५६	५	३०	१९	५	५	५	18	कर्क	१	३	०	१९	४७	१०	२६	२४	००	पुन. १ में गुरु ८।४, श्री रामानुजाचार्य जं. (उ.भारते), D
२९	७	र	२१	४३	१४	११	श्ले	२८	५४	१७	३	ध्रु	५१	९	२५	५७	व	२१	४३	१४	११	३३	५९	५	३०	१९	६	६	६	19	सिं. १७।३	१	३	५८	६	४६	११	३१	२४	३६	भ. १४।११ से २५।१४ तक, मिथुन में मंगल प्रवेश ११।१३. E
३०	८	चं	१६	४३	१२	१०	म	२५	४२	१५	४६	व्या	४४	२	२३	६	बव	१६	४३	१२	१०	३४	२	५	२९	१९	६	७	७	20	सिंह	१	४	५५	५२	४४	१२	३६	२५	१९	सीताष्टमी, दुर्गाष्टमी, बगलामुखी जयंती
३१	९	मं	१०	५०	९	४९	पूफा	२१	३८	१४	८	ह	३६	१५	१९	५९	कौ	१०	५०	९	४९	३४	५	५	२९	१९	७	८	८	21	कं. १५।५१	१	५	५३	३६	४३	१३	४०	२५	५९	आर्द्रा में शुक्र प्रवेश ६।३, सायन मिथुन में सूर्य १९।३
ज्ये १	१०	बु	४	१५	७	१०	उफा	१६	५५	१२	१४	व	२७	५९	१६	४०	ग	४	१५	७	१०	३४	७	५	२८	१९	७	९	९	22	कन्या	१	६	५१	१९	४१	१४	४५	२६	३६	भ. १७।४६ से २८।२० तक, मोहिनी एकादशी व्रत स्मार्त, F
०	११	बु	५७	१०	२८	२०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथि क्षयः D चन्दन छठ (बंगाल), महापात २८।२८ से.
२	१२	गु	४९	५३	२५	२५	ह	११	४६	१०	१०	सि	१९	२४	१३	१४	बव	२३	३२	१४	५३	३४	१०	५	२८	१९	८	१०	१०	23	तु. २।१७	१	७	४९	०	३९	१५	५०	२७	१२	मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), रुक्मिणी द्वादशी
३	१३	शु	४२	४१	२२	३२	चि	६	२९	८	३	व्य	१०	४५	९	४६	कौ	१६	१६	११	५८	३४	१२	५	२७	१९	८	११	११	24	तुला	१	८	४६	३९	३८	१६	५६	२७	५०	प्रदोष व्रत, अशोक त्रि रात्रि व्रत, व्यतिपात ९।४६ तक
४	१४	श	३५	५४	१९	४९	स्वा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	९	१३	९	९	३४	१४	५	२७	१९	९	१२	१२	25	वृ. २२।३६	१	९	४४	१७	३७	१८	०३	२८	२९	भ. १९।४९ से, सूर्य रोहिणी में प्रवेश १२।३, श्री नृसिंह जयंती, G
५	१५	र	२९	५०	१७	२३	अनु	५३	६	२६	४१	शि	४६	५४	२४	१२	वि	२	४६	६	३३	३४	१६	५	२७	१९	१०	१३	१३	26	वृश्चिक	१	१०	४१	५४	३६	१९	११	२९	११	भ. ६।३३ तक, सत्य व्रत, वैशाखी पूर्णिमा पुण्यं, बुद्ध पूर्णिमा, H

A २६।४२, मु. ३० सूती, बुध वक्री २३।३४ B कल्पादि, श्री मातंगी जयंती, बद्री केदार नाथ यात्रा, वर्षी तप समापन (जैन), शुक्र मिथुन में प्रवेश १६।५. C जयंती (द.भारते) बुध अस्त पश्चि. २७।३६. E गंगोत्पत्ति, गंगा सप्तमी, गंगा पूजनम्, महापात १०।२८ तक F भा. ज्येष्ठारम्भ, शनि अस्त पश्चि. १३।०४, G छिन्नमस्ता जयंती, गुरु अमरदास जयंती (प्राचीन मत से), पूर्णिमा व्रत, ईद-ए-मिलाद बाराहवफात H कूर्म जयंती, वैशाख स्नान समाप्त, यम प्रीत्यर्थ जल कुंभदानम्, पीपल पूजनम्

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

वैशाख शु. ८ चन्द्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २० मई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	४	२	१	२	२	१	१	७	१०	९	७
४	७	०	१५	२०	५	२१	२५	२५	४	१७	२२
५५	१५	३०	२५	२१	२६	५६	६	६	५२	५	५२
५२	३८	१९	२९	११	२६	१	५४	५४	१३	५	४
५७	[illegible]	३९	२०	११	७१	७	३	३	०	०	१
४८	१०	४५	२४	१८	५८	३५	११	११	३९	१४	३१
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गु.शु.मं. ३ | १ | सू.रा. श.बु. २ | १२ | ४ | ५ चं. | ११ ह. | ६ | ८ के.प्लू. | १० ने. | ७ | ९

पक्ष के आरम्भ में ही बुध व नेपच्यून का वक्र होना तथा मंगलवारी संक्रान्ति होना। विश्व के कई राष्ट्रों में गृह क्लेश, आराजकता, विग्रह, आणविक प्रतिस्पर्धा बनकर उद्धोन्माद बढ़ेगा। कहीं शासन सत्ता का परिवर्तन अथवा प्रमुख शासक का निधन संभव। यथा-**कृष्णे वृद्धिर्क्षयं शुक्ले, मन्दार्क कुज संक्रमः। प्रजाभिः विह्वला मेघा छत्र भंगं तदा भवेत्॥** गुरु + शुक्र + मंगल का एक राशि में योग तथा पश्चिमास्त शनि यूरोप, ब्रिटेन, जर्मनी, मुस्लिम राष्ट्र ईराक, इरान तथा ईशान कोणीय राष्ट्रों चीन, जापान, इजरायल, उत्तरी अमेरिका आदि में भूकम्प, भूस्खलन, वाहन यान दुर्घटनाएं आदि प्राकृतिक प्रकोप एवं षड्यंत्रकारी युद्ध संरचना का भय उदय होगा। यथा-**गुरु शुक्रो यदैकस्थो नर युद्धं तदा भवेत। अकाले वा भवेद् वृष्टिर्जगत्यां नात्र संशयः॥** दक्षिणी प्रान्तों आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र व केरल, तमिलनाडु आदि में तूफान चक्रवात, अतिवर्षण आदि प्राकृतिक प्रकोपों का भय बना रहेगा। उत्तरी-पूर्वी प्रान्तों में आन्दोलन-विग्रह तथा आंतकवादी गतिविधियों से शासकों में चिन्ता वृद्धि रहेगी तथा मन्त्री मण्डल में परिवर्तन। **तेजी मन्दी विचार-** पक्ष प्रारम्भ में चन्द्रदर्शन मु. ४५ व वृष संक्रान्ति मु. ३० से धान्यों गेहूं, मूंग, मोठ, चावल, जौ, ज्वार में मन्दी का संचार रहकर शु. ७ के बाद झटके के साथ तेजी का संचार होगा। यथा-**मिथुने च यदा भौमः मेघक्ष प्रबलो भवेत्। आरक्तं सर्वद्रव्याणि महर्घाणि भवंति ते॥** अतः लाल रंग की वस्तुएं और मसाले के सामान मिर्च, दालचीनी, जीरा, तेजपत्ता आदि में तेजी होगी। रस पदार्थों गुड़ शक्कर, चीनी में उछाले की तेजी होगी। **आकाश लक्षण-** पक्षारंभ में गर्म वायु के झोंके चलेंगे। दक्षिणी प्रान्तों में वायु व वर्षा से हानि योग है। पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार में खण्ड वर्षा होगी। राजस्थान, गुजरात में वर्षा का अवरोध एवं तापमान तेज होगा। बादलों का आडम्बर बार-बार बनता रहेगा। हिमाचल प्रदेश व आसाम के पर्वतीय क्षेत्रों पर कुछ स्थानों पर वर्षा होगी। **शुकन विचार-** वैशाख शुक्ल पक्ष की नन्दा भद्रा व जया तिथियों को बादल गर्जन वायुकेसाथ वर्षा होने पर खरीफ की फसलों में उपज श्रेष्ट होती है। यथा-**वैशाखे बादल पचरंग, अथवा चमके बिजली संग। तो अनेक घन जल बरसाई, सावन में बहु अन्न निपजाई॥**

गु.शु.मं. ३ | १ | सू.रा. श.बु. २ | १२ | ४ | ५ | ११ ह. | ६ | ८ चं. के.प्लू. | १० ने. | ७ | ९

ता. २६ मई ❖ वैशाख शु. १५ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	७	२	१	२	२	१	१	७	१०	९	७
१०	४	४	१२	२१	१२	२२	२४	२४	४	१७	२२
४१	६	२८	४०	३०	३७	४१	४७	४७	५५	३	४२
५४	२३	२४	४२	३	१७	४९	५०	५०	२५	१४	५०
५७	८५१	३९	३३	११	७१	७	३	३	०	०	१
३६	२०	३४	४५	४३	३६	४१	११	११	२२	२५	३४
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	मा	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष-४ श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २७ मई से १० जून सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ६ से २० ज्येष्ठ तक। रवि उत्तरायणे, उत्तर गोले, ग्रीष्म ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि	चन्द्रास्त घं.	मि	
६	१	चं	२४	५१	१५	२३	ज्ये.	५०	३६	२५	४१	शि	४०	३१	२१	३९	कौ	२४	५१	१५	२३	३४	१९	५	२७	१९	१०	१४	१४	27	ध. २५।४१	१	११	३९	३०	[illegible]	२०	१७	०५	५८	श्री जवाहर लाल नेहरू पुण्य दिवस, ज्येष्ठ जिनवर व्रत प्रारम्भ जैन
७	२	मं	२१	१२	१३	५५	मू	४९	३३	२५	१५	सा	३५	१८	१९	३३	ग	२१	१२	१३	५५	३४	२१	५	२६	१९	११	१५	१५	28	धनु	१	१२	३७	४	३३	२१	१९	६	४९	भ. २५।२५ से, देव ऋषि नारद जयंती वीणादि वाद्य यंत्र दान दिवस
८	३	बु	१९	९	१३	६	पू.षा.	५०	९	२५	२९	शु	३१	२३	१७	५९	वि	१९	९	१३	६	३४	२३	५	२६	१९	११	१६	१६	29	धनु	१	१३	३४	३७	३२	२२	१५	७	४५	भ. १३।६ तक, श्री आनन्दमयी मां जयन्ती, कृष्ण चतुर्थी व्रत, A
९	४	गु	१८	४९	१२	५८	उ.षा.	५२	२९	२६	२५	शु	२८	५३	१६	५९	बा	१८	४९	१२	५८	३४	२५	५	२६	१९	१२	१७	१७	30	म. ७।४०	१	१४	३२	९	३२	२३	५	८	४३	मृगशिरा १ में शनि प्रवेश २८।१४, वक्री कृतिका में बुध B
१०	५	शु	२०	१६	१३	३२	श्र	५६	३१	२८	२	ब्र	२७	४६	१६	३२	तै	२०	१६	१३	३२	३४	२७	५	२६	१९	१२	१८	१८	31	मकर	१	१५	२९	४१	३०	२३	४८	९	४१	महापात ८।२५ से १७।०८तक
११	६	श	२३	२२	१४	४६	ध	६०	०	—	—	ऐं	२७	५५	१६	३५	व	२३	२२	१४	४६	३४	२९	५	२५	१९	१३	१९	१९	J1	कुं. १७।३	१	१६	२७	११	३०	२४	००	१०	३८	भ. १४।४६ से २७।३६ तक, पंचक प्रारम्भ १७।३ से, पुनर्वसु में C
१२	७	र	२७	५१	१६	३४	ध	२	००	६	१३	वै	२९	७	१७	४	बव	२७	५१	१६	३४	३४	३१	५	२५	१९	१३	२०	२०	2	कुम्भ	१	१७	२४	४१	२९	२४	२६	११	३४	
१३	८	चं	३३	१८	१८	४४	श	८	३६	८	५१	वि	३१	३	१७	५०	बा	०	३०	५	३७	३४	३२	५	२५	१९	१४	२१	२१	3	मी. २१।१	१	१८	२२	१०	२८	२४	५९	१२	२७	कालाष्टमी मेला चानाणी माताजी, दादू दयाल पुण्यम्, वक्री हर्षल ५।५८
१४	९	मं	३९	१३	२१	६	पू.भा.	१५	५०	११	४५	प्री	३३	२०	१८	४५	तै	६	१४	७	५४	३४	३४	५	२५	१९	१४	२२	२२	4	मीन	१	१९	१९	३८	२८	२५	३०	१३	२०	पुनर्वसु २ में गुरु प्रवेश १०।१
१५	१०	बु	४५	२	२३	२५	उ.भा.	२३	९	१४	४०	आ	३५	३७	१९	३९	व	१२	१०	१०	१६	३४	३६	५	२५	१९	१५	२३	२३	5	मीन	१	२०	१७	६	२७	२५	५८	१४	११	भ. १०।१६ से २३।२५ तक, बुध पूर्व में उदय १५।८
१६	११	गु	५०	१७	२५	३१	रे	३०	५	१७	२६	सौ	३७	३०	२०	२४	बव	१७	४५	१२	३०	३४	३७	५	२४	१९	१५	२४	२४	6	मे. १७।२६	१	२१	१४	३३	२६	२६	२८	१५	२२	पंचक समाप्त १७।२६ तक, अपरा एकादशी व्रत सबका
१७	१२	शु	५४	३४	२७	१४	अ	३६	११	१९	५३	शो	३८	४२	२०	५३	कौ	२२	३४	१४	२६	३४	३८	५	२४	१९	१६	२५	२५	7	मेष	१	२२	११	५९	२५	२६	५७	१५	५६	मधुसूदन द्वादशी, श्री अनन्त नाथ जन्म जैन
१८	१३	श	५७	३९	२८	२८	भ	४१	११	२१	५३	अ	३९	०	२१	०	ग	२६	१६	१५	५५	३४	४०	५	२४	१९	१६	२६	२६	8	वृ. २८।२८	१	२३	९	२४	२५	२७	२१	१६	५२	भ. २८।२८ से, सूर्य मृगशिरा में प्रवेश ९।५६, शनि प्रदोष व्रतम्, D
१९	१४	र	५९	२३	२९	९	कृ	४४	५४	२३	२२	सु	३८	१७	२०	४३	वि	२८	४१	१६	५३	३४	४१	५	२४	१९	१७	२७	२७	9	वृष	१	२४	६	४९	२४	२८	४	१७	४९	भ. १६।५३ तक, शुक्र कर्क में प्रवेश २१।२, मास शिवरात्रि
२०	३०	चं	५९	४५	२९	१८	रो	४७	१८	२४	१९	धृ	३७	३०	२०	०	चतु	२९	४४	१७	१८	३४	४२	५	२४	१९	१७	२८	२८	10	वृष	१	२५	४	१३	२३	२८	४३	१८	४९	सोमवती ३० भावुका अमा., शनि जन्म दिन, देवपितृ कार्येऽमावस्या E

A आर्द्रा में मंगल प्रवेश १३।२३ B २५।३५ चौ.चरण सिंह पुण्य तिथि C शुक्र प्रवेश १०।१३ जून मास प्रा. ता. ३० D बुध मार्गी ११।५, वट सावित्री व्रतारंभ
E वट सावित्री व्रत, ग्रस्तोदित खण्डग्रास सूर्यग्रहण (पूर्वी भारते दृश्य)

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ज्येष्ठ कृ. ८ चन्द्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१०	२	१	२	२	१	१	७	१०	९	७
१८	१८	९	८	२३	२२	२३	२४	२४	४	१६	२२
२२	१८	४४	३४	५	८	४३	२२	२२	५६	५९	३०
१०	५०	१५	३४	३०	२७	४२	२३	२३	५९	२	७
५७	३११	३९	२०	१२	७१	७	३	३	०	०	१
२८	५०	२२	४८	१२	१२	४७	११	११	२	३९	३६
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

गु. ३ मं. शु. | १ | सू.श. बु.रा.२ | १२ | ४ | ५ | ११ चं. ह. | ६ | ८ प्लू. के. | १० ने. | ७ | ९

मास में पांच सोमवार व सोमवती अमावस्या से जनता में संतोष की लहर व उग्रतम भय में कमी कारक फल शास्त्रकारों ने लिखे हैं यथा- **सोमस्य पंचवारास्यु यत्रमासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धिः स्यात्सुखं भवति सर्वदा॥** सरकार की नई नीतियों का व्यापारिक कामों में प्रभाव बढ़ कर व्यवसायिकों में खुशहाली का संचार होगा। जीवनोपयोगी वस्तुओं में मन्दा। पक्षान्त में पंच ग्रही योग एवं वक्री बुध का कृतिका में प्रवेश मुस्लिम राष्ट्रों अरब, इजरायल, तालीबान, अफगानिस्तान व पाकिस्तान में सत्ता विरोधी उपद्रव, आन्दोलन एवं अग्निकाण्ड, बम विस्फोटादि से प्रजा में आतंक रहेगा। यथा- **कृतिकायां बुधे विप्रपीड़ा मेघाल्लता जने। अन्नमल्पं ज्वरं बाधा क्वचिद् विग्रह कारणम्।** स्वार्थी नेतागण अपराधी तत्वों को संरक्षण देंगे जिससे यत्र तत्र झगड़े-फिशाद होकर केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में चिन्ता व्याप्त होगी। सरकारी कामकाज में हड़ताल व आन्दोलनों से अवरोध पैदा होंगे। **तेजी मन्दी विचार**-पक्ष में सूर्य शनि का योग सरसों, मूंगफली, अलसी, अरण्ड व सोयाबीन के तेलों में उतार चढ़ाव के बाद तेजी कारक फलप्रद रहेगा। रुई, कपास, सूती वस्त्रों तथा चना, गेहूँ, चावल आदि धान्यों में मन्दी का संचार रहेगा। वक्री बुध से गुड़, चीनी, शक्कर आदि रस पदार्थ व शेयर बाजारों में विशेष तेजी रहेगी। यथा-**बुधो वक्री यदा जात इक्ष्वादीनां महर्घता। सुभिक्षं सर्व धान्यानां भविष्यति न संशयः॥** चाय, कॉफी व नशीले पदार्थ एवं मशीनी कलपुर्जों में एक तरफा तेजी चलेगी। **आकाश लक्षण**-गुरु व मंगल का योग पक्ष में गर्म हवाओं और तापमान की वृद्धि में सहयोगी होगा। पश्चिमोत्तरीय राजस्थान, पंजाब, गुजरात व हरियाणा में तापमान तेज तथा गुजरात का दक्षिणी पूर्वी भाग, दक्षिणी राजस्थान, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, म.प्र. में खण्ड वर्षा होगी। महाराष्ट्र, केरल, आन्ध्रा, बिहार, आसाम, बंगाल व हिमाचल प्रदेश एवं कश्मीर के इलाकों में तूफानी हवाओं के साथ वर्षा योग है। **शकुन विचार**-जेठ की अमावस्या को बादल चाल होने पर वर्ष में आगे अनावृष्टि रहती है। यथा-**ज्येष्ठ मासे त्वमावस्यां हि दिवा यदि वा निशम्। आकाशे दृश्यते मेघो ह्यनावृष्टिर्भयावहा।** जेठ बदी ५ को दक्षिणी हवा चले, तेलों में आगे तेजी फलप्रद रहेगा।

ता. १० जून ❖ ज्येष्ठ कृ. ३० चन्द्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

३गु.मं. | १ | सू. श. २ बु. रा.चं. | १२ | ४ शु. | ५ | ११ ह. | ६ | ८ के. प्लू. | १० ने. | ७ | ९

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१	१	२	१	२	३	१	१	७	१०	९	७
२५	१३	१४	७	२४	०	२४	२४	२४	४	१६	२२
४	१४	१९	३२	३१	२५	३८	०	०	५५	५३	१८
१३	७	२१	१५	५९	०	१५	७	७	४७	५०	५१
५७	७३३	३९	८	१२	७०	७	३	३	०	०	१
२३	४	१२	२३	३३	४०	४७	११	११	२२	५२	३७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-५

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ११ से २४ जून सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २१ ज्येष्ठ से ३ आषाढ़ तक। रवि उत्तर-दक्षिणायने उत्तर गोले, ग्रीष्म-वर्षा ऋतु।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२१	१	मं	५८	५१	२८	५६	मृ	४८	२६	२४	४६	शू	३३	४०	१८	५२	किं.	२९	२७	१७	११	३४	४३	५	२४	१९	१७	२९	२९	11	मि. १२।३६	१	२६	१	३६	[illegible]	०५	२८	१९	४९	श्री गंगा दशाश्वमेध स्नान प्रारम्भ-करवीर व्रत
२२	२	बु	५६	४६	२८	७	आ	४८	२०	२४	४४	गं	२९	५२	१७	२१	या	२७	५६	१६	३५	३४	४४	५	२४	१९	१८	३०	३०	12	मिथुन	१	२६	५८	५९	२२	०६	२०	२०	४८	चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता, शुक्र पुष्य में प्रवेश १६।५९
२३	३	गु	५३	४०	२६	५२	पु	४७	१४	२४	१८	वृ	२५	१२	१५	२९	तै	२५	२०	१५	३२	३४	४५	५	२४	१९	१८	३१	१.आ	13	क. १८।४७	१	२७	५६	२१	२१	०७	१७	२१	४३	रवि उल्ल आखिर मु. मास ४ प्रा., रंभा ३, महाराणा प्रताप जयंती, A
२४	४	शु	४९	४३	२५	१८	पु	४५	१७	२३	३१	ध्रु	१९	४६	१३	१९	व	२१	४७	१४	७	३४	४५	५	२४	१९	१८	३२	२	14	कर्क	१	२८	५३	४२	२०	०८	२०	२२	३४	भ. १४।७ से २५।१८ तक, विनायक ४, गुरु अर्जुन देव बलिदान B
२५	५	श	४५	६	२३	२७	आ	४२	३८	२२	२७	व्या	१३	४२	१०	५३	बव	१७	२९	१२	२४	३४	४६	५	२४	१९	१९	आ.	३	15	सिं. २२।२७	१	२९	५१	२	१९	०९	२४	२३	१९	सूर्य मिथुन में ९।१६, संक्रांति पुण्यम् मु. १५ बैठी महर्घता, श्रुति पंचमी (जैन)
२६	६	र	३९	५६	२१	२३	म	३९	२६	२१	११	ह	७	८	८	१६	कौ	१२	३४	१०	२६	३४	४६	५	२५	१९	१९	२	४	16	सिंह	२	०	४८	२१	१८	१०	२९	२४	००	बुध रोहिणी में २६।१२, विन्ध्यवासिनी पूजा, जामित्र षष्ठी व +
२७	७	चं	३४	२३	१९	१०	पूफा	३५	५२	१९	४५	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	७	११	८	१७	३४	४७	५	२५	१९	१९	३	५	17	कं. २५।२३	२	१	४५	३९	१८	११	३३	२४	००	भ. १९।१० से, मंगल अस्त पश्चि. १८।४७ + अरण्य षष्ठी व्रत (बंगाल)
२८	८	मं	२८	३६	१६	५१	उफा	३२	३	१८	१४	व्य	४५	३६	२३	३९	वि	१	३०	६	१	३४	४७	५	२५	१९	२०	४	६	18	कन्या	२	२	४२	५७	१६	१२	३७	२४	३७	भ. ६।१ तक, दुर्गाष्टमी, धूमावती ज., पुन. में मंगल प्र. २२।३१, C
२९	९	बु	२२	४३	१४	३०	ह	२८	१०	१६	४१	व	३८	११	२०	४१	कौ	२२	४३	१४	३०	३४	४७	५	२५	१९	२०	५	७	19	तु. २७।५८	२	३	४०	१३	१६	१३	४०	२५	१३	श्री महेश नवमी (माहेश्वरी जाति पर्व)
३०	१०	गु	१६	५३	१२	१०	चि	२४	२०	१५	९	प	३०	५१	१७	४५	ग	१६	५३	१२	१०	३४	४८	५	२५	१९	२०	६	८	20	तुला	२	४	३७	२९	१५	१४	४४	२५	४९	भ. २३।०२ से, पुन. ३ में गुरुः प्रवेश ६।४४, गंगा दशहरा
३१	११	शु	११	१५	९	५५	स्वा	२०	४४	१३	४३	शि	२३	४२	१४	५४	वि	११	१५	९	५५	३४	४८	५	२५	१९	२०	७	९	21	तुला	२	५	३४	४४	१४	१५	४९	२६	२६	भ. ९।५५ तक, निर्जला एका. व्रत सबका, मेला बहिरे भटिण्डा D
आ१	१२	श	६	१	७	५०	वि	१७	३३	१२	२६	सि	१६	५६	१२	१२	बा	६	१	७	५०	३४	४८	५	२६	१९	२१	८	१०	22	वृ. ६।४४	२	६	३१	५८	१४	१६	५४	२७	०५	आर्द्रा में सूर्य: प्रवेश ८।५२, शनि प्रदोष व्रत, रा. आषाढ़ारम्भ, रोहिणी E
२	१३	र	१	२०	५	५८	अ	१४	५८	११	२५	सा	१०	३९	९	४१	तै	१	२०	५	५८	३४	४८	५	२६	१९	२१	९	११	23	वृश्चिक	२	७	२९	१२	१३	१८	००	२७	४९	भ. २८।२४ से, आश्लेषा में शुक्र: २७।१, चम्पक १४ (बंगाल), F
०	१४	र	५७	२६	२८	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षय:
३	१५	चं	५४	३०	२७	१४	ज्ये	१३	१२	१०	४३	शु	५	१	७	२६	वि	२५	४९	१५	४६	३४	४७	५	२६	१९	२१	१०	१२	24	ध. १०।१३	२	८	२६	२५	१३	१९	०३	२८	३९	भ. १५।४६ तक, सत्य व्रत, पूर्णिमा व्रत व पुण्यम्, कबीर जयंती, G

A मेला हल्दी घाटी (राज.), महापात २८।१९ से. B दिवस (प्रा. मत से), महापात १४।०८ तक C व्यतिपात २३।३९ तक, मेला क्षीर भवानी (कश्मीर) D (पं.), चंपक १२, सायन कर्क में सूर्य १८।५८, रवि दक्षिणायणे-वर्षा ऋतु प्रा., गायत्री जयंती E ४ में राहु व ज्येष्ठा २ में केतु २०।१९, वट सावित्री व्रतारम्भः (गुजरात) F ग्यारहवीं शरीफ फातिहायजयहम मु., महापात २६।३९ से G वट सावित्री व्रत पूर्ति (गुजरात प्रान्ते), मन्वादि, ज्येष्ठी पूर्णिमा, जिनवर व्रत स. जैन

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

ज्येष्ठ शु. ८ भौमे प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १८ जून

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	५	२	१	२	३	१	१	७	१०	९	७
२	२	१९	१०	२६	९	२५	२३	२३	४	१६	२२
४२	२५	३२	४४	१३	४८	४०	३४	३४	५१	४६	६
५७	२८	२०	२५	३४	१७	३२	४१	४१	३२	१५	४
५७	[illegible]	३९	४३	१२	५०	७	३	३	०	१	१
१६	१	२	३०	५२	३	४५	११	११	४४	४	३५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	अ	—	—	—

कुण्डली (ता. १८ जून): ४ शु. | श. बु. २ रा. | सू. गु. ३ मं. | १ | ५ | ६ चं. | १२ | ७ | ९ | ह. ११ | ८ प्लू. के. | १० ने.

शुक्ला प्रतिपदा को मंगलवार और शनिवारी संक्रान्ति पक्ष विश्व में कई राष्ट्रों के शासकों में आन्तरिक मनमुटाव पैदा हो कर तनाव की स्थिति बनेगी। यथा-सौरिश्च वारे रवि संक्रमश्चेद्दुर्भिक्षमायाति च सर्व धान्यम्। पृथवी सरोगा नृपतेरतीव दृश्येत भूमौ युधि दारुणं भयम्॥ चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, तुर्की आदि यवन राष्ट्रों की नीति विश्व में हलचल पैदा करेगी और हिंसाओ के घटनाएं बढ़ेगी। दक्षिणी अफ्रीका, यूरोप, आस्ट्रेलिया व दक्षिणी अमेरिका में प्राकृतिक प्रकोप भूकम्प व महामारी आदि का भय होगा। आर्द्रा नक्षत्र में मंगल अस्त होने पर देश की वित्तीय नीति खराब होकर व्यापारिक लेन-देन में कमी होगी। जिससे भ्रष्टाचार व मंहगाई बढ़ेगी। नेतागण विलिप्त होंगे। जिनके विरोध में प्रभाव प्रदर्शन, तोड़फोड़ व अग्निकाण्ड होंगे। कानून व्यवस्थाएं अस्त-व्यस्त होंगी। तेजी मन्दी विचार-बुधवार को मु. ४५ चन्द्रदर्शन धान्य भावों में मन्दी कारक है। अत: पक्ष आरंभ में चावल गेहूं, मूंग, मोंठ, ज्वार में मन्दा रहे तथा शनिवारी मिथुन संक्रान्ति १५मु. से अचानक तेजी का संचार होगा। चना, गुवार, मूंग, मोंठ में तेजी। सोना, तेज। चांदी में घटाबढ़ी रहेगी। यथा-दैत्यगुरुर्यदाकर्के रसानां वै महर्घता। सर्व धान्य महर्घत्वं मेघाश्च प्रबला भुवि॥ लोहादि धातुएं, शेयर भावों मे तेजी। प्लास्टिक, ऊनी वस्त्रों व चमड़े के सामान में मन्दी रहेगी। आकाश लक्षण-बादलों की घटाओं से आकाश घिरा रहकर पंजाब, हिमाचल प्रदेश, बिहार, बंगाल, कर्नाटका व केरल में वर्षा होगी। राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, उड़ीसा में कहीं-कहीं खण्ड वर्षा होगी। पक्ष के उत्तरार्द्ध में गर्म तेज हवाओं के साथ तापमान में बढ़ोत्तरी होगी। बर्मा व तिब्बत, तमिलनाडु, जापान में भूकम्पों के झटके आयेंगे। शुकन विचार-जेठ मास के शुक्ल पक्ष में यदि तापमान बढ़ा हुआ रहे तो आगे श्रेष्ठ वर्षा होती है। संग्रह नहीं करें आगे मन्दा रहेगा। यथा-ज्येष्ठ मास जो तपै निरासा। तो जानो बिरखा की आसा॥ ज्येष्ठ शुक्ल ५ को बादल दर्शन व दक्षिण हवा रहने पर आगे तेजी का संचार होगा।

ता. २४ जून ❖ ज्येष्ठ शु. १५ चन्द्रे प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. २४ जून): ४ शु. | श. बु. २ रा. | सू. गु. ३ मं. | १ | ५ | ६ | १२ | ७ | ९ | ११ ह. | ८ प्लू. चं. के. | १० ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	७	२	१	२	३	१	१	७	१०	९	७
८	२७	२३	१६	२७	१६	२६	२३	२३	४	१६	२१
२६	१	२६	५	३१	४७	२६	१५	१५	४६	३९	५६
२५	३	६	४४	१६	१४	५३	३६	३६	२५	३२	४५
५७	[illegible]	३८	६७	१३	६९	७	३	३	१	१	१
१३	५८	५३	११	३	३०	४०	११	११	०	१२	३२
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	अ	-	-	-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ कृष्ण पक्ष-६

श्री सं. २०५९
शाके १९२४

ता. २५ जून से १० जुलाई सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ४ से १९ आषाढ़ तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	टिप्पणी
४	१	मं	५२	४५	२६	३२	मू	१२	५९	१०	२६	शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	बा	२३	२८	१४	४९	३४	४७	५	२६	१९	२१	११	१३	25	धनु	२	९	२३	३८	[illegible]	२०	०३	०५	३१	मृगशिरा २ में शनि प्रवेश २२।३३, गुरु हर गोविन्द सिंह जयंती A
५	२	बु	५२	२१	२६	२३	पू.षा	१२	५८	१०	३८	ऐं	५३	३७	२६	५३	तै	२२	२२	१४	२३	३४	४७	५	२६	१९	२१	१२	१४	26	म. १६।४६	२	१०	२०	५१	१२	२०	५६	०६	२८	
६	३	गु	५३	२४	२६	४९	उ.षा	१४	५०	११	२३	वै	५२	०	२६	१५	व	२२	४१	१४	३१	३४	४६	५	२७	१९	२१	१३	१५	27	मकर	२	११	१८	३	१२	२१	४२	०७	२७	भ. १४।३१ से २६।४९ तक, शनि उदय पूर्व में २०।१४
७	४	शु	५५	५६	२७	५०	श्र	१८	८	१२	४३	वि	५१	३३	२६	४	बव	२४	२९	१५	१५	३४	४५	५	२७	१९	२१	१४	१६	28	कुं. २५।३५	२	१२	१५	१५	१२	२२	२३	०८	२६	पंचक आरंभ २५।३५ से, कृष्ण चतुर्थी व्रत, उर्स निजामुद्दीन ओलिया प्रा.
८	५	श	५९	४९	२९	२३	ध	२२	५१	१४	३६	प्री	५२	१०	२६	२०	कौ	२७	४३	१६	३३	३४	४५	५	२७	१९	२१	१५	१७	29	कुंभ	२	१३	१२	२७	१२	२२	५८	०९	२३	मृगशिरा में बुध प्रवेश २२।५१, नाग पंचमी (बंगाल)
९	६	र	६०	००	—	—	श	२८	४८	१६	५९	आ	५३	४०	२६	५६	ग	३२	१२	१८	२१	३४	४४	५	२८	१९	२१	१६	१८	30	कुंभ	२	१४	९	३९	१२	२३	३०	१०	१८	
१०	६	चं	४	४८	७	२३	पू.भा	३५	३८	१९	४४	सौ	५५	४५	२७	४६	व	४	४८	७	२३	३४	४३	५	२८	१९	२२	१७	१९	J1	मी. १३।९	२	१५	६	५१	१३	२४	००	११	११	भ. ७।२३ से २०।३० तक, जुलाई मास ७ प्रा. ता. ३१
११	७	मं	१०	२९	९	४०	उ.भा	४२	५५	२२	३९	शो	५८	४	२८	४२	बव	१०	२९	९	४०	३४	४२	५	२९	१९	२२	१८	२०	2	मीन	२	१६	४	४	१२	२४	००	१२	०३	
१२	८	बु	१६	२१	१२	१	रे	५०	७	२५	३२	अति	६०	०	—	—	कौ	१६	२१	१२	१	३४	४१	५	२९	१९	२२	१९	२१	3	मे. २५।३२	२	१७	१	१६	१३	२४	२९	१२	५४	पंचक समाप्त २५।३२ तक, बुध मिथुन में प्रवेश २९।२२, B
१३	९	गु	२१	४९	१४	१३	अ	५६	३९	२८	९	अति	०	११	५	३४	ग	२१	४९	१४	१३	३४	४०	५	२९	१९	२१	२०	२२	4	मेष	२	१७	५८	२९	१२	२४	५७	१३	४६	भ. २७।११ से, कर्क में मंगल प्रवेश ९।१०
१४	१०	शु	२६	२२	१६	२	भ	६०	०	—	—	सु	१	४५	६	१२	वि	२६	२२	१६	२	३४	३९	५	३०	१९	२१	२१	२३	5	मेष	२	१८	५५	४१	१२	२५	२८	१४	४०	भ. १६।२ तक, गुरु कर्क में प्रवेश १२।२१, शुक्र मघा सिंह में C
१५	११	श	२९	३५	१७	२०	भ	२	३	६	१९	धृ	२	२३	६	२७	बा	२९	३५	१७	२०	३४	३८	५	३०	१९	२१	२२	२४	6	वृ. १२।०७	२	१९	५२	५४	१३	२६	००	१५	३६	सूर्य पुनर्वसु में प्रवेश ८।२९, योगिनी एकादशी व्रत सबका D
१६	१२	र	३१	११	१७	५९	कृ	६	०	७	५५	शू	१	५१	६	१५	कौ	०	३५	५	४५	३४	३६	५	३१	१९	२१	२३	२५	7	वृष	२	२०	५०	८	१४	२६	३७	१६	३५	प्रदोष व्रत, बुध आर्द्रा में प्रवेश २३।१६, महापात २६।२० से — गुरु अस्त पश्चिम
१७	१३	चं	३१	५	१७	५७	रो	८	१९	८	५१	गं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	१	२१	६	३	३४	३५	५	३१	१९	२१	२४	२६	8	मि. २१।१४	२	२१	४७	२१	१३	२७	२०	१७	३५	भ. १७।५७ से, मास शिवरात्री व्रत, महापात ११।०१ तक
१८	१४	मं	२९	२०	१७	१६	मृग	८	५८	९	७	ध्रु	५२	२०	२६	२७	वि	०	२४	५	४१	३४	३३	५	३२	१९	२१	२५	२७	9	मिथुन	२	२२	४४	३५	१४	२८	०९	१८	३६	भ. ५।४१ तक, मंगल पुष्य में १३।१६, बुध अस्त पूर्व में २४।६, E
१९	३०	बु	२६	५	१५	५८	आ	८	४	८	४६	व्या	४६	४२	२४	१३	ना	२६	५	१५	५८	३४	३२	५	३२	१९	२१	२६	२८	10	मि. २६।६	२	२३	४१	४९	१४	२९	०५	१९	३४	देव पितृकार्यऽमावस्या

A (प्रा. मत से) B मेला भून्तर (हिमाचल प्रदेश) कालाष्टमी C प्रवेश १७।२१ D गोपद्म व्रतोद्यापन E गुरु अस्त पश्चिम में २७।३

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

आषाढ़ कृ. ८ बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	११	२	२	२	३	१	१	७	१०	९	७
१७	२०	२९	२८	२९	२७	२७	२२	२२	४	१६	२१
१	२	१५	२१	२९	९	३५	४६	४६	३५	२८	४३
१६	४३	२३	२२	४०	१०	१९	५९	५९	५२	३	२९
५७	७२०	३८	९९	१३	६८	७	३	३	१	१	१
१३	८	४३	१४	१६	३५	३०	११	११	२३	२३	२४
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
आर्द्रा ४	रेवति २	पुन. ३	मृग. २	पुन. ३	अश्ले. ४	मृग. २	रोहि. ४	ज्ये. २	धनि. ४	श्रवण २	ज्येष्ठा २

कुण्डली (ता. ३ जुलाई):
४ शु. | श. बु. रा. २ | ५ | सू. ३ गु. मं. | १ | ६ | १२ चं. | ७ | ९ | ११ ह. | के. ८ प्लू. | १० ने.

इस पक्ष के मध्य में कर्क राशि पर गुरु मंगल का प्रवेश तथा शनि से दृष्ट होना एवं मास में पाँच मंगलवार विश्व में कहीं राष्ट्र नायक का निधन समाचार कारक है। यथा-**यत्र मासे मही सूनोर्जायन्ते पंच वासराः। रक्तेन पूरिता पृथ्वी छत्र भंगस्तदा भवेत्॥** पश्चिमी राष्ट्रों के अनेक भागों में सीमा विवाद व सैन्य शक्तियों के उपयोग से जनता में भय व पीड़ा होगी। वर्मा, बंगला देश, नेपाल, चीन, रूस आदि देशों में प्राकृतिक आपदाओं से जन धन की हानि होगी एवं गृह कलह से जनमानस त्रस्त होगा। नीच राशि के साथ कर्क में गुरु का संयोग दक्षिणी अफ्रीका, अमेरिका व ब्रिटेन, जर्मनी आदि देशों में विग्रहकारी फलप्रद है। यथा-**बृहस्पतिर्यदा कर्के स्वल्पंमेघः प्रवर्षति। राजाभिविग्रहश्चैव दुर्भिक्षं तत्र जायते।** केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल व शासकों में आपसी मतभेद होकर तनाव व विवाद बढ़ने से विकास कार्यों में रुकावट होगी। देश की आर्थिक स्थिति पर विदेशी मुद्राओं का दबाव बनकर वित्तीय स्थिति न्यूनता की ओर अग्रसर होने से प्रभावता पर असर आयेगा। नेताओं में चिन्ताएं व्याप्त होंगी। तेजी मन्दी विचार-गुरुवार को शनि का उदय उड़द, तिल, गेहूँ और चावल आदि धान्यों में पक्षारंभ में तेजी रहकर मन्दे होंगे। व्यापारों में प्रायः हर वस्तु की लाईन बदलेगी। अतः व्यापारी सोच समझ से काम करें। सिंह के शुक्र से सोना, तांबा आदि धातुएं और लाल वस्तुओं तथा चीनी, गुड़ में तेजी रहेगी। यथा-**यदा दैत्य गुरुः सिंहे हेम रक्तं चतुष्पदम्। धान्यानि च महर्घाणि तावच्चैव दिनानि च॥** मिथुन के बुध से पक्ष में चारा घास, लकड़ी में महंगाई बढ़ेगी। आकाश लक्षण-पूर्वी प्रान्तों में अतिवर्षण होकर बाढ़, उत्तरी प्रदेशों, हिमाचल प्रदेश, काश्मीर, पंजाब में वायुवेग से वर्षा होगी। कर्नाटक, महाराष्ट्र, गुजरात, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश व उड़ीसा के दक्षिण पश्चिम भाग में वर्षा, बादलों की घनघोर व बिजली प्रकोप रहेगा। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान व उत्तर प्रदेश में खण्डवृष्टि होगी। मौसम में परिवर्तन होगा। शकुन विचार-आषाढ़ कृष्णा ८ या नवमी के दिन बादल दर्शन एवं बिजली चमके तो सुभिक्ष होता है। यथा-**बदी षाढ़ नव आठवी मेघ छिपावे चन्द। बिरखा धरणी हो भली मिट जावे दुख दरद॥**

ता. १० जुलाई ❖ आषाढ़ कृ. ३० बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. १० जुलाई):
म. ४ गु. | २ श. रा. | ५ शु. | सू. बु. चं. ३ | १ | ६ | १२ | ७ | ९ | ११ ह. | ८ के. प्लू. | १० ने.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
२	२	३	२	३	४	१	१	७	१०	९	७
२३	१८	३	११	१	५	२८	२२	२२	४	१६	२१
४१	७	४६	१	२	६	२७	२४	२४	२५	१८	३३
४९	३०	८	१	५१	५५	१५	४३	४३	२५	६	५९
५७	८४८	३८	१११	१३	६७	७	३	३	१	१	१
१४	२८	३७	३०	२१	४७	२८	११	११	३८	२९	१७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
पुन. २	आर्द्रा ४	पुष्य १	आर्द्रा २	पुन. ४	मघा २	मृग. २	रोहि. ४	ज्येष्ठा २	धनि. ४	श्रवण २	ज्येष्ठा २

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आषाढ़ शुक्ल पक्ष-७ श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ११ से २४ जुलाई सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति २० आषाढ़ से २ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग.मि	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ
२०	१	गु	२१	३८	१८	१०	पुन	५	५०	७	५३	ह	४०	८	२१	३५	व	२१	३८	१८	१०	३४	३०	५	३२	१९	२०	२७	२९	11	कर्क	२	२४	३०	३	[illegible]	०६	०७	२०	२८	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता कारक A जगन्नाथपुरी (उड़ीसा)
२१	२	शु	१६	५	११	५१	पु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	व	३२	५१	१८	४१	कौ	१६	५	११	५१	३४	२८	५	३३	१९	२०	२८	[illegible]	12	सिं. [illegible]	२	२५	३६	१७	१५	०७	१३	२१	१३	जमादि उल अव्वल मु. मास ५ प्रा., मनोरथ २, श्री जगदीश रथ यात्रा A
२२	३	श	९	५८	९	३२	म	५४	९	२७	१३	सि	२५	७	१५	३६	ग	९	५८	९	३२	३४	२६	५	३३	१९	२०	२९	२	13	सिंह	२	२६	३३	३२	१४	०८	२०	२१	५९	भ. २०।१६ से, विनायक ४
२३	४	र	३	२९	६	५८	पुफा	४१	३७	२५	२५	व्य	१७	१०	१२	२६	वि	३	२९	६	५८	३४	२४	५	३४	१९	२०	३०	३	14	सिंह	२	२७	३०	४६	१५	०९	२६	२२	३९	भ. ६।५८ तक, पुनर्वसु में बुध प्रवेश १४।५२, व्यतिपात १२।२६ B
०	५	र	५६	५८	२८	२१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पंचमी तिथि क्षय: B तक, स्कंध पंचमी, हेरा पंचमी (उड़ीसा)
२४	६	चं	५०	३६	२५	४१	उफा	४५	१३	२३	४०	वरी	९	१२	९	१५	कौ	२३	४४	१५	४	३४	२२	५	३४	१९	१९	३१	४	15	कं. [illegible]	२	२८	२८	१	१५	१०	३१	२३	१६	**कुमार षष्ठी व्रत,** श्री महावीर गर्भ कल्याणांक
२५	७	मं	४४	३७	२३	२६	ह	४१	१२	२२	८	प	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ग	१७	३३	१२	३६	३४	२०	५	३५	१९	१९	आर	५	16	कन्या	२	२९	२५	१६	१४	११	३४	२३	५१	भ. २३।२६ से, **सूर्य कर्क में प्रवेश** २०।४मु.३० बैठी, **संक्रांति पुण्यम्,** C
२६	८	बु	३१	१०	२१	१५	चि	३७	४२	२०	४०	सि	४७	३	२४	२५	वि	११	४४	१०	१९	३४	१८	५	३५	१९	१९	२	६	17	तु. [illegible]	३	०	२२	३०	१५	१२	३७	२४	००	भ. १०।१९ तक, पू.फा. में शुक्र प्र. १३।१३, **श्री दुर्गाष्टमी,** D
२७	९	गु	३४	२१	१९	२०	स्वा	३४	५०	१९	३२	मा	४०	३७	२१	५१	बा	६	४०	८	१६	३४	१६	५	३६	१९	१८	३	७	18	तुला	३	१	१९	४५	१५	१३	४१	२४	२७	**भडुली ९,** शुद्र नवमी, मेला शरीफ भवानी (काश्मीर), कन्दर्प ९
२८	१०	शु	३०	१६	१७	४३	वि	३२	४१	१८	४१	शुभ	३४	४७	१९	३१	तै	२	१२	६	२९	३४	१३	५	३६	१९	१८	४	८	19	वृ. [illegible]	३	२	१७	०	१५	१४	४५	२५	०५	भ. २९।१ से, बुध कर्क में प्र. ७।२५, **आशा १० व्रतम्,** गिरिजा पूजा
२९	११	श	२६	५६	१६	२३	अनु	३१	१८	१८	८	शु	२१	३४	१७	२७	वि	२६	५६	१६	२३	३४	११	५	३७	१९	१७	५	९	20	वृश्चिक	३	३	१४	२५	१५	१५	४९	२५	४६	भ. १६।२३ तक, सूर्य पुष्य में प्रवेश ७।५५, **देव शयनी एकादशी** E
३०	१२	र	२४	२६	१५	२४	ज्ये	३०	४४	१७	५५	ब्रह्म	२५	१	१५	३८	बा	२४	२६	१५	२४	३४	९	५	३७	१९	१७	६	१०	21	ध. [illegible]	३	४	११	३०	१५	१६	५२	२६	३१	हरिवासर का अभाव, **प्रदोष व्रतम्**
३१	१३	चं	२२	४८	१४	४५	मू	३१	२	१८	३	ऐं	२१	११	१४	६	तै	२२	४८	१४	४५	३४	६	५	३८	१९	१७	७	११	22	धनु	३	५	८	४५	१६	१७	५२	२७	२२	जया पार्वती व्रतारंभ
श्रा१	१४	मं	२२	७	१४	२९	पू.षा	३२	२७	१८	३४	वै	१८	५	१२	५३	व	२२	७	१४	२९	३४	४	५	३९	१९	१६	८	१२	23	म. [illegible]	३	६	६	१	१७	१८	४७	२८	१३	भ. १४।२९ से २६।३१ तक, **भारतीय श्रावणारंभ,** वायु परीक्षा F
२	१५	बु	२२	२८	१४	३९	उ.षा	३४	३४	१९	२०	वि	१५	४९	११	५९	बव	२२	२८	१४	३९	३४	१	५	३९	१९	१६	९	१३	24	मकर	३	७	३	१८	१७	१९	३६	२९	१५	**सत्यनारायण व्रतम्, व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा,** मन्वादि १५. G

A ११।२३. पुन. यात्रा, उल्टा रथ (उड़ीसा), बहुधा यात्रा, जिनदत्त शूरी जयंती (जैन), महापात C विवस्वत ७, सूर्य पूजा, जैन अट्ठाई प्रारम्भ D खर्ची पूजा (त्रिपुरा) E व्रतम् सवका, चातुर्मास व्रतारंभ, नियमादि, बुध पुष्य में प्रवेश २०।५०, गुरु: पुष्य १ में ११।२३, पुन. यात्रा, उल्टा रथ (उड़ीसा), बहुधा यात्रा, जिनदत्त शूरी जयंती (जैन), महापात ९।१५ से १६।२१ तक F मृगशिरा ३ मिथुन में शनि प्रवेश ८।१९, सायन सिंह में सूर्य प्रवेश ५।५०, **पूर्णिमा व्रत, चौमासी चौदश जैन,** मेला ज्वालामुखी (काश्मीर) G आषाढ़ी पूर्णिमा पुण्य मेला, नैमिषारण्य, सन्यासियों का चातुर्मास नियमादि प्रा.

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

आषाढ़ शु. ८ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १७ जुलाई

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	५	३	२	३	४	१	१	७	१०	९	७
०	२३	८	२५	२	२२	२०	२२	२२	४	१६	२१
२२	४३	२६	३२	३६	५८	१७	२	२	१३	७	२५
३०	०	८	४६	३२	३१	३७	२७	२७	१६	२०	२४
५७	[illegible]	३८	[illegible]	१३	६६	७	३	३	१	१	१
७५	१	३१	७०	२३	४८	२	२१	२१	५२	३३	९
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

५ शु.
३ बु.
६ चं.
सू. ४ मं.गु.
श. २ रा.
७
१
के.
१० ने.
१२
प्लू.
९
ह.११

मंगल, बुध, गुरु तीनों अस्तंगत हैं और सप्तमी (भद्रा) तिथि को मंगलवारी संक्रान्ति होने से विश्व में सैनिक गति विधियों में हलचल बढ़कर युद्धोन्माद बढ़ेगा। यथा- **क्षुधाभयं वह्नि भयं नराणां भद्रासुचेत् संक्रमणं खरांशोः। यः स्वल्प सेना सहितो नृपालोरणे जयत्येव महामहीपम्॥** विश्व के किसी प्रमुख शासक के पदच्युत होने अथवा निधन से जनता स्तब्ध होगी। हर्षल का सूर्य मंगल- गुरु से षडाष्टक योग ब्रिटेन, यूरोप, ईरान, ईराक व इजरायल आदि देशों में राजनैतिक अशांति व शासकों में मतभेद कारक है। देश के उत्तर- पश्चिमी प्रान्तों में शासन व्यवस्था अस्थिर होगी। तथा प्राकृतिक घटनाएं बनकर भूस्खलन, तूफान व भूकम्पों का भय बनेगा। केन्द्रीय मंत्री मण्डल में उलटफेर से नेताओं में रोष वृद्धि। **तेजी मन्दी विचार**- चन्द्रदर्शन मु. ३० से गेहूँ, चना, मोंठ, मूंग, चावल में घटाबढ़ी रहेगी। संक्रान्ति ३० मु. मंगलवार से मसाले के सामान, मिर्च, दालचीनी, जीरा, हींग तथा लाल रंग की वस्तुओं में तेजी फलप्रद है। बुध का कर्क राशि में प्रवेश से शेयर भावों, वस्त्रों, रुई, कपास, गुड़, चीनी आदि रस पदार्थों में घटाबढ़ी के बाद मन्दी का योग है। व्यापारी लाइन देखकर काम करें। **आकाश लक्षण**— बुध, गुरु की युति पश्चात् में सर्वत्र वर्षाकारी फलप्रद है। मानसून सक्रिय रहेगा। राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश व गुजरात में वर्षा व वायु वेग रहेगा। आसाम बंगाल, बिहार व उड़ीसा, तमिलनाडु आदि दक्षिणी प्रान्तों में बाढ़ तथा अतिवर्षण से आवागमन प्रभावी होगा। काश्मीर, हिमाचल प्रदेश व बंगाल के उत्तरी भागों में वर्षा से उत्पात, भूस्खलन से हानि रहने के योग हैं। **शकुन विचार**- आषाढ़ सुदी नवमी के दिन बादल वर्षा न होने पर आगे अन्न उत्पादन का संशय ही रहता है। धान्यादि तेज होते हैं। **आषाढ़ा नवमी दिनां ना बादल ना बीज। हल फाड़, ईंधन करो बैठा खाओ बीज॥**

ता. २४ जुलाई ❖ आषाढ़ शु. १५ बुध प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

५ शु.
३श.
बु. सू. ४ गु. मं.
६
रा. २
७
१
के.
प्लू.
ने. १० चं.
१२
९
११ह.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	९	३	३	३	४	२	१	७	१०	९	७
७	२	१२	१०	४	२०	०	२१	२१	३	१५	२१
३	३१	४५	२५	१०	४२	६	४०	४०	५९	५६	१७
१८	५६	२४	१७	१७	३७	२	११	११	३४	२४	५३
५७	[illegible]	३८	[illegible]	१३	६५	६	३	३	२	१	०
१७	५१	२५	१४	२३	३७	४५	११	११	४	३६	५८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	-	-	-

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण कृष्ण पक्ष-८

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २५ जुलाई से ८ अगस्त सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ३ से १७ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट (५ घ. ३० मि.) रा.	अं.	क.	वि.	क्रांति	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	
३	१	गु	२३	५७	१५	१५	श्र	३७	५७	२०	५१	प्री	१४	२५	११	२६	कौ	२३	५७	१५	१५	३३	५८	५	४०	१९	१५	१०	१४	25	मकर	३	८	०	३५	[illegible]	२०	१९	०६	१४	अशून्य शयन व्रत
४	२	शु	२६	३५	१६	१९	ध	४२	२९	२२	४०	आ	१३	५५	११	१४	ग	२६	३५	१६	१९	३३	५५	५	४०	१९	१४	११	१५	26	कुं. ९।१८	३	८	५७	५२	१९	२०	५७	०७	१२	भ. २९।०१ से, पंचक प्रा. ९।४२ से,
५	३	श	३०	२३	१७	५०	शत	४८	६	२४	५५	सौ	१४	२०	११	२५	वि	३०	२३	१७	५०	३३	५३	५	४१	१९	१३	१२	१६	27	कुंभ	३	९	५५	११	१९	२१	३०	०८	०८	भ. १७।५० तक, बुध आश्लेषा में प्रवेश ६।४२, कृष्ण चतुर्थी व्रत
६	४	र	३५	१३	१९	४७	पूभा	५४	४१	२७	३४	शो	१५	३५	११	५५	बव	२	४०	६	४६	३३	५०	५	४१	१९	१३	१३	१७	28	मी. २०।५२	३	१०	५२	३०	२०	२२	००	०९	०२	
७	५	चं	४०	५०	२२	२	उभा	६०	०	—	—	अ	१७	२९	१२	४२	कौ	७	५६	८	५३	३३	४७	५	४२	१९	१२	१४	१८	29	मीन	३	११	४९	५०	२१	२२	२९	०९	५५	श्रावण सोमवार व्रत, नागपंचमी (बंगाल व मरुस्थल में), उ.फा. A
८	६	मं	४६	५१	२४	२७	उभा	१	५३	६	२७	सु	१९	४९	१३	३८	ग	१३	४९	११	१४	३३	४४	५	४२	१९	११	१५	१९	30	मीन	३	१२	४७	११	२३	२२	५८	१०	४६	भ. २४।२७ से, मंगला गौरी पूजन, आश्लेषा में मंगल प्रवेश ८।११
९	७	बु	५२	४३	२६	४९	रे	९	११	९	२७	धृ	२२	१३	१४	३६	वि	१९	४९	१३	३९	३३	४१	५	४३	१९	११	१६	२०	31	मे. ९।२७	३	१३	४४	३४	२३	२३	२७	११	३८	भ. १३।३९ तक, पंचक समाप्ति ९।२७ तक, शीतला ७ (उड़ीसा)
१०	८	गु	५७	५४	२८	५३	अ	१६	२७	१२	१९	शू	२४	१६	१५	२६	बा	२५	२५	१५	५३	३३	३८	५	४४	१९	१०	१७	२१	A1	मेष	३	१४	४१	५७	२४	२३	५८	१२	३०	शुक्र कन्या में प्रवेश १९।४४, अगस्त मास ८ ता. ३१, B
११	९	शु	६०	०	६०	०	भ	२२	४३	१४	४९	गं	२३	३५	१५	५८	तै	३०	२	१७	४५	३३	३५	५	४४	१९	९	१८	२२	2	वृ. २१।४२	३	१५	३९	२१	२५	२४	००	१३	२४	बुध मघा सिंह में प्रवेश २९।०९, गुरु हरि किशन ज. (प्रा. मत से). C
१२	९	श	१	४९	६	२८	कृ	२७	३६	१६	४७	वृ	२५	४७	१६	३	ग	१	४९	६	२८	३३	३१	५	४५	१९	९	१९	२३	3	वृष	३	१६	३६	४६	२७	२४	३३	१४	२१	भ. १९।१९ से, सूर्य आश्लेषा में प्रवेश ६।५१, D
१३	१०	र	४	५	७	२३	रो	३०	४५	१८	३	ध्रु	२४	३५	१५	३५	वि	४	५	७	२३	३३	२८	५	४५	१९	८	२०	२४	4	वृष	३	१७	३४	१३	२८	२५	१२	१५	२०	भ. ७।२३ तक, गुरु पुष्य २ में प्रवेश ११।८
१४	११	चं	४	२५	७	३२	मृ	३१	५७	१८	३२	व्या	२१	५०	१४	३०	बा	४	२५	७	३२	३३	२५	५	४६	१९	७	२१	२५	5	मि. ६।४४	३	१८	३१	४१	२९	२५	५७	१६	२०	कामिका एकादशी व्रत सबका, श्रावण सोमवार व्रत
१५	१२	मं	२	४६	६	५३	आ	३१	१२	१८	१५	ह	१७	३०	१२	४६	तै	२	४६	६	५३	३३	२२	५	४६	१९	६	२२	२६	6	मिथुन	३	१९	२९	१०	३०	२६	५०	१७	१९	भ. २९।२८ से, भौम प्रदोष व्रत, मंगला गौरी पूजन
०	१३	मं	५९	१४	२९	२८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षयः D गुरु उदय पूर्वे १०।१७
१६	१४	बु	५४	१	२७	२४	पुन	२८	४०	१७	१५	व	११	३९	१०	२६	वि	२६	४८	१६	३०	३३	१८	५	४७	१९	६	२३	२७	7	क. ११।३४	३	२०	२६	४०	३१	२७	४९	१८	१५	भ. १६।३० तक, मास शिवरात्री
१७	३०	गु	४७	२८	२४	४७	पु	२४	३९	१५	३९	सि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चतु	२०	५३	१४	९	३३	१५	५	४८	१९	५	२४	२८	8	कर्क	३	२१	२४	११	३२	२८	५४	१९	०७	व्यतिपात २८।२० तक, देवपितृकार्याऽमावस्या, हरियाली ३०, E

गुरु उदय पूर्व में

A में शुक्र प्रवेश १७।६ B लोकमान्य तिलक जयंती, कालाष्टमी, मत्स्य दिवस (का.), केर पूजा (त्रिपुरा) C बुध पश्चिम में उदय १८।४०, महापात २३।२२ से २९।२३ तक
E सरस माधुरी जयंती, चितलगी अमावस्या (उड़ीसा), सर सैयद हैमद खां, लक्ष्मी पोल यात्रा

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

श्रावण कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	०	३	३	३	४	२	१	७	१०	९	७
१४	९	१७	२६	५	२९	०	२१	२१	३	१५	२१
४१	५५	५२	१८	५३	२२	५८	१४	१४	४२	४३	१०
५७	३५	२६	५३	५	३	३५	४६	४६	२८	२५	४८
५३	[illegible]	३८	[illegible]	१३	६४	६	३	३	२	१	०
२८	३५	२०	११	१८	१	२०	११	११	१३	३८	४६
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	अ	अ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. १ अगस्त): ५ शु. | ३ श. | ६ | सू. बु. ४ मं. गु. | रा. २ | ७ | १ चं. | ८ | प्लू. के. | ने. १० | १२ | ९ | ह. ११

मिथुन राशि के शनि से हर्षल का केन्द्र योग तथा मास में पांच गुरुवार जनमानस में अनेक पीड़ाओं के साथ भयप्रद है। देश के प्रमुख राजनीतिज्ञों में आपसी मतभेद उभर कर विवाद एवं विग्रह से आयात-निर्यात के कार्य एवं देश विकास की योजनाओं में अवरोध पैदा होंगे। यथा- यत्र मासे पंचवारा जायन्ते च बृहस्पते। विग्रहः पश्चिमे देशे खड्ग युद्धं च जायते॥ विश्व के प्रभावशाली राष्ट्रों अमेरिका, रूस, चीन, इंग्लैण्ड, जापान, अफ्रीका, जर्मनी आदि शासकों में स्वार्थ परायणता बढ़कर जनसमूह के साथ खिलवाड़ से जनाक्रोश बढ़े। उत्पाद, हिंसा तथा विग्रह होने से अशान्ति और भय बढ़ेगा। तूफान, चक्रवात, भूस्खलन आदि का प्राकृतिक प्रकोप बनकर चीन, तिब्बत, नेपाल, बर्मा व आस्ट्रेलिया के कई भागों में प्रजा स्थिति में अस्त व्यस्तता होगी। वर्षा का भीषण प्रकोप होकर मार्ग अवरुद्ध व नदी-नालों में बाढ़ भय। तेजी मन्दी विचार-पक्षारम्भ में धान्यों गेहूँ, जौ, चना चावल आदि में मन्दा रहकर पक्षान्त में तेजी होगी। तेल, तिल, उड़द में तेजी रहेगी। यथा- श्रावण कृष्ण पक्षे च प्रतिपदा गुरुवासरे। तदा माषः तिलस्तैलं महर्घं च प्रजायते॥ प्लास्टिक, इलास्टिक, रबड़ के सामान, लोहा, ताम्बा, पीतल आदि धातुओं में तेजी रहेगी। आश्लेषा नक्षत्र में गुरु का उदय होना शेयर बाजारों में रसायन पदार्थों व औषधि आदि के भाव तेजी फलप्रद हैं। आकाश लक्षण- बंगाल, आसाम, हिमाचल प्रदेश, केरल तमिलनाड, कर्नाटक व बंगाल की खाड़ी के आस-पास अतिवर्षण से हानिकारक योग है। शेष देश के अनेक भागों राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उड़ीसा में वर्षा होगी। तापमान में न्यूनता होगी। बादल चाल व वायु के योग तेज प्रायः रहेंगे। शकुन विचार- श्रावण बदी ४ को यदि वर्षा हो तो उस वर्ष फसलों की उपज उत्तम बनकर मन्दी का संचार होता है। यथा- श्रावण पहली चौथ में जो मेघा बरसाय। [illegible]

ता. ८ अगस्त ❖ श्रावण कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. ८ अगस्त): ५ बु. | ३श. | शु. ६ | सू. चं. ४ मं. गु. | रा. २ | ७ | १ | के. ८ प्लू. | ने. १० | १२ | ९ | ह. ११

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	३	३	४	३	५	२	१	७	१०	९	७
२१	१०	२२	८	७	६	१	२०	२०	३	१५	२१
२४	३४	२०	५०	२९	४५	४१	५२	५२	२६	३२	६
११	६	३९	१३	४८	१७	४३	३०	३०	३२	०	२
५३	[illegible]	३८	९०	१३	६२	१	३	३	२	१	०
३२	०	१८	५७	१०	२०	५५	११	११	२०	३८	३८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट पंचांग

श्रावण शुक्ल पक्ष-९

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ९ से २२ अगस्त सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति १८ से ३१ श्रावण तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा ऋतु।

रा. मि.	ति.	वा.	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१८	१	शु	३०	५९	२१	४८	श्ले	१९	३०	१३	३६	व	४७	२६	२४	४६	कि	१३	४८	११	१९
१९	२	श	३२	५८	२८	३६	म	१३	४०	११	१७	परि	३८	७	२१	३	बा	६	०	८	१३
२०	३	र	२३	४९	१५	२१	पूफा	७	३३	८	५०	शि	२८	४५	१७	१९	ग	२३	४९	१५	२१
२१	४	चं	१५	५६	१२	१२	उफा	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	सि	१९	३७	१३	४०	वि	१५	५६	१२	१२
२२	५	मं	८	३९	९	१८	चि	५२	३२	२६	२७	सा	१०	५०	१०	१४	बा	८	३९	९	१८
२३	६	बु	२	१४	६	४४	स्वा	४७	५७	२५	१	शुभ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	२	१४	६	४४
०	७	बु	५६	५५	२८	३७	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
२४	८	गु	५२	४७	२६	५८	वि	४५	३२	२४	४	ब्रह्म	५०	७	२५	५४	वि	२४	४१	१५	४४
२५	९	शु	४९	५२	२५	४९	अनु	४४	२०	२३	३६	ऐं	४५	६	२३	५४	बा	२१	१०	१४	२०
२६	१०	श	४४	१०	२५	८	ज्ये	४४	२०	२३	३६	वै	४१	२	२२	१७	तै	१८	५२	१३	२५
२७	११	र	४७	३५	२४	५५	मू	४५	२७	२४	४	वि	३७	५३	२१	२	व	१७	४३	१२	५८
२८	१२	चं	४८	३	२५	७	पूषा	४७	३६	२४	५६	प्री	३५	३४	२०	७	बव	१७	४१	१२	५८
२९	१३	मं	४९	३१	२५	४२	उषा	५०	४३	२६	११	आ	३४	२	१९	३१	कौ	१८	३९	१३	२२
३०	१४	बु	५१	५५	२६	४१	श्र	५४	४४	२७	४४	सौ	३३	१५	१९	१३	ग	२०	३६	१४	९
३१	१५	गु	५५	१४	२८	१	ध	५९	३९	२९	४७	शो	३३	११	१९	११	वि	२३	२७	१५	१८

दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	दिनांक अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घ. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदय दिल्ली घं	मि	चन्द्रास्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
३३	११	५	४८	१९	५	२५	२९	9	सिं. १२।३६	३	२२	२१	४३	[illegible]	०६	०३	१९	५४	नक्त व्रत प्रारम्भ, सोमेश्वर पूजा
३३	८	५	४९	१९	४	२६	३०	10	सिंह	३	२३	१९	१७	३४	०७	११	२०	३५	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता भाव, सिंधारा, पू.फा. में बुध प्रवेश २२।३१
३३	४	५	४९	१९	३	२७	भा. १	11	कं. १४।०१	३	२४	१६	५१	३५	०८	१९	२१	१४	भ. २५।४५ से, जमादि उल्ल आखिर मु.मास. ६ प्रा., मधुश्रवा ३, A
३३	१	५	५०	१९	२	२८	२	12	कन्या	३	२५	१४	२६	३७	०९	२५	२१	५१	भ. १२।१२ तक, श्रावण सोमवार व्रत, दुर्वा गणपति व्रत
३२	५७	५	५०	१९	१	२९	३	13	तु. १५।०१	३	२६	१२	३	३७	१०	३०	२२	२७	मंगला गौरी पूजन, नाग पंचमी देशाचारे
३२	५२	५	५१	१९	०	३०	४	14	तुला	३	२७	९	४०	३८	११	३४	२३	०५	भ. २८।३७ से, वर्ण षष्ठी, शीतला पूजन सिन्ध, B
०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	सप्तमी तिथि क्षय:
३२	५०	५	५१	१८	५९	३१	५	15	वृ. १८।१६	३	२८	७	१८	३९	१२	३९	२३	४६	भ. १५।४४ तक, भा. स्वतंत्रता दिवस वर्ष ५६ प्रा., दुर्गा८, महापात ६।५० तक
३२	४६	५	५२	१८	५८	भा	६	16	वृश्चिक	३	२९	४	५७	४०	१३	४३	२४	००	सूर्य मघा सिंह में २८।२५ मु. १५ सूती, धान्य भाव महर्घता
३२	४२	५	५२	१८	५७	२	७	17	ध. २३।०६	४	०	२	३७	४१	१४	४६	२४	२९	संक्रान्ति पुण्य
३२	३९	५	५३	१८	५६	३	८	18	धनु	४	१	०	१८	४२	१५	४६	२५	१८	भ. १२।५८ से २४।५५ तक, पवित्रा एकादशी व्रत सबका, C
३२	३५	५	५३	१८	५५	४	९	19	धनु	४	१	५८	०	४३	१६	४२	२६	११	श्रावण सोमवार व्रत, बुध उ.फा. में प्रवेश १८।२८, पुष्य ३ में गुरु D
३२	३१	५	५४	१८	५४	५	१०	20	म. ३।०३	४	२	५५	४३	४४	१७	३२	२७	०७	भौम प्रदोष व्रत, मंगला गौरी पूजन, ओणम् (केरला)
३२	२७	५	५५	१८	५३	६	११	21	मकर	४	३	५३	२७	४६	१८	१६	२८	३२	भ. २६।४१ से, बुध कन्या में प्रवेश २९।२२, थीरू ओणम (केरल)
३२	२३	५	५५	१८	५२	७	१२	22	कुं. १५।१८	४	४	५१	१३	४७	१८	५५	२९	०३	भ. १५।१८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, श्री गायत्री जयंती, E

A छोटी तीज, शुक्र हस्त में प्रवेश ८।५०, वक्री भनि. ३ हर्षल ७।३१ B संत तुलसीदास जन्म, महापात २६।०५ से, कल्की जय. C झूलन यात्रा प्रारम्भ D १८।३०, मंगल सिंह में प्रवेश २९।०५
E रक्षाबन्धन, अमरनाथ चन्द्रदर्शन (काश्मीर), झूलन यात्रा समापन, शुक्ल यजुर्वेदीय कृष्ण यजुर्वेदीय उपाकर्म, पंचक प्रारम्भ १६।४५ से,

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

श्रावण शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १५ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
३	६	३	४	३	५	२	१	७	१०	९	७
२८	२२	२६	२०	०	१३	२	२०	२०	३	१५	२१
७	३५	४८	४	१	५५	२१	३०	३०	१०	२०	२
१८	४०	३१	३	२३	४१	४६	१५	१५	१	४५	४३
५७	११	३८	५०	१३	६०	५	३	३	२	१	०
३९	२०	१४	१	५८	१५	२७	११	११	२३	३५	२१
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

बु. ५ | ३ श. | शु. ६ | सू. गु. ४ मं. | २ रा. | ७ चं. | १ | ८ के. प्लू. | १० ने. | १२ | ९ | ११ ह.

पक्ष में सूर्य-मंगल का युति योग तथा प्लूटो-हर्षल एवं राहु से केन्द्र योग होना विश्व में किसी महान पुरुष नेता अथवा प्रधान शासक के देहावसान समाचार से लोगों में स्तब्धता होगी। यथा-सिंह राशि स्थितो भानु भूमि पुत्रस्तथैव च। प्रजाकष्टं छत्र भंगं भयभीता च मेदिनी॥ देश की अन्तर्राष्ट्रीय नीतियों में विशेष परिवर्तन बन कर विदेशों से व्यापारिक सम्बन्ध बढ़ेंगे और वित्तीय स्थिति में सुधार होगा। श्रावण शुक्ल पक्ष में तिथि क्षय विश्व के अनेक राष्ट्रों के महापुरुषों अथवा शासकों को कष्टप्रद एवं चिन्तन शीलताकारी है। यथा-श्रावणे शुक्ल पक्षे च तिथिः काऽपि क्षया भवेत्। तदा वै कार्तिके मासे छत्र भंग प्रजायते॥ दक्षिणी व पश्चिमी प्रान्तों में विकासशील कार्यों में प्रगति रहेगी। पूर्वोत्तर सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिक गतिविधियों में हलचल व मणिपुर, आसाम, नागालैण्ड, अरुणाचल, मेघालय आदि प्रान्तों में आतंकवाद एवं जन विग्रह रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**-शु. २ शनि मु. ३० चन्द्रदर्शन, सप्तमी क्षय पक्ष में गेहूँ, चावल, चना, जौ में घटा बढ़ी रहेगी। गुड़, चीनी, शक्कर व रस पदार्थों में मन्दी का जोर रहेगा। तिलहन बाजारों मूंगफली, तिल, बिनौला, अरण्ड व सरसों के भावों में तेजी रहेगी। शेयर बाजारों में उतार-चढ़ाव कर मन्दी होगी। यथा-**सिंह राशि गते भानु रिक्ष्वादिमिष्ट शर्करा:। रक्तानि सर्व भाण्डानि तिल, तैल, महर्घता॥** वस्त्र, बारदाना, कागज तथा रुई, कपास में मन्दी और किराणा व मेवा सामान तेज रहे। **आकाश लक्षण**-पक्ष में प्रायः सर्वत्र वर्षा होगी। मानसून सक्रिय रहकर पंजाब, राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तर प्रदेश सामान्य से अच्छी वर्षा होगी। समुद्र तट के क्षेत्रों व प्रान्तों में तूफानी वर्षा से हानि होवे। पर्वतीय स्थानों पर अतिवर्षण होगा। **शकुन विचार**-श्रावण शुक्ला पंचमी को बादल वर्षा व वायु चले तो आगे वर्षा नहीं होने से धान्य उपज कम होकर तेजी रहेगी। यथा-**सावण उजली पंचमी जो बिरखा दरशाय। ताल जु सूखे मेह नहीं तृण अन्न तेज बिकाय॥** श्रावण की पूर्णिमा को वर्षा होना श्रेष्ठ उपज होकर मन्दी फल कारक होता है।

बु. शु. ६ | ४ गु. | ७ | सू. ५ मं. | ३ श. | के. ८ प्लू. | २ रा. | ह. ११ | ९ | १ | चं. १० ने. | १२

ता. २२ अगस्त ❖ श्रावण शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	९	४	५	३	५	२	१	७	१०	९	७
४	२४	१	०	१०	२०	२	२०	२०	२	१५	२१
५१	११	१६	०	३१	४९	५८	७	७	५३	९	०
१३	३८	१	२९	२४	५१	२४	५९	५९	१६	५३	५६
५७	३१	३८	९८	१२	५७	४	३	३	२	१	०
४७	५९	१२	३३	४३	३६	५६	११	११	२४	३०	७
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाद्रपद कृष्ण पक्ष-10

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २३ अग. से ७ सितं. सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति १ से १६ भाद्रपद तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर गोले, वर्षा, शरद ऋतु।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
भा.१	१	शु	५९	२७	२९	४२	श	६०	०	-	-	अति	३३	४७	१९	२७	बा	२७	१४	१६	४९	३२	१९	५	५६	१८	५१	८	१३	23	कुंभ	४	५	४९	०	[illegible]	१९	३०	६	००	भारतीय भाद्रपद मासारंभ, सायन सूर्य कन्या में १२।५१, शरद ऋतु प्रा.
२	२	श	६०	०	-	-	श	५	२३	८	५	सु	३५	४	१९	५८	तै	३१	५२	१८	४१	३२	१६	५	५६	१८	५०	९	१४	24	मी. २८।१६	४	६	४६	४९	५०	२०	२	६	५५	शुक्र चित्रा में प्रवेश २०।२६, राहु रोहिणी ३ व केतु ज्येष्ठा १ में A
३	२	र	४	२८	७	४४	पू.भा	११	५६	१०	४३	धृ	३६	५४	२०	४३	ग	४	२८	७	४४	३२	१२	५	५७	१८	४९	१०	१५	25	मीन	४	७	४४	३९	५१	२०	३१	७	४८	भ. २०।५१ से, सिंधारा, द्वितीया तिथि वृद्धि
४	३	च	१०	११	१०	२	उ.भा	१९	७	१३	३६	शू	३९	१२	२१	३८	वि	१०	११	१०	२	३२	८	५	५७	१८	४८	११	१६	26	मीन	४	८	४२	३०	५३	२०	५९	८	४०	भ. १०।२ तक, मृगशिरा ४ में शनि प्रवेश १७।४२, कजली (बड़ी) B
५	४	मं	१६	२१	१२	३०	रे	२६	४१	१६	३८	गं	४१	४२	२२	३८	बा	१६	२१	१२	३०	३२	४	५	५८	१८	४७	१२	१७	27	मे. १६।३८	४	९	४०	२३	५५	२१	२८	९	३१	पंचक समाप्ति १६।३८ तक C रंग ५, महापात १०।३० से.
६	५	बु	२२	३५	१५	०	अ	३४	१४	१९	४०	वृ	४४	७	२३	३७	तै	२२	३५	१५	०	३२	०	५	५८	१८	४६	१३	१८	28	मेष	४	१०	३८	१८	५७	२१	५८	१०	२३	चन्द्र षष्ठी, उभी छठ, रक्षा ५ उड़ीसा, श्री माधवदेव तिथि (आसाम).C
७	६	गु	२८	२४	१७	२०	भ	४१	१७	२२	३०	ध्रु	४६	४	२४	२४	वण	२८	२४	१७	२०	३१	५६	५	५९	१८	४५	१४	१९	29	वृ. २०।८	४	११	३६	१५	५८	२२	३०	११	१६	भ. १७।२० से, हल ६, चम्पा षष्ठी, ललही छठ, पुत्रार्थी व्रत. D
८	७	शु	३३	१४	१९	१७	कृ	४७	११	२४	५५	व्या	४७	११	२४	५१	वि	०	५८	६	२२	३१	५२	५	५९	१८	४४	१५	२०	30	वृष	४	१२	३४	१३	[illegible]	२३	७	१२	११	भ. ६।२२ तक, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मार्त, सूर्य पू.फा. में E
९	८	श	३६	३७	२०	३८	रो	५१	४९	२६	४३	ह	४७	४	२४	४९	बा	५	८	८	३	३१	४८	६	०	१८	४३	१६	२१	31	वृष	४	१३	३२	१४	२	२३	४८	१३	८	शुक्र तुला में प्रवेश २७।१५, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वै., संत F
१०	९	र	३८	६	२१	१५	मृ	५४	२५	२७	४६	व	४५	२७	२४	११	तै	७	३६	९	३	३१	४३	६	०	१८	४२	१७	२२	S1	मि. १५।१२	४	१४	३०	१६	४	२४	००	१४	६	सितम्बर मास ९ ता. ३०, अंधेरा गोगा नवमी, नन्दोत्सव गोकुल
११	१०	चं	३७	२९	२१	०	आ	५४	५५	२७	५९	सि	४२	१०	२२	५३	व	८	३	९	१४	३१	३९	६	१	१८	४०	१८	२३	2	मिथुन	४	१५	२८	२०	६	२४	३६	१५	५	भ. ९।१४ से २१।० तक
१२	११	मं	३४	४२	१९	५८	पुन	५३	१९	२७	२१	व्य	३७	९	२०	५३	बव	६	२०	८	३४	३१	३५	६	१	१८	३९	१९	२४	3	क. २१।[illegible]	४	१६	२६	२६	८	२५	३२	१६	१	व्यतिपात २०।५३ तक, अजा एकादशी व्रत सबका, पर्युषण G
१३	१२	बु	२९	५४	१७	५९	पु	४९	४७	२५	५७	वरि	३०	३०	१८	१४	कौ	२	३२	७	२	३१	३१	६	२	१८	३८	२०	२५	4	कर्क	४	१७	२४	३४	१०	२६	३३	१६	५५	पुष्य ४ में गुरु प्रवेश १९।१७, प्रदोष व्रत, पर्युषण पर्वारंभ (पंचमी) H
१४	१३	गु	२३	२२	१५	२३	श्ले	४४	३८	२३	५४	प	२२	२५	१५	०	व	२३	२२	१५	२३	३१	२७	६	२	१८	३७	२१	२६	5	सिं. २३।५४	४	१८	२२	४४	११	२७	४०	१७	४३	भ. १५।२३ से २५।५२ तक, मास शिवरात्री व्रत, जीवंतिका पूजन.I
१५	१४	शु	१५	२७	२२	१४	म	३८	१७	२१	२२	शि	१३	१२	११	२०	श	१५	२७	२२	१४	३१	२३	६	३	१८	३६	२२	२७	6	सिंह	४	१९	२०	५५	१४	२८	४८	१८	२७	पितृकार्याऽमावस्या, लोहार्गल स्नान, पिठौरी ३०, अग्रजयंती. J
१६	३०	श	६	३७	८	४२	पू.फा	३१	१२	१८	३२	सि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	ना	६	३७	८	४२	३१	१९	६	३	१८	३५	२३	२८	7	क. २३।४८	४	२०	१९	९	१५	२९	५७	१९	८	कुशाग्रहणी (ॐ हुं फट इति मंत्रेण) अमावस्या, देवकार्याऽमावस्या.K

A प्रवेश १७।४८ B तीज, कृष्ण चतुर्थी व्रत, बहुला चौथ, मातृड़ा तीज, मार्गी प्लूटो १७।०९ D जीवंतिका पूजन E प्रवेश २४।२७, बुध हस्त में प्रवेश १४।५५ F ज्ञानेश्वर जयंती, कालाष्टमी, अश्वत्थ मारुति पूजन, द्रोण मेला, दनकौर (उ.प्र.) G पर्वारंभ जैन (चतुर्थी पक्ष) H पक्ष), वत्स द्वादशी, बौध बारस। कैलाश यात्रा २ दिन, अघोरा १४ J कल्पसूत्र पाठ जैन, वृषभोत्सव K अश्वत्थ मारुति पूजन, मन्वादि ३०, सती पूजन, मेला सुथरेशाह दिल्ली

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

भाद्रपद कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३१ अगस्त

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	१	४	५	३	५	२	१	७	१०	९	७
१३	१२	६	२०	१२	२९	३	१९	१९	२	१४	२१
३२	११	५९	३७	२४	११	३९	३९	३९	३१	५६	०
१४	४५	४०	३४	१२	४५	५४	२३	२३	५५	५०	५७
५८	[illegible]	३८	५९	१२	५३	४	३	३	२	१	०
२	४७	१०	४७	१८	१३	१२	११	११	२०	२३	१०
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

६ बु.शु. | ४ गु. | ५ सू. मं. | ७ | ३ श. | ८ प्लू. के. | २ चं. रा. | ११ ह. | ९ | १ | १० ने. | १२

मास में पांच शुक्र व पांच शनिवार मिश्रित फल कारक हैं। विश्व के बड़े राष्ट्र रूस, अमेरिका, चीन, जर्मन व ब्रिटेन आदि के प्रमुख शासकों का मैत्रीकरण व शान्ति प्रसारण हेतु सफल परिश्रम होगा। फिर अनेक स्वार्थी राष्ट्रों द्वारा बीच बीच में उत्तेजित करके विघट्टादि विचार पैदा करने की कोशिशें जारी रहेंगी। यथा-शुक्रस्य पंचवारास्यु: यत्र मासे निरंतरम्। प्रजावृद्धि सुभिक्षं च सुखं तत्र प्रवर्तते। तथा च-शनेश्च पंचकं दृष्टवा पाताले कम्पते फणी। ईशान देश भंगश्च वह्निदाहो महर्घता॥ मुस्लिम राष्ट्रों में गृह कलह व अराजकता बढ़ेगी। देश की उत्तरी व पूर्वी दिशा के प्रान्तों में भूकम्पादि प्रकृति प्रकोप। शासकों का विदेशी नीतियों से सुसम्पर्क बनाने का प्रयास रहेगा। तेजी मन्दी विचार-पक्षारंभ में चित्रा में शुक्र से गुड़, चीनी, शक्कर, रुई, कपास व वस्त्रों में मन्दी रहेगी। कृ. ७ शुक्र से सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल आदि धातु और काजू, किसमिस, बादाम, अखरोट आदि मेवा सामान तेज होगा। पक्ष में धान्य भाव तेज रहेंगे। गेहूं, चावल, चना, मूंग, मोंठ तेज।

ता. ७ सितम्बर ❖ भाद्रपद कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

६ बु. | ४ गु. | ७ शु. | ५ सू. मं. चं. | श. ३ | ८ प्लू. के. | २ रा. | ११ ह. | ९ | १ | १० ने. | १२

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
४	४	४	५	३	६	२	१	७	१०	९	७
२०	१८	११	१६	१३	५	४	१९	१९	२	१४	२१
१९	२५	२६	३४	४९	११	७	१७	१७	१५	४७	२
९	३५	५४	३५	६	३४	२५	७	७	५२	३५	४८
५८	[illegible]	३८	३७	११	४८	३	३	३	२	१	०
१५	३८	१०	२५	५४	४०	३४	११	११	१४	१५	२८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	अ	अ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

शनिवारी अमावस्या नशीले पदार्थ, चाय, कॉफी तथा लोहे के सामान व शेयरों में तेजी कारक है। यथा-कन्या राशि स्थिते रोहि कांचनं शुद्ध शर्करा। मासे षष्ठे दहेलाभं पुनः सस्तो भविष्यति॥ रासायनिक पदार्थों, रंग-रोगन आदि में घटाबढ़ी रहेगी। आकाश लक्षण-पक्ष में कहीं-कहीं पूर्वी प्रान्तों बिहार, आसाम, बंगाल आदि में वर्षा होगी तथा उड़ीसा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश आदि प्रान्तों में खण्डवृष्टि होगी। हरियाणा, राजस्थान, पंजाब व गुजरात, दिल्ली में बादल चाल, बूंदा-बांदी तथा दक्षिणी हवाओं से उपज की फसलों पर दुष्प्रभाव रहेगा तथा सर्पादि जन्तुओं का प्रकोप विशेष होगा। शकुन विचार-भाद्रपद कृष्ण पक्ष में चन्द्र के बाहर दो कुण्डल अगर दिखाई दें तो आगे वर्षा उत्तम होती है। यथा-दो कुण्डल शशि कुं रहे इक पास इक दूर। बिरखा झड़ी लगायसी नदी चाले भरपूर॥ [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन कृष्ण पक्ष-१२

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २२ सितं. से ६ अक्टू. सन् २००२ ई., रा. मिति ३१ भाद्रपद से १४ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, उत्तर-दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि	संदर्भ
३१	१	र	३९	१९	२१	५४	उभा	३४	३३	२०	०	वृ	५५	२६	२८	२१	बा	६	१७	८	४१	३०	१५	६	११	१८	१७	७	१४	22	मीन	५	४	५५	४७	[illegible]	१९	०२	०६	३५	पितृपक्ष प्रारम्भ, प्रतिपदा श्राद्ध, महापात १५।३० से २२।४१ तक
आ१	२	चं	४५	३५	२४	२५	रे	४२	५	२३	१	धु	५७	५१	२९	२०	तै	१२	२५	११	९	३०	११	६	११	१८	१६	८	१५	23	मे. २३।११	५	५	५४	२७	४३	१९	३०	०७	२६	पंचक समाप्ति २३।१ तक, भारतीय आश्विन मासारंभः, अशून्य A
२	३	मं	५१	५४	२६	५७	अ	४९	४०	२६	४	व्या	६०	०	—	—	व	१८	४४	१३	४१	३०	७	६	१२	१८	१४	९	१६	24	मेष	५	६	५३	१०	४४	२०	००	०८	१८	भ. १३।४१ से २६।५७ तक, तृतीया श्राद्ध
३	४	बु	५७	५७	२९	२३	भ	५७	१	२९	०	व्या	०	१४	६	१८	ब	२४	५८	१६	११	३०	३	६	१२	१८	१३	१०	१७	25	मेष	५	७	५१	५४	४७	२०	३१	०९	१०	कृष्ण चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध
४	५	गु	६०	०	—	—	कृ	६०	०	—	—	ह	२	२४	७	१०	कौ	३०	४४	१८	३०	२९	५८	६	१३	१८	१२	११	१८	26	वृ. ११।४३	५	८	५०	४१	४९	२१	०५	१०	०५	पंचमी श्राद्ध
५	५	शु	३	१७	७	३२	कृ	३	४१	७	४२	वज्र	४	२	७	५०	तै	३	१७	७	३२	२९	५४	६	१३	१८	११	१२	१९	27	वृष	५	९	४९	३०	५१	२१	४४	११	०७	सूर्य हस्त में प्रवेश ९।४८, षष्ठी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध, पंचमी वृद्धि तिथि
६	६	श	७	३१	९	१४	रो	९	१८	९	५७	सि	४	४७	८	८	व	७	३१	९	१४	२९	५०	६	१४	१८	१०	१३	२०	28	मि. २२।५१	५	१०	४८	२१	५३	२२	२८	११	५७	भ. ९।१४ से २१।५२ तक, वक्री उ.फा. में बुध प्रवेश १२।४५, B
७	७	र	१०	१२	१०	१९	मृग	१३	२३	११	३५	व्य	४	२१	७	५९	बव	१०	१२	१०	१९	२९	४६	६	१४	१८	८	१४	२१	29	मिथुन	५	११	४७	१४	५६	२३	१९	१२	५४	व्यतिपात ७।५९ तक, अष्टमी श्राद्ध, कालाष्टमी, श्री महालक्ष्मी व्रत समा.
८	८	चं	१०	५८	१०	३८	आ	१५	३७	१२	२९	वरि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	१०	५८	१०	३८	२९	४१	६	१५	१८	७	१५	२२	30	मिथुन	५	१२	४६	१०	५८	२४	००	१३	५७	मंगल उ.फा. में प्रवेश २७।३४, नवमी श्राद्ध, जीवित्पुत्रिकाष्टमी C
९	९	मं	९	३९	१०	७	पुन	१५	४७	१२	३४	शि	५६	४६	२७	४६	ग	९	३९	१०	७	२९	३७	६	१५	१८	६	१६	२३	01	क. ६।४८	५	१३	४५	८	[illegible]	२४	१६	१४	४३	भ. २१।३२ से, विशाखा में शुक्र प्रवेश ७।५, दशमी श्राद्ध
१०	१०	बु	६	१४	८	४५	पु	१३	५४	११	४९	सि	४६	५६	२५	२	वि	६	१४	८	४५	२९	३३	६	१६	१८	५	१७	२४	2	कर्क	५	१४	४४	८	२	२५	१९	१५	३२	भ. ८।४५ तक, एकादशी श्राद्ध, श्री महात्मा गांधी जयंती, D
११	११	गु	०	५०	६	३६	श्ले	१०	५	१०	१८	मा	३८	३९	२१	४४	बा	०	५०	६	३६	२९	२९	६	१६	१८	४	१८	२५	3	सिं. १०।१८	५	१५	४३	१०	५	२६	२५	१६	१७	इन्दिरा एकादशी व्रत (वैष्णव), द्वादशी श्राद्ध, सन्यासी श्राद्ध, E
०	१२	गु	५३	४६	२७	४६	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	द्वादशी क्षयः
१२	१३	शु	४५	२१	२४	२५	म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	शु	२९	११	१७	५७	ग	११	४१	१४	९	२९	२४	६	१७	१८	३	१९	२६	4	सिंह	५	१६	४२	१५	७	२७	३३	१६	५८	भद्रा २४।२५ से, शनि प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, कलियुगादि, F
१३	१४	श	३६	२	२०	४२	पूफा	५०	२८	२६	२९	शु	१८	५१	१३	५०	वि	१०	४६	१०	३६	२९	२०	६	१७	१८	१	२०	२७	5	कं. १०।४४	५	१७	४१	२२	९	२८	४१	१७	३७	भद्रा १०।३६ तक, विषाग्नि शस्त्रादि से मृतकों का श्राद्ध, चतुर्दशी श्राद्ध, G
१४	३०	र	२६	१८	१६	४९	ह	४२	४१	२३	२२	ब्र	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	चतु	१	११	६	४६	२९	१६	६	१८	१८	०	२१	२८	6	कन्या	५	१८	४०	३१	११	२९	४९	१८	१५	मंगल कन्या में प्रवेश ९।१०, देवपितृकार्यामावस्या, सर्वपितृ H

A शयन २ व्रत, द्वितीया श्राद्ध, सायन तुला में सूर्य १०।२९, दक्षिण गोल प्रा. B सप्तमी श्राद्ध. C व्रत, मातृ नवमी, सौभाग्य श्राद्ध, भूदान जयन्ती, मंगल उदय पूर्वे २७।५६ D इन्दिरा एकादशी व्रत स्मार्त, गुरुनानक देव शहीद दिवस (प्रा. मत में) E त्रिस्पृशा, महाद्वादशी व्रत F मासशिवरात्रि व्रत G बुध उदय पूर्वे ९।३२, शठ्ये मिराज, महापात १७।०१ से २०।४९ तक H श्राद्ध, पितृ विसर्जन, बुध मार्गी २३।५८

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

आश्विन कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ३० सितं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	२	४	५	३	६	२	१	७	१०	९	७
१२	१६	२६	८	१८	१९	५	१८	१८	१	१४	२१
४६	११	४	१२	३	३७	४	४	४	३०	२५	२०
१०	५३	५२	३३	५२	१९	१७	०	०	५०	१२	२
५८	[illegible]	३८	५७	१०	२१	१	३	३	१	०	१
५८	२०	१३	१४	३	२०	१४	११	११	३६	३९	७
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	उ	अ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

(कुण्डली, ता. ३० सितं.) ७ शु. | ५ मं. | ८ के. प्लू. | सू. ६ बु. | ४ गु. | ९ | ३ चं. श. | १० ने. | १२ | २ रा. | ११ ह. | १

मास में ५ रवि व पांच सोमवार से मिलाजुला फल रहेगा। पक्ष में क्षय व वृद्धि से सत्तारूढ़ उच्चाधिकारियों में अन्तर्विरोध पैदा होकर सामाजिक एवं राजनैतिक गतिरोध पैदा होंगे। यथा- **यत्र मासे रवेर्वारा जायन्ते पंच सन्ततम्। दुर्भिक्षं छत्र भंग स्यात् तदास्ते च महद भयम्॥** किसी प्रधान शासक का पदत्याग संभव। दक्षिणी गोलार्द्ध के राष्ट्रों व समुद्री क्षेत्रों दक्षिण अफ्रीका, दक्षिण अमेरिका, आस्ट्रेलिया व प्रशान्त महासागर के क्षेत्रों में चक्रवात, तूफान, भूकम्प आदि प्राकृतिक प्रकोप से जनमानस में भय व्याप्त होगा। देश के मध्य भाग में उड़ीसा, मध्य प्रदेश और उत्तरी भाग आन्ध्र प्रदेश में तूफानी हवाओं का जोर रहकर रोगोत्पात भय बढ़ेगा। शासक वर्ग में ताल मेल से नये कानूनी व्यवस्था बनकर विकास के कार्यों की प्रगति होगी। **तेजी मन्दी विचार**-सायन तुला के सूर्य से पक्ष व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी कारक रहेगा। गेहूं, चावल, गुड, शक्कर व तेलों में मन्दी रहेगी। कृ. ५ शुक्र को हस्त में सूर्य से घी, मसाले की वस्तुएं, चांदी व रबड़ के सामान में तेजी कारक है। उदित मंगल पक्ष में शेयर भाव मन्दे तथा रुई, कपास, वस्त्र तथा रासायनिक वस्तुएं, औषधियों, रंग रोगन के सामान, बारूद में तेजी फलप्रद रहेगा। **आकाश लक्षण**-सूर्य-शनि का एवं मंगल का राहू-हर्षल व प्लूटो के साथ होना वर्षा अवरोधक योगप्रद है। राजस्थान, हरियाणा, पंजाब में बादल दर्शन व कहीं-कहीं छींटे पड़ेंगे। गुजरात, महाराष्ट्र में खण्ड वर्षा होगी। उत्तरी प्रदेशों में बादल चाल के साथ हवाओं की तेजी रहेगी। **शकुन विचार**- आश्विन कृष्णा दशमी से द्वादशी तक मेघ गर्जना व बिजली चमकने पर आगे गेहूँ के भाव तेज होते हैं। यथा-**दशमी अरु एकादशी अथवा द्वादशी जान। घन गरजे बीजल खिंवे तेज गेहूँ पिछान॥** आश्विन कृष्णा ४ को घनघोर बादल होने पर शुक्ल पक्ष में अच्छी वर्षा होकर शरद कालीन फसलों की उत्तम उपज होती है।

(कुण्डली, ता. ६ अक्टू.) ७ शु. | ५ मं. | ८ प्लू. के. | सू. बु. ६ चं. | गु. ४ | ९ | ३ श. | १० ने. | १२ | २ रा. | ११ ह. | १

ता. ६ अक्टू. ❖ आश्विन कृ. ३० रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	५	४	५	३	६	२	१	७	१०	९	७
१८	११	२९	४	१९	२१	५	१७	१७	१	१४	२१
४०	५८	५४	२९	२	१७	९	४४	४४	२१	२१	२७
३१	३०	११	१७	३९	८	५८	५६	५६	५२	४६	१२
५९	[illegible]	३८	३	९	१९	०	३	३	१	०	१
११	४२	१३	२०	२५	३८	३४	११	११	२१	२७	१८
मा	मा	मा	व	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन शुक्ल पक्ष-13

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ७ से २१ अक्टू. सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति १५ से २९ आश्विन तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोले, शरद् ऋतु।

ता. मि.	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१५	१	चं	१६	२७	१२	५७	चि	३५	६	२०	२१	वै	४६	२६	२४	५३	बव	१६	२७	१२	५७
१६	२	मं	७	२५	९	१७	स्वा	२८	११	१७	३५	वि	३६	२३	२०	५२	कौ	७	२५	९	१७
०	३	मं	५०	११	२९	६०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१७	४	बु	५२	१५	२७	१८	वि	२२	२१	१५	१६	प्री	२७	१९	१७	१५	व	२५	३१	१६	३२
१८	५	गु	४६	५६	२५	७	अनु	१८	०	१३	३२	आ	१९	२७	१४	७	बव	१९	२२	१४	५
१९	६	शु	४३	२७	२३	४४	ज्ये	१५	२२	१२	२९	सौ	१३	०	११	३३	कौ	१४	५७	१२	२०
२०	७	श	४१	५३	२३	६	मू	१४	३५	१२	११	शो	८	३	९	३५	गर	१२	२५	११	१९
२१	८	र	४२	१०	२३	१४	पू.षा	१५	४०	१२	३८	अति	४	३७	८	१३	वि	११	४७	११	५
२२	९	चं	४४	१०	२४	२	उ.षा	१८	२८	१३	४६	सु	२	३५	७	२५	बा	१२	५७	११	३३
२३	१०	मं	४७	३६	२५	२६	श्र	२२	४७	१५	३०	धृ	१	४९	७	७	तै	१५	४२	१२	४०
२४	११	बु	५२	१२	२७	१६	ध	२८	१९	१७	४३	शू	२	५	७	१४	व	१९	४६	१४	१८
२५	१२	गु	५७	३६	२९	२७	शत	३४	४५	२०	१८	गं	३	९	७	४०	बव	२४	४८	१६	२०
२६	१३	शु	६०	०	—	—	पू.भा	४१	४६	२३	७	वृ	४	४८	८	२०	कौ	३०	३१	१८	३७
२७	१३	श	३	३१	७	५०	उ.भा	४९	८	२६	५	ध्रु	६	४९	९	९	तै	३	३१	७	५०
२८	१४	र	९	४५	१०	२०	रे	५६	३७	२९	५	व्या	९	२	१०	३	व	९	४५	१०	२०
२९	१५	चं	१६	२	१२	५१	अ	६०	०	—	—	हर्ष	११	१७	१०	५८	बव	१६	२	१२	५१

ति	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र	मु	अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा	अं	क	वि	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं	मि	अस्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१	२९	१२	६	१८	१७	५९	२२	२९	7	तु. ९।५०	५	१९	३९	४२	[illegible]	०६	५८	१८	५४	शारदीय नवरात्र प्रारम्भ, कलश स्थापना, अग्रसेन ज., मातामह A
२	२९	८	६	१९	१७	५८	२३	मा१	8	तुला	५	२०	३८	५६	१५	०८	०७	१९	३४	सावान मु. मास ८ प्रा.
३	०	०	०	०	०	०	०	०	0	० ० ०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि क्षयः हरिवासर ९।४६ तक, महापात २६।०२ से,
४	२९	३	६	२०	१७	५७	२४	२	9	वृ. ९।१८	५	२१	३८	११	१७	०९	१६	२०	१८	भ. १६।३२ से २७।१४ तक, विनायक ४
५	२८	५९	६	२०	१७	५६	२५	३	10	वृश्चिक	५	२२	३७	२८	१८	१०	२५	२१	०६	उपांग ललिता पंचमी व्रत, ललिता पंचमी, सूर्य चित्रा में B
६	२८	५५	६	२१	१७	५५	२६	४	11	ध. १२।६०	५	२३	३६	४६	२१	११	३१	२१	५८	शनि वक्री १६।१०, सरस्वती आवाहन
७	२८	५१	६	२१	१७	५४	२७	५	12	धनु	५	२४	३६	७	२२	१२	३२	२२	५५	भ. २३।६ से, सरस्वती पूजनम्, अन्नपूर्णा परिक्रमा २३।६ से प्रा., C
८	२८	४७	६	२२	१७	५३	२८	६	13	म. १८।५१	५	२५	३५	२९	२४	१३	२७	२३	५३	भ. ११।५ तक, दुर्गाष्टमी, भद्रकाल्यावतार, सरस्वती D
९	२८	४३	६	२२	१७	५२	२९	७	14	मकर	५	२६	३४	५३	२६	१४	१६	२४	००	शस्त्रादि पूजा, मन्वादि ९, महानवमी, सरस्वती विसर्जन, नवरात्र समाप्त
१०	२८	३८	६	२३	१७	५०	३०	८	15	कुं. २८।३४	५	२७	३४	१९	२८	१४	५७	२४	५१	पंचक प्रारम्भ २८।३४ से, बुध हस्त में प्रवेश १०।३३, विजया E
११	२८	३४	६	२४	१७	४९	३१	९	16	कुंभ	५	२८	३३	४७	२९	१५	३४	२५	४९	भ. १४।१८ से २७।१६ तक, पापांकुशा एकादशी व्रत सबका, भरत मिलाप
१२	२८	३०	६	२४	१७	४८	का१	१०	17	कुंभ	५	२९	३३	१६	३१	१६	०७	२६	४४	सूर्य तुला में प्रवेश १६।१७, संक्रांति पुण्य, मु. १५ बैठी, F
१३	२८	२६	६	२५	१७	४७	२	११	18	मी. १६।२६	६	०	३२	४७	३३	१६	३७	२७	३६	प्रदोष व्रत, महापात ६।४६ तक
१३	२८	२२	६	२५	१७	४६	३	१२	19	मीन	६	१	३२	२०	३५	१७	०५	२८	३०	
१४	२८	१८	६	२७	१७	४५	४	१३	20	मे. २९।५	६	२	३१	५५	३७	१७	३३	२९	२२	भ. १०।२० से २३।३६ तक, वक्री स्वाती में शुक्र प्रवेश ६।३५, पंचक समाप्ति G
१५	२८	१४	६	२७	१७	४४	५	१४	21	मेष	६	३	३१	३२	३९	१८	०२	३०	१३	कार्तिक स्नान प्रारम्भ, पूर्णिमा पुण्य, महर्षि बाल्मीकि जयंती, H

A श्राद्ध, चन्द्रदर्शन मु. ३० भाव सम B प्रवेश २२।४३, शुक्र वक्री २३।४७ C आश्लेषा २ में गुरु १२।२१ D बलिदान, आयंबिल, ओली प्रा. जैन, अन्नपूर्णा परिक्रमा समाप्त २३।१४ तक, मेला ज्यालामुखी, तारा देवी (हिमाचल प्रदेश) E दशमी (रावणदाह), अपराजित व शमी पूजा, श्री माधवाचार्य जयंती, बौद्धावतार १० G २९।५, शरद पूर्णिमा, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, कोजागरी व्रत, मार्गी नेप. २०।११ H आयंबिल ओली समाप्त जैन, मंगल हस्त में प्रवेश २५।३४

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

आश्विन शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १३ अक्टू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
५	८	५	५	३	६	२	१	७	१०	९	७
२५	२२	४	७	२०	२१	५	१७	१७	१	१४	२१
३५	४४	२१	३५	६	३७	११	२२	२२	१६	१९	३६
२९	४	५२	५४	१५	१५	३२	४१	४१	१६	१३	५२
५९	७३२	३८	६१	८	६	०	३	३	१	०	१
२६	२२	२५	१८	३६	३२	१२	११	११	३	१४	२९
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	व	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

७ शु. | ५ | ८ प्लू. के. | सू. मं. ६ बु. | गु. ४ | चं. ९ | ३ श. | १० ने. | १२ | रा. २ | ११ हे. | १

पक्ष में शनि-शुक्र का वक्र गति होना, गुरु अतिचारी तथा शुक्ला तृतीया क्षय विश्व के शक्तिशाली राष्ट्रों में आणविक ताकतों के परीक्षण की होड़ से जनता में भय व्याप्त होगा। यथा-यदा क्रूरा गता वक्रे ह्यतिचारे तु सौम्यकाः। पीड़ा व्याधि भयं तत्र दुर्भिक्षं राज विग्रहे॥ देश के विभिन्न भागों में स्वार्थ परायण नेताओं के प्रोत्साहन से अग्निकांड, बम विस्फोट अराजकता होगी। लोगों में रोगोत्पत्ति बढ़ेगी। मध्य एशिया, आयरलैण्ड, ईरान, ईराक में विशेष घटनाओं का जोर रहेगा। भारत की वैज्ञानिक प्रगति से विदेशी राष्ट्रों में स्तब्धता। तेजी

ता. २१ अक्टू. ❖ आश्विन शु. १५ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

के. ८ प्लू. | मं. ६ बु. | ९ | सू. ७ शु. | ५ | १० ने. | गु. ४ | ११ हे. | १ चं. | ३ श. | १२ | रा. २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	०	५	५	३	६	२	१	७	१०	९	७
३	०	९	१८	२१	१९	५	१६	१६	१	१४	२१
३१	११	२८	७	११	३७	६	५७	५७	६	१८	४९
३२	२८	०	५१	३७	५८	४१	१५	१५	८	१५	२८
५९	७११	३८	९४	७	२५	१	३	३	०	०	१
३९	५२	१७	८	३५	७	६	११	११	४१	२	४१
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मन्दी विचार-सोमवारी प्रतिपदा को चन्द्रदर्शन मु. ३० प. आरंभ में धान्यादिक भावों में मन्दी कारक रहेगा। शु. ५ से शुक्र व शनि की क्रमशः वक्र गति होने से शेयर बाजारों में भारी उथल-पुथल व चना, मूंग, मोंठ में झटके की तेजी। सूती, ऊनी, वस्त्र, रुई, कपास, वारदाना व कागज व्यापार तेज होगा। तुला संक्रान्ति शु. १२ गुरु को १५ मुहूर्ती होना गेहूँ, जौ, ज्वार, चावल, सरसों, मूंगफली, अरण्ड तथा सोयाबिन आदि तेलों में तेजी कारक है। सोना, चांदी में भारी घटाबढ़ी के बाद तेजी। **आकाश लक्षण**-पक्ष में शुक्ला १२ के बाद कुछ स्थानों पूर्वी-दक्षिणी गुजरात, राजस्थान, दिल्ली के निकट क्षेत्रों व हरियाणा में कहीं-कहीं वर्षा होगी। बादल चाल रह कर मौसम में परिवर्तन बनेगा। महाराष्ट्र, बंगाल व उड़ीसा के क्षेत्रों में वर्षा का प्रकोप होकर जन साधारण के कामों में रुकावटें बनेंगी। **शकुन विचार**-आश्विन शुक्ला सप्तमी व अष्टमी को वर्षा होने पर राजा व प्रजा सभी में सुख का संचार होता है। यथा-सातें आठें क्वार सुदी जो वर्षा हो जाय। राज प्रजा दोनों सुखी संशय सब मिट जाय॥ पूर्णिमा की रात्रि में साफ चन्द्रदर्शन आगे की फसलों के लिए शुभ शकुन माना गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक कृष्ण पक्ष-१४ श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २२ अक्टू. से ४ नवम्बर सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिती ३० आश्विन से १३ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोल, शरद-हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ग.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
३०	१	मं	२२	१०	१५	१९	अ	३	५९	८	३	वज्र	१३	२६	११	५०	कौ	२२	१०	१५	१९
काश्	२	बु	२७	५६	१७	३९	भ	११	५	१०	५४	सि	१५	१९	१२	३६	गर	२७	५६	१७	३९
२	३	गु	३३	५	१९	४३	कृ	१७	३९	१३	३२	व्य	१६	४७	१३	१२	व	०	३५	६	४३
३	४	शु	३७	२	२१	२५	रो	२३	२५	१५	५२	वरि	१७	३७	१३	३२	बव	५	२०	८	३७
४	५	श	४०	२३	२२	३९	मृ	२८	७	१७	४५	परि	१७	३७	१३	३३	कौ	९	१	१०	७
५	६	र	४१	५८	२३	१८	आ	३१	२६	१९	५	शि	१६	३३	१३	८	गर	११	२२	११	४
६	७	चं	४१	५२	२३	१६	पुन	३३	९	१९	४७	सि	१४	१५	१२	१३	वि	१२	८	११	२३
७	८	मं	३९	५७	२२	३१	पु	३३	६	१९	४७	सा	१०	३३	१०	४६	बा	११	८	१०	५९
८	९	बु	३६	१४	२१	२	आ	३१	१७	१९	४	शु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	८	१८	९	५२
९	१०	गु	३०	४८	१८	५३	म	२७	४६	१७	४०	ब्र	५१	२	२६	५९	व	३	४२	८	३
१०	११	शु	२३	५५	१६	८	पूफा	२२	४६	१५	४१	ऐं	४२	४	२३	२४	बा	२३	५५	१६	८
११	१२	श	१५	५२	१२	५६	उफा	१७	३७	१३	१४	वै	३२	१५	१९	२९	तै	१५	५२	१२	५६
१२	१३	र	७	३	९	२५	ह	९	४०	१०	२८	वि	२१	५३	१५	२१	व	७	३०	९	२५
०	१४	र	५७	५२	२९	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
१३	३०	चं	४८	४४	२६	६	चि	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	प्री	११	१८	११	८	चतु	२३	१५	१५	५५

ग.मि.	दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि.	
३०	२८	१०	६	२७	१७	४३	६	१५	22	मेष	६	४	३१	११	[illegible]	१८	३३	७	६	अशून्य शयन २ व्रत, बुध अस्त पूर्व में २९।३०
काश्	२८	६	६	२८	१७	४३	७	१६	23	वृ. १०।३०	६	५	३०	५२	४३	१९	६	७	५०	भारतीय कार्तिक मासारंभ, गुरु रामदास जयन्ती (प्रा. मत से). A
२	२८	२	६	२९	१७	४२	८	१७	24	वृष	६	६	३०	३५	४५	१९	४३	८	५५	भ. ६।४३ से १९।४३ तक, सूर्य स्वाती में ९।१७, बुध चित्रा में B
३	२७	५८	६	२९	१७	४१	९	१८	25	मि. [illegible]	६	७	३०	२०	४७	२०	२५	९	५२	कृष्ण चतुर्थी व्रत, करक चतुर्थी, करवा चौथ व्रत, दशरथ चौथ
४	२७	५४	६	३०	१७	४०	१०	१९	26	मिथुन	६	८	३०	७	५०	२१	१३	१०	४८	राहु रोहिणी २ व केतु अनुराधा ४ में प्रवेश १५।४०. C
५	२७	५०	६	३१	१७	३९	११	२०	27	मिथुन	६	९	३०	५७	५१	२२	७	११	४४	भ. २३।१८ से, स्कन्द षष्ठी
६	२७	४६	६	३१	१७	३८	१२	२१	28	क. १३।४०	६	१०	२९	४८	५४	२३	६	१२	३७	भ. ११।२३ तक, बुध तुला में प्रवेश १२।२३
७	२७	४३	६	३२	१७	३७	१३	२२	29	कर्क	६	११	२९	४२	५६	२७	००	१३	२६	अहोई अष्टमी, राधा कुण्ड स्नान मथुरा, कालाष्टमी
८	२७	३९	६	३३	१७	३६	१४	२३	30	सिं. १९।१४	६	१२	२९	३८	५८	२४	९	१४	१०	
९	२७	३५	६	३४	१७	३६	१५	२४	31	सिंह	६	१३	२९	३६	[illegible]	२५	१४	१४	५२	भ. ८।३ से १८।५३ तक, सरदार पटेल जयंती, श्रीमति इंदिरा गाँधी D
१०	२७	३१	६	३४	१७	३५	१६	२५	N1	कं. २१।०६	६	१४	२९	३७	२	२६	१९	१५	३०	बुध स्वाति में प्रवेश १२।१८, रमा एकादशी व्रत सबका, E
११	२७	२८	६	३५	१७	३४	१७	२६	2	कन्या	६	१५	२९	३९	५	२७	२६	१६	७	गोवत्स पूजा, शनि प्रदोष, धन त्रयोदशी, धन्वन्तरी जयन्ती, F
१२	२७	२४	६	३६	१७	३३	१८	२७	3	तु. २१।०१	६	१६	२९	४४	६	२८	३३	१६	४४	भ. ९।२५ से १९।३५ तक, रूप चतुर्दशी, नरक १४, G
०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	चतुर्दशी तिथि क्षय:
१३	२७	२०	६	३६	१७	३३	१९	२८	4	तुला	६	१७	२९	५०	९	२९	४१	१७	२३	देवपितृकार्याऽमावस्या, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपावली, H

पश्चिमास्त शुक्र

A शुक्र पश्चिम में अस्त १०।५८, सायन वृश्चिक में सूर्य १९।५२, हेमन्त ऋतु प्रा. B प्रवेश ११।३९, व्यतिपात १३।१२ तक C श्री पद्म प्रभु जयंती जैन D पुण्य दिवस, महापात १३।२५ से १८।४ तक E नवम्बर मास ११ ता. ३० F यम दीपदानं महामना मालवीय पुण्य दिवस G मास शिवरात्रि व्रत, दीपदानं, हनुमान ज. H सोमवती अमावस्या, कमला जयंती

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

कार्तिक कृ. ८ भौमे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २९ अक्टू.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	३	५	६	३	६	२	१	७	१०	९	७
११	८	१४	१	२२	१५	४	१६	१६	१	१४	२२
२९	४०	३४	११	८	३०	५४	३१	३१	२	१९	३
४२	२	३१	२५	२३	५०	५१	४९	४९	१	२३	३४
५९	८१०	३८	१००	६	३६	१	३	३	०	०	१
५६	०	२१	९	२६	०	५३	११	११	१८	१८	५२
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	व	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. २९ अक्टू.): प्लू. ८ के. | ६ मं. | ९ | सू. बु. ७ शु. | ५ | ४ | १० ने. | चं. गु. | ह. ११ | १ | शा. ३ | १२ | रा. २

मास में पांच मंगलवार व शुक्र का देवगण में पश्चिमास्त होना सीमावर्ती क्षेत्रों में सैनिक गतिरोध बढ़कर शासकों के लिए चिन्ताप्रद रहेगा। यथा-**सुरगुणे भृगुजास्तगतिर्यदा दिवस गुर्जर मालव मण्डले। भवति देश भयं नृप विग्रहः प्रथमतोऽपि च धान्यमहर्घता॥** तुला राशि में बुध से आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, श्रीलंका, दक्षिणी अफ्रीका, जापान में बम बिस्फोट, वाहन, यान दुर्घटनाएं, भूकम्प आदि फल परिदृश्य होंगे। देश के कई प्रान्तों में राजनैतिक उलझनें उभरेंगी। जिसमें नेताओं के आपसी विवाद बनकर शासकीय कामों में अवरोध पैदा होंगे। **यदा च तुला राशिस्थो निशाकर सुतस्तदा। मेघश्च जायते तत्र मेदिनी कलहान्विता॥** सोमवती ३० को दीपावली होना पक्षान्त में शान्ति कारक है। विश्व के राष्ट्रों पर भारतीय शान्ति वार्ता का प्रभाव पड़ेगा। **तेजी मन्दी विचार**-कृष्णा १ को पूर्वास्त बुध चना, चावल, उड़द, मूंग, मोंठ में मन्दी कारक है। श्वेत वस्तुएं चांदी, रसायनिक पदार्थों व गुंवार, कागज व्यापार में घटाबढ़ी रहेगी। तिल, सरसों, मूंगफली, रुई एवं वस्त्र और शेयरों में तेजी रहेगी। यथा-**आदित्य बुध शुक्राश्च ह्येकराशौ त्रयो यदि। यानि कानि च धान्यानि सर्व साम्यं स्मृतं बुधैः॥** कृष्ण ११ शुक्र से सोना, गेहूँ, बाजरा, ज्वार तेज होगा। **आकाश लक्षण**-मौसम परिवर्तन का प्रभाव होगा। सामन्यतः ठण्डी हवाएं चलेंगी। उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा व पंजाब में कहीं-कहीं छुटपुट वर्षा होगी। वायु वेग का प्रकोप रहेगा। कश्मीर, हिमाचल प्रदेश व बंगाल में हिमपात। **शुकन विचार**-कृष्णा एकादशी को वर्षा होना आगामी आषाढ़ मास में वर्षा कारक होता है। यथा-**कातिक बदी एकादशी, बादल वर्षा होय। षाढ़ मास वर्षा अधिक धान उगाओ बोय॥** कृष्णा द्वादशी को बादल दर्शन होने से श्रावण मास की उपज श्रेष्ठ होती है।

ता. ४ नवम्बर ❖ कार्तिक कृ. ३० चन्द्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (ता. ४ नवम्बर): प्लू. ८ के. | ६ मं. | ९ | सू. बु. ७ शु. चं. | ५ | ४ गु. | १० ने. | ह. ११ | १ | श. ३ | १२ | रा. २

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	६	५	६	३	६	२	१	७	१०	९	७
१७	५	१८	११	२२	११	४	१६	१६	१	१४	२२
२९	२०	२४	१०	४४	५३	४१	१२	१२	१	२१	१५
५०	४०	४३	२९	४२	५१	३५	४४	४४	०	४५	१
६०	९०८	३८	९९	५	३४	२	३	३	०	०	१
९	३३	२३	३	३०	४२	३४	११	११	१	३१	५८
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	मा	उ	अ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ५ से २० नवम्बर सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २९ कार्तिक तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

ता.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिन मान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.					चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि	प्र	मु	अं	भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि	
१४	१	मं	४०	४	२२	३९	वि	४८	३३	२६	३	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	किं	१४	१८	१२	२०	२७	१७	६	३७	१७	३२	२०	२९	5	वृ. २०।६१	६	१८	२९	५९	[illegible]	६	५१	१७	२३	अन्नकूट-गोवर्धन पूजा-बलिराज पूजा, चित्रगुप्त पूजा, द्युत क्रीडा दिवस, A
१५	२	बु	३२	१९	१९	३४	अनु	४२	५२	२३	४७	शो	४१	४८	२३	२१	बा	६	३	९	३	२७	१३	६	३८	१७	३१	२१	३०	6	वृश्चिक	६	१९	३०	९	१२	८	१	१८	५	चन्द्रदर्शन मु. ३० भाव सम, सूर्य विशाखा में प्रवेश १७।२४, यम द्वितीया B
१६	३	गु	२५	५२	१६	५९	ज्ये	३८	३२	२२	४	अति	३३	४५	२०	९	गर	२५	५२	१६	५९	२७	१०	६	३९	१७	३१	२२	रम	7	ध. २२।४	६	२०	३०	२१	१४	९	११	१८	५३	भ. २७।५७ से, रमजान मु. मास ९ प्रा. रोजारंभ, विश्वकर्मा दिवस
१७	४	शु	२१	१	१५	४	मू	३५	५२	२१	०	शु	२७	३	१७	२९	वि	२१	१	१५	४	२७	६	६	३९	१७	३०	२३	२	8	धनु	६	२१	३०	३५	१५	१०	१७	१९	४४	भ. १५।४ तक, विनायक ४, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ ३ दिन का (बिहार)
१८	५	श	१८	२	१३	५३	पूषा	३५	५	२०	४२	धृ	२१	५१	१५	२५	बा	१८	२	१३	५३	२७	३	६	४०	१७	२९	२४	३	9	म. २६।४५	६	२२	३०	५०	१७	११	१७	२०	४१	पांडव पंचमी, सौभाग्य पंचमी, ज्ञान पंचमी (जैन), गुरु गोविन्द सिंहC
१९	६	र	१७	३	१३	३०	उषा	३६	१४	२१	११	शू	१८	१२	१३	५८	तै	१७	३	१३	३०	२६	५९	६	४१	१७	२९	२५	४	10	मकर	६	२३	३१	७	१८	१२	१०	२१	४०	सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ (बिहार) A गोसंवर्धन सप्ताहारंभ
२०	७	चं	१८	२	१३	५५	श्र	३९	१६	२२	२४	गंड	१६	५	१३	८	व	१८	२	१३	५५	२६	५६	६	४२	१७	२८	२६	५	11	मकर	६	२४	३१	२५	२०	१२	५५	२२	४१	भ. १३।५५ से २६।२४ तक जलराम जयन्ती, कल्पादि ७, अष्टान्हिक जैन D
२१	८	मं	२०	५१	१५	३	ध	४३	५८	२४	१८	वृ	१५	२३	१२	५२	बव	२०	५१	१५	३	२६	५३	६	४३	१७	२८	२७	६	12	कुं. ११।१६	६	२५	३१	४५	२१	१३	३४	२३	४०	पंचकारंभ ११।१६ से, गोपाष्टमी, श्री दुर्गाष्टमी, गौ पूजा, यव धान्यादि दान,E
२२	९	बु	२५	१२	१६	४८	शत	५०	१	२६	४४	ध्रुव	१५	५१	१३	४	कौ	२५	१२	१६	४८	२६	४९	६	४३	१७	२७	२८	७	13	कुम्भ	६	२६	३२	६	२२	१४	९	२४	००	आंवला ९, अक्षय नवमी कुष्मांड ९, कृत युगादि ९, जगत् धातृ पूजा-मथुरा परिक्रमा
२३	१०	गु	३०	४२	१९	१	पूभा	५६	५८	२९	३२	व्या	१७	१३	१३	३८	गर	३०	४२	१९	१	२६	४६	६	४४	१७	२७	२९	८	14	मी. २२।४८	६	२७	३२	२८	२४	१४	४०	२४	३७	पं. जवाहरलाल नेहरू जयंती, बाल दिवस, बाल मेला (दिल्ली)
२४	११	शु	३६	५३	२१	३०	उभा	६०	०	-	-	ह	१९	१०	१४	२५	व	३	४३	८	१४	२६	४३	६	४५	१७	२६	३०	९	15	मीन	६	२८	३२	५२	२६	१५	८	२५	३२	भ. ८।१४ से २१।३० तक, देव प्रबोधिनी ११व्रत सबका, तुलसी विवाह,F
२५	१२	श	४३	१९	२४	५	उभा	४	२३	८	३१	व	२१	२३	१५	१९	बव	१०	४	१०	४८	२६	४०	६	४६	१७	२६	मार्ग	१०	16	मीन	६	२९	३३	१८	२६	१५	३७	२६	२५	हरिवासराऽभावः, सूर्य वृश्चिक में प्रवेश १६।७, संक्रान्ति पुण्य मु. ३०बैठी G
२६	१३	र	४९	३८	२६	३८	रे	११	५५	११	३३	सि	२३	३६	१६	१३	कौ	१६	२९	१३	२२	२६	३७	६	४७	१७	२५	२	११	17	मे. ११।३३	७	०	३३	४४	२८	१६	५	२७	१७	पंचक समाप्ति ११।३३, प्रदोष व्रत, मेला वीर वैरागी नकोदर जन्मोत्सव H
२७	१४	चं	५५	३०	२८	५९	अ	१९	११	१४	२८	व्य	२५	३४	१७	१	गर	२२	३७	१५	५०	२६	३४	६	४७	१७	२५	३	१२	18	मेष	७	१	३३	१२	३०	१६	३५	२८	८	भ. २८।५९ से, व्यतिपात १७।१ तक, बैकुण्ठ १४, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा।
२८	१५	मं	६०	०	-	-	भ	२५	५६	१७	११	वरि	२७	६	१७	३९	वि	२८	११	१८	५	२६	३१	६	४८	१७	२५	४	१३	19	वृ. २३।६९	७	२	३४	४२	३१	१७	७	२९	००	भ. १८।५ तक, अनुराधा में सूर्य प्रवेश २३।२८, सत्यव्रत पूर्णिमा व्रत
२९	१५	बु	०	४१	७	५	कृ	३१	५८	१९	३६	प	२८	४	१८	३	बव	०	४१	७	५	२६	२८	६	४९	१७	२४	५	१४	20	वृष	७	३	३५	४३	३३	१७	४३	६	४९	कार्तिकी पूर्णिमा पुण्य, देव दीवाली, मेला पुष्करराज व रेणुका तीर्थ गढ़ J

B भैया दूज, यमुना स्नानम्, शुक्र पूर्व में उदय ६।४० C पुण्य (प्रा. मत से), विशाखा में बुध प्रवेश १४।४७ D व्रतारंभ, सहस्रार्जुन जयंती, आश्लेषा ३ में गुरु प्रवेश ७।१०, मंगल चित्रा में प्रवेश २२।२ E गौशाला निर्माण, गौ संवर्द्धन सप्ताह समाप्त, महापात १२।२४ से १८।१५ तक F भीष्म पंचकारंभ, चातुर्मास व्रत नियमादि समाप्ति, मेला पुष्कर (राज.), पण्ढरपुर यात्रा (महाराष्ट्र), बुध वृश्चिक में प्रवेश २०।२८ G समभाव, वक्री चित्रा में शुक्र १४।१ H (पंजाब), बुध अनुराधा में प्रवेश २२।४७। दिवस, चौमासी चौदश जैन J गंगा, भीष्म पंचक समाप्त, नानक जयंती, जैन अष्टान्हिक व्रत पूर्ति, कार्तिक स्नान समाप्ति, निम्बार्काचार्य जयंती, रथयात्रा जैन

कार्तिक शु. ८ भौमे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ नवं. **[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]** ता. २० नवम्बर ❖ कार्तिक शु. १५ बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
६	९	५	६	३	६	२	१	७	१०	९	७
२५	२७	२३	२४	२३	७	४	१५	१५	१	१४	२२
३१	०	३१	१३	२४	५६	१८	४७	४७	२	२६	३१
४५	१२	५८	१६	१	४	२४	१८	१८	३१	४४	१६
६०	७३०	३८	९६	४	२१	३	३	३	०	०	२
२१	२३	२६	१८	९	२३	१८	११	११	२६	६६	६
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

प्लू.८के. — ६ मं. — ९ — सू. ७ शु. बु. — ५ — चं. १० ने. — ४ गु. — ह.११ — १ — ३ श. — १२ — २रा.
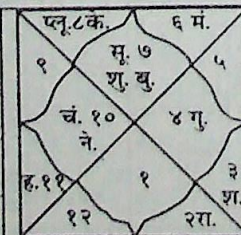
शनिवारी संक्रान्ति एवं शुक्र का राक्षस गण में उदय होने का प्राचीन दैवज्ञों ने इस प्रकार फल लिखा है। यथा-नक्षत्रे राक्षस गणे शुक्रस्याभ्युदय सति। गुर्जर मुद्गल भयं दुर्भिक्षं द्रव्य हीनता। उत्पातादिषु देवेषु सिन्धु देशेति विग्रहः। दिन त्रयम वाणिज्यं विग्रहो मालवादिके॥ गुजरात, कच्छ, भुज तथा पाकिस्तान, अरब राष्ट्र व सिंध देशों में उत्पात, जन क्लेश, रोगोत्पात अथवा प्राकृतिक प्रकोप से जन-धन की हानि होगी। शासकों में भय तथा पद लोलुप पदों का प्रत्यक्ष दर्शन होकर मंत्री मण्डल में परिवर्तन होंगे। शनि-सूर्य का षडाष्टक व सूर्य, केतु, बुध, प्लूटो का योग पर्वतीय क्षेत्रों में हिमपात व शीत लहर से महामारी व रोगोपद्रव कारक है। तेजी मन्दी विचार-पक्ष में वस्त्र, सूत, बारदाना, पाट तथा सोना, चांदी पीतल में घटाबढ़ी रहेगी। बुधवार को चन्द्रदर्शन ३० मु. से पक्षारम्भ में धान्यादि गेहूँ, मूंग, चावल, चना में मन्दी रहकर उत्तरार्द्ध में तेज होंगे। गुड़, चीनी, नमक, घी और रेशमी, ऊनी वस्त्रों में उछाले की तेजी होगी। सूर्य संक्रान्ति मु. ३० से सरसों, अलसी, अरण्ड व मूंगफली और तेलों में उतार-चढ़ाव रहेगा। बुधो वृश्चिक राशिस्थो घृत तैल महर्घता। सुभिक्षं तत्र धान्यानां लोकानां च शुभं भवेत्॥ पक्षान्त में सोना तेज रहे। आकाश लक्षण-समुद्र तटीय क्षेत्रों में वर्षा होगी। कुछ स्थानों पर वायु वेग तूफान से फसलों को हानि होगी। दिल्ली, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों में बादल चाल बूंदा-बांदी आदि कई स्थलों पर होगी। काश्मीर, उत्तरी बंगाल, हिमाचल प्रदेश आदि पर्वतीय क्षेत्रों पर हिमपात के प्रभाव से उत्तरी भारत में शीत गति में वृद्धि होगी। शकुन विचार-कार्तिक शुक्ला एकादशी को वर्षा होना आगे आषाढ़ मास में वर्षा कारक होता है। यथा-कातिक सुदी एकादशी बादल बिजुलि जोई। तौ आषाढ़ में भड्डली बरषा उत्तम होई॥ शुक्ला पूर्णिमा को वर्षा होना आगे धान्य भावों में तेजी फलप्रद होता है।

९ — ७ शु. — ने. १० — सू. प्लू. ८ के. बु. — ६ मं. — ११ ह. — ५ — १२ — रा. २ चं. — ४ गु. — १ — श. ३

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१	५	७	३	६	२	१	७	१०	९	७
३	२	२८	६	२३	६	३	१५	१५	१	१४	२२
३५	५०	३९	५५	५२	११	४९	२१	२१	७	३३	४८
१३	५२	३२	२८	११	४७	४२	५२	५२	१९	४९	२५
६०	७३०	३८	९४	२	१	३	३	३	०	१	२
३३	२४	२८	९	४३	५८	५६	११	११	५०	१	११
मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	-	-	-
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष-१६ श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २१ नव. से ता. ४ दिसम्बर सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति ३० कार्तिक से १३ मार्ग. तक। रविदक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
३०	१	गु	५	३	८	५१	रो	३७	८	२१	४१	शि	२८	२१	१८	१०	कौ	५	३	८	५१
[illegible]	२	शु	८	२७	१०	१३	मृ	४१	१९	२३	२२	सि	२७	५२	१७	५९	ग	८	२७	१०	१३
२	३	श	१०	४६	११	१०	आ	४४	२५	२४	३७	सा	२६	३३	१७	२९	वि	१०	४६	११	१०
३	४	र	११	५६	११	३८	पुन	४६	२१	२५	२४	शुभ	२४	१९	१६	३६	बा	११	५६	११	३८
४	५	चं	११	५१	११	३७	पु	४७	२	२५	४२	शु	२१	६	१५	१९	तै	११	५१	११	३७
५	६	मं	१०	२८	११	५	आ	४६	२७	२५	२९	ब्र	१६	५३	१३	३९	व	१०	२८	११	५
६	७	बु	७	४७	१०	१	म	४४	३६	२४	४५	ऐं	११	३७	११	३३	बव	७	४७	१०	१
७	८	गु	३	४९	८	२७	पूफा	४१	३३	२३	३२	वै	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	३	४९	८	२७
०	९	गु	५८	४२	३०	२४	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
८	१०	शु	५२	३१	२७	५७	उफा	३७	२५	२१	५४	प्री	५०	८	२६	५९	व	२५	४३	१७	१३
९	११	श	४५	३२	२५	१०	ह	३२	२४	१९	५५	आ	४१	२४	२३	३१	बव	१९	६	१४	३५
१०	१२	र	३७	५९	२२	९	चि	२६	४७	१७	४०	सौ	३२	१३	१९	५१	कौ	११	४८	११	४१
११	१३	चं	३०	११	१९	३	स्वा	२०	५०	१५	१८	शो	२२	४७	१६	५	गर	४	५	८	३६
१२	१४	मं	२२	२९	१५	५९	वि	१४	५५	१२	५७	अति	१३	२४	१२	२१	श	२२	२९	१५	५९
१३	३०	बु	१५	१५	१३	६	अनु	९	२४	१०	४६	सु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	नाग	१५	१५	१३	६

दिनांक अं	दिनमान घ	प	सूर्योदय (स्टैं.टा.) घं	मि	अस्त घं	मि	प्र	मु	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
21	२६	२५	६	५०	१७	२४	६	१५	वृष	७	४	३५	४६	[illegible]	१८	२३	७	४६	अशून्य शयन २ व्रत, शुक्र मार्गी १२।२२
22	२६	२३	६	५१	१७	२४	७	१६	मि. [illegible]	७	५	३६	२०	३५	१९	१०	८	४३	भ. २२।४५ से, मंगल तुला में प्रवेश ७।४२, भारतीय मार्गशीर्ष A
23	२६	२०	६	५१	१७	२३	८	१७	मिथुन	७	६	३६	५५	३८	२०	३	९	४०	भ. ११।१० तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
24	२६	१७	६	५२	१७	२३	९	१८	क. [illegible]	७	७	३७	३३	३९	२१	००	१०	३४	
25	२६	१५	६	५३	१७	२३	१०	१९	कर्क	७	८	३८	१२	४०	२२	१	११	२४	सुविधानाथ जयंती व दीक्षा दिवस जैन, महापात ३०।४० से,
26	२६	१३	६	५४	१७	२३	११	२०	सिं. [illegible]	७	९	३८	५२	४२	२३	४	१२	९	भ. ११।५ से २२।३७ तक, बुध ज्येष्ठा में प्रवेश ११।१५, B
27	२६	१०	६	५५	१७	२३	१२	२१	सिंह	७	१०	३९	३४	४४	२४	००	१२	५०	वक्री मृगशिरा ३ में शनि ९।५२, श्रीकाल भैरवाष्टमी, C
28	२६	८	६	५५	१७	२३	१३	२२	कं. [illegible]	७	११	४०	१८	४५	२४	७	१३	२७	प्रथमाष्टमी (उड़ीसा)
0	०	०	०	०	०	०	०	०	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तिथि क्षयः
29	२६	६	६	५६	१७	२२	१४	२३	कन्या	७	१२	४१	३	४७	२५	११	१४	३	भ. १७।१३ से २७।५७ तक, महावीर स्वामी दीक्षा दिवस (जैन), D
30	२६	४	६	५७	१७	२२	१५	२४	तु. [illegible]	७	१३	४१	५०	४९	२६	१५	१४	३९	उत्पत्ति एकादशी व्रत सबका, वैतरणी व्रत
D1	२६	२	६	५८	१७	२२	१६	२५	तुला	७	१४	४२	३९	४९	२७	२०	१५	१५	दिसम्बर मास १२ ता. ३१
2	२५	६०	६	५८	१७	२२	१७	२६	तुला	७	१५	४३	२८	५२	२८	२७	१५	५५	भ. १९।३ से २९।३० तक, ज्येष्ठा में सूर्य प्रवेश २७।४८, मंगल स्वाती E
3	२५	५८	६	५९	१७	२२	१८	२७	वृ. [illegible]	७	१६	४४	२०	५२	२९	३६	१६	३८	मेला पुरमण्डल देविका स्नान (जम्मू-काश्मीर) श्री बाला जयंती, F
4	२५	५६	७	०	१७	२२	१९	२८	वृश्चिक	७	१७	४५	१२	५४	३०	४६	१७	२७	बुध मूल धनु में प्रवेश २६।१६ देवपितृकार्याऽमावस्या, G

A मासारंभ, सौभाग्य सुंदरी व्रत, सायन धनु में सूर्य १७।२८ B शुक्र स्वाती में प्रवेश १३।५३, महापात १३।२५ तक C भैरव दर्शन व पूजनार्चन, शहादते हजरत अली मु. D जुमातुल विदा मु.
E में प्रवेश १६।५२, मास शिवरात्रि व्रत, सोम प्रदोष, संत ज्ञानेश्वर पुण्य दिवस F डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जन्म दिवस G गुरु वक्री १७।००

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

मार्गशीर्ष कृ. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २८ नवं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	४	६	७	३	६	२	१	७	१०	९	७
११	१६	३	१९	२४	७	३	१४	१४	१	१४	२३
४०	४	४७	२३	८	२	१६	५६	५६	१५	४२	६
१८	२१	३३	५५	३३	२८	२६	२६	२६	२०	५३	१३
६०	८६६	३८	५२	१	१६	४	३	३	१	१	२
४५	२४	३२	५७	११	२५	२६	११	११	१४	१६	१५
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

९
७ शु. मं.
सू. बु. ८ प्लू. के.
६
१० ने.
११ ह.
चं. ५
१२
रा. २
गु. ४
१
श. ३

मास में पांच गुरुवार और गुरु अतिचारी से कहीं किसी प्रधान शासक को अपदस्थ होने का फलप्रद है एवं शासक वर्ग में चिन्ता व्याप्त रहे। यथा-**यदा सौम्य ग्रहः कोऽपि ह्यतिचारोऽभिजायते। दुर्भिक्षं नृप पीड़ा च शुभं न दृश्यते क्वचित्।** मंगल-राहु का षडाष्टक योग विश्व में बढ़ती महंगाई, बेरोजगारी तथा भ्रष्टाचार को रोकना असंभव रहेगा। राज्य कर्मचारीगण निरंकुश होकर सरकारी मशीनरियों का दुरुपयोग व वित्तीय स्थिति पर कुप्रभाव पड़ेगा। विदेशी व्यापार के आयात-निर्यात कार्यों में वृद्धि रहेगी।

९
शु. ७ मं.
सू.बु.८ के. चं. प्लू.
६
१० ने.
११ह.
५
१२
रा. २
४गु.
१
३ श.

ता. ४ दिस. ❖ मार्गशीर्ष कृ. ३० बुधे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	७	६	७	३	६	२	१	७	१०	९	७
१७	१३	७	२८	२४	९	२	१४	१४	१	१६	२३
४५	२६	३८	४०	१२	१०	४९	३७	३७	२३	५०	१९
१२	४२	५२	८	४१	१९	६	२०	२५	२५	५५	५०
६०	७७३	३८	९२	०	२७	४	३	३	१	१	२
५८	५६	३४	१९	०१	४१	४३	११	११	३०	२७	१८
मा	मा	मा	मा	मा	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अन्तर्राष्ट्रीय जगत में भारत को नवीन अनुसंधान में सफलता मिलने पर कीर्ति मान बनेगा। जन समुदाय में नव जागृति होगी। **तेजी मन्दी विचार**-मार्गी शुक्र से जौ, ज्वार, गेहूँ, चावल, गुंवार, मूंग, मोंठ, बाजरा में मन्दा रहेगा। ज्येष्ठा में बुध से गुड़, चीनी, घी, नमक, सूती वस्त्र तथा कागज व्यापार में तेजी होगी। यथा-**ज्येष्ठायामिक्षु शाल्याज्य महर्घमश्वरोगिता।** लौंग, इलायची, दालचीनी, मिर्च आदि मसाले की वस्तुओं में घटाबढ़ी एवं शेयर्स भावों में गिरावट रहेगी। पक्षान्त में धान्य भाव तेज होंगे। यथा-**भूमि पुत्रस्तुले जातः सर्व धान्य महर्घता। माषामुद्गास्तथा सूत्रं कार्पासादि विशेषतः॥** **आकाश लक्षण**-उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा, दिल्ली, पंजाब में सामान्य बादल दर्शन बनकर वायु मंडल दूषित रहेगा। पक्ष के उत्तरार्द्ध में उत्तरी भारत के कुछ भागों तथा बंगाल, आसाम में हल्की वर्षा होगी। **शुकन विचार**-मार्गशीर्ष कृष्णा ७ को आकाश साफ रहे तो आगे वैशाख में धान्यों के भावों में मन्दी रहती है। यथा-**मार्गशीर्षस्थ सप्तम्यां निर्मलचेद दिवानिशम्। धान्यं समर्घं वैशाखे साभ्रतायां महर्घता॥** कृ. १४ व अमावस्या को बादल चाल होना आगे अन्न व तृण में तेजी कारक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष-१० श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ५ से १९ दिसम्बर सन् २००२ ई., राष्ट्रीय मिति १४ से २८ मार्गशीर्ष तक। रवि दक्षिणायने, दक्षिण गोल, हेमन्त ऋतु।

ता. मि	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	रवि स्पष्ट रा.	अं.	क.	वि.		चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१४	१	गु	८	४९	१०	२३	ज्ये	४	४०	८	५३	शू	४८	१८	२६	२०	बव	८	४९	१०	३३	२५	५४	७	१	१७	२२	२०	२९	5	ध. ८।५३	७	१८	४६	६	[illegible]	७	५५	१८	२३	चन्द्रदर्शन मु. ३० भाव सम, रुद्र व्रत (पोंड़िया व्रत)
१५	२	शु	३	३५	८	२३	मू	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गंड	४१	५१	२३	४६	कौ	३	३५	८	२७	२५	५३	७	१	१७	२३	२१	म.१	6	धनु	७	१९	४७	०	५६	९	००	१९	२३	सव्वाल मु. मास १० प्रा., ईदुल फितर ईद (मु.)
०	३	शु	५९	५१	३०	५८	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि क्षय:
१६	४	श	५७	५१	३०	११	उषा	५८	३१	३०	२७	वृ	३६	४३	२१	४३	व	२८	३७	१८	२९	२५	५१	७	२	१७	२३	२२	२	7	म. १२।३०	७	२०	४७	५६	५६	९	५८	२०	२४	भ. १८।२९ से ३०।११ तक, विनायक ४, संत घासीराम जयंती. A
१७	५	र	५७	४६	३०	९	श्र	५९	५६	३१	१	ध्रु	३३	३	२०	१६	बव	२७	३३	१८	४	२५	५०	७	३	१७	२३	२३	३	8	मकर	७	२१	४८	५२	५७	१०	४८	२१	२६	नाग पंचमी (दक्षिण भारते), गुरु तेग बहादुर बलिदान B
१८	६	चं	५९	३७	३०	५८	ध	६०	०	-	-	व्या	३०	५२	१९	२५	कौ	२८	२६	१८	२६	२५	४८	७	४	१७	२३	२४	४	9	कुं. १०।३६	७	२२	४९	४९	५८	११	३०	२२	२६	पंचकारंभ १९।३६ से. चम्पा षष्ठी, श्रीराम कलेवा, स्कंद ६, गुहा छठ,C
१९	७	मं	६०	००	-	-	ध	३	११	८	२१	ह	३०	८	१९	७	गर	३१	१२	१९	३३	२५	४७	७	४	१७	२३	२५	५	10	कुंभ	७	२३	५०	४७	५९	१२	७	२३	२३	मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती
२०	७	बु	३	१३	८	२२	शत	८	१०	१०	२१	व	३०	३८	१९	२०	व	३	१३	८	२२	२५	४६	७	५	१७	२३	२६	६	11	मी. ३०।०३	७	२४	५१	४६	५९	१२	४०	२४	००	भ. ८।२२ से २१।२० तक, श्री दुर्गाष्टमी, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
२१	८	गु	८	१९	१०	२५	पूभा	१४	३१	१२	५८	सि	३२	६	१९	५६	बव	८	१९	१०	२५	२५	४५	७	६	१७	२४	२७	७	12	मीन	७	२५	५२	४५	[illegible]	१३	१०	२४	१७	महानन्दा नवमी
२२	९	शु	१४	२५	१२	५२	उभा	२१	४५	१५	४८	व्य	३४	९	२०	४६	कौ	१४	२५	१२	५२	२५	४४	७	६	१७	२४	२८	८	13	मीन	७	२६	५३	४५	०	१३	३८	२५	१०	व्यतिपात २०।४६ तक, बुध पूर्वाषाढ़ा में प्रवेश २०।३६, कल्पादि ९
२३	१०	श	२०	५७	१५	३०	रे	२९	२०	१८	५१	वरी	३६	२३	२१	४०	गर	२०	५७	१५	३०	२५	४३	७	७	१७	२४	२९	९	14	मे. १८।५१	७	२७	५४	४५	१	१४	६	२६	१	भ. २८।४८ से. पंचक समाप्ति १८।५१ तक, श्री अमरनाथ जन्म D
२४	११	र	२७	२२	१८	४	अ	३६	४५	२१	४९	प	३८	२७	२२	३०	वि	२७	२२	१८	४	२५	४३	७	८	१७	२५	३०	१०	15	मेष	७	२८	५४	४६	१	१४	३५	२६	५३	भ. १८।४ तक, सूर्य मूल धनु में प्रवेश ३०।४६ मु. १५ बैठी. संक्रान्ति E
२५	१२	चं	३३	९	२०	२४	भ	४३	३०	२४	३२	शि	३९	६०	२३	८	बव	०	२१	७	१७	२५	४२	७	८	१७	२५	पौष	११	16	मेष	७	२९	५६	४७	२	१५	६	२७	४६	व्यंजन द्वादशी, अखण्ड १२ F मेला जोड़ समाप्त
२६	१३	मं	३७	५८	२२	२०	कृ	४९	१८	२६	५२	सि	४०	४७	२३	२८	कौ	५	४१	९	२५	२५	४१	७	९	१७	२५	२	१२	17	वृ. ७।१०	८	०	५७	४९	२	१५	४१	२८	४७	अनंग १३ व्रत, प्रदोष व्रत, गुरु ग्रंथ साहिब व वार्षिक उत्सव. F
२७	१४	बु	४१	३३	२३	४७	रो	५३	५८	२८	४३	सा	४०	३९	२३	२५	गर	९	५४	११	७	२५	४१	७	९	१७	२६	३	१३	18	वृष	८	१	५८	५१	३	१६	२०	२९	३६	भ. २३।४७ से, पिशाच मोचन श्राद्ध, त्रिपुर भैरव जय., संभवनाथ जय.
२८	१५	गु	४३	५०	२४	४२	मृ	५७	१४	३०	४	शु	३९	३२	२२	५९	वि	१२	५१	१२	१८	२५	४१	७	१०	१७	२६	४	१४	19	मि. १३।२७	८	२	५९	५४	४	१७	५	३०	३४	भ. १२।१८ तक, दत्त जयंती, सत्यव्रत पूर्णिमा व्रत, अगहन पूर्णिमा पुण्य G

A बुध पश्चिम में उदय २७।४२. B दिवस (प्रा. मत से), श्रीराम विवाहोत्सव, महापात ९।५ से १७।४६ तक C मूलक रूपिणी ६ (बंगाल) D व मोक्ष दिन जैन, महामना मदन मोहन मालवीय जयंती E पुण्य, मोक्षदा एकादशी व्रत सबका, गीता जयंती, मलमास प्रारम्भ, मातंगी जयंती, बैकुण्ठ एकादशी, मेला जोड़ ३ दिन का (पंजाब) G अन्नपूर्णा जयंती

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

मार्गशीर्ष शु. ८ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. १२ दिस.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
७	१०	६	८	३	६	२	१	७	१०	९	७
२५	२९	१२	१०	२४	१३	२	१४	१४	१	१५	२३
५२	३३	४२	५३	७	३४	१०	११	११	३६	३	३८
४५	२६	३२	१९	७	३८	३६	५४	५४	४९	११	१०
६१	७३६	३८	९०	१	३९	४	३	३	१	१	२
०	५	३६	१४	३५	१७	५५	११	११	५२	३८	१८
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

कुण्डली (ता. १२ दिस.): ९ बु. | मं. ७ शु. | १० ने. | ८ सू. के. प्लू. | ६ | ह. ११ चं. | ५ | १२ | २ रा. | ४ गु. | १ | ३ श.

ता. १९ दिस. ❖ मार्गशीर्ष शु. १५ गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	१	६	८	३	६	२	१	७	१०	९	७
२	२३	१७	२१	२३	१८	१	१३	१३	१	१५	२३
५९	४३	१७	८	५१	३३	३६	४९	४९	५०	१५	५४
५४	३६	४७	३०	५८	३२	२	३८	३८	५१	११	९
६१	७५६	३८	८३	२	४६	४	३	३	२	१	२
४	३६	३८	७	५६	५४	५७	११	११	११	४८	१६
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

कुण्डली (ता. १९ दिस.): १० ने. | के. प्लू. ८ | ११ ह. | ९ सू. बु. | मं. ७ शु. | १२ | ६ | ३ श. | १ | ५ | २ चं. रा. | ४ गु.

गुरु का कर्क राशि में वक्र होने का फल पूर्वाचार्यों ने लिखा है कि- वक्री भूतो यदा जीवः सुभिक्षं भूतले भवेत्। जन भूपाल सौख्यं स्यात्समर्घं गोरसं घृतम्॥ कल कारखानों में उत्पादन बढ़ेंगे तथा आयात- निर्यात के व्यापारों में वृद्धि होने पर सर्वत्र खुशहाली का संचार होगा। विश्व शान्ति के उपायों पर गंभीर विचार- विमर्श करने में भारत की भूमिका अग्रणी रहेगी। जिससे अनेक राष्ट्रों में देश का सम्मान व प्रभाव बढ़ेगा। शासकगण जन कल्याण हेतु अनेक नवीन योजनाएं प्रारम्भ करेंगे। तेजी मन्दी विचार-गुरुवार को चन्द्रदर्शन मु. ३० होने से बाजरा, मूंग, मोंठ, गुंवार, जौ, ज्वार में घटाबढ़ी होकर तेजी रहेगी। पश्चिमोदय बुध से घी, गुड़, खांड, मूंगफली, सरसों, अलसी, अरण्ड व सोयाबीन के तेलों में तेजी योगप्रद है। कर्क राशिगतो जीवो यदा वक्री भवेत्तदा। रसादिणां महर्घत्वं घृत तेलादि खण्डकम्॥ रसायनिक पदार्थों व शेयरों में मन्दी होगी। आकाश लक्षण- हिमाचल प्रदेश, जम्मू काश्मीर, बंगाल आदि प्रान्तों में वर्षा व पर्वत क्षेत्रों पर हिमपात से शुष्क हवाओं के साथ सर्दी का प्रकोप बढ़ेगा। उत्तरी भागों दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश व बिहार में बादल चाल व वायु वेग रहेगा। दक्षिणी प्रान्तों में मौसम सामान्य रहेगा। शुकन विचार- शुक्ला ८ को बादल वर्षा हो तो आगे ज्येष्ठ- आषाढ़ मास में श्रेष्ठ वर्षा होती है। यथा- कार्तिक सुदी अष्टमी दिनां बादल वर्षा होय। चौमासा वर्षे सही संशय करो न कोय॥ शुक्ला दशमी को वायु होने से आगे वर्षा श्रेष्ठ होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष कृष्ण पक्ष-१८

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २० दिस. से २ जन. सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २९ मार्गशीर्ष से १२ पौष तक। रवि दक्षिण उत्तरायणे, दक्षिण गोल, हेमन्त-शिशिर ऋतु।

रा.मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
२९	१	शु	४४	४८	२५	६	आ	५९	२०	३०	५४	शु	३७	२५	२२	९	बा	१४	२८	१२	५८
३०	२	श	४४	३३	२५	०	पुन	६०	०	-	-	ब्र	३४	२१	२०	५५	तै	१४	४९	१३	७
पौ.१	३	र	४३	१३	२४	२९	पुन	०	१५	७	१८	ऐं	३०	२५	१९	२२	व	१४	०	१२	४८
२	४	चं	४०	५५	२३	३४	पु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वै	२५	४३	१७	२९	बव	१२	१०	१२	४
३	५	मं	३७	४७	२२	१९	म	५७	२७	३०	११	वि	२०	१९	१५	२०	कौ	९	२६	१०	५९
४	६	बु	३३	५६	२०	४७	पूफा	५५	१	२९	१३	प्री	१४	२०	१२	५७	ग	५	५६	९	३५
५	७	गु	२९	२८	१९	१	उफा	५२	२	२८	२	आ	७	५०	१०	२२	वि	१	४६	७	५६
६	८	शु	२४	३०	१७	२	ह	४८	३५	२६	४०	सौ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	कौ	२४	३०	१७	२
७	९	श	१९	७	१४	५३	चि	४४	४६	२५	८	अति	४६	२	२५	३९	ग	१९	७	१४	५३
८	१०	र	१३	२६	१२	३७	स्वा	४०	४२	२३	३१	सु	३८	१६	२२	३३	वि	१३	२६	१२	३७
९	११	चं	७	३५	१०	१७	वि	३६	३५	२१	५३	धृ	३०	२५	१९	२५	बा	७	३५	१०	१७
१०	१२	मं	१	४५	७	५७	अनु	३२	३४	२०	१७	शू	२२	३९	१६	१९	तै	१	४५	७	५७
०	१३	मं	५६	९	२९	४३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
११	१४	बु	५१	०	२७	४०	ज्ये	२८	५४	१८	४९	गं	१५	७	१३	१८	वि	२३	३०	१६	३९
१२	३०	गु	४६	३७	२५	५४	मू	२५	५२	१७	३७	वृ	८	३	१०	२९	चतु	१८	४२	१४	४४

दिनमान घं	मि	स्टैं.टा. सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	क्रां.	चन्द्रोदय (दिल्ली) घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२५	४०	७	१०	१७	२७	५	१५	20	मिथुन	८	४	०	५८	[illegible]	१७	५७	७	३३	विशाखा में शुक्र प्रवेश २५।२४
२५	४०	७	११	१७	२७	६	१६	21	क. [illegible]	८	५	२	२	४	१८	५७	८	२९	उर्स मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में), सायन मकर में सूर्य ३०।४८, A
२५	४०	७	११	१७	२८	७	१७	22	कर्क	८	६	३	६	४	१९	५५	९	२१	भ. १२।४८ से २४।२९ तक, भार. पौष मासारंभ, रविपुष्य योग, B
२५	४०	७	१२	१७	२८	८	१८	23	सिं. ३०।५३	८	७	४	१२	५	२०	५८	१०	८	कृष्ण चतुर्थी व्रत, बुध उत्तराषाढ़ा में प्रवेश ९।२२, C
२५	४०	७	१२	१७	२९	९	१९	24	सिंह	८	८	५	१७	७	२२	१	१०	५१	
२५	४१	७	१३	१७	२९	१०	२०	25	सिंह	८	९	६	२४	७	२३	४	११	२९	भ. २०।४७ से, बुध मकर में प्रवेश ३१।२, क्रिसमस डे बड़ा दिन, ईसा जयंती
२५	४१	७	१३	१७	३०	११	२१	26	कं. १०।५०	८	१०	७	३१	८	२४	००	१२	५	भ. ७।५६ तक, गुरु गोविन्द सिंह जयंती (शिरोमणि कमेटी अमृतसर अनुसार)
२५	४२	७	१४	१७	३०	१२	२२	27	कन्या	८	११	८	३९	८	२४	७	१२	३९	वक्री गुरु आश्लेषा २ में प्रवेश २३।५०, कालाष्टमी, D
२५	४२	७	१४	१७	३१	१३	२३	28	तु. १३।५५	८	१२	९	४७	९	२५	१०	१३	१४	भ. २५।४५ से, रोहिणी १ में राहु अनुराधा ३ में केतु १३।९
२५	४३	७	१४	१७	३२	१४	२४	29	तुला	८	१३	१०	५६	१०	२६	१३	१३	५१	भ. १२।३७ तक, सूर्य पूर्वाषाढ़ा में प्रवेश ९।०४, श्री पार्श्वनाथ जयंती जैन
२५	४४	०	१५	१७	३२	१५	२५	30	वृ. १६।१०	८	१४	१२	६	१०	२७	१९	१४	३१	सफला एकादशी व्रत सबका
२५	४५	७	१५	१७	३३	१६	२६	31	वृश्चिक	८	१५	१३	१६	१०	२८	२७	१५	१६	भ. २९।४३ से, प्रदोष व्रत, ईसाई नव वर्ष की पूर्व संध्या का E
०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	त्रयोदशी तिथि क्षयः
२५	४६	७	१५	१७	३४	१७	२७	J1	ध. १८।१०	८	१६	१४	२६	११	२९	३५	१६	७	भ. १६।३९ तक, शुक्र वृश्चिक में प्रवेश ११।१५, जनवरी मास F
२५	४७	७	१६	१७	३४	१८	२८	2	धनु	८	१७	१५	३७	१०	३०	४१	१७	४	देवपितृकार्याऽमावस्यां वकुला अमावस्या (उड़ीसा), बुध वक्री G

A रवि उत्तरायणे, शिशिर ऋतु प्रा. B महापात १४।१७ से २४।३५ तक C मंगल विशाखा में प्रवेश १०।१६ D अष्टका श्राद्ध, जिन सागर पुण्य दिवस E पर्व न्यू इयर इव, श्री चन्द्र प्रभु जयंती, महापात २२।४९ से, F १ ता. ३१ ईस्वी सन् २००३ प्रा., मास शिवरात्रि G २२।५०, महापात ७।१७ तक

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

पौष कृ. ८ शुक्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २७ दिसं.

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	५	६	९	३	६	२	१	७	१०	९	७
११	१०	२२	०	२३	२५	०	१३	१३	२	१५	२४
८	५०	२६	५६	२३	१२	५६	२४	२४	९	३०	१२
३९	३३	५८	२५	२१	५२	४८	११	११	२०	१२	६
६१	८१९	३८	५४	४	५३	४	३	३	२	१	२
८	१४	४०	४६	२३	२५	४९	११	११	२८	५७	१३
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (ता. २७ दिसं.): बु.१० ने. | के. ८ प्लू. | ११ ह. | सू. ९ | मं. ७ शु. | १२ | ६ चं. | १ | ३ श. | ५ | २ रा. | ४ गु.

मास में ५ शुक्र व ५ शनिवार मध्यम फल कारक हैं। **निशापतेयेश्च तनये शनिः क्षेत्रे यदा भवेत्। समभावः सुखं दुखं तथैव च शुभाशुभम्॥** पक्षारंभ में विदेशी व्यवसाय वृद्धि की अनेक योजनाएं सफल होकर वित्तीय स्थिति में दृढ़ता बनेगी। पक्षान्त में शुक्र, गुरु का षडाष्टक योग होना मिश्र, वियतनाम, ईरान, ईराक व अरब राष्ट्रों, चीन, जापान में कई प्राकृतिक विपत्तियां बनेंगी। अनेक राष्ट्रों में राजनैतिक व आर्थिक परिवर्तन होंगे। जिससे जनविग्रह होगा। देश के मध्य भाग में अराजकता, तोड़फोड़ व हिंसा की अनेक घटनाओं से प्रशासन में चिन्ता रहेगी। **तेजी मन्दी विचार-** शुक्र विशाखा में होने से गेहूँ, चना, बाजरा, मूंग, मोंठ तेज। सरसों, मूंगफली, अलसी, अरण्ड के तेलों में मन्दी कारक है। रोहिणी में राहु गुड, चीनी, चाय, ऊनी वस्त्र ऊन, चौपायों में तेजी फलप्रद है। कृ. १३ का क्षय शेयर बाजार में झटके की तेजी तथा मशीनरी सामान कल पुर्जे और रसायनिक पदार्थों में तेजी रहेगी। चन्दन, कपूर, लौंग, इलायची, मेवा सामान, बादाम, काजू, किसमिस में तेजी रहेगी। **आकाश लक्षण-** इस पक्ष में नागालैण्ड, त्रिपुरा, आसाम, मेघालय व पश्चिमी बंगाल में आकस्मिक तेज वायु के साथ वर्षा होगी। पर्वतीय प्रदेशों व दक्षिणी प्रान्तों में सामान्य वर्षा होकर शीतवृद्धि होगी। मैदानी भागों में बादल चाल व कहीं-कहीं खण्ड वर्षा होगी। **शकुन विचार-** पौष कृष्णा ७ या ८ तिथि को अर्द्ध रात्रिकाल में बादल वर्षा हो तो अग्रिम वर्ष चतुर्मास में श्रेष्ठ वर्षा होती है। यथा-पौष अंधेरी सातैं आठैं। रात अंधेरी बादल काठैं। तो चौमासा बरसे पानी। उपजे धान करो मनमानी॥

कुण्डली (ता. २ जन.): बु.१० ने. | के. ८ प्लू. शु. | ११ ह. | सू. ९ चं. | ७ मं. | १२ | ६ | १ | ३ श. | ५ | रा. २ | ४ गु.

ता. २ जन. ❖ पौष कृ. ३० गुरु प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	८	६	९	३	७	२	१	७	१०	९	७
१७	६	२६	४	२२	०	०	१३	१३	२	१५	२४
१५	१५	१९	३०	५४	४३	२८	५	५	२४	४२	२५
३७	१२	२	४८	२८	३	२३	६	६	४४	१३	१२
६१	८३६	३८	२	५	५७	४	३	३	२	२	२
१०	१८	४१	५६	२३	७	३६	११	११	४१	४	९
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	विशा.	[illegible]	[illegible]	विशा.	[illegible]	रोहि.	अनु.	[illegible]	श्रवण	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पौष शुक्ल पक्ष-१९

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ३ से १८ जनवरी सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २८ पौष तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोल, शिशिर ऋतु।

ता. मि	ति	वा	तिथि घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि
१३	१	शु	४३	१६	२४	३४	पू.षा	२३	४६	१६	४६	धु	..	..	..	..	किं	१४	४८	१३	११
१४	२	श	४१	१५	२३	४६	उ.षा	२२	५२	१६	२५	ह	५१	४४	२३	५८	बा	१२	५	१२	६
१५	३	र	४०	४८	२३	३६	श्र	२३	२५	१६	३८	व	४८	३४	२६	४२	तै	१०	४९	११	३६
१६	४	चं	४२	५	२४	६	ध	२५	३६	१७	३१	सि	४६	४३	२५	५८	व	११	१३	११	४६
१७	५	मं	४५	६	२५	११	श	२९	२८	१९	४	व्य	४६	१२	२५	४५	बव	१३	२२	१२	३८
१८	६	बु	४९	४१	२७	९	पू.भा	३४	५४	२१	१४	वरि	४६	५२	२६	१	कौ	१७	१३	१४	१०
१९	७	गु	५५	३१	२९	२९	उ.भा	४१	३६	२३	५५	प	४८	२७	२६	४०	गर	२२	२९	१६	१६
२०	८	शु	६०	०	—	—	रे	४९	४	२६	५४	शि	५०	३७	२७	३१	वि	२८	४४	१८	४६
२१	८	श	२	२	८	६	अ	५६	४३	२९	५८	सि	५२	५४	२८	२६	बव	२	२	८	६
२२	९	र	८	३७	१०	४४	भ	६०	०	—	—	सा	५४	५१	२९	१३	कौ	८	३७	१०	४४
२३	१०	चं	१४	३६	१३	७	भ	३	५४	८	५०	शु	५६	५	२९	४३	गर	१४	३६	१३	७
२४	११	मं	१९	२७	१५	४	कृ	१०	६	११	१९	शु	५६	१५	२९	४७	वि	१९	२७	१५	४
२५	१२	बु	२२	४७	१६	२३	रो	१४	५२	१३	१४	ब्र	५५	११	२९	२१	बा	२२	४७	१६	२३
२६	१३	गु	२४	२३	१७	२	मृ	१८	२	१४	२९	ऐं	५२	४७	२८	२३	तै	२४	२३	१७	२
२७	१४	शु	२४	१७	१६	५९	आ	१९	३२	१५	५	वै	४९	७	२६	५५	व	२४	१७	१६	५९
२८	१५	श	२२	३७	१६	१९	पु	१९	३१	१५	४	वि	४४	१७	२४	५९	बव	२२	३७	१६	१९

दिनमान घ	प	स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२५	४८	७	१६	१७	३५	१९	२९	3	म. [illegible]	८	१८	१६	४७	..	७	४२	१८	६	
२५	४९	७	१६	१७	३६	२०	३०	4	मकर	८	१९	१७	५८	११	८	३६	१९	८	शुक्र अनुराधा में प्रवेश २२।५७, **चन्द्रदर्शन मु.** ३० भाव सम
२५	५१	७	१६	१७	३७	२१	जि	5	कुं. [illegible]	८	२०	१९	९	१०	९	२३	२०	१०	**पंचकारंभ २८।५९ से, जिल्काद मु.** मास ११ प्रा., श्री यतीन्द्र A
२५	५२	७	१६	१७	३७	२२	२	6	कुंभ	८	२१	२०	१९	१०	१०	३	२१	१०	भ. ११।४६ से २४।६ तक, **विनायक ४**
२५	५४	७	१६	१७	३८	२३	३	7	कुंभ	८	२२	२१	२९	१०	१०	३८	२२	६	व्यतिपात योग २५।४५ तक, मंगल वृश्चिक में प्रवेश २२।३७
२५	५५	७	१७	१७	३९	२४	४	8	मी. [illegible]	८	२३	२२	३९	१०	११	९	२३	००	**वक्री शनि** मृगशिरा २ वृष में प्रवेश १३।५९
२५	५७	७	१७	१७	४०	२५	५	9	मीन	८	२४	२३	४९	९	११	३८	२३	५२	भ. २९।२९ से, **श्री गुरु गोविन्द सिंह जयंती** (प्रा. मत से), श्री B
२५	५९	७	१७	१७	४०	२६	६	10	मे. [illegible]	८	२५	२४	५८	८	१२	६	२४	००	भ. १८।४६ तक, **पंचक समाप्त २६।५४ तक, श्री दुर्गाष्टमी,** C
२६	१	७	१७	१७	४१	२७	७	11	मेष	८	२६	२६	६	८	१२	३५	२४	४४	सूर्य उ.षा. में प्रवेश १०।५८, अष्टमी तिथि वृद्धि
२६	३	७	१७	१७	४२	२८	८	12	मेष	८	२७	२७	१४	८	१३	५	२५	३६	वक्री बुध उ.षा. में प्रवेश १२।४६, मंगल अनुराधा में प्रवेश २६।४३
२६	५	७	१७	१७	४३	२९	९	13	वृ. [illegible]	८	२८	२८	२२	७	१३	३८	२६	२९	भ. २६।१० से, शाम्ब दशमी (उड़ीसा), आचार्य जिन सागर D
२६	७	७	१७	१७	४४	माघ	१०	14	वृष	८	२९	२९	२९	६	१४	१५	२७	२५	भ. १५।४ तक, **सूर्य मकर में प्रवेश १७।३०, मु. ४५ समर्घता, मकर संक्रांति** E
२६	९	७	१७	१७	४४	२	११	15	मि. [illegible]	९	०	३०	३५	५	१४	५७	२८	२२	**प्रदोष व्रत**
२६	१२	७	१६	१७	४५	३	१२	16	मिथुन	९	१	३१	४०	६	१५	४७	२९	२०	
२६	१४	७	१६	१७	४६	४	१३	17	मिथुन	९	२	३२	४६	४	१६	४२	३०	१८	भ. १६।५९ से २८।४४ तक, शुक्र ज्येष्ठा में प्र. २५।२६, F
२६	१७	७	१६	१७	४७	५	१४	18	क. ०४	९	३	३३	५०	४	१७	४३	३१	१३	**सत्य व्रत,** पौष पूर्णिमा पुण्य, माघ स्नानारंभ, शाकंभरी जयंती, G

A सुरीश्वर पुण्यं त्रिस्तुति जैन, **बुध पश्चिम में अस्त १७।१८** B राजेन्द्र सुरीश्वर जन्म पुण्यं जैन, **वक्री धनु में बुध** २३।०० C श्री शाकंभरी यात्रा D पुण्य दिवस जैन, **लोहड़ी (पंजाब) E पवित्रा एकादशी व्रत सबका,** पोंगल पर्व (दक्षिण भारत), गंगा सागर यात्रा, मलमास समाप्त, माघ बिहु (आसाम), तिल संक्रांति, पवित्रा व वैकुण्ठ एकादशी (दक्षिण भारत) **F पूर्णिमा व्रत, बुध पूर्वे उदय २३।४९ G** काशी घाट दशाश्वमेध स्नानारंभ

पौष शु. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
८	०	७	८	३	७	१	१	७	१०	९	७
२६	१	२	२८	२२	९	२९	१२	१२	२	१६	२४
२६	१५	७	२३	०	३४	४८	३६	३६	५०	१	४४
६	४५	८	३३	४३	३२	५१	२९	२९	२	१६	१
६१	[illegible]	३८	७९	६	६१	४	३	३	२	२	२
८	३६	४१	२३	३८	१४	६	११	११	५७	११	०
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

१० ह. ने. | शु. प्लू. ८ मं. के. | ११ | बु. सू. ९ | ७ | १२ | ६ | १ चं. | ३ | ५ | श. रा. २ | ४ गु.

इस पक्ष में शनि वक्र होकर वृष राशि में पुनः प्रवेश करके मंगल से सम सप्तक योग बनाना विश्व में अनेक राष्ट्रों अमेरिका, रूस, चीन, जर्मन व ब्रिटेन, अफ्रीका आदि देशों में युद्धोन्माद भड़ककर अग्निकांड, बम बिस्फोट, आणविक शस्त्रों की होड़ से जनता में भय व शान्ति प्रिय राष्ट्र क्षुब्ध होंगे। तिब्बत, चीन, वियतनाम व जापान के क्षेत्रों में अनेक स्थानों पर हानि व हिंसाएं बढ़ेंगी। वृषे सौरिर्यदा याति विनश्यन्ति चतुष्पदाः। सप्तधान्यं महर्घं च नृपाणां विग्रहो भवेत्॥ देश की सीमाओं पर सैनिक गतिविधियों में हलचल बढ़ेगी जिससे नेताओं में अस्थिरता व भय वृद्धि होगी। यदा-वृश्चिक राशिस्थो जायते च महीसुतः। महर्घं सर्व द्रव्याणां नृपाणां कोप मादिशेत्॥ तेजी मन्दी-शुक्ल पक्ष में तिथि बढ़ना

ता. १८ जनवरी ❖ पौष शु. १५ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

११ ह. | ९ बु. | सू. १० ने. | मं. के. ८ शु प्लू. | १२ | १ | ७ | २ रा श. | ४ गु. | ६ | चं. ३ | ५

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	२	७	८	३	७	१	१	७	१०	९	७
३	२७	६	२०	२१	१६	२९	१२	१२	३	१६	२४
३३	५७	३७	१७	११	५०	२१	१४	१४	११	१६	५७
५०	२२	५०	१५	५८	४७	४०	१३	१३	१४	४१	४३
६१	[illegible]	३८	४१	७	६३	३	३	३	३	२	१
४	३८	४०	१५	२२	४०	३६	११	११	८	१४	५३
मा	मा	मा	व	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

धान्यों के भावों में घटाबढ़ी होकर तेजी होने के योगप्रद हैं। मंगलवार को चन्द्रदर्शन मु. ३० व शनि शनिवारी मकर संक्रान्ति मु. ३० से गेहूँ, जौं, चना, चावल, मूंग, मोंठ मन्दा होकर तेज होगा। सण, सूत, रुई, कपास, वस्त्रों में तेजी। गुड़, चीनी, शक्कर में घटाबढ़ी के बाद मन्दे का दौर चलेगा। शेयर बाजारों में गिरावट। **आकाश लक्षण**-राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में बादल चाल व बूंदा-बांदी होकर सर्दी का प्रकोप तेज होगा। पर्वतीय क्षेत्रों पर हिमपात होकर शीत लहर बढ़ेगी। **शकुन विचार**-पौष शुक्ला १४ को वर्षा होने पर आषाढ़ मास में उत्तम वर्षा होती है। यथा-**पौष सुदी चौदश दिनां बिजुली का घर घोर। शुभ वर्षा आषाढ़ में बोले दादुर मोर॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ कृष्ण पक्ष-20

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. १९ जनवरी से १ फरवरी सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २९ पौष से १२ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

ता. मि.	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	दिनांक प्र	मु	अं	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा. रा.घं.मि.	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	[illegible]	चन्द्रोदय दिल्ली घं.	मि.	चन्द्रास्त घं.	मि.	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२९	१	र	१९	३८	१५	७	पु	१८	१०	१४	३२	प्री	३८	१०	२२	४०	कौ	१९	३८	१५	७	२६	१९	७	१६	१७	४८	६	१५	19	कर्क	९	४	३४	५४	[illegible]	१८	४७	८	३	
३०	२	चं	१५	३६	१३	३०	आ	१५	४९	१३	३५	आ	३१	५८	२०	३	गर	१५	३६	१३	३०	२६	२२	७	१६	१७	४८	७	१६	20	सिं. १३।३५	९	५	३५	५७	३	१९	५२	८	४८	भ. २४।३५ से, सायन कुम्भ में सूर्य १७।२९, हर्षल धनिष्ठा ४ में प्रवेश १९।०१
माघ	३	मं	१०	५०	११	३५	म	१२	४४	१२	२१	सौ	२४	५६	१७	१४	वि	१०	५०	११	३५	२६	२४	७	१५	१७	४९	८	१७	21	सिंह	९	६	३७	०	२	२०	५७	९	२९	भ. ११।३५ तक, भा. माघ मासारंभ, कृष्ण चतुर्थी व्रत, A
२	४	बु	५	३७	९	३०	पूफा	९	१३	१०	५७	शो	१७	३६	१४	१८	बा	५	३७	९	३०	२६	२७	७	१५	१७	५०	९	१८	22	कं. १६।३५	९	७	३८	२	२	२२	१	१०	६	मेला मस्तु आणा (पंजाब), मार्गी बुध २१।४३
३	५	गु	०	१३	७	२०	उफा	५	३३	९	२८	अति	१०	९	११	१९	तै	०	१३	७	२०	२६	३०	७	१५	१७	५१	१०	१९	23	कन्या	९	८	३९	४	२	२३	४	१०	४२	भ. २१।११ से, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती
०	६	गु	५४	५०	२९	११	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	षष्ठी तिथि क्षय
४	७	शु	४९	३७	२७	५	ह	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	मु	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	वि	२२	१२	१६	८	२६	३३	७	१५	१७	५२	११	२०	24	तु. ११।२८	९	९	४०	६	१	२४	००	११	१६	भ. १६।८ तक, सूर्य श्रवण में प्रवेश १३।२०, स्वामी विवेकानंद ज.
५	८	श	४४	४०	२५	६	स्वा	५५	१३	२९	१९	शू	४८	२६	२६	३७	बा	१७	६	१४	५	२६	३६	७	१४	१७	५३	१२	२१	25	तुला	९	१०	४१	७	०	२४	७	११	५२	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, श्री रामानन्दाचार्य जयंती
६	९	र	४०	२	२३	१५	वि	५२	२१	२८	१०	गं	४१	३९	२३	५३	तै	१२	१८	१२	९	२६	३९	७	१४	१७	५३	१३	२२	26	वृ. २२।२७	९	११	४२	७	०	२५	११	१२	३०	भारतीय गणतंत्र दिवस ५४वां वर्ष, महापात २५।१० से ३०।४२ तक
७	१०	चं	३५	४६	२१	३२	अ	४९	५१	२७	१०	वृ	३५	१०	२१	१७	व	७	५२	१०	२२	२६	४२	७	१३	१७	५४	१४	२३	27	वृश्चिक	९	१२	४३	७	०	२६	१७	१३	१२	भ. १०।२२ से २१।३२ तक, वक्री गुरु आश्लेषा १ में प्रवेश B
८	११	मं	३१	५६	१९	५९	ज्ये	४७	४७	२६	२०	ध्रु	२९	१	१८	४९	बव	३	४८	८	४४	२६	४५	७	१३	१७	५५	१५	२४	28	ध. २६।२०	९	१३	४४	७	[illegible]	२७	२३	१४	००	षट्तिला एकादशी व्रत सबका, लाला लाजपत राय जयंती
९	१२	बु	२८	३५	१८	३९	मू	४६	१४	२५	४२	व्या	२३	१५	१६	३१	कौ	०	१२	७	१७	२६	४८	७	१३	१७	५६	१६	२५	29	धनु	९	१४	४५	६	५८	२८	२८	१४	५३	वंजुली महाद्वादशी व्रत, श्री शीतलनाथ जयंती जैन
१०	१३	गु	२५	५१	१७	३२	पू.षा	४५	१९	२५	२०	ह	१७	५८	१४	२३	व	२५	५१	१७	३२	२६	५२	७	१२	१७	५७	१७	२६	30	धनु	९	१५	४६	४	५७	२९	३०	१५	५१	भ. १७।३२ से २९।६ तक, शुक्र मूल धनु में प्र. ८।५, प्रदोष व्रत, C
११	१४	शु	२३	५२	१६	४५	उ.षा	४५	१३	२५	१७	व	१३	१६	१२	३०	श	२३	५२	१६	४५	२६	५५	७	१२	१७	५८	१८	२७	31	म. ७।१७	९	१६	४७	१	५७	३०	२६	१६	५३	रटन्ती कालिका पूजन
१२	३०	श	२२	५२	१६	२०	श्र	४६	८	२५	३८	सि	९	१७	१०	५४	नाग	२२	५२	१६	२०	२६	५८	७	११	१७	५८	१९	२८	1F	मकर	९	१७	४७	५८	५५	७	१५	१७	५५	देवपितृकार्याऽमावस्या, मौनी अमावस्या, द्वापरयुगादि, D

A संकट चौथ, वरद चतुर्थी, अंगारक ४ B १५।३१ नेपच्यून श्रावण ३ में प्रवेश २९।१६ C मास शिवरात्री व्रत, महात्मा गांधी निर्वाण दिवस, सर्वोदय पक्षारंभ व बलिदान दिवस, मेरु त्रयोदशी (जैन), श्री आदिनाथ निर्वाण कल्याणक (जैन) D फरवरी मास २ ता. २८, विशाल मेला हरिद्वार, सर्वोदय पक्ष समाप्ति

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

माघ कृ. ८ शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ जनवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	६	७	८	३	७	१	१	७	१०	९	७
१०	५	११	१८	२०	२४	२८	११	११	३	१६	२५
४२	५९	८	३८	१८	२२	५८	५१	५१	३३	३२	१०
७	४८	३२	४५	५५	३२	२४	५८	५८	३२	२७	२७
६१	[illegible]	३८	१८	७	५	२	३	३	३	२	१
०	२०	४०	१२	४९	३६	५८	११	११	१६	१६	४४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

११ह. ९ बु. | १२ | सू. १० ने. | शु. के. प्लू. ८ मं. | १ | ७ चं. | श. रा. २ | ४ गु. | ६ | ३ | ५
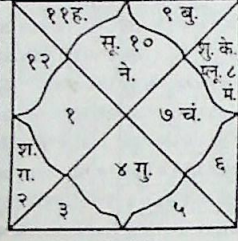
मास में ५ रविवार व शनिवारी अमावस्या अनेक उत्पातिक घटनाप्रद है। देश की पश्चिमोत्तर सीमाओं पर सैनिक गतिरोध बढ़ेगा। उत्तरी प्रान्तों में आतंकवाद को बढ़ावा रहकर जन आन्दोलन, तोड़फोड़, हिंसादि, उपद्रव बढ़ेंगे। बुध का पुनः धनु राशि पर होना पाश्चात्य राष्टों में प्राकृतिक आपदाओं का भयप्रद है तथा जीवों चौपायों की हानि होगी। यथा- धने मीने **बुधो याति मारयेत् मृगान्हयान्। राज्ञां चैव विरोधः** स्याच्चान्यथा न भविष्यति॥ तिब्बत, भूटान, नेपाल, जापान, वर्मा, चीनादि देशों में भूकम्प, चक्रवात व तूफान से हानि संभव। **तेजी मन्दी विचार**-कृ. ६ का क्षय व मार्गी बुध पक्ष में घी, गुड़, चीनी व चना, मूंग, मोंठ, गुंवार, बाजरा में तेजी कारक है। रुई, सूत, कपास, बिनौला में मन्दी रहे। श्रवण में सूर्य कृ. ७ के बाद शेयर बाजार लोहा सामान, ऊनी वस्त्रों तथा मूंगफली, सरसों में तेजी प्रद रहेगा। ईख, अलसी की फसलों में हानि से गुड़, चीनी तथा तेल भावों में आकस्मिक तेजी होने के योग हैं। **आकाश लक्षण**-राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, पंजाब में तेज हवाओं के साथ हिमवर्षा (ओला) कारी योग है। जिससे फसलों को हानि होगी। सर्दी की अधिकता शीतलहर, तापमान में न्यूनता होगी। पूर्वी प्रान्तों में भी वर्षा होगी। **शकुन विचार-माघ अंधेरी सप्तमी मेह बिज्जु दमकन्त। मास चार बरसै सही मति तूं सोचै कन्त॥** माघ कृष्ण ७ के दिन बिजली चमकने से आगे चार मास में उत्तम वर्षा होती है।

ता. १ फरवरी ❖ माघ कृ. ३० शनि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

११ ह. ९ शु. बु. | १२ | सू. १० ने. चं. | प्लू. के. ८ मं. | १ | ७ | २ रा. श. | ४ गु. | ६ | ३ | ५
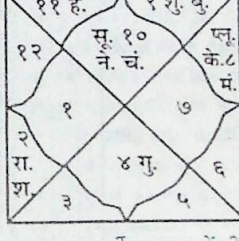
सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	९	७	८	३	८	१	१	७	१०	९	७
१७	१२	१५	२२	१९	२	२८	११	११	३	१६	२५
४७	१८	३९	४२	२३	६	३९	२९	२९	५६	४८	२२
५८	३६	८	४०	२६	२७	३७	४२	४२	४२	२२	४
६०	[illegible]	३८	५२	८	६७	२	३	३	३	२	१
५५	५५	३८	४३	०	५	१७	११	११	२२	१७	३४
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष-21

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. २ से १६ फरवरी सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १३ माघ से २७ माघ तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घं	मि	सूर्योदयास्त उदय घं	मि	अस्त घं	मि	दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय घं.	मि.	अस्त घं.	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
१३	१	र	२३	२	१६	२३	ध	४८	१५	२६	२९	व्य	६	११	९	३९	बव	२३	२	१६	२३	२७	२	७	१०	१७	५९	२०	२९	2	कुं. १५।४०	९	१८	४८	५३	[illegible]	७	५७	१८	५६	पंचक प्रारम्भ १४।०० से, व्यतिपात योग ९।३९ तक, मंगल ज्ये. A
१४	२	चं	२४	३३	१६	५९	श	५१	४३	२७	५१	वरि	४	६	८	४४	कौ	२४	३३	१६	५९	२७	५	७	१०	१८	०	२१	३०	3	कुंभ	९	१९	४९	४८	५३	८	३४	१९	५४	चन्द्रदर्शन मु. १५ महर्घता
१५	३	मं	२७	३१	१८	१०	पू.भा	५६	३५	२९	४७	प	३	६	८	२४	गा	२७	३१	१८	१०	२७	९	७	९	१८	१	२२	जि	4	मी. २३।०५	९	२०	५०	४१	५२	०९	०७	२०	४०	भ. ३०।५८ से, जिल्हेज मु. मास १२ प्रा., गौरी तृतीया
१६	४	बु	३१	५४	१९	५४	उ.भा	६०	०	—	—	शि	३	१२	८	२५	वि	३१	५४	१९	५४	२७	१२	७	९	१८	२	२३	२	5	मीन	९	२१	५१	३३	५०	०९	३७	२१	४२	भ. १९।५४ तक, बुध उ.पा. में प्रवेश ८।२८, वरद ४, तिल चौथ, B
१७	५	गु	३७	३२	२२	९	उ.भा	२	४६	८	१५	सि	४	१९	८	५२	बव	४	३६	८	५८	२७	१६	७	८	१८	२	२४	३	6	मीन	९	२२	५२	२३	५०	१०	०५	२२	३४	सूर्य धनि. में प्र. १६।२४, बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन, तक्षक पूजा
१८	६	शु	४४	०	२४	४३	रे	९	५८	११	६	सा	६	१३	९	३७	कौ	१०	४२	११	२४	२७	२०	७	७	१८	३	२५	४	7	मे. ११।६	९	२३	५३	१३	६७	१०	३४	२३	२६	पंचक समाप्ति ११।६ तक
१९	७	श	५०	४५	२७	२५	अ	१७	४२	१४	१२	शु	८	३६	१०	३३	गा	१७	२४	१४	४	२७	२३	७	७	१८	४	२६	५	8	मेष	९	२४	५४	०	६७	११	०३	२४	००	भ. २७।२५ से, बुध मकर में प्रवेश ८।१७, आरोग्य सप्तमी, C
२०	८	र	५७	६	२९	५६	भ	२५	२४	१७	१५	शु	११	०	११	३०	वि	२४	२	१६	४३	२७	२७	७	६	१८	५	२७	६	9	वृ. २३।५९	९	२५	५४	४७	६६	११	३४	२४	१९	भ. १६।४३ तक, भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, महापात ९।५० तक
२१	९	चं	६०	०	—	—	कृ	३२	२३	२०	३	ब्र	१२	५८	१२	१७	बा	२९	५६	१९	४	२७	३१	७	५	१८	६	२८	७	10	वृष	९	२६	५५	३१	६३	१२	०९	२५	१३	शुक्र पू.पा. में प्रवेश २७।५०, श्री महानन्दा नवमी, श्री हरसू D
२२	९	मं	२	२६	८	३	रो	३८	५	२२	११	ऐं	१४	३	१२	४२	कौ	२	२६	८	३	२७	३४	७	५	१८	६	२९	८	11	वृष	९	२७	५६	१४	६२	१२	४१	२६	०१	E भैमी एकादशी (बंगाल), ईद-उल-जुहा बकरीद (मु.)
२३	१०	बु	६	९	९	३१	मृ	४२	४	२३	५३	वै	१३	५२	१२	३७	गा	६	९	९	३१	२७	३८	७	४	१८	७	३०	९	12	मि. ११।०२	९	२८	५६	५६	६०	१३	३५	२७	०६	भ. २१।५८ से, सूर्य कुम्भ में प्रवेश ३०।२७, मु. ४५ बैठी, हज्ज
२४	११	गु	७	५५	१०	१३	आ	४४	५	२४	४१	वि	१२	१३	११	५६	वि	७	५५	१०	१३	२७	४२	७	३	१८	८	फा.	१०	13	मिथुन	९	२९	५७	३६	३८	१४	२७	२८	०४	भ. १०।१३ तक, जया एकादशी व्रत सबका, संक्रान्ति पुण्य, E
२५	१२	शु	७	३७	१०	५	पुन	४४	८	२४	४१	प्री	८	५८	१०	३७	बा	७	३७	१०	५	२७	४६	७	२	१८	९	२	११	14	क. १८।१८	१०	०	५८	१४	३७	१५	२६	२९	००	प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी, कल्पादि भीष्म तर्पण, श्राद्ध स्नान व हवनं
२६	१३	श	५	२२	९	१०	पु	४२	२२	२३	५८	आ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	५	२२	९	१०	२७	५०	७	१	१८	९	३	१२	15	कर्क	१०	१	५८	५१	३५	१६	२९	२९	५३	बुध श्रवण में प्रवेश २८।३१, मेला पंचखण्ड पीठ, विराट नगर F
२७	१४	र	१	२२	७	३३	आ	३९	७	२२	३९	शो	५०	४०	२७	१६	व	१	२२	७	३३	२७	५४	७	१	१८	१०	४	१३	16	सि. २२।३९	१०	२	५९	२६	३४	१७	३६	३०	४१	भ. ७।३३ से १८।३२ तक, सत्यव्रत पूर्णिमा, माघी पूर्णिमा पुण्यं, G
०	१५	र	५५	५५	२०	२३	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	पूर्णिमा तिथि क्षयः

A मं १९।१९, वल्लभाचार्य जयंती (दक्षिण भारत), B विनायक ४, कुन्द ४, श्री गणेश पूजा (बंगाल) C रथ सप्तमी, अचला ७, चन्द्रभागा ७, श्री माधवाचार्य जयंती, मन्वादि D ब्रह्मदेव पुण्य दिवस (चैनपुर व रोहतास) F (राज.), गुरु हरराय जयंती (प्रा. मत से), श्री जितेन्द्र रथयात्रा (जैन), श्री ललिता जयंती, रामचरण स्नेही जयंती G माघ स्नान पूर्ति, भैरव जयंती, श्री गुरु रविदास जयंती, वेणेश्वर मेला, बांसवाड़ा

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

माघ शु. ८ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ९ फरवरी

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
९	०	७	९	३	८	१	१	७	१०	९	७
२५	२०	२०	१	१८	११	२८	११	११	४	१७	२५
५४	५०	४७	२	१९	७	२४	४	४	२३	६	३३
४७	५८	५८	३९	४०	५३	१७	१६	१६	५५	३२	४९
६०	[illegible]	३८	७२	७	६८	१	३	३	३	२	१
४४	१५	३३	३५	५	२३	२६	११	११	३६	१६	२०
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

११ ह.
९ शु.
के.
बु. ने.
१० सू.
१२
प्लू. ८
मं.
१ चं.
७
रा.
२
श
४ गु.
६
३ बु.
५

सोमवार को चन्द्रदर्शन तथा बुधवार को सूर्य संक्रमण हर्षल के साथ योग तथा मंगल, प्लूटो, केतु से केन्द्र योग होने से अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति में सुधार होकर विश्व के विभिन्न भागों में होने वाले उत्पातों को शांत करेगा। यथा-बुध गुरु सित चन्द्राह्रे सति संक्रान्तावनामयं नृणाम्।क्षितिपतिनिकरक्षेम सस्यादिवृद्धिर्विधर्मिणां पीड़ा॥ राज प्रजा में सुख शांति का प्रसार होगा। उत्सवों व अनेक धार्मिक कृत्यों का संचालन बन कर जनता के मनोबल की वृद्धि होगी। देश में विकासशील कार्यों की सफल योजनाएं बनेंगी। नवीन उद्योगों के प्रति सरकार का सहयोग व झुकाव होगा। **तेजी मन्दी विचार**-चन्द्रदर्शन १५ मु. चांदी, सोना, चना, चावल में तेजी प्रद है। नारियल, सुपारी, चन्दन, रसायन पदार्थों में मन्दी। शेयर भावों में उतार-चढ़ाव। रुई, कपास, सूती वस्त्र में मन्दी। गुड़, चीनी, शक्कर आदि रस पदार्थों व कलपुर्जों, मशीनरी सामान में तेजी रहेगी। पू.पा. शुक्र से गेहूँ, मूंग, मोंठ, बाजरा, गुंवार, जौ में अस्थिरता बनकर तेजी। **आकाश लक्षण**-दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश में सामान्य बादल-चाल होकर खण्ड वर्षा होगी। दक्षिणी प्रान्तों केरल, कर्नाटक, आन्ध्रा, महाराष्ट्र आदि प्रदेशों में वातावरण में गर्मी का आरम्भ। समुद्र तटीय क्षेत्रों पर वायुवेग रहेगा। **शकुन विचार**-शुक्ला २ या ३ तिथि को बादल जल बरसावे तो आगे चौमासा में वर्षा की कमी रहती है। यथा-माघ उजाली दूज वा, तीज रहे जलधार। चमके दामिनी जानिये चौमासा भयकार॥ शुक्ला ७ को बादल बिजली पर अग्रिम संवत श्रेष्ठ हो।

१२
१० बु.ने.
१
ह. ११
सू.
९
शु.
मं.
२ श. रा.
के. ८ प्लू.
३
५
७
गु. ४ चं.
६

ता. १६ फरवरी ❖ माघ शु. १४ रवि प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	३	७	९	३	८	१	१	७	१०	९	७
२	१९	२५	१०	१७	१९	२८	१०	१०	४	१७	२५
५९	५२	१७	३	२५	९	१६	४२	४२	४८	२२	४२
२६	९	४१	१९	५४	२०	३४	१	१	४	१२	१६
६०	[illegible]	३८	८२	७	६९	०	३	३	३	२	१
३४	३३	२९	४३	२४	१७	३९	११	११	२८	१२	८
मा	मा	मा	मा	व	मा	व	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन कृष्ण पक्ष-२२ श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. १७ फर. से ३ मार्च सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २८ माघ से १२ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, शिशिर-बसन्त ऋतु।

रा. मि	तिथि ति	वा	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	नक्षत्र न	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	योग यो	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	करण क	घ	प	स्टैं.टा. घं	मि	दिनमान घ	प	सूर्योदय घं	मि	सूर्यास्त घं	मि	प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	रवि स्पष्ट ५ घं. ३० मि. रा.	अं.	क.	वि.	गति	चन्द्रोदय घं.	मि.	चन्द्रास्त घं	मि	निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
२८	१	चं	४९	३०	२६	४८	म	३४	४५	२०	५४	अति	४२	३१	२४	०	बा	२२	५०	१६	८	२७	५८	६	६०	१८	११	५	१४	17	सिंह	१०	४	०	०	[illegible]	१८	४२	७	२४	
२९	२	मं	४२	३०	२३	५४	पूफा	२९	४०	१८	५१	सु	३३	५०	२०	३१	तै	१६	४	१३	२५	२८	२	६	५९	१८	१२	६	१५	18	कं. [illegible]	१०	५	०	३२	३१	१९	४८	८	४	
३०	३	बु	३५	१७	२१	५	उफा	२४	१८	१६	४१	धृ	२४	५७	१६	५७	व	८	५५	१०	३२	२८	६	६	५८	१८	१२	७	१६	19	कन्या	१०	६	१	३	२९	२०	५४	८	४०	भ. १०।३२ से २१।५ तक, सूर्य शत भिषा में प्रवेश २०।५८. A
फा१	४	गु	२८	१४	१८	१५	ह	१९	२	१४	३४	शू	१६	८	१३	२४	बव	१	४५	७	३९	२८	१०	६	५७	१८	१३	८	१७	20	तु. [illegible]	१०	७	१	३२	२८	२१	५९	९	१६	कृष्ण चतुर्थी व्रत, भारतीय फाल्गुन मासारंभ
२	५	शु	२१	३९	१५	३६	चि	१४	९	१२	३६	गं	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	तै	२१	३९	१५	३६	२८	१४	६	५६	१८	१४	९	१८	21	तुला	१०	८	२	०	२६	२३	४	९	५२	महापात १६।४६ से २१।०० तक
३	६	श	१५	४४	१३	१३	स्वा	९	५७	१०	५४	ध्रु	५२	२०	२७	५१	व	१५	४४	१३	१३	२८	१८	६	५५	१८	१४	१०	१९	22	वृ. [illegible]	१०	९	२	२६	२६	२४	००	१०	३०	भ. १३।१३ से २४।९ तक, शुक्र उ.षा. में प्रवेश १६।५६, वक्री B
४	७	र	१०	४१	११	११	वि	६	३३	९	३२	व्या	४५	४५	२५	१२	बव	१०	४१	११	११	२८	२२	६	५४	१८	१५	११	२०	23	वृश्चिक	१०	१०	२	५२	२४	२४	१०	११	११	मंगल मूल धनु में प्रवेश १३।४०, कालाष्टमी
५	८	चं	६	३२	९	३०	अ	४	४	८	३१	हर्ष	३९	५५	२२	५१	कौ	६	३२	९	३०	२८	२६	६	५३	१८	१६	१२	२१	24	वृश्चिक	१०	११	३	१६	२२	२५	१६	११	५६	अष्टका श्राद्ध, सीताष्टमी, जानकी जयंती
६	९	मं	३	२०	८	१२	ज्ये	२	३१	७	५३	व	३४	४९	२०	४८	गर	३	२०	८	१२	२८	३०	६	५२	१८	१६	१३	२२	25	ध. [illegible]	१०	१२	३	३८	२१	२६	२१	१२	४८	भ. १९।४२ से, बुध धनिष्ठा में प्रवेश ८।३४, शुक्र मकर में C
७	१०	बु	१	३	७	१६	मू	१	५१	७	३६	सि	३०	२६	१९	२	वि	१	३	७	१६	२८	३४	६	५१	१८	१७	१४	२३	26	धनु	१०	१३	३	५९	२०	२७	२३	१३	४४	भ. ७।१६ तक, विजयाएकादशी व्रत स्मार्तानाम्, स्वामी दयानंद सरस्वती ज
०	११	बु	५९	३६	३०	४२	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	एकादशी तिथि क्षयः
८	१२	गु	५९	६	३०	२९	पू.षा	२	४	७	४०	व्य	२६	४५	१७	३२	कौ	२९	१६	१८	३३	२८	३८	६	५०	१८	१८	१५	२४	27	म. [illegible]	१०	१४	४	१९	१९	२८	२०	१४	४३	व्यतिपात योग १७।३२ तक, विजया एकादशी व्रत वैष्णवानाम्
९	१३	शु	५९	३०	३०	३८	उ.षा	३	१०	८	५	वरि	२३	४६	१६	२०	गर	२९	१३	१८	३०	२८	४३	६	४९	१८	१८	१६	२५	28	मकर	१०	१५	४	३८	१६	२९	१०	१५	४४	भ. ३०।३८ से, प्रदोष व्रत
१०	१४	श	६०	०	—	—	श्र	५	८	८	५२	प	२१	३१	१५	२५	वि	३०	६	१८	५१	२८	४७	६	४८	१८	१९	१७	२६	M1	कुं. [illegible]	१०	१६	४	५४	१५	२९	५४	१६	०५	भ. १८।५१ तक, पंचकारंभ २१।२३ से, श्री महाशिवरात्री व्रत, D
११	१४	र	०	५६	७	९	ध	८	३	१०	१	शि	२०	१	१४	४८	श	०	५६	७	९	२८	५१	६	४७	१८	२०	१८	२७	2	कुंभ	१०	१७	५	९	१४	३०	३३	१७	४३	पितृकार्याऽमावस्या, चतुर्दशी तिथि वृद्धि, शिव खप्पर पूजा, E
१२	३०	चं.	३	२१	८	७	श	११	५९	११	३४	सि	१९	२१	१४	३१	ना	३	२१	८	७	२८	५५	६	४६	१८	२०	१९	२८	3	कुंभ	१०	१८	५	२३	११	७	६	१८	४०	सोमवती ३०, देव कार्याऽमावस्या, आर्य समाज सप्ताह समाप्ति

A सायन मीन में सूर्य ७।३५, बसन्त ऋतु प्रा. B गुरु पुष्य ४ में प्रवेश १५।२०, शनि मार्गी १३।०० C प्रवेश १३।२६, समर्थ गुरु रामनाथ जयंती, आर्य समाज सप्ताह प्रारम्भ

D बुध कुंभ में प्रवेश १४।२०, राहु कृति. ४ व केतु अनु. २ में प्रवेश १०।३९, E श्री वासुदेव पूज्य जयंती (जैन)

फाल्गुन कृ. ८ चन्द्र प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २४ फरवरी **[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं।]** ता. ३ मार्च ❖ फाल्गुन कृ. ३० चन्द्रे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	७	८	९	३	८	१	१	७	१०	९	७
११	१४	०	२१	१६	२८	२८	१०	१०	५	१७	२५
३	५४	२५	३६	२९	२६	१४	१६	१६	१५	३९	५०
१६	४०	२२	४६	१५	४२	२७	३५	३५	४४	३४	५०
६०	[illegible]	३८	८१	६	७०	०	३	३	३	२	०
२२	२७	२५	३१	३६	८	१५	११	११	२७	८	५३
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
१ शत.	४ [illegible]	२ पूषा	४ श्रवण	४ पुष्य	२ [illegible]	१ [illegible]	२ [illegible]	३ [illegible]	४ [illegible]	३ श्रवण	३ [illegible]

मास में ५ सोम व ५ मंगलवार मिश्रित फल कारक हैं। देश की अनेक व्यापारिक स्थितियों में परिवर्तन होकर आयात-निर्यात व्यवसायों में वृद्धि होगी। **सोमस्य पंचवारा स्यु यत्रमासे भवन्ति हि। धन धान्य समृद्धि स्यात्सुखं भवति सर्वदा॥** शनि मार्गी व धन राशि में मंगल का प्रवेश मुस्लिम राष्ट्रों अरब, ईरान, ईराक, तुर्की, अफगानिस्तान व पाकिस्तान आदि राष्ट्रों में तनाव वृद्धि, गृह कलह, बारूद व बम विस्फोट से जन-धन हानिप्रद है। देश के उच्च शासकों में राजनैतिक गतिविधियां तेज होंगी। जन-समुदाय में प्रभुत्व वृद्धि के लिए अनेक चालों का उपयोग कर गुजरात, आन्ध्रा प्रदेश व महाराष्ट्र आदि प्रान्तों में साम्प्रदायिक दंगों को प्रोत्साहन होगा। **तेजी मन्दी विचार**-शतभिषा सूर्य से गुड़, तेल, घी, चीनी, शक्कर तथा रसायनिक पदार्थों में मन्दी रहेगी। मूंगफली, सरसों व चना मन्दा रहे। सोना, चांदी, लोहे के सामान, बारूद तथा नशीले पदार्थों में तेजी रहेगी। पक्ष उत्तरार्द्ध में सूत, कपास, घी, तृणादि तेज होंगे। यथा-**धन राशिगते भौमे मूल द्रव्य तृणानि च। काष्ठं च घृत कार्पासं महर्घ च चतुष्पदाम्॥ आकाश लक्षण**-काश्मीर, जम्मू, हिमाचल प्रदेश में सामान्य वर्षा। राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश में बादल चाल व कहीं-कहीं खण्ड वर्षा होगी। दक्षिणी प्रान्तों में मौसम परिवर्तन होकर गर्मी का तापमान बढ़ेगा। **शकुन विचार**-**फागुन बदी सुदौज दिन, बादल होय न बीज। सावण बरसै भादवो साजन खेलो तीज॥** कृष्णा द्वितीया को आकाश साफ रहे तो आगामी श्रावण, भाद्रपद मास में उत्तम वर्षा होती है।

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१०	८	१०	३	९	१	१	७	१०	९	७
१८	१६	४	२	१५	६	२८	९	९	५	१७	२५
५	५०	५३	३८	४५	३९	१८	५४	५४	३९	५४	५६
२३	२३	५३	५२	४३	२५	३३	१९	१९	४४	९	२२
६०	[illegible]	३८	९८	५	७०	१	३	३	३	२	०
११	१५	१७	४३	४०	४२	२	११	११	२४	१	४०
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	अ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
४ शत.	४ शत.	१ मूल	३ धनि.	४ पुष्य	३ उ.षा.	१ मूल	४ कृति.	१ अनु.	४ धनि.	३ श्रवण	३ ज्ये.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फाल्गुन शुक्ल पक्ष-23 श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. ४ से १८ मार्च सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति १३ से २७ फाल्गुन तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण गोले, वसन्त ऋतु।

निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।

रा. मि.	तिथि				स्टैं.टा.		नक्षत्र			स्टैं.टा.		योग			स्टैं.टा.		करण			स्टैं.टा.		दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक प्र.	मु.	अं.	चन्द्र संचार भा.स्टैं.टा.	दै. रवि स्पष्ट प्रात: ५ घं. ३० मि.					चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घं	मि	घं	मि	घं	मि				रा.घं.मि.	रा.	अं.	क.	वि.		घं.	मि.	घं.	मि.	
१३	१	मं	६	५३	९	३०	पूभा	१७	०	१३	३३	सा	१९	३५	१४	३४	बव	६	५३	९	३०	२९	०	६	४५	१८	२१	२०	२९	4	मी. ३७	१०	१९	५	३४	[illegible]	७	३७	१९	३४	सूर्य पू.भा. में प्रवेश २७।१३, चन्द्रदर्शन मु. ४५ समर्घता
१४	२	बु	११	३१	११	२१	उभा	२३	४	१५	४८	शुभ	२०	३४	१४	४८	कौ	११	३१	११	२१	२९	४	६	४४	१८	२२	२१	मुह	5	मीन	१०	२०	५	४४	८	८	६	२०	२६	बुध शतभिषा में प्रवेश १५।४०, शुक्र श्रावण में प्रवेश २५।३३, A
१५	३	गु	१७	११	१३	३६	रे	३०	५	१८	४५	शु	२२	२०	१५	३९	गर	१७	११	१३	३६	२९	८	६	४३	१८	२२	२२	२	6	मे. १८।१०	१०	२१	५	५२	६	८	३४	२१	१८	भ. २६।५१ से, पंचक समाप्ति १८।४५ तक, बुध पूर्व में अस्त B
१६	४	शु	२३	३८	१६	९	अ	३७	४६	२१	४९	ब्र	२४	४१	१६	३४	वि	२३	३८	१६	९	२९	१३	६	४२	१८	२३	२३	३	7	मेष	१०	२२	५	५८	३	९	३	२२	१०	भ. १६।९ तक, विनायक ४ व्रत, संत चतुर्थी (उड़ीसा)
१७	५	श	३०	२७	१८	५२	भ	४५	४३	२४	५८	ऐं	२७	१८	१७	३६	बा	३०	२७	१८	५२	२९	१७	६	४१	१८	२४	२४	४	8	मेष	१०	२३	६	१	२	९	३३	२३	४	याज्ञवल्क जयंती
१८	६	र	३७	६	२१	३०	कृ	५३	२२	२८	१	वै	२९	४९	१८	३६	कौ	३	५१	८	१२	२९	२१	६	४०	१८	२४	२५	५	9	वृ. ३।१०	१०	२४	६	३	०	१०	६	२३	५९	गौरूपिणी षष्ठी (बंगाल)
१९	७	चं	४२	५६	२३	४९	रो	६०	०	—	—	वि	३१	४८	१९	२२	ग	१०	१०	१०	४३	२९	२५	६	३९	१८	२५	२६	६	10	वृष	१०	२५	६	३	[illegible]	१०	४३	२४	५५	भ. २३।४९ से, अष्टान्हिक व्रत प्रारम्भ (जैन)
२०	८	मं	४७	२३	२५	३५	रो	०	१०	६	४२	प्री	३२	४९	१९	४५	वि	१५	२३	१२	४७	२९	३०	६	३८	१८	२५	२७	७	11	मि. १९।१०	१०	२६	६	०	५५	११	२५	२५	५१	भ. १२।४७ तक, होलाष्टक प्रारम्भ, दुर्गाष्टमी, अन्नपूर्णाष्टमी, C
२१	९	बु	४९	५८	२६	३६	मृ	५	२८	८	४८	आ	३२	३०	१९	३६	बा	१८	५७	१४	११	२९	३४	६	३६	१८	२६	२८	८	12	मिथुन	१०	२७	५	५५	५३	१२	१३	२६	४७	बुध पू.भा. में प्रवेश ३०।३७
२२	१०	गु	५०	२४	२६	४५	आ	८	५२	१०	८	सौ	३०	३५	१८	४९	तै	२०	२९	१४	४७	२९	३८	६	३५	१८	२७	२९	९	13	क. २८।१८	१०	२८	५	४८	५१	१३	८	२७	४०	मेला खाटू श्री श्याम जी (राज.) ३ दिन का
२३	११	शु	४८	३८	२६	२	पुन	१०	१०	१०	३८	शो	२६	५७	१७	२१	व	१९	४९	१४	३०	२९	४३	६	३४	१८	२७	३१	१०	14	कर्क	१०	२९	५	३९	४८	१४	९	२८	२९	भ. १४।३० से २६।२ तक, सूर्य मीन में प्रवेश २७।१९, D
२४	१२	श	४४	४८	२४	२८	पु	९	२०	१०	१७	अति	२१	३७	१५	१२	बव	१६	५९	१३	२१	२९	४७	६	३३	१८	२८	२	११	15	कर्क	११	०	५	२७	४७	१५	१३	२९	१४	मेला बाबा श्री श्याम खाटू (राज.) पूर्ति, गोविन्द द्वादशी
२५	१३	र	३९	९	२२	१२	श्ले	६	३२	९	९	सु	१४	४५	१२	२६	कौ	१२	१२	११	२५	२९	५१	६	३२	१८	२८	३	१२	16	सिं. ९।१	११	१	५	१४	४४	१६	२०	२९	५५	मंगल पू.षा. में प्रवेश १२।४, प्रदोष व्रत
२६	१४	चं	३२	५	१९	२१	म	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	धृ	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गर	५	४८	८	५०	२९	५६	६	३१	१८	२९	४	१३	17	सिंह	११	२	४	५८	४२	१७	२७	३०	३४	भ. १९।२१ से २९।४६ तक, शुक्र धनि. में प्रवेश ७।२०, होलिका E
२७	१५	मं	२४	१	१६	६	पूफा	४९	५५	२६	२८	गं	४७	३५	२५	३२	बव	२४	१	१६	६	३०	०	६	३०	१८	३०	५	१४	18	कं. १०।१६	११	३	४	४०	४०	१८	३४			सूर्य उत्तराभाद्रपद में प्रवेश ११।४०, बुध मीन में प्रवेश १४।४६, F

A फुलरिया दूज, मोहर्रम मु. मास १ हिजरी सन् १४२४ प्रा., श्री रामकृष्ण परम हंस जयंती B २९।३२, महापात १३।४३ से १८।१२ तक C दादूदयाल जयंती D मु. ३० बैठी, आमलकी एकादशी व्रत सबका, ताजिया E दहन, भद्रा पुच्छ काल में पूर्णिमा व्रत, दारुण रात्रि हुताशनी, होलाष्टक समाप्त F सत्यव्रत, धुलैण्डी, छारेंडी, फूलडोल, फागुन पूर्णिमा पुण्य, चैतन्य महाप्रभु जयंती, अष्टान्हिका व्रत समाप्त जैन, पूर्णिमा मन्वादि

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

फाल्गुन शु. ८ भौमे प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. ११ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
१०	१	८	१०	३	९	१	१	७	१०	९	७
२६	२२	९	१६	१५	१६	२८	९	९	६	१८	२६
६	४३	५९	१८	४	६	२९	२८	२८	६	९	०
०	१	२८	४८	४५	४४	५७	५४	५४	३६	५२	४२
५९	[illegible]	३८	[illegible]	४	३१	१	३	३	३	१	०
५५	०	५	२९	२३	१०	५५	११	११	१७	५३	२३
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	उ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

१२ | ११ने. शु. | १ | सू. ११ ह. बु. | ९ मं. | श. रा. २ चं. | के. ८ प्लू. | ३ | ५ | ७ | ४ गु. | ६

मंगलवारी प्रतिपदा तथा शुक्र गुरु का सम सप्तक योग पश्चिमी राष्ट्रों में युद्धादिक भयप्रद है। यथा गुरु शुक्रो यदैकस्थो जीवा द्वा सप्तमे स्थित:। दुर्भिक्षं जायते तत्र पश्चिमायां नृप क्षय: ॥ मंगल से गुरु और शनि का अलग अलग स्थानों पर षडाष्टक योग मध्य एशिया, आयरलैण्ड, ईराक, ईरान, युगोस्लाविया, ईग्लैण्ड, अमेरिका आदि देशों में विषम स्थिति उत्पन्न होकर हिंसाकांड, बम विस्फोट, युद्धादि व प्राकृतिक प्रकोप भूकम्पादि से जन मानस में भय बनेगा। किसी प्रमुख नेता या शासक के पदच्युत अथवा असामयिक निधन से जनता स्तब्ध होगी। व्यापारियों को इस समय कानूनी अड़चनों का कष्ट रहेगा। **तेजी मन्दी विचार**- पू.भा. में सूर्य व मु. ४५ चन्द्रदर्शन से सोना, चांदी, शेयर्स भावों, नशीले पदार्थ, चना, गेहूँ, बाजरा, मूंग, मोंठ में घटाबढ़ी होकर तेजी रहेगी। पूर्वास्त बुध से गुड़, चीनी, शक्कर, रसायनिक पदार्थों में मन्दी होगी। कारखानों के कलपुर्जे, वाहन,

ता. १८ मार्च ❖ फाल्गुन शु. १५ भौमे प्रात: ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

१ | ११ह.यु. | २श. रा. | सू. १२ | १०ने. शु. | ३ | ९ मं. | गु. ४ | ६ | ८के. प्लू. | चं. ५ | ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	४	८	१०	३	९	१	१	७	१०	९	७
३	२६	१४	२९	१४	२४	२८	९	९	६	१८	२६
४	५५	२५	१५	३७	२६	४५	६	६	२९	२२	२
४०	८	३१	३४	४५	१	३७	३८	३८	१८	३६	४३
५९	[illegible]	३७	[illegible]	३	३१	२	३	३	३	१	०
४०	५९	५४	३३	९	३२	३९	११	११	१०	४४	९
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—

चौपाये, मेवा के सामान में तेजी रहेगी। मीन राशिस्थ सूर्य सभी तेलों में फलप्रद है। यथा **मीन राशि गते भानौ, सर्व धान्य महर्घता। लवणं तिल तैलं च महर्घ सम जायते ॥ आकाश लक्षण** पक्ष में राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश में सामान्य वर्षा व वायु वेग रहेगा। अनेकत्र स्थानों पर ओला वर्षा के योग हैं। **आदित्यो गच्छति ह्यग्रे पृष्ठे भवति भूसुत:। मध्ये सोम सुतो याति सुभिक्षं तत्र दृश्यते ॥** दक्षिणी प्रान्तों में वायु वेग व बादल चाल रहे। **शकुन विचार**- फाल्गुन की पूर्णिमा को बादल गर्जना व वर्षा होने पर आगे आश्विन मास में धान्य महंगे होते हैं। यथा **फाल्गुन सुदी जो पूर्णिमा गर्जे वर्षा होय। धान्य सातवां मास में निश्चय महंगा होय ॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र कृष्ण पक्ष-२४

श्री सं. २०५९ शाके १९२४

ता. १९ मार्च से १ अप्रैल सन् २००३ ई., राष्ट्रीय मिति २८ फाल्गुन से ११ चैत्र तक। रवि उत्तरायणे, दक्षिण-उत्तर गोले, बसन्त ऋतु।

रा.	तिथि		स्टैं.टा.				नक्षत्र		स्टैं.टा.			योग		स्टैं.टा.			करण		स्टैं.टा.			दिनमान		स्टैं.टा. सूर्योदयास्त उदय		अस्त		दिनांक			चन्द्र संचार	दै. रवि स्पष्ट प्रातः ५ घं. ३० मि.				गति	चन्द्रोदयास्त दिल्ली उदय		अस्त		निम्नांकित संदर्भ का सभी समय भा.स्टैं. टा. घण्टा मिनटों में है।
मि.	ति	वा	घ	प	घं	मि	न	घ	प	घं	मि	यो	घ	प	घं	मि	क	घ	प	घं	मि	घ	प	घं	मि	घं	मि	प्र.	मु.	अं.	भा.स्टैं.टा रा.घं.मि	रा.	अं.	क.	वि.	क	घं.	मि.	घं.	मि	
२८	१	बु	१५	२५	१२	३८	ह	४३	८	२३	४४	वृ	३७	३०	२१	२९	कौ	१५	२५	१२	३८	३०	४	६	२८	१८	३०	६	१५	19	कन्या	११	४	४	२०	[illegible]	१९	४२	७	११	बसन्त प्रतिपदा, महापात १०।२४ से १५।२५ तक
२९	२	गु	६	४२	९	८	चि	३६	२९	२१	३	धु	२७	३०	१७	२७	गर	६	४२	९	८	३०	८	६	२७	१८	३१	७	१६	20	तु. [illegible]	११	५	३	५८	३६	२०	४९	७	४३	भ. १९।२५ से २९।४५ तक, बुध उ.भा. में प्रवेश ८।९, A
०	३	गु	५८	१५	२९	४५	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	0	०००	०	०	०	०	०	०	०	०	०	तृतीया तिथि क्षय:
३०	४	शु	५०	३१	२६	३९	स्वा	३०	२१	१८	३५	व्या	१७	५३	१३	३५	बव	२४	१८	१६	१०	३०	१२	६	२६	१८	३१	८	१७	21	तुला	११	६	३	३४	३५	२१	५७	८	२६	कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ, सायन मेष अश्वि. में सूर्य ६।३५. B
चैत्र	५	श	४३	४७	२३	५४	वि	२५	६	१६	२७	हर्ष	८	५६	९	५९	कौ	१७	२	१३	१४	३०	१७	६	२५	१८	३२	९	१८	22	वृ. [illegible]	११	७	३	९	३२	२३	६	९	७	भारतीय चैत्र मासारंभ, शुक्र कुम्भ में प्रवेश २१।२६, रंग पंचमी. C
२	६	र	३८	१५	२१	४२	अनु	२१	०	१४	४८	व	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	गर	१०	५३	१०	४५	३०	२१	६	२४	१८	३२	१०	१९	23	वृश्चिक	११	८	२	४१	३१	२४	००	९	५२	भ. २१।४२ से, एकनाथ षष्ठी, वक्री प्लूटो १०।५९
३	७	चं	३४	५	२०	१	ज्ये	१८	१२	१३	४०	सि	४७	५१	२५	३१	वि	६	१	८	४७	३०	२६	६	२३	१८	३३	११	२०	24	ध. [illegible]	११	९	२	१२	३०	२४	१३	१०	४३	भ. ८।४७ तक, व्यतिपात योग २५।३१ तक, शीतल पूजा, D
४	८	मं	३१	२०	१८	५३	मू	१६	४९	१३	५	वरि	४३	५	२३	३५	बा	२	३३	७	२३	३०	३०	६	२१	१८	३३	१२	२१	25	धनु	११	१०	१	४२	२७	२५	१८	११	३८	ऋषभ देव जयंती जैन, मेला केसरिया मेवाड़ व केला E
५	९	बु	२९	५९	१८	२०	पू.षा	१६	४८	१३	४	परि	३९	२४	२२	६	तै	०	३१	६	३२	३०	३४	६	२०	१८	३४	१३	२२	26	म. [illegible]	११	११	१	९	२६	२६	१७	१२	३५	भ. ३०।१६ से, बुध रेवती में प्रवेश २३।५२
६	१०	गु	२९	५९	१८	१९	उ.षा	१८	७	१३	३४	शि	३६	४६	२१	२	वि	२९	५९	१८	१९	३०	३९	६	१९	१८	३५	१४	२३	27	मकर	११	१२	०	३५	२४	२७	९	१३	३८	भ. १८।१९ तक, दशमाता व्रत F व्रत सबका
७	११	शु	३१	१३	१८	४७	श्र	२०	४०	१४	३४	सि	३५	६	२०	२०	बव	०	२८	६	२९	३०	४३	६	१८	१८	३५	१५	२४	28	कुं. [illegible]	११	१२	५९	५९	२२	२७	५४	१४	३८	पंचकारंभ २७।१४, शुक्र शतभिषा में ११।५, पापमोचनी एकादशी F
८	१२	श	३३	३५	१९	४३	ध	२४	२०	१६	१	सा	३४	१८	२०	०	कौ	२	१७	७	१२	३०	४७	६	१७	१८	३६	१६	२५	29	कुम्भ	११	१३	५९	२१	२०	२८	३४	१५	३३	G मेला पृथूदक पिहोवा (हरियाणा)
९	१३	र	३६	५९	२१	३	श.त	२९	१	१७	५२	शुभ	३४	१८	१९	५९	गर	५	११	८	२०	३०	५१	६	१६	१८	३६	१७	२६	30	कुम्भ	११	१४	५८	४१	१८	२९	८	१६	३३	भ. २१।३ से, प्रदोष व्रत
१०	१४	चं	४१	२०	२२	४७	पू.भा	३४	३७	२०	५	शु	३५	२	२०	१५	वि	९	४	९	५२	३०	५५	६	१४	१८	३७	१८	२७	31	मी. [illegible]	११	१५	५७	५९	१७	२९	४०	१७	२३	भ. ९।५२ तक, मास शिवरात्रि व्रत, सूर्य रेवती में प्रवेश २२।३१. G
११	३०	मं	४६	३२	२४	५०	उ.भा	४१	३	२२	३९	ब्र	३६	२५	२०	४७	चतु	१३	५२	११	४६	३१	०	६	१३	१८	३७	१९	२८	A1	मीन	११	१६	५७	१६	१४	३०	८	१८	२०	देवपितृकार्याऽमावस्या, मन्वादि, महापात २२।५० से २७।१० H

A कलमदान पूजा देशाचारे, संत तुकाराम जयंती B उत्तर गोल प्रा., हर्षल शते १ में ९।३३ C श्री जयंती D मेला शीतला माता कुराली (पंजाब), (बासी भोजन करना चाहिए)
E देवी करौली (राज.), वर्षीतम व्रत प्रा. जैन H तक, अप्रैल मास ४ ता. ३०, वर्ष समाप्ति, चान्द्र संवत् २०५९ समाप्त

[दोनों कुण्डलियां प्रातःकाल की हैं]

चैत्र कृ. ८ भौमे, प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट ❖ ता. २५ मार्च

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	८	८	११	३	१०	१	१	७	१०	९	७
१०	९	१८	२३	१४	२	२९	८	८	६	१८	२६
१	२	५०	५	१९	४७	६	४४	४४	५१	३४	३
४२	७	१४	९	३३	४०	१९	२३	२३	३	१६	६
५९	[illegible]	३३	[illegible]	१	३१	३	३	३	३	१	०
२७	३८	४१	३६	५०	५०	२१	११	११	१	३४	५
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	मा
उ	उ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

कुण्डली (२५ मार्च): १; ११ ह. शु.; १२ सू. बु.; १० ने.; रा. २ श.; ३; ९ चं. मं.; ४ गु.; ६; ८ के. प्लू.; ५; ७

पक्ष में उ.भा. नक्षत्र में बुध का प्रवेश नीचत्व राशि वश ज्योतिर्विदों ने विश्व में संघर्ष, साम्प्रदायिक दंगे व अतिवृष्टि, चक्रवात, भूकम्प आदि प्रकृति की अनेक घटनाओं से जनता में भय कारक बताया है। यथा- **उभायां तु बुधे यातो, सर्व धान्य महर्घता। दुर्भिक्षं नृपति क्लेशः धान्य नाशः प्रजाभयम्॥** कृष्ण पक्ष की तिथि क्षय और मंगलवारी अमावस्या से देश की सीमाओं पर अनेक उत्पात व आतंकवाद का भय बढ़ेगा। सैन्य बल की प्रबल शक्ति रखने के आसार नजर आयेंगे। दक्षिणी अफ्रीका, न्यूजीलैंड, श्रीलंका व आस्ट्रेलिया आदि राष्ट्रों में तूफान, वायु प्रकोप, भूकम्पादि से जन-धन की हानि के योग हैं। देश की राजनीति में विशेष हलचलें होकर नेताओं में रोष। तेजी मन्दी विचार- मासारंभ से घी, तेल, मूंग, मोंठ, बाजरा, गेहूँ, चावल में तेजी तथा चना, गुड़, चीनी, सूत, कपास, रुई में मन्दी रहेगी।

ता. १ अप्रैल ❖ चैत्र कृ. ३० भौमे प्रातः ५ घं. ३० मि. के ग्रह स्पष्ट

कुण्डली (१ अप्रैल): १; ११ ह. शु.; सू. बु. १२ चं.; १० ने.; रा. २ श.; ३; ९ मं.; गु. ४; ६; ८ प्लू. के.; ५; ७

सू	चं	मं	बु	गु	शु	श	रा	के	ह	ने	प्लू
११	११	८	११	३	१०	१	१	७	१०	९	७
१६	८	२३	२३	१४	११	२९	८	८	७	१८	२६
५७	३	१३	१५	१०	११	३१	२२	२२	११	४४	१
१६	३६	११	४१	४३	१६	४८	८	८	३८	४४	५१
५९	[illegible]	३७	[illegible]	०	३२	४	३	३	२	१	०
१४	३३	२३	४३	३०	४	१	११	११	५०	२३	१९
मा	मा	मा	मा	व	मा	मा	व	व	मा	मा	व
उ	अ	उ	अ	उ	उ	उ	अ	अ	—	—	—
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

वक्री प्लूटो से पक्ष के उत्तरार्द्ध में बाजार रुख बदलकर धान्य भावों में मन्दी और रस पदार्थों में तेजी फल कारक होगा। शेयर बाजार अस्थिर रहकर मन्दा रहेगा। मिर्च, लौंग, इलायची, बादाम, काजू, किसमिस में तेजी रहेगी। **आकाश लक्षण**-राजस्थान, दिल्ली, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश के कुछ स्थानों पर खण्ड वर्षा होगी। कहीं ओला गिरने के समाचार प्राप्त होंगे। बंगाल, आसाम में सामान्य वर्षा। दक्षिणी प्रान्तों में वायु वेग रहेगा। **शकुन विचार**-कृष्णाष्टमी व १४ को मेघ घटा हो और उत्तरी हवाएं होने पर आगे उत्तम वर्षा होती है। यथा- **चैत्रमासे कृष्ण पक्षे चतुर्दश्याष्टमी तिथौ॥ तत्राभ्रमुत्तरो वायुः शुभायवत्सरे भवेत्॥**

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चैत्र शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (१३ अप्रैल से २७ अप्रैल तक)

अप्रैल	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
13	१	श	२६	५४	अ	२९	४५	वि	२९	४५	मेष	नूतन संवत्सरारंभ:, नवरात्रारंभ:, घटस्थापन गुड़ी पड़वा, गौतम जयंती
14	२	र	२८	३९	भ	-	-	प्री	-	-	मेष	चंद्रदर्शन मु. १५ सिंधारा, झूलेलाल ज., औश्व. मेष में सूर्य ५ ।५१ मु. १५
15	३	चं	-	-	भ	८	२	प्री	६	४	वृ. १४ ।३३	गणगौरी, मत्स्य जयंती, सफर मु. मास २
16	३	मं	६	३	कृ	९	५८	आ	[illegible]	[illegible]	वृष	भ. १८ ।३७ से, भरणी में बुध २७ ।३७, विनायक ४ व्रत
17	४	बु	७	३	रो	११	३०	सौ	२९	१६	मि. २४ ।५	भ. ७ ।३ तक, कृत्ति. में शुक्र २९ ।४३, श्री महालक्ष्मी पूजारंभ
18	५	गु	७	३४	मृग	१२	३३	अति	२८	१३	मिथुन	कल्यादि ५, हय व्रत, स्कन्द षष्ठी A जैन आयंबिल ओली प्रा.
19	६	शु	७	३२	आ	१३	३	सु	२६	४२	मिथुन	रोहिणी में मंगल प्रवेश १५ ।५८, बुध पश्चिम में उदय १५ ।०२ A
20	७	श	६	५४	पुन	१२	५७	धृ	२४	४१	क. ७ ।२	भ. ६ ।५४ से १८ ।२० तक, मृग १ राहु: ज्ये. ३ केतु: प्रवेश २२ ।४२,B
0	८	श	२९	३७	०	०	०	०	०	०	० ० ०	सप्तमी तिथि क्षय B वृष में शुक्र २३ ।९, श्री दुर्गाष्टमी दुर्गापूजन
21	९	र	२७	४३	पु	१२	१३	शू	२२	१०	कर्क	नवरात्र समाप्ति, श्री रामनवमी व्रत, श्रीराम जन्मोत्सव
22	१०	चं	२५	१४	श्ले	१०	५३	गं	१९	१०	सिं. १० ।५३	Dसमाप्त, चैत्री १५, वैशाख स्नानारंभ
23	११	मं	२२	१७	म	९	०	वृ	१५	४५	सिंह	भ. ११ ।४९ से २२ ।१७ तक, कृत्ति. में बुध २९ ।१७ कामदा ११ व्रत सबका
24	१२	बु	१९	०	पू.फा	[illegible]	[illegible]	ध्रु	१२	०	कं. १२ ।४	हरिदमनोत्सव C पूर्णिमा व्रत, सत्य व्रतम्, दमनक १४
25	१३	गु	१५	२९	ह	२५	२१	ध्या	[illegible]	[illegible]	कन्या	प्रदोष व्रत, महावीर जय. जैन, अनंग १३, मीनाक्षी कल्याणम्
26	१४	शु	११	५७	चि	२२	३९	व	२४	२	तु. ११ ।५९	भ. ११ ।५७ से २२ ।१३ तक, वृष में बुध प्रवेश ५ ।५२C
27	१५	श	८	३२	स्वा	२०	१०	सि	२०	१५	तुला	५. में सूर्य २१ ।४२, श्री हनुमान ज., जैन आयंबिल ओली D

वैशाख कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (२८ अप्रैल से १२ मई तक)

अप्रैल	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
0	१	श	२९	२५	०	०	०	०	०	०	० ० ०	प्रतिपदा तिथि क्षय:
28	२	र	२६	४५	वि	१८	५	व्य	१६	४७	वृ. १२ ।३३	रोहि. में शुक्र प्रवेश २८ ।६, आर्द्रा ४ में गुरु: प्रवेश ९ ।५३
29	३	चं	२४	४२	अनु	१६	३३	वरि	१३	४६	वृश्चिक	भ. १३ ।३८ से २४ ।४२ तक, वक्री ज्ये. २ में प्लूटो १४ ।११
30	४	मं	२३	२१	ज्ये	१५	४१	प	११	१७	ध. १५ ।४१	कृष्ण चतुर्थी व्रतम्, अनसूया जयन्ति
M1	५	बु	२२	४८	मू	१५	३५	शि	९	२५	धनु	मई मास प्रा. ता. ३१, विश्व मजदूर दिवस, गुरु तेग बहादुर ज.
2	६	गु	२३	३	पू.षा	१६	१७	सि	८	११	म. २२ ।३४	भ. २३ ।३ से, A शीतला पूजा, गुरु अर्जुन देव ज.
3	७	शु	२४	३	उ.षा	१७	४३	सा	७	३५	मकर	भ. ११ ।२८ तक, रोहिणी में बुध प्रवेश २२ ।४०, A
4	८	श	२५	४१	श्र	१९	४८	शुभ	७	३२	मकर	रोहिणी ४ में शनि: ११ ।१८, कालाष्टमी
5	९	र	२७	४७	ध	२२	२३	शु	७	५६	कुं. ९ ।२	पंचक ९ ।२ से प्रारम्भ, महापात पुण्यं
6	१०	चं	-	-	श	२५	१५	ब्र	८	४०	कुंभ	भ. १६ ।५७ से, B आखरी चहार शंबा
7	१०	मं	६	९	पू.भा	२८	१५	ऐं	९	३५	मी. २१ ।३०	भ. ६ ।९ तक, वरूथिनी एका. व्रत (स्मार्त), टैगोर जय.
8	११	बु	८	३६	उ.भा	-	-	वै	१०	३१	मीन	वरूथिनी एका. व्रत (वै.), श्री वल्लभाचार्य ज.,B
9	१२	गु	१०	५७	उ.भा	७°	१०	वि	११	२३	मीन	मृग. में मंगल प्रवेश १० ।५६, मृग. में शुक्र प्रवेश २८ ।१०, प्रदोष व्रत
10	१३	शु	१३	४	रे	९	५३	प्री	१२	५	मे. ९ ।५३	भ. १३ ।४ से २६ ।० तक, पंचक ९ ।५३ तक, मास शिवरात्री
11	१४	श	१४	५२	अ	१२	१८	आ	१२	३२	मेष	सूर्य कृत्तिका में प्रवेश १५ ।५२
12	३०	र	१६	१७	भ	१४	२१	सौ	१२	४२	वृ. २० ।४८	देवपितृकार्येऽमा, शुकदेव ज., शहादते इमाम हसन मु.

वैशाख शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (१३ मई से २६ मई तक)

मई	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
13	१	चं	१७	१७	कृ	१६	१	शो	१२	३३	वृष	चन्द्रदर्शन मु. ४५, वक्री नेप. १८ ।१६, देवदामोदरोत्सव
14	२	मं	१७	५२	रो	१७	१५	अति	१२	४	वृष	रवि उल्ल अव्य. मु. मा. ३ प्रा., सूर्य वृष में २६ ।४२ मु., ३० बुध व. २३ ।३४
15	३	बु	११	१८	मृग	१८	५	सु	११	१५	मि. ५ ।४३	सं. पुण्यं, अक्षय३, शुक्र मिथु. में १६ ।५१, बद्री केदारनाथ यात्रा
16	४	गु	१७	४३	आ	१८	२९	धृ	१०	६	मिथुन	भ. ५ ।५५ से १७ ।४३ तक, वैनायक ४ व्रत
17	५	शु	१६	५८	पुन	१८	२६	शू	८	३५	क. १२ ।२९	बुध अस्त पश्चि. में २७ ।३६, श्रीशंकराचार्य ज., श्री रामानुजाचार्य ज.
18	६	श	१५	४८	पु	१७	५७	गं	[illegible]	[illegible]	कर्क	पुन. १ में गुरु ८ ।४, महापात २८ ।२८ से, चन्दन छठ
19	७	र	१४	११	श्ले	१७	३	धु	२५	५७	सिं. १७ ।३	भ. १४ ।११ से २५ ।१४ तक, मिथु. में मंग. ११ ।१३ महापात १० ।२८ तक गंगा ७
20	८	चं	१२	१०	म	१५	४६	ध्या	२३	६	सिंह	सीताष्टमी, दुर्गाष्टमी B ज., वैशाख स्नान समाप्त
21	९	मं	९	४९	पू.फा	१४	८	ह	१९	५९	कं. १९ ।४१	आर्द्रा में शुक्र प्रवेश ६ ।३, सायन मिथुन में सूर्य ११ ।३
22	१०	बु	७	१०	उ.फा	१२	१४	व	१६	४०	कन्या	भ. १७ ।४६ से २८ ।० तक, मोहिनी ११ व्रत (स्मा.), शनि पश्चिमा. १३ ।४
0	११	बु	२८	२०	०	०	०	०	०	०	० ० ०	एकादशी तिथि क्षय: A ईद-ऐ-मिलाद, नृसिंह ज.
23	१२	गु	२५	२५	ह	१०	१०	सि	१३	१४	तु. २१ ।७	मोहिनी एकादशी व्रत (वैष्णव), रुक्मिणी द्वादशी
24	१३	शु	२२	३२	चि	८	३	व्य	९	४६	तुला	प्रदोष व्रत, अशोक त्रिरात्रि व्रत, व्यतिपात ९ ।४६ तक
25	१४	श	१९	४९	स्वा	[illegible]	[illegible]	वरि	[illegible]	[illegible]	वृ. २२ ।३६	भ. १९ ।४९ से, सूर्य रोहि. में प्रवेश १२ ।३, श्री पूर्णिमा व्रत, A
26	१५	र	१७	२३	अनु	२६	४१	शि	२४	१२	वृश्चिक	भ. ६ ।३३ तक, सत्यव्रत, वैशाखी पूर्णिमा, बुद्ध व कूर्म B

ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (२७ मई से १० जून तक)

मई	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
27	१	चं	१५	२३	ज्ये.	२५	४१	सि	२१	३९	ध. २५ ।४१	श्री जवाहरलाल नेहरू पु. दिवस, ज्ये. जिनवर व्रत प्रा. जैन
28	२	मं	१३	५५	मू	२५	१५	सा	१९	३३	धनु	भ. २५ ।२५ से, नारद जयंती A १० ।१३ जून मा. ६ ता. ३०
29	३	बु	१३	६	पू.षा	२५	२९	शु	१७	५९	धनु	भ. १३ ।६ तक, श्री कृष्ण चतुर्थी व्रत, आर्द्रा में मंगल १३ ।२३
30	४	गु	१२	५८	उ.षा	२६	२५	शु	१६	५९	म. ७ ।४०	मृग. १ में शनि २८ ।१४, वक्री कृतिका में बुध २५ ।३५
31	५	शु	१३	३२	श्र	२८	२	ब्र	१६	३२	मकर	महापात ८ ।२५ से १७ ।०८तक
J1	६	श	१४	४६	ध	—	—	ऐं	१६	३५	कुं. १७ ।३	भ. १४ ।४६ से २७ ।३६ तक, पंचक प्रा. १७ ।३ से, पुन. में शुक्रA
2	७	र	१६	३४	ध	६	१३	वै	१७	४	कुम्भ	C दृश्य). भावुका अमा., देवपितृ कार्येऽमावस्या, वट् सावित्री व्रत
3	८	चं	१८	४४	श	८	५१	वि	१७	५०	मी. २९ ।१	व. हर्षल ५ ।५८, काला८ मेला चानाणी माताजी, दादूदयाल पुण्यं
4	९	मं	२१	६	पू.भा	११	४५	प्री	१८	४५	मीन	पुनर्वसु २ में गुरु प्रवेश १० ।१ B ११ ।५, वट् सावित्री व्रतारंभ
5	१०	बु	२३	२५	उ.भा	१४	४०	आ	१९	३९	मीन	भ. १० ।१६ से २३ ।२५ तक, बुध पूर्व में उदय १५ ।८
6	११	गु	२५	३१	रे	१७	२६	सौ	२०	२४	मे. १७ ।२६	पंचक समाप्त १७ ।२६ तक, अपरा एकादशी व्रत
7	१२	शु	२७	१४	अ	१९	५३	शो	२०	५३	मेष	मधुसूदन द्वादशी, श्री अनन्त नाथ जन्म जैन
8	१३	श	२८	२८	भ	२१	५३	अ	२१	०	वृ. २८ ।१८	भ. २८ ।२८ से, सूर्य मृग. में प्रवेश ९ ।५६, शनिप्रदोष व्रत, बुध मार्गी B
9	१४	र	२९	९	कृ	२३	२२	सु	२०	४३	वृष	भ. १६ ।५३ तक, शुक्र कर्क में प्रवेश २१ ।२, मास शिवरात्रि
10	३०	चं	२९	१८	रो	२४	१९	धृ	२०	०	वृष	सोमवती ३०, ग्रस्तोदित खण्डग्रास सूर्यग्रहण (पूर्वांभारते C

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (११ से २४ जून तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
11	१	मं	२८	५६	मृ	२४	४६	शु	१८	५२	मि. १२।३६	श्री गंगा दशाश्वमेध स्नान प्रारम्भ-करबीर व्रत A २८।१९ से
12	२	बु	२८	७	आ	२४	४४	गं	१७	२१	मिथुन	चन्द्रदर्शन मु. ४५, शुक्र पुष्य में प्रवेश १६।५६ B २४।४ तक
13	३	गु	२६	५२	पुन	२४	१८	वृ	१५	२९	क. १८।२७	रवि उल्ल आखिर मु. मा. ४ प्रा., रंभा ३, महाराणा प्रताप ज., महापात A
14	४	शु	२५	१८	पु	२३	३१	ध्रु	१३	१९	कर्क	भ. १४।७ से २५।१८ तक, विनायक ४, अर्जुन देव बलिदान दि. महापातB
15	५	श	२३	२७	आ	२२	२७	व्या	१०	५३	सिं. २२।२७	सूर्य मिथुन में ९।१६, संक्रांति पुण्य मु. १५, श्रुत पंचमी (जैन)
16	६	र	२१	२३	म	२१	११	ह	८	१६	सिंह	बुध रोहि. में २६।१२, विंध्यवासिनी पूजा, जामित्र व अरण्य षष्ठी व्रत
17	७	चं	१९	१०	पू.फा	१९	४५	व	[illegible]	[illegible]	कं. २५।२३	भ. १९।१० से, मंगल अस्त पश्चि. १८।४७
18	८	मं	१६	५१	उ.फा	१८	१४	व्य	२३	३९	कन्या	भ. ६।१ तक, पुन. में मंगल प्र. २२।३१, व्यतिपात २३।३९ तक, दुर्गाष्टमी
19	९	बु	१४	३०	ह	१६	४१	व	२०	४१	तु. २७।५४	श्री महेश नवमी (माहेश्वरी जाति पर्व) D ११।४० तक
20	१०	गु	१२	१०	चि	१५	९	प	१७	४५	तुला	भ. २३।०२ से, पुन. ३ में गुरु ६।४४, गंगा दशहरा मेला हरिद्वार
21	११	शु	९	५५	स्वा	१३	४३	शि	१४	५४	तुला	भ. ९।५५ तक, निर्जला एका. व्रत, सायन कर्क में सूर्य १८।५८
22	१२	श	७	५०	वि	१२	२६	सि	१२	१२	वृ. ६।४४	आर्द्रा में सूर्य: ८।५२, रोहि. ४ में राहु ज्ये. २ में केतु २०।१९, शनि प्रदोष
23	१३	र	५	५८	अ	११	२५	सा	९	४१	वृश्चिक	भ. २८।२४ से, आश्लेषा में शुक्र: २७।१, चंपक १४, ११वीं C
0	१४	र	२८	२४	०	०	०	०	०	०	० ० ०	चतुर्दशी तिथि क्षय: C शरीफ फातिहा, महापात २६।३९ से
24	१५	चं	२७	१४	ज्ये	१०	४३	शु	७	२६	ध. १०।४३	भ. १५।४६ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, वट्सावित्री व्रत, महापातD

आषाढ़ कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (२५ जून से १० जुलाई तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
25	१	मं	२६	३२	मू	१०	२६	शु	[illegible]	[illegible]	धनु	मृग. २ में शनि प्रवेश २२।३३, गुरु हर गोविन्द सिंह जयं.
26	२	बु	२६	२३	पू.षा	१०	३८	ऐं	२६	५३	म. १६।४६	
27	३	गु	२६	४९	उ.षा	११	२३	वै	२६	१५	मकर	भ. १४।३१ से २६।४९ तक, शनि उदय पूर्व में २०।१४
28	४	शु	२७	५०	श्र	१२	४३	वि	२६	४	कुं. २५।३५	पंचक प्रा. २५।३५ से, कृष्ण चतुर्थी व्रत, उर्स निज़ामुद्दीन औलिया प्रा.
29	५	श	२९	२३	ध	१४	३६	प्री	२६	२०	कुंभ	मृग. में बुध २२।५१, नाग पंचमी (बंगाल)
30	६	र	—	—	श	१६	५९	आ	२६	५६	कुंभ	
J1	६	चं	७	२३	पू.भा	१९	४४	सौ	२७	४६	मी. १३।१	भ. ७।२३ से २०।३० तक, जुलाई मास ७ प्रा. ता. ३१
2	७	मं	९	४०	उ.भा	२२	३९	शो	२८	४२	मीन	A पूर्व में २४।६, गुरु अस्त पश्चिम में २७।३
3	८	बु	१२	१	रे	२५	३२	अति	—	—	मे. २५।३२	पंचक समाप्त २५।३२ तक, बुध मिथुन में २१।२२, कालाष्टमी
4	९	गु	१४	१३	अ	२८	९	अति	५	३४	मेष	भ. २७।११ से, कर्क में मंगल प्रवेश ९।१०
5	१०	शु	१६	२	भ	—	—	सु	६	१२	मेष	भ. १६।२ तक, गुरु कर्क में प्रवेश १२।२१, शुक्र सिंह में १७।२१
6	११	श	१७	२०	भ	६	१९	धृ	६	२७	वृ. १२।४७	सूर्य पुनर्वसु में ८।२९, योगिनी एकादशी व्रत, गोपद्म व्रतोद्यापन
7	१२	र	१७	५९	कृ	७	५५	शू	६	१५	वृष	प्रदोष व्रत, बुध आर्द्रा में २३।१६, महापात २६।२० से
8	१३	चं	१७	५७	रो	८	५१	गं	[illegible]	[illegible]	मि. २१।४	भ. १७।५७ से, मास शिवरात्री व्रत, महापात ११।०१ तक
9	१४	मं	१७	१६	मृग	९	७	ध्रु	२६	२७	मिथुन	भ. ५।४१ तक, मंगल पुष्य में १३।१६, बुध अस्तA
10	३०	बु	१५	५८	आ	८	४६	व्या	२४	१३	मि. २६।९	देव पितृकार्य ऽमावस्या

आषाढ़ शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (११ से २४ जुलाई तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
11	१	गु	१४	१०	पुन	७	५३	ह	२१	३५	कर्क	चन्द्रदर्शन मु. ३० A जगन्नाथपुरी, मनोरथ २ (बंगा.)
12	२	शु	११	५९	पु	[illegible]	[illegible]	व	१८	४१	सिं. २८।५९	जमा. उल अव्वल मु. मास ५ प्रा., श्री जगदीश रथ यात्रा A
13	३	श	९	३२	म	२७	१३	सि	१५	३६	सिंह	भ. २०।१६ से, विनायक ४ B स्कंद पंचमी
14	४	र	६	५८	पू.फा	३५	२५	व्य	१२	२६	सिंह	भ. ६।५८ तक, पुन. में बुध १४।५२, व्यतिपात १२।२६ तक B
0	५	र	२८	२१	०	०	०	०	०	०	० ० ०	पंचमी तिथि क्षय: C चातुर्मास प्रा., बुध पु. में २०।५० पुष्य १ में गुरु ११।२३
15	६	चं	२५	४९	उ.फा	२३	४०	वरि	९	१५	कं. ६।५८	कुमार षष्ठी व्रत
16	७	मं	२३	२६	ह	२२	४	प	[illegible]	[illegible]	कन्या	भ. २३।२६ से, सूर्य कर्क में २०।४ मु. ३०, संक्रांति पुण्यं, सूर्य पूजा
17	८	बु	२१	१५	चि	२०	४०	सि	२४	२५	तु. ९।२०	भ. १०।१९ तक, पू. फा. में शुक्र प्र. १३।१३, श्री दुर्गाष्टमी
18	९	गु	१९	२०	स्वा	१९	३२	सा	२१	५१	तुला	भडुली ९, मेला शरीफ भवानी (काश्मीर), कन्दर्प ९
19	१०	शु	१७	४३	वि	१८	४१	शुभ	१९	३१	वृ. १२।५२	भ. २९।१ से, बुध कर्क में प्र. ७।२५, आशा १० व्रत, गिरिजा पूजा
20	११	श	१६	२३	अनु	१८	८	शु	१७	२७	वृश्चिक	भ. १६।२३ तक, सूर्य पुष्य में ७।५५, देव शयनी एकादशी व्रतC
21	१२	र	१५	२४	ज्ये	१७	५५	ब्रह्म	१५	३८	ध. १७।५५	हरिवासर का अभाव, प्रदोष व्रतम्
22	१३	चं	१४	८५	मू	१८	३	ऐं	१४	६	धनु	जया पार्वती व्रतारंभ D सिंह में ५।५०, पूर्णिमा व्रत
23	१४	मं	१४	२९	पू.षा	१८	३४	वै	१२	५३	म. २४।४५	भ. १४।२९ से २६।३१ तक, मिथु. में शनि ८।१९, सायन सूर्य D
24	१५	बु	१४	३९	उ.षा	१९	२९	वि	११	५९	मकर	सत्यनारायण व्रतम्, व्यास पूजा, गुरु पूर्णिमा, मन्वादि १५

श्रावण कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (२५ जुलाई से ८ अगस्त तक)

तारीख	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
25	१	गु	१५	१५	श्र	२०	५१	प्री	११	२६	मकर	अशून्य शयन व्रत
26	२	शु	१६	१९	ध	२२	४०	आ	११	१४	कुं. ९।४२	भ. २९।०१ से, पंचक प्रा. ९।४२ से,
27	३	श	१७	५०	शत	२४	५५	सौ	११	२५	कुंभ	भ. १७।५० तक, बुध आश्लेषा में ६।४२, कृष्ण चतुर्थी व्रत
28	४	र	१९	४७	पू.भा	२७	३४	शो	११	५५	मी. २०।५२	
29	५	चं	२२	२	उ.भा	—	—	अ	१२	४२	मीन	उ.फा. में शुक्र १७।६ नाग पंचमी (बंगाल मरुस्थले)
30	६	मं	२४	२७	उ.भा	६	२७	सु	१३	३८	मीन	भ. २४।२७ से, आश्लेषा में मंगल ८।११, मंगला गौरी पूजन
31	७	बु	२६	४९	रे	९	२७	धृ	१४	३६	मे. ९।२७	भ. १३।३९ तक, पंचक समा. ९।२७ तक, शीतला ७ (उड़ीसा)
A1	८	गु	२८	५३	अ	१२	१९	शू	१५	२६	मेष	शुक्र कन्या में १९।४४, अग. मास ८ ता. ३१, तिलक जय. काला८
2	९	शु	६०	०	भ	१४	४९	गं	१५	५८	वृ. २१।२२	बुध मघा सिंह में २१।९, बुध उदय पश्चिम में १८।४०, गुरु हरिकिशन ज.
3	९	श	—	—	कृ	१६	४७	वृ	१६	३	वृष	भ. १९।१ से, सूर्य आश्लेषा में ६।५१ गुरु पूर्व में उदय १०।७
4	१०	र	७	२३	रो	१८	३	ध्रु	१५	३५	वृष	भ. ७।२३ तक, गुरु पुष्य २ में ११।४
5	११	चं	७	३२	मृ	१८	३२	व्या	१४	३०	मि. ६।२४	कामिका एकादशी व्रत A वफ़ात सर सैयद हैमद खाँ
6	१२	मं	६	५३	आ	१८	१५	ह	१२	४६	मिथुन	भ. २९।२८ से, भौम प्रदोष व्रत, मंगला गौरी पूजन
0	१३	मं	२९	२८	०	०	०	०	०	०	० ० ०	त्रयोदशी तिथि क्षय:
7	१४	बु	२७	२४	पुन	१७	१५	व	१०	२६	क. ११।३४	भ. १६।३० तक, मास शिवरात्री
8	३०	गु	२४	४७	पु	१५	३९	सि	[illegible]	[illegible]	कर्क	व्यतिपात २८।२० तक, देवपितृकार्य ऽमावस्या, हरियाली ३०, A

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रावण शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (९ अगस्त से २२ अगस्त तक)

तारीख	तिथि	वार	घं.	मि.	नक्षत्र	घं.	मि.	योग	घं.	मि.	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
9	१	शु	२१	४८	श्ले	१३	३६	व	२४	४६	सिं. १३।३६	नक्त व्रत प्रारम्भ, सोमेश्वर पूजा
10	२	श	१८	३६	म	११	१७	परि	२१	३	सिंह	चन्द्रदर्शन मु. ३० समता भाव, सिंधारा, पू.फा. में बुध २२।३१
11	३	र	१५	२१	पू.फा	८	५०	शि	१७	१९	कं. १४।१४	भ. २५।४५ से, ज. उल्स आखिर मु. मास. ६ प्रा., मधुश्रवा ३, A
12	४	चं	१२	१२	उ.फा	[illegible]	[illegible]	सि	१३	४०	कन्या	भ. १२।१२ तक, दुर्वा गणपति व्रत B महापात २६।५ से
13	५	मं	९	१८	चि	२६	२७	सा	१०	१४	तु. १५।१९	मंगला गौरी पूजन, नाग पंचमी देशाचारे C ६।५० तक
14	६	बु	६	४४	स्वा	२५	१	शुभ	[illegible]	[illegible]	तुला	भ. २८।३७ से, वर्ण षष्ठी, तुलसीदास ज., कल्की जय. B
0	७	बु	२८	३७	०	०	०	०	०	०	०००	सप्तमी तिथि क्षय: A शुक्र हस्त में ८।५० धनि. ३ में वक्री हर्षल ७।३१
15	८	गु	२६	५८	वि	२४	४	ब्रह्म	२५	५४	वृ. १८।२६	भ. १५।४४ तक, भा. स्वतंत्रता दि. वर्ष ५६ प्रा., दुर्गा८, महापातC
16	९	शु	२५	४९	अनु	२३	३६	ऐं	२३	५४	वृश्चिक	सूर्य सिंह में २८।२५ मु. १५
17	१०	श	२५	८	ज्ये	२३	३६	वै	२२	१७	ध. २३।३६	संक्रान्ति पुण्य
18	११	र	२४	५५	मू	२४	४	वि	२१	२	धनु	भ. १२।५८ से २४।५५ तक, पवित्रा ११ व्रत, झूलन यात्रारंभ
19	१२	चं	२५	७	पू.षा	२४	५६	प्री	२०	७	धनु	बुध उ.फा. में १८।२८, पुष्य ३ में गुरु १८।३०, मंगल सिंह में २९।४५
20	१३	मं	२५	४२	उ.षा	२६	११	आ	१९	३१	म. ७।१३	भौम प्रदोष व्रत, मंगला गौरी पूजन
21	१४	बु	२६	४१	श्र	२७	४८	सौ	१९	१३	मकर	भ. २६।४१ से, बुध कन्या में २९।२२
22	१५	गु	२८	१	ध	२९	४७	शो	१९	११	कुं. १६।४५	भ. १५।१८ तक, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, रक्षा बंधन, D
												D अमरनाथदर्शन, यजुर्वेदीय उपाकर्म, पंचक प्रा. १६।४५से

भाद्रपद कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (२३ अग. से ७ सित. तक)

तारीख	तिथि	वार	घं.	मि.	नक्षत्र	घं.	मि.	योग	घं.	मि.	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
23	१	शु	२९	४२	श	-	-	अति	१९	२७	कुंभ	सायन सूर्य कन्या में १२।५१, शरद ऋतु प्रा.
24	२	श	-	-	श	८	५	सु	१९	५८	मी. २८।२	शुक्र चित्रा में २०।२६, राहु रोहिणी ३ व केतु ज्ये. में १७।४८
25	२	र	७	४४	पू.भा.	१०	४३	धृ	२०	४३	मीन	भ. २०।५१ से, सिंधारा A कज्जली (बड़ी तीज) कृष्णा ४ व्रत
26	३	चं	१०	२	उ.भा.	१३	३६	शू	२१	३८	मीन	भ. १०।२ तक, मृग. ४ में शनि १७।४२, मार्गी प्लूटो १७।२A
27	४	मं	१२	३०	रे	१६	३८	गं	२२	३८	मे. १६।३८	पंचक समाप्ति १६।३८ तक B२४।२७, बुध हस्त में १४।५५
28	५	बु	१५	०	अ	१९	४०	वृ	२३	३७	मेष	चन्द्र षष्ठी, रक्षा ५ (उड़ीसा), महापात १०।३० से १५।१९ तक
29	६	गु	१७	२०	भ	२२	३०	ध्रु	२४	२४	वृ. २९।१९	भ. १७।३० से, हल ६, पुत्रार्थी व्रत
30	७	शु	१९	१७	कृ	२४	५५	व्या	२४	५१	वृष	भ. ६।२२ तक, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत स्मा., पू.फा. में सूर्यB
31	८	श	२०	३८	रो	२६	४३	ह	२४	४९	वृष	शुक्र तुला में २७।१५, श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत वै., कालाष्टमी
S1	९	र	२१	१५	मृ	२७	४६	व्र	२४	११	मि. १५।२१	सितम्बर मास ९ ता. ३०, नन्दोत्सव गोकुल
2	१०	चं	२१	०	आ	२७	५९	सि	२२	५३	मिथुन	भ. ९।१४ से २१।० तक
3	११	मं	१९	५४	पुन	२७	२१	व्य	२०	५३	क. २१।३५	व्यतिपात २०।५३ तक, अजा एकादशी व्रत
4	१२	बु	१७	५९	पु	२५	५७	वरि	१८	१४	कर्क	पुष्य ४ में गुरु १९।१७, प्रदोष व्रत, वत्स द्वादशी
5	१३	गु	१५	२३	श्ले	२३	५४	प	१५	०	सिं. २३।५४	भ. १५।२३ से २५।५२ तक, मास शिवरात्री व्रत
6	१४	शु	२२	१४	म	२१	२२	शि	११	२०	सिंह	पितृकार्याऽमावस्या, लोहार्गल स्नान, पिठौरी ३०
7	३०	श	८	४२	पू.फा.	१८	३२	सि	[illegible]	[illegible]	क. २३।४८	कुशाग्रहणी अमा. देवकार्याऽमावस्या, मेला सुधरेशाह दिल्ली

भाद्रपद शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (८ से २१ सित. तक)

तारीख	तिथि	वार	घं.	मि.	नक्षत्र	घं.	मि.	योग	घं.	मि.	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
0	१	श	२८	५९	०	०	०	०	०	०	०००	प्रतिपदा क्षय: A चंद्र दर्शन निषेध
8	२	र	२५	१६	उ.फा	१५	३६	शुभ	२२	५९	कन्या	शुक्र स्वाती में २५।१९, चन्द्रदर्शन मु. ३०, नक्त व्रत उद्यापन
9	३	चं	२१	४४	ह	१२	४७	शु	१८	५६	तु. २३।२७	रजब मु. मा. ७, मंगल पू.फा. में २८।३७, गौरी तृतीया
10	४	मं	१८	३२	चि	१०	१३	ब्र	१५	९	तुला	भ. ८।५ से १८।३२ तक, श्री गणेश ज. ४, कलंकी ४, A
11	५	बु	१५	४८	स्वा	८	५	ऐं	११	४४	वृ. २४।५०	ऋषी पंचमी, जैन संवत्सरी (पंचमी पक्ष) B अपराजित सप्तमी
12	६	गु	१३	४०	वि	[illegible]	[illegible]	वै	८	४८	वृश्चिक	ललिता षष्ठी, सूर्य ६, बलदेव ६, मेला ब्रजमंडल, महालक्ष्मी व्रतारंभ
13	७	शु	१२	१०	ज्ये	२९	१४	वि	[illegible]	[illegible]	ध. २९।१४	भ. १२।१० से २३।४० तक, सूर्य उ.फा. में १८।१३, B
14	८	श	११	१९	मू	२९	३३	आ	२७	४	धनु	राधाष्टमी, दूर्वा ८, ज्येष्ठा गौरी पूजन, दधीची ज., श्री दुर्गा८
15	९	र	११	७	पू.षा	—	—	सौ	२६	१०	धनु	बुध वक्री २४।१७, श्री चन्द्र नवमी, भागवत सप्ताहारंभ
16	१०	चं	११	३०	पू.षा	६	२८	शो	२५	४०	म. १२।४६	भ. २३।५३ से, दशावतार १० व्रत, सूर्य कंया में २८।२० मु. ४५
17	११	मं	१२	२३	उ.षा	७	५२	अति	२५	३१	मकर	भ. १२।२३ तक, जलझूलनी ११ व्रत, विश्वकर्मा पूजा, संक्रा. पुण्यं
18	१२	बु	१३	४१	श्र	९	४३	सु	२५	४१	कुं. २२।४६	पंचकारम्भ २२।४६ से, वामन जयंती, प्रदोष व्रत
19	१३	गु	१५	२१	ध	११	५४	धृ	२६	५	कुंभ	गोत्रिरात्रि व्रतारम्भ D समा., पूर्णिमा श्राद्ध महालयारंभ
20	१४	शु	१७	१९	श	१४	२३	शू	२६	४१	कुंभ	भ. १७।१९ से, अनन्त चतुर्दशी व्रत, मेला सोडल (जालन्धर)
21	१५	श	१९	३१	पू.भा	१७	६	गं	२७	२७	मी. १०।२४	भ. ६।२३ तक, आश्लेषा १ में गुरु २१।२७, पश्चिमास्त बुधC
												C १७।५९, सत्यव्रत, पूर्णिमा व्रत, गोत्रिरात्री व भागवत सप्ताहD

आश्विन कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (२२ सित. से ६ अक्टू. तक)

तारीख	तिथि	वार	घं.	मि.	नक्षत्र	घं.	मि.	योग	घं.	मि.	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
22	१	र	२१	५४	उ.भा	२०	०	वृ	२८	२१	मीन	पितृपक्षारंभ, प्रतिपदा श्राद्ध, महापात १५।३० से २२।४१ तक
23	२	चं	२४	२५	रे	२३	१	ध्रु	२९	२०	मे. २३।१	पंचक समा. २३।१ तक, द्वितीया श्राद्ध, सायन तुला में सूर्य १०।२९
24	३	मं	२६	५७	अ	२६	४	व्या	—	—	मेष	भ. १३।४१ से २६।५७ तक, तृतीया श्राद्ध
25	४	बु	२९	२३	भ	२९	०	व्या	६	१८	मेष	कृष्णा चतुर्थी व्रत, चतुर्थी श्राद्ध A व्रत, संन्यासी श्राद्ध
26	५	गु	—	—	कृ	—	—	ह	७	१०	वृ. ११।४३	पंचमी श्राद्ध B मृतकों का श्राद्ध, चतुर्दशी श्राद्ध
27	५	शु	७	३२	कृ	७	४२	वज्र	७	५०	वृष	सूर्य हस्त में ९।४८, षष्ठी श्राद्ध, भरणी श्राद्ध
28	६	श	९	१४	रो	९	५७	सि	८	८	मि. २२।५१	भ. ९।१४ से २१।५२ तक, वक्री उ.फा. में बुध १२।४५, सप्तमी श्राद्ध
29	७	र	१०	१९	मृग	११	३५	व्य	७	५९	मिथुन	व्यतिपात ७।५९ तक, अष्टमी श्राद्ध, श्री महालक्ष्मी व्रत पूर्ण
30	८	चं	१०	३८	आ	१२	२९	वरि	[illegible]	[illegible]	मिथुन	मंगल उ.फा. में २७।३८, मंगल पूर्व में उदय २७।५६, नवमी श्राद्ध
01	९	मं	१०	७	पुन	१२	३४	शि	२७	४६	क. ६।३८	भ. २१।३२ से, विशाखा में शुक्र ७।५, दशमी श्राद्ध
2	१०	बु	८	४५	पु	११	४९	सि	२५	२	कर्क	भ. ८।४५ तक, इंदिरा एका. व्रत स्मा., एका. श्राद्ध, गांधी ज.
3	११	गु	६	३६	श्ले	१०	१८	सा	२१	४४	सिं. १०।१८	इंदिरा एका. व्रत वै., द्वादशी श्राद्ध, महाद्वादशी A
0	१२	गु	२७	४६	०	०	०	०	०	०	०००	द्वादशी क्षय: C देवपितृकार्याऽमावस्या श्राद्ध, पितृ विसर्जन
4	१३	शु	२४	२५	म	[illegible]	[illegible]	शु	१७	५७	सिंह	भद्रा २४।२५ से, प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध, शब्बे मिराज मु.
5	१४	श	२०	४२	उ.फा	२६	२९	शु	१३	५०	कं. १०।४४	भद्रा १०।३६ तक, बुध पूर्व में उदय ९।३२, विषशस्त्र अग्नी से B
6	३०	र	१६	४९	ह	२३	२२	ब्र	[illegible]	[illegible]	कन्या	मंगल कन्या में ९।१०, बुध मार्गी २३।५८, C

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आश्विन शुक्ल पक्ष सं. २०५९ (७ अक्टू. से २१ अक्टू. तक)

अंग्रे.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
7	१	चं	१२	५७	चि	२०	२१	वै	२४	५३	तु. ९।५०	शारदीय नवरात्रारंभ, कलश स्थापना, मातामह श्राद्ध, A
8	२	मं	९	१७	स्वा	१७	३५	वि	२०	५२	तुला	सावान मु. मा. प्रा. ८ A चन्द्रदर्शन मु. ३०, अग्रसेन जय.
0	३	मं	२९	६०	०	०	०	०	०	०	०००	तृतीया तिथि क्षय: B से, आश्लेषा २ में गुरु १२।२१
9	४	बु	१७	१४	वि	१५	१६	प्री	१७	१५	वृ. ९।४८	भ. १६।३२ से २७।२४ तक, विनायक ४ D माधवाचार्य जय.
10	५	गु	२५	७	अनु	१३	३२	आ	१४	७	वृश्चिक	सूर्य चित्रा म २२।४३, शुक्र वक्री २३।४७, उपांग ललिता ५ व्रत
11	६	शु	२३	४४	ज्ये	१२	२९	सौ	११	३३	ध. १२।२९	शनि वक्री १६।०, सरस्वती आवाहन C परिक्रमा २३।१४ तक
12	७	श	२३	६	मू	१२	११	शो	९	३५	धनु	भ. २३।६ से, सरस्वती पूजन, अन्नपूर्णा परिक्रमा २३।६ B
13	८	र	२३	१४	पू.षा	१२	३८	अति	८	१३	म. १८।५१	भ. ११।५ तक, दुर्गाष्टमी, सरस्वती बलिदान, अन्नपूर्णा C
14	९	चं	२४	२	उ.षा	१३	४६	सु	७	२५	मकर	शस्त्रादि पूजा, महानवमी, सरस्वती विसर्जन, नवरात्र समाप्त
15	१०	मं	२५	२६	श्र	१५	३०	धृ	७	७	कुं. २८।३४	पंचक प्रा. २८।३४ से, बुध हस्त में १०।३३, विजया दशमी, D
16	११	बु	२७	१६	ध	१७	४३	शू	७	१४	कुंभ	भ. १४।१८ से २७।१६ तक, पापांकुशा एका. व्रत, भरत मिलाप
17	१२	गु	२९	२७	शत	२०	१८	गं	७	४०	कुंभ	सूर्य तुला में १६।१६, संक्रांति पुण्य मु. १५, हरिवासर ९।४६ E
18	१३	शु	—	—	पू.भा	२३	७	वृ	८	२०	मी. १६।२४	प्रदोष व्रत, महापात ६।४६ तक F मार्गी नेपच्यून २०।११
19	१३	श	७	५०	उ.भा	२६	५	ध्रु	९	९	मीन	स्वाती में वक्री शुक्र ६।३४ तक, E तक, महापात २६।२ से
20	१४	र	१०	२०	रे	२९	५	व्या	१०	३	मे. २९।५	भ. १०।२० से २३।३६ तक, पंचक स. २९।५, शरद १५, सत्यव्रत
21	१५	चं	१२	५१	अ	—	—	हर्ष	१०	५८	मेष	कार्तिक स्नान प्रा. पूर्णिमा पुण्य, बाल्मीकि ज., मंगल हस्त में २५।३४

कार्तिक कृष्ण पक्ष सं. २०५९ (२२ अक्टू. से ४ नवंबर तक)

अंग्रे.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
22	१	मं	१५	९	अ	८	३	वज्र	११	५०	मेष	अशून्य शयन २ व्रत, बुध अस्त पूर्व में २१।३० A रामदास ज.
23	२	बु	१७	३९	भ	१०	५४	सि	१२	३६	वृ. १७।३५	शुक्र पश्चिम में अस्त १०।५८, सायन वृश्चिक में सूर्य १९।५२ A
24	३	गु	१९	४३	कृ	१३	३२	व्य	१३	१२	वृष	भ. ६।४३ से १९।४३ तक, सूर्य स्वाती में ९।१७, बुध चित्रा में ११।३९
25	४	शु	२१	२५	रो	१५	५२	वरि	१३	३२	मि. २८।५२	कृष्ण चतुर्थी व्रत, करवा चौथ व्रत, दशरथ चौथ
26	५	श	२२	३९	मृ	१७	४५	परि	१३	३३	मिथुन	राहु रोहि. २ केतु अनु. ४ में १५।४०, पद्म प्रभु ज. जैन
27	६	र	२३	१८	आ	१९	५	शि	१३	८	मिथुन	भ. २३।१८ से, स्कन्द षष्ठी
28	७	चं	२३	१६	पुन	१९	४७	सि	१२	१३	क. १३।४०	भ. ११।२३ तक, बुध तुला में १२।२३
29	८	मं	२२	३१	पु	१९	४७	सा	१०	४६	कर्क	अहोई अष्टमी, राधाकुण्ड स्नान मथुरा, कालाष्टमी
30	९	बु	२१	२	आ	१९	४	शु	६ ३०	[illegible]	सिं. १९।४	D महाकाली पूजा
31	१०	गु	१८	५३	म	१७	४०	ब्र	२६	५९	सिंह	भ. ८।३ से १८।५३ तक, सरदारपटेल ज., इंदिरा गांधी पुण्य दि.
N1	११	शु	१६	८	पू.फा	१५	४१	ऐं	२३	३४	कं. २१।०६	बुध स्वा. में १२।१८, रमा एका. व्रत, नवंबर मास ११ ता. ३०
2	१२	श	१२	५६	उ.फा	१३	१४	वै	१९	२९	कन्या	गोवत्स पूजा, शनिप्रदोष, धनत्रयोदशी, धन्वंतरी ज., यमदीप दान
3	१३	र	९	२५	ह	१०	२८	वि	१५	२१	तु. २१।०१	भ. ९।२५ से १९।३५ तक, रूप १४, नरक १४, B
0	१४	र	२९	४५	०	०	०	०	०	०	०००	चतुर्दशी तिथि क्षय: B दीपदानं, हनुमान ज.
4	३०	चं	२६	६	चि	[illegible]	[illegible]	प्री	११	८	तुला	देवपितृकार्याऽमावस्या, श्रीमहालक्ष्मी पूजन, दीपावली, C
												C सोमवती अमा., मार्गी हर्षल ११।५१, निशीथ कालD

कार्तिक शुक्ल पक्ष सं. २०५९ (५ नवंबर से २० नवंबर तक)

नवं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
5	१	मं	२२	३९	वि	२६	३	आ	[illegible]	[illegible]	वृ. २०।४१	अन्नकूट-गोवर्धन पूजा-द्युत क्रीडा दिवस, गौ. सं. समाहारंभ
6	२	बु	१९	३४	अनु	२३	४७	शो	२३	२१	वृश्चिक	चन्द्रदर्शन मु. ३०, सूर्य विशाखा में १७।२४, यम २ भैया दूजA
7	३	गु	१६	५९	ज्ये	२२	४	अति	२०	९	ध. २२।४	भ. २०।५७ से, रमजान मु. मास ९ प्रा. रोजा प्रा. C चित्रा में २२।२
8	४	शु	१५	४	मू	२१	०	सु	१७	२९	धनु	भ. १५।४ तक, विनायक ४, सूर्य षष्ठी व्रतारंभ (बिहार)
9	५	श	१३	५३	पू.षा	२०	४२	धृ	१५	२५	म. २६।४५	विशाखा में बुध प्रवेश १४।४७, पांडव ५, सौभाग्य ५, गुरु B
10	६	र	१३	३०	उ.षा	२१	११	शू	१३	५८	मकर	सूर्य षष्ठी व्रत, डाला छठ (बिहार) A शुक्र पूर्व में उदय ६।४०
11	७	चं	१३	३५	श्र	२२	२४	गंड	१३	८	मकर	भ. १३।५५ से २६।२४ तक, आश्लेषा में ३ में गुरु ७।१०, मंगल C
12	८	मं	१५	३	ध	२४	१८	वृ	१२	५२	कुं. ११।६	पंचक ११।१६ से, गोपा८, गौ. स. सप्ताह समा., महापात १२।२४D
13	९	बु	१६	४८	शत	२६	४४	ध्रुव	१३	४	कुम्भ	आंवला ९, अक्षय ९, कुष्मांड ९, जगद् धात्री पूजा B गोविन्द सिंह पु. दि.
14	१०	गु	२९	१	पू.भा	२९	३२	व्या	१३	३८	मी. २२।४८	जवाहरलाल नेहरू ज., बाल दिवस, बाल मेला (दिल्ली) D से १८।१५
15	११	शु	२१	३०	उ.भा	-	-	ह	१४	२५	मीन	भ. ८।१४ से २१।३० तक, देव प्रबो. ११ व्रत, तुलसी विवाह, बुध वृश्चि.E
16	१२	श	२४	५	उ.भा	८	३१	व	१५	१९	मीन	सूर्य वृश्चि. में १६।१३, संक्रा. पुण्य मु. ३०, चित्रा में वक्री शुक्र १४।१
17	१३	र	२६	३८	रे	११	३३	सि	१६	१३	मे. ११।३३	पंचक ११।२३, तक बुध अनु. में २२।४७ E में २०।१८ भीष्म ५ प्रा. चातु. पूर्ण
18	१४	चं	२८	२९	अ	१४	२८	व्य	१७	१	मेष	भ. २८।५९ से, व्य. १७।१ तक, बैकुंठ १४, काशी विश्वनाथ प्रतिष्ठा दि.
19	१५	मं	-	-	भ	१७	११	वरि	१७	३९	वृ. २३।४९	भ. १८।५ तक, अनु. में सूर्य २३।२८, सत्यव्रत पूर्णिमा व्रत
20	१५	बु	७	५	कृ	१९	३६	प	१८	३	वृष	पूर्णिमा पुण्य, भीष्म ५ समा., कार्तिक स्नान पूर्ति, निम्बार्काचार्य ज.

मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष सं. २०५९ (२१ नवंबर से ४ दिसंबर तक)

नवं.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टैं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
21	१	गु	८	५१	रो	२१	४१	शि	१८	१०	वृष	अशून्य शयन २ व्रत, शुक्र मार्गी १२।२२
22	२	शु	१०	१३	मृ	२३	२२	सि	१७	५९	मि. १०।३५	भ. २२।४५ से, मंगल तुला में ७।४२, सायन धनु में सूर्य १७।२८
23	३	श	११	१०	आ	२४	३७	सा	१७	२९	मिथुन	भ. ११।१० तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत
24	४	र	११	३८	पुन	२५	२४	शुभ	१६	३६	क. १९।१५	A स्वा. में १३।५३
25	५	चं	११	३७	पु	२५	४२	शु	१५	१९	कर्क	सुविधानाथ ज. व दीक्षा दिवस जैन, महापात ३०।४० से,
26	६	मं	११	५	श्ले	२५	२९	ब्र	१३	३९	सिं. २५।२९	भ. ११।५ से २२।३७ तक, बुध ज्येष्ठा में ११।१५, शुक्र A
27	७	बु	१०	१	म	२४	४५	ऐं	११	३३	सिंह	वक्री मृग. शनि ९।५२, श्रीकाल भैरव८, शहादते हजरत अली मु.
28	८	गु	८	२७	पूफा	२३	३२	वै	[illegible]	[illegible]	कं. २९।१०	प्रथमाष्टमी (उड़ीसा) D डॉ. राजेन्द्र प्रसाद ज. दि.
0	९	गु	३०	२४	०	०	०	०	०	०	०००	नवमी तिथि क्षय: B जैन, जुमातुल विदा मु.
29	१०	शु	२७	५७	उफा	२१	५४	प्री	२६	५९	कन्या	भ. १७।१३ से २७।५७ तक, महावीर स्वामी दीक्षा दि.B
30	११	श	२५	१०	ह	१९	५५	आ	२३	३१	तु. ३०।४९	उत्पत्ति एकादशी व्रत, वैतरणी व्रत
D1	१२	र	२२	९	चि	१७	४०	सौ	१९	५१	तुला	दिसम्बर मास १२ ता. ३१ C १६।५२ सोम प्रदोष व्रत
2	१३	चं	१९	३	स्वा	१५	१८	शो	१६	५	तुला	भ. १९।३ से २९।३० तक, ज्ये. में सूर्य २७।४८, मंगल स्वा. में C
3	१४	मं	१५	५९	वि	१२	५७	अति	१२	२१	वृ. ७।३२	मेला पुरमण्डल देविका स्नान (ज. कश्मीर), श्री बाला ज., D
4	३०	बु	१३	६	अनु	१०	४६	सु	[illegible]	[illegible]	वृश्चिक	बुध धनु में २६।१६, गुरु वक्री १७।००, देवपितृकार्याऽमावस्या

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष सं. २०५९ (५ दिसंबर से १९ दिसंबर तक)

दिसं.	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार घं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
5	१	गु	१०	३३	ज्ये	८	५३	शु	२६	२०	ध. ८।५३	चन्द्रदर्शन मु. ३०, रुद्र व्रत A में उदय २७।४२
6	२	शु	८	२७	मू	[illegible]	[illegible]	गंड	२३	४६	धनु	सव्वाल मु. मास १० प्रा., ईदुल फितर ईद (मु.)
0	३	शु	३०	५८	०	०	०	०	०	०	०००	तृतीया तिथि क्षय: B ज., श्री अमरनाथ जन्म व मोक्ष दि.
7	४	श	३०	११	उषा	३०	२७	वृ	२१	४३	म. १२।३०	भ. १८।२९ से ३०।११ तक, विनायक ४, बुध पश्चिम A
8	५	र	३०	९	श्र	३१	१	ध्रु	२०	१६	मकर	नाग५ (द. भा.), गु. तेग बहादुर बलिदान दि., श्रीराम विवाहोत्सव
9	६	चं	३०	५४	ध	-	-	व्या	१९	२५	कुं. १९।३६	पंचक १९।३६ से, चम्पा षष्ठी, श्रीराम कलेवा, स्कंद ६
10	७	मं	-	-	ध	८	२१	ह	१९	७	कुंभ	मित्र सप्तमी, नरसी मेहता जयंती C संक्रान्ति पुण्य गीता जय.
11	७	बु	८	२२	शत	१०	२१	व	१९	२०	मी. ३०।१३	भ. ८।२२ से २१।२० तक, श्री दुर्गाष्टमी, श्रद्धानन्द बलिदान दिव.
12	८	गु	१०	२५	पूभा	१२	५४	सि	१९	५६	मीन	महानन्दा नवमी C मलमास प्रा. मेला जोड़ प्रा. (पंजा.)
13	९	शु	१२	५२	उभा	१५	४८	व्य	२०	४६	मीन	व्यति. २०।४६ तक, बुध पू.षा. में २०।३६, कल्यादि ९
14	१०	श	१५	३०	रे	१८	५१	वरि	२१	४०	मे. १८।५१	भ. २८।४८ से, पंचक १८।५१ तक, पं. मदनमोहन मालवीय B
15	११	र	१८	४	अ	२१	४९	प	२२	३०	मेष	भ. १८।४ तक, मोक्षदा एका.व्रत, सूर्य धनु में ३०।४६ मु. १५ C
16	१२	चं	२०	२४	भ	२४	३२	शि	२३	८	मेष	व्यंजन द्वादशी, अखण्ड १२ D मेला जोड़ समाप्त
17	१३	मं	२२	२०	कृ	२६	५२	सि	२३	२८	वृ. ७।१०	अनंग १३ व्रत, प्रदोष व्रत, गुरु ग्रंथ साहिब व वार्षिकोत्सव D
18	१४	बु	२३	४७	रो	२८	४३	सा	२३	२५	वृष	भ. २३।४७ से, पिशाच मोचन श्राद्ध E अन्नपूर्णा ज.
19	१५	गु	२४	४२	मृ	३०	४	शु	२२	५९	मि. १७।२७	भ. १२।१८ तक, सत्यव्रत पूर्णिमा व्रत, पूर्णिमा पुण्यं, E

पौष कृष्ण पक्ष सं. २०५९ (२० दिसंबर से २ जनवरी तक)

दिसं.	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार घं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
20	१	शु	२५	६	आ	३०	५४	शु	२२	९	मिथुन	विशाखा में शुक्र प्रवेश २५।२४ A में २४।३५ तक
21	२	श	२५	०	पुन	-	-	ब्र	२०	५५	क. २५।१४	सायन मकर में सूर्य ३०।४८, उर्स मेला निजामुद्दीन (दिल्ली में)
22	३	र	२४	२९	पुन	७	१८	ऐं	१९	२२	कर्क	भ. १२।४८ से २४।२९ तक, रविपुष्य योग, महापात १४।१७A
23	४	चं	२३	३४	पु	[illegible]	[illegible]	वै	१७	२९	सिं. ३०।५३	कृष्ण चतुर्थी व्रत, बुध उ.षा. में प्रवेश ९।२२, मंगल विशा. में १०।१६
24	५	मं	२२	१९	म	३०	११	वि	१५	२०	सिंह	
25	६	बु	२०	४७	पूफा	२९	१३	प्री	१२	५७	सिंह	भ. २०।४७ से, बुध मकर में ३१।२. क्रिसमस डे बड़ा दिन, ईसा ज.
26	७	गु	१९	१	उफा	२८	२	आ	१०	२२	कं. १०।५७	भ. ७।५६ तक, गुरु गोविन्द सिंह ज. (शिरोमणि कमेटी अमृतसर)
27	८	शु	१७	२	ह	२६	४०	सौ	[illegible]	[illegible]	कन्या	आश्ले. २ में वक्री गुरु २३।५०, कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध
28	९	श	१४	५३	चि	२५	८	अति	२५	३९	तु. १३।५५	भ. २५।४५ से, रोहिणी १ में राहु अनुराधा ३ में केतु १३।९
29	१०	र	१२	३७	स्वा	२३	३१	सु	२२	३३	तुला	भ. १२।३७ तक, सूर्य पू.षा. में ९।०४, श्री पार्श्वनाथ ज. जैन
30	११	चं	१०	१७	वि	२१	५३	धृ	१९	२५	वृ. १६।१७	सफला एकादशी व्रत B महापात २२।४९ से
31	१२	मं	७	५७	अनु	२०	१७	शू	१६	१९	वृश्चिक	भ. २९।४३ से, प्रदोष व्रत, न्यू इयर इवनिंग ई.
0	१३	मं	२९	४३	०	०	०	०	०	०	०००	त्रयोदशी तिथि क्षय: B ई. सन् २००३ प्रा. मास शिवरात्रि
J1	१४	बु	२७	४०	ज्ये	१८	४९	गं	१३	१८	ध. १८।४९	भ. १६।२९ तक, शुक्र वृश्चिक में ११।१५, जन. मास १ ता. ३१B
2	३०	गु	२५	५४	मू	१७	३७	वृ	१०	२९	धनु	देवपितृकार्याऽमावस्यां वकुला अमा. (उड़ीसा). C
												C बुध वक्री २५।५०, महापात ७।१७ तक

पौष शुक्ल सं. २०५९ (३ जनवरी से १८ जनवरी तक)

जन.	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार घं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
3	१	शु	२४	३४	पू.षा	१६	४६	धु	[illegible]	[illegible]	म. २२।३८	A में अस्त १७।१८
4	२	श	२३	४६	उ.षा	१६	२५	ह	२७	५८	मकर	शुक्र अनुराधा में २२।५७, चन्द्रदर्शन मु. ३०
5	३	र	२३	३६	श्र	१६	३८	व	२६	४२	कुं. २८।५९	पंचक २८।५९ से, जिल्काद मु. मास ११ प्रा., बुध पश्चिम A
6	४	चं	२४	६	ध	१७	३१	सि	२५	५८	कुंभ	भ. ११।४६ से २४।६ तक, विनायक ४
7	५	मं	२५	१९	श	१९	४	व्य	२५	४५	कुंभ	व्यतिपात योग २५।४५ तक, मंगल वृश्चिक में २२।३७
8	६	बु	२७	९	पू.भा	२१	१४	वरि	२६	१	मी. १४।३९	मृगशिरा २ वृष में वक्री शनि १३।५९ B शाकंभरी यात्रा
9	७	गु	२९	२९	उ.भा	२३	५५	प	२६	४०	मीन	भ. २९।२९ से, धनु में वक्री बुध २३।००, गुरु गोविन्द सिंह ज.
10	८	शु	—	—	रे	२६	५४	शि	२७	३१	मे. २६।५४	भ. १८।४६ तक, पंचक १६।५४ तक, दुर्गाष्टमी, श्रीB
11	८	श	८	६	अ	२९	५८	सि	२८	२६	मेष	सूर्य उ.षा. में प्रवेश १०।५८, अष्टमी तिथि वृद्धि
12	९	र	१०	४४	भ	—	—	सा	२९	१३	मेष	उ.षा. में वक्री बुध १२।४६, मंगल अनुराधा में २६।४३
13	१०	चं	१३	७	भ	८	५०	शु	२९	४३	वृ. १५।३०	भ. २६।१० से, शाम्ब दशमी (उड़ीसा), लोहड़ी (पंजाब)
14	११	मं	१५	४	कृ	११	१९	शु	२९	४७	वृष	भ. १५।४ तक, सूर्य मकर में १७।३०, मकर संक्रांति, पुत्रदाC
15	१२	बु	१६	२३	रो	१३	१४	ब्र	२९	२१	मि. २५।५६	प्रदोष व्रत D बुध पूर्व में उदय २३।४९, पूर्णिमा व्रत
16	१३	गु	१७	२	मृ	१४	२९	ऐं	२८	२३	मिथुन	C एका. व्रत, गंगासागरयात्रा, मलमास पूर्ति, तिल संक्रा.
17	१४	शु	१६	५९	आ	१५	५	वै	२६	५५	मिथुन	भ. १६।५९ से २८।४४ तक, शुक्र ज्येष्ठा में प्र. २५।२६, D
18	१५	श	१६	१९	पु	१५	४	वि	२४	५९	क. ९।४	सत्यव्रत, पूर्णिमा पुण्य, माघ स्नानारंभ, काशीघाट दशाश्वमेध स्नानारंभ

माघ कृष्ण पक्ष सं. २०५९ (१९ जनवरी से १ फरवरी तक)

जन.	तिथि	वार	घटी	मिनट	नक्षत्र	घटी	मिनट	योग	घटी	मिनट	चन्द्र संचार घं.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
19	१	र	१५	७	पु	१४	३२	प्री	२२	४०	कर्क	
20	२	चं	१३	३०	आ	१३	३५	आ	२०	३	सिं. १३।३५	भ. २४।३५ से, सायन कुंभ में सूर्य १७।२८, हर्षल धनि. ४ में १९।०१
21	३	मं	११	३५	म	१२	२१	सौ	१७	१४	सिंह	भ. ११।३५ तक, कृष्ण चतुर्थी व्रत, संकट चौथ, अंगारक ४
22	४	बु	९	३०	पू.फा	१०	५७	शो	१४	१८	कं. १६।३५	मेला मस्तु आणा (पंजाब), मार्गी बुध २९।४३
23	५	गु	७	२०	उ.फा	९	२८	अति	११	१९	कन्या	भ. २९।११ से, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस जयंती
0	६	गु	२९	११	०	०	०	०	०	०	०००	षष्ठी तिथि क्षय A १५।३१. श्रवण ३ में नेपच्यून २९।१६
24	७	शु	२७	५	ह	[illegible]	[illegible]	सु	[illegible]	[illegible]	तु. १९।१८	भ. १६।४ तक, सूर्य श्रवण में १३।२०, स्वामी विवेकानंद ज
25	८	श	२५	६	स्वा	२९	१९	धृ	२६	३७	तुला	कालाष्टमी, अष्टका श्राद्ध, श्री रामानन्दाचार्य जयंती
26	९	र	२३	१५	वि	२८	१०	गं	२३	५३	वृ. २२।२७	भारतीय गणतंत्र दिव. ५४वां वर्ष, महापात २५।१० से ३०।४२ तक
27	१०	चं	२१	३२	अ	२७	१०	वृ	२१	१७	वृश्चिक	भ. १०।२२ से २१।३२ तक, आश्लेषा १ में वक्री गुरु A
28	११	मं	१९	५९	ज्ये	२६	२०	ध्रु	१८	४९	ध. २६।२०	षट्तिला एकादशी व्रत, लाला लाजपतराय जयंती
29	१२	बु	१८	३९	मू	२५	४२	व्या	१६	३१	धनु	वंजुली महाद्वादशी व्रत, श्री शीतलनाथ जयंती जैन
30	१३	गु	१७	३२	पू.षा	२५	२०	ह	१४	२३	धनु	भ. १७।३२ से २९।६ तक, शुक्र धनु में ८।५, प्रदोष व्रत, B
31	१४	शु	१६	४५	उ.षा	२५	१७	व	१२	३०	म. ७।१७	रटन्ती कालिका पूजन B महात्मा गांधी पुण्य
1F	३०	श	१६	२०	श्र	२५	३८	सि	१०	५४	मकर	देवपितृकार्याऽमावस्या, मौनी अमावस्या, द्वापरयुगादि, C
												C फर. मास २ ता. २८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

माघ शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (२ फरवरी से १६ फरवरी तक)

फ़र.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
2	१	र	१६	२३	ध	२६	२९	व्य	९	३९	कुं. १३।००	पंचक १४।०० से, व्यति.९।३९ तक, मंगल ज्ये. में A
3	२	चं	१६	५९	श	२७	५१	वरि	८	४८	कुंभ	चन्द्रदर्शन मु. १५ A१९।१९, श्री बल्लभ ज.
4	३	मं	१८	१०	पू.भा	२९	४७	प	८	२४	मी. २३।१५	भ. ३०।५८ से, जिल्हेज मु. मास १२ प्रा., गौरी तृतीया
5	४	बु	१९	५४	उ.भा	—	—	शि	८	२५	मीन	भ. १९।५४ तक, बुध उ.पा. में ८।२८, वरद ४, तिल चौथ,B
6	५	गु	२२	९	उ.भा	८	१५	सि	८	५२	मीन	सूर्य धनि. में १६।२४, बसंत पंचमी, सरस्वती पूजन, तक्षक पूजा
7	६	शु	२४	४३	रे	११	६	सा	९	३७	मे. ११।६	पंचक ११।६ तक B गणेश पूजा (बंगाल)
8	७	श	२७	२५	अ	१४	१२	शु	१०	३३	मेष	भ. २७।२५ से, बुध मकर में ८।१७, रथ सप्तमी, श्रीमाधाचार्य C
9	८	र	२९	५६	भ	१७	१५	शु	११	३०	वृ. २३।५९	भ. १६।४३ तक, भीष्माष्टमी, दुर्गाष्टमी, महापात ९।५० तक
10	९	चं	—	—	कृ	२०	३	ब्र	१२	१७	वृष	शुक्र पू.षा. में २७।५०, श्री महानन्दा ९ Cजय., महापात २८।३२ से
11	९	मं	८	३	रो	२२	१९	ऐं	१२	४२	वृष	D ईदुल जुहा बकरीद मु.
12	१०	बु	९	३१	मृ	२३	५३	वै	१२	३७	मि. ११।१२	भ. २१।५८ से, सूर्य कुम्भ में ३०।२७, मु. ४५, हज्ज
13	११	गु	१०	१३	आ	२४	४१	वि	११	५६	मिथुन	भ. १०।१३ तक, जया एकादशी व्रत, संक्रान्ति पुण्य,D
14	१२	शु	१०	५	पुन	२४	४१	प्री	१०	३७	क. १८।१५	प्रदोष व्रत, भीष्म द्वादशी, कल्पादि, भीष्म तर्पण श्राद्धादि
15	१३	श	९	१०	पु	२३	५८	आ	[illegible]	[illegible]	कर्क	बुध श्रवण में २८।३२, रामचरण स्नेही जयंती
16	१४	र	७	३३	श्ले.	२२	३९	शो	२७	१६	सिं. २२।३९	भ. ७।३३ से १८।३२ तक, सत्यव्रत पूर्णिमा, पूर्णिमा पुण्यं E
0	१५	र	२९	२३	०	०	०	०	०	०	०००	पूर्णिमा तिथि क्षय: Eमाघ स्नान पूर्ति, श्री रविदास ज.

फाल्गुन कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (१७ फरवरी से ३ मार्च तक)

फ़र.	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
17	१	चं	२६	४८	म	२०	५४	अति	२४	०	सिंह	E व्रत, बुध कुंभ में १४।२०, राहु कृति ४ व केतु अनु.२ में १०।३९
18	२	मं	२३	५४	पू.फा	१८	५१	सु	२०	३१	कं. २४।१९	B में गुरु १५।२०, शनि मार्गी १३।००
19	३	बु	२१	५	उ.फा	१६	४१	धृ	१६	५७	कन्या	भ. १०।३२ से २१।५ तक, सूर्य शतभिषा में २०।५८, A
20	४	गु	१८	१५	ह	१४	३४	शू	१३	२४	तु. २५।३३	कृष्ण चतुर्थी व्रत A सायन मीन में सूर्य ७।३५
21	५	शु	१५	३६	चि	१२	३६	गं	[illegible]	[illegible]	तुला	महापात १६।४६ से २१।०० तक
22	६	श	१३	१३	स्वा	१०	५४	धु	२७	५१	वृ. २७।५०	भ. १३।१३ से २४।१९ तक, शुक्र उ.षा. में १६।५६, पुष्प ४B
23	७	र	११	११	वि	९	३२	व्या	२५	१२	वृश्चिक	मंगल धनु में १३।४०, कालाष्टमी
24	८	चं	९	३०	अ	८	३१	हर्ष	२२	५१	वृश्चिक	अष्टका श्राद्ध, जानकी जयंती Cरामनाथ जय.
25	९	मं	८	१२	ज्ये	७	५३	व	२०	४८	ध. ७।५३	भ. १९।४२ से, बुध धनिष्ठा में ८।३४, शुक्र मकर में १३।२६,C
26	१०	बु	७	१६	मू	७	३६	सि	१९	२	धनु	भ. ७।१६ तक, विजया एकादशी व्रत स्मार्त, D
0	११	बु	३०	४२	०	०	०	०	०	०	०००	एकादशी तिथि क्षय: Dस्वामी दयानंद सरस्वती ज.
27	१२	गु	३०	२९	पू.षा	७	४०	व्य	१७	३२	म. १३।४४	व्यतिपात योग १७।३२ तक, विजया एकादशी व्रत वैष्णव
28	१३	शु	३०	३८	उ.षा	८	५	वरि	१६	२०	मकर	भ. ३०।३८ से, प्रदोष व्रत
M1	१४	श	—	—	श्र	८	५२	प	१५	२५	कुं. २१।२३	भ. १८।५१ तक, पंचक २१।२३ से, श्री महाशिवरात्रीE
2	१४	र	७	९	ध	१०	१	शि	१४	४८	कुंभ	पितृकार्यामावस्या, शिव खप्पर पूजा, चतुर्दशी तिथि वृद्धि
3	३०	चं.	८	७	श	११	३४	सि	१४	३१	कुंभ	सोमवती ३०, देव कार्यामावस्या

फाल्गुन शुक्ल पक्ष सं. २०५१ (४ मार्च से १८ मार्च तक)

मार्च	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
4	१	मं	९	३०	पू.भा	१३	३३	सा	१४	३४	मी. ७।१	सूर्य पू.भा. में २७।१३, चंद्रदर्शन मु. ४५ Bरामकृष्ण परमहंस जय.
5	२	बु	११	२१	उ.भा	१५	५८	शुभ	१४	५८	मीन	शत. में बुध १५।४०, शुक्र श्रवण में २५।३३, फुलरिया दूज,A
6	३	गु	१३	३६	रे	१८	४५	शु	१५	३९	मे. १८।४५	भ. २६।५१ से, पंचक १८।४५ तक, बुध पूर्व में अस्त २९।३२C
7	४	शु	१६	९	अ	२१	४९	ब्र	१६	३४	मेष	भ. १६।९ तक, विनायक ४ व्रत
8	५	श	१८	५२	भ	२४	५८	ऐं	१७	३६	मेष	याज्ञवल्क जयंती A मोहर्रम मु. मा. १ हि. सन् १४२४ प्रा., B
9	६	र	२१	३०	कृ	२८	१	वै	१८	३६	वृ. ७।४५	गौरूपिणी षष्ठी (बंगाल) Cमहापात १३।४३ से १८।१२ तक
10	७	चं	२३	४९	रो	—	—	वि	१९	२२	वृष	भ. २३।४९ से, अष्टान्हिक व्रत प्रारम्भ (जैन)
11	८	मं	२५	३५	रो	६	४२	प्री	१९	४५	मि. १९।५०	भ. १२।४७ तक, होलाष्टक प्रा., दुर्गा८, अन्नपूर्णा८, दादूदयाल ज.
12	९	बु	२६	३६	मृ	८	४८	आ	१९	३६	मिथुन	बुध पू.भा. में ३०।५७ D आमलकी एका. व्रत, ताजिया
13	१०	गु	२६	४५	आ	१०	८	सौ	१८	४९	क. २८।३६	मेला खाटू श्री श्याम जी (राज.) ३ दिन का
14	११	शु	२६	२	पुन	१०	३८	शो	१७	२१	कर्क	भ. १४।३० से २६।२ तक, सूर्य मीन में २७।१९ मु. ३०, D
15	१२	श	२४	२८	पु	१०	१७	अति	१५	१२	कर्क	मेला खाटू श्री श्यामजी (राज.) पूर्ति, गोविन्द द्वादशी
16	१३	र	२२	१२	श्ले	९	९	सु	१२	२६	सिं. ९।९	मंग. पू.षा. में १२।४, प्रदोषव्रत E पूर्णिमा व्रत, होलाष्टक समा.
17	१४	चं	१९	२१	म	[illegible]	[illegible]	धृ	[illegible]	[illegible]	सिंह	भ. १९।२१ से २९।४६ तक, शुक्र धनि. में ७।२०, होलिकादहन,E
18	१५	मं	१६	६	उ.फा	२६	२८	गं	२५	३२	कं. १०।२६	सूर्य उ. भा. में ११।४०, बुध मीन में १४।४६, सत्यव्रत,F
												F धुलेंडी, फूलडोल, पूर्णिमा पुण्य, अष्टान्हिक व्रत पूर्ति जैन

चैत्र कृष्ण पक्ष सं. २०५१ (१९ मार्च से १ अप्रैल तक)

मार्च	तिथि	वार	घंटा	मिनट	नक्षत्र	घंटा	मिनट	योग	घंटा	मिनट	चन्द्र संचार स्टै.टा.	भद्रा एवं ग्रहों का राशि नक्षत्र प्र.
19	१	बु	१२	३८	ह	२३	४४	वृ	२१	२९	कन्या	बसन्त प्रतिपदा, महापात १०।२४ से १५।२५ तक
20	२	गु	९	८	चि	२१	३	धु	१७	१७	तु. १०।२२	भ. १९।२५ से २९।४५ तक, बुध उ.भा. में ८।१, कलमदान A
0	३	गु	२९	४५	०	०	०	०	०	०	०००	तृतीया तिथि क्षय: Aपूजा देशाचारे
21	४	शु	२६	३९	स्वा	१८	३५	व्या	१३	३५	तुला	कृष्ण चतुर्थी व्रत, आशा चौथ, सायन मेष में सूर्य ६।३५, B
22	५	श	२३	५४	वि	१६	२७	हर्ष	९	५९	वृ. १०।५७	शुक्र कुम्भ में २१।२६, रंग पंचमी, श्री जयंती
23	६	र	२१	४२	अनु	१४	४८	व	[illegible]	[illegible]	वृश्चिक	भ. २१।४२ से, एकनाथ षष्ठी, वक्री प्लूटो १०।५९
24	७	चं	२०	१	ज्ये	१३	४०	व्य	२५	३१	ध. १३।४०	भ. ८।४७ तक, व्यतिपात २५।३१ तक, शीतल पूजा
25	८	मं	१८	५३	मू	१३	५	वरि	२३	३५	धनु	ऋषभ देव जय., मेला केसरिया मेवाड़ व केला देवी करौली
26	९	बु	१८	२०	पू.षा	१३	४	परि	२२	६	म. १९।४	भ. ३०।१६ से, बुध रेवती में २३।५२
27	१०	गु	१८	१९	उ.षा	१३	३४	शि	२१	२	मकर	भ. १८।१९ तक, दशमाता व्रत Bहर्षल शत. १ में ९।३३
28	११	शु	१८	४७	श्र	१४	३४	सि	२०	२०	कुं. २७।१४	पंचक २७।१४ से, शुक्र शत. में ११।५, पापमोचनी एका. व्रत
29	१२	श	१९	४३	ध	१६	१	सा	२०	०	कुम्भ	
30	१३	र	२१	३	शत	१७	५२	शुभ	१९	५९	कुम्भ	भ. २१।३ से, प्रदोष व्रत
31	१४	चं	२२	४७	पू.भा	२०	५	शु	२०	१५	मी. १३।३०	भ. ९।५२ तक, सूर्य रेवती में २२।३१, मास शिवरात्रि व्रत
A1	३०	मं	२४	५०	उ.भा	२२	३९	ब्र	२०	४७	मीन	देवपितृकार्योमावस्या, अप्रै. मा.४ ता. ३०, महापात २२।५०C
												C से २७।२० तक, वर्ष समाप्ति चांद्र संवत् २०५१ समाप्ति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भौगोलिक परिचय

अक्षांश-रेखांश-रविक्रान्ति

पृथ्वी गोल है। इस पृथ्वी रूपी गोले को उत्तर-दक्षिण बराबर विभाजित करने वाली रेखा भूमध्य रेखा है, जिसका अक्षांश ० शून्य है। इसके उत्तर भाग को उत्तर गोल तथा दक्षिण भाग को दक्षिण गोल कहते हैं। पृथ्वी के उत्तर भाग में ९० और दक्षिण भाग में ९० अक्षांश हैं। उत्तर-दक्षिण अंशों को अक्षांश कहते हैं। जैसे दिल्ली २८।३८ उत्तर अक्षांश पर स्थित है। अर्थात् दिल्ली भूमध्य रेखा से उत्तर गोल में २८ व २९ अक्षांश के बीच में स्थित है, प्रत्येक अक्षांश को ६० भागों में विभाजित किया गया है, उसमें दिल्ली २९वें अक्षांश के ३८वें भाग पर है। एक अक्षांश की दूरी लगभग ७५ मील होती है, इसलिए एक अक्षांश को भी आगे ६० छोटे भागों में विभाजित किया जाता है। पृथ्वी पर किसी स्थान की भौगोलिक स्थिति जानने के लिए उस स्थान के अक्षांश व रेखांश बताकर जानकारी दी जाती है।

किसी भी गोले को या अंडाकार पदार्थ को लम्बाई में अर्थात् उत्तरी ध्रुव व दक्षिणी ध्रुव के मध्य स्थान में काटे तो उसका मध्य भाग एक ही निश्चित स्थान पर आयेगा। इसलिए भूमध्य रेखा एक ही स्थान पर हो सकती है। भूमध्य रेखा ० शून्य अक्षांश पर है, इसके दक्षिण ० से ९० अंश तक दक्षिण अक्षांश और उत्तर में उत्तरी ध्रुव तक ० से ९० अंश तक उत्तर अक्षांश है। आपने बचपन में लट्टू घुमाया होगा या घूमते हुए देखा होगा। लट्टू अपनी कीली पर तो घूमता ही है, साथ ही वह एक गोलाकार अंडाकार परिधि में भी चक्कर लगाता है। ऐसे करते समय वह अपने केन्द्रस्थान की तरफ थोड़ा झुका हुआ रहता है। पृथ्वी भी सूर्य के चारों ओर इसी प्रकार घूमती है और उसके इस बदले झुकाव के कारण सूर्य उत्तरायण तथा दक्षिणायण होता रहता है। सूर्य के साथ पृथ्वी के इस झुकाव का जो कोण बनता है वह २३.५ अंश है। समझाने के लिए लट्टू का उदाहरण दिया है, परन्तु लट्टू तो पृथ्वी के धरातल पर घूमता है और पृथ्वी आकाश में अधर में घूमती है।

२१ मार्च को सायन सूर्य मेष राशि में अर्थात् पहली राशि में प्रवेश करता है। उस समय पृथ्वी का भूमध्य रेखा वाला भाग सूर्य के ठीक सामने होता है। रवि क्रान्ति शून्य होती है। दिन-रात उस समय पृथ्वी के मध्य भाग में बराबर होते हैं। उसके बाद सूर्य उत्तर गोल में ऊपर को चढ़ता जाता है और सूर्य की उत्तर क्रान्ति प्रतिदिन बढ़ती जाती है। २१ जून को सूर्य कर्क रेखा पर पहुंच जाता है। उस दिन सूर्य कर्क राशि में प्रवेश करता है और उत्तर रवि क्रान्ति अपने चरम अंश २३ पर पहुंच जाती है। आकाशीय क्रान्ति पथ के साथ पृथ्वी का क्रान्ति पथ २३.५° का कोण बनाता है। उस समय दिन सबसे अधिक और रात न्यूनतम होती है। दुनिया का कोई नक्शा उठाकर देखो, भूमध्य रेखा ० अक्षांश भारत के दक्षिण में काफी दूर समुद्र पर होकर गुजरती है। कर्क रेखा (Tropic of Cancer) भारत में अहमदाबाद, भोपाल, रांची से कुछ उत्तर में होकर निकलती है। सूर्य जब कर्क रेखा पर होता है उस समय भारत के मध्य भाग उसके सीधे प्रभाव में होने से अधिकतम गर्मी की ऋतु का अनुभव करते हैं।

२१ जून के लगभग सूर्य उत्तरायण से दक्षिणायन होता है। २१ सितम्बर तक सूर्य भूमध्य रेखा पर ० अक्षांश पर पहुंच जाता है, तब उसकी उत्तर क्रान्ति भी कम होते-होते शून्य हो जाती है। इसके बाद भी सूर्य रहता तो दक्षिणायण ही है यानि दक्षिण की ओर ही जाने वाला, परन्तु २१ सितम्बर तक तो पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में था. इसके बाद वह दक्षिण गोलार्ध में प्रवेश करता है। इस समय सूर्य भारत से काफी दूरी पर पहुंच जाता है। अत: भारत में शरद् ऋतु आरम्भ हो जाती है। सूर्य निरन्तर दक्षिणायण रहते हुए दक्षिण गोल में अग्रसर होता रहता है और उसकी दक्षिण क्रान्ति २१ दिसम्बर तक चरम पर पहुंच जाती है। २१ सितम्बर को दिन-रात बराबर हो जाते हैं। २१-२२ दिसम्बर को दिन सबसे छोटा और रात सबसे बड़ी होती है। यहाँ से दिन बढ़ना शुरू होता है और इसी कारण २५ दिसम्बर को बड़े दिन का उत्सव मनाया जाता है। २१ दिसम्बर के लगभग सायन सूर्य मकर राशि में प्रवेश करता है और अपनी दक्षिण यात्रा के चरम बिन्दु मकर रेखा पर पहुंच जाता है। मानचित्र में मकर रेखा (Tropic of Capricorn) हिन्द महासागर में भारत से बहुत दूर दक्षिण में है। यह रेखा दक्षिण अमरीका के मध्य भाग, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के मध्य से होकर गुजरती है। सूर्य जब मकर रेखा पर होता है उस समय इन देशों में ग्रीष्म ऋतु होती है। भारत से दूर होने के कारण यहां मौसम ठंडा होता है। २१ दिसम्बर के बाद सूर्य उत्तर की ओर आने लगता है, वैसे सूर्य तो आकाश में स्थिर है, परन्तु पृथ्वी की गति में क्रान्ति में परिवर्तन के कारण वह इस प्रकार स्थान परिवर्तन करता प्रतीत होता है और बोलचाल तथा लिखने की भाषा में यही कहा जाता है कि सूर्य चल रहा है।

२१ दिसम्बर के लगभग सूर्य उत्तरायण हो जाता है, परन्तु २१ मार्च तक वह दक्षिण गोलार्ध में ही रहता है। २१ मार्च को सूर्य भूमध्य रेखा पर आ जाता है, २१ मार्च से २१ सितम्बर तक सूर्य उत्तर गोल में रहता है और २१ सितम्बर से २१ मार्च तक दक्षिण गोल में। २१ दिसम्बर से २१ जून तक सूर्य उत्तरायण रहता है और २१ जून से २१ दिसम्बर तक दक्षिणायण। सूर्य के इस परिवर्तन को आप अपने यहाँ के पूरब-पश्चिम क्षितिज में सूर्योदय व सूर्यास्त को देखकर अथवा ऊपर के आकाश में सूर्य के भ्रमण पर ध्यान देकर या अपने घर में आने वाली धूप तथा सूर्य की किरणों के बदलते कोणों को देख कर भी बड़ी आसानी से ज्ञात कर सकते हैं।

सूर्य के उपरोक्त उत्तरायण-दक्षिणायण होने से प्रत्येक स्थान पर सूर्योदय तथा दिन मान आदि में प्रतिदिन जो अन्तर आता है उसे चरान्तर द्वारा निकाला जाता है। इसमें सूर्य की उत्तर-दक्षिण क्रान्ति और प्रत्येक स्थान के उत्तर-दक्षिण अक्षांश के अनुसार भिन्न-भिन्न परिवर्तन होते हैं। पंचांग में दी हुई चरान्तर सारिणी उत्तर अक्षांश ८ से ३६ तक के लिए हैं और भारत के किसी भी भाग के लिए प्रयोग में लाई जा सकती है। चरान्तर सारिणी पृ. ९८ तथा रवि क्रान्ति सारिणी इस पंचांग के पृ. ९७ पर दी हुई है।

उत्तरी ध्रुव से दक्षिणी ध्रुव तक १८० अक्षांश हैं, जिसमें ९० उत्तर अक्षांश हैं और ९० दक्षिण अक्षांश हैं, इनकी गिनती भूमध्य रेखा से आरम्भ होती है। भूमध्य रेखा ० अक्षांश पर है, जिस प्रकार पृथ्वी को उत्तर-दक्षिण १८० अंशों में विभाजित किया गया है उसी प्रकार इसको पूरब-पश्चिम ३६० अंशों में विभाजित किया गया है, इनको पूर्व रेखांश और पश्चिम रेखांश कहते हैं। उत्तर-दक्षिण विभाजित करने पर तो भूमध्य रेखा जहां है वहीं हो सकती है, परन्तु पूर्व-पश्चिम विभाजन में किसी भी रेखा को ० माना जा सकता है। आजकल इसे लन्दन के पास ग्रीनविच पर जो रेखा है उसे ० रेखांश मानकर इसके पूर्व के रेखांशों को पूर्व रेखांश तथा पश्चिम के रेखाँशों को पश्चिम रेखांश माना जाता है। ग्रीनविच में ग्रहों का निरीक्षण करने के लिए अत्याधुनिक वेधशाला है, इस कारण इसे यह महत्व दिया गया है। कभी यह सम्मान भारत की उज्जैन नगरी को प्राप्त था। पृथ्वी की परिधि भूमध्य रेखा पर २९४०० मील है। अतएव भूमध्य रेखा पर एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील होती है, पृथ्वी की २९४०० मील की दूरी अर्थात् ३६० अंश २४ घंटे में सूर्य के सामने से गुजर जाते हैं। एक रेखांश पर यह अन्तर ४ मिनट का होता है। सूर्य पूर्व दिशा में उदय होता है. मान लो कलकत्ता नगर में सूर्योदय ५-३० पर हुआ, कलकत्ता ८८-२३ पूर्व रेखांश पर है तो ८९-२३ पर स्थित नगर में सूर्योदय ४ मिनट पहले होगा और इस प्रकार प्रति रेखांश ४ मिनट का अन्तर कलकत्ता के समय से आता जाएगा।

कुछ समय पहले तक प्रत्येक नगर अपना-अपना अलग समय निर्धारण अपनी धूपघड़ियों या अन्य प्रकार की रेत घड़ियों, जल घड़ियों की सहायता से मध्याह्न और सूर्योदय के आधार पर किया करते थे। सन् १९०६ से पूरे भारत के लिए एक ही स्टैण्डर्ड टाईम रखने की व्यवस्था अंग्रेजी राज में रेलवे तथा डाक विभाग के लिए की गई। यह समय ग्रीनविच समय से ५.३० घंटे आगे था और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित था। समस्त भारत में वह स्टैण्डर्ड समय १ सितम्बर १९१७ से लागू कर दिया गया। परन्तु बंगाल प्रान्त और आसपास के कुछ भागों में स्थानीय समय पूर्ववत् चलता रहा। इन प्रान्तों ने सितम्बर १९४१ में स्टैण्डर्ड टाईम को व्यवहार में लाना आरम्भ किया। द्वितीय विश्व युद्ध के चलते १ सितम्बर १९४२ से १५ अक्टूबर १९४५ तक पूरे भारत वर्ष में जिसमें आज के पाकिस्तान तथा बंगला देश भी शामिल थे, समय एक घंटा बढ़ा दिया

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

गया था, अर्थात् ग्रीनविच समय से ६ घं. ३० मिनट आगे। अब समस्त भारत में एक ही स्टैण्डर्ड समय चलता है जो ग्रीनविच समय से ५-३० घंटा आगे है और ८२.३० पूर्व रेखांश पर आधारित है।

यदि प्रत्येक नगर अपना अलग-अलग स्थानीय समय रखे तो कामकाज में काफी गड़बड़ी पैदा हो सकती है। इसलिए अपने काम को सुचारु रूप से सम्पादन करने के लिए प्रत्येक देश अपने लिए एक स्टैण्डर्ड समय निर्धारित करता है और उसकी सीमा में सर्वत्र वही समय काम में लाया जाता है। यह समय निर्धारण ग्रीनविच से उसकी दूरी पर निर्भर करता है। वह देश ग्रीनविच से जितने घण्टे की दूरी पर होता है उसका समय उतने ही अन्तर पर रखा जाता है। यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर होता है। अतएव १५ रेखांश पर १ घण्टे का अन्तर हुआ, जो देश ग्रीनविच से लगभग १५ रेखांश की दूरी पर है, उनका स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टे के अन्तर पर निर्धारित है। हालैण्ड, फ्रांस, जर्मनी, इटली, बेलजियम, हंगरी, युगोस्लाविया, डेन्मार्क, स्विटजरलैण्ड, स्पेन, पोर्तगाल, नार्वे, स्वीडन आदि देशों का स्टैण्डर्ड समय ग्रीनविच से एक घण्टा आगे है। मिश्र, तुर्की, यूनान, रोमानिया, फिनलैण्ड, सीरिया, इजराइल, सूडान, बल्गेरिया आदि देशों का समय दो घण्टे आगे है। यह देश २ घंटे के समय क्षेत्र में हैं। ईराक, कुवैत, लेनिनग्राद, यमन, इथोपिया, मास्को, सऊदी अरब, ईरान आदि देश ३ घंटे के क्षेत्र में हैं। अफगानिस्तान ४ घंटे ३० मिनट तथा पाकिस्तान ५ घंटे के समय क्षेत्र में आता है। बंगला देश का समय ग्रीनविच से ६ घंटे तथा वर्मा ६ घंटे ३० मिनट आगे है। थाईलैण्ड, इन्डोनेशिया, वियतनाम, कम्बोडिया ७ घंटे के क्षेत्र में हैं। चीन, होंगकांग, फिलीपीन्स ८ घंटे तथा कोरिया व जापान ९ घंटे के अन्तर पर हैं। आस्ट्रेलिया १० घंटे और न्यूजीलैण्ड १२ घंटे के अन्तर पर हैं। जिस प्रकार ग्रीनविच से पूर्व के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार ग्रीनविच समय से आगे रहता है उसी प्रकार ग्रीनविच से पश्चिम के देशों का समय उनके रेखांशों के अनुसार कम रहता है। समस्त इंग्लैण्ड तथा स्काटलैण्ड में ग्रीनविच समय माना जाता है। ग्रीनविच से न्यूयार्क, वाशिंगटन, टोरन्टो, ओटावा, वोस्टन आदि नगर ५ घंटे कम, शिकागो, मैक्सिको ७ घंटे कम के समय क्षेत्र में पड़ते हैं। लासएंजिल्स का समय ग्रीनविच से ८ घंटे कम है। किसी भी एटलस में दुनिया का नक्शा देखकर आप उपरोक्त जानकारी की पुष्टि कर सकते हैं।

इस प्रकार देशों के स्टैण्डर्ड समय निर्धारण में किन-किन बातों का ध्यान रखा जाता है। यह आपको ज्ञात हुआ। भारत वर्ष की सीमायें लगभग ६८ पूर्व रेखांश से ९३ पूर्व रेखांश के मध्य में आती हैं। पश्चिम की ओर के पड़ोसी देश पाकिस्तान को ५ घंटे के समय क्षेत्र में रखा गया है और पूर्व की ओर के पड़ोसी बंगलादेश को ६ घंटे का समय क्षेत्र ग्रीनविच से निर्धारित हुआ है। अतएव बीच के देश भारत के लिए ५ घंटा ३० मिनट का समय क्षेत्र ही युक्ति संगत था। यह तो आपको बताया जा चुका है कि एक रेखांश पर ४ मिनट का अन्तर आता है तो ५ घंटे ३० मिनट का अन्तर ८२.३० रेखांश पर आता है (८२.३०×४=३३० मि.=५ घंटा ३० मिनट)। भारत में ८२.३० अक्षांश इलाहाबाद, अयोध्या के आसपास उत्तर से दक्षिण काकीनाडा, मछलीपट्टम आदि नगरों के समीप होकर स्थित है। सारे भारत में एक जैसा स्टैण्डर्ड समय रहता है, परन्तु ज्योतिष गणित के लिए जब किसी स्थान का स्थानीय सूर्योदय निकालना होता है या लग्नादि का गणित करना होता है तब हमें उस स्थान का स्थानीय समय निकालना पड़ता है। जिस स्थान का स्थानीय समय निकालना हो उसके रेखांश तथा अक्षांश अक्षांशादि सारिणी से ज्ञात कर लिये जाते हैं और तत्पश्चात् उनकी सहायता से स्थानीय समय निकाल लिया जाता है।

जैसे दिल्ली का पूर्व रेखांश ७७।१३ है। (कुछ आचार्य ७७।१२ कुछ ७७।१४ भी मानते हैं)। यह रेखांश ८२.३० से ५।१७ कम है। प्रति रेखांश ४ मिनट के हिसाब से ५-१७×४=२१.०८ अर्थात् २१ मिनट ८ सैकिण्ड। दिल्ली का स्थानीय समय स्टैण्डर्ड समय से २१ मिनट ८ सैकिण्ड कम होगा। यदि किसी स्थान का रेखांश ८२.३० से अधिक है तो वहां का स्थानीय समय अधिक होगा। जैसे पटना का पूर्व रेखांश ८५.१३ है, जो ८२.३० से २.४३ अधिक है तो वहां का स्थानीय समय (२.४३×४=१०.५२)= १० मिनट ५२ सैकिण्ड स्टैण्डर्ड समय से अधिक होगा।

अक्षांशादि सारिणी इस पंचांग में पृष्ठ ९९ पर दी गई है। इसमें मुख्य-२ नगरों के अक्षांश-रेखांश स्टैण्डर्ड समय से उनका अन्तर तथा दिल्ली के समय से देशान्तर समय दिया हुआ है। यदि किसी छोटे नगर का नाम आपको इसमें न मिले तो उसके पास के बड़े नगर के विवरण की सहायता से आप इष्ट नगर या स्थान के अक्षांश-रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। मान लो आपको करौली के बारे में उपरोक्त विवरण प्राप्त करना है। अक्षांशादि सारिणी में यह नाम नहीं है। मानचित्र में यह धौलपुर तथा ग्वालियर के बीच में कुछ पश्चिम की ओर है अथवा आपको भिण्ड के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है। यह स्थान मानचित्र में धौलपुर, ग्वालियर के मध्य कुछ पूर्व की ओर है। स्कूल में पढ़ने वाले छात्रों के पास एटलस होती है। आप चाहें तो एक एटलस अपने पास रख सकते हैं। मानचित्र में उसका माप दिया रहता है कि एक इंच या एक सैंटीमीटर में कितने मील या किलोमीटर को लिया गया है। उसकी सहायता से आप उपरोक्त स्थानों की पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण दूरी नापकर उनके अक्षांश-रेखांश का पता कर सकते हैं। एक रेखांश की दूरी लगभग ७० मील या ११० किलोमीटर होती है। करौली तथा भिण्ड का अक्षांश-रेखांश जो उपरोक्त विधि से ज्ञात हुआ, वह इस प्रकार है—

स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर	स्थान	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	स्टै. अन्तर	देशान्तर
धौलपुर	२६-४२	७७।५३	-१८-२८	+२-४०	करौली	२६-३८	७७।०५	-२१-४०	+०-३२
ग्वालियर	२६-१४	७८-१०	-१७-२०	+३-४८	भिण्ड	२६-४०	७८-५०	-१८-४०	+२-२८

लग्न परिचय

पृथ्वी २४ घण्टे में अपनी धुरी पर (अक्ष पर) एक बार पूरी घूम जाती है। यह समय ठीक-ठीक तो २३ घंटे ५६ मिनट १५ सैकिण्ड है। इस २४ घंटे के समय में बारहों राशियां इसके सामने से गुजर जाती हैं। राशियां आकाश में स्थित तारागणों के समूह से बनती हैं। पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती हुई सूर्य की एक प्रदक्षिणा ३६५ दिन ६ घंटे ९ सै. में पूरी करती है। पृथ्वी वासियों को सूर्य आकाश स्थित जिस राशि में दिखाई देता है, हम लोग यही कहते हैं कि सूर्य इस राशि में है और इतने अंश पर है। निरयन सूर्य प्रायः १३ अप्रैल को मेष राशि के ० शून्य अंश पर होता है। प्रतिदिन लगभग एक अंश आगे बढ़ता रहता है। सूर्य के एक राशि से दूसरी राशि में जाने को संक्रांति कहते हैं। सूर्योदय के समय सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है पूर्व क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंश पर उदित होती है। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न होती है।

२४ मई को दिल्ली में सूर्योदय भारतीय स्टैण्डर्ड समय के अनुसार ५-३० बजे होता है। पंचांग में दिए गए ग्रहस्पष्ट भी ५-३० प्रातः के ही हैं। सूर्य उस दिन सूर्योदय के समय वृष राशि के ९ अंश पर है तो सूर्योदय के समय दिल्ली में ५-३० प्रातः पर लग्न भी वृष के ९ अंश पर ही होगी। सूर्य आकाश में ऊपर चढ़ता रहता है और पूर्वी क्षितिज पर राशियां भी आगे चलती रहती हैं। स्थूल गणित से यदि प्रत्येक लग्न को दो घंटे का मानें तो ७-३० बजे मिथुन के ९ अंश, ९-३० बजे कर्क के ९ अंश, ११-३० बजे सिंह के ९ अंश, इस प्रकार लग्न क्षितिज पर आगे बढ़ती रहती है। इस प्रकार मध्याह्न के समय लग्न सिंह होती है और सूर्य दशम भाव में अर्थात् लग्न से दसवीं राशि में होता है। दूसरे शब्दों में मध्याह्न के समय लग्न सूर्य से चौथी राशि, सूर्यास्त के समय सातवीं राशि और मध्यरात्रि के समय दसवीं होती है। यानि मध्यरात्रि के समय की जन्म कुण्डली में सूर्य लग्न से चौथे भाव में आयेगा। मध्याह्न को दशम भाव में तथा सूर्यास्त के समय सप्तम भाव में आएगा। यदि जन्म समय ज्ञात नहीं है तो कुण्डली में सूर्य की स्थिति से जन्म का लगभग समय जाना जा सकता है।

२४ घंटे में १२ लग्नें होती हैं तो प्रत्येक लग्न २ घंटे की होनी चाहिए, पर ऐसा नहीं है। पृथ्वी सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है, परन्तु उसका यह पथ पूरा गोलाकार नहीं है, अण्डाकार है। इसीलिए कुछ राशियां दो घंटे में निकल जाती हैं, कुछ को २ घंटे से ज्यादा और कुछ को दो घंटे से कम समय लगता है। अब आपको लग्न निकालने की एक सरल प्रक्रिया बताते हैं, जिसकी सहायता से भारत के किसी भी स्थान की लग्न निकाली जा सकती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक लग्न सारिणी देखने की विधि

इस पंचांग में दी गई यह लग्न सारिणी दिल्ली के अक्षांश-रेखांश पर है। इसका समय ऊपर दिए गए लग्न के समाप्तिकाल भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम में घण्टा-मिनट के रूप में लिखा है। जिस लग्न के नीचे समाप्तिकाल है वह आगे के लग्न का प्रारम्भकाल है।

उदाहरण—१५ जुलाई को सारिणी के तुला लग्न के नीचे घण्टे १४ मिनट ५६ लिखे हैं। अत: तुला लग्न मध्याह्न २ बजकर ५६ मिनट पर समाप्त हुआ। इसमें लिखे घण्टा-मिनट आधी रात के बाद शून्य से आरम्भ होंगे जैसे रात के १२ बजकर २५ मिनट पर ०।२५ लिखे हुए हैं। इसी तरह दोपहर के पश्चात् १ बजे के स्थान पर १३।०० लिखे हुए हैं।

लग्न सारिणी परिवर्तन उदाहरण

यदि आर्यभट्ट पंचांग से अन्य स्थान का लग्न ज्ञात करना हो तो प्रथम दैनिक लग्न सारिणी से अभीष्ट तारीख के लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना। पश्चात् अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व देशान्तर मिनट सेकंड लेना यदि देशान्तर मिनट सेकंड धन हो तो लग्न समाप्ति काल में से घटा दें और यदि देशांतर मिनट सेकंड ऋण हो तो लग्न समाप्ति काल में जोड़ दें। यह अभीष्ट नगर का मध्यम लग्न समाप्ति काल ज्ञात हुआ। पश्चात् दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अभीष्ट लग्न के नीचे अभिष्ट अक्षांश की सीध में दिये गये मिनटों को चिन्हानुसार लग्न में जोड़ने या घटाने पर अभीष्ट लग्न का समाप्तिकाल ज्ञात होगा।

उदाहरण—१५ जुलाई को नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल ज्ञात करना है। नासिक के अक्षांश २१।०० व देशांतर (—) १३ मिनट ४८ सेकण्ड दिया है। दैनिक लग्न सारिणी में १५ जुलाई को वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७।१४ दिया है।

	घं.मि.
सारिणी से प्राप्त १५ जुलाई को वृश्चिक समाप्त	१७।१४
देशान्तर ऋण लेने से धन किया	+ ०।१४
(१३ मिनट ४८ सेकंड आधे से अधिक होने से १४ लिये)	= १७।२८
मध्यम लग्न समाप्त	= १७।२८

दैनिक लग्न परिवर्तन की सहायक सारिणी से अक्षांश २१ की सीध में वृश्चिक लग्न के सामने —१७ मिनट दिये हैं।

मध्यम लग्न समाप्ति	= १७।२८
दै. लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी से प्राप्त मान	—०।१७
	१७।११

अत: नासिक में वृश्चिक लग्न का समाप्ति काल १७ बजकर ११ मिनट पर होगा।

नवांश का प्रारम्भ तथा अन्त जानने की विधि

ऊपर लिखे अनुसार जिस लग्न में नवांश समय लाना हो उस लग्न का प्रारम्भ तथा समाप्तिकाल साधन करें, पश्चात् समाप्तिकाल में से प्रारम्भ समय हीन करें। शेष घं.मि. रहेंगे, घण्टा को ६० से गुणाकर मिनट मिला देवें, यह कुल लग्न मान के मिनट होंगे। उन मिनटों को ९ का भाग देवें, लब्दि १ नवांश के मिनट प्राप्त होंगे शेष को ६० से गुणाकर फिर ९ का भाग देने पर सैकेण्ड आयेंगे, यह मिनट और सैकेण्ड एक नवांश का मान होने से जो नवांश लेना हो उससे गत नवांश तक की संख्या से एक नवांश के मान को गुणाकर जो मिनट हों वह मिनट लग्न प्रारम्भकाल में मिलाने से नवांश प्रारम्भ समय आएगा और इस नवांश प्रारम्भ समय में एक नवांश का मान मिला देने पर नवांश समप्तिकाल आयेगा। मेष, सिंह, धनु लग्न में नवांश का प्रारम्भ मेष से होगा। वृष, कन्या, मकर लग्न में नवांश का प्रारम्भ मकर से मिथुन, तुला, कुम्भ लग्न में नवांश का प्रारम्भ तुला से तथा कर्क, वृश्चिक, मीन लग्न में नवांश का प्रारम्भ कर्क से होगा। इसी प्रकार सर्वत्र जानें। विवाह, यज्ञोपवीत, गृह प्रवेशादि में लग्न तथा नवांश इस प्रकार से सूक्ष्म साधन करने से मुहूर्त योग्य समय होता है और फल भी जो मिलना चाहिए वह मिलता है। ज्योतिर्विदों को चाहिए कि नवांश सूक्ष्म से सूक्ष्म साधन करके विवाह आदि का समय निश्चित करें।

श्री आर्यभट्ट पंचांग की दैनिक लग्न सारिणी परिवर्तन की सहायक सारिणी

लग्न / अक्षांश	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
८	+३२	+४१	+३६	+२३	+४	-१५	-३२	-४१	-३६	-२३	-४	+१५
९	+३०	+३९	+३५	+२२	+४	-१५	-३०	-३९	-३५	-२२	-४	+१५
१०	+२९	+३७	+३३	+२१	+४	-१४	-२९	-३७	-३३	-२१	-४	+१४
११	+२८	+३५	+३१	+२०	+४	-१४	-२८	-३५	-३१	-२०	-४	+१४
१२	+२६	+३३	+३०	+१९	+४	-१३	-२६	-३३	-३०	-१९	-४	+१३
१३	+२५	+३२	+२८	+१८	+३	-१२	-२५	-३२	-२८	-१८	-३	+१२
१४	+२३	+३०	+२७	+१७	+३	-१२	-२३	-३०	-२७	-१७	-३	+१२
१५	+२२	+२८	+२५	+१६	+३	-११	-२२	-२८	-२५	-१६	-३	+११
१६	+२१	+२४	+२३	+१५	+३	-१०	-२१	-२६	-२३	-१५	-३	+१०
१७	+१९	+२४	+२१	+१४	+३	-९	-१९	-२४	-२१	-१४	-३	+९
१८	+१८	+२२	+२०	+१३	+२	-९	-१८	-२३	-२०	-१३	-२	+९
१९	+१६	+२०	+१८	+१२	+२	-८	-१६	-२१	-१८	-१२	-२	+८
२०	+१५	+१८	+१६	+११	+२	-७	-१५	-१९	-१६	-११	-२	+७
२१	+१३	+१६	+१४	+१०	+२	-६	-१३	-१७	-१४	-१०	-२	+६
२२	+१२	+१४	+१२	+८	+२	-५	-१२	-१५	-१२	-९	-२	+५
२३	+१०	+१२	+१०	+७	+१	-५	-१०	-१२	-१०	-७	-१	+५
२४	+८	+१०	+८	+६	+१	-४	-८	-१०	-८	-६	-१	+४
२५	+७	+८	+७	+५	+१	-३	-६	-८	-६	-५	-१	+३
२६	+५	+५	+५	+३	+१	-२	-५	-६	-५	-४	-१	+२
२७	+३	+३	+३	+२	+१	-१	-३	-४	-३	-३	-१	+१
२८	+१	+१	+१	+१	०	-१	-१	-१	-१	-१	०	+१
२९	०	-१	-१	-१	०	०	०	+१	+१	०	०	०
३०	-२	-३	-३	-२	०	+१	+२	+३	+३	+१	०	-१
३१	-४	-६	-५	-३	०	+२	+४	+६	+५	+२	०	-२
३२	-६	-८	-८	-५	०	+३	+६	+८	+८	+४	०	-३
३३	-८	-११	-१०	-६	-१	+३	+८	+११	+१०	+५	+१	-४
३४	-१०	-१३	-१३	-८	-१	+४	+१०	+१३	+१३	+७	+१	-५
३५	-१२	-१६	-१५	-९	-१	+५	+१२	+१६	+१५	+८	+१	-६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर
१	७ २८	८ ५४	१० ३०	१२ २४	१४ ३८	१६ ५८	१९ १५	२१ ३२	२३ ५२	२ ०९	४ १३	५ ५५
२	७ २४	८ ५०	१० २६	१२ २०	१४ ३४	१६ ५४	१९ ११	२१ २८	२३ ४८	२ ०५	४ ०९	५ ५१
३	७ २०	८ ४६	१० २२	१२ १६	१४ ३०	१६ ५०	१९ ०७	२१ २४	२३ ४४	२ ०१	४ ०५	५ ४७
४	७ १६	८ ४२	१० १८	१२ १२	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ २०	२३ ४०	१ ५७	४ ०१	५ ४३
५	७ १२	८ ३८	१० १४	१२ ०८	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ १६	२३ ३६	१ ५३	३ ५७	५ ३९
६	७ ०८	८ ३४	१० १०	१२ ०४	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२१ १२	२३ ३२	१ ४९	३ ५३	५ ३५
७	७ ०४	८ ३०	१० ०६	१२ ००	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२१ ०८	२३ २८	१ ४५	३ ४९	५ ३१
८	७ ००	८ २६	१० ०२	११ ५६	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२१ ०४	२३ २४	१ ४१	३ ४५	५ २७
९	६ ५६	८ २२	९ ५८	११ ५२	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२१ ००	२३ २०	१ ३७	३ ४१	५ २३
१०	६ ५२	८ १८	९ ५४	११ ४८	१४ ०२	१६ २२	१८ ३९	२० ५६	२३ १६	१ ३३	३ ३७	५ १९
११	६ ४८	८ १४	९ ५०	११ ४४	१३ ५८	१६ १८	१८ ३५	२० ५२	२३ १२	१ २९	३ ३३	५ १५
१२	६ ४४	८ १०	९ ४६	११ ४०	१३ ५४	१६ १४	१८ ३१	२० ४८	२३ ०८	१ २५	३ २९	५ ११
१३	६ ४०	८ ०६	९ ४२	११ ३६	१३ ५०	१६ १०	१८ २७	२० ४४	२३ ०४	१ २१	३ २५	५ ०७
१४	६ ३६	८ ०२	९ ३८	११ ३२	१३ ४६	१६ ०६	१८ २३	२० ४०	२३ ००	१ १७	३ २१	५ ०३
१५	६ ३२	७ ५८	९ ३४	११ २८	१३ ४२	१६ ०२	१८ १९	२० ३६	२२ ५६	१ १३	३ १७	४ ५९
१६	६ २८	७ ५४	९ ३०	११ २४	१३ ३८	१५ ५८	१८ १५	२० ३२	२२ ५२	१ ०९	३ १३	४ ५५
१७	६ २४	७ ५०	९ २६	११ २०	१३ ३४	१५ ५४	१८ ११	२० २८	२२ ४८	१ ०५	३ ०९	४ ५१
१८	६ २०	७ ४६	९ २२	११ १६	१३ ३०	१५ ५०	१८ ०७	२० २४	२२ ४४	१ ०१	३ ०५	४ ४७
१९	६ १६	७ ४२	९ १८	११ १२	१३ २६	१५ ४६	१८ ०३	२० २०	२२ ४०	० ५७	३ ०१	४ ४३
२०	६ १२	७ ३८	९ १४	११ ०८	१३ २२	१५ ४२	१७ ५९	२० १६	२२ ३६	० ५३	२ ५७	४ ३९
२१	६ ०८	७ ३४	९ १०	११ ०४	१३ १८	१५ ३८	१७ ५५	२० १२	२२ ३२	० ४९	२ ५३	४ ३५
२२	६ ०४	७ ३०	९ ०६	११ ००	१३ १४	१५ ३४	१७ ५१	२० ०८	२२ २८	० ४५	२ ४९	४ ३१
२३	६ ००	७ २६	९ ०२	१० ५६	१३ १०	१५ ३०	१७ ४७	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ४५	४ २७
२४	५ ५६	७ २२	८ ५८	१० ५२	१३ ०६	१५ २६	१७ ४३	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ४१	४ २३
२५	५ ५२	७ १८	८ ५४	१० ४८	१३ ०२	१५ २२	१७ ३९	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ३७	४ १९
२६	५ ४८	७ १४	८ ५०	१० ४४	१२ ५८	१५ १८	१७ ३५	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ३३	४ १५
२७	५ ४४	७ १०	८ ४६	१० ४०	१२ ५४	१५ १४	१७ ३१	१९ ४८	२२ ०८	० २५	२ २९	४ ११
२८	५ ४०	७ ०६	८ ४२	१० ३६	१२ ५०	१५ १०	१७ २७	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ २५	४ ०७
२९	५ ३६	७ ०२	८ ३८	१० ३२	१२ ४६	१५ ०६	१७ २३	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ २१	४ ०३
३०	५ ३२	६ ५८	८ ३४	१० २८	१२ ४२	१५ ०२	१७ १९	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ १७	३ ५९
३१	५ २८	६ ५४	८ ३०	१० २४	१२ ३८	१४ ५८	१७ १५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

अप्रैल दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ
१	६ ५०	८ २६	१० २२	१२ ३५	१४ ५६	१७ १३	१९ २९	२१ ४९	० ०७	२ १०	३ ५३	५ २१
२	६ ४६	८ २२	१० १८	१२ ३१	१४ ५२	१७ ०९	१९ २५	२१ ४५	० ०३	२ ०६	३ ४९	५ १७
३	६ ४२	८ १८	१० १४	१२ २७	१४ ४८	१७ ०५	१९ २१	२१ ४१	२३ ५९	२ ०२	३ ४५	५ १३
४	६ ३८	८ १४	१० १०	१२ २३	१४ ४४	१७ ०१	१९ १७	२१ ३७	२३ ५५	१ ५८	३ ४१	५ ०९
५	६ ३४	८ १०	१० ०६	१२ १९	१४ ४०	१६ ५७	१९ १३	२१ ३३	२३ ५१	१ ५४	३ ३७	५ ०५
६	६ ३०	८ ०६	१० ०२	१२ १५	१४ ३६	१६ ५३	१९ ०९	२१ २९	२३ ४७	१ ५०	३ ३३	५ ०१
७	६ २६	८ ०२	९ ५८	१२ ११	१४ ३२	१६ ४९	१९ ०५	२१ २५	२३ ४३	१ ४६	३ २९	४ ५७
८	६ २२	७ ५८	९ ५४	१२ ०७	१४ २८	१६ ४५	१९ ०१	२१ २१	२३ ३९	१ ४२	३ २५	४ ५३
९	६ १८	७ ५४	९ ५०	१२ ०३	१४ २४	१६ ४१	१९ ५७	२१ १७	२३ ३५	१ ३८	३ २१	४ ४९
१०	६ १४	७ ५०	९ ४६	११ ५९	१४ १९	१६ ३७	१८ ५३	२१ १३	२३ ३१	१ ३४	३ १७	४ ४५
११	६ १०	७ ४६	९ ४२	११ ५५	१४ १५	१६ ३३	१८ ४९	२१ ०९	२३ २७	१ ३०	३ १३	४ ४१
१२	६ ०६	७ ४२	९ ३८	११ ५१	१४ ११	१६ २९	१८ ४५	२१ ०५	२३ २३	१ २६	३ ०९	४ ३७
१३	६ ०२	७ ३८	९ ३४	११ ४७	१४ ०७	१६ २५	१८ ४१	२१ ०१	२३ १९	१ २२	३ ०५	४ ३३
१४	५ ५८	७ ३४	९ ३०	११ ४३	१४ ०३	१६ २१	१८ ३७	२० ५७	२३ १५	१ १८	३ ०१	४ २९
१५	५ ५४	७ ३०	९ २६	११ ३९	१३ ५९	१६ १७	१८ ३३	२० ५३	२३ ११	१ १४	२ ५७	४ २५
१६	५ ५१	७ २७	९ २३	११ ३६	१३ ५६	१६ १४	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ ११	२ ५४	४ २२
१७	५ ४७	७ २३	९ १९	११ ३२	१३ ५२	१६ १०	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ ०७	२ ५०	४ १८
१८	५ ४३	७ १९	९ १५	११ २८	१३ ४८	१६ ०६	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ ०३	२ ४६	४ १४
१९	५ ३९	७ १५	९ ११	११ २४	१३ ४४	१६ ०२	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	० ५९	२ ४२	४ १०
२०	५ ३५	७ ११	९ ०७	११ २०	१३ ४०	१५ ५८	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	० ५५	२ ३८	४ ०६
२१	५ ३१	७ ०७	९ ०३	११ १६	१३ ३६	१५ ५४	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	० ५१	२ ३४	४ ०२
२२	५ २७	७ ०३	८ ५९	११ १२	१३ ३२	१५ ५०	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	० ४७	२ ३०	३ ५८
२३	५ २३	६ ५९	८ ५५	११ ०८	१३ २८	१५ ४६	१८ ०२	२० २२	२२ ४०	० ४३	२ २६	३ ५४
२४	५ १९	६ ५५	८ ५१	११ ०४	१३ २४	१५ ४२	१७ ५८	२० १८	२२ ३६	० ३९	२ २२	३ ५०
२५	५ १५	६ ५१	८ ४७	११ ०	१३ २०	१५ ३८	१७ ५४	२० १४	२२ ३२	० ३५	२ १८	३ ४६
२६	५ ११	६ ४७	८ ४३	१० ५६	१३ १६	१५ ३४	१७ ५०	२० १०	२२ २८	० ३१	२ १४	३ ४२
२७	५ ०७	६ ४३	८ ३९	१० ५२	१३ १२	१५ ३०	१७ ४६	२० ०६	२२ २४	० २७	२ १०	३ ३८
२८	५ ०३	६ ३९	८ ३५	१० ४८	१३ ०८	१५ २६	१७ ४२	२० ०२	२२ २०	० २३	२ ०६	३ ३४
२९	४ ५९	६ ३५	८ ३१	१० ४४	१३ ०४	१५ २२	१७ ३८	१९ ५८	२२ १६	० १९	२ ०२	३ ३०
३०	४ ५५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल

ता.	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन
१	६ २६	८ २२	१० ३६	१२ ५५	१५ १३	१७ ३०	१९ ४९	२२ ०७	० ११	१ ५३	३ २१	४ ४६
२	६ २२	८ १८	१० ३२	१२ ५१	१५ ०९	१७ २६	१९ ४५	२२ ०३	० ०७	१ ४९	३ १७	४ ४२
३	६ १८	८ १४	१० २८	१२ ४७	१५ ०५	१७ २२	१९ ४१	२१ ५९	० ०३	१ ४५	३ १३	४ ३८
४	६ १४	८ १०	१० २४	१२ ४३	१५ ०१	१७ १८	१९ ३७	२१ ५५	२३ ५९	१ ४१	३ ०९	४ ३४
५	६ ११	८ ०७	१० २१	१२ ४०	१४ ५८	१७ १५	१९ ३४	२१ ५२	२३ ५६	१ ३८	३ ०६	४ ३१
६	६ ०७	८ ०३	१० १७	१२ ३६	१४ ५४	१७ ११	१९ ३०	२१ ४८	२३ ५२	१ ३४	३ ०२	४ २७
७	६ ०३	७ ५९	१० १३	१२ ३२	१४ ५०	१७ ०७	१९ २६	२१ ४४	२३ ४८	१ ३०	२ ५८	४ २३
८	५ ५९	७ ५५	१० ०९	१२ २८	१४ ४६	१७ ०३	१९ २२	२१ ४०	२३ ४४	१ २६	२ ५४	४ १९
९	५ ५५	७ ५१	१० ०५	१२ २४	१४ ४२	१६ ५९	१९ १८	२१ ३६	२३ ४०	१ २२	२ ५०	४ १५
१०	५ ५१	७ ४७	१० ०१	१२ २०	१४ ३८	१६ ५५	१९ १४	२१ ३२	२३ ३६	१ १८	२ ४६	४ ११
११	५ ४७	७ ४३	९ ५७	१२ १६	१४ ३४	१६ ५१	१९ १०	२१ २८	२३ ३२	१ १४	२ ४२	४ ०७
१२	५ ४३	७ ३९	९ ५३	१२ १२	१४ ३०	१६ ४७	१९ ०६	२१ २४	२३ २८	१ १०	२ ३८	४ ०३
१३	५ ३९	७ ३५	९ ४९	१२ ०८	१४ २६	१६ ४३	१९ ०२	२१ २०	२३ २४	१ ०६	२ ३४	३ ५९
१४	५ ३५	७ ३१	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ ३९	१८ ५८	२१ १६	२३ २०	१ ०२	२ ३०	३ ५५
१५	५ ३१	७ २७	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ ३५	१८ ५४	२१ १२	२३ १६	० ५८	२ २६	३ ५१
१६	५ २८	७ २४	९ ३८	११ ५७	१४ १५	१६ ३२	१८ ५१	२१ ०९	२३ १३	० ५५	२ २३	३ ४८
१७	५ २४	७ २०	९ ३४	११ ५३	१४ ११	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ ०९	० ५१	२ १९	३ ४४
१८	५ २०	७ १६	९ ३०	११ ४९	१४ ०७	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ ०५	० ४७	२ १५	३ ४०
१९	५ १६	७ १२	९ २६	११ ४५	१४ ०३	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ ०१	० ४३	२ ११	३ ३६
२०	५ १२	७ ०८	९ २२	११ ४१	१३ ५९	१६ १६	१८ ३५	२० ५३	२२ ५७	० ३९	२ ०७	३ ३२
२१	५ ०८	७ ०४	९ १८	११ ३७	१३ ५५	१६ १२	१८ ३१	२० ४९	२२ ५३	० ३५	२ ०३	३ २८
२२	५ ०४	७ ००	९ १४	११ ३३	१३ ५१	१६ ०८	१८ २७	२० ४५	२२ ४९	० ३१	१ ५९	३ २४
२३	५ ००	६ ५६	९ १०	११ २९	१३ ४७	१६ ०४	१८ २३	२० ४१	२२ ४५	० २७	१ ५५	३ २०
२४	४ ५६	६ ५२	९ ०६	११ २५	१३ ४३	१६ ००	१८ १९	२० ३७	२२ ४१	० २३	१ ५१	३ १६
२५	४ ५२	६ ४८	९ ०२	११ २१	१३ ३९	१५ ५६	१८ १५	२० ३३	२२ ३७	० १९	१ ४७	३ १२
२६	४ ४८	६ ४४	८ ५८	११ १७	१३ ३५	१५ ५२	१८ ११	२० २९	२२ ३३	० १५	१ ४३	३ ०८
२७	४ ४४	६ ४०	८ ५४	११ १३	१३ ३१	१५.४८	१८ ०७	२० २५	२२ २९	० ११	१ ३९	३ ०४
२८	४ ४१	६ ३७	८ ५१	११ १०	१३ २८	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ २६	० ०८	१ ३६	३ ०१
२९	४ ३७	६ ३३	८ ४७	११ ०६	१३ २४	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ २२	० ०४	१ ३२	२ ५७
३०	४ ३३	६ २९	८ ४३	११ ०२	१३ २०	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ १८	२४ ०	१ २८	२ ५३
३१	४ २९	६ २५	८ ३९	१० ५८	१३ १६	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ १४	२३ ५६	१ २४	२ ४९

...काल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष
१	६ १९	८ ३३	१० ५३	१३ १०	१५ २७	१७ ४७	२० ०४	२२ ०८	२३ ५१	१ १८	२ ४४	४ २०
२	६ १५	८ २९	१० ४९	१३ ०६	१५ २३	१७ ४३	२० ००	२२ ०४	२३ ४७	१ १४	२ ४०	४ १६
३	६ ११	८ २५	१० ४५	१३ ०२	१५ १९	१७ ३९	१९ ५६	२२ ००	२३ ४३	१ १०	२ ३६	४ १२
४	६ ०७	८ २१	१० ४१	१२ ५८	१५ १५	१७ ३५	१९ ५२	२१ ५६	२३ ३९	१ ०६	२ ३२	४ ०८
५	६ ०४	८ १८	१० ३८	१२ ५५	१५ १२	१७ ३२	१९ ४९	२१ ५३	२३ ३६	१ ०३	२ २९	४ ०५
६	६ ००	८ १४	१० ३४	१२ ५१	१५ ०८	१७ २८	१९ ४५	२१ ४९	२३ ३२	० ५९	२ २५	४ ०१
७	५ ५६	८ १०	१० ३०	१२ ४७	१५ ०४	१७ २४	१९ ४१	२१ ४५	२३ २८	० ५५	२ २१	३ ५७
८	५ ५२	८ ०६	१० २६	१२ ४३	१५ ०	१७ २०	१९ ३७	२१ ४१	२३ २४	० ५१	२ १७	३ ५३
९	५ ४८	८ ०२	१० २२	१२ ३९	१४ ५६	१७ १६	१९ ३३	२१ ३७	२३ २०	० ४७	२ १३	३ ४९
१०	५ ४४	७ ५८	१० १८	१२ ३५	१४ ५२	१७ १२	१९ २९	२१ ३३	२३ १६	० ४३	२ ०९	३ ४५
११	५ ४१	७ ५५	१० १५	१२ ३२	१४ ४९	१७ ०९	१९ २६	२१ ३०	२३ १३	० ४०	२ ०६	३ ४२
१२	५ ३७	७ ५१	१० ११	१२ २८	१४ ४५	१७ ०५	१९ २२	२१ २६	२३ ०९	० ३६	२ ०२	३ ३८
१३	५ ३३	७ ४७	१० ०७	१२ २४	१४ ४१	१७ ०१	१९ १८	२१ २२	२३ ०५	० ३२	१ ५८	३ ३४
१४	५ २९	७ ४३	१० ०३	१२ २०	१४ ३७	१६ ५७	१९ १४	२१ १८	२३ ०१	० २८	१ ५४	३ ३०
१५	५ २५	७ ३९	९ ५९	१२ १६	१४ ३३	१६ ५३	१९ १०	२१ १४	२२ ५७	० २४	१ ५०	३ २६
१६	५ २१	७ ३५	९ ५५	१२ १२	१४ २९	१६ ४९	१९ ०६	२१ १०	२२ ५३	० २०	१ ४६	३ २२
१७	५ १८	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ २६	१६ ४६	१९ ०३	२१ ०७	२२ ५०	० १७	१ ४३	३ १९
१८	५ १४	७ २८	९ ४८	१२ ०५	१४ २२	१६ ४२	१८ ५९	२१ ०३	२२ ४६	० १३	१ ३९	३ १५
१९	५ १०	७ २४	९ ४४	१२ ०१	१४ १८	१६ ३८	१८ ५५	२० ५९	२२ ४२	० ०९	१ ३५	३ ११
२०	५ ०६	७ २०	९ ४०	११ ५७	१४ १४	१६ ३४	१८ ५१	२० ५५	२२ ३८	० ०५	१ ३१	३ ०७
२१	५ ०२	७ १६	९ ३६	११ ५३	१४ १०	१६ ३०	१८ ४७	२० ५१	२२ ३४	० ०१	१ २७	३ ०३
२२	४ ५८	७ १२	९ ३२	११ ४९	१४ ०६	१६ २६	१८ ४३	२० ४७	२२ ३०	२३ ५७	१ २३	२ ५९
२३	४ ५४	७ ०९	९ २९	११ ४६	१४ ०३	१६ २३	१८ ४०	२० ४४	२२ २७	२३ ५४	१ २०	२ ५६
२४	४ ५२	७ ०५	९ २५	११ ४२	१३ ५९	१६ १९	१८ ३६	२० ४०	२२ २३	२३ ५०	१ १६	२ ५२
२५	४ ४७	७ ०१	९ २१	११ ३८	१३ ५५	१६ १५	१८ ३२	२० ३६	२२ १९	२३ ४६	१ १२	२ ४८
२६	४ ४३	६ ५७	९ १७	११ ३४	१३ ५१	१६ ११	१८ २८	२० ३२	२२ १५	२३ ४२	१ ०८	२ ४४
२७	४ ३९	६ ५३	९ १३	११ ३०	१३ ४७	१६ ०७	१८ २४	२० २८	२२ ११	२३ ३८	१ ०४	२ ४०
२८	४ ३५	६ ४९	९ ०९	११ २६	१३ ४३	१६ ०३	१८ २०	२० २४	२२ ०७	२३ ३४	१ ००	२ ३६
२९	४ ३१	६ ४५	९ ०५	११ २२	१३ ३९	१५ ५९	१८ १६	२०.२०	२२ ०३	२३ ३०	०० ५६	२ ३२
३०	४ २७	६ ४१	९ ०१	११ १८	१३ ३५	१५ ५५	१८ १२	२० १६	२१ ५९	२३ २६	०० ५२	२ २८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० १२	२१ ५५	२३ २३	० ४८	२ २४	४ २०
२	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० ०८	२१ ५१	२३ १९	० ४४	२ २०	४ १६
३	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० ०४	२१ ४७	२३ १५	० ४०	२ १६	४ १२
४	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० ००	२१ ४३	२३ ११	० ३६	२ १२	४ ०८
५	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ १५	१५ ३५	१७ ५३	१९ ५६	२१ ३९	२३ ०७	० ३२	२ ०८	४ ०४
६	६ १७	८ ३७	१० ५५	१३ ११	१५ ३१	१७ ४९	१९ ५२	२१ ३५	२३ ०३	० २८	२ ०४	४ ००
७	६ १३	८ ३३	१० ५१	१३ ०७	१५ २७	१७ ४५	१९ ४८	२१ ३१	२२ ५९	० २४	२ ००	३ ५६
८	६ ०९	८ २९	१० ४७	१३ ०३	१५ २३	१७ ४१	१९ ४४	२१ २७	२२ ५५	० २०	१ ५६	३ ५२
९	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ५९	१५ १९	१७ ३७	१९ ४०	२१ २३	२२ ५१	० १६	१ ५२	३ ४८
१०	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ५५	१५ १५	१७ ३३	१९ ३६	२१ १९	२२ ४७	० १२	१ ४८	३ ४४
११	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ५१	१५ ११	१७ २९	१९ ३२	२१ १५	२२ ४३	० ०८	१ ४४	३ ४०
१२	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ४७	१५ ०७	१७ २५	१९ २८	२१ ११	२२ ३९	० ०४	१ ४०	३ ३६
१३	५ ४९	८ ०९	१० २७	१२ ४३	१५ ०३	१७ २१	१९ २४	२१ ०७	२२ ३५	२४ ००	१ ३६	३ ३२
१४	५ ४५	८ ०५	१० २३	१२ ३९	१४ ५९	१७ १७	१९ २०	२१ ०३	२२ ३१	२३ ५६	१ ३२	३ २८
१५	४ ४२	८ ०२	१० २०	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ १७	२१ ००	२२ २८	२३ ५३	१ २९	३ २५
१६	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ १३	२० ५६	२२ २४	२३ ४९	१ २५	३ २१
१७	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ ०९	२० ५२	२२ २०	२३ ४५	१ २१	३ १७
१८	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ ०५	२० ४८	२२ १६	२३ ४१	१ १७	३ १३
१९	५ २६	७ ४६	१० ०४	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ ०१	२० ४४	२२ १२	२३ ३७	१ १३	३ ०९
२०	५ २२	७ ४२	१० ००	१२ १६	१४ ३६	१६ ५४	१८ ५७	२० ४०	२२ ०८	२३ ३३	१ ०९	३ ०५
२१	५ १८	७ ३८	९ ५६	१२ १२	१४ ३२	१६ ५०	१८ ५३	२० ३६	२२ ०४	२३ २९	१ ०५	३ ०१
२२	५ १४	७ ३४	९ ५२	१२ ०८	१४ २८	१६ ४६	१८ ४९	२० ३२	२२ ००	२३ २५	१ ०१	२ ५७
२३	५ ११	७ ३१	९ ४९	१२ ०५	१४ २५	१६ ४३	१८ ४६	२० २९	२१ ५७	२३ २२	० ५८	२ ५३
२४	५ ०७	७ २७	९ ४५	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१८ ४२	२० २५	२१ ५३	२३ १८	० ५४	२ ४९
२५	५ ०३	७ २३	९ ४१	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ३८	२० २१	२१ ४९	२३ १४	० ५०	२ ४५
२६	४ ५९	७ १९	९ ३७	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ३४	२० १७	२१ ४५	२३ १०	० ४६	२ ४१
२७	४ ५५	७ १५	९ ३३	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ३०	२० १३	२१ ४१	२३ ०६	० ४२	२ ३७
२८	४ ५१	७ ११	९ २९	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ २६	२० ०९	२१ ३७	२३ ०२	० ३८	२ ३३
२९	४ ४७	७ ०७	९ २५	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ २२	२० ०५	२१ ३३	२२ ५८	० ३४	२ २९
३०	४ ४३	७ ३	९ २१	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ १८	२० ०१	२१ २९	२२ ५४	० ३०	२ २५
३१	४ ३९	६ ५९	९ १७	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ १४	१९ ५७	२१ २५	२२ ५०	० २६	२ २१

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५५	९ १३	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ ११	१९ ५३	२१ २१	२२ ४७	० २२	२ १८	४ ३१
२	६ ५१	९ ०९	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ ०७	१९ ४९	२१ १७	२२ ४३	० १८	२ १४	४ २७
३	६ ४७	९ ०५	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ ०३	१९ ४५	२१ १३	२२ ३९	० १४	२ १०	४ २३
४	६ ४३	९ ०१	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१७ ५९	१९ ४१	२१ ०९	२२ ३५	० १०	२ ०६	४ १९
५	६ ४०	८ ५८	११ १५	१३ ३४	१५ ५२	१७ ५६	१९ ३८	२१ ०६	२२ ३२	० ०७	२ ०३	४ १६
६	६ ३६	८ ५४	११ ११	१३ ३०	१५ ४८	१७ ५२	१९ ३४	२१ ०२	२२ २८	० ०३	१ ५९	४ १२
७	६ ३२	८ ५०	११ ०७	१३ २६	१५ ४४	१७ ४८	१९ ३०	२० ५८	२२ २४	२३ ५९	१ ५५	४ ०८
८	६ २८	८ ४६	११ ०३	१३ २२	१५ ४०	१७ ४४	१९ २६	२० ५४	२२ २०	२३ ५५	१ ५१	४ ०४
९	६ २४	८ ४२	१० ५९	१३ १८	१५ ३६	१७ ४०	१९ २२	२० ५०	२२ १६	२३ ५१	१ ४७	४ ००
१०	६ २०	८ ३८	१० ५५	१३ १४	१५ ३२	१७ ३६	१९ १८	२० ४६	२२ १२	२३ ४७	१ ४३	३ ५६
११	६ १६	८ ३४	१० ५१	१३ १०	१५ २८	१७ ३२	१९ १४	२० ४२	२२ ०८	२३ ४३	१ ३९	३ ५२
१२	६ १२	८ ३०	१० ४७	१३ ०६	१५ २४	१७ २८	१९ १०	२० ३८	२२ ०४	२३ ३९	१ ३५	३ ४८
१३	६ ०८	८ २६	१० ४३	१३ ०२	१५ २०	१७ २४	१९ ०६	२० ३४	२२ ००	२३ ३५	१ ३१	३ ४४
१४	६ ०४	८ २२	१० ३९	१२ ५८	१५ १६	१७ २०	१९ ०२	२० ३०	२१ ५६	२३ ३१	१ २७	३ ४०
१५	६ ००	८ १८	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ १६	१८ ५८	२० २६	२१ ५२	२३ २७	१ २३	३ ३६
१६	५ ५६	८ १४	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ १२	१८ ५४	२० २२	२१ ४८	२३ २३	१ १९	३ ३२
१७	५ ५२	८ १०	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ ०८	१८ ५०	२० १८	२१ ४४	२३ १९	१ १५	३ २८
१८	५ ४८	८ ०६	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ ०४	१८ ४६	२० १४	२१ ४०	२३ १५	१ ११	३ २४
१९	५ ४४	८ ०२	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ ००	१८ ४२	२० १०	२१ ३६	२३ ११	१ ०७	३ २०
२०	५ ४०	७ ५८	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१६ ५६	१८ ३८	२० ०६	२१ ३२	२३ ०७	१ ०३	३ १६
२१	५ ३७	७ ५५	१० १२	१२ ३१	१४ ४९	१६ ५३	१८ ३४	२० ०३	२१ २९	२३ ०४	१ ००	३ १३
२२	५ ३३	७ ५१	१० ०८	१२ २७	१४ ४५	१६ ४९	१८ ३१	१९ ५९	२१ २५	२३ ००	० ५६	३ ०९
२३	५ २९	७ ४७	१० ०४	१२ २३	१४ ४१	१६ ४५	१८ २७	१९ ५५	२१ २१	२२ ५६	० ५२	३ ०५
२४	५ २५	७ ४३	१० ००	१२ १९	१४ ३७	१६ ४१	१८ २३	१९ ५१	२१ १७	२२ ५२	० ४८	३ ०१
२५	५ २१	७ ३९	९ ५६	१२ १५	१४ ३३	१६ ३७	१८ १९	१९ ४७	२१ १३	२२ ४८	० ४४	२ ५७
२६	५ १७	७ ३५	९ ५२	१२ ११	१४ २९	१६ ३३	१८ १५	१९ ४३	२१ ०९	२२ ४४	० ४०	२ ५३
२७	५ १३	७ ३१	९ ४८	१२ ०७	१४ २५	१६ २९	१८ ११	१९ ३९	२१ ०५	२२ ४०	० ३६	२ ४९
२८	५ १०	७ २८	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ २६	१८ ०८	१९ ३६	२१ ०२	२२ ३७	० ३३	२ ४६
२९	५ ०६	७ २४	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ २२	१८ ०४	१९ ३२	२० ५८	२२ ३३	० २९	२ ४२
३०	५ ०२	७ २०	९ ३७	११ ५६	१४ १४	१६ १८	१८ ००	१९ २८	२० ५४	२२ २९	० २५	२ ३८
३१	४ ५८	७ १६	९ ३३	११ ५२	१४ १०	१६ १४	१७ ५६	१९ २४	२० ५०	२२ २५	० २१	२ ३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२	९ २९	११ ४९	१४ ०६	१६ १०	१७ ५३	१९ २०	२० ४६	२२ २२	० १७	२ ३१	४ ५०
२	७ ०८	९ २५	११ ४५	१४ ०२	१६ ०६	१७ ४९	१९ १६	२० ४२	२२ १८	० १३	२ २७	४ ४६
३	७ ०४	९ २१	११ ४१	१३ ५८	१६ ०२	१७ ४५	१९ १२	२० ३८	२२ १४	० ०९	२ २३	४ ४२
४	७ ००	९ १७	११ ३७	१३ ५४	१५ ५८	१७ ४१	१९ ०८	२० ३४	२२ १०	० ०५	२ १९	४ ३८
५	६ ५६	९ १३	११ ३३	१३ ५०	१५ ५४	१७ ३७	१९ ०४	२० ३०	२२ ०६	० ०१	२ १५	४ ३४
६	६ ५२	९ ०९	११ २९	१३ ४६	१५ ५०	१७ ३३	१९ ००	२० २६	२२ ०२	२३ ५७	२ ११	४ ३०
७	६ ४८	९ ०५	११ २५	१३ ४२	१५ ४६	१७ २९	१८ ५६	२० २२	२१ ५८	२३ ५३	२ ०७	४ २६
८	६ ४४	९ ०१	११ २१	१३ ३८	१५ ४२	१७ २५	१८ ५२	२० १८	२१ ५४	२३ ४९	२ ०३	४ २२
९	६ ४०	८ ५७	११ १७	१३ ३४	१५ ३८	१७ २१	१८ ४८	२० १४	२१ ५०	२३ ४५	१ ५९	४ १८
१०	६ ३६	८ ५३	११ १३	१३ ३०	१५ ३४	१७ १७	१८ ४४	२० १०	२१ ४६	२३ ४१	१ ५५	४ १४
११	६ ३२	८ ४९	११ ०९	१३ २६	१५ ३०	१७ १३	१८ ४०	२० ०६	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १०
१२	६ २७	८ ४४	११ ०४	१३ २१	१५ २५	१७ ०८	१८ ३५	२० ०१	२१ ३७	२३ ३२	१ ४६	४ ०५
१३	६ २३	८ ४०	११ ००	१३ १७	१५ २१	१७ ०४	१८ ३१	१९ ५७	२१ ३३	२३ २८	१ ४२	४ ०१
१४	६ १९	८ ३६	१० ५६	१३ १३	१५ १७	१७ ००	१८ २७	१९ ५३	२१ २९	२३ २४	१ ३८	३ ५७
१५	६ १५	८ ३२	१० ५२	१३ ०९	१५ १३	१६ ५६	१८ २३	१९ ४९	२१ २५	२३ २०	१ ३४	३ ५३
१६	६ ११	८ २८	१० ४८	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५२	१८ १९	१९ ४५	२१ २१	२३ १६	१ ३०	३ ४९
१७	६ ०७	८ २४	१० ४४	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४८	१८ १५	१९ ४१	२१ १७	२३ १२	१ २६	३ ४५
१८	६ ०३	८ २०	१० ४०	१२ ५७	१५ ०१	१६ ४४	१८ ११	१९ ३७	२१ १३	२३ ०८	१ २२	३ ४१
१९	५ ५९	८ १६	१० ३६	१२ ५३	१४ ५७	१६ ४०	१८ ०७	१९ ३३	२१ ०९	२३ ०४	१ १८	३ ३७
२०	५ ५५	८ १२	१० ३२	१२ ४९	१४ ५३	१६ ३६	१८ ०३	१९ २९	२१ ०५	२३ ००	१ १४	३ ३३
२१	५ ५१	८ ०८	१० २८	१२ ४५	१४ ४९	१६ ३२	१७ ५९	१९ २५	२१ ०१	२२ ५६	१ १०	३ २९
२२	५ ४७	८ ०४	१० २४	१२ ४१	१४ ४५	१६ २८	१७ ५५	१९ २१	२० ५७	२२ ५२	१ ०६	३ २५
२३	५ ४३	८ ००	१० २०	१२ ३७	१४ ४१	१६ २४	१७ ५१	१९ १७	२० ५३	२२ ४८	१ ०२	३ २१
२४	५ ३९	७ ५६	१० १६	१२ ३३	१४ ३७	१६ २०	१७ ४७	१९ १३	२० ४९	२२ ४४	० ५८	३ १७
२५	५ ३५	७ ५२	१० १२	१२ २९	१४ ३३	१६ १६	१७ ४३	१९ ०९	२० ४५	२२ ४०	० ५४	३ १३
२६	५ ३१	७ ४८	१० ०८	१२ २५	१४ २९	१६ १२	१७ ३९	१९ ०५	२० ४१	२२ ३६	० ५०	३ ०९
२७	५ २७	७ ४४	१० ०४	१२ २१	१४ २५	१६ ०८	१७ ३५	१९ ०१	२० ३७	२२ ३२	० ४६	३ ०५
२८	५ २३	७ ४०	१० ००	१२ १७	१४ २१	१६ ०७	१७ ३१	१८ ५७	२० ३३	२२ २८	० ४२	३ ०१
२९	५ १९	७ ३६	९ ५६	१२ १३	१४ १७	१६ ०४	१७ २७	१८ ५३	२० २९	२२ २४	० ३८	२ ५७
३०	५ १५	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ १३	१५ ५६	१७ २३	१८ ४९	२० २५	२२ २०	० ३४	२ ५३

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३०	९ ५०	१२ ०८	१४ ११	१५ ५४	१७ २२	१८ ४७	२० २३	२२ १९	० ३२	२ ५२	५ ०९
२	७ २६	९ ४६	१२ ०४	१४ ०७	१५ ५०	१७ १८	१८ ४३	२० १९	२२ १५	० २८	२ ४८	५ ०५
३	७ २२	९ ४२	१२ ००	१४ ०३	१५ ४६	१७ १४	१८ ३९	२० १५	२२ ११	० २४	२ ४४	५ ०१
४	७ १८	९ ३८	११ ५६	१३ ५९	१५ ४२	१७ १०	१८ ३५	२० ११	२२ ०७	० २०	२ ४०	४ ५७
५	७ १३	९ ३३	११ ५१	१३ ५४	१५ ३७	१७ ०५	१८ ३०	२० ०६	२२ ०२	० १५	२ ३५	४ ५२
६	७ ०९	९ २९	११ ४७	१३ ५०	१५ ३३	१७ ०१	१८ २६	२० ०२	२१ ५८	० ११	२ ३१	४ ४८
७	७ ०५	९ २५	११ ४३	१३ ४६	१५ २९	१६ ५७	१८ २२	१९ ५८	२१ ५४	० ०७	२ २७	४ ४४
८	७ ०१	९ २१	११ ३९	१३ ४२	१५ २५	१६ ५३	१८ १८	१९ ५४	२१ ५०	० ०३	२ २३	४ ४०
९	६ ५७	९ १७	११ ३५	१३ ३८	१५ २१	१६ ४९	१८ १४	१९ ५०	२१ ४६	२३ ५९	२ १९	४ ३६
१०	६ ५३	९ १३	११ ३१	१३ ३४	१५ १७	१६ ४५	१८ १०	१९ ४६	२१ ४२	२३ ५५	२ १५	४ ३२
११	६ ४९	९ ०९	११ २७	१३ ३०	१५ १३	१६ ४१	१८ ०६	१९ ४२	२१ ३८	२३ ५१	२ ११	४ २८
१२	६ ४५	९ ०५	११ २३	१३ २६	१५ ०९	१६ ३७	१८ ०२	१९ ३८	२१ ३४	२३ ४७	२ ०७	४ २४
१३	६ ४१	९ ०१	११ १९	१३ २२	१५ ०५	१६ ३३	१७ ५८	१९ ३४	२१ ३०	२३ ४३	२ ०३	४ २०
१४	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ १८	१५ ०१	१६ २९	१७ ५४	१९ ३०	२१ २६	२३ ३९	१ ५९	४ १६
१५	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ १४	१४ ५७	१६ २५	१७ ५०	१९ २६	२१ २२	२३ ३५	१ ५५	४ १२
१६	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ १०	१४ ५३	१६ २१	१७ ४६	१९ २२	२१ १८	२३ ३१	१ ५१	४ ०८
१७	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ ०६	१४ ४९	१६ १७	१७ ४२	१९ १८	२१ १४	२३ २७	१ ४७	४ ०४
१८	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ ०२	१४ ४५	१६ १३	१७ ३८	१९ १४	२१ १०	२३ २३	१ ४३	४ ००
१९	६ १७	८ ३७	१० ५५	१२ ५८	१४ ४१	१६ ०९	१७ ३४	१९ १०	२१ ०६	२३ १९	१ ३९	३ ५६
२०	६ १३	८ ३३	१० ५१	१२ ५४	१४ ३७	१६ ०५	१७ ३०	१९ ०६	२१ ०२	२३ १५	१ ३५	३ ५२
२१	६ ०९	८ २९	१० ४७	१२ ५०	१४ ३३	१६ ०१	१७ २६	१९ ०२	२० ५८	२३ ११	१ ३१	३ ४८
२२	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ४६	१४ २९	१५ ५७	१७ २२	१८ ५८	२० ५४	२३ ०७	१ २७	३ ४४
२३	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ४२	१४ २५	१५ ५३	१७ १८	१८ ५४	२० ५०	२३ ०३	१ २३	३ ४०
२४	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ३८	१४ २१	१५ ४९	१७ १४	१८ ५०	२० ४६	२२ ५९	१ १९	३ ३६
२५	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ३४	१४ १७	१५ ४५	१७ १०	१८ ४६	२० ४२	२२ ५५	१ १५	३ ३२
२६	५ ५०	८ १०	१० २८	१२ ३१	१४ १४	१५ ४२	१७ ०७	१८ ४३	२० ३९	२२ ५२	१ १२	३ २९
२७	५ ४६	८ ०६	१० २४	१२ २७	१४ १०	१५ ३८	१७ ०३	१८ ३९	२० ३५	२२ ४८	१ ०८	३ २५
२८	५ ४२	८ ०२	१० २०	१२ २३	१४ ०६	१५ ३४	१६ ५९	१८ ३५	२० ३१	२२ ४४	१ ०४	३ २१
२९	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ १९	१४ ०२	१५ ३०	१६ ५५	१८ ३१	२० २७	२२ ४०	१ ००	३ १७
३०	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ १५	१३ ५८	१५ २६	१६ ५१	१८ २७	२० २३	२२ ३६	० ५६	३ १३
३१	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ ११	१३ ५४	१५ २२	१६ ४७	१८ २३	२० १९	२२ ३२	० ५२	३ ०९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जुलाई दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाइम घन्टा-मिनट

ता.	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
१	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ ३१	१५ ५१	१८ ०९	२० १२	२१ ५५	२३ २३	० ४८	२ २४	४ २०
२	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ २७	१५ ४७	१८ ०५	२० ०८	२१ ५१	२३ १९	० ४४	२ २०	४ १६
३	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ २३	१५ ४३	१८ ०१	२० ०४	२१ ४७	२३ १५	० ४०	२ १६	४ १२
४	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ १९	१५ ३९	१७ ५७	२० ००	२१ ४३	२३ ११	० ३६	२ १२	४ ०८
५	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ १५	१५ ३५	१७ ५३	१९ ५६	२१ ३९	२३ ०७	० ३२	२ ०८	४ ०४
६	६ १७	८ ३७	१० ५५	१३ ११	१५ ३१	१७ ४९	१९ ५२	२१ ३५	२३ ०३	० २८	२ ०४	४ ००
७	६ १३	८ ३३	१० ५१	१३ ०७	१५ २७	१७ ४५	१९ ४८	२१ ३१	२२ ५९	० २४	२ ००	३ ५६
८	६ ०९	८ २९	१० ४७	१३ ०३	१५ २३	१७ ४१	१९ ४४	२१ २७	२२ ५५	० २०	१ ५६	३ ५२
९	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ५९	१५ १९	१७ ३७	१९ ४०	२१ २३	२२ ५१	० १६	१ ५२	३ ४८
१०	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ५५	१५ १५	१७ ३३	१९ ३६	२१ १९	२२ ४७	० १२	१ ४८	३ ४४
११	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ५१	१५ ११	१७ २९	१९ ३२	२१ १५	२२ ४३	० ०८	१ ४४	३ ४०
१२	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ४७	१५ ०७	१७ २५	१९ २८	२१ ११	२२ ३९	० ०४	१ ४०	३ ३६
१३	५ ४९	८ ०९	१० २७	१२ ४३	१५ ०३	१७ २१	१९ २४	२१ ०७	२२ ३५	२४ ००	१ ३६	३ ३२
१४	५ ४५	८ ०५	१० २३	१२ ३९	१४ ५९	१७ १७	१९ २०	२१ ०३	२२ ३१	२३ ५६	१ ३२	३ २८
१५	४ ४२	८ ०२	१० २०	१२ ३६	१४ ५६	१७ १४	१९ १७	२१ ००	२२ २८	२३ ५३	१ २९	३ २५
१६	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ ३२	१४ ५२	१७ १०	१९ १३	२० ५६	२२ २४	२३ ४९	१ २५	३ २१
१७	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ २८	१४ ४८	१७ ०६	१९ ०९	२० ५२	२२ २०	२३ ४५	१ २१	३ १७
१८	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ २४	१४ ४४	१७ ०२	१९ ०५	२० ४८	२२ १६	२३ ४१	१ १७	३ १३
१९	५ २६	७ ४६	१० ०४	१२ २०	१४ ४०	१६ ५८	१९ ०१	२० ४४	२२ १२	२३ ३७	१ १३	३ ०९
२०	५ २२	७ ४२	१० ००	१२ १६	१४ ३६	१६ ५४	१८ ५७	२० ४०	२२ ०८	२३ ३३	१ ०९	३ ०५
२१	५ १८	७ ३८	९ ५६	१२ १२	१४ ३२	१६ ५०	१८ ५३	२० ३६	२२ ०४	२३ २९	१ ०५	३ ०१
२२	५ १४	७ ३४	९ ५२	१२ ०८	१४ २८	१६ ४६	१८ ४९	२० ३२	२२ ००	२३ २५	१ ०१	२ ५७
२३	५ ११	७ ३१	९ ४९	१२ ०५	१४ २५	१६ ४३	१८ ४६	२० २९	२१ ५७	२३ २२	० ५८	२ ५३
२४	५ ०७	७ २७	९ ४५	१२ ०१	१४ २१	१६ ३९	१८ ४२	२० २५	२१ ५३	२३ १८	० ५४	२ ४९
२५	५ ०३	७ २३	९ ४१	११ ५७	१४ १७	१६ ३५	१८ ३८	२० २१	२१ ४९	२३ १४	० ५०	२ ४५
२६	४ ५९	७ १९	९ ३७	११ ५३	१४ १३	१६ ३१	१८ ३४	२० १७	२१ ४५	२३ १०	० ४६	२ ४१
२७	४ ५५	७ १५	९ ३३	११ ४९	१४ ०९	१६ २७	१८ ३०	२० १३	२१ ४१	२३ ०६	० ४२	२ ३७
२८	४ ५१	७ ११	९ २९	११ ४५	१४ ०५	१६ २३	१८ २६	२० ०९	२१ ३७	२३ ०२	० ३८	२ ३३
२९	४ ४७	७ ०७	९ २५	११ ४१	१४ ०१	१६ १९	१८ २२	२० ०५	२१ ३३	२२ ५८	० ३४	२ २९
३०	४ ४३	७ ३	९ २१	११ ३७	१३ ५७	१६ १५	१८ १८	२० ०१	२१ २९	२२ ५४	० ३०	२ २५
३१	४ ३९	६ ५९	९ १७	११ ३३	१३ ५३	१६ ११	१८ १४	१९ ५७	२१ २५	२२ ५०	० २६	२ २१

अगस्त दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाइम घन्टा-मिनट

ता.	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन
१	६ ५५	९ १३	११ ३०	१३ ४९	१६ ०७	१८ ११	१९ ५३	२१ २१	२२ ४७	० २२	२ १८	४ ३१
२	६ ५१	९ ०९	११ २६	१३ ४५	१६ ०३	१८ ०७	१९ ४९	२१ १७	२२ ४३	० १८	२ १४	४ २७
३	६ ४७	९ ०५	११ २२	१३ ४१	१५ ५९	१८ ०३	१९ ४५	२१ १३	२२ ३९	० १४	२ १०	४ २३
४	६ ४३	९ ०१	११ १८	१३ ३७	१५ ५५	१७ ५९	१९ ४१	२१ ०९	२२ ३५	० १०	२ ०६	४ १९
५	६ ४०	८ ५८	११ १५	१३ ३४	१५ ५२	१७ ५६	१९ ३८	२१ ०६	२२ ३२	० ०७	२ ०३	४ १६
६	६ ३६	८ ५४	११ ११	१३ ३०	१५ ४८	१७ ५२	१९ ३४	२१ ०२	२२ २८	० ०३	१ ५९	४ १२
७	६ ३२	८ ५०	११ ०७	१३ २६	१५ ४४	१७ ४८	१९ ३०	२० ५८	२२ २४	२३ ५९	१ ५५	४ ०८
८	६ २८	८ ४६	११ ०३	१३ २२	१५ ४०	१७ ४४	१९ २६	२० ५४	२२ २०	२३ ५५	१ ५१	४ ०४
९	६ २४	८ ४२	१० ५९	१३ १८	१५ ३६	१७ ४०	१९ २२	२० ५०	२२ १६	२३ ५१	१ ४७	४ ००
१०	६ २०	८ ३८	१० ५५	१३ १४	१५ ३२	१७ ३६	१९ १८	२० ४६	२२ १२	२३ ४७	१ ४३	३ ५६
११	६ १६	८ ३४	१० ५१	१३ १०	१५ २८	१७ ३२	१९ १४	२० ४२	२२ ०८	२३ ४३	१ ३९	३ ५२
१२	६ १२	८ ३०	१० ४७	१३ ०६	१५ २४	१७ २८	१९ १०	२० ३८	२२ ०४	२३ ३९	१ ३५	३ ४८
१३	६ ०८	८ २६	१० ४३	१३ ०२	१५ २०	१७ २४	१९ ०६	२० ३४	२२ ००	२३ ३५	१ ३१	३ ४४
१४	६ ०४	८ २२	१० ३९	१२ ५८	१५ १६	१७ २०	१९ ०२	२० ३०	२१ ५६	२३ ३१	१ २७	३ ४०
१५	६ ००	८ १८	१० ३५	१२ ५४	१५ १२	१७ १६	१८ ५८	२० २६	२१ ५२	२३ २७	१ २३	३ ३६
१६	५ ५६	८ १४	१० ३१	१२ ५०	१५ ०८	१७ १२	१८ ५४	२० २२	२१ ४८	२३ २३	१ १९	३ ३२
१७	५ ५२	८ १०	१० २७	१२ ४६	१५ ०४	१७ ०८	१८ ५०	२० १८	२१ ४४	२३ १९	१ १५	३ २८
१८	५ ४८	८ ०६	१० २३	१२ ४२	१५ ००	१७ ०४	१८ ४६	२० १४	२१ ४०	२३ १५	१ ११	३ २४
१९	५ ४४	८ ०२	१० १९	१२ ३८	१४ ५६	१७ ००	१८ ४२	२० १०	२१ ३६	२३ ११	१ ०७	३ २०
२०	५ ४०	७ ५८	१० १५	१२ ३४	१४ ५२	१६ ५६	१८ ३८	२० ०६	२१ ३२	२३ ०७	१ ०३	३ १६
२१	५ ३७	७ ५५	१० १२	१२ ३१	१४ ४९	१६ ५३	१८ ३५	२० ०३	२१ २९	२३ ०४	१ ००	३ १३
२२	५ ३३	७ ५१	१० ०८	१२ २७	१४ ४५	१६ ४९	१८ ३१	१९ ५९	२१ २५	२३ ००	० ५६	३ ०९
२३	५ २९	७ ४७	१० ०४	१२ २३	१४ ४१	१६ ४५	१८ २७	१९ ५५	२१ २१	२२ ५६	० ५२	३ ०५
२४	५ २५	७ ४३	१० ००	१२ १९	१४ ३७	१६ ४१	१८ २३	१९ ५१	२१ १७	२२ ५२	० ४८	३ ०१
२५	५ २१	७ ३९	९ ५६	१२ १५	१४ ३३	१६ ३७	१८ १९	१९ ४७	२१ १३	२२ ४८	० ४४	२ ५७
२६	५ १७	७ ३५	९ ५२	१२ ११	१४ २९	१६ ३३	१८ १५	१९ ४३	२१ ०९	२२ ४४	० ४०	२ ५३
२७	५ १३	७ ३१	९ ४८	१२ ०७	१४ २५	१६ २९	१८ ११	१९ ३९	२१ ०५	२२ ४०	० ३६	२ ४९
२८	५ १०	७ २८	९ ४५	१२ ०४	१४ २२	१६ २६	१८ ०८	१९ ३६	२१ ०२	२२ ३७	० ३३	२ ४६
२९	५ ०६	७ २४	९ ४१	१२ ००	१४ १८	१६ २२	१८ ०४	१९ ३२	२० ५८	२२ ३३	० २९	२ ४२
३०	५ ०२	७ २०	९ ३७	११ ५६	१४ १४	१६ १८	१८ ००	१९ २८	२० ५४	२२ २९	० २५	२ ३८
३१	४ ५८	७ १६	९ ३३	११ ५२	१४ १०	१६ १४	१७ ५६	१९ २४	२० ५०	२२ २५	० २१	२ ३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सितम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क
१	७ १२	९ २९	११ ४९	१४ ०६	१६ १०	१७ ५३	१९ २०	२० ४६	२२ २२	० १७	२ ३१	४ ५०
२	७ ०८	९ २५	११ ४५	१४ ०२	१६ ०६	१७ ४९	१९ १६	२० ४२	२२ १८	० १३	२ २७	४ ४६
३	७ ०४	९ २१	११ ४१	१३ ५८	१६ ०२	१७ ४५	१९ १२	२० ३८	२२ १४	० ०९	२ २३	४ ४२
४	७ ००	९ १७	११ ३७	१३ ५४	१५ ५८	१७ ४१	१९ ०८	२० ३४	२२ १०	० ०५	२ १९	४ ३८
५	६ ५६	९ १३	११ ३३	१३ ५०	१५ ५४	१७ ३७	१९ ०४	२० ३०	२२ ०६	० ०१	२ १५	४ ३४
६	६ ५२	९ ०९	११ २९	१३ ४६	१५ ५०	१७ ३३	१९ ००	२० २६	२२ ०२	२३ ५७	२ ११	४ ३०
७	६ ४८	९ ०५	११ २५	१३ ४२	१५ ४६	१७ २९	१८ ५६	२० २२	२१ ५८	२३ ५३	२ ०७	४ २६
८	६ ४४	९ ०१	११ २१	१३ ३८	१५ ४२	१७ २५	१८ ५२	२० १८	२१ ५४	२३ ४९	२ ०३	४ २२
९	६ ४०	८ ५७	११ १७	१३ ३४	१५ ३८	१७ २१	१८ ४८	२० १४	२१ ५०	२३ ४५	१ ५९	४ १८
१०	६ ३६	८ ५३	११ १३	१३ ३०	१५ ३४	१७ १७	१८ ४४	२० १०	२१ ४६	२३ ४१	१ ५५	४ १४
११	६ ३२	८ ४९	११ ०९	१३ २६	१५ ३०	१७ १३	१८ ४०	२० ०६	२१ ४२	२३ ३७	१ ५१	४ १०
१२	६ २७	८ ४४	११ ०४	१३ २१	१५ २५	१७ ०८	१८ ३५	२० ०१	२१ ३७	२३ ३२	१ ४६	४ ०५
१३	६ २३	८ ४०	११ ००	१३ १७	१५ २१	१७ ०४	१८ ३१	१९ ५७	२१ ३३	२३ २८	१ ४२	४ ०१
१४	६ १९	८ ३६	१० ५६	१३ १३	१५ १७	१७ ००	१८ २७	१९ ५३	२१ २९	२३ २४	१ ३८	३ ५७
१५	६ १५	८ ३२	१० ५२	१३ ०९	१५ १३	१६ ५६	१८ २३	१९ ४९	२१ २५	२३ २०	१ ३४	३ ५३
१६	६ ११	८ २८	१० ४८	१३ ०५	१५ ०९	१६ ५२	१८ १९	१९ ४५	२१ २१	२३ १६	१ ३०	३ ४९
१७	६ ०७	८ २४	१० ४४	१३ ०१	१५ ०५	१६ ४८	१८ १५	१९ ४१	२१ १७	२३ १२	१ २६	३ ४५
१८	६ ०३	८ २०	१० ४०	१२ ५७	१५ ०१	१६ ४४	१८ ११	१९ ३७	२१ १३	२३ ०८	१ २२	३ ४१
१९	५ ५९	८ १६	१० ३६	१२ ५३	१४ ५७	१६ ४०	१८ ०७	१९ ३३	२१ ०९	२३ ०४	१ १८	३ ३७
२०	५ ५५	८ १२	१० ३२	१२ ४९	१४ ५३	१६ ३६	१८ ०३	१९ २९	२१ ०५	२३ ००	१ १४	३ ३३
२१	५ ५१	८ ०८	१० २८	१२ ४५	१४ ४९	१६ ३२	१७ ५९	१९ २५	२१ ०१	२२ ५६	१ १०	३ २९
२२	५ ४७	८ ०४	१० २४	१२ ४१	१४ ४५	१६ २८	१७ ५५	१९ २१	२० ५७	२२ ५२	१ ०६	३ २५
२३	५ ४३	८ ००	१० २०	१२ ३७	१४ ४१	१६ २४	१७ ५१	१९ १७	२० ५३	२२ ४८	१ ०२	३ २१
२४	५ ३९	७ ५६	१० १६	१२ ३३	१४ ३७	१६ २०	१७ ४७	१९ १३	२० ४९	२२ ४४	० ५८	३ १७
२५	५ ३५	७ ५२	१० १२	१२ २९	१४ ३३	१६ १६	१७ ४३	१९ ०९	२० ४५	२२ ४०	० ५४	३ १३
२६	५ ३१	७ ४८	१० ०८	१२ २५	१४ २९	१६ १२	१७ ३९	१९ ०५	२० ४१	२२ ३६	० ५०	३ ०९
२७	५ २७	७ ४४	१० ०४	१२ २१	१४ २५	१६ ०८	१७ ३५	१९ ०१	२० ३७	२२ ३२	० ४६	३ ०५
२८	५ २३	७ ४०	१० ००	१२ १७	१४ २१	१६ ०७	१७ ३१	१८ ५७	२० ३३	२२ २८	० ४२	३ ०१
२९	५ १९	७ ३६	९ ५६	१२ १३	१४ १७	१६ ०४	१७ २७	१८ ५३	२० २९	२२ २४	० ३८	२ ५७
३०	५ १५	७ ३२	९ ५२	१२ ०९	१४ १३	१५ ५६	१७ २३	१८ ४९	२० २५	२२ २०	० ३४	२ ५३

अक्टूबर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टै. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह
१	७ ३०	९ ५०	१२ ०८	१४ ११	१५ ५४	१७ २२	१८ ४७	२० २३	२२ १९	० ३२	२ ५२	५ ०९
२	७ २६	९ ४६	१२ ०४	१४ ०७	१५ ५०	१७ १८	१८ ४३	२० १९	२२ १५	० २८	२ ४८	५ ०५
३	७ २२	९ ४२	१२ ००	१४ ०३	१५ ४६	१७ १४	१८ ३९	२० १५	२२ ११	० २४	२ ४४	५ ०१
४	७ १८	९ ३८	११ ५६	१३ ५९	१५ ४२	१७ १०	१८ ३५	२० ११	२२ ०७	० २०	२ ४०	४ ५७
५	७ १३	९ ३३	११ ५१	१३ ५४	१५ ३७	१७ ०५	१८ ३०	२० ०६	२२ ०२	० १५	२ ३५	४ ५२
६	७ ०९	९ २९	११ ४७	१३ ५०	१५ ३३	१७ ०१	१८ २६	२० ०२	२१ ५८	० ११	२ ३१	४ ४८
७	७ ०५	९ २५	११ ४३	१३ ४६	१५ २९	१६ ५७	१८ २२	१९ ५८	२१ ५४	० ०७	२ २७	४ ४४
८	७ ०१	९ २१	११ ३९	१३ ४२	१५ २५	१६ ५३	१८ १८	१९ ५४	२१ ५०	० ०३	२ २३	४ ४०
९	६ ५७	९ १७	११ ३५	१३ ३८	१५ २१	१६ ४९	१८ १४	१९ ५०	२१ ४६	२३ ५९	२ १९	४ ३६
१०	६ ५३	९ १३	११ ३१	१३ ३४	१५ १७	१६ ४५	१८ १०	१९ ४६	२१ ४२	२३ ५५	२ १५	४ ३२
११	६ ४९	९ ०९	११ २७	१३ ३०	१५ १३	१६ ४१	१८ ०६	१९ ४२	२१ ३८	२३ ५१	२ ११	४ २८
१२	६ ४५	९ ०५	११ २३	१३ २६	१५ ०९	१६ ३७	१८ ०२	१९ ३८	२१ ३४	२३ ४७	२ ०७	४ २४
१३	६ ४१	९ ०१	११ १९	१३ २२	१५ ०५	१६ ३३	१७ ५८	१९ ३४	२१ ३०	२३ ४३	२ ०३	४ २०
१४	६ ३७	८ ५७	११ १५	१३ १८	१५ ०१	१६ २९	१७ ५४	१९ ३०	२१ २६	२३ ३९	१ ५९	४ १६
१५	६ ३३	८ ५३	११ ११	१३ १४	१४ ५७	१६ २५	१७ ५०	१९ २६	२१ २२	२३ ३५	१ ५५	४ १२
१६	६ २९	८ ४९	११ ०७	१३ १०	१४ ५३	१६ २१	१७ ४६	१९ २२	२१ १८	२३ ३१	१ ५१	४ ०८
१७	६ २५	८ ४५	११ ०३	१३ ०६	१४ ४९	१६ १७	१७ ४२	१९ १८	२१ १४	२३ २७	१ ४७	४ ०४
१८	६ २१	८ ४१	१० ५९	१३ ०२	१४ ४५	१६ १३	१७ ३८	१९ १४	२१ १०	२३ २३	१ ४३	४ ००
१९	६ १७	८ ३७	१० ५५	१२ ५८	१४ ४१	१६ ०९	१७ ३४	१९ १०	२१ ०६	२३ १९	१ ३९	३ ५६
२०	६ १३	८ ३३	१० ५१	१२ ५४	१४ ३७	१६ ०५	१७ ३०	१९ ०६	२१ ०२	२३ १५	१ ३५	३ ५२
२१	६ ०९	८ २९	१० ४७	१२ ५०	१४ ३३	१६ ०१	१७ २६	१९ ०२	२० ५८	२३ ११	१ ३१	३ ४८
२२	६ ०५	८ २५	१० ४३	१२ ४६	१४ २९	१५ ५७	१७ २२	१८ ५८	२० ५४	२३ ०७	१ २७	३ ४४
२३	६ ०१	८ २१	१० ३९	१२ ४२	१४ २५	१५ ५३	१७ १८	१८ ५४	२० ५०	२३ ०३	१ २३	३ ४०
२४	५ ५७	८ १७	१० ३५	१२ ३८	१४ २१	१५ ४९	१७ १४	१८ ५०	२० ४६	२२ ५९	१ १९	३ ३६
२५	५ ५३	८ १३	१० ३१	१२ ३४	१४ १७	१५ ४५	१७ १०	१८ ४६	२० ४२	२२ ५५	१ १५	३ ३२
२६	५ ५०	८ १०	१० २८	१२ ३१	१४ १४	१५ ४२	१७ ०७	१८ ४३	२० ३९	२२ ५२	१ १२	३ २९
२७	५ ४६	८ ०६	१० २४	१२ २७	१४ १०	१५ ३८	१७ ०३	१८ ३९	२० ३५	२२ ४८	१ ०८	३ २५
२८	५ ४२	८ ०२	१० २०	१२ २३	१४ ०६	१५ ३४	१६ ५९	१८ ३५	२० ३१	२२ ४४	१ ०४	३ २१
२९	५ ३८	७ ५८	१० १६	१२ १९	१४ ०२	१५ ३०	१६ ५५	१८ ३१	२० २७	२२ ४०	१ ००	३ १७
३०	५ ३४	७ ५४	१० १२	१२ १५	१३ ५८	१५ २६	१६ ५१	१८ २७	२० २३	२२ ३६	० ५६	३ १३
३१	५ ३०	७ ५०	१० ०८	१२ ११	१३ ५४	१५ २२	१६ ४७	१८ २३	२० १९	२२ ३२	० ५२	३ ०९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

नवम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	तुला	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या
१	७ ४५	१० ०३	१२ ०७	१३ ४९	१५ १७	१६ ४३	१८ १८	२० १४	२२ २८	० ४७	३ ०५	५ २१
२	७ ४१	९ ५९	१२ ०३	१३ ४५	१५ १३	१६ ३९	१८ १४	२० १०	२२ २४	० ४३	३ ०१	५ १७
३	७ ३७	९ ५५	११ ५९	१३ ४१	१५ ०९	१६ ३५	१८ १०	२० ०६	२२ २०	० ३९	२ ५७	५ १३
४	७ ३३	९ ५१	११ ५५	१३ ३७	१५ ०५	१६ ३१	१८ ०६	२० ०२	२२ १६	० ३५	२ ५३	५ ०९
५	७ २९	९ ४७	११ ५१	१३ ३३	१५ ०१	१६ २७	१८ ०२	१९ ५८	२२ १२	० ३१	२ ४९	५ ०५
६	७ २५	९ ४३	११ ४७	१३ २९	१४ ५७	१६ २३	१७ ५८	१९ ५४	२२ ०८	० २७	२ ४५	५ ०१
७	७ २१	९ ३९	११ ४३	१३ २५	१४ ५३	१६ १९	१७ ५४	१९ ५०	२२ ०४	० २३	२ ४१	४ ५७
८	७ १८	९ ३६	११ ४०	१३ २२	१४ ५०	१६ १६	१७ ५१	१९ ४७	२२ ०१	० २०	२ ३८	४ ५४
९	७ १४	९ ३२	११ ३६	१३ १८	१४ ४६	१६ १२	१७ ४७	१९ ४३	२१ ५७	० १६	२ ३४	४ ५०
१०	७ १०	९ २८	११ ३२	१३ १४	१४ ४२	१६ ०८	१७ ४३	१९ ३९	२१ ५३	० १२	२ ३०	४ ४६
११	७ ०६	९ २४	११ २८	१३ १०	१४ ३८	१६ ०४	१७ ३९	१९ ३५	२१ ४९	० ०८	२ २६	४ ४२
१२	७ ०२	९ २०	११ २४	१३ ०६	१४ ३४	१६ ००	१७ ३५	१९ ३१	२१ ४५	० ०४	२ २२	४ ३८
१३	६ ५८	९ १६	११ २०	१३ ०२	१४ ३०	१५ ५६	१७ ३१	१९ २७	२१ ४१	२४ ००	२ १८	४ ३४
१४	६ ५४	९ १२	११ १६	१२ ५८	१४ २६	१५ ५२	१७ २७	१९ २२	२१ ३७	२३ ५६	२ १४	४ ३०
१५	६ ५१	९ ०९	११ १३	१२ ५५	१४ २३	१५ ४९	१७ २४	१९ २०	२१ ३४	२३ ५३	२ ११	४ २७
१६	६ ४७	९ ०५	११ ०९	१२ ५१	१४ १९	१५ ४५	१७ २०	१९ १६	२१ ३०	२३ ४९	२ ०७	४ २३
१७	६ ४३	९ ०१	११ ०५	१२ ४७	१४ १५	१५ ४१	१७ १६	१९ १२	२१ २६	२३ ४५	२ ०३	४ १९
१८	६ ३९	८ ५७	११ ०१	१२ ४३	१४ ११	१५ ३७	१७ १२	१९ ०८	२१ २२	२३ ४१	१ ५९	४ १५
१९	६ ३५	८ ५३	१० ५७	१२ ३९	१४ ०७	१५ ३३	१७ ०८	१९ ०४	२१ १८	२३ ३७	१ ५५	४ ११
२०	६ ३१	८ ४९	१० ५३	१२ ३५	१४ ०३	१५ २९	१७ ०४	१९ ००	२१ १४	२३ ३३	१ ५१	४ ०७
२१	६ २७	८ ४५	१० ४९	१२ ३१	१३ ५९	१५ २५	१७ ००	१८ ५६	२१ १०	२३ २९	१ ४७	४ ०३
२२	६ २३	८ ४१	१० ४५	१२ २७	१३ ५५	१५ २१	१६ ५६	१८ ५२	२१ ०६	२३ २५	१ ४३	३ ५९
२३	६ १९	८ ३७	१० ४१	१२ २३	१३ ५१	१५ १७	१६ ५२	१८ ४८	२१ ०२	२३ २१	१ ३९	३ ५५
२४	६ १५	८ ३३	१० ३७	१२ १९	१३ ४७	१५ १३	१६ ४८	१८ ४४	२० ५८	२३ १७	१ ३५	३ ५१
२५	६ ११	८ २९	१० ३३	१२ १५	१३ ४३	१५ ०९	१६ ४४	१८ ४०	२० ५४	२३ १३	१ ३१	३ ४७
२६	६ ०८	८ २६	१० ३०	१२ १२	१३ ४०	१५ ०६	१६ ४१	१८ ३७	२० ५१	२३ १०	१ २८	३ ४४
२७	६ ०४	८ २२	१० २६	१२ ०८	१३ ३६	१५ ०२	१६ ३७	१८ ३३	२० ४७	२३ ०६	१ २४	३ ४०
२८	६ ००	८ १८	१० २२	१२ ०४	१३ ३२	१४ ५८	१६ ३३	१८ २९	२० ४३	२३ ०२	१ २०	३ ३६
२९	५ ५६	८ १४	१० १८	१२ ००	१३ २८	१४ ५४	१६ २९	१८ २५	२० ३९	२२ ५८	१ १६	३ ३२
३०	५ ५२	८ १०	१० १६	११ ५६	१३ २४	१४ ५०	१६ २५	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

दिसम्बर दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	वृश्चिक	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
१	८ ०६	१० १०	११ ५३	१३ २०	१४ ४६	१६ २२	१८ १७	२० ३१	२२ ५१	१ ०८	३ २५	५ ४४
२	८ ०२	१० ०६	११ ४९	१३ १६	१४ ४२	१६ १८	१८ १३	२० २७	२२ ४७	१ ०४	३ २१	५ ४०
३	७ ५८	१० ०२	११ ४५	१३ १२	१४ ३८	१६ १४	१८ ०९	२० २३	२२ ४३	१ ००	३ १७	५ ३६
४	७ ५४	९ ५८	११ ४१	१३ ०८	१४ ३४	१६ १०	१८ ०५	२० १९	२२ ३९	० ५६	३ १३	५ ३२
५	७ ५०	९ ५४	११ ३७	१३ ०४	१४ ३०	१६ ०६	१८ १	२० १५	२२ ३५	० ५२	३ ०९	५ २८
६	७ ४६	९ ५०	११ ३३	१३ ००	१४ २६	१६ ०२	१७ ५७	२० ११	२२ ३१	० ४८	३ ०५	५ २४
७	७ ४२	९ ४६	११ २९	१२ ५६	१४ २२	१५ ५८	१७ ५३	२० ०७	२२ २७	० ४४	३ ०१	५ २०
८	७ ३९	९ ४३	११ २६	१२ ५३	१४ १९	१५ ५५	१७ ५०	२० ०४	२२ २४	० ४१	२ ५८	५ १७
९	७ ३५	९ ३९	११ २२	१२ ४९	१४ १५	१५ ५१	१७ ४६	२० ००	२२ २०	० ३७	२ ५४	५ १३
१०	७ ३१	९ ३५	११ १८	१२ ४५	१४ ११	१५ ४७	१७ ४२	१९ ५६	२२ १६	० ३३	२ ५०	५ ०९
११	७ २७	९ ३१	११ १४	१२ ४१	१४ ०७	१५ ४३	१७ ३८	१९ ५२	२२ १२	० २९	२ ४६	५ ०५
१२	७ २३	९ २७	११ १०	१२ ३७	१४ ०३	१५ ३९	१७ ३४	१९ ४८	२२ ०८	० २५	२ ४२	५ ०१
१३	७ १९	९ २३	११ ०६	१२ ३३	१३ ५९	१५ ३५	१७ ३०	१९ ४४	२२ ०४	० २१	२ ३८	४ ५७
१४	७ १५	९ १९	११ ०२	१२ २९	१३ ५५	१५ ३१	१७ २६	१९ ४०	२२ ००	० १७	२ ३४	४ ५३
१५	७ ११	९ १५	१० ५८	१२ २५	१३ ५१	१५ २७	१७ २२	१९ ३६	२१ ५६	० १३	२ ३०	४ ४९
१६	७ ०७	९ ११	१० ५४	१२ २१	१३ ४७	१५ २३	१७ १८	१९ ३२	२१ ५२	० ०९	२ २६	४ ४५
१७	७ ०३	९ ०७	१० ५०	१२ १७	१३ ४३	१५ १९	१७ १४	१९ २८	२१ ४८	० ०५	२ २२	४ ४१
१८	६ ५९	९ ०३	१० ४६	१२ १३	१३ ३९	१५ १५	१७ १०	१९ २४	२१ ४४	० ०१	२ १८	४ ३७
१९	६ ५५	८ ५९	१० ४२	१२ ०९	१३ ३५	१५ ११	१७ ०६	१९ २०	२१ ४०	२३ ५७	२ १४	४ ३३
२०	६ ५१	८ ५५	१० ३८	१२ ०५	१३ ३१	१५ ०७	१७ ०२	१९ १६	२१ ३६	२३ ५३	२ १०	४ २९
२१	६ ४७	८ ५१	१० ३४	१२ ०१	१३ २७	१५ ०३	१६ ५८	१९ १२	२१ ३२	२३ ४९	२ ०६	४ २५
२२	६ ४३	८ ४७	१० ३०	११ ५७	१३ २३	१४ ५९	१६ ५४	१९ ०८	२१ २८	२३ ४५	२ ०२	४ २१
२३	६ ४०	८ ४४	१० २७	११ ५४	१३ २०	१४ ५६	१६ ५१	१९ ०५	२१ २५	२३ ४२	१ ५९	४ १८
२४	६ ३६	८ ४०	१० २३	११ ५०	१३ १६	१४ ५२	१६ ४७	१९ ०१	२१ २१	२३ ३८	१ ५५	४ १४
२५	६ ३२	८ ३६	१० १९	११ ४६	१३ १२	१४ ४८	१६ ४३	१८ ५७	२१ १७	२३ ३४	१ ५१	४ १०
२६	६ २८	८ ३२	१० १५	११ ४२	१३ ०८	१४ ४४	१६ ३९	१८ ५३	२१ १३	२३ ३०	१ ४७	४ ०६
२७	६ २४	८ २८	१० ११	११ ३८	१३ ०४	१४ ४०	१६ ३५	१८ ४९	२१ ०९	२३ २६	१ ४३	४ ०२
२८	६ २०	८ २४	१० ०७	११ ३४	१३ ००	१४ ३६	१६ ३१	१८ ४५	२१ ०५	२३ २२	१ ३९	३ ५८
२९	६ १७	८ २१	१० ०४	११ ३१	१२ ५७	१४ ३३	१६ २८	१८ ४२	२१ ०२	२३ १९	१ ३६	३ ५५
३०	६ १३	८ १७	१० ००	११ २७	१२ ५३	१४ २९	१६ २४	१८ ३८	२० ५८	२३ १५	१ ३२	३ ५१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जनवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	धन	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक
१	८ ०९	९ ५२	११ २०	१२ ४५	१४ २१	१६ १७	१८ ३०	२० ५०	२३ ०८	१ २४	३ ४४	६ ०१
२	८ ०५	९ ४८	११ १६	१२ ४१	१४ १७	१६ १३	१८ २६	२० ४६	२३ ०४	१ २०	३ ४०	५ ५७
३	८ ०१	९ ४४	११ १२	१२ ३७	१४ १३	१६ ०९	१८ २२	२० ४२	२३ ००	१ १६	३ ३६	५ ५३
४	७ ५७	९ ४०	११ ०८	१२ ३३	१४ ०९	१६ ०५	१८ १८	२० ३८	२२ ५६	१ १२	३ ३२	५ ४९
५	७ ५३	९ ३६	११ ०४	१२ २९	१४ ०५	१६ ०१	१८ १४	२० ३४	२२ ५२	१ ०८	३ २८	५ ४५
६	७ ४९	९ ३२	११ ००	१२ २५	१४ ०१	१५ ५७	१८ १०	२० ३०	२२ ४८	१ ०४	३ २४	५ ४१
७	७ ४५	९ २८	१० ५६	१२ २१	१३ ५७	१५ ५३	१८ ०६	२० २६	२२ ४४	१ ००	३ २०	५ ३७
८	७ ४२	९ २५	१० ५३	१२ १८	१३ ५४	१५ ५०	१८ ०३	२० २३	२२ ४१	० ५७	३ १७	५ ३४
९	७ ३८	९ २१	१० ४९	१२ १४	१३ ५०	१५ ४६	१७ ५९	२० १९	२२ ३७	० ५३	३ १३	५ ३०
१०	७ ३४	९ १७	१० ४५	१२ १०	१३ ४६	१५ ४२	१७ ५५	२० १५	२२ ३३	० ४९	३ ०९	५ २६
११	७ ३०	९ १३	१० ४१	१२ ०६	१३ ४२	१५ ३८	१७ ५१	२० ११	२२ २९	० ४५	३ ०५	५ २२
१२	७ २६	९ ०९	१० ३७	१२ ०२	१३ ३८	१५ ३४	१७ ४७	२० ०७	२२ २५	० ४१	३ ०१	५ १८
१३	७ २२	९ ०५	१० ३३	११ ५८	१३ ३४	१५ ३०	१७ ४३	२० ०३	२२ २१	० ३७	२ ५७	५ १४
१४	७ १८	९ ०१	१० २९	११ ५४	१३ ३०	१५ २६	१७ ३९	१९ ५९	२२ १७	० ३३	२ ५३	५ १०
१५	७ १४	८ ५७	१० २५	११ ५०	१३ २६	१५ २२	१७ ३५	१९ ५५	२२ १३	० २९	२ ४९	५ ०६
१६	७ १०	८ ५३	१० २१	११ ४६	१३ २२	१५ १८	१७ ३१	१९ ५१	२२ ०९	० २५	२ ४५	५ ०२
१७	७ ०६	८ ४९	१० १७	११ ४२	१३ १८	१५ १४	१७ २७	१९ ४७	२२ ०५	० २१	२ ४१	४ ५८
१८	७ ०२	८ ४५	१० १३	११ ३८	१३ १४	१५ १०	१७ २३	१९ ४३	२२ ०१	० १७	२ ३७	४ ५४
१९	६ ५८	८ ४१	१० ०९	११ ३४	१३ १०	१५ ०६	१७ १९	१९ ३९	२१ ५७	० १३	२ ३३	४ ५०
२०	६ ५४	८ ३७	१० ०५	११ ३०	१३ ०६	१५ ०२	१७ १५	१९ ३५	२१ ५३	० ०९	२ २९	४ ४६
२१	६ ५०	८ ३३	१० ०१	११ २६	१३ ०२	१४ ५८	१७ ११	१९ ३१	२१ ४९	० ०५	२ २५	४ ४२
२२	६ ४६	८ २९	९ ५७	११ २२	१२ ५८	१४ ५४	१७ ०७	१९ २७	२१ ४५	० ०१	२ २१	४ ३८
२३	६ ४२	८ २५	९ ५३	११ १८	१२ ५४	१४ ५०	१७ ०३	१९ २३	२१ ४१	२३ ५७	२ १७	४ ३४
२४	६ ३८	८ २१	९ ४९	११ १४	१२ ५०	१४ ४६	१६ ५९	१९ १९	२१ ३७	२३ ५३	२ १३	४ ३०
२५	६ ३४	८ १७	९ ४५	११ १०	१२ ४६	१४ ४२	१६ ५५	१९ १५	२१ ३३	२३ ४९	२ ०९	४ २६
२६	६ ३०	८ १३	९ ४१	११ ०६	१२ ४२	१४ ३८	१६ ५१	१९ ११	२१ २९	२३ ४५	२ ०५	४ २२
२७	६ २६	८ ०९	९ ३७	११ ०२	१२ ३८	१४ ३४	१६ ४७	१९ ०७	२१ २५	२३ ४१	२ ०१	४ १८
२८	६ २२	८ ०५	९ ३३	१० ५८	१२ ३४	१४ ३०	१६ ४३	१९ ०३	२१ २१	२३ ३७	१ ५७	४ १४
२९	६ १९	८ ०२	९ ३०	१० ५५	१२ ३१	१४ २७	१६ ४०	१९ ००	२१ १८	२३ ३४	१ ५४	४ ११
३०	६ १५	७ ५८	९ २६	१० ५१	१२ २७	१४ २३	१६ ३६	१८ ५६	२१ १४	२३ ३०	१ ५०	४ ०७
३१	६ ११	७ ५४	९ २२	१० ४७	१२ २३	१४ १९	१६ ३२	१८ ५२	२१ १०	२३ २६	१ ४६	४ ०३

फरवरी दैनिक लग्नों का समाप्तिकाल भा.स्टैं. टाईम घन्टा-मिनट

ता.	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला	वृश्चिक	धन
१	७ ५०	९ १८	१० ४४	१२ १८	१४ १४	१६ २८	१८ ४७	२१ ०५	२३ २२	१ ४१	३ ५९	६ ०२
२	७ ४६	९ १४	१० ४०	१२ १४	१४ १०	१६ २४	१८ ४३	२१ ०१	२३ १८	१ ३७	३ ५५	५ ५८
३	७ ४२	९ १०	१० ३६	१२ १०	१४ ०६	१६ २०	१८ ३९	२० ५७	२३ १४	१ ३३	३ ५१	५ ५४
४	७ ३८	९ ०६	१० ३२	१२ ०६	१४ ०२	१६ १६	१८ ३५	३० ५३	२३ १०	१ २९	३ ४७	५ ५०
५	७ ३५	९ ०३	१० २९	१२ ०३	१३ ५९	१६ १३	१८ ३२	२० ५०	२३ ०७	१ २६	३ ४४	५ ४७
६	७ ३१	८ ५९	१० २५	११ ५९	१३ ५५	१६ ०९	१८ २८	२० ४६	२३ ०३	१ २२	३ ४०	५ ४३
७	७ २७	८ ५५	१० २१	११ ५५	१३ ५१	१६ ०५	१८ २४	२० ४२	२२ ५९	१ १८	३ ३६	५ ३९
८	७ २३	८ ५१	१० १७	११ ५१	१३ ४७	१६ ०१	१८ २०	२० ३८	२२ ५५	१ १४	३ ३२	५ ३५
९	७ १९	८ ४७	१० १३	११ ४७	१३ ४३	१५ ५७	१८ १६	२० ३४	२२ ५१	१ १०	३ २८	५ ३१
१०	७ १५	८ ४३	१० ०९	११ ४३	१३ ३९	१५ ५३	१८ १२	२० ३०	२२ ४७	१ ०६	३ २४	५ २७
११	७ ११	८ ३९	१० ०५	११ ३९	१३ ३५	१५ ४९	१८ ०८	२० २६	२२ ४३	१ ०२	३ २०	५ २३
१२	७ ०७	८ ३५	१० ०१	११ ३५	१३ ३१	१५ ४५	१८ ०४	२० २२	२२ ३९	० ५८	३ १६	५ १९
१३	७ ०३	८ ३१	९ ५७	११ ३१	१३ २७	१५ ४१	१८ ००	२० १८	२२ ३५	० ५४	३ १२	५ १५
१४	६ ५९	८ २७	९ ५३	११ २७	१३ २३	१५ ३७	१७ ५६	२० १४	२२ ३१	० ५०	३ ०८	५ ११
१५	६ ५५	८ २३	९ ४९	११ २३	१३ १९	१५ ३३	१७ ५२	२० १०	२२ २७	० ४६	३ ०४	५ ०७
१६	६ ५१	८ १९	९ ४५	११ १९	१३ १५	१५ २९	१७ ४८	२० ०६	२२ २३	० ४२	३ ००	५ ०३
१७	६ ४७	८ १५	९ ४१	११ १५	१३ ११	१५ २५	१७ ४४	२० ०२	२२ १९	० ३८	२ ५६	४ ५९
१८	६ ४३	८ ११	९ ३७	११ ११	१३ ०७	१५ २१	१७ ४०	१९ ५८	२२ १५	० ३४	२ ५२	४ ५५
१९	६ ३९	८ ०७	९ ३३	११ ०७	१३ ०३	१५ १७	१७ ३६	१९ ५४	२२ ११	० ३०	२ ४८	४ ५१
२०	६ ३४	८ ०२	९ २८	११ ०२	१२ ५८	१५ १२	१७ ३१	१९ ४९	२२ ०६	० २५	२ ४३	४ ४६
२१	६ ३०	७ ५८	९ २४	१० ५८	१२ ५४	१५ ०८	१७ २७	१९ ४५	२२ ०२	० २१	२ ३९	४ ४२
२२	६ २६	७ ५४	९ २०	१० ५४	१२ ५०	१५ ०४	१७ २३	१९ ४१	२१ ५८	० १७	२ ३५	४ ३८
२३	६ २२	७ ५०	९ १६	१० ५०	१२ ४६	१५ ००	१७ १९	१९ ३७	२१ ५४	० १३	२ ३१	४ ३४
२४	६ १८	७ ४६	९ १२	१० ४६	१२ ४२	१४ ५६	१७ १५	१९ ३३	२१ ५०	० ०९	२ २७	४ ३०
२५	६ १५	७ ४३	९ ०९	१० ४३	१२ ३९	१४ ५३	१७ १२	१९ ३०	२१ ४७	० ०६	२ २४	४ २७
२६	६ ११	७ ३९	९ ०५	१० ३९	१२ ३५	१४ ४९	१७ ०८	१९ २६	२१ ४३	० ०२	२ २०	४ २३
२७	६ ०७	७ ३५	९ ०१	१० ३५	१२ ३१	१४ ४५	१७ ०४	१९ २२	२१ ३९	२३ ५८	२ १६	४ १९
२८	६ ०३	७ ३१	८ ५७	१० ३१	१२ २७	१४ ४१	१७ ००	१९ १८	२१ ३५	२३ ५४	२ १२	४ १५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदयास्त एवं दिनमान गणित प्रकार

सूर्योदयास्त ज्ञात करने के लिए निम्न उपकरणों की आवश्यकता होती है—

१. रवि क्रांति—यह पृष्ठ ९५ पर दी गई है। रवि क्रांति सारिणी से अभीष्ट तारीख की सहायता से ज्ञात हो जाएगी।

२. चर—चर सारिणी पृष्ठ ९३-९४ पर दी गई है। सारिणी से जन्म स्थान के अक्षांश व रवि क्रांति की सहायता से अनुपात द्वारा मिनट-सेकेण्ड में चर ज्ञात होंगे। यदि रवि क्रांति व अभीष्ट नगर के अक्षांश दोनों उत्तर के हों तो ६ घंटे में से चर मिनट-सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घं. में चर मि. सेकेण्ड जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। यदि रवि क्रांति दक्षिण हो एवं अभीष्ट नगर के अक्षांश उत्तर हों तो ६ घंटे में चर मिनट सेकेण्ड को जोड़ने पर स्थानीय (लोकल) सूर्योदय एवं ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड घटाने पर स्थानीय (लोकल) सूर्यास्त ज्ञात होगा। नोट—चर सारिणी चरांतर सारिणी से भिन्न है।

३. अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर—अक्षांश व स्टैण्डर्ड अन्तर पृष्ठ ९७-१०० पर दी गई अक्षांशादि सारिणी से अभीष्ट नगर के अक्षांश व स्टैण्डर्ड अंतर मिनट-सेकेण्ड में ज्ञात किए जा सकते हैं। यदि स्टैण्डर्ड अंतर धन हो तो स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में स्टैण्डर्ड अंतर घटाएं और यदि स्टैण्डर्ड अंतर ऋण हो तो प्राप्त स्थानीय (लोकल) सूर्योदयास्त में जोड़ें तो अभीष्ट स्थान के मध्याह्न स्टैण्डर्ड सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

४. वेलान्तर—वेलांतर सारिणी पृष्ठ ९५ पर दी गई मास तारीखों परि वेलांतरम् सारिणी से अभीष्ट तारीख व माह की सहायता से ज्ञात किए जा सकते हैं। इनको मध्याह्न सूर्योदयास्त में चिन्हानुसार जोड़ने घटाने से स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में अभीष्ट तारीख के अभीष्ट स्थान के सूर्योदयास्त ज्ञात होंगे।

५. दिनमान—प्राप्त चर मिनट सेकेण्ड को ५ से गुणा करने पर पल होंगे यदि सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में चर के मिनट-सेकेण्ड जोड़े हों तो यहां पर इन पलों को ३० घटी में से घटा देंगे और यदि चर मि. से बने सूर्योदय निकालने के लिए ६ घंटे में से चर मिनट सेकेण्ड को घटाए हों तो प्राप्त पलों को ३० घटी में जोड़ने पर अभीष्ट नगर का दिन मान प्राप्त होगा। दिनमान को ६० घटी में से घटाने पर रात्रिमान प्राप्त होगा।

उदाहरण—१. नागपुर में १२ अक्टूबर का सूर्योदयास्त एवं दिनमान निकालना है। नागपुर अक्षांश २१।०९ स्टैण्डर्ड अंतर-१३।३६, १२ अक्टू. की रवि क्रांति ०७।१२ दक्षिण, वेलांतर -१३।२१, चर-सारिणी में ऊपर आड़ी पंक्ति में रवि क्रांति व खड़ी बांई ओर की पंक्ति में अक्षांश हैं।

मि. से.

अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८	
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ८ का चर से	१२।२२	१२।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया		- १०।४८
अंतर		= १।३४

सेकेण्ड बनाये १×६०+३४=९४ सेकेण्ड

हमें रवि क्रांति में १२ कला का मान चाहिए

६० कला में ९४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो १२ कला में कितना बढ़ेगा।

९४×१२=११२८÷६०=१८ सेकेण्ड ४८ प्रति सेकेण्ड या १९ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांश २२ व रवि क्रांति ७ का चर से	११।२२
अक्षांश २१ व रवि क्रांति ७ का चर घटाया	१०।४८
अंतर	=०।३४

अत: अक्षांश बढ़ने पर ३४ सेकेण्ड की वृद्धि होती है।

हमें अक्षांश में ९ कला का मान चाहिए।

६० कला में ३४ सेकेण्ड चर बढ़ता है तो ९ कला में कितना चर बढ़ेगा?

३४×९=३०६÷६०=५ सेकेण्ड ६ प्रति सेकेण्ड या ५ सेकेण्ड की वृद्धि होगी।

	मि.से.
अक्षांक्ष की २१ व रवि क्रांति ७ का चर	१०।४८
रवि क्रांति १२ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।१९
अक्षांश ९ कला का मान (वृद्धि होने से धन)	+०।०५
अक्षांश २१।०९ व रवि क्रांति ७।१२ का सूक्ष्म शुद्ध चर	११।१२

यदि कोई इतनी लम्बी क्रिया की उलझन से बचना चाहे तो सीधे १०।४८ चर ग्रहण कर सकते हैं। ऊपर बताई गई विधि तो सूक्ष्म गणितार्थियों के लिए है।

रवि क्रांति दक्षिण होने से चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
लोकल सूर्योदय	६ ।११ ।१२
स्टैं. अंतर धन होगा	+० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्योदय	६ ।२४ ।४८
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ।	६ ।११ ।२७

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।११ ।१२
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
लोकल सूर्यास्त	५ ।४८ ।४८
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।१३ ।३६
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।०२ ।२४
वेलांतर	—० ।१३ ।२१
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	५ ।४९ ।०३

दिनमान — आए हुए चर ११ मिनट १२ सेकेण्ड को ५ से गुणा किया

११ ।१२ × ५=५५ ।६० या ५६ पल

सूर्योदय में चर जोड़ा गया था। अतः यहां ये पल मध्याह्न दिनमान ३० घटी में से घट जावेंगे।

मध्याह्न दिनमान	३० ।००
चर पल	— ० ।५६
दिनमान नागपुर	२९ ।०४

रात्रिमान—

अहोरात्र	६० ।००
दिनमान	— २९ ।०४
रात्रिमान	३० ।५६

उदाहरण २ — मद्रास में २० जून का सूर्योदयास्त व दिनमान ज्ञात करना है। मद्रास अक्षांश १३ ।०५ उत्तर, स्टैण्डर्ड अंतर—८ ।५२, रवि क्रांति २३ ।२६ उत्तर, वेलांतर + १ ।१४

	मि.से.
अक्षांश १३ व रवि क्रांति २३ का चर	२२ ।३०
(अक्षांश ५ कला का अनुपात से चर पूर्व की विधि से)	+०० ।०८
रवि क्रांति २६ कला का अनुपात से चर	+०० ।३४
अक्षांश १३ ।०५ एवं रवि क्रांति २३ ।२६ का सूक्ष्म शुद्ध चर	२३ ।१२

रवि क्रांति उत्तर होने से चर २३ मिनट १२ सेकेण्ड धन होंगे।

सूर्योदय	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	— ० ।२३ ।१२
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
लोकल सूर्योदय	५ ।३६ ।४८
स्टैं. अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्योदय	५ ।४५ ।४०
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्योदय प्राप्त हुआ	५ ।४६ ।५४

सूर्यास्त	घं.मि.से.
	६ ।०० ।००
चर	+० ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
लोकल सूर्यास्त	६ ।२३ ।१२
स्टैण्डर्ड अंतर धन होगा	+ ० ।०८ ।५२
मध्याह्न सूर्यास्त	६ ।३२ ।०४
वेलांतर	+ ० ।०१ ।१४
स्पष्ट स्टैण्डर्ड टाईम में सूर्यास्त प्राप्त हुआ।	६ ।३३ ।१८

दिनमान- चर मिनट सेकेण्ड २३ ।१२×५=११५ ।६० (११५ पल ६० विपल या १ घटी ५६ पल पूर्व में ६ घंटे में चरांतर घटाया इससे यहां ये घटी पल ३० घटी में जुड़ेंगे।)

मध्याह्न दिनमान	३० ।००	**रात्रिमान**—	अहोरात्र	६० ।००
चर पल	+०१ ।५६		दिनमान	— ३१ ।५६
दिनमान मद्रास	३१ ।५६		रात्रिमान	२८ ।०४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इष्टकाल बनाने की विधि

आजकल समय जिन घड़ियों में देखा जाता है उनमें घण्टों की गिनती मध्याह्न १२ बजे के बाद तथा मध्यरात्रि के बाद १ से १२ तक होती है, दिन २४ घंटे का होता है। जन्म समय इसी के अनुसार घंटे-मिनटों में बताया जाता है। तारीख रात को १२ बजे के बाद बदल जाती है, जबकि वार सूर्योदय से आरम्भ होता है। अब यदि किसी का जन्म सायंकाल ५ बजकर ३५ मिन पर हुआ है तो इसका अभिप्राय यह होता है कि मध्याह्न के बाद ५ घंटे ३५ मि. बीत गए हैं। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्योदय का समय जानने की आवश्यकता होती है, क्योंकि हमारा दिन सूर्योदय से आरम्भ होता है। सूर्योदय का समय हर स्थान का अलग-अलग होता है। पृथ्वी अपनी धुरी पर लगभग २४ घण्टे में एक बार घूम जाती है (२३ घण्टे ५६ मि. १५ सै.) और ३६५ दिन ६ घण्टे ९ सै. में सूर्य का एक चक्कर पूरा करती है। आकाशीय क्रान्ति वृत्त की बारहों राशियां २४ घंटे में इसके सामने से निकलती हैं। बारह राशियों में से जो राशि पृथ्वी के उस भाग के क्षितिज पर होती है, वह उस समय की लग्न होती है। सूर्य जिस राशि के जितने अंश पर होता है, सूर्योदय के समय क्षितिज पर वही राशि उतने ही अंशों पर उदय होती है और जैसे-जैसे सूर्य आकाश में चढ़ता जाता है क्षितिज पर आगे की राशियाँ उदय होती जाती हैं। पूर्वी क्षितिज पर जो राशि होती है वही उस समय की लग्न कहलाती है। क्षितिज उस स्थान को कहते हैं जहां पृथ्वी और आकाश मिलते दिखाई देते हैं। सूर्य पूर्वी क्षितिज पर उदय होता है और पश्चिमी क्षितिज पर अस्त होता है। किसी समय की लग्न जानने के लिए उस स्थान का सूर्योदय जानना जरूरी होता है।

सूर्योदय से जन्म समय या प्रश्न समय अथवा इष्ट समय तक के काल को इष्टकाल कहते हैं। यह अवधि घण्टे-मिनटों में नहीं बल्कि घड़ी-पलों में होती है। इस प्रकार इष्टकाल निकालना बहुत सरल है। जन्म समय में से सूर्योदय घटाकर ढाई से गुना कर देने से इष्टकाल आ जाता है। ध्यान रखने की बात यह है कि सूर्योदय काल यदि I.S.T (भा.मा.स.) में है तो जन्म समय भी I.S.T में होना चाहिये। यदि एक समय में I.S.T में और दूसरा L.T. में है तो दोनों को समान करना पड़ेगा। इसके कुछ उदाहरण नीचे देखिए।

उदाहरण (१)—मान लो आप को २५ जून को प्रातः ११-३५ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल जानना है तो आर्यभट्ट पंचांग से २५ जून का सूर्योदय लिया। आर्यभट्ट पंचांग दिल्ली के अक्षांश पर बनाया गया है और इसमें दिया सूर्योदय I.S.T (भा.मा.स.) में है। २५ जून का सूर्योदय ५-२६ है। ध्यान रहे कि सूर्योदय भी भारतीय स्टैण्डर्ड समय में दिया गया है और जन्म समय भी भा. स्टै.टा. में है। इसलिए इस गणित में दिल्ली का भा. स्टैं. टा. से स्थानीय अन्तर २१ मि. ४ सै. घटाने की आवश्यकता नहीं होती। कुछ ज्योतिषी अकारण इस गणित में स्थानीय अन्तर घटा-बढ़ा कर अर्थ का अनर्थ कर देते हैं। स्थानीय अन्तर का ऋण धन संस्कार दिनमान से इष्टकाल निकालते समय किया जाता है।

	घं.	मि.	
(१) २५ जून को जन्म समय	११	३५	भा.स्टै. टा.
(२) २५ जून का सूर्योदय घटाया	—५	२६	''
	६	०९	''
६/९ का ढाई से गुना किया	६	०९	
	३	०४	३०
इष्टकाल घटी फल विपल में	१५	२२	३०

उदाहरण (२)—दिल्ली जन्म स्थान

१० सितम्बर को सायं ८-४५ का इष्टकाल निकालना

सायंकाल ८-४५ में १२ जोड़कर २०-४५ लिखा जाता है।

	घं.	मि.	
(१) १० सितम्बर को जन्म समय	२०	४५	भा.स्टै.टा.
मध्याह्न के बाद के समय में १२ जोड़कर लिखें।			
(२) १० सितम्बर का दिल्ली का सूर्योदय घटाया	—६	०५	''
शेष १४-३७ को ढाई गुना किया	१४	४०	
	१४	४०	
	७	२०	३०
(३) इष्टकाल घटी पल विपल में	३६	४०	३०

६० विपल का एक पल, ६० पल की एक घड़ी और ६० घड़ी का अहोरात्रि (पूरा दिन-रात) होता है।

उदाहरण (३)—१२ दिसम्बर को मध्यरात्रि के बाद १३ दिसम्बर में ५-२१ पर दिल्ली में जन्मे व्यक्ति का इष्टकाल निकालना है। मध्यरात्रि के बाद के घण्टों में २४ जमा करके लिखा जाता है। जन्म समय से पहले का सूर्योदय १२ दिसम्बर का लिया जायेगा।

	घं.	मि.	भा.स्टै.टा.
जन्म समय मध्यरात्रि उपरान्त १३ दिसम्बर	५	२१	
२४ जमा करके लिखा	२९	२१	
सूर्योदय १२ दिसम्बर का घटाया	—७	०६	''
शेष २२ घण्टे १३ मिनट के घड़ी पल बनाये	२२	१५	शेष
ढाई गुना किया	२२	१५	
	११	०७	३०
इष्टकाल—घटी पल विपल में	५५	३७	३०

सूर्योदय से एक मिनट पहले भी जन्म हुआ हो तो भी जन्म पिछले दिन में ही माना जायेगा। जैसे उपरोक्त उदाहरण में यदि जन्म ७ बजकर ५ मिनट पर हुआ होता तो भी इसमें २४ जोड़कर ३१-५ में से १२ दिसम्बर का सूर्योदय घटाकर ही इष्टकाल निकाला जाता। इष्टकाल कभी ६० घड़ी से अधिक नहीं आता, ६० से कम ही आता है। इसी प्रकार सूर्योदय पर या सूर्योदय के एक मिनट बाद भी जन्म हो तो उसी दिन का जन्म माना जाता है और जो सूर्योदय हो चुका है, वही घटाकर इष्टकाल निकाला जाता है। जैसे १३ दिसम्बर को जन्म समय ७-७ हो तो इष्टकाल ढाई पल होगा। यदि समय का बहुत सूक्ष्म हिसाब रखा हो तो सूर्योदय से एक सैकिण्ड पहले तक पिछला दिन लिया जाता है और सूर्योदय के एक सैकिण्ड बाद वही दिन लिया जाता है। परन्तु ऐसे उदाहरणों में सूर्योदय भी सूक्ष्म गणित से सैकिण्डों तक निकालना पड़ता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
	४	८	१३	१७	२१	२५	२९	३४	३८	४२	४७	५१	५५	०	४	९	१३	१८	२२	२७	३२	३७	४२	४७
२	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	८	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३७	४५	५५	४	१४	२४	३४
३	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५
	१३	२५	३८	५०	३	१६	२८	४१	५४	७	२०	३३	४६	०	१३	२७	४०	५५	८	२२	३७	५१	६	२१
४	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	७
	१७	३४	५०	७	२४	४१	५८	१२	२९	४८	५	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३१	५०	९	२९	४८	८
५	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	८
	२१	४२	३	२४	४५	७	२८	५०	१०	३२	५४	१६	३८	०	२३	४५	७	३१	५४	१९	४२	६	३१	५६
६	०	०	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	११
	२५	५०	१६	४१	६	३२	५७	२३	४९	१५	४२	७	३४	०	४७	५४	२२	५०	१८	४६	१५	४४	१४	४४
७	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२
	२९	५९	२८	५८	२९	५७	२७	५७	२७	५८	२८	५९	३०	१	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३२
८	०	१	१	२	२	३	३	४	५	५	६	६	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४
	३४	७	४१	१५	४९	२३	५६	३१	६	४१	१६	५१	२६	२	३८	१४	५१	२८	६	४४	२२	१	४१	२१
९	०	१	१	२	३	३	४	५	५	६	७	७	८	९	९	१०	११	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६
	३८	१६	५४	३३	११	४९	२७	६	४५	२४	४	४३	२३	३	४४	२५	६	४८	३०	१३	५६	४१	२५	११
१०	०	१	२	२	३	४	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८
	४२	२५	७	५०	३२	१५	५८	४१	२४	८	५१	३६	२०	५	५०	३६	२३	८	५५	४३	३१	२०	१०	१
११	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	११	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९
	४७	३४	२०	७	५४	४०	२८	१६	३	५१	४०	२९	१७	७	५६	४७	३८	२९	२७	१४	७	१	५६	५२
१२	०	१	२	३	४	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२०
	५१	४२	३३	२४	१६	९	५९	५०	४३	३६	२८	२१	१५	९	३	५९	५४	२०	४७	४५	४३	४२	४२	४३
१३	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
	५५	५१	४६	४२	३८	३४	३०	२०	२३	२०	१७	१५	१३	१२	११	११	११	१२	१४	१७	२०	२५	३०	३६
१४	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२३	२४	२५
	०	०	०	०	०	०	१	२	३	५	७	९	१२	१५	१९	२४	२९	३४	४२	२०	३८	८	८	३६
१५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२१	२२	२३	२४	२६	२७
	४	९	१३	१७	२१	२७	३१	३८	४४	५०	५७	४	१०	१९	२७	३८	४८	५९	१०	२४	३५	५२	७	२१

क्रान्त्यंश चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
१६	१	२	३	४	५	६	८	९	१०	११	१२	१३	१५	१६	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२६	२७	२९
	९	१८	२७	३६	४४	५४	४	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२४	३६	५२	७	२३	४०	५७	१७	३७	५८	२०
१७	१	२	३	४	६	७	८	९	११	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	२२	२४	२५	२६	२८	२९	३१
	१३	२७	४०	५४	८	२२	३६	५१	६	२०	३८	५४	११	२९	४८	७	२७	४८	१०	३३	५८	२३	५०	१८
१८	१	२	३	५	६	७	९	१०	११	१३	१४	१५	१७	१८	१८	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३
	१८	३६	५१	१२	३१	५०	९	२८	४८	८	२९	५०	२२	३४	५९	२३	४८	१४	४३	१०	४१	१०	४३	१६
१९	१	२	४	५	६	८	९	११	१२	१३	१५	१६	१८	१९	२१	२२	२४	२५	२७	२८	३०	३१	३३	३५
	२३	४५	८	३१	५४	१८	३७	६	३०	५५	२१	४७	१४	४२	११	४०	१०	४२	१४	४८	२३	५९	३७	१६
२०	१	२	४	५	७	८	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२७	२८	३०	३२	३३	३५	३७
	२३	५५	२२	५०	१६	४६	१५	४४	१३	४३	१४	४५	१७	५०	२३	५७	३३	१०	४१	२७	८	४९	३३	१८
२१	१	३	४	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१७	१८	२०	२१	२३	२५	२६	२८	३०	३२	३३	३५	३७	३९
	३२	४	३६	९	४२	१५	४८	२२	५७	३१	७	४३	२०	५९	३७	१७	५८	१४	२३	८	५४	४१	३१	२२
२२	१	३	४	६	८	९	११	१३	१३	१६	१७	१९	२१	२३	२४	२६	२८	३०	३१	३३	३५	३७	३९	४१
	३७	१४	५१	२९	६	४४	२२	१	४०	२०	५९	४२	२५	८	५२	३७	२३	११	५९	४९	४२	३५	३०	२७
२३	१	३	५	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१८	२०	२२	२४	२६	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३
	४२	२४	६	४८	३२	१४	५७	४१	२५	१०	५६	४२	३०	१८	६	५६	५०	४३	३०	३३	३१	३०	४१	३४
२४	१	३	५	७	८	१०	१२	१४	१६	१८	१९	२१	२३	२५	२७	२९	३१	३३	३५	३७	३९	४१	४३	४५
	४७	३४	२१	८	५६	४४	३२	२१	११	१	५२	४३	३६	३०	२४	२०	१८	१६	१६	१८	२२	४७	३४	५४
२५	१	३	५	७	९	११	१३	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३९	४१	४३	४५	४७
	५२	४४	३६	२८	२१	१४	८	५९	५७	५२	४८	४५	४३	४२	४३	४४	४७	५२	५७	५	१५	२६	४०	५६
२६	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९	२१	२३	२५	२७	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४३	४५	४७	५०
	५७	५४	५२	४९	३७	४५	४४	४३	४३	४४	४६	४८	५२	५६	२	९	१८	२८	४०	५४	१३	२८	४८	१०
२७	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३३	३५	३७	४०	४२	४५	४७	४९	५२
	२	५	७	१०	१३	७	२१	२६	३१	३७	४४	५२	२	१२	२३	३६	५१	६	२५	४५	७	३२	५८	२७
२८	२	४	६	८	१०	१२	१४	१७	१९	२१	२३	२५	२८	३०	३२	३५	३७	३९	४२	४४	४७	४९	५२	५४
	८	१२	२३	१३	४०	४९	५८	८	१९	३१	४४	५७	१२	२८	४६	५	२५	४८	१२	३८	६	३८	११	४७
२९	२	४	६	८	११	१३	१५	१७	२०	२२	२४	२७	२९	३१	३४	३६	३९	४१	४४	४६	४९	५१	५४	५७
	१३	२६	४०	५३	७	२२	३७	५२	९	२६	४४	४	२५	४८	१०	३५	२	२७	१	३३	८	४६	२७	९
३०	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३	३५	३८	४०	४३	४५	४८	५१	५३	५६	५९
	१९	३७	५६	१५	३५	५५	१६	३७	०	२२	४६	१२	३९	६	३६	७	४०	१५	५२	३१	१३	५७	४५	३५
३१	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२९	३१	३४	३७	३९	४२	४५	४७	५०	५३	५६	५९	६२
	२४	५९	१३	३७	२	२९	५५	२३	५०	२१	५०	२१	५४	२७	४	४१	२१	२	४६	२८	२०	१२	६	४
३२	२	५	७	१०	१२	१५	१७	२०	२२	२५	२७	३०	३३	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	६१	६४
	३०	०	३०	१	३२	४	३६	१	४३	१७	५४	३२	१०	४७	३३	१६	३	५२	४२	३५	३०	३०	३१	३७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
३३	२	५	७	१०	१३	१५	१८	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४५	४८	५१	५४	५७	६०	६३	६७
	३६	१२	४६	२५	२	३९	१६	५७	३७	१८	५९	४४	२९	१६	५	५६	४८	४४	४०	४१	४४	५१	५७	१३
३४	२	५	८	१०	१३	१६	१९	२१	२४	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४७	५०	५३	५६	६०	६३	६६	६९
	४२	२४	५	४९	३२	१६	१	४५	३२	१९	६	५८	४९	४४	३९	३६	३६	३७	४३	५१	१	१५	३३	५४
३५	२	५	८	११	१४	१६	१९	२२	२५	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४९	५२	५५	५९	६२	६५	६९	७२
	४८	३६	२५	१४	१	५३	४४	३५	२४	२२	१७	१४	१३	१३	१५	१९	२७	३६	४४	४	२२	४४	१०	४०
३६	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	२९	३२	३५	३८	४१	४४	४८	५१	५४	५७	६१	६४	६८	७१	७५
	५४	४९	४४	३५	३५	३१	२८	२७	२६	२७	२९	३२	३७	४५	५०	६	२०	३७	५७	२०	४७	१७	५१	३०
३७	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	४०	४३	४६	४९	५३	५६	६०	६३	६७	७०	७४	७८
	१	२	३	५	६	१०	१४	१९	२५	३३	४१	५२	५	१९	३६	५५	१७	४१	७	४०	१५	५४	३९	२४
३८	३	६	९	१२	१५	१८	२२	२५	२८	३१	३४	३८	४१	४४	४८	५१	५५	५८	६२	६६	६९	७३	७७	८१
	८	१५	२३	३२	४१	४७	१	१३	२६	४१	५६	१४	३४	५४	२०	४७	१७	४९	२५	५	४८	३६	२८	२५
३९	३	६	९	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३६	३९	४२	४६	५०	५३	५७	६०	६४	६८	७२	७६	८०	८४
	१४	२९	४४	०	१५	३२	५०	८	२९	५०	१४	३९	५	३६	८	४२	२०	५८	४६	३४	२६	२३	२५	३२
४०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२७	३०	३४	३७	४१	४४	४८	५१	५५	५९	६३	६७	७१	७५	७९	८३	८७
	२१	४३	५	२७	४७	१४	३८	४	३३	२	३३	६	४१	१८	५८	४१	२८	१७	१०	६	१०	१६	२८	४५
४१	३	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	४६	४९	५३	५७	६१	६५	६९	७३	७७	८२	८६	९१
	२९	५७	२५	५६	२७	५६	३०	४	३९	१६	५५	३५	१९	५८	५३	४४	३९	३८	४०	४७	७८	१५	३७	५
४२	३	७	१०	१४	१८	२१	२५	२९	३२	३६	४०	४४	४७	५१	५५	५९	६३	६८	७२	७६	८०	८५	८९	९४
	३६	१२	४९	२६	०	४३	२३	५	४८	३१	१९	६	५९	५४	५१	५१	५५	४	१५	३१	५३	२०	५३	३२
४३	३	७	११	१४	१८	२२	२६	३०	३३	३७	४१	४५	४९	५३	५७	६२	६६	७०	७४	७९	८३	८८	९३	९८
	४४	२८	१२	५७	४३	२७	१८	७	५८	५१	५६	४४	४४	४७	५३	२	१६	३३	५५	२२	५४	३२	१६	७
४४	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३	४७	५१	५५	५९	६४	६८	७३	७७	८२	८७	९१	९६	१०१
	५२	४४	३४	२९	२३	१८	१४	१०	१२	१०	१७	२३	३२	४०	५७	१८	४१	९	४१	१९	२	५२	४८	५१
४५	४	८१	१२	१६	२०	२४	२८	३२	३६	४०	४४	४९	५३	५७	६२	६६	७१	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०४
	०	०	१	२	५	४	१०	१९	२७	३७	४७	५	२४	४५	१०	४०	१३	५१	३४	२३	१८	१९	२८	४५
४६	४	८	१२	१६	२०	२५	२९	३३	३७	४२	४६	५०	५५	५९	६४	६९	७३	७९	८३	८८	९३	९८	१०४	१०९
	९	१७	२७	३७	४८	०	१३	२८	४६	५	२७	५२	२१	५०	२६	६	५०	३९	३३	३४	४१	५६	१८	४९
४७	४	८	१२	१७	२१	२५	३०	३४	३९	४३	४८	५२	५७	६२	६६	७१	७६	८१	८६	९१	९७	१०२	१०८	११४
	१८	३५	५३	१२	३२	५१	१६	४०	७	३६	८	४२	१७	२	४८	३८	३३	३४	४१	५०	१४	४२	१९	४
४८	४	८	१३	१७	२२	२६	३१	३५	४०	४५	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४	८९	९५	१००	१०६	११२	११८
	२७	५३	२१	४९	१८	३९	२१	५५	३०	१०	५२	३७	२६	१८	१५	१७	२४	३६	५६	२२	१६	३९	३०	३२
४९	४	९	१३	१८	२३	२७	३२	३७	४२	४६	५१	५६	६१	६६	७१	७७	८२	८७	९३	९८	१०४	११०	११६	१२३
	३६	१३	५०	२७	५	४७	२९	१३	०	४९	४१	३७	३६	४०	४९	३	२०	४८	१०	५८	४९	४७	५५	१४

क्रान्त्यंश — चर सारिणी

अक्षांश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
५०	४	९	१४	१९	२३	२८	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६९	७४	७९	८५	९१	९६	१०२	१०८	११५	१२१	१२८
	४६	३२	१९	७	५६	४७	३९	३४	३१	३१	३५	४२	५३	९	२९	५६	२८	४	५४	५०	५४	८	३३	११
५१	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	४०	४५	५०	५५	६०	६६	७१	७७	८२	८८	९४	१००	१०६	११३	११९	१२६	१३३
	५६	५३	५१	४९	४९	५०	५३	०	७	१८	३३	५२	१६	४४	१७	५७	४४	३७	३९	४७	११	४३	२७	२५
५२	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५७	६३	६८	७४	८०	८६	९२	९८	१०४	१११	११७	१२४	१३१	१३८
	७	१५	२३	३२	४३	५४	१०	२७	४७	७	३७	९	४५	२६	१४	८	६	१९	३६	४	४३	३४	३८	५८
५३	५	१०	१५	२१	२६	३२	३७	४२	४८	५४	५९	६५	७१	७७	८३	८९	९५	१०२	१०८	११५	१२२	१२९	१३७	१४४
	१८	३७	५७	१८	४०	४	३१	५६	३२	८	४८	३२	२२	१७	१९	२८	४५	१०	४६	३२	३०	४१	८	५२
५४	५	११	१६	२२	२७	३३	३८	४४	५०	५६	६२	६८	७४	८०	८६	९३	९९	१०६	११३	१२०	१२७	१३५	१४३	१५१
	३०	१	३३	४	४०	१६	५५	३७	५२	११	४	२	७	१७	३४	०	३२	१६	९	१५	३४	९	०	१०
५५	५	११	१७	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२४	१३२	१४०	१४९	१५७
	४३	२६	१०	५६	४३	३१	२४	१८	१८	२०	२८	४१	५९	३६	०	४२	३३	३५	४९	१७	५९	५८	१६	५६
५६	५	११	१७	२३	२९	३५	४१	४८	५४	६०	६७	७३	८०	८६	९३	१००	१०७	११५	१२२	१३०	१३८	१४७	१५६	१६५
	५६	५२	५०	४८	४९	५१	५७	७	१९	३५	०	२८	४	४६	३८	३८	३९	११	४७	३८	४५	११	०	१३
५७	६	१२	१८	२४	३०	३७	४३	५०	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	११७	१२०	१२८	१३६	१४४	१५३	१६३	१७३
	१०	२०	३१	४४	५६	१०	३६	१	२८	१	४०	२५	१८	१९	२६	४९	१०	५	५	२१	५६	५४	१६	७
५८	६	१२	१९	२५	३२	३८	४५	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९४	१०१	१०९	११७	१२५	१३३	१४२	१५१	१६१	१७१	१८१
	२४	४९	१५	४२	१२	४४	१७	५९	४४	३४	३०	२६	४४	४	३४	१६	१०	१९	४५	३२	३६	८	९	४६
५९	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	९०	९४	१०५	११३	१२२	१३०	१३९	१४९	१५८	१६९	१७९	१९१
	४०	२०	१	४४	२९	१८	१०	६	६	१६	३०	५२	२३	४	५६	५६	२०	५६	५९	८	५०	१	४७	१५
६०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४९	५६	६३	७१	७८	८६	९४	१०२	११०	११९	१२७	१३७	१४०	१५६	१६६	१७१	१८९	२०१
	५६	५२	५०	५०	४६	५७	७	२१	४१	६	४२	२५	१७	२०	३७	५	५४	०	२७	१९	४१	३९	१८	५०
६१	७	१४	२१	२८	३६	४३	५१	५८	६६	७४	८२	९०	९८	१०६	११४	१२४	१३३	१४३	१५३	१६४	१७५	१८७	१९९	२१३
	१३	२७	४२	५९	१९	४३	११	४६	१९	१२	५	१२	११	५५	३८	३६	५४	३३	३७	७	१९	१०	५४	४५
६२	७	१५	२२	३०	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९४	१०२	१११	१२१	१३०	१४०	१५०	१६१	१७२	१८४	१९७	२११	२२७
	३२	४	३८	१७	५०	३६	२४	१६	१५	२१	४६	७	५६	५१	३	३२	२४	४०	२६	४७	५२	४९	५३	२७
६३	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	६४	७२	८०	८९	९८	१०७	११७	१२६	१३७	१४७	१५८	१७०	१८२	१९२	२०९	२२५	२४३
	५१	४३	३७	३३	३२	३७	४७	२	२६	५९	४२	१९	४६	११	५०	०	२९	२९	४	२१	३२	५१	४०	३७
६४	८	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६६	७५	८४	९३	१०३	११२	१२२	१३३	१४४	१५५	१६७	१७९	१९३	२०७	२२३	२४१	२६३
	१२	२५	४०	५८	२०	४६	११	५९	४८	४६	५५	२१	५७	५८	१८	२	१६	६	३८	४	३८	४३	५८	३७
६५	८	१७	२५	३४	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९८	१०८	११८	१२९	१४०	१५१	१६३	१७६	१९०	२०४	२२१	२४०	२६२	२८९
	३५	११	४९	३०	१५	४	४	१०	२५	५२	३३	२४	४२	१७	१४	४७	५२	४०	२३	१४	३७	११	११	१९
६६	८	१८	२७	३६	४५	५४	६४	७३	८३	९३	१०३	११४	१२४	१३६	१४७	१६०	१७३	१८७	२०२	२१९	२३८	२६०	२८९	३५४
	५९	०	२	९	२०	३७	१	३६	२२	१९	३३	४	५६	१३	५७	३२	२८	२८	३६	१९	२५	३४	४४	४०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रवि क्रान्ति सारिणी

तारीख	जनवरी दक्षिण अं. क.	फरवरी दक्षिण अं. क.	मार्च दक्षिण अं. क.	अप्रैल उत्तर अं. क.	मई उत्तर अं. क.	जून उत्तर अं. क.	जुलाई उत्तर अं. क.	अगस्त उत्तर अं. क.	सितम्बर उत्तर अं. क.	अक्टूबर दक्षिण अं. क.	नवम्बर दक्षिण अं. क.	दिसम्बर दक्षिण अं. क.
१	२३ ४	१७ १८	७ ५२	४ १४	१४ ५६	२१ ५९	२३ ९	१८ ९	८ २८	२ ५९	१४ १६	२१ ४३
२	२२ ५९	१७ १	७ २९	४ ३८	१५ १४	२२ ७	२३ ५	१७ ५४	८ ७	३ २२	१४ ३५	२१ ५२
३	२२ ५४	१६ ४४	७ ६	५ १	१५ ३२	२२ १५	२३ १	१७ ३९	७ ४५	३ ४६	१४ ५४	२२ १
४	२२ ४८	१६ २७	६ ४३	५ २५	१५ ४९	२२ २२	२२ ५६	१७ २३	७ २३	४ ९	१५ १३	२२ १०
५	२२ ४२	१६ ९	६ २०	५ ४९	१६ ७	२२ २९	२२ ५१	१७ ७	७ १	४ ३२	१५ ३२	२२ १८
६	२२ ३५	१५ ५१	५ ५७	६ १२	१६ २४	२२ ३६	२२ ४५	१६ ५१	६ ३९	४ ५५	१५ ५०	२२ २६
७	२२ २८	१५ ३२	५ ३४	६ ३५	१६ ४१	२२ ४२	२२ ३९	१६ ३५	६ १६	५ १८	१६ ८	२२ ३३
८	२२ २१	१५ १३	५ ११	६ ५८	१६ ५७	२२ ४८	२२ ३३	१६ १८	५ ५४	५ ४१	१६ २६	२२ ४०
९	२२ १३	१४ ५४	४ ४९	७ २१	१७ १३	२२ ५३	२२ २६	१६ १	५ ३१	६ ४	१६ ४४	२२ ४६
१०	२२ ५	१४ ३५	४ २६	७ ४३	१७ २९	२२ ५८	२२ १९	१५ ४३	५ ९	६ २७	१७ १	२२ ५२
११	२१ ५६	१४ १५	४ ३	८ ६	१७ ४५	२३ ३	२२ ११	१५ २६	४ ४६	६ ५०	१७ १८	२२ ५८
१२	२१ ४७	१३ ५६	३ ४०	८ २९	१८ १	२३ ७	२२ ३	१५ ८	४ २४	७ १२	१७ ३४	२३ ३
१३	२१ ३७	१३ ३६	३ १७	८ ५१	१८ १६	२३ ११	२१ ५५	१४ ५०	४ १	७ ३५	१७ ५०	२३ ८
१४	२१ २७	१३ १६	२ ५४	९ १४	१८ ३०	२३ १४	२१ ४६	१४ ३२	३ ३८	७ ५७	१८ ६	२३ १२
१५	२१ १६	१२ ५६	२ ३१	९ ३६	१८ ४४	२३ १७	२१ ३७	१४ १३	३ १५	८ २०	१८ २२	२३ १५
१६	२१ ५	१२ ३५	२ ७	९ ५७	१८ ५८	२३ २०	२१ २८	१३ ५४	२ ५२	८ ४२	१८ ३७	२३ १८
१७	२० ५४	१२ १४	१ ४४	१० १८	१९ ११	२३ २२	२१ १८	१३ ३५	२ २९	९ ४	१८ ५२	२३ २१
१८	२० ४२	११ ५३	१ २१	१० ३९	१९ २६	२३ २४	२१ ८	१३ १६	२ ६	९ २५	१९ ७	२३ २३
१९	२० ३०	११ ३२	० ५७	११ ०	१९ ३९	२३ २५	२० ५८	१२ ५७	१ ४२	९ ४७	१९ २१	२३ २४
२०	२० १८	११ ११	० ३४	११ २१	१९ ५२	२३ २६	२० ४७	१२ ३७	१ १९	१० ९	१९ ३५	२३ २५
२१	२० ५	१० ४९	० १०	११ ४१	२० ४	२३ २७	२० ३६	१२ १८	० ५६	१० ३०	१९ ४८	२३ २६
२२	१९ ५२	१० २८	उ० १४	१२ २	२० १७	२३ २७	२० २४	११ ५८	० ३२	१० ५२	२० १	२३ २७
२३	१९ ३८	१० ६	० ३८	१२ २२	२० २९	२३ २७	२० १२	११ ३८	० ९	११ १३	२० १४	२३ २७
२४	१९ २४	९ ४४	१ २	१२ ४२	२० ४०	२३ २६	२० ०	११ १८	द० १५	११ ३५	२० २७	२३ २६
२५	१९ ९	९ २२	१ २६	१३ २	२० ५१	२३ २५	१९ ४७	१० ५७	० ३९	११ ५६	२० ३९	२३ २५
२६	१८ ५४	९ ०	१ ५०	१३ २१	२१ २	२३ २३	१९ ३४	१० ३६	१ २	१२ १७	२० ५१	२३ २३
२७	१८ ३९	८ ३८	२ १४	१३ ४१	२१ १२	२३ २१	१९ २०	१० १५	१ २६	१२ ३८	२१ २	२३ २१
२८	१८ २३	८ १६	२ ३८	१४ ०	२१ २२	२३ १९	१९ ६	९ ५४	१ ४९	१२ ५८	२१ १३	२३ १९
२९	१८ ७	८ ४	३ २	१४ १९	२१ ३२	२३ १६	१८ ५२	९ ३३	२ १२	१३ १८	२१ २४	२३ १६
३०	१७ ५१	० ०	३ २६	१४ ३७	२१ ४१	२३ १३	१८ ३८	९ १२	२ ३६	१३ ३८	२१ ३४	२३ १३
३१	१७ ३५	० ०	३ ५०	० ०	२१ ५०	० ०	१८ २४	८ ५	० ०	१३ ५७	० ०	२३ ९

वेलान्तर कोष्ठक (मिनट में)

तारीख	जनवरी मि. सै.	फरवरी मि. सै.	मार्च मि. सै.	अप्रैल मि. सै.	मई मि. सै.	जून मि. सै.	जुलाई मि. सै.	अगस्त मि. सै.	सितम्बर मि. सै.	अक्टूबर मि. सै.	नवम्बर मि. सै.	दिसम्बर मि. सै.
	+	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—
१	३ ३४	१३ ३८	१२ ३५	४ ७	२ ५२	२ २५	३ ३३	६ १५	+ ९	१० ७	१६ २१	११ ३
२	३ ५२	१३ ४६	१२ २३	३ ४९	३ ०	२ १६	३ ४५	६ ११	— १०	१० २७	१६ २३	१० ४३
३	४ २०	१३ ५४	१२ ११	३ ३२	३ ७	२ ७	३ ५६	६ ७	० २९	१० ४६	१६ २४	१० १८
४	४ ४८	१४ ०	११ ५९	३ १४	३ १३	१ ५७	४ ८	६ २	० ४८	११ ५	१६ २४	९ ५३
५	५ १६	१४ ६	११ ४६	२ ५६	३ १९	१ ४७	४ १८	५ ५७	१ ८	११ २३	१६ २३	९ २८
६	५ ४२	१४ १०	११ ३२	२ ३९	३ २४	१ ३६	४ २८	५ ५१	१ २८	११ ४३	१६ २१	९ ३
७	६ ९	१४ १४	११ १८	२ २२	३ २९	१ २५	४ ३८	५ ४४	१ ४८	११ ५९	१६ १७	८ ३७
८	६ ३५	१४ १७	११ ४	२ ४	३ ३३	१ १४	४ ४८	५ ३७	२ ९	१२ १६	१६ १४	८ ११
९	७ ०	१४ २०	१० ४९	१ ४८	३ ३६	१ ३	४ ५८	५ २९	२ २९	१२ ३३	१६ ९	७ ४५
१०	७ २५	१४ २१	१० ३४	१ ३१	३ ३९	० ५२	५ ७	५ २१	२ ५०	१२ ४९	१६ ४	७ १८
११	७ ४९	१४ २२	१० १८	१ १५	३ ४२	० ४०	५ १५	५ १२	३ ११	१३ ५	१५ ५८	६ ५१
१२	८ १३	१४ २२	१० २	० ५९	३ ४४	० २८	५ २३	५ ३	३ ३२	१३ २१	१५ ५२	६ २३
१३	८ ३६	१४ २१	९ ४६	० ४३	३ ४५	० [illegible]	५ ३०	४ ५३	३ ५३	१३ ३६	१५ ४३	५ ५५
१४	८ ५८	१४ २९	९ २९	० २७	३ ४६	-० ३	५ ३७	४ ५२	४ १४	१३ ५०	१५ ३४	५ २७
१५	९ २०	१४ १७	९ १२	+ १२	३ ४६	+० ९	५ ४४	४ ३१	४ ३६	१४ ४	१५ २५	४ ५८
१६	९ ४१	१४ १४	८ ५५	— ३	३ ४६	० २२	५ ५०	४ २०	४ ५७	१४ १७	१५ १५	४ २९
१७	१० ०१	१४ १०	८ ३८	० १७	३ ४५	० ३४	५ ५६	४ ८	५ १८	१४ ३०	१५ ४	४ ०
१८	१० २१	१४ ६	८ २१	० ३१	३ ४३	० ४८	६ १	३ ५५	५ ४०	१४ ४२	१४ ५२	३ ३१
१९	१० ४०	१४ १	८ ३	० ४५	३ ४१	१ १	६ ६	३ ४२	६ १	१४ ५३	१४ ३	३ २
२०	१० ५८	१३ ५५	७ ४५	० ५७	३ ३८	१ १४	६ १०	३ २८	६ २२	१५ ४	१४ २४	२ ३२
२१	११ १५	१३ ४८	७ २८	१ ११	३ ३५	१ २७	६ १३	३ १४	६ ४३	१५ १४	१४ १०	२ २
२२	११ ३२	१३ ४१	७ १०	१ २३	३ ३१	१ ४०	६ १६	२ ५९	७ ४	१५ २४	१३ ५५	१ ३२
२३	११ ४९	१३ ३४	६ ५१	१ ३५	३ २७	१ ५३	६ १९	२ ४४	७ २५	१५ ३३	१३ ३९	१ २
२४	१२ ४	१३ २४	६ ३३	१ ४६	३ २२	२ ६	६ २१	२ ३०	७ ४६	१५ ४१	१३ २२	० ३२
२५	१२ १९	१३ १७	६ १५	१ ५७	३ १७	२ १९	६ २३	२ १३	८ ७	१५ ४९	१३ ४	—०२
२६	१२ ३२	१३ ७	५ ४७	२ ८	३ ११	२ ३२	६ २३	१ ५६	८ २७	१५ ५६	१२ ४६	+ २८
२७	१२ ४५	१२ ५७	५ ३८	२ १८	३ ५	२ ४४	६ २३	१ ३९	८ ४८	१६ २	१२ २७	० ५८
२८	१२ ५८	१२ ४६	५ २०	२ २७	२ ५८	२ ५७	६ २३	१ २२	९ ८	१६ ७	१२ ७	१ २८
२९	१३ ९		५ २	२ ३६	२ ५०	३ ९	६ २२	१ ४	९ २८	१६ १२	११ ४६	१ ५८
३०	१३ २०		४ ४४	२ ४४	२ ४२	३ २१	६ २०	० ४६	९ ४७	१६ १६	११ २५	२ २७
३१	१३ २९		४ २५		२ ३४		६ १८	० २८		१६ १९		२ ५६
	+	+	+	—	—	+	+	+	—	—	—	+

वेलान्तर कोष्ठक (समय समीकरण)

भारतीय स्टैण्डर्ड समय से स्थानीय स्पष्ट समय निकालते समय वेलान्तर संस्कार किया जाता है। भा. स्टै. स. में अक्षांशादि सारिणी के अनुसार किसी स्थान विशेष का जो अन्तर दिया हो वह ऋण या धन करके स्थानीय मध्यम समय आ जाता है। इसमें तारीख के अनुसार वेलान्तर संस्कार करने से स्थानीय स्पष्ट समय आता है। इसी स्पष्ट समय से आगे गणित किया जाता है। जब दिनमान से इष्टकाल निकालते हैं तब वेलान्तर संस्कार करते हैं। वेलान्तर ऋण हो तो जोड़कर और वेलान्तर धन हो तो घटाकर स्पष्ट स्थानीय समय निकाला जाता है। सूर्योदय से इष्टकाल बनाते समय जब सूर्योदय तथा जन्म समय दोनों ही भा. स्टै. स. में होते हैं। यह वेलान्तर संस्कार नहीं किया जाता। इसी पंचांग के पृष्ठ ९०-९१ पर सूर्योदय गणित में वेलान्तर प्रयोग पर सामग्री दी गई है। स्पष्ट स्थानीय मध्याह्न समय निकालने में वेलान्तर का प्रयोग किया जाता है। मध्याह्न गणित में वेलान्तर ऋण हो तो ऋण किया जाता है और धन हो तो धन किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

पंचांग परिवर्तन पद्धति

इस पंचांग से अन्यान्य नगरों का पंचांग (सूर्योदय, सूर्यास्त, तिथि, नक्षत्र, योग, करण और दिनमान) बनाने का उदाहरण—

जिस नगर का सूर्योदय जानना हो तो उस नगर के आगे की अक्षांशादि सारिणी से देशान्तर मिनट लो। यदि मिनट +पूर्व के हों तो इस पंचांग के सूर्योदय में ऋण करें और मिनट -पश्चिम के हों तो धन करें, ऋण चिह्न हो तो धन करें और धन चिन्ह हो तो ऋण करें। यह इष्ट नगर का मध्याह्न सूर्योदय होगा। इसके बाद का इष्ट दिन (तारीख) की रविक्रान्ति-सारिणी से रविक्रान्ति लो। रविक्रांति और इष्ट नगर के अक्षांश इन दो उपकरणों से चरान्तर सारिणी से चरान्तर मिनट लो। यदि धन हों तो ऊपर से आये हुए मध्याह्न सूर्योदय में जोड़ें, ऋण हों तो हीन करें। वह इष्ट दिन का इष्ट नगर का स्टै. टा. से स्पष्ट सूर्योदय होगा। निकले हुए चरान्तर मिनट को पांच से गुणा करें तो वह पल होंगे। ऊपर के उदाहरण में चरान्तर मिनट सूर्योदय में धन किये हों तो यह पल दिनमान में ऋण करें, ऋण किये हों तो धन करें, यह अपने इष्ट दिन का इष्ट नगर का घटी-पलात्मक दिनमान होगा। इस दिनमान के घण्टा-मिनट बनाकर आए हुए सूर्योदय में मिला देने से सूर्यास्त होगा।

इस पंचांग में तिथ्यादि के घटी-पल दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय समय से हैं। इष्ट दिन और इष्ट नगर का लाया हुआ स्पष्ट सूर्योदय दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय से पहले हो तो वह जितने मिनट पहले है, उसके पल बनाकर (१ मि.= २॥ पल) वह इस पंचांग के तिथ्यादि में मिला दें तथा बाद के मिनट हों तो उसके जितने पल हों इस पंचांग के तिथ्यादि में से घटा दें तो अपने-अपने इष्ट दिन के इष्ट नगर में स्पष्ट सूर्योदय से तिथ्यादि पंचांग होगा।

उदाहरण—दिनांक १० नवम्बर को जयपुर नगरी का इस पंचांग से सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान और पंचांग बनाना है। इस पंचांग में इस दिन दिल्ली का सूर्योदय स्टैं. टा. घं. ६ मि. ४१ है। जयपुर दिल्ली से ५।४० पश्चिम में है (अक्षांशादि सारिणी में देखें)। अतः यह ५।४० इस पंचांग के सूर्योदय घं. ६ मि. ४१ में जोड़ दिये तो घं. ६ मि. ४६।४० हुए। यह जयपुर का इस पंचांग के मध्याह्न से सूर्योदय हुआ। अब रविक्रान्ति सारणी से ता. १० नवम्बर की रविक्रांति १७।२ दक्षिण है। जयपुर का अक्षांश २६।५५ है तो आगे चरान्तर सारणी से २७ अक्षांश और १७ क्रांति अंश के कोष्ठक में २ मिनट है। यह दक्षिण क्रांति होने के कारण ऋण किये जावेंगे। ऊपर के मध्याह्न सूर्योदय ६।४६।४० में २ मिनट कम किये तो जयपुर का स्पष्ट सूर्योदय ६।४४।४० आया। आये हुए चरान्तर मिनट २ को ५ से गुणा किया तो १० पल प्राप्त हुए। चरान्तर ऋण होने के कारण इस पंचांग के दिनमान २६।५७ में १० पल जोड़ने से जयपुर का दिनमान २७।०७ हुआ। यदि चरान्तर मिनट धन होते तो पलों को ऋण करना पड़ता। जयपुर का सूर्यास्त निकालने के लिए दिनमान २७।०७ के घड़ी-पलों के घण्टा-मिनट १०।५१ हुए। इनको जयपुर के सूर्योदय ६।४६।४० में जोड़ा तो सूर्यास्त १७।३७।४० हुआ। जयपुर और दिल्ली के स्पष्ट सूर्योदय में ३।२२ मिनट अथवा ८ पलों का ऋण अन्तर है। तिथि, योग, नक्षत्र, करण, भद्रा, ग्रह चाल आदि में सर्वत्र ३।२२ मिनट या ८ पल कम करने से जयपुर का मान आ जाता है।

चरान्तर सारिणी

मान लो १५ फरवरी को जोधपुर का चरान्तर निकालना है। दैनिक रविक्रांति सारिणी से इस दिन की रविक्रांति १२।५६ दक्षिण है। जोधपुर का अक्षांश २६।१८ है। चरान्तर सारिणी में खड़ी बायें हाथ की लाइन क्रान्तयांश की है और आड़ी ऊपर की लाइन अक्षांश की है तो क्रान्तायांश १२।५६ लगभग १३ के बराबर है। १३ क्रांत्यांश के सामने २६ अक्षांश के कोष्ठक में ३ चरान्तर मिनट दिये हैं। यह क्रांति दक्षिण होने के कारण ऋण हुए चरान्तर मिनट हुए।

क्रान्त्यंश	उत्तराक्षांशः चरान्तर मिनट — चरान्तर सारिणी — यह मिनट क्रांति दक्षिण हो तो ऋण और क्रांति उत्तर हो तो धन																					क्रांति दक्षिण हो तो धन उत्तर हो तो ऋण							
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
१	२	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१
२	३	३	२	२	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२
३	५	५	४	४	४	४	४	३	३	३	२	२	२	२	२	१	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२
४	६	६	६	५	५	५	५	४	४	४	३	३	३	२	२	२	१	१	१	०	०	०	०	१	१	१	२	२	३
५	८	८	७	७	६	६	६	५	५	५	४	४	४	३	३	२	२	२	१	१	०	०	०	१	२	२	२	३	४
६	१०	९	८	८	८	७	७	६	६	६	५	४	४	४	३	३	२	२	१	१	०	०	१	१	२	२	३	३	५
७	११	१०	१०	९	९	८	८	७	७	७	६	५	५	४	४	३	२	२	१	१	०	०	१	२	३	३	४	४	६
८	१२	१२	१२	११	१०	१०	९	८	८	७	७	६	६	५	४	४	३	२	२	१	०	०	१	२	३	३	५	५	६
९	१४	१४	१३	१२	१२	११	११	१०	९	८	८	७	६	६	५	४	४	३	२	१	०	०	१	२	३	४	५	६	७
१०	१६	१६	१५	१४	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	६	५	४	३	२	२	०	१	२	२	४	४	६	६	८
११	१८	१७	१६	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	२	०	१	२	३	४	५	६	७	८
१२	१९	१८	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	११	१०	९	८	७	६	५	३	३	२	०	१	२	३	४	५	७	८	९
१३	२१	२०	२०	१८	१७	१६	१६	१५	१३	१२	१२	११	१०	८	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	७	८	१०
१४	२२	२२	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	९	८	६	६	४	३	२	०	१	२	३	५	६	८	९	११
१५	२४	२४	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	११	१०	८	७	६	४	३	२	१	१	२	४	५	७	८	१०	१२
१६	२६	२५	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१६	१४	१३	१२	१०	९	८	६	५	४	२	१	१	२	४	६	७	९	११	१३
१७	२८	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१७	१५	१४	१२	११	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१२	१४
१८	३०	२९	२७	२६	२४	२३	२२	२०	१९	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	७	५	४	२	१	१	२	४	६	८	१०	१३	१४
१९	३२	३०	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१९	१७	१६	१४	१२	११	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१४	१५
२०	३४	३२	३०	२९	२८	२६	२४	२३	२१	२०	१८	१६	१५	१३	१२	१०	८	६	४	३	१	१	३	५	७	९	११	१५	१६
२१	३५	३४	३२	३१	२९	२७	२६	२४	२२	२१	१९	१७	१६	१४	१२	१०	८	६	५	३	१	१	३	५	८	१०	१२	१५	१७
२२	३७	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२२	२०	१८	१६	१४	१२	११	९	६	५	३	१	१	३	६	८	११	१३	१६	१८
२३	३९	३८	३६	३४	३२	३०	२८	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१५	१३	१२	९	७	५	३	१	१	४	६	९	११	१४	१६	१९
२४	४२	४०	३८	३६	३४	३२	३०	२९	२७	२५	२३	२१	१९	१७	१४	१२	१०	८	६	४	१	१	४	६	९	११	१४	१७	२०
	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अक्षांशादि सारणी (भारत के प्रमुख नगरों के अक्षांश आदि)

देशान्तर =दिल्ली से पूर्व में+पश्चिम में—अन्तर स्टैण्डर्ड अन्तर—स्थानीय टाईम और स्टैण्डर्ड टाईम का अन्तर

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
अयोध्या	यू.पी.	२६।४८	८२।१४	—१।४	+२०।००	इटावा	यू.पी.	२६।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२	किस्तबाड़	जम्मू	३३।१२	७५।४८	—२६।४८	—५।४४
अक्कलकोट	बम्बई	१७।३३	७६।१२	—२५।१२	—३।५२	इम्फाल	मणिपुर	२४।५४	९३।५४	+४५।३६	+६६।४०	किशनगढ़ जं.	राजस्थान	२७।१०	७५।२२	—२८।३२	—७।२८
अम्बाला	हरियाणा	३०।२२	७६।४६	—२२।५६	—१।५२	इडुंकी	केरल	९।५१	७७।१४	—२१।४	०।०	कोच्चि	केरल	१०।०	७६।१५	—२५।०	—३।५६
आकोला	महाराष्ट्र	२०।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	इटानगर	आं. प्रदेश	२६।५४	९३।३७	+४४।२४	+६५।३२	कोलगंगा	बिहार	२५।१६	८७।१६	+१९।४	+४०।८
अजमेर	राजस्थान	२६।२७	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६	ईगतपुरी	महाराष्ट्र	१९।४१	७३।३५	—३५।४०	—१४।३६	कोहिमा	नागालैंड	२५।४१	९४।०	+४६।०	+६७।४
अमृतसर	पंजाब	३१।३८	७४।५३	—३०।२८	—९।२४	इटारसी	म.प्रदेश	२२।३७	७७।४६	—१८।५६	+२।८	केलांग	हिमाचल	३२।४७	७७।४	—२१।३६	—०।४०
अहमदाबाद	गुजरात	२३।२	७२।३७	—३९।३२	—१८।२८	इलाहाबाद	यू.पी.	२५।२८	८१।५२	—२।३४	+१८।३२	कोटा	राजस्थान	२५।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६
अलीगढ़	यू.पी.	२७।५४	७८।५	—१७।४०	+३।२४	उन्नाव	उ. प्र.	२६।३३	८०।३०	—८।०	+१३।४	कोल्हापुर	महाराष्ट्र	१६।४१	७४।१३	—३३।८	—१२।५
अहमदनगर	महाराष्ट्र	१९।५	७४।४४	—३१।४	—१०।०	उतरोला	उ. प्र.	२७।१९	८२।२८	—०।८	+२०।५६	कुशलगढ़	राजस्थान	२३।८	७४।२७	—३२।१२	—११।८
अलीगढ़ टोंक	राजस्थान	२५।५८	७६।६	—२५।३६	—४।३२	ऊधमपुर	जम्मू	३२।५५	७२।७	—२९।३२	—८।२८	कूचबिहार	राजस्थान	२६।२०	८९।२५	+२७।४०	+४८।४४
अलीबाग	बम्बई	१८।३८	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६	उज्जैन	म. प्रदेश	२३।११	७५।४४	—२७।४	—६।०	कृष्णा	कर्नाटक	१६।२५	७७।१९	—२०।४४	+०।२०
अलवर	राजस्थान	२७।३४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४	उदय मण्डलम	तमिलनाडू	११।१७	७६।४४	—२३।४	—२।०	खम्भम	आं. प्र.	१७।१५	८०।११	—९।१६	+११।४८
अखनूर	कश्मीर	३२।५४	७४।३५	—३१।४०	—१०।३६	उदयपुर	राजस्थान	२४।३५	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	खण्डवा	म.प्र.	२१।५०	७६।२०	—२४।४०	—३।३६
अनूपशहर	यू.पी.	२८।२१	७८।२३	—१६।२७	+४।३६	उस्मानाबाद	महाराष्ट्र	१८।८	७६।५	—२५।४०	—४।३६	खेडब्रह्मा	गुजरात	२४।३	७३।४	—३७।३६	—१६।४०
अल्मोड़ा	यू.पी.	२९।३७	७९।४०	—११।२०	+९।४४	एचिलपुर	महाराष्ट्र	२१।१८	७७।३३	—१९।४८	+१।१६	गयाजो	बिहार	२४।४८	८५।१	+१०।४	+३१।८
अमेठी	यू.पी.	२६।८	८१।४८	—२।४८	+१८।१६	एटा कासगंज	उ. प्र.	२७।३५	७८।४१	—१५।१६	+५।४८	ग्वालियर	म.प्र.	२६।१४	७८।१०	—१७।२०	+३।४४
आसनसोल	बंगाल	२३।४२	८७।२०	—२०।४०	+४०।२४	कच्छ भुज	गुजरात	२३।१५	६९।४०	—५१।२०	—३०।१६	गंगापुर	राजस्थान	२६।२९	७६।४४	—२३।४	—२।०
अनूपगढ़	राजस्थान	२९।१०	७३।१३	—३७।८	—१६।४	कन्नौज	उ. प्र.	२७।२	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	गाजीपुर	उ. प्र.	२५।२६	८३।३५	+४।२०	+२५।२४
अकबरपुर	यू.पी.	२६।२६	८२।३३	+०।१२	+२१।१६	कविरत्तिद्वीप	लक्षद्वीप	१०।१७	७२।२१	—४०।३६	—१९।३२	गान्तोक	सिक्किम	२७।२०	८८।२५	+२४।२०	+४५।२४
अमरेली	गुजरात	२१।३६	७१।१४	—४५।४	—२४।०	कलकत्ता	प. बंगाल	२२।३५	८८।२४	+२३।३६	+४४।४०	गंगानगर	राजस्थान	२९।५२	७३।५१	—३४।३६	—१३।३२
अगरतला	त्रिपुरा	२३।५०	९१।२३	+३५।३२	+५६।३६	कपूरथला	पंजाब	३१।२२	७५।१२	—२८।३२	—७।२८	गोंडा	उ. प्र.	२७।१०	८१।५८	—२।१२	+१८।५२
अनन्तपुरम	आं.प्रदेश	१४।४१	७७।३७	—१९।३२	+१।३२	करनाल	हरियाणा	२९।४२	७७।२	—२१।५२	—०।४८	गोरखपुर	उ. प्र.	२६।४६	८३।२६	—३।३२	+२४।३६
आईजोल	मिजोरम	२३।४५	९२।४५	+४१।०	+६२।४	कन्याकुमारी	तमिलनाडू	८।४	७७।३६	—१९।३६	+१।२८	गोआ	गोआ	२५।१५	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८
आहवा	गुजरात	२०।४७	७३।४२	—३५।१२	—१४।८	कल्पाद	हिमाचल	३१।४१	७९।१०	—१३।२०	+७।४४	गुवाहाटी	असम	२६।११	९१।४५	+३७।०	+५८।४
आगरा	यू.पी.	२७।११	७८।२	—१७।५२	+३।१२	करीमनगर	आं. प्र.	१८।२८	७९।६	—१३।३६	+७।२८	गुरदासपुर	पंजाब	३२।३	७५।२७	—२८।१२	—७।८
आबू	राजस्थान	२४।३६	७२।४४	—३९।४	—१८।०	कानपुर	उ. प्र.	२६।२७	८०।२१	—८।३६	+१२।२८	गुना	म. प्र.	२४।४०	७७।३०	—२०।०	—१।४
आजमगढ़	यू.पी.	२६।६	८३।१२	+२।४८	+२३।५२	काठमाण्डो	नेपाल	२७।४२	८५।१७	+११।८	+३२।१२	घाटमशर	उ. प्र.	२६।८	८०।११	—९।१६	+११।४८
आरा	बिहार	२५।३६	८४।४२	+८।४८	+२९।५२	कांगड़ा मन्दिर	हिमाचल	३२।९	७६।१८	—२४।४८	—३।४४	चंडीगढ़	चण्डीगढ़	३०।४०	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
औरंगाबाद	बिहार	२४।४४	८४।२३	+७।३२	+२८।३६	काशी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	—२।०	+२३।४	चन्दौसी	उ. प्र.	२८।२७	७८।४७	—१४।५२	+६।१२
औरंगाबाद	महाराष्ट्र	१९।५२	७५।१९	—२८।४४	—७।४०	कांचिपुरम	तमिलनाडू	१२।५१	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र	१९।५६	७९।१७	—१२।५२	+८।१२
ओंगोलु	आंध्र प्र.	१५।३१	८०।६	—९।३६	+११।२८	कार्गिल	जम्मू-का.	३०।३०	७६।१३	—२५।८	—४।४	चिलास	जम्मू	३५।३६	७४।७	—३३।३२	—१२।२८
इन्दौर	म.प्रदेश	२२।४३	७५।५२	—२६।२८	—५।२८	किसनगढ़	राजस्थान	२७।५२	७०।३४	—४७।४४	—२६।४०	चीलो	राजस्थान	२७।२३	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.	नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
चिक्कमगलूर	कर्नाटक	१३।१९	७५।४७	—२६।५२	—५।४८	डोंग	राजस्थान	२७।२८	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	नागकोविंल	तमिलनाडु	८।७	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
चित्रकूट	उ. प्र.	२५।१२	८०।५४	—६।२४	+१४।४०	डेराबाबा	पंजाब	३२।२	७५।४	—२९।४४	—८।४०	नीमच	राजस्थान	२४।२८	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
चित्तौड़गढ	राजस्थान	२४।५४	७४।४२	—३१।१२	—१०।८	ढाका	बंग्लादेश	२३।४३	९०।२५	+३१।४०	+५२।४४	नैनीताल	उ. प्र.	२९।२५	७९।२७	—१२।१२	+८।५२
छपरा	बिहार	२५।४७	८४।४७	+९।८	+३०।१२	तलागंग	तलांगंगा	३२।५६	७२।२८	—४०।८	—१९।४	नेपालगंज	नेपालगंज	२८।३	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
छत्तरपुर	म.प्र.	२४।५५	७९।३६	—११।३६	+९।२८	तराई	बंगाल	२६।४०	८८।३०	+२४।०	+४५।४	नीलगिरी	उड़ीसा	२१।२७	८६।४७	+१७।८	+३८।१२
छिबरा मऊ	उ. प्र.	२७।१०	७९।२९	—१२।४	+९।०	तेजु	अ. प्रदेश	२७।५४	९६।१४	+५४।५६	+७६।०	पटना	बिहार	२५।३७	८५।१३	+१०।५२	+३१।५६
छबराटोंक	राजस्थान	२४।४०	७६।५१	—२२।३६	—१।३२	तंजाबूर	तमिल.	१०।५१	७९।२१	—१२।३६	+८।२८	पठानकोट	पंजाब	३२।१८	७५।४२	—२७।१२	—६।८
जगन्नाथपुरी	उड़ीसा	१९।४६	८५।५०	+१३।२०	+३४।२४	तिरूवन्तपुरम	केरल	८।४४	७७।२०	—२०।४०	+०।२४	पटियाला	पंजाब	३०।२२	७६।२५	—२४।२०	—३।१६
जबलपुर	म. प्र.	२३।१०	७९।५८	—१०।८	+१०।५६	तुर -मेघालय	शिलङ्ग	२५।३१	९०।१५	+३१।०	+५२।४	परलकोट	म. प्र.	१९।४५	८०।४६	—६।५६	+१४।८
जयपुर	राजस्थान	२६।५५	७५।५०	—२६।४०	—५।४०	थानेश्वर	पंजाब	२९।५८	७६।५६	—२२।१६	—१।१२	पणजी	गोआ	१५।४१	७३।१०	—३७।२०	—१६।१६
जलपाईगुड़ी	बंगाल	२६।३२	८८।४४	+२४।५६	+४६।०	दतिया	म. प्र.	२५।३९	७८।२७	—१६।१२	+४।५२	पालनपुर	गुजरात	२४।११	७२।२७	—४०।१२	—१९।८
जम्मू	जम्मू का.	३२।४४	७४।५४	—३०।२४	—९।२०	दरभंगा	बिहार	२६।१०	८५।५५	+१३।४०	+३४।४४	पाण्डिचेरी	तमिलनाडु	११।५६	७९।४८	—१०।४८	+१०।१६
जसवन्तनगर	जसवंतत	२६।५१	७८।५५	—१४।२०	+६।४४	दार्जलिंग	उ. प्र.	२७।३	८८।१७	+२३।८	+४४।१२	पानीपत	हरियाणा	२९।२७	७६।५९	—२२।४	—१।०
जनकपुर	म. प्र.	२३।४२	८१।५१	—२।३६	—१८।२८	हिसपुर	असम	२६।२०	९२।१०	+३८।४०	+५९।४४	प्रयागराज	उ. प्र.	२५।२५	८१।५३	—२।२८	+१८।३६
जामनगर	गुजरात	२२।२७	७०।५	—४९।४०	—२८।३६	दिण्डुक्कल	तमिलनाडु	१०।१३	७८।५	—१७।४०	+३।२४	पूना	महाराष्ट्र	१८।३१	७३।५२	—३४।३२	—१३।२८
जालौर	राजस्थान	२५।३५	७२।४४	—३९।४	—१८।०	दिल्ली	राजधानी	२८।३८	७७।१४	—२१।४	—०।०	पोर्टब्लेयर	अन्दमान	११।४४	९२।४१	४०।४४	+६१।४८
जूनागढ़	गुजरात	२१।३२	७०।२७	—४८।१२	—२७।८	द्वारका	गुजरात	२२।१६	६८।५७	—५४।१२	—३३।८	पुष्करजी	राजस्थान	२६।२८	७४।३३	—३१।४८	—१०।४४
जोधपुर	राजरात	२६।१९	७३।४	—३७।४४	—१६।४०	देहरादून	उ. प्र.	३०।१९	७८।४	—१७।४४	+३।२०	पेशावर	प. पाकि.	३४।१	७१।३६	—४३।३६	—२२।३२
जौनपुर	उ. प्र.	२५।४३	८२।४३	+०।५२	+२१।५६	देशनोक	राजस्थान	२७।५४	७३।१६	—३६।५६	—१५।५२	पोरबन्दर	गुजरात	२१।३८	६९।३६	—५१।३६	—३०।३२
जींद	हरियाणा	२९।१९	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	देवगढ़	उड़ीसा	२१।३२	८४।४५	+९।०	+३०।४	फतेहपुर	उ. प्र.	२७।६	७७।४०	—१९।२०	+१।४४
जैसलमेर	राजस्थान	२६।५४	७०।५७	—४६।१२	—२५।८	धर्मशाला	हिमाचल	३२।१६	७६।२३	—२४।२८	—३।२४	फरीदकोट	पंजाब	३०।४०	७४।४५	—३१।०	—९।५६
जालन्धर	पंजाब	३१।१९	७५।३५	—२७।४०	—६।३६	धर्मपुरी	तमिलनाडु	१२।८	७८।११	—१७।१६	+३।४८	फर्रुखाबाद	उ. प्र.	२७।३	७९।३७	—११।३२	+९।३२
जाफराबाद	सौराष्ट्र	२०।५२	७१।२१	—४४।३६	—३२।३२	धारवाढ़	कर्नाटक	१५।२८	७५।२	—२९।५२	—८।४८	फतेहपुर	राजस्थान	२७।५२	७५।२	—२९।५२	—८।४८
झांसी	उ. प्र.	२५।२६	७८।३४	—१५।४४	+५।२०	धार	म. प्र.	२२।३६	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फुलेरा	राजस्थान	२६।५२	७५।१६	—२८।५६	—७।५२
झालावाड़	राजस्थान	२४।३६	७६।९	—२५।२४	—४।२०	धौलपुर	राजस्थान	२६।४२	७७।५३	—१८।२८	+२।३६	फीरोजपुर	पंजाब	३०।५७	७४।३६	—३१।३६	—१०।३२
झुंझनू	राजस्थान	२८।७	७५।२५	—२८।२०	—७।१६	धौलागिर	नेपाल	२९।११	८३।०	—२१।०	—२३।४	फैजाबाद	उ. प्र.	२६।४७	८२।८	—१।२८	+१९।३६
टोंक	राजस्थान	२६।११	७५।५०	—२६।४०	—५।३६	धांग्रंधा	सौराष्ट्र	२२.५९	७१।३०	—४४।०	—२२।५६	फीरोजबाद	उ. प्र.	२७।९	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
टेरू	जम्मू	३६।१४	७२।४२	—३९।१२	—१८।८	नवलगढ़	राजस्थान	२७।५१	७५।१२	—२९।१२	—८।८	फूलपुर	उ.प्र.	२५।३२	८२।७	—१।३२	+१९।३२
टनकपुर	उ. प्र.	२९।९	८०।१०	—९।२०	+११।४४	नसीराबाद	राजस्थान	२६।१८	७४।४६	—३०।५६	—९।५२	फाजिलका	पंजाब	३०।२५	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
टाटानगर	बिहार	२४।४६	८६।१३	+१४।५२	+३५।५६	नड़ियाद	गुजरात	२२।४१	७२।५२	—३८।३२	—१७।२८	फतेहगढ़	उ. प्र.	२७।२३	७९।३५	—११।४०	+९।२४
टेहरी	गढ़वाल	३०।२३	७८।३०	—१६।०	+५।४	नाथद्वारा	राजस्थान	२४।५६	७३।४८	—३४।४८	—१३।४४	बक्सर	बिहार	२५।३४	८३।५९	+५।५६	+२७।०
टूंडला जं.	उ. प्र.	२७।१३	७८।१३	—१७।८	+३।५६	नाभा	पंजाब	३०।२२	७६।१०	—२५।२०	—४।१६	बद्रीनाथ	उ. प्र.	३०।४४	७९।३०	—१२।०	+९।४
डायमण्ड	पं. बंगाल	२२।११	८४।१२	+६।४८	+२७।५२	नागपुर	महाराष्ट्र	२१।९	७९।६	—१३।३६	+७।२८	बरंगल	आं. प्र.	१८।४	७९।५३	—१०।२८	+१०।३६
डिब्रूगढ़	असम	२७।२९	९४।५६	+४९।४४	+७०।४८	नासिक	महाराष्ट्र	२१।०	७३।४७	—३४।५२	—१३।४८	बड़ौदा	महाराष्ट्र	२२।१८	७३।१२	—३७।१२	—१६।८
डूंगरपुर	राजस्थान	२३।५०	७३।४३	—३५।८	—१४।४	नाचना	राजस्थान	२७।५२	७१।५४	—४२।२४	—२१।२०	बलिया	उ. प्र.	२४।४४	८४।०९	+६।३६	+२७।४०
डिवाई	यू. पी.	२८।१२	७८।१५	—१७।०	+४।४	नारनौल	राजस्थान	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]						

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
बम्बई	महाराष्ट्र	१८।५५	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
बरेली	उ.प्र.	२८।२२	७९।२४	—१२।२४	+८।४०
बद्रीनाथ	कर्नाटक	१५।३४	७६।५२	—२२।३२	—१।२८
बर्द्धमान	पं. बंगाल	२३।२५	८७।५४	+२१।३६	+४२।४०
बहराइच	उ. प्र.	२७।३४	८१।३७	—३।३२	+१७।३२
बस्ती	उ.प्र.	२६।४८	८२।४६	+१।४	+२२।८
ब्यावर	राजस्थान	२६।७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
वाराणसी	उ. प्र.	२५।२०	८३।०	+२।०	+२३।४
बासवाड़ा	म. प्रदेश	२३।३३	७८।२६	—१६।१६	+४।४८
बाराबंकी	उ. प्र.	२६।५६	८१।१०	—५।२०	+१५।४४
बालू घाट	प. दिजाज	२५।१४	८८।४७	+२५।८	+४६।१२
बाँदा	उ. प्र.	२५।२८	८०।२१	—८।३६	+१२।२८
बांदीकुई	राजस्थान	२७।२६	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
बूंदी	राजस्थान	२५।२७	७५।४०	—२७।२०	—६।१६
ब्रह्मकुण्ड	अरु. प्रदेश	२७।५६	९६।१०	+५४।४०	+७५।४४
बंगलौर	कर्नाटक	१२।५८	७७।३५	—१९।४०	+१।२४
बैतूल	म. प्र.	२१।५१	७७।५६	—१८।१६	+२।४८
बेलगांव	कर्नाटक	१५।५५	७४।३१	—३१।५६	—१०।५२
बुलन्दशहर	उ. प्र.	२८।२४	७७।५२	—१८।३	+२।३२
बिलासपुर	हिमाचल	३१।१९	७६।५०	—२२।४०	—२।३६
बिलासपुर	म. प्र.	२२।५	८२।१०	—१।२०	+१९।४४
बिजनौर	उ. प्र.	२९।२३	७८।११	—१७।१६	+३।४८
बिहार शरीफ	बिहार	२५।११	८५।३२	+१२।८	+३३।१२
बीकानेर	राजस्थान	२८।१	७३।१९	—२६।४४	—१५।४०
बीजापुर	कर्नाटक	१६।५०	७५।४२	—२७।१२	—६।८
बादर	कर्नाटक	१८।१०	७७।४७	—१८।५२	+२।१२
बीरमगढ़	गुजरात	२३।०	७२।२	—४१।५२	—२०।४८
बोगरा	बंगलादेश	२४।५१	८९।२४	+२७।२६	+४८।४०
भरतपुर	राजस्थान	२७।१५	७७।३०	—२०।०	+१।४
भंडारा	महाराष्ट्र	२१।१०	७९।४०	—११।२०	+९।४४
भरुच	गुजरात	२१।४१	७३।०	—३८।०	—१६।५६
भटिन्डा	पंजाब	३०।२१	७४।५७	—३०।१२	—९।८
भदोही	उ. प्र.	२५।२४	८२।३४	+०।१६	+२१।२०
भोपाल	म. प्र.	२३।१६	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
भीलवाड़ा	राजस्थान	२४।२१	७४।४०	—३१।२०	—१०।१६
भिवानी	हरियाणा	२८।४८	७६।८	—२५।२८	—४।२४
भावनगर	गुजरात	२१।४४	७२।१०	—४२।२०	—२०।१६

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
भुवनेश्वर	उड़ीसा	२०।५४	८५।५२	+१३।२८	+३४।३२
भूसावल	महाराष्ट्र	२१।१२	७५।४७	—२६।५२	—५।४८
भूटान	भूटान	२७।३०	९०।०	+३०।०	+५१।४
भुजकच्छ	गुजरात	२३।१५	६९।४१	—५१।१६	—३०।१२
मथुरा	उ. प्र.	२७।२८	७७।४१	—१९।१६	+१।४८
मद्रास	तमिलनाडू	१३।५	८०।१७	—८।५२	+१२।१२
मणीपुर	मणीपुर	२४।२०	९३।५८	—४५।५२	—६६।५६
मण्डी	हि. प्र.	३१।४३	७६।५८	—२२।८	—१।४
मल्लपुरम	केरल	११।४	७६।४	—२५।४४	—४।४०
मालेगांवना	मालेगांव	२०।३१	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
मुरादाबाद	उ. प्र.	२८।५०	७८।५०	—१४।४०	+६।२४
मुंगेर	बिहार	२५।२३	८६।३०	+१६।०	+३७।४
मुजफरपुर	बिहार	२६।७	८५।२७	+११।४८	+३२।५२
फुजफ्फराबाद	कश्मीर	३४।३३	७३।२७	—३६।१२	—१५।८
मेघालय	शिलंग	२५।५७	८२।०	+३८।०	+५९।४
मैसूर	कर्नाटक	१२।१९	७६।२०	—२६।२०	—२।१६
मेरठ	उ. प्र.	२९।१	७७।४५	—१९।०	+२।४
मिर्जापुर	उ. प्र.	२५।१०	८२।३७	+०।२८	+२१।३२
मेडतासिटी	राजस्थान	२६।३९	७४।३	—३३।४८	—१२।४४
यानामा	आं. प्रदेश	१६।४६	८२।१३	—१।८	+१९।५६
यासिन	केरल	३६।२१	७३।१९	—३६।४८	—१२।४४
यवतमाल	महाराष्ट्र	२०।२४	७८।८	—१७।२८	+३।३६
यादगीर	कर्नाटक	१६।४७	७७।८	—१७।२८	+ ३।३६
रतलाम	म. प्र.	२३।१९	७५।३	—२९।४८	—८।४४
रत्नागिरी	महाराष्ट्र	१६।५९	७३।१९	—३६।४४	—१५।४०
राजकोट	गुजरात	२२।१८	७०।५०	—४६।४०	—२५।२६
राजचूर	(कर्ना.)	१६।१२	७७।२१	—२०।३६	+०।२८
राजमपेट	(आ. प्र.)	१४।१२	७९।३४	—११।४४	+९।२०
रामपुर	(यू.पी.)	२८।४७	७९।२	—१३।५२	+७।१२
रामेश्वर	(तमिल.)	९।१७	७९।३४	—११।३४	+९।२०
रायबरेली	(उ. प्र.)	२६।१४	८१।१३	—५।८	+१५।५६
राजमंड्रि	(आ. प्र.)	१७।५	८१।४८	—२।४८	+१८।१६
रायपुर	(म. प्र.)	२१।१५	८१।३८	—३।२८	+१७।३६
राजगढ़	(म. प्र.)	२४।०	७६।४४	—२३।४	—२।०
राजगढ़	(राज.)	२७।४०	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
राजनन्द गांव	म.प्र.	२१।१५	८१।५	—५।४०	+१५।१५
रोहतक	(हरियम)	२८।५४	७६।३८	—२३।२८	—२।२४

नगर	प्रान्त	उत्तर अक्षांश	पूर्व रेखांश	समयान्तर स्टे. अन्तर मि. से.	दिल्ली से देशान्तर अंतर मि. से.
रोपड़	(पंजा.)	३०।५७	७६।३०	—२४।०	—२।५६
लखनऊ	(उ. प्र.)	२६।५१	८०।५९	—६।१४	+१५।०
ललितपुर	(उ. प्र.)	२४।४१	७८।२४	—१६।२४	+४।४०
लुधियाना	पंजाब	३०।३५	७५।५३	—२६।२८	—५।२४
शाहजहांमपुर	उ. प्र.	२७।५४	७९।५७	—१०।१२	+१०।५२
शिलांग	(मेघा.)	२५।३४	९१।४५	+३७।३६	+५८।४०
शिवपुरी	(म. प्र.)	२५।३०	७८।४	—१३।४४	+३।२०
राजापुर	(म. प्र.)	२३।२४	७६।१४	—२५।४	—४।०
शेरकिला	(काश्मी.)	३६।७	७३।५३	—३४।२८	—१३।२४
श्रीनगर	(काश्म.)	३४।६	७४।५१	—३०।३६	—९।३२
शिमला	(हिमा.)	३१।६	७७।१०	—२१।२०	—०।१६
संतालपु	(गु.)	२३।४७	७०।२८	—४८।८	—२७।४
सातारा	(महा.)	१७।४७	७३।५४	—३४।२४	—१३।२०
सागर	(म. प्र.)	२३।५०	७८।४५	—१५।०	+६।४
सरदारशहर	(राज.)	२८।२७	७४।३०	—३२।०	—१०।५६
सवाईमाधोपुर	(राज.)	२५।५९	७६।२४	—२४।२४	—३।२०
सहारनपुर	(उ. प्र.)	२९।५९	७७।२३	—२०।२८	+०।३६
सोमनाथ	(गुज.)	२१।१	७०।२६	—४८।१६	—२७।२२
सोलापुर	(महा.)	१७।४०	७५।४८	—३०।४८	—५।४४
सोलन	(हिमा.)	३०।५५	७७।९	—२१।२४	—०।२०
सूरत	(गुज.)	२१।१२	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
सिकन्दराबाद	आ. प्र.	१७।२७	७८।३३	—१५।४८	+५।१६
सिरोही	(राज.)	२४।५६	७२।५०	—३८।४०	—१७।३६
सीकर	(राज.)	२७।५१	७५।१४	—२९।४	—८।०
सीतापुर	(उ. प्र.)	२७।३६	८०।४०	—७।२०	+१३।४४
हरिद्वार	(उ. प्र.)	२९।५८	७८।१३	—१७।८	+३।५६
हरदोई	(उ. प्र.)	२७।२३	८०।१०	—९।२०	+११।४४
हथुवा	हथुवा	२६।१२	८४।५	+६।२०	+२७।४४
होशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४५	—१९।०	+२।४
हजारीबाद	२४।०	८५।२३	+११।३२	—३२।२७	—३२।३६
हाजीपुर	(उ.प्र.)	२५।३५	८३।११	+२।४४	—२३।४८
होशियारपुर	(पंजा.)	३१।३२	७५।५५	—२६।२०	—५।१६
हौशंगाबाद	(म. प्र.)	२२।४६	७७।४३	—१९।८	+१।५६
हैदराबाद	(आन्ध्र)	१७।२७	७८।३०	—१६।०	+५।४
हिसार	हरियाणा	२९।१४	७५।४४	—२७।४	—६।०
हैद्राबाद	पाकिस्तान	२५।२३	६८।२२	—५६।३२	—३५।२८
हिंगाटा	(उड़ी.)	२०।२२	८५।१२	+१०।४८	+३१।५२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दुनियां के कुछ देशों के अक्षांश आदि

विदेशी राजधानी एवं प्रमुख शहर	राष्ट्र	अक्षांश	रेखांश	क्षेत्रीय स्टै. टा. से. स्था. समयान्तर मि. सै.	ग्रीन्विच G.M.T. से क्षे. स्टै. समयान्तर घं. मि.	भारतीय स्टै.टा. से क्षे. स्टै. टा. समयान्तर घं. मि.	दिल्ली से पूर्व व पश्चि. देशान्तर समय संस्कार घं. मि. सै.	साम्पा. संस्कार
बेलिंग्टन	न्यूजीलैंड	४१।१९द.	१७४।४६पू.	—२०।५६	+१२।०	+६।३०	+६।३०।८	—१।१३
कानबेर	आस्ट्रेलिया	३५।२५द.	१४९।८पू.	—३।२८	" १०।०	" ४।३०	+४।४७।३६	" ०।४७
आस्ट्रेलिया	दक्षिण	३२।०द.	१४६।२७पू.	—१४।५२	" १०।०	" ४।३०	+४।३६।१२	" ०।४७
टोकियो	जापान	३५।३९उ.	१३९।४५पू.	+१९।०	" ९।०	" ३।३०	+४।२०।४	" ०।४४
सेऊल	द. कोरिया	३७।४०उ.	१२७।० पू.	—३२।०	" ९।०	" ३।३०	+३।२९।४	" ०।३३
प्योगयांग	उ. कोरिया	३९।०उ.	१२५।३०पू.	—३८।०	" ९।०	" ३।३०	+३।१३।४	" ०।३२
फार्मोसा	फार्मोसा	२५।२८उ.	१२१।३२पू.	—५३।५२	" ९।०	" ३।३०	+२।५७।१२	" ०।३०
फिजीदीप	फिजी	१८।०द.	१७९।०पू.	+६।२६	" १२।०	" ६।३०	+६।४७।४	" १।८
पेइचिंग	चीन	३९।५०उ.	११६।२०पू.	—१४।४०	" ८।०	" २।३०	+२।३६।२४	" ०।२६
हांगकांग	हांगकांग	२२।१८उ.	११४।१०पू.	—२३।२०	" ८।०	" २।३०	+२।२७।४४	" ०।२२
जकार्ता	इंडोनेशिया	७।५७द.	११०।२०पू.	—८।४०	" ७।३०	" २।०	+२।२१।२४	" ०।२१
सिंगापुर	मलाया	१।१६उ.	१०३।४७पू.	—३४।५२	" ७।३०	" २।०	+१।४६।१२	" ०।१७
बैंगकाक	स्याम	१३।४५उ.	१००।३०पू.	—१८।०	" ७।०	" १।३०	+१।३३।४	" ०।१५
रंगून	ब्रह्मदेश	१६।४८उ.	९६।८पू.	—५।२८	" ६।३०	" १।०	+१।१५।३६	" ०।१२
मांडले	" "	२२।०उ.	९६।५पू.	—५।४०	" ६।३०	" १।०	+१।१५।२४	" ०।१२
ल्हासा	तिब्बत	२९।४०उ.	९१।८ पू.	+३४।३२	" ५।३०	" ०।०	+०।५५।३६	" ०।९
ढाका	बांग्लादेश	२३।४३उ.	९०।२५पू.	+१।४०	" ६।०	" ०।३०	+०।५२।४४	" ०।८
कार्डी	सीलोन लंका	७।११उ.	८०।३२पू.	—०।०	" ५।३०	— ०।०	+०।२१।१२	" ०।२
राज. दिल्ली	भारत	२८।३८उ.	७७।१४पू.	—२१।४	" ५।३०	+ ०।०	+ ०।०।०	" ०।०
काबुल	अफगानिस्तान	३४।३१उ.	६९।१२पू.	+६।४८	" ४।३०	— १।००	—०।३२।८	+०।५
करांची	प.पाकिस्तान	२४।५१उ.	६७।०पू.	—३२।०	" ५।०	" ०।३०	—०।४०।५६	" ०।६
तेहरान	ईरान	३५।४४उ.	५१।२७पू.	—४।१२	" ३।३०	" २।०	—१।४३।८	" ०।१७
एडन	एडन	१२।५८उ.	४५।१ पू.	+०।४	" ३।०	" २।३०	—२।८।५२	" ०।२०
बगदाद	ईराक	३३।१८उ.	४४।३०पू.	—२।०	" ३।०	" २।३०	—२।१०।५६	" ०।२१
अदन	एडन	१३।२५उ.	४५।०पू.	—०।०	" ३।०	" २।३०	—२।८।५६	" ०।२०
रियाध	सऊदी अरब	२४।५०उ.	४६।१८पू.	+५।१२	" ३।०	" २।३०	—२।३।४४	" ०।१९
मॉस्को	रूस	५५।४५उ.	३७।३५पू.	—२९।४०	" ३।०	" २।३०	—२।३८।३६	" ०।२६
नाइरोबी	पूर्वी अफ्रीका	१।२०द.	३६।४४पू.	—३३।४	" २।३०	" ३।०	—२।४२।०	" ०।२७
दमास्कस	सीरिया	३३।३०उ.	३६।१८पू.	+२५।१२	" २।०	" ३।३०	—२।४३।४४	" ०।२७
अमन	जॉर्डन	३१।५७उ.	३५।५७ पू.	+२३।४८	" २।०	" ३।३०	—२।४५।८	" ०।२८
जेरुसलेम	इसराइल	३१।४८उ.	३५।२२पू.	+२०।४८	" २।०	" ३।३०	—२।८।८	" ०।२८
काहिरा	मिस्र	३०।१३उ.	३१।२३पू.	+४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।४।४	" ०।३१
अंकारा	तुर्किस्तान	३९।५२उ.	३२।५९पू.	+११।५६	" २।०	" ३।३०	—२।५७।०	" ०।३०
ट्रांसवालय	दक्षि. अफ्रीका	२५।०द.	२९।०पू.	+४।०	" २।०	" ३।३०	—३।२२।५६	" ०।३१
बल्गारिया	यूरोप	४३।१८उ.	२६।१७पू.	+१४।५२	" २।०	" ३।३०	—३।२३।४८	" ०।३३
एथेन्स	ग्रीस	३७।५९उ.	२३।२०पू.	—२६।४०	" २।०	" ३।३०	—३।३५।३६	" ०।३६
बेलग्रेड	यूगोस्लाविया	४४।५०उ.	२०।३७पू.	+२२।२८	+ १।०	— ४।३०	—३।४६।२८	+०।३८
बुडापेस्ट	हंगरी	४७।२९उ.	१९।५ पू.	+१६।२०	" १।०	" ४।३०	—३।५२।३६	" ०।३९
बर्लिन	पूर्वीजर्मनी	५२।३२उ.	१३।२४पू.	—६।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।२५।२०	" ०।४२
ट्रिपोली	उत्तरी अफ्रीका	३२।४५द.	१३।१५पू.	—७।०	" १।०	" ४।३०	" ४।२५।५६	" ०।४३
रोम	इटली	४१।४५उ.	१२।२९पू.	—१०।४	" १।०	" ४।३०	" ४।२९।०	" ०।४८
यान	पश्चि.जर्मनी	५०।४३उ.	७।६पू.	—३१।३६	+ १।०	" ४।३०	" ४।४०।३२	" ०।४८
जेनेवा	स्विट्जरलैंड	४६।४२उ.	६।९पू.	—३५।२४	" १।०	" ४।३०	" ४।४४।२०	" ०।४९
ब्रूसेल्स ×	बेल्जियम	५०।५१उ.	४।२१पू.	—४२।३६	+ १।०	— ४।३०	" ४।५२।३२	" ०।५०
पेरिस ×	फ्रान्स	४८।५०उ.	२।२०पू.	—५०।४०	+ १।०	" ४।३०	" ४।५९।३६	" ०।५१
ग्रीनविच	इंग्लैंड	५१।२९उ.	रे. शून्य	— ०।०	+ ०।०	" ५।३०	" ५।८।५६	" ०।५१
लंदन	"	५१।३२उ.	०।५प.	— ०।२०	— ०।०	" ५।३०	" ५।९।१६	" ०।५३
मॉड्रिड ×	स्पेन	४०।२५उ.	३।४५प.	—७५।०	+ १।०	" ४।३०	" ५।२३।५६	" ०।५४
जिब्राल्टर "	जिब्राल्टर	३६।७उ.	५।२२ प.	—८१।२८	+ १।०	" ४।३०	" ५।३०।२४	" ०।५७
लिस्बॅन	पुर्तगाल	३८।४२उ.	९।१०प.	— ३६।४०	— ०।०	" ५।३०	" ५।४५।३६	" १।३७
अर्जेण्टाइना	द. अमेरिका	२६।१२द.	६४।४५प.	+ ४१।०	" ५।०	" १०।३०	" ९।२७।५६	" १।४०
न्यूयॉर्क	अमेरिका	४०।४३उ.	७४।०प.	+ ४।०	" ५।०	" १०।३०	" १०।४।५६	" १।४०
ओटावा	कैनेडा	४५।२६उ.	७५।४१प.	— २।४४	" ५।०	" १०।३०	" १०।११।४०	" १।४०
वाशिंगटन	अमेरिका	३८।४३उ.	७७।०प.	— ८।०	" ५।०	" १०।०	" १०।१६।५६	" १।४२
मेक्सिको	मेक्सिको	१९।२५उ.	९९।१७प.	— ३७।८	" ६।०	" ११।३०	" ११।४६।४	" १।५७

नोट—× यहां ग्रीनविच मध्यम समय (G.M.T.) भी व्यवहार में चालू है।

रेलवे टाईम से देशी टाईम बनाने की रीति

जिस नगर का रेलवेअन्तर मिनट धन होवे उसके मध्य अन्तर को रेलवे टाइम में जोड देना और जहां ऋण चिन्ह होवे वहां पर मध्यान्तर मिनट घटा देने से अभीष्ट शहर का मध्यम समय प्राप्त होगा। जिस मास और तारीख का स्पष्ट समय जानना हो तो उस मास और तारीख के सामने जो वेलान्तर मिनट होवे उनको मध्यम टाइम में विपरीत (धन चिन्ह हो तो ऋण और ऋण चिन्ह हो तो धन) युक्त करने से अभीष्ट शहर का घण्टा मिनिटात्मक स्पष्ट समय उस दिन का होगा। (+) यह धन चिन्ह है। और (—) यह ऋण चिन्ह है।

समय भेद- इस मसय समस्त भू-मण्डल पर जो समय प्रयोग में आ रहा है वह ब्रिटेन की राजधानी लन्दन के निकट ग्रीनविच(वेधशाला) से प्रसारित किया जाता है सभी देशों ने अपने-अपने यहां व्यवहार में लाने के लिए किसी एक स्थान विशेष को आधार मानकर स्वदेशीय स्टैण्डर्ड टाईम चालू कर रखा है। इस समय समस्त भारत वर्ष में जो समय प्रसारित किया जाता है, वह बनारस से कुछ पश्चिम में मिर्जापुर, चिरमिरी, बिलासपुर, कोटपाड़, घोरा और जुम्ला आदि स्थानों पर से गुजरने वाली काल्पनिक देशान्तर रेखा को आधार मानकर किया जाता है, जो कि ग्रीनविच से पूर्व रेखांश ८२।३० के अन्तर पर है। एक देशान्तर रेखा बराबर ४ मिनट + के हिसाब से ८२।३० × ४ =५ घं ३० मिनट का अन्तर ही ग्रीनविच और भारतीय स्टैण्डर्ड समय का अन्तर सदैव धन रहता है।

वर्तमान समय में- ८२।३० पूर्व देशान्तर रेखा से प्रसारित होने वाला भारतीय स्टैण्डर्ड टाईम समस्त भारत वर्ष में एक समान रहता है। इससे वायुयान, जलयान, रेलवे आदि के व्यवहारों में बहुत सुविधा रहती है। लेकिन अनभिज्ञ ज्योतिषी समय भेद का यथार्थ ज्ञान न होने के कारण किसी भी स्थान के किसी भी आधार पर बने पंचांग का सूर्योदय चाहे जिस मान का लेकर इष्ट बना लेते हैं, यह ज्योतिष शास्त्र की दृष्टि से अपराध है। ज्योतिषियों को चाहिए कि पहले समय भेद को भली भाँति समझकर तदन्तर जन्म पत्र आदि बनावें।

इस समय समस्त घड़ियां स्टैण्डर्ड टाईम से चल रही हैं। प्राय धूप घडी का प्रचलन ही समाप्त हो चुका है। धूप घड़ी से बने पंचांग व उनमें छपी लग्न सारिणी, दिनार्ध से या दिनमानादि के द्वारा इष्ट बनाने की पुरानी विधि भी सर्वथा अनुचित है, क्योंकि धूप घड़ी के अनुसार [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चालन कोष्ठक

मिनट	० घं.	१ घं.	२ घं.	३ घं.	४ घं.	५ घं.	६ घं.	७ घं.	८ घं.	९ घं.	१० घं.	११ घं.	१२ घं.	१३ घं.	१४ घं.	१५ घं.	१६ घं.	१७ घं.	१८ घं.	१९ घं.	२० घं.	२१ घं.	२२ घं.	२३ घं.
०	०	४२	८३	१२५	१६७	२०८	२५०	२९२	३३३	३७५	४१७	४५८	५००	५४२	५८३	६२५	६६७	७०८	७५०	७९२	८३३	८७५	९१७	९५८
१	१	४३	८४	१२६	१६८	२०९	२५१	२९३	३३४	३७६	४१८	४५९	५०१	५४३	५८४	६२६	६६८	७०९	७५१	७९३	८३४	८७६	९१८	९५९
३	२	४४	८५	१२७	१६९	२१०	२५२	२९४	३३५	३७७	४१९	४६०	५०२	५४४	५८५	६२७	६६९	७१०	७५२	७९४	८३५	८७७	९१९	९६०
४	३	४५	८६	१२८	१७०	२११	२५३	२९५	३३६	३७८	४२०	४६१	५०३	५४५	५८६	६२८	६७०	७११	७५३	७९५	८३६	८७८	९२०	९६१
६	४	४६	८७	१२९	१७१	२१२	२५४	२९६	३३७	३७९	४२१	४६२	५०४	५४६	५८७	६२९	६७१	७१२	७५४	७९६	८३७	८७९	९२१	९६२
७	५	४७	८८	१३०	१७२	२१३	२५५	२९७	३३८	३८०	४२२	४६३	५०५	५४७	५८८	६३०	६७२	७१३	७५५	७९७	८३८	८८०	९२२	९६३
९	६	४८	८९	१३१	१७३	२१४	२५६	२९८	३३९	३८१	४२३	४६४	५०६	५४८	५८९	६३१	६७३	७१४	७५६	७९८	८३९	८८१	९२३	९६४
१०	७	४९	९०	१३२	१७४	२१५	२५७	२९९	३४०	३८२	४२४	४६५	५०७	५४९	५९०	६३२	६७४	७१५	७५७	७९९	८४०	८८२	९२४	९६५
१२	८	५०	९१	१३३	१७५	२१६	२५८	३००	३४१	३८३	४२५	४६६	५०८	५५०	५९१	६३३	६७५	७१६	७५८	८००	८४१	८८३	९२५	९६६
१३	९	५१	९२	१३४	१७६	२१७	२५९	३०१	३४२	३८४	४२६	४६७	५०९	५५१	५९२	६३४	६७६	७१७	७५९	८०१	८४२	८८४	९२६	९६७
१४	१०	५२	९३	१३५	१७७	२१८	२६०	३०२	३४३	३८५	४२७	४६८	५१०	५५२	५९३	६३५	६७७	७१८	७६०	८०२	८४३	८८५	९२७	९६८
१६	११	५३	९४	१३६	१७८	२१९	२६१	३०३	३४४	३८६	४२८	४६९	५११	५५३	५९४	६३६	६७८	७१९	७६१	८०३	८४४	८८६	९२८	९६९
१७	१२	५४	९५	१३७	१७९	२२०	२६२	३०४	३४५	३८७	४२९	४७०	५१२	५५४	५९५	६३७	६७९	७२०	७६२	८०४	८४५	८८७	९२९	९७०
१९	१३	५५	९६	१३८	१८०	२२१	२६३	३०५	३४६	३८८	४३०	४७१	५१३	५५५	५९६	६३८	६८०	७२१	७६३	८०५	८४६	८८८	९३०	९७१
२०	१४	५६	९७	१३९	१८१	२२२	२६४	३०६	३४७	३८९	४३१	४७२	५१४	५५६	५९७	६३९	६८१	७२२	७६४	८०६	८४७	८८९	९३१	९७२
२२	१५	५७	९८	१४०	१८२	२२३	२६५	३०७	३४८	३९०	४३२	४७३	५१५	५५७	५९८	६४०	६८२	७२३	७६५	८०७	८४८	८९०	९३२	९७३
२३	१६	५८	९९	१४१	१८३	२२४	२६६	३०८	३४९	३९१	४३३	४७४	५१६	५५८	५९९	६४१	६८३	७२४	७६६	८०८	८४९	८९१	९३३	९७४
२४	१७	५९	१००	१४२	१८४	२२५	२६७	३०९	३५०	३९२	४३४	४७५	५१७	५५९	६००	६४२	६८४	७२५	७६७	८०९	८५०	८९२	९३४	९७५
२६	१८	६०	१०१	१४३	१८५	२२६	२६८	३१०	३५१	३९३	४३५	४७६	५१८	५६०	६०१	६४३	६८५	७२६	७६८	८१०	८५१	८९३	९३५	९७६
२७	१९	६१	१०२	१४४	१८६	२२७	२६९	३११	३५२	३९४	४३६	४७७	५१९	५६१	६०२	६४४	६८६	७२७	७६९	८११	८५२	८९४	९३६	९७७
२९	२०	६२	१०३	१४५	१८७	२२८	२७०	३१२	३५३	३९५	४३७	४७८	५२०	५६२	६०३	६४५	६८७	७२८	७७०	८१२	८५३	८९५	९३७	९७८
३०	२१	६३	१०४	१४६	१८८	२२९	२७१	३१३	३५४	३९६	४३८	४७९	५२१	५६३	६०४	६४६	६८८	७२९	७७१	८१३	८५४	८९६	९३८	९७९
३२	२२	६४	१०५	१४७	१८९	२३०	२७२	३१४	३५५	३९७	४३९	४८०	५२२	५६४	६०५	६४७	६८९	७३०	७७२	८१४	८५५	८९७	९३९	९८०
३३	२३	६५	१०६	१४८	१९०	२३१	२७३	३१५	३५६	३९८	४४०	४८१	५२३	५६५	६०६	६४८	६९०	७३१	७७३	८१५	८५६	८९८	९४०	९८१
३५	२४	६६	१०७	१४९	१९१	२३२	२७४	३१६	३५७	३९९	४४१	४८२	५२४	५६६	६०७	६४९	६९१	७३२	७७४	८१६	८५७	८९९	९४१	९८२
३६	२५	६७	१०८	१५०	१९२	२३३	२७५	३१७	३५८	४००	४४२	४८३	५२५	५६७	६०८	६५०	६९२	७३३	७७५	८१७	८५८	९००	९४२	९८३
३७	२६	६८	१०९	१५१	१९३	२३४	२७६	३१८	३५९	४०१	४४३	४८४	५२६	५६८	६०९	६५१	६९३	७३४	७७६	८१८	८५९	९०१	९४३	९८४
३९	२७	६९	११०	१५२	१९४	२३५	२७७	३१९	३६०	४०२	४४४	४८५	५२७	५६९	६१०	६५२	६९४	७३५	७७७	८१९	८६०	९०२	९४४	९८५
४०	२८	७०	१११	१५३	१९५	२३६	२७८	३२०	३६१	४०३	४४५	४८६	५२८	५७०	६११	६५३	६९५	७३६	७७८	८२०	८६१	९०३	९४५	९८६
४२	२९	७१	११२	१५४	१९६	२३७	२७९	३२१	३६२	४०४	४४६	४८७	५२९	५७१	६१२	६५४	६९६	७३७	७७९	८२१	८६२	९०४	९४६	९८७
४३	३०	७२	११३	१५५	१९७	२३८	२८०	३२२	३६३	४०५	४४७	४८८	५३०	५७२	६१३	६५५	६९७	७३८	७८०	८२२	८६३	९०५	९४७	९८८
४५	३१	७३	११४	१५६	१९८	२३९	२८१	३२३	३६४	४०६	४४८	४८९	५३१	५७३	६१४	६५६	६९८	७३९	७८१	८२३	८६४	९०६	९४८	९८९
४६	३२	७४	११५	१५७	१९९	२४०	२८२	३२४	३६५	४०७	४४९	४९०	५३२	५७४	६१५	६५७	६९९	७४०	७८२	८२४	८६५	९०७	९४९	९९०
४८	३३	७५	११६	१५८	२००	२४१	२८३	३२५	३६६	४०८	४५०	४९१	५३३	५७५	६१६	६५८	७००	७४१	७८३	८२५	८६६	९०८	९५०	९९१
४९	३४	७६	११७	१५९	२०१	२४२	२८४	३२६	३६७	४०९	४५१	४९२	५३४	५७६	६१७	६५९	७०१	७४२	७८४	८२६	८६७	९०९	९५१	९९२
५०	३५	७७	११८	१६०	२०२	२४३	२८५	३२७	३६८	४१०	४५२	४९३	५३५	५७७	६१८	६६०	७०२	७४३	७८५	८२७	८६८	९१०	९५२	९९३
५२	३६	७८	११९	१६१	२०३	२४४	२८६	३२८	३६९	४११	४५३	४९४	५३६	५७८	६१९	६६१	७०३	७४४	७८६	८२८	८६९	९११	९५३	९९४
५३	३७	७९	१२०	१६२	२०४	२४५	२८७	३२९	३७०	४१२	४५४	४९५	५३७	५७९	६२०	६६२	७०४	७४५	७८७	८२९	८७०	९१२	९५४	९९५
५५	३८	८०	१२१	१६३	२०५	२४६	२८८	३३०	३७१	४१३	४५५	४९६	५३८	५८०	६२१	६६३	७०५	७४६	७८८	८३०	८७१	९१३	९५५	९९६
५६	३९	८१	१२२	१६४	२०६	२४७	२८९	३३१	३७२	४१४	४५६	४९७	५३९	५८१	६२२	६६४	७०६	७४७	७८९	८३१	८७२	९१४	९५६	९९७
५८	४०	८२	१२३	१६५	२०७	२४८	२९०	३३२	३७३	४१५	४५७	४९८	५४०	५८२	६२३	६६५	७०७	७४८	७९०	८३२	८७३	९१५	९५७	९९८
५९	४१	८३	१२४	१६६	२०८	२४९	२९१	३३३	३७४	४१६	४५८	४९९	५४१	५८३	६२४	६६६	७०८	७४९	७९१	८३३	८७४	९१६	९५८	९९९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३			
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त	
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८
२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		२५		३८		२७		३६		२९
३०		४६		२१		४५		२३		४३		२५		४२		२६		३९		२८		३७		३०

उत्तर अक्षांश	१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला. ३
७		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८
अप्रै. २	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		३४		३१		३२		३३		३०		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२४
३०		३५		३२		३३		३४		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	४८	६	२२	५	४६	६	२३	५	४४	६	२५	५	४२	६	२७	५	४१	६	२९	५	३९	६	३०	५	३७	६	३२	५	३५	६	३४	५	३३	६	३६	५	३१	६	३८	५	३०	६	४०	५	२८	६	४२	जन. ४
१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३०		४१	१०
१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३२		४०	१५
२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३६		३७		३४		३९	२१
३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३६		३६	२७
अग. ५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३१		४०		३२		३८		३४	फर. १
११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		२९		४०		३०	७
१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२४		४३		२५		४२		२६	११
२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४३		२२	१८
२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३		४८		१४		४७		१४		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४४		१७	२४
सितं. ४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९		४८		१०		४८		१०		४७		११		४७		११		४६		१२		४६		१२	मार्च २
१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५		४९		५		४८		६		४८		६		४७		६		४७		७		४७		७	८
१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०		४९		१		४९		१		४८		१		४८		१		४८		२		४८		२	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५७		४९	५	५७	२०
२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		५०		५१		५०		५१	२६
अक्टू. ३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५१		४७		५१		४७	३०
९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४३		५२		४२		५२		४२	अप्रै. ५
१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५३		३८		५४		३७	१२
२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३४		५६		३३	१८
२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३१		५८		३०	२४
नवं. २		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२६	३०
८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		११		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	०		२७		२		२५		४		२४	मई ६
१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		५		२४		७		२२	१२
२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०		२		२९		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	१९
२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०		५		२९		७		२८		९		२६		१०		२४		१२		२३		१४		२१	२५
दिसं. २		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२		९		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२३		१७		२१	३१
८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	जून ७
१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२५	१३
२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७	१९
२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३२		३१		३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M.और सूर्यास्त P.M.स्थानिक समय में

उत्तर	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण
अक्षांश	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		अक्षांश
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	१४	५	५४	६	१६	५	५२	६	१७	५	५०	६	१९	५	४९	६	२१	५	४७	६	२३	५	४५	६	२४	५	४३	६	२६	५	४१	६	२८	५	४०	६	३०	५	३८	६	३१	५	३६	६	३३	५	३४	जुला. ३
७		१६		५७		१८		५५		१९		५३		२१		५२		२३		५०		२५		४८		२६		४७		२८		४५		३०		४३		३१		४१		३३		४०		३५		३८	९
१३		१८	६	०		२०		५८		२१		५७		२३		५५		२४		५३		२६		५१		२८		५०		२९		४८		३१		४७		३३		४५		३४		४३		३६		४२	१५
१९		१९		३		२१	६	१		२२	६	०		२४		५८		२५		५७		२७		५५		२८		५४		३०		५२		३१		५०		३३		४९		३५		४७		३६		४६	२२
२५		२०		५		२२		३		२३		२		२४	६	१		२६		५९		२७		५८		२८		५७		३०		५५		३१		५४		३३		५२		३४		५१		३६		४९	२८
३१		२०		७		२२		६		२३		५		२४		३		२५	६	२		२७	६	०		२८		५९		२९		५८		३१		५७		३२		५५		३३		५४		३५		५३	अग. ४
फर. ६		२०		९		२१		८		२२		७		२३		५		२४		४		२६		३		२७	६	२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५८		३१		५७		३३		५६	१०
१२		१९		१०		२०		९		२१		८		२२		७		२३		६		२४		५		२५		४		२६		३		२७		२		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९	१६
१८		१७		११		१८		१०		१९		९		२०		८		२१		८		२२		७		२२		६		२३		५		२४		४		२५		३		२६		२		२७	६	२	२२
२४		१५		११		१६		१०		१७		१०		१७		९		१८		९		१९		८		१९		७		२०		७		२१		६		२२		५		२२		५		२३		४	२९
मार्च २		१३		१२		१४		११		१४		११		१५		१०		१५		१०		१६		९		१६		९		१७		८		१७		८		१८		७		१८		७		१९		६	सितं. ४
८		१०		१२		११		११		११		११		११		११		१२		१०		१२		१०		१२		१०		१३		९		१३		९		१४		९		१४		८		१४		८	१०
१४		८		११		८		११		८		११		८		११		८		११		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६		१		१०		१		१०		१		११		१		११		१		११		१		११		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२		०		१२	५	५१		१३	२८
अप्रै. २	५	५८		१०	५	५८		१०	५	५७		११	५	५७		११	५	५६		११	५	५६		११	५	५५		१२	५	५५		१३	५	५५		१३	५	५४		१३	५	५४		१४		५३		१४	अक्टू. ६
८		५५		९		५५		९		५४		१०		५३		११		५२		१२		५२		१२		५१		१३		५१		१३		५०		१४		५०		१४		५०		१५		४९		१६	११
१४		५२		९		५१		९		५०		१०		५०		११		४९		१२		४९		१२		४८		१३		४७		१४		४६		१५		४५		१६		४५		१६		४४		१७	१७
२०		४९		९		४८		१०		४७		११		४७		१२		४६		१२		४५		१३		४४		१४		४३		१५		४२		१६		४१		१७		४०		१८		३९		१९	२३
२६		४७		९		४६		१०		४५		११		४४		१२		४३		१३		४२		१४		४१		१५		४०		१६		३९		१७		३७		१८		३६		१९		३५		२१	२९
मई १		४५		९		४४		१०		४३		१२		४२		१३		४१		१४		४०		१५		३८		१६		३७		१७		३६		१९		३५		२०		३३		२१		३२		२२	नवं. ३
७		४३		१०		४२		११		४१		१२		४०		१४		३८		१५		३७		१६		३६		१८		३४		१९		३३		२०		३२		२२		३०		२३		२९		२४	९
१३		४२		११		४१		१२		३९		१३		३८		१५		३७		१६		३६		१७		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२३		२८		२५		२६		२७	१५
१९		४१		१२		४०		१३		३८		१५		३७		१६		३५		१८		३४		१९		३२		२१		३१		२२		२९		२४		२८		२६		२६		२७		२४		२९	२०
२५		४१		१३		४०		१४		३८		१६		३६		१८		३५		१९		३३		२१		३१		२३		३०		२४		२८		२६		२६		२८		२५		२९		२३		३१	२६
३१		४१		१४		४०		१६		३८		१८		३६		१९		३४		२१		३३		२२		३१		२४		२९		२६		२७		२८		२६		३०		२४		३२		२२		३३	दिसं. २
जून ६		४१		१६		४०		१७		३८		१९		३६		२१		३४		२३		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७		३०		२५		३२		२४		३४		२२		३६	७
१२		४२		१७		४१		१९		३९		२१		३७		२३		३५		२४		३३		२६		३१		२८		३०		३०		२८		३२		२६		३४		२४		३६		२२		३८	१३
१८		४३		१९		४२		२०		४०		२२		३८		२४		३६		२६		३४		२८		३२		३०		३१		३२		२९		३३		२७		३५		२५		३७		२३		३९	१९
२४		४५		२०		४३		२२		४१		२४		३९		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		[illegible]		३५		२८		३७		२६		३९		२४		४१	२४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ८				९				१०				११				१२				१३				१४				१५				१६				१७				१८				१९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जुला. ६	५	४८	६	२२	५	४६	६	२३	५	४४	६	२५	५	४२	६	२७	५	४१	६	२९	५	३९	६	३०	५	३७	६	३२	५	३५	६	३४	५	३३	६	३६	५	३१	६	३८	५	३०	६	४०	५	२८	६	४२	जन. ४
१२		४९		२२		४८		२४		४६		२६		४४		२७		४२		२९		४१		३०		३९		३२		३७		३४		३५		३६		३३		३८		३२		३९		३०		४१	१०
१८		५०		२२		४९		२३		४७		२५		४५		२७		४४		२९		४२		३०		४०		३२		३९		३३		३७		३५		३५		३७		३४		३९		३२		४०	१५
२४		५१		२२		५०		२३		४८		२५		४७		२६		४५		२८		४४		२९		४२		३१		४०		३२		३९		३४		३७		३५		३६		३७		३४		३९	२१
३०		५२		२१		५१		२२		४९		२३		४८		२५		४६		२६		४५		२७		४४		२९		४२		३१		४१		३२		३९		३३		३८		३५		३६		३६	२७
अग. ५		५३		१९		५२		२०		५०		२२		४९		२३		४८		२४		४७		२५		४५		२७		४४		२८		४२		३०		४१		३१		४०		३२		३८		३४	फर. १
११		५३		१७		५२		१८		५१		२०		५०		२१		४८		२२		४७		२३		४६		२४		४५		२५		४४		२७		४२		२८		४१		२९		४०		३०	७
१७		५३		१५		५२		१६		५१		१७		५०		१८		४९		१९		४८		२०		४७		२१		४६		२२		४५		२३		४४		२४		४३		२५		४२		२६	११
२३		५३		१२		५२		१३		५१		१४		५०		१५		४९		१६		४९		१७		४८		१८		४७		१८		४६		१९		४५		२०		४४		२१		४३		२२	१८
२९		५२		१०		५२		१०		५१		११		५०		१२		४९		१२		४९		१३		४८		१४		४७		१४		४७		१५		४६		१६		४५		१७		४४		१७	२४
सितं. ४		५२		६		५२		६		५१		७		५०		८		४९		८		४९		९		४८		१०		४८		१०		४७		११		४७		११		४६		१२		४६		१२	मार्च २
१०		५१		३		५१		३		५०		४		५०		४		४९		५		४९		५		४९		५		४८		६		४८		६		४७		६		४७		७		४७		७	८
१६		५०		०		५०		०		५०		०		५०		०		४९		०		४९		०		४९		१		४९		१		४८		१		४८		१		४८		२		४८		२	१४
२२		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५६		४९	५	५७		४९	५	५७	२०
२८		४९		५३		४९		५३		४९		५३		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		४९		५२		५०		५२		५०		५२		५०		५१		५०		५१	२६
अक्टू. ३		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४९		४९		४९		४९		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५०		४८		५१		४७		५१		४७	३०
९		४८		४७		४८		४६		४८		४६		४९		४६		४९		४५		५०		४४		५०		४४		५१		४४		५१		४३		५२		४३		५२		४२		५२		४२	अप्रै. ५
१५		४७		४४		४८		४३		४९		४३		४९		४३		५०		४२		५१		४१		५१		४१		५२		४०		५२		३९		५३		३९		५३		३८		५४		३७	१२
२१		४७		४२		४८		४१		४९		४०		५०		४०		५०		३९		५१		३८		५२		३७		५३		३६		५४		३६		५४		३५		५५		३४		५६		३३	१८
२७		४८		४०		४९		३९		५०		३८		५१		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३१		५८		३०	२४
नवं. २		४९		३९		५०		३७		५१		३६		५२		३५		५३		३४		५४		३३		५५		३२		५६		३१		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	१		२६	३०
८		५०		३८		५१		३६		५२		३५		५४		३४		५५		३३		५६		११		५७		३०		५८		२९	६	०		२८	६	०		२७		२		२५		४		२४	मई ६
१४		५१		३७		५३		३६		५४		३५		५६		३३		५७		३२		५९		३०	६	०		२८	६	१		२८		२		२६		४		२५		५		२४		७		२२	१२
२०		५४		३८		५५		३६		५६		३५		५८		३३		५९		३२	६	१		३०		२		२९		४		२७		५		२६		७		२४		९		२३		१०		२१	१९
२६		५६		३९		५८		३७		५९		३६	६	१		३४	६	२		३२		४		३०		५		२९		७		२८		९		२६		१०		२४		१२		२३		१४		२१	२५
दिसं. २		५९		४०	६	१		३८	६	२		३७		४		३५		५		३४		७		३२		९		३०		१०		२८		१२		२७		१४		२५		१६		२३		१७		२१	३१
८	६	२		४२		४		४०		५		३९		७		३७		९		३५		११		३३		१२		३२		१४		३०		१६		२८		१७		२६		१९		२५		२१		२३	जून ७
१४		५		४५		७		४३		८		४१		१०		३९		१२		३८		१४		३६		१५		३४		१७		३२		१९		३०		२१		२९		२३		२७		२५		२५	१३
२०		८		४७		१०		४५		११		४४		१३		४२		१५		४०		१७		३८		१८		३७		२०		३५		२२		३३		२४		३१		२६		२९		२८		२७	१९
२६		११		५०		१३		४८		१४		४७		१६		४५		१८		४३		२०		४१		२१		४०		२३		३८		२५		३६		२७		३४		२९		३२		३१		३०	२६

इस सारणी से ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक भारत के सभी नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त आ जाते हैं। जिस नगर का जो अक्षांश हो उसके अनुसार देखकर स्थानीय समय जाना जा सकता है। भा. स्टै. टा. का जो अन्तर उस स्थान से है उसको ८२।३० से कम रेखांश में जमा करने और ८२।३० से अधिक रेखांश में कम करने से भा. स्टै.टा. में सूर्योदयास्त का समय आ जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्यबिम्ब द्रव्यमान वक्री भवन संस्कार युक्त (अक्षांश के मुताबिक) सूर्योदय A.M. और सूर्यास्त P.M. स्थानिक समय में

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०				अक्षांश २१				अक्षांश २२				अक्षांश २३				अक्षांश २४				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	३५	५	३२	६	३७	५	३०	६	३९	५	२८	६	४१	५	२६	६	४३	५	२४	जुला. ३
७		३७		३६		३९		३४		४१		३२		४३		३०		४५		२८	९
१३		३८		४०		४०		३८		४१		३६		४३		३४		४५		३३	१५
१९		३८		४४		४०		४२		४१		४१		४३		३९		४५		३७	२२
२५		३७		४८		३९		४६		४०		४५		४२		४३		४४		४१	२८
३१		३६		५१		३७		५०		३९		४९		४०		४७		४२		४६	अग. ४
फर. ६		३४		५५		३५		५४		३६		५२		३८		५१		३९		५०	१०
१२		३१		५८		३२		५७		३३		५६		३४		५५		३६		५३	१६
१८		२८	६	१		२९	६	०		३०		५९		३०		५८		३१		५७	२२
२४		२४		३		२४		३		२५	६	२		२६	६	१		२७	६	०	२९
मार्च २		१९		५		२०		५		२०		४		२१		४		२२		३	सितं. ४
८		१५		७		१५		७		१५		७		१६		६		१६		६	१०
१४		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९		१०		९	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५९		१३	५	५८		१४	२८
अप्रै. २		५३		१५		५३		१५		५२		१५		५२		१६		५१		१६	अक्टू. ६
८		४८		१६		४७		१७		४७		१७		४६		१८		४६		१९	११
१४		४३		१८		४२		१९		४२		१९		४१		२०		४०		२१	१७
२०		३८		२०		३८		२१		३७		२२		३६		२३		३५		२४	२३
२६		३४		२२		३३		२३		३२		२४		३१		२५		३०		२६	२९
मई १		३१		२३		३०		२५		२९		२६		२७		२७		२६		२९	नवं. ३
७		२८		२६		२६		२७		२५		२९		२३		३०		२२		३२	९
१३		२५		२८		२३		३०		२२		३१		२०		३३		१९		३४	१५
१९		२३		३०		२१		३२		१९		३४		१८		३६		१६		३७	२०
२५		२१		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		४०	२६
३१		२०		३५		१८		३७		१६		३९		१४		४१		१२		४३	दिसं. २
जून ६		२०		३८		१८		४०		१६		४२		१४		४४		१२		४६	७
१२		२०		४०		१८		४२		१६		४४		१४		४६		१२		४८	१३
१८		२१		४१		१९		४३		१७		४५		१५		४७		१२		५०	१९
२४		२२		४३		२०		४५		१८		४७		१६		४९	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४
३०		२४		४३		२२		४५		२०		४७		१८		५०		१६		५२	[illegible]

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २५				अक्षांश २६				अक्षांश २७				अक्षांश २८				अक्षांश २९				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	४५	५	२२	६	४७	५	२०	६	४९	५	१८	६	५२	५	१६	६	५४	५	१४	जुला. ३
७		४७		२६		४९		२४		५१		२२		५३		२०		५५		१८	९
१३		४७		३१		४९		२९		५१		२७		५३		२५		५५		२३	१५
१९		४७		३५		४८		३३		५०		३२		५२		३०		५४		२८	२२
२५		४५		४०		४७		३८		४९		३६		५०		३५		५२		३३	२८
३१		४३		४४		४५		४३		४६		४१		४८		३९		५०		३८	अग. ४
फर. ६		४०		४८		४२		४७		४३		४६		४४		४४		४६		४३	१०
१२		३७		५२		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४२		४८	१६
१८		३२		५६		३३		५५		३४		५४		३५		५३		३६		५२	२२
२४		२८	६	०		२८		५९		२९		५८		३०		५७		३१		५६	२९
मार्च २		२२		३		२३	६	२		२३	६	२		२४	६	१		२५	६	०	सितं. ४
८		१७		६		१७		५		१७		५		१८		५		१८		४	१०
१४		११		८		११		८		११		८		११		८		११		८	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		११	२२
२६	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१४	५	५८		१५	५	५७		१५	२८
अप्रै. २		५१		१७		५१		१७		५०		१८		५०		१८		४९		१९	अक्टू. ६
८		४५		१९		४४		२०		४४		२१		४३		२१		४२		२२	११
१४		३९		२२		३८		२३		३७		२४		३७		२५		३६		२५	१७
२०		३४		२५		३३		२६		३१		२७		३०		२८		२९		२९	२३
२६		२८		२८		२७		२९		२६		३०		२५		३१		२३		३३	२९
मई १		२५		३०		२३		३१		२२		३३		२०		३४		१९		३६	नवं. ३
७		२०		३३		१९		३५		१७		३६		१६		३८		१४		३९	९
१३		१७		३६		१५		३८		१३		४०		१२		४१		१०		४३	१५
१९		१४		३९		१२		४१		१०		४३		८		४५		६		४७	२०
२५		१२		४२		१०		४४		८		४६		६		४८		४		५०	२६
३१		१०		४५		८		४७		६		४९		४		५१		२		५४	दिसं. २
जून ६		१०		४८		७		५०		५		५२		३		५४		१		५७	७
१२		१०		५०		७		५२		५		५४		३		५७		१		५९	१३
१८		१०		५२		८		५४		६		५६		३		५९		१	७	१	१९
२४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२४
३०		१३		५४		११		५६		९		५८		७		०		४		३	[illegible]

उत्तर अक्षांश	अक्षांश ३०				अक्षांश ३१				अक्षांश ३२				अक्षांश ३३				अक्षांश ३४				दक्षिण अक्षांश
	उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		उदय		अस्त		
मा. ता.	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	क	मि	मा. ता.
जन. १	६	५६	५	११	६	५८	५	९	७	१	५	७	७	३	५	४	७	६	५	२	जुला. ३
७		५७		१६		५९		१४		२		११		४		९		६		७	९
१३		५७		२१		५९		१९		१		११		४		१४		६		१२	१५
१९		५६		२६		५८		२४		०		२२		२		२०		४		१८	२२
२५		५४		३१		५६		२९	६	५८		२७		०		२५		२		२३	२८
३१		५१		३६		५३		३५		५५		३३	६	५६		३१	६	५८		२९	अग. ४
फर. ६		४७		४१		४९		४०		५०		३८		५२		३७		५३		३५	१०
१२		४३		४६		४४		४५		४५		४४		४७		४२		४८		४१	१६
१८		३८		५१		३९		५०		४०		४९		४१		४८		४२		४७	२२
२४		३२		५५		३२		५५		३३		५४		३४		५३		३५		५२	२९
मार्च २		२५	६	०		२६		५९		२७		५८		२७		५८		२८		५७	सितं. ४
८		१९		४		१९	६	३		१९	६	३		२०	६	२		२०	६	२	१०
१४		१२		८		१२		७		१२		७		१२		७		१३		७	१६
२०		४		११		४		११		४		११		४		११		४		१२	२२
२६	५	५७		१५	५	५७		१५	५	५७		१६	५	५६		१६	५	५६		१६	२८
अप्रै. २		४९		१९		४८		२०		४८		२०		४७		२१		४७		२१	अक्टू. ६
८		४२		२३		४१		२४		४०		२४		३९		२५		३९		२६	११
१४		३५		२६		३४		२७		३३		२८		३२		२९		३१		३०	१७
२०		२८		३०		२७		३१		२६		३३		२५		३४		२३		३५	२३
२६		२२		३४		२१		३५		१९		३७		१८		३८		१७		४०	२९
मई १		१७		३७		१६		३९		१४		४०		१३		४२		११		४३	नवं. ३
७		१२		४१		११		४३		९		४५		७		४६		५		४८	९
१३		८		४५		६		४७		४		४९		२		५१		०		५३	१५
१९		४		४९		२		५१		०		५३	४	५८		५५	४	५६		५७	२०
२५		२		५२	४	५९		५५	४	५७		५७		५५		५९		५३	७	२	२६
३१		०		५६		५७		५८		५५	७	०		५३	७	३		५०		५	दिसं. २
जून ६	४	५९		५९		५६	७	१		५४		४		५१		६		४९		९	७
१२		५८	७	१		५६		४		५३		६		५१		९		४८		१२	१३
१८		५९		३		५६		६		५४		८		५२		११		४८		१४	१९
२४		[illegible]		५		५७		७		५५		१०		५२		१२		५०		१५	२४
३०	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

उत्तर अक्षांश	अक्षांश २०		अक्षांश २१		अक्षांश २२		अक्षांश २३		अक्षांश २४		अक्षांश २५		अक्षांश २६		अक्षांश २७		अक्षांश २८		अक्षांश २९		अक्षांश ३०		अक्षांश ३१		अक्षांश ३२		अक्षांश ३३		अक्षांश ३४		दक्षिण अक्षांश
मा. ता.	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	उदय क मि	अस्त क मि	मा. ता.
जुला. ६	५ २६	६ ४४	५ २४	६ ४६	५ २२	६ ४८	५ २०	६ ५०	५ १८	६ ५२	५ १६	६ ५४	५ १३	६ ५६	५ ११	६ ५८	५ ९	७ ०	५ ७	७ ३	५ ४	७ ५	५ २	७ ७	५ ०	७ १०	४ ५७	७ १२	४ ५४	७ १५	जन. ४
१२	२८	४३	२६	४५	२४	४७	२२	४९	२०	५१	१८	५३	१६	५५	१४	५७	१२	६ ५९	१०	१	७	४	५	६	३	८	५ ०	११	५८	१३	१०
१८	३०	४२	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१७	५५	१५	५७	१३	६ ५९	१०	२	८	४	६	६	४	८	५ १	११	१५
२४	३२	४०	३१	४२	२९	४४	२७	४६	२५	४७	२४	४९	२२	५१	२०	५३	१८	५५	१६	५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	८	५	५	७	२१
३०	३१	३८	३३	४०	३१	४१	३०	४३	२८	४४	२६	४६	२५	४८	२३	४९	२१	५१	१९	५३	१८	५५	१६	६ ५७	१४	६ ५९	१२	१	१०	३	२७
अग. ५	३७	३५	३५	३६	३४	३८	३२	३९	३१	४१	२९	४२	२८	४४	२६	४५	२५	४७	२३	४९	२१	५०	१९	५२	१८	५४	१६	६ ५६	१४	६ ५७	फर. १
११	३९	३२	३७	३३	३६	३४	३५	३५	३३	३७	३२	३८	३१	३९	२९	४१	२८	४२	२६	४४	२५	४५	२३	४७	२२	४८	२०	५०	१८	५२	७
१७	४०	२८	३९	२९	३८	३०	३७	३१	३६	३२	३५	३३	३३	३४	३२	३६	३१	३७	३०	३८	२८	३९	२७	४१	२६	४२	२४	४४	२३	४५	१३
२३	४२	२३	४१	२४	४०	२५	३९	२६	३८	२७	३७	२८	३६	२९	३५	३०	३४	३१	३३	३२	३२	३३	३१	३४	२९	३५	२८	३७	२७	२८	१८
२९	४४	१८	४३	१९	४२	२०	४१	२०	४०	२१	४०	२२	३९	२३	३८	२४	३७	२५	३६	२५	३५	२६	३४	२७	३३	२८	३२	२९	३१	३०	२४
सित. ४	४५	१३	४४	१३	४४	१४	४३	१५	४२	१५	४२	१६	४१	१७	४०	१७	४०	१८	३९	१९	३८	१९	३८	२०	३७	२१	३६	२१	३५	२२	मार्च २
१०	४६	८	४६	८	४५	८	४५	९	४५	९	४४	१०	४४	१०	४३	११	४३	११	४२	११	४२	१२	४१	१२	४१	१३	४०	१३	४०	१४	८
१६	४८	२	४७	२	४७	३	४७	३	४७	३	४६	३	४६	४	४६	४	४५	४	४५	४	४५	५	४५	५	४४	५	४४	५	४४	६	१४
२२	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४९	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	४८	५ ५७	२०
२८	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५१	५०	५२	४९	५२	४९	५२	४९	५२	४९	२६
अक्टू. ३	५१	४७	५२	४६	५२	४६	५२	४६	५२	४५	५३	४५	५३	४५	५३	४४	५४	४४	५४	४४	५४	४३	५५	४३	५५	४३	५५	४२	५६	४२	३०
९	५३	४२	५३	४१	५४	४१	५४	४०	५५	४०	५५	३९	५६	३८	५६	३८	५७	३७	५७	३७	५८	३६	५८	३६	५९	३५	६ ०	३५	६ ०	३४	अप्रै. ५
१५	५५	३७	५५	३६	५६	३५	५७	३५	५७	३४	५८	३३	५९	३३	६ ०	३२	६ ०	३१	६ १	३०	६ २	३०	६ २	२९	६ ३	२८	४	२७	५	२६	१२
२१	५७	३२	५८	३१	५८	३१	५९	३०	६ ०	२९	६ १	२८	६ २	२७	३	२६	४	२५	५	२४	६	२३	७	२२	८	२१	९	२०	१०	१९	१८
२७	५९	२९	६ ०	२७	६ १	२६	६ २	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२१	८	२०	९	१९	१०	१८	११	१६	१२	१५	१४	१४	१५	१३	२४
नवं. २	६ ३	२५	३	२४	४	२३	५	२२	७	२०	८	१९	९	१८	१०	१७	१२	१५	१३	१४	१४	१२	१६	११	१७	१०	१९	८	२०	७	३०
८	५	२३	६	२१	८	२०	९	१८	१०	१७	१२	१६	१३	१४	१५	१३	१६	११	१८	१०	१९	८	२१	७	२२	५	२४	३	२६	२	मई ६
१४	८	२२	१०	१९	११	१८	१३	१६	१४	१५	१६	१३	१७	११	१९	१०	२१	८	२२	६	२४	५	२६	३	२८	१	२९	४ ५९	३१	४ ५७	१२
२०	१२	२०	१३	१८	१५	१६	१७	१५	१८	१३	२०	११	२२	९	२४	८	२५	६	२७	४	२९	२	३१	०	३३	४ ५८	३५	५६	३७	५४	१९
२६	१५	१९	१७	१७	१९	१६	२१	१४	२२	१२	२४	१०	२६	८	२८	६	३०	४	३२	२	३४	०	३६	४ ५८	३८	५६	४०	५४	४३	५२	२५
दिस. २	१९	२०	२१	१८	२३	१७	२५	१४	२७	१२	२९	१०	३१	५८	३३	६	३५	४	३७	२	३९	०	४१	५८	४३	५५	४६	५३	४८	५१	३१
८	२३	२१	२५	१९	२७	१७	२९	१५	३१	१३	३३	११	३५	९	३७	७	३९	५	४१	३	४३	०	४६	५८	४८	५६	५०	५३	५३	५१	जून ७
१४	२७	२३	२८	२१	३०	१९	३२	१७	३५	१५	३७	१३	३९	११	४१	८	४३	६	४५	४	४८	२	५०	५९	५२	५७	५५	५५	५०	५२	१३
२०	३०	२५	३२	२३	३४	२१	३६	१९	३८	१७	४०	१५	४२	१३	४४	११	४७	९	४९	६	५१	४	५३	५ २	५६	५९	५८	५७	०	५४	१९
२६	३३	२८	३५	२६	३७	२४	३९	२२	४१	२०	४३	१८	४५	१६	४७	१४	४९	१५	५२	१०	५४	७	५६	५	५९	५ २	७ १	५ ०	७ ४	५७	२६

दक्षिण अक्षांश के सूर्योदय निकालने के लिए इस कोष्ठक में दिये हुये (दाहिनी तरफ को) महीने और तारीख जो कि दक्षिण अक्षांश के नीचे दिये हुए हैं। यह संस्कार जनवरी से जून तक (+) जोड़ हैं और जुलाई से दिसम्बर तक (—) बाकी है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य बिम्ब किरण वक्री भवन संस्कार युक्त सूर्योदय सारिणी से अभीष्ट स्थान से सूर्योदयास्त ज्ञात करना

किसी भी स्थान की लग्न निकालने के लिए निम्न बातों की जानकारी आवश्यक होती है:—(१) उस स्थान का सूर्योदय का समय, (२) इष्टकाल या जन्म समय (घड़ी पलों में), (३) जन्म समय या इष्ट समय का सूर्य स्पष्ट, (४) जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी।

(१) सूर्योदय—इस पंचांग में दिए दिल्ली के सूर्योदय की सहायता से भारत के किसी भी स्थान का सूर्योदय निकालने की विधि इस लेख में उदाहरण देकर समझा दी गई है। इस पंचांग में पृष्ठ १०२-१०५ पर ८ अक्षांश से ३४ अक्षांश तक के १२ महीने के सूर्योदय व सूर्यास्त ६-६ दिन के अन्तर पर दिए गए हैं। इसमें भारत के सभी नगर आ जाते हैं। यह सूर्योदय व सूर्यास्त स्थानीय समय बताते हैं, स्टैण्डर्ड समय जानने के लिये इसमें स्थान विशेष का स्टैण्डर्ड अन्तर जोड़-घटा लेना चाहिए, इसको कुछ उदाहरण देकर स्पष्ट करते हैं।

उदाहरण (१)—पृष्ठ ११२ पर दी गई सूर्योदय सारिणी से चण्डीगढ़ का १२ अक्टूबर का सूर्योदय निकालो : चण्डीगढ़ का उत्तर अक्षांश ३०।४० है।

उपरोक्त सारिणी में ३० अक्षांश तथा ३१ अक्षांश दोनों में ही

९ अक्टूबर का सूर्योदय	५-५८
१५ अक्टूबर का सूर्योदय	६-०२ दिया गया है।

९ से १५ तक ६ दिन में ४ मिनट का (६-०२-५-५८) अन्तर है तो ३ दिन (१२-९) में २ मिनट का अन्तर होगा, अतएव १२ अक्टूबर का सूर्योदय हुआ (५.५८+०.०२)

(५.५८+०.०२)	६	००	००
स्थानीय समय के अनुसार सूर्योदय	६	००	००
भा.स्टै. समय के लिए चण्डीगढ़ का स्टैण्डर्ड अन्तर ०-२२-३२ जोड़ा	०	२२	३२
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
चण्डीगढ़ का सूर्योदय भा.स्टै. समय अनुसार	६	२४	३२

उदाहरण (२)—जयपुर का १५ मार्च का सूर्योदय पृष्ठ ११० पर दी गई सूर्योदय सारिणी के अनुसार निकालिये। जयपुर का उत्तर अक्षांश २६।५५ है जो लगभग २७ ही है। पृष्ठ ११० पर २७ अक्षांश के कोष्ठक में १४ मार्च का सूर्योदय ६-११ दिया है और २० मार्च का ६-०४ है। १४ मार्च से २० मार्च =६ दिन में सूर्योदय में अन्तर होता है ६-११—६-०४=७ मिनट का।

अतएव—१५ मार्च का सूर्योदय स्थानीयसमयानुसार आया	६	१०	००
जयपुर का स्टैण्डर्ड अन्तर धन किया	०	२६	४०
किरण वक्री भवन संस्कार	०	२	००
भा.स्टै.टा. में जयपुर का सूर्योदय	६	३८	४०

जैसा कि उपरोक्त सारिणी के नीचे विवरण में बताया गया है। ३ से ५ मिनट का वक्री भवन संस्कार करना होता है। यह दृश्य वक्री भवन संस्कार क्या है, इसके बारे में थोड़ी जानकारी दे दी जाए। पूर्वी क्षितिज पर सूर्य के पूरे गोले को निकलने में कुछ समय लगता है। पहले सूर्य के गोले का ऊपरी भाग दिखाई देता है फिर धीरे-धीरे पूरा सूर्य क्षितिज के ऊपर आता है। प्रकाश किरणों के कुछ नियमों के अनुसार बिम्ब के दृश्यमान होने और वास्तविक उदय होने में कुछ मिनटों का अन्तर रहता है। यह ३ से ५ मिनट का होता है। आप यदि सदा ४ मिनट धन करें तो अधिक से अधिक १ मिनट का अन्तर इस गणित में आ सकता है।

(२) इष्टकाल—सूर्योदय ज्ञात होने पर इष्टकाल निकालने की विधि तो आपको बताई जा चुकी है।

(३) सूर्य स्पष्ट—पंचांग में दैनिक ग्रहस्पष्ट दिये रहते हैं, उसमें इष्ट दिन का सूर्य स्पष्ट अर्थात् सूर्य किस राशि के कितने अंश पर है, सरलता से जाना जा सकता है।

(४) लग्न सारिणी—अब आपको जन्म स्थान के अक्षांश की लग्न सारिणी की आवश्यकता होगी। आर्यभट्ट पंचांग के पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की २८।३८ अक्षांश की सारणी दी गई है, इसकी सहायता से दिल्ली के आसपास के नगरों की लग्न ज्ञात की जा सकती है। २८ व २९ अक्षांशों के लिए इसी सारिणी को प्रयोग में लाया जा सकता है। इसके अतिरिक्त हमने अन्य अक्षांशों की सारिणियां भी प्रकाशित की हैं।

इष्टकाल से लग्न निकालने की विधि यह है कि जिस दिन का लग्न जानना हो उस दिन का सूर्य स्पष्ट ज्ञात करो। जैसे २५ जून का ११-५५ मध्याह्न का दिल्ली में लग्न ज्ञात करना है तो २५ जून का सूर्य स्पष्ट प्रातः ५.३० का २-९-४२ है। लग्न निकालने के लिए हमें सूर्य के राशि-अंशों की आवश्यकता होती है। सूर्य मिथुन राशि के ९ अंश ४२ कला पर है। जन्म समय ११-५५ तक ९ अंश ५७ कला तक पहुंच चुका है। अतएव सूर्य को हम मिथुन के १० अंश मानकर चलेंगे। पंचांग में पृष्ठ ११३ पर इन्द्रप्रस्थ नगर की लग्न सारिणी में मिथुन राशि के १० अंश वाला कोष्ठक देखा। उसमें मिथुन २ के सामने तथा १० अंश के नीचे १३।१५ अथवा १३।१५ अंक प्राप्त होंगे। लग्न सारिणी में खड़े कोष्ठक १२ राशियों के हैं तथा आड़े कोष्ठक ० से २९ तक अंशों के हैं।

	घं.	मि.	सै.
२५ जून को ११-५५ का इष्टकाल निकाला			
दिल्ली में जन्म समय भा. स्टैं. टा.	११	५५	००
२५ जून का सूर्योदय समय भा. स्टैं. टा.	५	२८	००
	६	२७	००
ढाई से गुणा करके घड़ी पल बनाए	६	२७	००
	६	२७	००
	३	१३	३०
घड़ी पलों में इष्टकाल १६ घड़ी ८ पल	१६	७	३०

पृष्ठ ११३ पर ऊपर जो सारिणी है वह दशम भाव सारिणी है और नीचे लग्न सारिणी है। इसमें मिथुन के १० अंश के कोष्ठक में हमें १३।२७ अंक प्राप्त हुए, इनको इष्टकाल में जमा कर दिया— १३।२७ + १६।०८= २९।३५

उपरोक्त २९।२३ अंकों को हमने उसी लग्न सारिणी में देखा तो कन्या लग्न के सामने ३ अंशों के कोष्ठक में २९।२६ तथा ४ अंश के कोष्ठक में २९।३७ अंक मिले। इसका अर्थ यह हुआ कि २५ जून को ११।५५ मध्याह्न के समय कन्या लग्न है तथा उसके ३ अंश बीत चुके हैं। चौथे अंश की कुछ कलायें भी बीत चुकी हैं, अब यदि आपको केवल लग्न की राशि ज्ञात करनी है तो वह ज्ञात हो चुकी हैं, वैसे भी दैनिक लग्न सारिणी पृष्ठ ६३-८९ से भी आपको ज्ञात हो सकता है कि ११।३७ से १३।५५ तक कन्या लग्न है। लग्न सारिणी से अंश भी ज्ञात हो गए हैं, ४ अंश बीत गए हैं। कला का ज्ञान करने के लिए गणित किया। २९।३७ में से २९।२६ घटाया=११ अंकों में ६० कला तो [illegible] (२९।३५—२९।२६) = ९ अंकों में =६०×९=५४०÷११=४९।०५ लग्न आई ५।३।४९।०५ कन्या के ३ अंश ४९ कला [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सुगम दशम भाव स्पष्ट सारणी सर्वत्रोपयोगी

राशि	मेष ०	वृषभ १	मिथुन २	कर्क ३	सिंह ४	कन्या ५	तुला ६	वृश्चिक ७	धनु ८	मकर ९	कुम्भ १०	मीन ११
०	८ २३ ५३ २६	९ १६ ४३ ३९	१० १५ ४६ ४८	११ २१ १४ ०	० २७ ९ २५	१ २९ ३८ ३	३ १ ४५ ७	४ ४ १० ७	५ १० ३९ १४	६ १४ ३८ १	७ ११ ४६ ५१	८ ३ २४ ३९
१	८ २४ ३७ ५६	९ १७ २३ २१	१० १६ ५२ ४२	११ २२ २७ ४५	० २८ १८ ३९	२ ० ४१ ५	३ १ ४८ ५	४ ५ १९ ५	५ ११ ५३ १	६ १५ ३९ २	७ १२ ५ ३२	८ ४ ५ १२
२	८ २५ १८ २६	९ १८ २९ ६	१० १७ ५७ ५८	११ २३ ४१ ३६	० २९ २७ ५२	२ १ ४३ १०	३ २ ५० ८	४ ६ २९ ३	५ १३ ६ ५	६ १६ ४८ ५	७ १३ २२ ३२	८ ४ ४९ ५
३	८ २५ ५९ ३८	९ १९ १९ २४	१० १९ ३ २	११ २४ ५५ २३	१ ० ३७ ६	२ २ ४५ १२	३ ३ ५२ १३	४ ७ ३८ २	५ १४ २० ३	६ १७ ४१ २	७ १४ ९ ३३	८ ५ २८ ३
४	८ २६ ४० ४३	९ २० १० ४२	१० २० ९ २७	११ २६ ९ ५६	१ १ ४६ १९	२ ३ ४७ १	३ ४ ५४ १५	४ ८ ४३ ०	५ १५ ३४ १५	६ १८ ४२ १	७ १४ ५६ ३०	८ ६ ९ ०
५	८ २७ २१ ४२	९ २१ १ २४	१० २१ १५ ३	११ २७ २३ २४	१ २ ५५ ३३	२ ४ ५० ०	३ ५ ५६ १९	४ ९ ५३ १	५ १६ ४८ २२	६ १९ ४३ ०	७ १५ ४३ २२	८ ६ ५० ८
६	८ २८ २ ४७	९ २१ २ ६	१० २२ २० ३६	११ २८ ३६ ४१	१ ४ ४ ४८	२ ५ ५२ ५	३ ६ ५९ २२	४ ११ ३ ५	५ १८ २ ११	६ २० ४४ ३	७ १६ ३० ७	८ ७ ३२ ७
७	८ २८ ४३ ५२	९ २२ ४२ ५४	१० २३ २९ १३	११ २९ ५० २६	१ ५ १४ २	२ ६ ५४ ८	३ ८ १ २	४ १२ २० १३	५ १९ १५ ३	६ २१ ४५ १	७ १७ २१ ५	८ ८ १२ ६
८	८ २९ २४ २७	९ २३ ३३ ४४	१० २४ ३१ ५१	० १ ४ ५३	१ ६ २३ १६	२ ७ ५९ ३	३ ९ २ ५	४ १३ ३५ २५	५ २० २९ २९	६ २२ ४६ ५०	७ १८ १४ ९	८ ८ ५३ १
९	९ ० ५ ५२	९ २४ २४ ३०	१० २५ २७ २४	० २ १८ १९	१ ७ ३२ ३०	२ ८ ५९ ७	३ १० ५ १४	४ १४ ४९ ३५	५ २१ ४३ १०	६ २३ ४७ २२	७ १८ ५१ १०	८ ९ ३४ ५
१०	९ ० ४० ११	९ २५ १८ १८	११ २६ ४१ २०	० ३ ३२ ७	१ ८ ४२ ५४	२ १० १ १३	३ ११ ८ ३८	४ १६ ४ ४५	५ २२ ५७ १५	६ २४ ४८ ११	७ १९ ३८ १२	८ १० १५ ३
११	९ १ २९ ५१	९ २६ ६ २	११ २७ ५१ २३	० ४ ४७ ५१	१ ९ ५६ ३२	२ ११ ३ २१	३ १२ १५ ५५	४ १७ १६ ८	५ २४ ११ २५	६ २५ ४९ ८	७ २० २४ ८	८ १० ५६ ४२
१२	९ २ १५ २६	९ २७ ८ ५४	११ २९ ५ १२	० ६ २ २२	१ ११ २० ५	२ १२ ५ ३५	३ १३ २३ १७	४ १८ ३० ३	५ २५ १४ ४८	६ २६ ५० १५	७ २१ ५ ३	८ ११ २७ ४७
१३	९ ३ २ ३	९ २८ ९ ५४	११ ० ९ ८	० ७ १७ ४१	१ १२ ३५ ८	२ १३ ७ ५२	३ १४ २१ १२	४ १९ ४४ १०	५ २६ १९ ३७	६ २७ ५२ ३०	७ २१ ५६ १५	८ १२ १३ ३२
१४	९ ३ ४६ ३८	९ २९ १० ५४	११ १ ३२ ५३	० ८ ३१ १५	१ १३ ४४ १२	२ १४ १० ०	३ १५ ४२ ३	४ २० ५८ १	५ २७ २७ ३७	७ २८ ४० ३२	७ २२ ३८ २७	८ १२ ५९ २६
१५	९ ४ ३६ ४९	१० ० ११ ५४	११ २ ४६ ३७	० ९ ४५ ४२	१ १४ ३५ १२	२ १५ १२ १	३ १६ ५० ०	४ २२ १२ २	५ २८ ३० ३७	७ २९ १ ४०	७ २३ २९ ३७	८ १३ ४० १२
१६	९ ५ २३ १०	१० १ १२ ५४	११ ४ ० ३८	० ११ ० १३	१ १५ ४४ १९	२ १६ १४ ०	३ १८ १ १	४ २३ २५ ५	५ २९ ३६ ४२	७ ० १ ४५	७ २४ १६ ४८	८ १४ २० ४२
१७	९ ६ १० ४६	१० २ १३ ५४	११ ५ १४ २४	० १२ ९ २५	१ १६ १० २०	२ १७ १६ ७	३ १९ १ ८	४ २४ ३८ ३	५ ० ४२ ३	७ ० ५२ ५०	७ २४ ५९ ५९	८ १५ ४० ३५
१८	९ ६ ५७ ४६	१० ३ १४ ५४	११ ६ २८ १०	० १३ १८ ३९	१ १७ १२ १५	२ १८ १८ १४	३ २० १९ १५	४ २५ ५५ ५७	६ १ ४७ ४	७ १ ४३ ७	७ २५ १२ १	८ १५ ३५ १
१९	९ ७ ४४ ४८	१० ४ १५ ५४	११ ७ ४१ ५५	० १४ २७ ५२	१ १८ १४ ४	२ १९ २१ २२	३ २१ २८ २२	४ २७ ७ १२	६ २ ५३ ५	७ २ ३३ ३	७ २५ ५६ २	८ १६ २४ ३
२०	९ ८ ३७ ४०	१० ५ १६ ५४	११ ८ ५५ ५५	० १५ ३७ ६	१ १९ १६ ८	२ २० २३ ३०	३ २२ ३८ ८	५ २८ १९ २५	६ ३ ५८ ३	७ ३ २४ ४	७ २६ ३४ ३	८ १७ ५ ८
२१	९ ९ २८ ५१	१० ६ १७ ५४	११ १० ९ ४०	० १६ ४६ १९	१ २० १८ ९	२ २१ २५ ३२	३ २३ ४८ ९	५ २९ ३४ १८	६ ५ ४ १५	७ ४ १५ ९	७ २७ १५ ५	८ १७ ४६ ६
२२	९ १० ५ १	१० ७ १८ ५४	११ ११ २३ २९	० १७ ५५ ३५	१ २१ २७ १०	२ २२ २७ १	३ २४ ५८ ३५	५ ० ४८ २१	६ ६ १० १२	७ ५ ६ १३	७ २७ ५६ ८	८ १८ २८ ०
२३	९ ११ ७ १४	१० ८ १९ ५४	११ १२ ३७ १७	० १९ ४ ४८	१ २२ ३० १५	२ २३ ३० ५	३ २६ ९ ४२	५ २ २ ७	६ ७ १५ २०	७ ५ ५७ २१	७ २८ ३७ १०	८ १९ ९ १
२४	९ ११ ४२ ५०	१० ९ २० ५४	११ १३ ५१ ५	० २० १४ १२	१ २३ ३२ ५५	२ २४ ३२ ८	३ २७ १७ ५६	५ ३ १६ ४	६ ८ २१ ३०	७ ६ ४६ २७	७ २९ १८ १२	८ १९ ५७ ५३
२५	९ १२ ३२ ४३	१० १० २१ ५४	११ १५ ४ ५७	० २१ २३ १६	१ २४ ३४ ७	२ २५ ३५ ९	३ २८ २४ २	५ ४ ३० ५	६ ९ २६ ५	७ ७ ३८ ३५	८ २९ ५९ ५	८ २० ३१ ५९
२६	९ १३ २४ ४८	१० ११ २४ ३४	११ १६ १८ ४२	० २२ ३२ २९	१ २५ ३६ २	२ २६ ३७ १०	३ २९ ३३ ८	५ ५ ४३ ३	६ १० ३२ ८	७ ८ २९ ४०	८ ० ४० ३०	८ २१ १२ १
२७	९ १४ २४ ५०	१० १२ २३ ३०	११ १७ ३२ २७	० २३ ४१ ४३	१ २६ ३८ ५	२ २७ ४० २५	४ ० ४२ ५	५ ६ ५३ १	६ ११ ३४ ३	७ ९ २० ४५	८ १ २१ १२	८ २१ ५३ ५
२८	९ १५ ६ १	१० १३ ३५ ४०	११ १८ ४६ २१	० २४ ५० ५६	१ २७ ४० ८	२ २८ ४२ ५०	४ १ ५२ ३	५ ८ ११ १५	६ १२ ३६ ४५	७ १० १० ५७	८ २ ३० १६	८ २२ ४५ ३
२९	९ १५ ५६ ४८	१० १४ ४१ १७	११ २० ० १३	० २६ ० १२	१ २८ ५३ १	२ २९ ४३ ५९	४ ३ १ ७	५ ९ २५ ०	६ १३ ३७ ०	७ ११ ७ ५०	८ २ ३ ४	८ २२ १५ ४

दशमलग्न निकालने के लिए दशमभाव राशि फलांकों में ६ राशि योग से ४ भाव स्पष्ट होगा। चार भाव स्पष्ट में लग्न भाव घटाकर तीस गणित अंशादि बनाकर ६ का भाग देने से लब्ध फल लग्न में जोड़ने से लग्नभाव संधि और संधि में पूर्वागत लब्ध फल जोड़ने से दो भाव स्पष्ट होगा, आगे लब्ध फल जोड़ने पर चार भाव पर्यन्त ससंधि भाव बनेंगे। पूर्वागत लब्ध को एक में से घटाकर शेष के चार भावादि जोड़ने से ससंधि चार से सात भाव तक बनेंगे तथा लग्न स्पष्ट राशि के तुल्य सम सत्र में जो फल होवे वही दशम भाव स्पष्ट है।

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश १९° अयनांश २४ (अक्षांश १८-३१ से १९-३० तक स्थित)

(बम्बई, पूना, खण्डाला, इगत पुरी, अहमद नगर, औरंगाबाद, जगन्नाथपुरी आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७
मेष	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	७	१६	२५	३३	४२	५१	०	९	१८	२७	३६	४४	५३	२	११	२०	२९	३८	४७	५५	४	१३	२२
१	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	३१	४०	४९	५७	६	१५	२४	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४६	५६	७	१७	२७	३७	४८	५८	८	१९	२९	३९	४९	५९	१०	२०
२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१७
मिथुन	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०
३	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३
कर्क	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२३
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४	३५	४५
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५६	७	१७	२८	३९	४९	०	११	२१	३२	४३	५३	४	१५	२५	३६	४७	५७	८	१९	२९	४०	५१	१	१२	२३	३३	४४	५५	५
६	३४	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	१६	२७	३७	४८	५९	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८	३९	५०	१	१२	२३	३४
७	३९	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५
वृश्चिक	४६	५६	८	१९	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	४७	५८	१०
८	४५	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०
धनु	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१	५२	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१४	२४
९	५०	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	३४	४५	५५	५	१५	२६	३६	४५	५४	३	११	२०	२९	३८	४७	५६	५	१४	२२	३१	४०	४९	५८	७	१६	२४	३३	४२	५१	०
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	९	१८	२७	३५	४४	५३	२	१०	१८	२६	३४	४२	५०	५८	६	१३	२१	२९	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	४
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	३
मीन	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २१° अयनांश २४ (अक्षांश २०-३० से २१-३० तक स्थित)

(अजन्ता, अमरावती, छिन्दवाड़ा, कटक, नासिक, खण्डवा, जूनागढ़, धूलिया, नागपुर, पोरबन्दर, भुवनेश्वर, सूरत, सोमनाथ आदि नगरों के लिए)

रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७	७
मेष	६	१४	२२	३०	३७	४५	५३	२	१०	१९	२८	३७	४५	५४	३	१२	२०	२९	३८	४६	५५	४	१३	२१	३०	३९	४८	५६	५	१४
१	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२
वृष	२३	३१	४०	४९	५७	६	१५	२५	३५	४६	५६	६	१६	२६	३७	४०	५७	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०	१०
२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७
मिथुन	२०	३१	४१	५१	१	१२	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०
३	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३	२३
कर्क	५२	३	१४	२५	३६	४८	५९	१०	२१	३२	४४	५५	६	१७	२८	४०	५१	२	१३	२४	३६	४७	५८	९	२१	३२	४३	५४	५	१६
४	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८	२८
सिंह	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	७	१८	२९	४०	५०	२	१२	२३	३४	४५	५६	७	१७	२८	३९	५०	१	१२	२२	३३	४४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४
कन्या	५५	६	१७	२७	३८	४९	०	११	२२	३२	४३	५४	५	१६	२७	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४२	५३	४	१५	२६	३७	४७	५८	९
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९
तुला	२०	३१	४२	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	३५	४७	५८	९	२०	३१	४३
७	३९	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५
वृश्चिक	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१२	२३	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२	५३	४	१६	२७	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	१९
८	४५	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४२	५३	४	१५	२७	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२२	३२	४२	५२	३	१३	२३	३३
९	५०	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५
मकर	४३	५४	४	१४	२४	३४	४५	५४	२	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	२१	३०	३८	४७	५६	५	१३	२२	३१	४०	४८	५७	६
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	१४	२३	३२	४१	४९	५८	७	१५	२२	३०	३८	४६	५३	१	९	१७	२५	३२	४०	४८	५६	३	११	१९	२७	३४	४२	५०	५८	५
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१३	२१	२९	३७	४४	५२	०	८	१५	२३	३१	३९	४७	५४	२	१०	१७	२५	३३	४१	४९	५६	४	१२	२०	२७	३५	४३	५१	५८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २३° अयनांश २४ (अक्षांश २२-३० से २३-३० तक स्थित)

(उज्जैन, धार, इन्दौर, रतलाम, बांसवाड़ा, भोपाल, होशंगाबाद, इटारसी, कलकत्ता, जबलपुर, रांची, मांडवी, जामनगर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४
मेष	२	१०	१८	२५	३३	४०	४८	५७	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७
१	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९
वृष	१४	२३	३२	४०	४९	५७	६	१६	२६	३६	४७	५७	७	१७	२७
२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४
मिथुन	१०	२०	३०	४०	५०	१	११	२२	३४	४५	५६	७	१९	३०	४१
३	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०
कर्क	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५
सिंह	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	५८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१
कन्या	५४	५	१६	२७	३८	४९	०	११	२२	३३	४४	५५	६	१७	२८
६	३४	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७
तुला	२४	३५	४६	५७	८	१९	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	४९	१
७	४०	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२
वृश्चिक	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४५	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८
धनु	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०
९	५०	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३
मकर	५३	३	१३	२३	३४	४४	५४	२	११	२०	२८	३७	४५	५४	३
१०	५५	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७
कुम्भ	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२	१९	२७	३५	४२	५०	५७	५	१३
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मीन	१४	२२	२९	३७	४५	५२	०	७	१५	२३	३०	३८	४५	५३	१

रा.अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	७
मेष	५	१४	२२	३१	४०	४८	५७	६	१४	२३	३१	४०	४९	५७	६
१	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२
वृष	३७	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	५०	०
२	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
मिथुन	५३	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१
३	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	५९	११
४	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	९	२०	३१	४२	५३	४	१५	२६	३७	४८	५९	१०	२१	३२	४३
५	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	३९	५०	१	१२	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९	४०	५१	२	१३
६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१२	२३	३५	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१
७	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५
वृश्चिक	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०
८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	२०	३०	४०	५१	१	११	२१	३१	४२	५२	२	१२	२२	३२	४३
९	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५
मकर	११	२०	२८	३७	४६	५४	३	११	२०	२९	३७	४६	५५	३	१२
१०	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९
कुम्भ	२०	२८	३५	४३	५१	५८	६	१३	२१	२९	३६	४४	५१	५९	७
११	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२
मीन	८	१६	२३	३१	३९	४६	५४	१	९	१७	२४	३२	३९	४७	५५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २५° अयनांश २४ (अक्षांश २४-५० से २५-५० तक स्थित)

(आबूरोड, उदयपुर, मेवाड़, बूंदी, कोटा, जालौर, सिरोही, चित्तोड़गढ़, नाथद्वारा, नीमच, प्रतापगढ़, भवानीमंडी, छोटीसादड़ी, छतरपुर, गया, मणिपुर, इलाहाबाद, [illegible] काशी, गाजीपुर, [illegible] आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
०	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४
मेष	५८	६	१३	२१	२८	३६	४३	५१	०	८	१७	२५	३४	४२	५१
१	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९
वृष	६	१५	२३	३२	४०	४८	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	८	१८
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४
मिथुन	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०
कर्क	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३
४	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५
सिंह	१६	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१
कन्या	५३	४	१५	२६	३८	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८	२९
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७
तुला	२८	३९	५०	१	१३	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२
वृश्चि.	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२७	३८	५०
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८
धनु	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३
मकर	२	१२	२२	३३	४३	५३	३	१२	२०	२८	३७	४५	५४	२	११
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७
कुम्भ	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२४	२	३९	४७	५४	२	९	१६
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०
मीन	१५	२३	३०	३७	४५	५३	०	७	१५	२२	३०	३७	४५	५२	५९

रा.अं.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५९	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	७	१५	२४	३२	४१	४९	५८
१	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९
२	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	४२	५४	५	१६	२८	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२१
३	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
४	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५	१७	२८	३९	५०	१	१२	२४	३५	४६	५७	८	१९	३१	४२
५	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७
६	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	३९
तुला	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९
७	४३	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१	३२	४४	५५	६	१८	२९	४०
८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०
धनु	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	२	१२	२२	३२	४२	५२
९	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१९	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२७	३५	४४	५२	१	९	१८
१०	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	२४	३१	३९	४६	५४	१	८	१६	२३	३१	३८	४६	५३	१	८
११	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	७	१४	२२	२९	३७	४४	५१	५९	६	१४	२१	२९	३६	४४	५१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २६° अयनांश २४ (अक्षांश २५-३० से २६-३० तक स्थित)

(अजमेर, जोधपुर, ग्वालियर, कानपुर, पटना, कूच बिहार, पूर्निया, दरभंगा, शिलांग आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	१	८	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२८	३६	४४	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४२	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११
वृष	५८	७	१५	२३	३२	४०	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	११	२१	३१	४१
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५१	१	११	२१	३०	४२	५२	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१४
३	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२३
कर्क	२६	३७	४९	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	१
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१२	२४	३४	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३७	४८	५९	११	२२	३३	४४	५६	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२२	३३	४५	५६	७	१८	३०	४१	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५६	७	१८
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३०	४१	५२	४	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	४
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	१५	२७	३८	५०	१	१३	२५	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२५	३६	४७
८	४५	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	५९	१०	२२	३३	४५	५६	८	१८	२८	३८	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	३०	४०	५०	०
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	१९	२७	३६	४४	५२	१	९	१८	२६	३४	४३	५१	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१५	२३
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३१	४०	४८	५६	५	१३	२२	२९	३६	४३	५१	५८	५	१२	२०	२७	३४	४१	४८	५६	३	११	१८	२५	३२	४०	४७	५४	१	९
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	१६	२२	३०	३८	४५	५२	०	७	१४	२१	२९	३६	४३	५०	५८	५	१३	१९	२७	३४	४१	४९	५६	३	१०	१८	२५	३२	३९	४७

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २७° अयनांश २४ (अक्षांश २६-३० से २७-३० तक स्थित)

(फैजाबाद, एटा, कासगंज, हाथरस, कन्नौज, आगरा, फर्रुखाबाद, मथुरा, धौलपुर, भरतपुर, जयपुर, इटावा, उन्नाव, अयोध्या, गोरखपुर, देवरिया, लखनऊ, सिलीगुड़ी, जैसलमेर, डिब्रूगढ़, हरदोई आदि के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६
मेष	५४	२	९	१६	२३	३१	३८	४६	५५	३	११	२०	२८	३६	४५	५३	१	१०	१८	२६	३५	४३	५१	०	८	१६	२५	३३	४१	५०
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५८	६	१५	२३	३१	४०	४८	५८	८	१८	२८	३८	४८	५८	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९
२	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७
मिथुन	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	१	१३	२४	३६	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	४	१५	२७	३८	४९	१	१२
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	२४	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	४०	५१	३	१४	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५९
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१०	२२	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	५	१७	२८	३९	५१	२	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३३	४४	५५	७	१८	२९	४१
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४
कन्या	५२	३	१५	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०	१	१३	२४	३५	४७	५८	९	२१
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०
तुला	३२	४३	५५	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	४८	५९	११	२२	३४	४६	५७	९	२०	३२	४४	५५	७
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चि.	१८	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३०	४२	५३	५	१६	२७	३९	५०
८	४६	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५
मकर	१२	२२	३२	४२	५२	२	१२	२०	२९	३७	४५	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३	५२	०	९	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१५	२४
१०	५५	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३२	४०	४९	५७	५	१४	२२	२९	३६	४४	५१	५८	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	४	११	१८	२५	३३	४०	४७	५४	२	९
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २८° अयनांश २४ (अक्षांश २७-३० से २८-३० तक स्थित)

(हाथरस, अलीगढ़, अनूपशहर, काठमाण्डू, अलवर, किशनगढ़, भूटान, नवलगढ़, खुर्जा, बरेली, बुलन्दशहर, बीकानेर, बदायूं, चन्दौसी, नारनौल, सीकर, पटौदी, झुंझनू, महेन्द्रगढ़, रिवाड़ी आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५२	५९	६	१३	२१	२८	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३३	४१	४९	५८	६	१४	२२	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२९	३७	४५
१	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
वृष	५३	२	१०	१८	२६	३५	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४
२	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	४४	५४	४	१४	२४	३६	४६	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३८	५०	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१८	३०	४१	५३	४	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७	४९	०	१२	२४	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५५
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	७	१९	३०	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४५	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२८	४०
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	३	१४	२६	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	८	२०	३१	४३	५४	६	१७	२९	४०	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३४	४६	५७	९	२०	३१	४३	५५	६	१८	३०	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२५	३६	४८	०	११
७	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५
वृश्चिक	२३	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
धनु	७	१९	३०	४२	५३	४	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४७	५७	७
९	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२५	३३	४२	५०	५८	६	१५	२३	३१	३९	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३५	४३	५२	०	८	१६	२४	३२	३९	४६	५४	०	८	१५	२२	२९	३६	४४	५१	५८	५	१२	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	४	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	२	९	१६	२३	३०	३८	४५

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश २९° अयनांश २४ (अक्षांश २८-३० से २९-३० तक स्थित)

(हापुड़, मुरादाबाद, अमरोहा, जीन्द, नैनीताल, मेरठ, पानीपत, हिसार, अनूपगढ़, बिजनौर, भिवानी, रामपुर, रोहतक, मुजफ्फरनगर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
मेष	५०	५७	४	१२	१९	२६	३३	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३८	४७	५५	३	११	१९	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३	४१
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	५०	५८	६	१४	२२	३१	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
मिथुन	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३३	४५	५६	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१	३
३	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	४	१६	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४	३६	४७	५८	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४
६	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४५	५७	८	२०	३२	४४	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	२६	३८	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१७	२९	४०	५२	३	१५	२६	३८	४९	१
८	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
मकर	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	२९	३७	४५	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	७	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	३८	४६	५४	२	१०	१९	२७	३४	४१	४८	५५	२	९	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६	१३	२०	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
मीन	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२१	२८	३५	४२	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९	४६	५३	१	८	१५	२२	२९	३६	४३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३०° अयनांश २४ (अक्षांश २९-३० से ३०-३० तक स्थित)

(सहारनपुर, हरिद्वार, पटियाला, फाजिल्का, भटिण्डा, शाहाबाद, मुल्तान, अल्मोड़ा, करनाल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, देहरादून, नाभा, फरीदकोट आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४८	५५	२	९	१६	२३	३०	३८	४६	५४	३	११	१९	२७	३५	४३	५१	५९	८	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७
१	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
वृष	४५	५३	१	१०	१८	२६	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५४	४	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३
२	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६	५७
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
कर्क	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५२	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२६	३८	५०
४	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	१	१३	२५	३७	४८	०	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२२	३३	४५	५६	८	२०	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	४	१५	२७	३९
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९	४०	५२	४	१५	२७
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
तुला	३८	५०	२	१३	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९
७	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६
वृश्चि.	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	५	१६	२८	३९	५१	३	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३४	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१
धनु	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६	२६	३६	४६	५६	६	१६
९	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३४	४२	५०	५८	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	१	९	१७	२५	३३
१०	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४१	४९	५७	६	१४	२२	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२	१९	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५७	४	११
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३१° अयनांश २४ (अक्षांश ३०-३० से ३१-३० तक स्थित)

(फगवाड़ा, अमृतसर, चण्डीगढ़, कपूरथला, हांश्यारपुर, फिरोजपुर, लुधियाना, शिमला, कालका, सोलन, कुराली, खन्ना आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६
मेष	४६	५३	५९	६	१३	२०	२७	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२
१	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८	३८	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	७	१७	२७	३७	४७	५७	६	१६
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२६	३६	४६	५६	६	१६	२६	३७	४९	१	१२	२४	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५१
३	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	३	१४	२६	३७	४९	०	१२	२४	३६	४८	०	११	२३	३५	४७	५९	११	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५८	९	२१	३३	४५	५७	९	२१	३२	४४	५६	७	१९	३१	४३	५४	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	४०	५१	३	१५	२६	३८
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४	६	१७	२९
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२७	३९	५१	२	१४	२६	३८	५०	२	१४	२६	३८	५०	१	१३	२५	३७	४९	१	१३	२५
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चि.	३७	४९	१	१२	२४	३६	४८	५९	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३
८	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४४	५४	४	१४	२४	३४	४४	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३३	४३	५३	३	१२	२२
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०	४८	५७	५	१३	२१	२९	३७
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४०	४७	५४	१	८	१४	२१	२८	३५	४२	४९	५६	३	१०	१६	२३	३०	३७	४४	५१	५८	५	१२
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	२	९	१६	२३	३०	३७	४३	५०	५७	४	११	१८	२५	३२	३९

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

लग्न सारिणी उत्तर अक्षांश ३२° अयनांश २४ (अक्षांश ३१-३० से ३२-३० तक स्थित)

(कांगड़ा, चम्बा, डलहौजी, धर्मशाला, पठानकोट, जालन्धर, मण्डी, गुरदासपुर आदि नगरों के लिए)

रा.अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
०	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
मेष	४३	५०	५७	३	१०	१७	२४	३२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४४	५२	५९	७	१५	२३	३१	३९	४७	५५	३	११	१९	२७
१	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
वृष	३५	४३	५१	५९	७	१५	२३	३३	४३	५३	३	१३	२३	३२	४२	५२	२	१२	२२	३२	४२	५२	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११
२	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६
मिथुन	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३१	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३७	४८	०	११	२३	३४	४६
३	१६	१७	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२
कर्क	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१९	३१	४३	५५	७	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२
४	२२	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
सिंह	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४१	५३	५	१७	२८	४०	५२	४	१६	२७	३९	५१	३	१५	२७	३९	५०	२	१४	२५	३७
५	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
कन्या	४९	१	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३५	४७	५९	११	२२	३४	४६	५८	१०	२१	३३	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	८	१९	३१
६	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०	४०
तुला	४३	५५	७	१९	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	६	१८	३०	४२	५४	५	१७	२९	४१	५३	५	१७	२९
७	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४६	४६
वृश्चिक	४१	५३	५	१७	२९	४१	५३	५	१६	२८	३९	५१	२	१४	२६	३७	४९	०	१२	२३	३४	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९
८	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१	५१	५१
धनु	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०	५०	०	१०	२०	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	८	१८	२८	३८	४८	५८	८	१८	२८
९	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५	५५	५५
मकर	३८	४८	५७	७	१७	२७	३७	४५	५३	१	९	१७	२५	३३	४१	४९	५७	५	१२	२०	२८	३६	४४	५२	०	८	१६	२४	३२	४०
१०	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
कुम्भ	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६	४३	५०	५६	३	१०	१७	२३	३०	३७	४४	५१	५८	४	११	१८	२५	३२	३८	४५	५२	५९	५	१२
११	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
मीन	१९	२६	३३	३९	४६	५३	०	७	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५६	१	८	१४	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

इन्द्रप्रस्थ नगरे लग्न सारणी अक्षांशा २८।३८ वर्षादी केतकी अयनांश २४

अंशाः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
मेष	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
०	५१	५८	५	१३	२०	२७	३४	४२	५०	५९	७	१५	२३	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६	५४	२	१०	१९	२७	३५	४३
वृष	६	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
१	५२	०	८	१६	२५	३३	४२	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५१	१	११	२१	३१
मिथुन	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७
२	४१	५१	१	११	२१	३१	४१	५२	४	१५	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४७	५९	१०	२२	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	५३	५
कर्क	१७	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	२०	२०	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२२
३	१६	२८	३९	५१	२	१४	२५	३७	४८	०	१२	२३	३५	४७	५९	१०	२२	३४	४५	५७	९	२०	३२	४४	५६	७	१९	३१	४२	५४
सिंह	२३	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२४	२४	२४	२५	२५	२५	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२६	२७	२७	२७	२७	२७	२८	२८	२८	२८
४	६	१७	२९	४१	५३	४	१६	२७	३९	५०	२	१३	२५	३६	४८	५९	११	२२	३४	४५	५७	८	१९	३१	४२	५४	५	१७	२८	४०
कन्या	२८	२९	२९	२९	२९	२९	३०	३०	३०	३०	३०	३०	३१	३१	३१	३१	३१	३२	३२	३२	३२	३२	३३	३३	३३	३३	३३	३४	३४	३४
५	५१	३	१४	२६	३७	४९	०	११	२३	३४	४६	५७	९	२०	३२	४३	५४	६	१८	२९	४१	५२	३	१५	२६	३८	४९	१	१२	२४
तुला	३४	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३६	३६	३६	३६	३६	३७	३७	३७	३७	३७	३८	३८	३८	३८	३८	३९	३९	३९	३९	३९	४०	४०
६	३५	४७	५८	१०	२१	३३	४४	५६	७	१९	३१	४२	५३	६	१८	२९	४१	५३	४	१६	२८	३९	५१	३	१५	२६	३८	५०	१	१३
वृश्चि.	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	४३	४३	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५
७	२५	३६	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	९	२१	३२	४४	५५	७	१८	३०	४१	५३	४	१६	२७	३८	३०	१	१३	२५	३६	४७	५९
धनु	४६	४६	४६	४६	४६	४७	४७	४७	४७	४७	४७	४८	४८	४८	४८	४८	४८	४९	४९	४९	४९	४९	४९	५०	५०	५०	५०	५०	५०	५१
८	१०	२२	३३	४५	५६	८	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	११	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२९	३९	४९	५९	९
मकर	५१	५१	५१	५१	५१	५२	५२	५२	५२	५२	५२	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५३	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५४	५५	५५	५५	५५
९	१९	२९	३९	४९	५९	९	१९	२७	३४	४४	५२	०	८	१७	२५	३३	४१	५०	५८	६	१४	२२	३०	३९	४७	५५	४	१२	२०	२८
कुम्भ	५५	५५	५५	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५८	५९	५९
१०	३७	४५	५३	१	१०	१८	२६	३३	४०	४७	५५	२	९	१६	२३	३०	३७	४४	५२	५९	६	१३	२०	२७	३४	४२	४९	५६	३	१०
मीन	५९	५९	५९	५९	५९	५९	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
११	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	३६	४३	५०	५७	४	११	१८	२६	३३	४०	४७	५४	१	८	१६	२३	३०	३७	४४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अवकहड़ा चक्र : भुक्त नक्षत्र चरण राश्यादि और स्वामी, हंस संज्ञा व युंजा भाग सहितम्

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(१) मेष	क्षत्रिय	अग्नि	चतुष्पाद
(२) वृषभ	वैश्य	भूमि	चतुष्पाद
(३) मिथुन	शूद्र	वायु	मानव
(४) कर्क	ब्राह्मण	वारि	जलचर
(५) सिंह	क्षत्रिय	अग्नि	वनचर
(६) कन्या	वैश्य	भूमि	मानव

नक्षत्र	अश्विनी-१				भरणी-२				कृतिका-३			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	चू	चे	चो	ला	ली	लू	ले	लो	आ	इ	ऊ	अे
वर्ग	सिंह	::	::	मृग	::	::	::	::	गरुड़	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	अश्व	देव	पूर्व	आद्य	गज	मनुष्य	पूर्व	मध्य	मेष	राक्षस	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	रोहिणी-४				मृगशीर्ष-५				आर्द्रा-६			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ओ	वा	वी	वु	वे	वो	का	की	कु	घ	ङ	छ
वर्ग	::	मृग	::	::	::	::	मार्जार	::	::	::	::	सिंह
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	सर्प	मनुष्य	पूर्व	अंत्य	सर्प	देव	पूर्व	मध्य	श्वान	मनुष्य	मध्य	आद्य
पूर्ण राशि	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२
अंश	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	पुनर्वसु-७				पुष्य-८				आश्लेषा-९			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	के	को	हा	ही	हु	हे	हो	डा	डी	डु	डे	डो
वर्ग	मार्जार	::	मेष	::	::	::	::	श्वान	::	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	मार्जार	देव	मध्य	आद्य	मेष	देव	मध्य	मध्य	मार्जार	राक्षस	मध्य	अंत्य
पूर्ण राशि	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४
अंश	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	मघा-१०				पू.फा.-११				उ.फा.-१२			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	मा	मी	मू	मे	मो	टा	टी	टू	टे	टो	पा	पी
वर्ग	उंदर	::	::	::	उंदर	श्वान	::	::	::	::	उंदर	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	उंदर	राक्षस	मध्य	अंत्य	उंदर	मनुष्य	मध्य	मध्य	गौ	मनुष्य	मध्य	आद्य
पूर्ण राशि	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

नक्षत्र	हस्त-१३				चित्रा-१४	
चरण	१	२	३	४	१	२
अक्षर	पू	ष	ण	ठ	पे	पो
वर्ग	::	मेष	श्वान	::	उंदर	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण
	महिषी	देव	मध्य	आद्य	व्याघ्र	राक्षस
पूर्ण राशि	५	५	५	५	५	६
अंश	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	उत्तर	उत्तर	वसंत	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	उत्तर	उत्तर	ग्रीष्म	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	वर्षा	दक्षिण	उत्तर	शरद

योग	विष्कुंभ	प्रीति	आयुष्मान	सौभाग्य	शोभन	अतिगंड	सुकर्मा	धृति	शूल	गंड	वृद्धि	ध्रुव	व्याघात	हर्षण

चन्द्र राशि	वर्ण	हंसक	वश्य
(७) तुला	शूद्र	वायु	मानव
(८) वृश्चिक	ब्राह्मण	वारि	कीट
(९) धनु	क्षत्रिय	अग्नि	मानव/चत
(१०) मकर	वैश्य	भूमि	चत/जल
(११) कुंभ	शूद्र	वायु	मानव
(१२) मीन	ब्राह्मण	वारि	जलचर

नक्षत्र	चित्रा-१४		स्वाति-१५				विशाखा-१६			
चरण	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	रा	री	रु	रे	रा	ता	ती	तू	ते	तो
वर्ग	मृग	::	::	::	::	सर्प	::	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	मध्य	मध्य	महिषी	देव	मध्य	अंत्य	व्याघ्र	राक्षस	मध्य	अंत्य
पूर्ण राशि	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७
अंश	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३
कला	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	अनुराधा-१७				ज्येष्ठा-१८				मूल-१९			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	ना	नी	नू	ने	नो	य	यी	यु	ये	यो	भा	भी
वर्ग	::	::	::	::	::	मृग	::	::	::	::	उंदर	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	मृग	देव	मध्य	मध्य	मृग	राक्षस	अंत्य	आद्य	श्वान	राक्षस	अंत्य	आद्य
पूर्ण राशि	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८
अंश	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	पू.षा.-२०				उ.षा.-२१				श्रवण-२२			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	भु	धा	फा	ढा	भे	भो	जा	जी	खी	खु	खे	खो
वर्ग	::	सर्प	उंदर	श्वान	उंदर	::	सिंह	::	मार्जार	::	::	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	वानर	मनुष्य	अंत्य	मध्य	नकुल	मनुष्य	अंत्य	अंत्य	वानर	देव	अंत्य	अंत्य
पूर्ण राशि	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	९	९
अंश	१६	२०	२३	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	धनिष्ठा-२३				शत.-२४				पू.भा.-२५			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	गा	गी	गू	गे	गो	सा	सी	सू	से	सो	दा	दी
वर्ग	::	::	::	::	::	मेष	::	::	::	::	सर्प	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	सिंह	राक्षस	अंत्य	मध्य	अश्व	राक्षस	अंत्य	आद्य	सिंह	मनुष्य	अंत्य	आद्य
पूर्ण राशि	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	११	११
अंश	२६	०	३	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०	३
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०	२०

नक्षत्र	उ.भा.-२६				रेवती-२७			
चरण	१	२	३	४	१	२	३	४
अक्षर	दू	ज्ञा	झा	था	दे	दो	चा	ची
वर्ग	::	मेष	सिंह	सर्प	::	::	सिंह	::
अवकहड़ा चक्र	योनि	गण	युंजा	नाड़ी	योनि	गण	युंजा	नाड़ी
	गौ	मनुष्य	अंत्य	मध्य	गज	देव	पूर्व	अंत्य
पूर्ण राशि	११	११	११	११	११	११	११	०
अंश	६	१०	१३	१६	२०	२३	२६	०
कला	४०	०	२०	४०	०	२०	४०	०

सायन सूर्य	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु	अयन	गोल	ऋतु
	दक्षिण	दक्षिण	शरद	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	दक्षिण	दक्षिण	हेमंत	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	शिशिर	उत्तर	दक्षिण	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अष्टक वर्ग ज्ञानार्थ चक्र

१. रविरेखा ४८

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	१	३	५	६	१	३
२	६	२	५	६	७	२	४
४	१०	४	६	९	१२	४	६
७	११	७	९	११		७	१०
८		८	१०			८	११
९		९	११			९	१२
१०		१०	१२			१०	
११		११				११	

२. चन्द्ररेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	१	२	१	१	३	३	३
६	३	३	३	४	४	५	६
७	६	५	४	७	५	६	१०
८	७	६	५	८	७	११	११
१०	१०	९	७	१०	९		
११	११	१०	८	११	१०		
		११	१०	१२	११		
			११				

३. भौमरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	३	६	६	१	१
५	६	२	५	१०	८	४	३
६	११	४	६	११	११	७	६
१०		७	११	१२	१२	८	१०
११		८				९	११
		१०				१०	
		११				११	

४. बुधरेखा ५४

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
५	२	१	१	६	१	१	१
६	४	२	३	८	२	२	२
९	६	४	५	११	३	४	४
११	८	७	६	१२	४	७	६
१२	१०	८	९		५	८	८
	११	९	१०		८	९	१०
		१०	११		९	१०	११
		११	१२		११	११	

५. गुरुरेखा ५६

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	२	१	१	१	२	३	१
२	५	२	२	२	५	५	२
३	७	४	४	३	६	६	४
४	९	७	५	४	९	१२	५
७	११	८	६	७	१०		६
८		१०	९	८	११		७
९		११	१०	१०			९
१०			११	११			१०
११							११

६. भृगु रेखा ५२

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
८	१	३	३	५	१	३	१
११	२	५	५	८	२	४	२
१२	३	६	६	९	३	५	३
	४	९	९	१०	४	८	४
	५	११	११	११	५	९	५
	८	१२			८	१०	८
	९				९	११	९
	१०				११		११
	११				१२		

७. शनिरेखा ३९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
१	३	३	६	५	६	३	१
२	६	५	८	६	११	५	३
४	११	६	९	११	१२	६	४
७		१०	१०	१२		११	६
८		११	११				१०
१०		१२	१२				११
११							

८. लग्न रेखा ४९

सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.	ल.
३	३	१	१	१	१	१	३
४	६	३	२	२	२	३	६
६	१०	६	४	४	३	४	१०
१०	१२	१०	६	५	४	६	११
११		११	८	६	५	१०	
१२			१०	७	८	११	
			११	९	९		
				१०			
				११			

षट्वर्ग फलादेश

षट्वर्ग सारिणी प्रवेश रीति

'लग्न' या 'सूर्यादि स्पष्ट ग्रह' की जो वर्तमान राशि के समाने और उसके अंशादि के आसान जो कोष्ठक है उसके नीचे लिखे हुए होरादि षट्वर्गों के सामने की राशि अपने-अपने वर्ग को लग्न व ग्रहों की राशि होती है अर्थात् उन अंकों के समान संख्या वाली राशियों में लग्न व ग्रह को ग्रहादि वर्ग में लिखना चाहिए।

उदाहरण—जैसे स्पष्ट लग्न १।१५।१५।५७ है यहां लग्न की वर्तमान बृष राशि है। इसलिए बृष राशि के सामने और १५।१५।५७ से आसन्न-न्यून अंशादि १५।०।० है। इस के नीचे ४।६।११।२।७।१२ ग्रहादि वर्गों की वर्तमान राशि है। इसलिए होरा में कर्क, द्रेष्काण में कन्या, सप्तमांश में कुंभ, नवांश में वृष, द्वादशांश में मीन लग्न हुआ। स्पष्ट सूर्य ०।३।४३।१२ की वर्तमान मेष राशि के सामने और ३।२०।० आसन्न-न्यून कोष्टक के नीचे ५।१।१।१।२।१ वर्गों की राशियां हैं। अत: सूर्य होरा में सिंह राशि में रहेगा। द्रेष्काण में मेष का सूर्य, सप्तमांश में मेष का सूर्य एवं नवांश में मेष का सूर्य, द्वादशांश में वृष का सूर्य और त्रिशांश में मेष का सूर्य रहेगा।

होरा फल

होरा कुण्डली बना कर देख लेना चाहिए कि होरा लग्न सूर्य राशि हो और सूर्य उसी में स्थित हो तो जातक रजोगुणी, उच्चपदाभिलाषी, गुरु और शुक्र होरा लग्न में सूर्य के साथ हों तो सम्पत्तिवान्, सुखी, मान्य, उच्चपदारुढ़, शासक, नेता, शीलवान, राजमान्य तथा होरेश लग्न में पाप ग्रह से युक्त हो तो नीच प्रकृति वाला, दुश्शील, सम्पत्ति रहित, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाला और नीच कमरत जातक होता है यदि चन्द्रमा की राशि होरा लग्न में हो और चन्द्रमा उस में स्थित हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला, मातृभक्त, लज्जालु, व्यवसायी, कृषि कर्म में रुचि रखने वाला, अल्पलाभ में सन्तोष करने वाला तथा शुभ ग्रह गुरु शुक्र आदि भी होरा लग्न में चन्द्रमा के साथ हों जातक भक्ति, श्रद्धा, सदाचारयुक्त आचरण करने वाला शीलवान, धनिक, सन्तानवान, सुखी और चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो विपरीत आचरण वाला, निर्धन, दुखी तथा नीच कार्यों में प्रेम करने वाला होता है।

सप्तमांश चक्र का फल विचार

सप्तमांश लग्न से केवल सन्तान का विचार करना चाहिए। सप्तमांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह हो तो जातक के पुत्र उत्पन्न होते हैं और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह हो तो जातक के कन्याएं अधिक उत्पन्न होती हैं। सप्तमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रह हो पाप ग्रह की राशि में हो तो सन्तान नीच कर्म करने वाली होती है और सप्तमांश लग्न का स्वामी स्वराशि का शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हो या शुभग्रह की राशि में स्थित हो तो सन्तान शुभाचरण करने वाली सुन्दर, सुशील और गुणी होती है। सप्तमांश लग्न का स्वामी सप्तमांश लग्न से ७ या ८वें स्थान में पाप ग्रह से युक्त या दुष्ट हो तो जातक सन्तानहीन होती है।

नवमांश कुण्डली के फल का विचार

नवमांश लग्न से स्त्री भाव का विचार किया जाता है। इसी से स्त्री का आचरण, स्वभाव, चेष्टा प्रभृति को देखना चाहिए। नवमांश लग्न का स्वामी मंगल हो तो स्त्री क्रूर स्वभाव की कुलटा, लड़ाकू, सूर्य हो तो पतिव्रता, उग्रस्वभाव की, चन्द्रमा हो तो शीतल स्वभाव, गौरवर्ण और मिलनसार प्रकृति की, बुध हो तो चतुर, चित्रकार, सुन्दर आकृति, शिल्प विद्या में निपुण, गुरु हो तो पतिव्रता, ज्ञानवती, शुभाचरण वाली, पतिव्रता, सौम्य स्वभाव, व्रत, तीर्थ करने वाली, शुक्र हो तो चतुर, शृंगार प्रिय, विलासी, कामक्रीड़ा प्रवीण, गौर वर्ण, व्यभिचारिणी, शनि हो तो क्रूर स्वभाव वाली, कुल के विरुद्ध आचरण करने वाली, श्याम वर्ण, नीच संगति में रत, पति से विरोध करने वाली होती है। नवमांश लग्न का स्वामी राहु, केतु के साथ हो तो दुराचरिणी, कुल्टा, दुष्टा, नवमांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो और स्वराशिस्थ केन्द्र त्रिकोण में हो तो बालक को स्त्री का पूर्ण सुख मिलता है तथा नवमांश लग्न का स्वामी भाग्येश के साथ २।११वें भाव में उच्च का होकर स्थित हो तो स्त्रियों से अनेक प्रकार का लाभ तथा ससुराल के धन का स्वामी होता है। नवमांश लग्न का स्वामी पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट ८।१२वें भाव में स्थित हो तो जातक को स्त्री का सुख नहीं होता है। यह जितने पाप ग्रहों से युक्त या दृष्ट हो उतनी ही स्त्रियों को नाश करने वाला होता है।

द्वादशांश कुण्डली के फल का विचार

द्वादशांश लग्न से माता-पिता के सुख-दुख का विचार किया जाता है। यदि द्वादशांश लग्न का स्वामी शुभ ग्रह हो तो जातक के माता-पिता का शुभाचरण और पाप ग्रह हो तो पापाचार युक्त आचरण होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी पुरुष ग्रह अपनी राशि, मित्र की राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१०वें स्थान में स्थित हो तो जातक को पिता का पूर्ण सुख और नीच राशि, शत्रु राशि या पाप ग्रह की राशि में स्थित हो या ६।८।१२वें भाव में बैठा हो तो पिता का अल्प सुख होता है। द्वादशांश लग्न का स्वामी स्त्री ग्रह सौम्य हो और स्वराशि, मित्र राशि या उच्च की राशि में स्थित होकर १।४।५।७।९।१० भावों में स्थित हो तो जातक को माता का सुख होता है। यदि यही स्त्री ग्रह पाप युक्त या [illegible] होकर ६।८।१२वें भाव में हो तो माता का सुख नहीं होता।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

षट् वर्ग सारिणी चक्र

मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
रा.	चक्र	०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
	हो.	५	५	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
०	द्रे.	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९
	स.	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
मे.	द्वा.	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
१	द्रे.	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
	स	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
वृ.	द्वा.	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
२	द्रे.	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	११	११	११	११	११	११	११	११
	स.	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९
	न	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
मि.	द्वा.	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	२
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
३	द्रे.	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२
	स.	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४
	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
क.	द्वा.	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
४	द्रे.	५	५	५	५	५	५	५	५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१
	स.	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११
	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
सिं.	द्वा.	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
५	द्रे.	६	६	६	६	६	६	६	६	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२
	स.	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६
	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
कं.	द्वा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	त्रिं.	२	२	२	२	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

मार्ग		१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
अंशादि		२	३	४	५	६	७	८	१०	१२	१२	१२	१३	१५	१६	१७	१७	१८	२०	२१	२२	२३	२५	२५	२६	२७	३०
		३०	२०	१७	०	४०	३०	३४	०	०	३०	५१	२०	०	४०	८	३०	०	०	२५	३०	२०	०	४२	४०	३०	०
		०	०	८॥	०	०	०	१७	०	०	०	२६	०	०	०	३४	०	०	०	४३	०	०	०	५१	०	०	०
६	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	७	७	७	७	७	७	७	११	७	११	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३
	स.	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१
तु.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	७	८	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
७	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	८	८	८	८	८	८	८	८	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४
	स.	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८
वृ.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	८	९	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	१	०	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
८	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	९	९	९	९	९	९	९	९	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	५	५	५	५	५	५	५	५
	स.	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.	न.	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	४	४	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९
	द्वा.	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७	७	८
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
९	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	६	६	६	६	६	६	६	६
	स.	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०
म.	न.	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	३	३	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६
	द्वा.	१०	११	११	११	१२	१२	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६	७	७	८	८	८	९
	त्रिं.	२	२	२	२	६	६	६	६	६	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१०	१०	१०	१०	८	८	८	८
१०	हो.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
	द्रे.	११	११	११	११	११	११	११	११	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	७	७	७	७	७	७	७	७
	स.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५
कुं.	न.	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	१२	१	१	१	२	२	२	३	३
	द्वा.	११	१२	१२	१२	१	१	२	२	३	३	४	४	४	५	५	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०
	त्रिं.	१	१	१	१	११	११	११	११	९	९	९	९	९	९	९	९	९	३	३	३	३	३	७	७	७	७
११	हो.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
	द्रे.	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	१२	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	८	८	८	८	८	८	८	८
	स.	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२
मी.	न.	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	द्वा.	१२	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	६	६	६	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

अथ जन्म समय आदि विचार

ज्योतिष शास्त्र वेदों का मुख्य अंग है और षटशास्त्रों में सर्वोत्तम शास्त्र माना गया है। प्राचीन काल से लेकर आज के आधुनिक जैट व कम्प्यूटर युग तक इसकी महत्ता सदा मानी जाती रही है। इसका कारण यही है कि यह प्रत्यक्ष फल बतलाता है। चन्द्र ग्रहण, सूर्य ग्रहण का समय, सूर्योदय, चन्द्रोदय का प्रत्येक स्थान, अक्षांश का समय, ऋतु परिवर्तन आदि अनेक विषय हैं जिनका गणित द्वारा निर्णय इस शास्त्र द्वारा ठीक-ठीक किया जाता है। ऐसा और कोई शास्त्र नहीं है जो भूत, भविष्य, वर्तमान तीनों कालों की बातों को ठीक-ठीक बतला सके। इसलिये हमारी संस्कृति में इस शास्त्र को सब से ऊँचा स्थान दिया गया है। वेदों के समय से ही यह परम्परा रही कि चाहे सभी वेदों और अन्य शास्त्रों को पढ़ लेने पर जब तक ज्योतिष शास्त्र में पारंगत नहीं होता था उसकी विद्या और ज्ञान अधूरा समझा जाता था। ज्योतिष शास्त्र के द्वारा सही भविष्य ज्ञात करने के लिये आवश्यक होता है कि जन्म का ठीक समय ज्ञात हो। आजकल छोटे-छोटे गांवों तक और साधारण से साधारण व्यक्ति के पास घड़ी उपलब्ध है और जन्म का ठीक समय जानना उतना कठिन नहीं रह गया है जितना अब से कुछ समय पहले हुआ करता था। फिर भी बहुत सी ऐसी परिस्थितियां होती हैं जब जन्म का ठीक समय नोट नहीं हो पाता था ज्योतिषी के पास पुरानी पत्री बनने को आती है। और बनवाने वाला लगभग समय बतलाता है। इस कारण ज्योतिष शास्त्र में बहुत सी ऐसी बातें बताई गई हैं जिनकी सहायता से ठीक लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। दिन-रात के चौबीस घंटों में बारह लग्न क्षितिज पर निकल जाते हैं और एक लग्न लगभग दो घंटे होता है। कोई लग्न दो घंटे से कुछ कम कोई दो घंटे से कुछ ज्यादा होता है। वर्षभर की दैनिक लग्न सारिणी दिल्ली नगर के पंचांग में दे दी गई है और इस की सहायता से अन्य नगरों में प्रत्येक लग्न का आरम्भ व समाप्ति काल निकालना भी बता दिया गया है। मान लो कोई व्यक्ति आपको बताता है कि बालक का जन्म रात में दिन निकलने से २-३ घंटे पहले हुआ था तो इसी अवस्था में आपको २ या ३ लग्नों में से एक लग्न का निर्णय करना पड़ेगा। तब जिस लग्न की बातें सबसे अधिक मिलें वही सही लग्न समझना चाहिए। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि घड़ी में ठीक समय देख कर ही जन्म समय नोट किया है। परन्तु घड़ी कुछ धीमी-तेज गति से चलने के कारण थोड़ा-बहुत गलत समय भी बता सकती है और संयोग से जन्म समय के आस-पास ही लग्न का समाप्ति काल भी हो तो उस समय भी सही लग्न का निर्णय करने में निम्न जानकारी बहुत सहायक होती है। मान लो १२ नवम्बर रात के २-१५ का जन्म है और उस तारीख को सिंह लग्न २-२० पर समाप्त हो रही हो तो सिंह और कन्या दोनों लग्नों की विशेषताओं पर विचार करके ही आपको निर्णय करना पड़ेगा।

पितृ परोक्ष ज्ञान— सबसे पहले आप पता कीजिये कि बालक के जन्म समय पिता घर था या नहीं। घर से यहां तात्पर्य जन्म स्थान से है। जन्म यदि किसी अस्पताल, नर्सिंग होम में हुआ हो तो उस स्थान से है। लग्न पर चन्द्रमा की पूर्ण या अपूर्ण (एक पाद, दो पाद आदि) दृष्टि है तो पिता घर पर ही होना चाहिये। सूर्य आठवां, नौवां, ग्यारहवां या बारहवां है (लग्न से) तो पिता घर पर नहीं होता। लग्न से ८वां, ९वां, ११वें, १२वें भाव में जिस में सूर्य पड़ा हो वह राशि यदि चर राशि है तो पिता दूसरे देश में होना चाहिये। सूर्य इन भावों में स्थिर राशि का हो तो देश में ही होना ...में हो और सूर्य की राशि द्विस्वभाव राशि हो तो पिता घर की ओर मार्ग में होता है। इन सभी योगों में लग्न पर चन्द्रमा की दृष्टि हो तो पिता घर में ही होता है बाहर नहीं। शनि लग्न में हो या मंगल सातवें स्थान में हो, या बुध-शुक्र चन्द्रमा से दूसरे या बारहवें स्थान में हो अर्थात् बुध-शुक्र में से कोई एक-दूसरे में हो, दूसरा बारहवें स्थान में हो, तो भी पिता का घर पर न होना ही ज्ञात होता है। बुध-शुक्र के इस योग में अंशों से भी विचार होता है। चाहे तीनों एक ही राशि में हों या दो राशियों में परन्तु एक के अंश चन्द्रमा से कम दूसरे के अधिक हों तो भी चन्द्रमा दोनों के मध्य ही समझा जाता है। जैसे चन्द्रमा के किसी राशि में १५ अंश, बुध के ८ अंश और शुक्र के २५ अंश हों तो यह कर्तरी योग बन जाता है।

चिह्न ज्ञान— बहुधा बालक के शरीर पर आये चिह्न तिल, भौंरी, लहसुन, मसा आदि से भी लग्न का निर्णय करने में सहायता मिलती है। जन्म कुण्डली में लग्न से १, ५, ६, या ९वें स्थान में सूर्य हो तो भुजा में कोई चिह्न होता है। यदि लग्न में सूर्य और शनि दोनों हों, दूसरे भाव में मंगल और केन्द्र (१, ४, ७, १०) में चन्द्रमा हो तो बालक की छः उंगलियां होती हैं। जो ग्रह बलवान होता है उसी के अनुसार चिह्न भी आते हैं। सूर्य सिर पर, मस्तक पर, चन्द्रमा मुख, मंगल गले में, बुध छाती में, गुरु नाभि व पेट पर, शुक्र पीठ व जांघ पर, शनि, राहु, केतु, पेट, होंठ, दांतों पर चिह्न पैदा करते हैं। सप्तम भाव में गुरु या लग्न में राहु व गुरु दोनों हों और अष्टम में पाप ग्रह शनि, मंगल, राहु आदि हों, या लग्न में शुक्र तथा अष्टम में पाप ग्रह हों तो, बाँई भुजा पर तिल, मसा, लहसन आदि का चिह्न होता है। लग्न ३।६ या ११वें स्थानों में मंगल हो या बारहवें भाव में मंगल-शुक्र दोनों हों तो बांई बगल में तिल आदि चिह्न होता है। लग्न में शुक्र और सातवें राहु हो तो माथे पर या बाँये कान पर चिह्न होता है। लग्न में मंगल हो, ५।६ स्थानों में शनि हो और ११।१२ में शुक्र हो तो गुदा या लिंग (योनि) के समीप तिल आदि चिह्न होता है। ५ या ६ठें स्थान में शनि हो, ८वां बुध या लग्न में गुरु और ४था शनि हो तो पेट पर चिह्न होता है। दूसरा शुक्र, तीसरा मंगल या आठवां सूर्य कमर पर चिह्न लाता है। चौथा शुक्र या राहु, लग्न में मंगल या शनि बाँये पैर पर १२वां गुरु, दूसरा चन्द्रमा, ३, ६, ११वां बुध गुदा के समीप गोल चिह्न या व्रण आदि उत्पन्न करता है। छठे भाव का स्वामी ग्रह पाप ग्रहों के साथ लग्न या सातवें घर में हो तो शरीर में फोड़े-फुंसी होते हैं। लग्न में मंगल, सप्तम में गुरु या शुक्र हो तो सिर में चोट या फोड़ा-फुंसी का चिह्न हो सकता है। लग्न में मंगल, शुक्र, चन्द्रमा साथ हो तो दूसरे या छठे वर्ष में सिर में चिह्न होने की आशंका होती है। मंगल चन्द्र से व्रण और शुक्र चन्द्र से तिल होते हैं।

अन्तरिक्ष जन्म ज्ञान— बालक का जन्म भूमि पर हुआ है या ऊंचे स्थान पर हुआ है? मकान की पहली मंजिल भूमि और दूसरी तथा ऊपर की मंजिलों को अंतरिक्ष कहा जाता है। जन्म लग्न मिथुन, कन्या, धनु या मीन हों तो अन्तरिक्ष या ऊँचे स्थान पर जन्म समझना।

बालक का रोदन ज्ञान— जन्म समय मेष, मिथुन, सिंह, धनु लग्न हों तो बालक ने पैदा होते ही जल्दी रोना आरम्भ कर दिया ऐसा जानना। कन्या, तुला, कुम्भ लग्न हो तो बालक धीरे मन्द स्वर में रोया, अन्य लग्नों में बालक देर से रोया हो ऐसा जानना चाहिये। आप जानते हैं कि जन्म कुंडली में दो कुंडली बनती हैं, एक लग्न कुंडली दूसरी राशि कुंडली। इन में जो ज्यादा बलवान हो उसी का फल कहना चाहिये। लग्न बलवान हो तो लग्न के अनुसार और राशि बलवान हो तो राशि के अनुसार फल कहना चाहिये। लग्नेश लग्न को देखता हो लग्नेश स्वग्रही उच्च मित्र क्षेत्री हो, लग्न को शुभ ग्रह देखता हो तो लग्न बलवान होती है इसी प्रकार राशि भी बलवान होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उपसूतिका ज्ञान— प्रसव के समय मुख्य डाक्टर या डाक्टरनी के अतिरिक्त कितनी नर्स या अन्य स्त्रियाँ उस समय उपस्थित थीं इसका ज्ञान करने के लिए यह देखना चाहिए कि लग्न में या लग्नेश के साथ और इनके यानी लग्न के व लग्नेश के दूसरे व १२वें स्थान में जितने ग्रह हों उतनी ही उप-सूतिकायें जाननी चाहिए। अथवा लग्न व चन्द्रमा के मध्य जितने ग्रह हों उतनी संख्या जानना चाहिए। लग्न से सप्तम स्थान तक अदृश्य और सप्तम से लग्न तक दृश्य होता है। अतएव सप्तम से लग्न तक जितने ग्रह हों उतनी उपसूतिकायें प्रसूतिका माता के पास और लग्न से सप्तम तक जितने ग्रह हों उतनी घर के बाहर होती हैं। अस्पताल में जिस कमरे में प्रसव हो उसे मुख्य घर समझना चाहिए। उस कमरे में प्रसव समय पर उपस्थित नर्सें आदि प्रथम कोटि में और जो बाहर आ जा रही हों वह दूसरी कोटि में समझनी चाहिए। गावों में जहां प्रसव घर हों वहां आस-पड़ोस की स्त्रियों की गिनती भी साथ ही की जाती है। उपसूतिकाओं के वर्ण, जाति, आयु का विचार ग्रहों के अनुसार ही करना। उच्च तथा बक्री ग्रहों की संख्या को ३ से गुणा कर के तथा स्वराशि स्वनवांश स्वद्रेष्काण के ग्रहों को दुगना करके और नीच तथा अस्त ग्रहों की संख्या को आधा करके संख्या ज्ञात करनी होती है।

सिर पाद प्रसव ज्ञान— बच्चे का जन्म सिर से हुआ है या पैर से इसको जानने के लिये देखो कि यदि ३।५।६।७।८।११ राशियों में या इन राशियों के नवांश में जन्म हुआ है तो सिर से प्रसव जानना। यह शीर्षोदय राशियां हैं। इनके अतिरिक्त अन्य १।२।४।९।१०।१२ पृष्ठोदय राशियां हैं। इनमें या इनके नवांश में जन्म हो तो पैरों से प्रसव जानना। मीन राशि में या मीन के नवांश में जन्म हाथों से होता है। यानी पहले हाथ बाहर आते हैं। पैर पहले बाहर आयें तो पैरों से प्रसव और सिर पहले आये तो सिर से प्रसव कहा जाता है।

सूतिका गृह द्वार ज्ञान— सूतिका गृह या अस्पताल, नर्सिंग होम आदि के उस कमरे का जिसमें प्रसव हुआ हो द्वार किस दिशा की ओर है इसके ज्ञान के लिए देखो कि केन्द्र में स्थित ग्रह की दिशा कौन सी है। यदि केन्द्र में कई ग्रह हों तो सबसे बलवान ग्रह की दिशा के अनुसार और कोई ग्रह केन्द्र में नहीं हो तो लग्न की राशि की दिशा बताना चाहिए।

पुरुष शरीर में सूर्यादि ग्रहों का अधिकार— सिर व मुख प्रदेश में सूर्य का, छाती गले में चन्द्रमा का, पीठ, पेट में मंगल का, हाथ व पैरों में बुध का, कमर व जांघ में गुरु (वृहस्पति) का, जननेन्द्रिय व वृष्णों में शुक्र का, घुटने (जानु), पेट (ऊरु) में शनि का अधिकार होता है। जन्म समय, प्रश्न समय गोचर में जब-जब यह ग्रह अनिष्ट कारक होते हैं। तब-तब अपने अधिकार प्रदेश के अंगों को ही कष्ट पहुंचाते हैं।

मेषादि राशियों का अंग विभाग— मेष राशि का स्थान सिर में, वृष का मुख, मिथुन दोनों भुजायें, कर्क हृदय प्रदेश, सिंह उदर, कन्या कमर, तुला वस्ति (मूत्राशय), वृश्चिक जननेन्द्रियां, धनु दोनों जंघायें, मकर दोनों घुटने, कुम्भ दोनों पिंडलियां और मीन राशि से दोनों पैरों (पादों) का विचार किया जाता है। इसी प्रकार प्रथम भाव लग्न से सिर, दूसरे भाव से सुख, तीसरे से भुजा, चौथे से हृदय, पाँचवें से पेट, छठे से कमर, सातवें वे वस्ति, आठवें से गुह्येन्द्रियों, नवम से ऊरु, दशम से जानु, ग्यारहवें से जंघा और बारहवें भाव से पैरों का विचार करते हैं। उपरोक्त बारह राशियों अथवा बारह भावों में शुभ अशुभ ग्रहों की स्थिति दृष्टि आदि से तत्सम्बन्धी अंगों के स्वस्थ या पीड़ित रहने का विचार किया जाता है।

लग्नों के अनुसार प्रत्येक लग्न के अलग-अलग लक्षण इस प्रकार होते हैं।

अथ प्रसूति लग्न विचार

मेष— सूतिका गृह—(वह स्थान जहाँ बच्चा पैदा होता है, अस्पताल, नर्सिंग होम, घर आदि)। इमारत पुरानी, मुख्य द्वार पूर्व दिशा की ओर, चारपाई, बैड, पलंग जिस पर प्रसविनी माता को लिटाया गया उसका सिर पूर्व दिशा की ओर, माता ने लाल रंग के वस्त्र पहने हुए थे, प्रसव से पहले मीठा भोजन किया था। प्रसव में कष्ट अधिक हुआ, जन्म भूमि पर हुआ (यदि इमारत में कई मंजिलें हों तो सबसे नीचे की मंजिल भूमि की सतह पर समझें) प्रसव के बाद बालक अधिक रोया। उपसूतिका १ या ३, बालक के मुख का रंग श्यामता पर, नेत्र भूरे, प्रकृति वात श्लेष्म, कद छोटा, शरीर मजबूत, वाणी चंचल, कष्ट वर्ष ४।११।१६।४४।५८, उपाय गौदान, तुलादान, मृत्युंजय जप आदि, आयु १०० वर्ष।

नोट— कष्ट वर्षों में शरीर कष्ट की आशंका होती है उपाय करने से कष्ट टल जाता है। चन्द्रमा पर बृहस्पति या शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आयु पूर्ण होती है। बैद्यक शास्त्र के अनुसार प्रकृति तीन प्रकार की होती है वात, पित्त, कफ। श्लेष्म कफ को ही कहते हैं।

वृष— माता का सिर दक्षिण में, सूतिक घर नया, द्वार दक्षिण में, माता ने सफेद वस्त्र पहने हुए हों और प्रसव से पहले सूखा साग आदि खाया हो, अधोमुख होकर पैरों से प्रसव, बालक ऊँचे स्वर से रोया, उपसूतिका ३ या ४, दीपक (या बत्ती लाइट) उत्तर में, बालक का रंग गोरा, स्वरूप सुन्दर, प्रकृति रक्त, पित्तकष्ट वर्ष १।२।८।३३।४४।६१, कष्ट निवारण के लिए उपाय अन्नदान, ब्राह्मण भोजन, मृत्युंजय जप आदि। उपरान्त आयु ९० वर्ष आजकल बच्चा पेट में उल्टा या टेढ़ा हो जाता है तो आपरेशन से प्रसव करते हैं। वह इसी श्रेणी में समझना चाहिए।

मिथुन— माता का सिर पश्चिम में, मकान नया, द्वार पश्चिम में, माता के कपड़े पीले रंग के, प्रसव से पहले नमकीन भोजन किया हो, माता के दाहिने अंग में कोई चिह्न, जन्म अन्तरिक्ष (छत पर) या ऊपर की मंजिलों में, सिर से प्रसव, रोना उच्च लम्बे स्वर में, उपसूतिका ३ या ५, स्तनों में दूध कम, देर से उतरे, बालक के नेत्र रोग युक्त, प्रकृति बल्गमी, स्वभाव चंचल, अग्निमंद (हाजमा मन्दा), बुद्धि विलक्षण, प्रसव से पहले माता को कुछ ज्वर आदि हुआ हो। कष्ट वर्ष ४।१०।१४।३८।५८, उपाय शिवार्चन, मृत्युंजय जप होम आदि। उपरान्त आयु ८६ वर्ष।

कर्क— प्रसव के समय माता का सिर उत्तर में, मकान नया, मकान का या उस कमरे का जिस में प्रसव हुआ हो द्वार उत्तर में, माता ने पुराने सफेद या लाल रंग के वस्त्र पहने हुये हों, पिता क्लेश में परेशानी में हो, प्रसव कष्ट अधिक, माता ने मधुर, शीतल (मीठा ठंडा) भोजन किया हो, भूमि पर जन्म, पैर से प्रसव, रोदन शब्द दीर्घ, बालक जोर से रोया, उपसूतिका ४ या ५, बालक के वामांग में चिह्न, बालक का सिर मोटा, आखें चंचल, प्रकृति, वात, कफ, रंग गोरा, कद लम्बा, शरीर कोमल, कष्ट वर्ष ५।२५।४०।४८।६२ उपाय छायापात्र, तुलादान, मृतसंजीवनी मंत्र का जप। उपरान्त आयु १०० वर्ष।

सिंह— माता का सिर पूर्व में, मकान नया, द्वार पूर्व को, माता के वस्त्र लाल या चित्र-विचित्र भोजन के साथ शाक-भाजी व खट्टी चीज खाई हो, भूमि पर जन्म, रोदन स्वर दीर्घ, उपसूतिका ३ या ५, बालक की पीठ पर चिह्न, केश घने, नाक लम्बी, कद छोटा, शरीर कोमल, रंग गोरा, हठीला,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चंचल, क्रूर स्वभाव, प्रकृति कफ, पित्त। कष्ट कारक वर्ष ५।१३।२८।३६।४८, उपाय सूर्य पूजन, आदित्य हृदय का पाठ, अपूपान्न दान (मीठे माल पूये आदि) उपरान्त आयु ८३ वर्ष।

कन्या—माता का सिर उत्तर, प्रसव स्थान घर के दक्षिण भाग में, पिता घर से बाहर गया हो, छत पर ऊँची जगह पर जन्म, बालक कम रोया, उपसूतिका ४ या ५, भुजा में साधारण भूषण, बालक का रंग गोरा, गले व जांघ में जिन्ह, कष्टकारक वर्ष ४।१६।२३।३६।५५, उपाय मुदगान्न दान, गोदान, मृत्युंजय जप, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

तुला—माता का सिर पश्चिम में, मकान कुछ नया, प्रसूतिका गृह पश्चिम भाग में, माता के बाल साधारण सफेद, प्रसव कष्ट ज्यादा, पिता क्लेश-परेशानी में, माता ने प्रसव से पहले कुछ काम कर ठंडा पानी पिया हो, घर में कुछ लड़ाई-झगड़ा हुआ हो, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज धीमी, उपसूतिका ३ या ५, वहां एक कन्या भी हो, दीपक हाथ में उठाया हो या लाइट बल्ब ऊंचा लटका हो, बालक का रंग जरदी पर, बदन में फोड़े-फुंसी, शरीर दुबला, कष्ट वर्ष ८।१५।३१।३५।६२।६४,, उपाय गोदान, तन्दुल दान, नवग्रह पूजन, होम से शान्ति तदुपरान्त आयु ८५ वर्ष।

वृश्चिक—माता का सिर दक्षिण या उत्तर में, मकान पुराना, द्वार उत्तर में, माता के बाल लाल या जला हुआ, प्रसव कष्ट अधिक, साधारण भोजन, माता कुछ क्रोध में, भूमि पर जन्म, रोने की आवाज आधी दबी हुई, उपसूतिका ४ या ५, पिता क्लेश परेशानी में, बालक के केश लम्बे काले, पीठ पर चिन्ह, गले में पीड़ा, रंग गौर श्याम बीच का, प्रकृति रक्त-पित्त, कष्ट वर्ष ११।२८।३८।५२।६२ उपाय तुलादान, मृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, उपरान्त आयु १०० वर्ष।

धनु—माता का सिर पूर्व दिशा की ओर, प्रसूति स्थान घर के दक्षिण भाग में, द्वार पूर्व में, मकान नया, माता के वस्त्र लाल या बसन्ती, माता ने पका हुआ भोजन करके जल पिया हो, जन्म ऊँचे स्थान पर या छत पर, रोने का स्वर काफी ऊँचा, उपसूतिका १ या ५, बालक का रंग गोरा, आकृति सुन्दर, नेत्र विशाल, सिर ऊँचा, हृदय पर चिन्ह, कष्ट वर्ष २।१०।१८।३१।३८।४२, उपाय कष्ट वर्षों के आरम्भ में शिवार्चन, महामृत्युंजय जप, ब्राह्मण भोजन, तदुपरान्त आयु ८१ वर्ष।

मकर—माता का सिर दक्षिण में, मकान पुराना, दरवाजा उत्तर या दक्षिण की ओर, प्रसूति स्थान पश्चिम भाग में, वस्त्र मैले फटे पुराने, माता ने शाक-सब्जी के साथ भोजन कर के ठंडा पानी पिया हो, भूमि पर जन्म, कुछ देर बाद बालक धीरे स्वर से रोया, उपसूतिका १ या ५, बालक के केश घने, नाक मोटी, मस्तक ऊँचा, रंग श्याम, कष्ट वर्ष ५।१३।२७।३६।५७।६२।८७, उपाय रुद्राभिषेक, स्वर्ण दान, तैल, उड़द दान, छायापात्र दान, उपरान्त आयु ९५ वर्ष।

कुम्भ—माता का सिर पश्चिम में, मकान का अधिकांश भाग पुराना, प्रसूतिका घर दक्षिण-पश्चिम में, द्वार पूर्वोत्तर में, माता के वस्त्र कुछ काले मैले, पुराने, कम्बल ओढ़ा हो, मामूली कसैला चटपटा भोजन किया हो, पिता घर पर नहीं हो, भूमि पर जन्म, जन्म के काफी देर बाद बालक थोड़ा सा रोया, उपसूतिका ३ या ४, बालक के होंठ मोटे; मस्तक लम्बा, प्रकृति गर्म, कद नाटा, नेत्र में रोग, कष्ट वर्ष २।२८।३३।४८।६४, उपाय तुला दान, महिषि दान, मृत्युंजय जप उपरान्त आयु ९० वर्ष।

मीन—माता का सिर उत्तर में, मकान का कुछ हिस्सा पुराना, प्रसूति गृह उत्तर में, द्वार दक्षिण को, माता के वस्त्र मैले बसन्ती रंग के, पिता घर पर, जन्म ऊँचे स्थान पर, बालक जन्म के बाद देर से रोया, माता ने प्रसव से पहले ठण्डा जल पिया हो, उपसूतिका पहले, पीछे ३ या ५, पलंग का पाया टूटा हुआ, बालक का रंग गोरा, नाक चपटी, आँख भूरी, सिर ऊँचा, बाल कपिल, प्रकृति बल्गमी, कष्ट वर्ष १।८।१३।३६।४८, उपरान्त आयु ८३ वर्ष, उपाय मोदकान्न दान, गोदान, ग्रह शान्ति, मृत्युंजय जप।

प्रत्येक लग्न के—विषय में जो सूचनायें दी गई हैं वे प्रायः सामान्य रूप से ठीक मिलती हैं। परन्तु ग्रहों के अन्य योगों से उन में अन्तर भी आ सकता है। ग्रह योगों का जो प्रभाव पड़ता है उनके विषय में संक्षेप में इससे पहले विचार किया है उस पर भी ध्यान देना चाहिए। कभी-कभी ऐसा होता है कि जन्म समय के बारे में निश्चित रूप से ठीक सूचना नहीं मिलती और जो समय बताया होता है उस के आस-पास ही लग्न का आरम्भ या समाप्ति काल होता है तब उपरोक्त लक्षणों के आधार पर ही ठीक लग्न का निर्णय करना होता है। जिस लग्न के लक्षण, चिन्ह आदि अधिक मिलें वही लग्न ठीक समझनी चाहिए। इसको और स्पष्ट करने के लिए २-१ उदाहरण देकर समझाना ठीक होगा। मान लो किसी ने बताया कि १२ नवम्बर को रात के बारह बजे के आस-पास का जन्म है। लग्न सारणी में देखने पर ज्ञात हुआ कि १२ नवम्बर को १२ बजकर ३ मिनट तक कर्क लग्न है और उसके बाद सिंह लग्न है। अब आप कर्क और सिंह दोनों लग्नों के लक्षणों, चिन्हों का मिलान कीजिये और जिस लग्न की बातें ज्यादा मिलें वही लग्न निर्धारित कर दीजिए।

बालारिष्ट—जन्म लग्न में चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें घर में हो और उस पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक के जीवन को संकट होता है। यदि इस प्रकार के चन्द्रमा को शुभ ग्रह देख रहे हों तो संकट टल जाता है। ६।८।१२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उन पर क्रूर ग्रहों या वक्री ग्रहों की दृष्टि हो, लग्न में कोई शुभ ग्रह न हो, लग्न को या लग्नेश को कोई शुभ ग्रह नहीं देखता हो तो बालक को अल्पायु योग होता है। जिस कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य, मंगल व शनि तीनों हों उस बालक को, उसकी माता को, उसके भाई को, तीनों को ही कष्ट प्रदान करते हैं। तीनों ग्रहों का इस प्रकार का योग भी बालक तथा माता दोनों को अपार कष्ट प्रदान करता है। लग्न में शनि, आठवां चन्द्रमा, तीसरा बृहस्पति—इस प्रकार से ग्रहों का योग हो तो वह भी बालक को महान कष्ट कारक होता है। अल्पायु योग माना जाता है। बारहवें स्थान में कोई भी ग्रह हो तो कष्ट ही देता है। परन्तु सूर्य, चन्द्र, शुक्र व राहु हों तो विशेष रूप से अरिष्टदायक होते हैं। लग्न के १२वें तथा दूसरे भाग में क्रूर ग्रह होने से अशुभ कर्तरी योग बनता है। अर्थात् लग्न दुष्ट ग्रहों के बीच में आ जाने से कष्ट दायक हो जाती है। लग्न में दूसरे भाव में, छठे, आठवें, बारहवें भाव में क्रूर ग्रहों का होना अरिष्ट बताता है।

अरिष्ट भंग योग—बुध, बृहस्पति, शुक्र इन शुभ ग्रहों से कोई भी एक, दो या तीनों १।४।७।१० केन्द्र स्थानों में हों या लग्न में गुरु स्वग्रही उच्च क्षेत्री बलवान होकर पड़ा हो या लग्नेश बलवान होकर केन्द्र में हो, या शुक्ल पक्ष में रात्रि का जन्म हो और लग्न पर शुभ ग्रहों की दृष्टि हो अथवा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और लग्न शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो। इन पांचों योगों में से कोई भी एक या अधिक योग हो तो वह उपरोक्त सभी अरिष्ट योगों, अल्पायु योगों को भंग कर देता है। समाप्त कर देता है।

माता-पिता को अरिष्ट योग—सूर्य से पिता का तथा चन्द्रमा से माता का विचार किया जाता है। सूर्य के साथ पाप ग्रह बैठे हों या सूर्य पाप ग्रहों के बीच में पड़ गया हो या सूर्य पर पाप ग्रहों की दृष्टि हो, अथवा सूर्य से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रह हों और शुभ ग्रह न हों तो पिता को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

कष्टदायक होते हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा के साथ यह अरिष्ट योग माता को कष्टकारक होते हैं, जैसे — चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह चन्द्रमा से २।१२वें भाव में पाप ग्रह चन्द्रमा पर पाप ग्रहों की दृष्टि चन्द्रमा से ४।६।८वें स्थानों में क्रूर ग्रहों की स्थिति शुभ ग्रहों की अनुपस्थिति माता को कष्ट देने वाली होती है।

प्रसव दोष — चैत्र मास में कुतिया प्रसव करे, वैशाख में ऊंटनी, ज्येष्ठ में बिल्ली, आषाढ़ में गधी, श्रावण में घोड़ी, भाद्रपद में गाय, कार्तिक में स्त्री, मार्गशीर्ष में हथिनी, पौष में बकरी, माघ में भैंस प्रसूत हो तो प्रसूतिका को तथा उसके स्वामी को कष्टकारक होती है। सभी प्रकार के अरिष्ट योगों की शान्ति के लिये दान, जप, हवन, शान्ति पाठ, पुण्याहवाचन आदि अनुष्ठान करा देना चाहिए।

त्रिखल दोष — तीन पुत्रों के बाद कन्या अथवा तीन कन्याओं के बाद पुत्र हो तो त्रिखल दोष होता है। यह माता-पिता को कष्ट कारक, धन हानि कारक होता है। इसके लिए त्रिखल शान्ति अनुष्ठान करा देना चाहिए।

दन्तोत्पत्ति फल — बालक दांतों सहित जन्म ले तो माता-पिता को महा अरिष्ट दोष होता है। प्रथम दांत नीचे की पंक्ति में आना चाहिए, यदि ऊपर की पंक्ति में प्रथम दांत उत्पन्न हो तो मातुल पक्ष को भयदायक होता है। दांत ६ महीने से पहले आना ठीक नहीं होते। प्रथम मास में शरीर कष्ट द्वितीय में छोटे भाई को, तीसरे में बहन को, चौथे में बड़े भाई को, पांचवें में बड़े बन्धु जनों को कष्टकारक होते हैं। छठे में बहुत भाग्यशाली, ७वें में पिता को भाग्य वर्धक, ८वें में शरीर पुष्टिकारक, ९वें में धनवान, १०वें में सुखी, ११वें में महा सुखी, १२वें महाधनी बनाते हैं।

एक नक्षत्र जात फल — पिता-पुत्र, माता-पुत्र,. माता-कन्या, पिता-कन्या या दो भाई एक ही नक्षत्र में जन्में तो दोनों को ही महान् कष्ट दायक माने गये हैं। नक्षत्रों में, चरण में या राशि में भेद हो तो कुछ कम कष्टदायक होते हैं। अरिष्ट निवारण के लिए स्वर्ण दान, शान्ति पाठ, जप, हवन आदि कर्म अवश्य करा देना चाहिए।

गण्डमूल नक्षत्र चरण फल सारिणी

गण्डमूल नक्षत्र	प्रथम चरण	द्वितीय चरण	तृतीय चरण	चतुर्थ चरण
अश्विनी	पिता को कष्ट	सुख ऐश्वर्यवान	मंत्रित्व प्राप्ति	राज्य सम्मान
आश्लेषा	शांति से शुभ	धन हानि	मातृ हानि	पितृ हानि
मघा	माता को कष्ट	पिता को कष्ट	सुखी	धन-विद्या प्राप्ति
ज्येष्ठा	भाई को कष्ट	कनि. भाई को कष्ट	मातृ हानि	स्वयं को हानि,
मूल	पिता को हानि	माता को हानि	धन नाश	शांति से शुभ
रेवती	राज्य सम्मान	मंत्रित्व प्राप्ति	धन सुख	व्याधियाँ

उपरोक्त नक्षत्र गण्डमूल नक्षत्र होते हैं। इन में जन्मा बालक माता-पिता, अपने कुल या अपने शरीर को कष्टकारक होता है। इस के विपरीत यदि संकट समाप्त हो जाय तो अपार धन, वैभव, ऐश्वर्य, वाहनादि का स्वामी भी होता है। शास्त्रानुसार तो उचित यही समझा जाता है कि २७ दिन तक पिता को ऐसे बालक का मुख नहीं देखना चाहिए। मूल शान्ति करानें के बाद ही दान, हवन, पूजा आदि करा कर २७ दिन बाद ही मुख देखे। परन्तु यह तभी उचित है जब बालक पिता को कष्टदायक हो या अभुक्त मूल में उत्पन्न हो। २७ दिन बाद वही नक्षत्र जब फिर आये तब पुरोहित द्वारा मूल शान्ति करा यथा सम्भव दानादि करके ही प्रसूति स्नान शुद्धि कराई जानी चाहिए। जन्म मास जन्म लग्न के अनुसार मूल का निवास कहां है तक उसका क्या फल होता है यह नीचे के चक्र में दिया है।

मूल निवास चक्र

चन्मामासानुसारेण	वैशा., ज्ये., मार्ग., फा.	चैत्र, श्राव., का., पौ.	आषा., आ.,माघ, भा.
जन्म लग्नानुसारेण	२।५।८।११	३।६।९।१२	१।४।७।१०
मूल निवास स्थानम्	पाताले	भूमौ	स्वर्गे
फलम्	शुभम्	कुलनाशः	शुभम्

प्रत्येक नक्षत्र लगभग ६० घटी का मान कर मूल नक्षत्र को एक वृक्ष की उपमा दी गई है और उसकी घटियों के अनुसार उसके मूल आदि विभाग किये गये हैं। बालक का जन्म जिस विभाग में हो उसी के अनुसार फल बताये गये हैं। जैसे प्रथम ७ घटी मूल (जड़), अगली ८ घटी स्तम्भ (तना), उसकी अगली १० त्वचा (छाल) आदि। मूल नक्षत्र में जन्म हो तो निम्न चक्र से फल देखें:

मूलजनन वृक्ष विभाग

मूले	स्तम्भे	त्वचायां	शाखायां	पत्रे	पुष्पे	फले	शिखायां	विभाग
७	८	१०	११	१२	५	४	३	घट्यः
मूल नाशः	वंश नाशः	मातृ क्लेश	मातुल नाश	मंत्री पदम्	मंत्री पदम्	विपुल लाभः	अल्प जीवी	फलम्

इसी प्रकार नक्षत्र को पुरुष मान कर उस की घटियों को पुरुष के अंगों में स्थापित करके तदनुसार फल प्रतिपादन किया जाता है। यथा प्रथम ५ घटी में जन्म हो तो मूर्ध्निफल-राजा राजसी ठाट-बाट उपरान्त ७ घटी मुख संज्ञा-फल पिता को कष्ट आदि-आदि बालक के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखें। मूल नक्षत्र में जन्मे बालक के लिये।

अथ मूल पुरुष चक्रम्

मूर्ध्नि	मुखे	स्कंधे	बाह्वोः	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुह्ये	जानुनि	पादे	स्थानं
५	७	४	८	३	९	२	१०	६	६	घट्यः
राजा	पि.मृ.	बली	बली	दानी	मंत्री	ज्ञानी	कामी	मतिमान्	मतिमान्	फलम्

मूल नक्षत्र में बालिका के जन्म पर निम्न चक्र से फल देखना चाहिये।

अथ कन्याजन्मनि मूल चक्रम्

शीर्षे	मुखे	कण्ठे	हृदये	बाह्वोः	हस्ते	गुह्ये	जंघे	जानुनि	पादे	स्थानं
४	६	५	५	५	८	९	४	४	१०	घट्यः
पशु नाश	धन नाश	धन लाभ	कुटिला	धन लाभ	दयावः	कामिनी	मातृ नाश	भ्रातृ नाश	वैधव्यं	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्म बालक-बालिका का फल पुरुष अंगों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ आश्लेषा चक्रम्

शिरसि	मुखे	नेत्रे	ग्रीवायां	स्कंधे	हस्ते	हृदये	नाभौ	गुदे	पादे	स्थान
५	७	२	४	४	८	१०	६	७	७	घट्यः
पुत्रादि	पितृ नाश	मातृ नाश	स्त्री लाभ	गुरु भक्त	बली	आत्म हानि	भ्रमः	तपस्वी	धन हानि	फलम्

आश्लेषा नक्षत्र में जन्मे बालक-बालिका का फल वृक्ष के अंगों की घटियों के अनुसार निम्न चक्र से देखना चाहिए:

अथ आश्लेषा पुरुष वृक्ष चक्रम्

फले	पुष्पे	दले	शाखायां	त्वचायां	लतायां	स्कन्धे
१०	५	९	७	१३	१२	४
धनम्	धनम्	राजभयम्	हानिः	मातृ हानिः	पितृ हानिः	अल्पायुः

अभुक्त मूल विचार

ज्येष्ठा नक्षत्र की अन्त की ४ घटी, अन्य किसी मत से १ घटी और मूल नक्षत्र के आदि की ४ घटी, अन्य मत से आधी घटी अभुक्त मूल होता है। इन घटियों में बालक जन्मे तो पिता ८ वर्ष पर्यन्त बालक का मुख न देखे, असमर्थ हो तो ६ मास त्याग करे। शांति हवन, अभिषेक आदि से युक्त अभुक्त मूल शांति, रुद्रार्चन, महामृत्युञ्जयादि विधान कर शुभ मुहूर्त में बालक के मुख का अवलोकन करें। कहते हैं संत तुलसीदास जी का जन्म इसी प्रकार के अभुक्त मूल में हुआ था।

कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी में जन्मे बालक पर भी अरिष्ट दोष होता है उसका निर्णय निम्न तालिका के अनुसार करना चाहिए:

अथ कृष्ण चतुर्दशी विभाग फलम्

१	२	३	४	५	६	विभागः
शुभम्	पितृ नाश	मातृ नाश	मातुल नाश	कुल हानिः	धन हानिः	फलम्

त्रयोदशी की घटियों को ६० में से घटा कर चतुर्दशी की घटियां युक्त कर ६ का भाग दें, जो प्रथम भाग में होगा, उसके द्विगुणित दूसरा ऐसे ही क्रम से जानें। जिस भाग में जन्म हुआ हो उसके अनुसार फल को कहें, अरिष्ट हो तो शान्ति विधान करें।

सिनीवाली कुहू जनन फल

सिनीवाली— अमावस्या की अन्तिम पांच घटियों में जन्म हो तो सिनीवाली जनन समझा जाता है। जन्म के बाद अमावस्या की ५ या उससे कम घटियां रह गई हों। अर्थात् चन्द्रमा की केवल कुछ कलायें ही दृश्य मान हों तब सिनीवाली जनन होता है। इसका निर्णय सूक्ष्म गणित द्वारा चन्द्रमा की गति अनुसार करना चाहिए। यह अंतिम घटियां ४ और ५ के बीच होती हैं। इनमें जन्म होने से घर में बालक-बालिका या पशु, गाय, भैंस, घोड़ी आदि प्रसूत हो तो धन हानि, अपयश आदि का भय होता है।

कुहू जनन फल— अमावस्या की अन्तिम घटी के भी अन्तिम ५-१० पलों में जब चन्द्रमा की कलायें समाप्त या बिल्कुल नष्ट हो जायं तब अन्तिम घटी के भी अन्तिम पलों में जन्म हो तो कुहू जनन होता है। उस समय बालक या पशु जन्म हो तो अति अरिष्ट कारक होता है। इसका शास्त्रोक्त विधि से शान्ति अवश्य करना चाहिए।

अन्य अरिष्ट दोष

व्यतीपात योग में जन्म हो तो अंग हानि, वैधृति योग में जन्म हो तो पिता से वियोग, परिध योग में जन्म हो तो स्वयं को मृत्यु तुल्य कष्ट होता है। मृत्यु योग, दग्ध योग, भद्रा, संक्रांति के दिन, सूर्य चन्द्रग्रहण समय में शूल योग, व्यघात योग, अतिगण्ड योग, वज्र योग, तिथि क्षय, क्रान्ति साम्य (महापात योग), विश्वधस्त्र पक्ष में क्षय मास में जन्मे बालकों को कुयोग में जन्मा समझा जाता है। इनकी आयु तथा आरोग्य के लिए शास्त्रोक्त विधि-विधान से ग्रह शान्ति करा देना चाहिए। जिस प्रकार २७ नक्षत्र होते हैं उसी प्रकार २७ योग होते हैं। व्यतिपात, वैधृति, परिघ, व्याघात, अतिगण्ड, शूल, वज्र इन २७ में से कुछ अशुभ योग हैं। तिथि के अधि भाग को करण कहते हैं। विष्टि करण को भद्रा कहते हैं। तिथि, नक्षत्र, वार आदि के संयोगों से कुछ योग बनते हैं। जिनकी सूचना पंचांगों में दी होती है। मृत्यु योग, दग्ध योग आदि ऐसे ही कुयोग हैं इनकी शान्ति कराना आवश्यक होता है।

स्त्री दासी गौ आदि पशु यमल जन्म फलम्

त्रिविधा यमलोत्पत्तिर्जायते योषितामिह। सुतौ च सुत कन्ये वा कन्या एव तथा पुनः॥
एक लिंगो विनाशाय द्वि लिंगो मध्यमौ स्मृतौ। पित्रोर्विघ्नकरौ ज्ञेयो तत्र शान्तिर्विधीयते॥

तीन प्रकार से जुड़वां सन्तानों की उत्पत्ति होती है। दोनों लड़के हों या दोनों लड़की हों या एक लड़का एक लड़की हो। इस में एक लड़का एक लड़की का होना तो मध्यम, साधारण है। परन्तु एक ही तरह के लिंग वाली सन्तान हों तो उनका फल माता-पिता के लिए अच्छा नहीं बताया गया है। उसकी शान्ति कराना श्रेयस्कर होता है।

जन्म स्थान विचार

बच्चे का जन्म किस प्रकार के स्थान में हुआ है इस के नियम ज्योतिष फलित में बताये गये हैं। जिनमें से मुख्य नियमों की जानकारी दी जा रही है। कर्क, मकर, मीन यह तीन जलचर राशियां हैं। लग्न या चन्द्रमा इन राशियों में है अथवा लग्न पर पूर्ण चन्द्रमा की दृष्टि हो अथवा चन्द्रमा जलचर राशि के प्रथम, चतुर्थ या दशम स्थान में हो तो जन्म जल के ऊपर या जल के पास होता है, जल से तात्पर्य नदी, तालाब, झील, समुद्र, झरना, कुआ, नहर आदि समझना। नौका, जहाज, पुल के ऊपर भी जल का सामीप्य होता है। चन्द्रमा कर्क राशि का हो, बुध लग्न में हो, गुरु चौथा अथवा लग्न में जलचर राशि हो, चन्द्रमा सप्तम हो तो भी जन्म जल पर या समीप में ही हुआ समझना चाहिए। लग्न या चन्द्र में शनि १२वां हो, लग्न या चन्द्र को पाप ग्रह देखते हों तो जन्म कारागार में या एकान्त में जंगल बियावान में समझिये। शनि कर्क या वृश्चिक लग्न में हो और चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि हो तो खाई खन्दक में जन्म होता है। पुरुष राशि की लग्न हो, लग्न में शनि हो, मंगल की दृष्टि हो तो श्मशान या श्मशान के पास जन्म। पुरुष लग्न में शनि को शुक्र व चन्द्रमा देखते हों तो राजमहल या देवालय मन्दिर में जन्म, लग्नगत गुरु पर बुध की दृष्टि हो तो चित्रकारी किये हुए, मूर्तियां बने हुए सुन्दर घर में जन्म होता है। इस प्रकार ग्रहों के बलाबल पर विचार करके फल कथन करना चाहिए।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा विधि)

प्रत्येक मन्त्र को २१ बार पढ़कर बलि को ७ बार शिर पर फिरा कर उचित स्थान पर नाम से रख आवें।

किस समय कौन पूतना ग्रहण करती है	असित लक्षण	पूजन द्रव्य	मूर्तिनिर्माणार्थ द्रव्य	बलि विधान व समय	धूप	स्नान पूजा मार्जन मन्त्र
प्रथम दिन मास वर्ष में योगिनी	ज्वर, स्वेद मन्दस्वर, कम्पन, अरुचि, अंगशोथ।	श्वेत चंदन, तिलक, श्वेतपुष्प, ५ रंग की झंडी ५, ५ दीपक, ५ आटे के सतिये, कपूर, लोहबान।	नदी के दोनों किनारों की मृत्तिका	श्वेत भात, ५ पूर्ण पोली (सुहाली) १ पहर दिन चढ़े पूर्व दिशा में चौरास्ते पर रखना।	राई, खस, कमल के फूल, बिल्ली और	ॐ ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च स्कन्दो वै वरुणस्तथा। रक्षन्तु त्वरितं बालं मुञ्च कुमारकम्॥
द्वितीय दिन मास वर्ष में मुनन्दना	ज्वर, हाथ-पैर जकड़ना, संकोच, दांत चबाना, नेत्र खुले, नेत्र रोग भय, कृषता।	१० दीपक, १० झंडी, पुष्प, चावलों के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	भात, एक सेर आटे के पूड़े, मत्स्य व बकरे का मांस संध्या समय प. दिशा में चोरास्ते पर रखना।	मनुष्य के बाल निम्बपत्र, गोघृत।	ॐ नमश्चामुण्डायै विच्चै हांहां हीं हीं हुंहुं दुष्टाग्रहा गच्छन्त्वतः स्थानादुरुद्राज्ञया स्वाहा।
तृतीय दिन मास वर्ष में पूतना	हड़फूटन, खांसी, शिर झुकाना, श्वास, नेत्रमोलन, श्यामता, अरुचि, रुदन, नेत्रपीड़ा	रक्तचंदन, रक्तपुष्प, श्वेत ध्वजा, दीपक १०, गेहूं के आटे के सतिये १०।	एक सेर चावलों का आटा	एक सेर लाल भात, आध सेर पूर्ण पोली (सुहाली) पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	लहसुन, गोशृंग सांप की कांचली	सुनन्दना विधानोक्त
चतुर्थ दिन मास वर्ष में मुखमंडिका	गात्र भंग, शिर झुकाना, खांसी, श्वास, नेत्रमोलन, अरुचि, अनिद्रा, श्यामता।	श्वेतपुष्प, श्वेतध्वजा ५, दीपक, मिल सकें तो अर्जुन वृक्ष के पुष्प।	तिल चुर्ण एक सेर	भात, १ सेर आटे के पूड़े, आधा सेर पूर्णपोली सायंकाल पश्चिम दिशा में वृक्ष के नीचे रखना।	नीम के पत्ते पुरुष और बिल्ली के बाल	सुनन्दना विधानोक्त
पंचम दिन मास वर्ष में विडालिका	पेट में दर्द, हिचकी, श्वास, अरुचि, ज्वर, शरीर में गर्मी तेज।	श्वेतचंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेतध्वजा ५, गेहूं के आटे के सतिये।	एक सेर चावलों का आटा	श्वेत भात, ७ पूड़ियां, सायंकाल प. दिशा में वृक्ष के नीचे रखना	गोघृत।	ॐ भगवती ह्रीं ह्रीं हूं हूं मुंच रक्षां कुरु कुरु बलिं गृहण-२ अस्त्र ठः ठः चामुण्डे चण्डिके ठः ठः स्वाहा
षष्ठ दिन मास वर्ष में घट्कारिका	ज्वर, हड़फूटन, हंसना, कभी-२ रोना, मोह मूर्च्छा।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५ श्वेत ध्वजा ५।	नदी के दोनों किनारों की मिट्टी	भात, ५ मिठाई, ५ सुहाली, ७ पूड़ियां १ प्रहर दिन चढ़े पूर्व में चौरास्ते पर रखना	कूठ, गुगल,	योगिनी विधानोक्त
सप्तम दिन मास वर्ष में कालिका	खांसी, श्वास, वमन, अरुचि, शरीर कम्पन।	श्वेत चंदन, श्वेत पुष्प, दीपक ५, श्वेत ध्वजा ५।	चावलों का आटा एक सेर	भात, ७ पूड़ियां सायंकाल पश्चिम में चौरास्ते पर मौन होकर रखना	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
अष्टम दिन मास वर्ष में कामिनी	ज्वर, मुखशोष, अरुचि, सन्ताप	रक्तचंदन, ५ रंग की झंडी ५, दीपक ५।	जल के दोनों किनारों की मिट्टी	गेहूं की रोटी, मसूर की दाल, हरा साग, छाग मांस, संध्या में चौरास्ते पर रखना।	राई, हाथी दांत, घृत।	विडालिका विधानोक्त
नवम दिन मास वर्ष में मदना	ज्वर, खांसी, श्वास, शूल, आफरा, घृणा।	चन्दन, पुष्प, ५ दीपक, सफेद रंग की झण्डी ५।	एक सेर गेहूं का आटा।	भात, मत्स्य मांस, पापड़ी, सुहाली, उत्तर में प्रातः चौरास्ते पर रखना।	गोशृंग, लहसुन	ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कृष्णाय मंडलबलिमादाय हनहन हुं फट् स्वाहा
दशम दिन मास वर्ष में रेवती	ज्वर, हड़फूटन, शूल, अरुचि, वमन, खांसी, श्वास	रक्त पुष्प, २५ झण्डी, २५ दीपक, २५ सतिये।	एक सेर गेहूं का आटा	गुड़ के घी भुने चावल, गोघृत, सायंकाल दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	सांप की कांचली निम्ब	ॐ नमो भगवते वैश्वेदेवाय हन हुं फट् स्वाहा।
एकादश दिन मास वर्ष में सुदर्शना	ज्वर हड़फूटन, मुखशोष, अरुचि, रोदन, कृशता।	श्वेत पुष्प, २५ दीपक, २५ सफेद, झण्डी, २५ आटे के सतिये।	काले उड़दों का आटा एक सेर	श्वेत भात, ७ पूड़े, सुहाली ७, सांय व प्रातः दक्षिण में चौरास्ते पर रखना।	पत्र, मनुष्य और बिल्ली के बाल, राई	ॐनमो भगवते रावणाय, चन्द्रहास वज्र हस्ताय ज्वल, २ दुष्ट ग्रहादीन् ॐह्रीं फट् स्वाहा
द्वादश दिन मास वर्ष में अद्भुता	ज्वर, दांत चबाना, रोमांच, बहुरोदन, नेत्र पीड़ा, संताप।	१३ दीपक, १३ झण्डी, [illegible]	चावलों का [illegible]	सुहाली, पूड़े ७, पूड़ियाँ ७, मत्स्य [illegible] में	गोघृत।	ॐ नमो नारायणाय ज्वलद्धस्ताय हन हन शोषय २ मर्दय २ तापय २ हूं [illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं.	होम द्रव्य	वलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
अश्विनी (दस्रौ)	वातज्वर, गात्रपीड़ा, निद्रा भय, बुद्धिभ्रम	९	१, २, ३,४ ९,१०, ११, २०	ॐ अश्विनातेजसाचक्षु: प्राणंनसरस्वतीवीर्यम्। वाचेन्द्रो बलेनेन्द्राय दधुरिन्द्रियम्॥ ॐ अश्विनीकुमाराभ्यां नम:॥	५ सहस्र	खण्ड यव घृत	गुडौदन तिल	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत-दीप, क्षीर, मोदक, गुड़, नैवेद्य।	सुवर्ण घृत कुम्भ
भरणी (यम:)	छर्द रोग, तीव्र ज्वर अनेक रोग, आलस्य	११	०,८०,४०,११	ॐ यमायत्वाङ्गिरस्यते पितृमते स्वाहा स्वाहा धर्माय स्वाहा धर्म: पित्रे॥ ॐ यमाय नम:॥	१० सहस्र	घृत मधु तिलाक्षत	कृषरान्न (खिचड़ी)	अगस्त मूलम्	अगर गंध, करवीर पुष्प, घृत दीप, घृत, गुग्गुल, धूप, गुडोदन नैवेद्य।	गो, महिषी घृत शर्करा, छायापात्र
कृत्तिका (अग्नि:)	नेत्र पीड़ा, अनिद्रा, अतिदाह, उरूशूल	९	९,११,१६,२८	ॐ अग्निमूर्धादिव: ककुत्पति: पृथिव्या अयम्। अपा रेता सिंजिन्वति॥ ॐ अग्नये नम:॥	१० सहस्र	तिलयव घृत	पायस घृत मोदक	कापसि मूलम्	श्वेतचन्दन गंध, जुहीपुष्प, घृतदीप, घृत, गुग्गुल, धूप, तिलमाषान्न, वडाधीका, नैवेद्य।	स्वर्ण, गोदान
रोहिणी (ब्रह्मा)	शिर पीड़ा, ज्वर, कुक्षिशूल, प्रलाप	७	७,९,१८,३०	ॐब्रह्मजज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताद्विसीमत: सुरूचोवेनआव: सुबेध्न्या उपमाअस्यविष्ठा: सतश्चयोनिमसतश्चविधव:॥ ॐ ब्रह्मणेनम:॥	५ सहस्र	तिलाज्य घृत यव	मध्वाज्यक्षो साख्यन्नक्षी	अपामार्ग मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	सप्तधान्य, कृष्ण गौ दान, ५ कया भोजन
मृगशीर्ष (चन्द्र:)	त्रिदोष, महाकष्ट, अर्द्धगात्र पीड़ा	३	९,५,७,१०	ॐ इमन्देवा असपत्न सुवध्वं महतेक्षे त्राय महते ज्येष्ठयाय महते जानराज्यायेन्द्रस्येन्द्रियाय इममुष्यपुत्रममुष्यै पुत्रमस्यैविश एषवोऽमीराजासोमोस्माक ब्राह्मणाना राजा॥ ॐ चन्द्रमसे नम:॥	१० सहस्र	दधि पायस	दधिशर्करा शाल्यन्न	जयन्ती मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, कमल पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायस, अपूपमध्वोदन नैवेद्य।	दधि, तन्दुल सवत्सा गोदान
आर्द्रा (शिव)	त्रिदोष, ज्वर, सर्वांग पीड़ा, अनिद्रा	मृ.तु.	०,१८,०,०	ॐ नमस्ते रुद्रमन्यव उतो त इषवे नम: बाहुभ्यामुतते नम: ॥ ॐ रुद्राय नम:॥	१० सहस्र	घृत मधु	दध्योदन मध्वाज्य	सचंदना अश्वत्थमूलम्	श्वेत चन्दन गंध, सौरभ पुष्प, दशाङ्ग धूप, घृत दीप, पायसौदन नैवेद्य।	श्याम वृषभ दान श्याम वस्त्र
पुनर्वसु (अदिति)	ज्वर, शिर पीड़ा, कटि पीड़ा	७	७,१४,२,२१	ॐअदितिद्योरदितिरन्तरिक्षमदिति माता स पिता स पुत्र: विश्वे देवा अदिति: पञ्चजनाअदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥ ॐअदिताय: नम:॥	१० सहस्र	घृत तन्दुल	साज्य पीत तन्दुल	अर्क मूलम्	हरिद्राकुंकुम गंध, सेवन्तिका पुष्प, अष्ट गंध धूप, घृत दीप, घृताक्तपीतवर्णान्न नैवेद्य।	वस्त्र, स्वर्ण, कमल ५ कन्या भोजन
पुष्य (गुरु)	ज्वर, शूल, महाकष्ट	७	७,७,१०,२१	ॐबृहस्पते अतियदर्यो अर्हाद्द्युमद्विभातिक्रतु मज्जनेषु। यदोदयच्छ्वत्र सत्रऋतप्रजाततदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥ ॐबृहस्पतये नम:॥	१० सहस्र	घृत पायस	समण्डक मोदक	तुषार मूलम्	कुंकुम गंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, पायस, शर्करा, नैवेद्य।	सूवर्ण गौ, पीत वस्त्र
आश्लेषा (सर्प:)	सर्वांग पीड़ा, पाद पीड़ा, मृत्युसम कष्ट	मृ.तु.	०,०,४१,०	ॐनमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु ये अन्तरिक्षे ये दिवितेभ्य: सर्पेभ्योनम:॥ ॐसर्पेभ्यो नम:॥	१० सहस्र	शर्करा घृत	हवि दध्योदन	पटोल मूलम्	कुंकुम, अगर गंध, अगस्त पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत मिष्ठान्न, नैवेद्य।	सवत्सा श्याम गौ, छायापात्र
मघा (पितर:)	शिर पीड़ा, अर्द्धमात्र पीड़ा	२०	१५,७,१७,२०	ॐ पितृभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधानम: पितामहेभ्य: स्वधायिभ्य: स्वधा नम:। प्रपितामहेभ्यस्वधायिभ्य: स्वधा नम: अक्षन्नपित्रोमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्तपितर: पितर: शुन्धध्वम्॥ ॐ पितरायै नम:॥	१० सहस्र	तिल घृत तन्दुल	सतिलाज्य दुग्धान	भंगराज मूलम्	श्वेत चन्दन गंध, चम्पक पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत, क्षीर, नैवेद्य।	वस्त्र, तिल, उड़द
पू.फा. (भग:)	गात्र व्यथा, ज्वर, शिर पीड़ा	मृ.तु.	०,१५,०,३०	ॐभगप्रणेतर्भगसत्यराधोभगेमांधियमुदवाददन्न: भगये प्रणोजनयगोभिरश्वैर्भयप्रनृभिनृवैन: स्याम॥ ॐभगाय नम:॥	१० सहस्र	कङ्गनी तिलघृत	घृतौदन पायस	कटकारी मूलम	श्वेत चन्दन गंध, मालती पुष्प, घृत विल्व, धूप, घृत दीप, अपुपोदन मोदक, नैवेद्य।	पित्तल, यव उड़द स्वर्ण गौ दान
उ.फा. (अर्यमा)	कुक्षिशूल, ज्वर, शिर पीड़ा, अतिकष्ट	७	७,१४,७,६०	ॐदेवावध्वर्यूआगतरथेनसूर्यत्वचा मध्वाय समंजाये तं प्रत्नकथा यं वेनश्चित्रं देवानाम्॥ ॐ अर्यम्णे नम:॥	१० सहस्र	तिल घृत	घृत शर्करा शाल्यन्न	पटोल मूलम्	कर्पूर, केसर, गंध, अर्क पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृत दीप, घृत पायस, नैवेद्य।	सुवस्त्र, सुवर्ण, रजत, अन्न, गौदान
हस्त (सविता)	उरुशूल, आफरा, सर्वांग पीड़ा, प्रस्वेद	१५	१५,१७,१५,०	ॐ विभ्राड्बृहत्पिबतु सौम्य मध्वायुर्दधयज्ञपता व विहुतमम् वातजूतो योअभिरक्षतित्मनाप्रजा: पुपोषपुरुधा विराजति॥ ॐसवित्रे नम:॥	५ सहस्र	दधि घृत	मिष्ठान्न पायस	जाति मूलम्	रक्त चन्दन, केसर गन्ध, कमल पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृत, पायस, नैवेद्य।	स्वर्ण, पयस्विनी गौ दान
चित्रा (विश्व)	विचित्र रोग अतिकष्ट	११	११,९,९,१६	ॐ त्वष्टातुरीयोअद्भुतइन्द्राग्नी पुष्टिवर्द्धनम्। द्विपदा-छन्दऽइन्द्रियमुक्षागौर्नवयोदध:॥ ॐ विश्वकर्मणे नम:॥	१० सहस्र	तिलाज्य घृत तन्दुल	विचित्रान्न घृत	मखव मूलम्	केसर गंध, विचित्रवर्ण पुष्प, घृत, गुग्गुल, धूप, घृतदीप, विचित्रान्न मोदक, नैवेद्य।	तिल, गुड़, विचित्र वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नक्षत्र कष्टावली

नक्षत्र देवता	कष्ट लक्षण	कष्ट दिन	चरणगत कष्ट दिन	जपनीय वेदोक्त मंत्र	जप सं	होम द्रव्य	बलि द्रव्य	करे धारणम्	गन्धादि पदार्थ	दान वस्तु
स्वाती (वायु:)	नाना कष्ट, ज्वर पीड़ा	मृ.तु.	६०,१७,३०,०	ॐ वायो ये ते सहस्त्रिणी रथा सस्ते त्रिरागहि नियुत्वाम सोम पीतये॥ ॐ वायये नमः॥	१० सहस्त्र	तिल,यव घृत	घृत पायस	जाति मूलम्	चन्दन गन्ध (दमनक पुष्प) अगर, गुग्गुल धूप, घृतदीपक, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्ण, रक्तवेणु पकवान्न
विशाखा: (इन्द्राग्नि)	सर्वाङ्गपीड़ा, कुक्षिशूल	१५	१५,०,४,१३	ॐ इन्द्राग्नी आगंत सुतं गीर्भिर्नभो वरेण्यंम्। अस्यं पातं धियेषिता॥ ॐ इन्द्राग्निभ्यां नमः॥	१० सहस्त्र	आज्य पायस	सहवि चित्रान्न	गुञ्जा मूलम्	चन्दन, केसरगन्ध, कमल पुष्प, देवदारु, घृतधूप, घृत दीप, ध्रपायस नैवेद्य।	रक्तपीतवस्त्र कृष्ण-वृषभछायापात्रदान
अनुराधा (मित्र:)	शिरपीड़ा, तीव्र ज्वर		६०,१२,३६,३०	ॐ नमो मित्रस्य वरुणस्य चक्षसे महोदेवायतदृत सपर्यत दूर दृशे देव जाताय केतवे दिवसपुत्राय सूर्यायशथ्ठसत्॥ ॐ मित्रायनमः॥	१० सहस्त्र	यव-घृत	मध्वाज्य गुड उड़द	सुपुष्प मूलम्	केसरगन्ध, कमल पुष्प, चन्दन धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
ज्येष्ठा (इन्द्र:)	पित्तरोग, कम्पन, व्याकुलता	मृ.तु.	१९,९,६,४	ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र छ हवे हवे सुहवथ्ठशूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहुतमिन्द्रथ्ठस्वस्तिनो मघवा धात्विन्द्रः॥ ॐ इन्द्राय नमः॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	दध्योदन सुपुष्प	अपामार्ग मूलम	श्वेतचन्दनगंध, चम्पकादि पुष्प, कपूर धूप, घृतदीप, चित्रान्न नैवेद्य।	स्वर्ण तिल, नील वस्त्रदान
मूल (राक्षस:)	मुख तथा उदर रोग, सन्निपात	७	०,९,१५,६	ॐ मातेव पुत्र पृथ्वी पुरीष्यमणि स्वेयोनाव भारुषा। तां विश्वेदेवर्ऋतुभि: संवदान: प्रजापतिर्विश्वकर्मा विमुञ्चतु॥ ॐ निर्ऋतये नमः॥	५ सहस्त्र	कन्दमूल घृत	सहवि उड़द	मन्दार मूलम्	कृष्ण अगरुगन्ध, नीलोत्पलपुष्प, घृतदीप कृष्णगरु धूप, माषामिश्रान्न नैवेद्य।	गौ, छायापात्र, वस्त्र, कुमारी पूजा
पू.षा. (जलम्)	शिरपीड़ा, कंपन, महाकष्ट	मृ.तु.	०,१५,२४,१०	ॐ अपाधमप किल्विषमपकृत्यामपोरप:। अपाम्मार्ग-त्वमस्मदंनदु:स्वप्न्यथ्ठसुव॥ ॐ अदभ्यो नमः॥	५ सहस्त्र	तिल, घृत तण्डुल	घृतपायस मिष्ठानहवि	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृतगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपापायसान्न नैवेद्य।	स्वर्ण वस्त्र, तिल, तण्डुल, जलकुम्भ गौदान
उ.षा. (विश्वे-देवा)	कटिपीड़ा, उरुशूल, प्रलाप	३०	३०,२४,२१,१६	ॐविश्वेदेवा: शृणुतेमथ्ठहव मे ये अन्तरिक्षे य उपध्यविष्ठम्। अग्निजिह्वा उतवायजत्रा आसद्यास्मिन्वर्हिपि मादयध्वम्॥ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्योनमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	सहवि पायस	कर्पास मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, कमल पुष्प, घृत, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायसान्न नैवेद्य।	आमान्न, स्वर्णदान
श्रवण (विष्णु:)	सर्वांगपीड़ा, त्रिदोषभय, अतिसार	११	६०,२४,६,९	ॐ विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नेप्त्रेस्थो विष्णो: स्थूरत्सि विष्णोर्ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवेत्वा॥ ॐ विष्णेव नमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिलाज्य सहविपायस	अपामार्ग मूलम्	श्वेतचन्दनगंध, मालती पुष्प, कर्पूर, गुग्गुलधूप, घृतदीप, षड्रश शाल्यन्न नैवेद्य।	स्वर्ण गौ, छायापात्रदान
धनिष्ठा (वसव:)	ज्वर-कम्पन, रक्तातिसार, मूत्रकृच्छ	१५	१५,२,२७,२१	ॐ वसो: पवित्रमसि शतधारं वसो: पवित्रमसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसो: पवित्रेण शतधारेण सुप्त्वा कामक्षुध:॥ ॐ वसुभ्यो नमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य पायस	पायस मोदक पूप-तिलपिष्ठ	भृङ्गराज मूलम्	श्वेतचंदन गन्ध, कमलपुष्प, गुग्गुल धूप, घृत दीपक, घृतपायस नैवेद्य।	छत्रोपानत् अश्व, स्वर्ण, गौ
शतभिषा (वरुण:)	वात-ज्वर, सन्निपात, कष्ट	११	०,४५,३,३६	ॐवरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्यस्कम्भसर्जनिस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसी वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन मासीद॥ ॐवरुणाय नमः॥	१० सहस्त्र	आज्य दध्योदन	घृत चित्रान्न	कमल मूलम्	केसर अगर गंध, कमलपुष्प, कर्पूर-चंदन धूप, घृतदीपक, घृतपोलिका नैवेद्य।	स्वर्ण, तिलान्न, घट, अश्व, छायापात्र
पू.भा. (अजैकपाद)	वमन, व्याकुलता, शरीरपीड़ा, त्रिदोष	मृ.तु.	०,१२,५१,१७	ॐउतनोऽहिर्बुध्न्य श्रृणोत्वजं एकपात्पृथिवी समुद्र:। विश्वेदेवाऽऋता-वृधोहुवानास्तुता मंत्रा: कविशस्ता अवन्तु॥ ॐ अजैकपदे नमः॥	१० सहस्त्र	क्षीराज्य शर्करा	दध्योदन पायस	भृंङ्गराज मूलम्	केसर चन्दन गंध, श्वेताऽर्क पुष्प, शतौषधि, मिश्रित धूप, घृतदीपक, दधिपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, अन्न, श्वेतवस्त्र, छायापात्रदान
उ.भा. (अहिर्बुध्न्य)	कामला, अतिसार, शूल, वात-ज्वर	७	१०,२०,७,१५	ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामालि थ्ठ सी निननवर्तयाम्यायुऽषेन्नाद्या प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय॥ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः॥	१० सहस्त्र	तिलाज्य यव	तिल घृत भुदग् माष	अश्वत्थ मूलम्	चन्दन-कर्पूरगंध, कमलपुष्प, बिल्वगुग्गुल धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	स्वर्णरजत, तिल कृष्ण वस्त्रदान
रेवती (पू.षा.)	वात, पित्तमय-ज्वर, उरुशूल, चित्तभ्रम		१८,१०,९,२०	ॐ पूषन् तवव्रते वयं नरिष्येम कदाचन स्तोतारस्त इह स्मसि॥ ॐ पू[illegible]	५	तिलाज्य	सहवि	अश्वत्थ	रक्तचंदनगंध, मंदार पुष्प, घृत गुग्गुल, धूप, घृतदीप, घृतपायस नैवेद्य।	रक्तवस्त्र, पैत्तलपात्र वृषभ, छायापात्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

बाल कष्टावली-चक्र में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ

बालक को जब अरिष्ट होता है तो उसके निवारण के लिए जो पूजा की जाती है, वह बाल कष्टावली चक्रम् (पूजा-विधि) में दी हुई है। बालक को कष्ट हो तो ज्ञात करो कि उसकी आयु का कौन-सा दिन, मास या वर्ष है। बारह दिन, मास, वर्ष तक कौन-सी पूतना का कब-कब प्रभाव रहता है, उनका नाम दिया गया है। रोग, पीड़ा के लक्षणों में ज्वर (बुखार को), स्वेद (पसीना आने को), मन्द स्वर (मन्दी, धीमी आवाज), कण्ठ स्वर को कम्पन से कपकपी (शरीर में रोंये खड़े हो जाना), अरुचि (भोजन में दूध पीने की इच्छा न होना, उसको अरुचि हो जावे तो कहते हैं)। अंगशोध (शरीर में सूजन, संकोच शरीर का सिकुड़ना), कृशता (शरीर का कमजोर होना), खून की कमी (हड्डियां दिखाई देना), सूखा शरीर, हड्फूटन (हड्डियों में दर्द से अकड़न को), नेत्रमीलन (आंखे मसलना, मीड़ना), बच्चा हाथ से आँखे मसलता है (आंख में खुजली होती है)। श्यामता (शरीर का रंग काला पड़ जाना), रुदन (रोना), नेत्र पीड़ा (आंखों के रोग को समझना चाहिए)। गात्र भंग (शरीर में दर्द होना, शरीर का ढीला पड़ जाना), अनिन्द्रा (नींद न आना, हड्फूटन), हसली (गले की हड्डी उतर जाना), मोह मूर्च्छा (नींद जैसी बिहोशी), वमन (उल्टी होना), मुखशोथ, (मुंह की सूजन), सन्ताप (मानसिक कष्ट), शोक (वियोग कष्ट), श्वांश जल्दी-जल्दी चलना, (शूल दर्द पीड़ा), आफरा (पेट फूल जाना), घृणा, घिन हो जाना (हर चीज से अरुचि), रोमाञ्च (रोंगटे खड़े हो जाना) और बहुरोदन (बच्चा ज्यादा रोता है) उसको कहते हैं। बीमारी के लक्षणों से भी पूतना की पहचान की जाती है।

पूतना की मूर्ति बनाने के लिए जो चीजें लिखी हैं, उनसे एक स्त्री मूर्ति बना ली जाती है और उसमें जिसकी पूजा करनी हो उसके मन्त्रों से उसी योगिनी आदि की स्थापना कर ली जाती है। नदी के किनारों की मिट्टी या किसी तालाब, जलाशय, कुये, बावड़ी के दोनों किनारों की मिट्टी, पिसे तिल, चावल काले उड़द का आटा जैसा जहां लिखा है, उसमें पानी मिलाकर या तेल मिलाकर पूतना की मूर्ति बनाई जाती है।

पूजा के पदार्थों में श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन) को घिसकर तिलक बनाते हैं। श्वेत पुष्प (सफेद फूलों को), पंचरंगी झंडियों में कोई से भी पांचरंग के कागज या कपड़े लेकर झंडी बनाई जाती है और मूर्ति के चारों तरफ दीपक, सतिये के साथ लगाते हैं। सतिये आटे से स्वास्तिक की शकल बनाते हैं, उस पर आटे के दीपक बनाकर रुई की बत्ती व घी, तेल डालकर जलाकर रखते हैं। कपूर, लोबान जैसा बताया हो जलाते हैं। जहाँ रक्त चन्दन लिखा है वहां लाल चन्दन लो, रक्त पुष्प (लाल रंग के फूल), श्वेत ध्वजा (सफेद झंडा-झंडी), जहां कोई रंग नहीं लिखा हो वहां सफेद रंग की होती है। सतिये चावल या गेहूं के आटे के बनाने चाहिये।

बलि विधान में भात चावल का होता है। पूर्ण पोली(गेहूं के आटे में गुड़ मिलाकर बड़े पूये बनाते हैं उसको कहते हैं), मत्स्य (मछली का मांस होता है) लाल भात (चावल के भात में लाल चन्दन का चूरा मिलाने से बनता है।) मीठी पूड़ियों को सुहाली कहते हैं। छागमांस (बकरे-बकरी के मांस को), पापड़ी (छोटे पापड़ जैसी तेल में तली आटे की पापड़ियां होती हैं)। जिस समय, जिस दिशा में, जिस स्थान पर रखने को बताया गया है— समस्त बलि पदार्थ बिना टोका-टाकी के रख आना चाहिए, वापिसी में पीछे मुड़कर नहीं देखना चाहिये। पूजा समय धूप दी जाती है, वह जिस विधान में जिन वस्तुओं से बनाने को लिखा है उन्हीं से बनाना चाहिये।

राई, खस की जड़, कमल के फूल सुखाकर या बीज का कमल गट्टे, बिल्ली के बाल (किसी पालतु बिल्ली के मिल सकते हों), मनुष्य के बाल, निम्बपत्र (नींबू के पेड़ के पत्ते) पीसकर गोघृत (गाय के घी) में मिलाकर धूप बना लो। गोश्रृंग (गाय का सींग), कूट (एक दवा होती है), अत्तर दवा बेचने वालों के यहां मिल जाती है, गुग्गल को गूगल भी कहते हैं। स्नान, पूजा मार्जन मन्त्र प्रत्येक पूतना का दिया हुआ है। इसी मंत्र से मूर्ति का आवाहन (स्नान पूजा व मार्जन) अर्थात् मंत्र पढ़कर चारों ओर जल छिड़कना चाहिए। बलि पदार्थ को हाथ में लेकर २१ बार मंत्र पढ़कर बालक के शरीर के ऊपर सिर से पैर तक सात बार फिराते हैं, उसे ओसारा कहते हैं। फिर उसे जैसा बताया है यथा स्थान रख देना चाहिए। बालक के माता-पिता, सम्बन्धी कोई भी इस काम को कर सकता है।

नक्षत्र कष्टावली विवेचन

नक्षत्र कष्टावली में कठिन संस्कृत शब्दों के सरल अर्थ और विशेष विवरण दिया जा रहा है। बालक का जन्म जिस नक्षत्र के जिस चरण में हो, उसके सामने यदि कष्ट दिन लिखे हों तो निवारणार्थ पूजा विधान कराना चाहिए। मान लो यदि अश्विनी नक्षत्र के चतुर्थ चरण में जन्म हुआ हो तो इसमें २० दिन तक के बालक को कष्ट हो सकता है। किस प्रकार का कष्ट हो सकता है, उसके लक्षण दिये हैं— वात, ज्वर, गात्र पीड़ा, निंद्राभय, बुद्धिभ्रम, वात, ज्वर में बुखार के साथ शरीर में दर्द भी होता है। गात्र पीड़ा से तात्पर्य शरीर में पीड़ा, दर्द, शूल आदि से है। निंद्राभय (सोते में डर जाना), बुद्धिभ्रम (बच्चा अपनी स्वाभाविक बुद्धि खो देता है), आँखे फाड़-फाड़ कर देखना, इस प्रकार के लक्षण प्रगट होते हैं। लक्षणों में प्रयुक्त अन्य शब्द जैसे— तीव्र ज्वर, तेज बुखार, अति दाह, तीव्र जलन, उरुशूल (पेट दर्द), कुक्षि शूल (पेट के नीचे भाग में दर्द), प्रलाप भी एक प्रकार का बुद्धि भ्रंश है। त्रिदोष (सन्निपात), अर्धगात्र पीड़ा (शरीर के एक ओर के आधे भाग में पीड़ा), छोटे बच्चे में इन लक्षणों व कारणों का जानना अनुभव से ही होता है। सर्वांग पीड़ा (सारे अंग में पीड़ा), कटि पीड़ा (कमर में दर्द), पाद पीड़ा (पैरों में दर्द), आफरा (पेट फूलना), प्रस्वेद (बहुत पसीना आना), अतिसार (दस्त लगना), पेचिस रक्त अतिसार (खूनी पेचिश), मूत्र कृच्छ (पेशाब का रोग) होता है। रोग का निदान व औषधि तो डाक्टर वैद्य से ही कराना चाहिए परन्तु उसका निवारण पूजा विधि से करा देना चाहिए।

गन्धादि पदार्थों में— श्वेत चन्दन (सफेद चन्दन), कमल पुष्प (कमल के फूल), गुग्गल (गूगल की धूप), क्षीर (खीर), मोदक (लड्डू), गुड़ नैवेद्य (मिष्ठान्न), अगर गन्ध (अगर एक खुशबूदार जड़ी होती है), करवीर पुष्प (करवीर का फूल), गुड़ोचन (दही में गुड़ मिलाकर बनाया जाता है)। जुही पुष्प (जुही का फूल), तिल माषान्न (तिल व उड़द को मिलाकर बनाया गया बड़ा), दशाङ्ग धूप में दस सुगन्ध पदार्थ पड़ते हैं। अगर, तगर, कपूर, केसर, गोरोचन, कस्तूरी, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, बाल छड़, घी। पायस (दूध, चावल की खीर), अपूप (आटे के मीठे पुये), मध्वोदन (शहद, दही मिलाकर बनता है), नैवेद्य (भोग प्रसाद को कहते है।) सौरभ पुष्प (खुशबूदार फूल), पायसोदान (दूध, दही, मधु या गुड़ मिलाकर बनता है, हरिद्रा (हल्दी), कुंकुम, (रोली), सेवन्तिका पुष्प (सेवन्तिका का फूल), अष्टगन्ध धूप (अष्टगन्ध की धूप), घृताक्त पीतवर्ण नैवेद्य (पीले रंग का घी में तला भोग, बेसन का बना घी में सिका, तला लड्डू या अन्य पदार्थ), घृत पायस शर्करा (घी, शक्कर, दूध का नेवैद्य), घृत बिल्व धूप (बेलपत्र के फल से बनी धूप), घृत (घी), मिष्ठान्न (मिठाई), घी से तात्पर्य — गाय, भैंस का घी घृत मिष्ठान्न (घी की मिठाई),

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

होता है। अपूपोदन मोदक (अपूप-मीठे पूये, ओदन-[illegible] मिला रस, मोदक-लड्डू तीनों मिलाकर अपूपोदन मोदक), अर्क पुष्प (अकौआ का फूल, सफेद फूल थोड़ा, बैंगनी या नीला रंग का होता है, इसमें बौंडे होते हैं, जिसमें से रुई के रेशे के समान पदार्थ हवा में उड़ता रहता है। शिवजी का प्रिय फूल आक का होता है)। विचित्र वर्ण पुष्प (रंग बिरंगे कई रंग के या अलग-अलग रंग के फूल), विचित्रान्न मोदक (अनेक प्रकार के चित्र विचित्र अन्न से बने हुए लड्डू जैसे—कूटू, सिंघाड़ा आदि के आटे के या मूंग के लड्डू), अगरु (अगर), दमनक पुष्प (दमनक का फूल), फूलों की जातियों नामों की जानकारी माली या नरसरी से प्राप्त की जा सकती है। यह सफेद रंग का, बसन्ती रंग का पुष्प होता है। देवदारु (खुशबूदार लकड़ी देवदार का बुरादा बढ़ई या फर्नीचर वालों से मिल सकती है), चम्पकादि पुष्प (चम्पक वगैरा के फूल), चित्रान्न नेवैद्य (कई प्रकार के अन्नों के आटे आदि से बना भोग प्रसाद नेवैद्य), कृष्ण, अगर गन्ध (काली अगर की खुशबू या घिसकर बना तिलक), नीलोत्पल पुष्प (नीली पंखड़ी वाले फूल), माष मिश्रान्न नेवैद्य (देवताओं के प्रसाद भोग लगाने को बनाये पदार्थ को नेवैद्य कहते हैं) उड़द के साथ और भी पिसा हुआ अन्न मिलाकर बनाया गया नेवैद्य। षड्रस शाल्यान्न नैवेद्य, षडरस (षटरस, छः प्रकार के रस स्वाद वाला शाल्य यानी चावलों से बना षटरस व्यञ्जन का खट्टा, मीठा, चिरपिरा, कसैला, नमकीन, कड़ुवा सब प्रकार के स्वादों ये युक्त षटरस होता है), श्वेतार्क (सफेद आक), शतोषधि (मिश्रित धूप १०० वनस्पतियों को मिलाकर बनी धूप)। मदार पुष्प भी आक, अकौआ के फूल को कहते हैं।

दान पदार्थ—घृत कुम्भ (घी भरा घड़ा), गोमहिषी घृत (गाय भैंस का घी), शर्करा (शक्कर), छायापात्र (तेलयुक्त बर्तन जिसमें अपने मुख की छाया देखी जा सके), सप्तधान्य (सात प्रकार के अन्न), तन्दुल (चावल), सवत्सा गोदान (बछड़े सहित गौ का दान), श्याम वृषभ दान (काले बैल का दान), माष (उड़द), यव (जौ), सुवस्त्र (उत्तम वस्त्र), पयस्विनी गौदान (दूध देने वाली गाय का दान), विचित्र वृषभ (चितकबरे, रंग का बैल), रक्तधेनु (लाल गाय), पकवान्न, जलकुम्भ (जल से भरा घड़ा), छत्रोपानत् (छतरी), पैतल पात्र (पीतल का बर्तन) होता है।

बलिद्रव्य (बलिदान के लिये पदार्थ), गुड़ोदन (गुड़ का ओदन दही में गुड़ या शक्कर और पानी मिलाकर बनता है), शाल्यन्न क्षीर (चावल की खीर), पीत तन्दुल (पीले चावल), [illegible] (तिल का पिट्ठा), मुद्ग (मूंग), माष (उड़द), विचित्रान्न (अनेक प्रकार के अन्न)।

होमद्रव्य (हवन करने के लिये पदार्थ), खण्ड यव (टूटे जौ), मधु (शहद), कंगनी (एक अन्न है जो चिड़ियों को चुगाया जाता है), कन्दमूल (ऐसे फल जो जड़ों से पैदा होते हैं। जैसे—जिमीकन्द, शकरकन्द, गाजर, मूली आदि)। पायस (खीर), तन्दुल (चावल), यव (जौ)।

करेधारणम् (हवन करते साथ हाथ में पहनने के लिए पदार्थ), अपामार्ग मूलम् (ओगा का तना), (अलझीझाड़ का तना), अगस्त एक वृक्ष होता है, कापसि कपास को कहते हैं। अश्वत्थ (पीपल की जड़), अर्क मूलम् (आक का तना), जयन्ती, तुषार, पटील, भृंगराज, कण्टकारि यह सब जड़ी बूटियों के नाम हैं। गुञ्जा—सफेद या लाल गोगची लक्ष्मणा को कहते हैं। सुपुष्प—किसी सुन्दर पुष्प, वृक्ष की जड़, भृंगराज प्रसिद्ध जड़ी है जिसको तेलों में डाला जाता है। कण्टकारी कटेरी होती है। इनकी जानकारी वैद्यों से मिल सकती है।

वेदोक्त मंत्रों का उच्चारण ठीक होना चाहिए, विशेष कर ॐ का उच्चारण किसी ज्ञाता से सीख लेना चाहिये।

अन्य शुभाशुभ योग

(१) मंगल-शनि दोनों त्रिकोण (१, ५, ९) में हों और चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो जन्मा बालक माता से बिछड़ जाता है। चन्द्रमा पर गुरु की दृष्टि हो तो बालक सुखी व दीर्घायु होता है और माता से पुनर्मिलन भी हो जाता है। लोक लाज के भय से कुछ मातायें बच्चों को त्याग देती हैं। कुछ का दुष्टों द्वारा अपहरण हो जाता है। यदि स्वराशि या उच्च गुरु की चन्द्रमा पर दृष्टि हो तो बालक-माता का मिलन हो जाता है।

(२) दशम भाव में बुध-गुरु हो, केन्द्र (१, ४, ७, १०) में सूर्य तृतीय मंगल, ग्यारहवें भाव में पाप ग्रह हो तो बालक की छः ऊँगली होती हैं।

(३) १२वें स्थान में चन्द्रमा व मंगल हो तो बांया नेत्र और सूर्य राहु हो तो दांया नेत्र पीड़ित होता है।

(४) पंचम स्थान में शनि-राहु व मंगल हो तो बाईं कोख में लहसुन, मसा, तिल होता है। कोख, कुक्षि, पेडू को भी कहते हैं और बाहुमूल कांख को भी।

(५) तीसरे स्थान में शुक्र हो, मेष या सिंह का गुरु हो, १०वें [illegible]

(६) कृष्ण पक्ष में दिन का या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म हो तो छठा या आठवां चन्द्रमा शुभ समझना चाहिये, कष्ट व अरिष्ट का निवारण करता है।

(७) ८वां चन्द्रमा, ७वां मंगल, ९वां राहु लग्न में शनि, तीसरा गुरु, पांचवां सूर्य, छठा शुक्र, चौथा बुध हो तो बालक की आयु बहुत कम होती है।

(८) लग्न में बुध-शुक्र न हो, केन्द्र में गुरु न हो, दशम में मंगल न हो तो उसका भाग्य अच्छा नहीं होता। दशम मंगल हो, केन्द्र त्रिकोण में बृहस्पति, बुध, शुक्र हो तो बालक भाग्यवान, दीर्घायु, गुणवान, धनवान, बुद्धिमान होता है।

(९) लग्न में शनि, छठा, चन्द्रमा, सप्तम मगंल पिता की आयु को कम करते हैं।

(१०) ६, १२वें स्थान में पाप ग्रह हों या चन्द्रमा के साथ पाप ग्रह हों तो माता को कष्ट दायक होते हैं।

(११) १०वें स्थान में पाप ग्रह हो या सूर्य के साथ पाप ग्रह हो या शत्रु राशि का मंगल दशम भाव में हो तो पिता को कष्ट कारक होता है।

(१२) लग्न में गुरु, दूसरे में शनि, सूर्य, भौम तथा बुध हों बालक के विवाह समय पिता को मारक होता है।

(१३) सातवां राहु, छठा-आठवां चन्द्रमा हो और चन्द्रमा पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि हो तो बालक अल्पायु होता है।

(१४) शनि-सूर्य का परिवर्तन योग हो (अर्थात् सूर्य शनि की राशि में, शनि सूर्य की राशि में) अथवा लग्न में मंगल व अष्टम गुरु हो तो बालक की आयु १२ वर्ष की हो।

(१५) छठे स्थान में बुध हो, लग्नेश व अष्टमेष, पाप ग्रहों से युक्त हो या परिवर्तन योग या दृष्टि योग द्वारा एक दूसरे को देखते हों तो बालक की आयु ४ वर्ष।

(१६) मंगल की राशियों में गुरु हो और चन्द्रमा ६ या ८वें भाव में हो तो बालक की आयु ८ वर्ष की होती है।

(१७) दशम स्थान में राहु हो अष्टमेश होकर क्षीण चन्द्रमा राहु के साथ हो तो बालक व उसके माता-पिता तीनों को अरिष्ट करता है। चन्द्रमा राहु के साथ न हो तो बालक की आयु १६ वर्ष होती है।

(१८) तीसरे स्थान में सूर्य बड़े भाई को और शनि या मंगल छोटे भाई को कष्ट दायक होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoF-IKS

बालक के जन्म समय अरिष्ट योग व कुछ अन्य प्रमुख योग

बालक के जन्म से १२ वर्ष की आयु तक जो अनिष्ट ग्रह योग हैं, उन्हें अरिष्ट योग कहते हैं। नीचे कुछ प्रमुख अरिष्ट योगों का वर्णन किया गया है। अरिष्ट योगों का विचार करते समय 'अरिष्ट नाशक' योगों पर भी विचार करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा फलादेश ठीक नहीं बैठता।

यदि पाप ग्रह युक्त क्षीण चन्द्रमा लग्न ५, ७, ८, ९ अथवा ११वें भाव में स्थित हो और वह किसी शुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट न हो तो बालक की आयु को अरिष्टकर एवं भु-मृत्यु तुल्य कष्ट होता है।

छठे, आठवें एवं १२वें स्थान में शुभ ग्रह हों और उनको बलवान् वक्री पापी ग्रह देखते हों तो एक मास तक आयु को अरिष्टकारी होगा।

यदि चन्द्रमा जन्म लग्न से छठे या आठवें भाव में स्थित हो और वह पापी ग्रह से दृष्ट हो तो जातक की शीघ्र मृत्यु हो जाती है, यदि शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो आठ वर्ष की आयु में अरिष्ट होता है।

यदि जन्म के समय चन्द्रमा दो पाप ग्रहों के मध्य में हो, अन्य सब ग्रह ४, ७ एवं अष्टम भाव में स्थित हों, तो जातक की शीघ्र मृत्यु होती है। यदि चन्द्रमा शुभ ग्रहों द्वारा दृष्ट हो तो माता की मृत्यु नहीं होती है। चन्द्र क्रूर ग्रह से दृष्ट होने पर माता को भी अरिष्टकर होगा।

यदि मंगल अथवा शनि लग्न में हो, सूर्य सप्तम भाव में हो अथवा चन्द्रमा मंगल या शनि से युक्त हो तो बालक की आयु को अरिष्ट योग होता है।

यदि शनि, मंगल तथा सूर्य तीनों ग्रह छठे, सातवें या बारहवें भाव में हों तो १ मास या १ वर्ष में अरिष्टकारक होते हैं।

द्वादश भाव में क्षीण चन्द्रमा हो तथा लग्न एवं अष्टम भाव में पाप ग्रह हों तो बालक को अरिष्ट योग होता है।

यदि जन्म राशि पाप ग्रह से युक्त अष्टम भाव में हो तो एक मास में ही अरिष्ट होता है।

जिस नक्षत्र में धूम्रकेतु, उल्कापात, ग्रहणादि का उदय हो तो उस नक्षत्र में उत्पन्न जातक को दो मास तक अरिष्ट रहता है।

लग्न में चन्द्रमा और ७वें भाव में २-३ पाप ग्रह स्थित हों तो शीघ्र ही अरिष्ट योग होता है।

यदि लग्न का स्वामी पाप ग्रह से युक्त होकर ७वें अथवा ८वें भाव में स्थित हो तो १ मास तक अरिष्ट होगा।

लग्न में राहु और छठे अथवा आठवें भाव में चन्द्रमा स्थित हो तो अरिष्ट योग होगा। जन्म लग्न जिस राशि के नवांश में हो उसका स्वामी छठे या आठवें स्थान में जो राशि पड़े, उतने दिन पर्यन्त विशेष अरिष्ट योग रहेगा।

माता-पिता को अरिष्ट योग

माता के लिए चन्द्रमा तथा चतुर्थ स्थान से और पिता के लिए सूर्य तथा दशम स्थान से विचार करना चाहिए, यदि चन्द्रमा एवं चतुर्थ भाव शनि, मंगल एवं सूर्यादि क्रूर ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक माता को अत्यन्त कष्टकारी होता है। यदि चन्द्रमा से ४, ६ या आठवें स्थान पर पापी ग्रह हो तो भी माता को अरिष्टकारी होता है। इसी भाँति यदि बालक की कुण्डली में सूर्य अथवा दशम भाव में पापी ग्रह हो या देखते हों अथवा सूर्य पाप ग्रहों के मध्य स्थित हों तो पिता को कष्ट जानें। सूर्य से ४, ६, ८वें क्रूर होने पर भी पिता को कष्टकारी है।

अरिष्ट भंग योग

यदि जन्म लग्नेश बलवान् शुभ ग्रह हो तथा वह शुभ मित्र ग्रहों से वीक्षित हो अथवा लग्न में स्थित होकर शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट योग नष्ट हो जाता है।

यदि शुभ राशिस्थ गुरु जन्म लग्न में स्थित हो तो अनेक प्रकार के अरिष्ट दूर होते हैं।

यदि सभी ग्रह शीर्षोदय राशियों में हो तो अरिष्ट भंग होता है।

यदि क्षीण चन्द्रमा भी अपनी उच्च राशि (वृष) में हो और वह शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो अरिष्ट भंग हो जाता है।

यदि शुक्ल पक्ष में रात्रि के समय तथा कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म हो और चन्द्रमा आठवें भाव में स्थित होने पर भी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो भी अरिष्ट का नाश हो जाता है।

कुछ अन्य प्रमुख योग पुष्कल योग

यदि लग्नेश तथा चतुर्थेश बलवान् होकर केन्द्र अथवा चतुर्थ भाव में हो तो 'पुष्कल' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक मधुर भाषी, सुप्रसिद्ध तथा धनवान होता है। उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त हो जाते हैं।

वीणा योग

यदि सात राशियों में सात ग्रहों की स्थिति हो तो 'वीणा' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक संगीतज्ञ, गायन विद्या में प्रीति रखने वाला, सब कार्यों में कुशल, धनी तथा अनेक लोगों का पालन-पोषण करने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति राजनीति क्षेत्र में भी सफल रहता है।

विदेश में भाग्योदय योग

चर राशि का लग्न और लग्नेश हो और चन्द्र से दृष्ट हो तो विदेश में भाग्य उदय होगा।

विवाह के बाद भाग्योदय

सप्तमेश ग्रह अथवा शुक्र ग्रह सातवें भाव में अथवा उपचय स्थान (३, ६, १०, ११) में गया हो तो विवाह के पश्चात्-भाग्योदय होगा।

काल सर्प योग

यदि कुण्डली में सभी ग्रह राहु-केतु के मध्य हों तो 'काल सर्प' नामक योग होता है। इस योग वाला जातक प्रायः उलझनों में घिरा रहता है। जीवन पर्यन्त संघर्षमय जीवन रहता है। कुछ धन होते हुए भी सुखानुभव नहीं होता।

काहल योग

यदि नवम भाव तथा चतुर्थ भाव के स्वामी एक-दूसरे से केन्द्र भाव में स्थित हों और लग्नाधिपति बली हो, 'काहल योग' बनता है। इस योग में उत्पन्न जातक राजनीति और शासन प्रशस्त कार्यों में सफलता प्राप्त करता है।

गढ़ा धन प्राप्ति योग

लाभेश लग्न में, लग्नेश धन स्थान में एवं धनेश लाभ स्थान में गए हों तो गढ़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

लग्नेश शुभ ग्रह होकर द्वितीय भाव में स्थित हो अथवा धन स्थान का स्वामी आठवें भाव में स्थित हो तो भी गढ़ा हुआ धन मिलता है, परन्तु ऐसा व्यक्ति आलसी और भाग्यवादी होता है।

वाहन सुख योग

१. नवमेश, लाभेश और दशमेश— ये तीनों ग्रह चतुर्थ भाव में गये हों अथवा

२. चन्द्रमा से शुक्र तीसरे किंवा ग्यारहवें भाव में गया हो तो वाहन युक्त जातक होगा।

३. गुरु द्वारा दृष्ट चतुर्थ भावेश लाभ में गया हो तो बहुत वाहनों वाला जातक होगा।

४. अपनी उच्चराशि में गया हुआ व्ययेश धनेश से युत होकर नवम भाव को देखता हो।

कुण्डली में अरिष्ट योग

(१) अगर जन्म कुण्डली में नवें-पाँचवें तथा केन्द्र स्थानों में पाप ग्रह हों और छठे, आठवें, बारहवें शुभ ग्रह हों तो सूर्य उदय होते ही उसी दिन बच्चे की मृत्यु हो जावे।

(२) यदि चन्द्रमा अष्टम भाव में हो, राहु चतुर्थ भाव में हो और पाप ग्रह केन्द्र में हो तो बालक एक वर्ष तक जीवे।

(३) यदि लग्न, द्वितीय, द्वादश एवं अष्टम भाव में क्रूर ग्रह हों तो बारहवें या आठवें दिन विष्ठा का मार्ग रुक कर जातक की मृत्यु हो।

(४) यदि चन्द्रमा बारहवें भाव में हो और पाप ग्रह लग्न सप्तम और अष्टम भाव में हो और केन्द्र में शुभ ग्रह न हो तो बालक शीघ्र मृत्यु को प्राप्त हो।

(५) यदि जन्म लग्न से मंगल, सूर्य, शनि छठे या आठवें भाव में हो तो बालक वर्ष भर न जीवे।

(६) यदि छठे या आठवें चन्द्रमा पाप ग्रहों से दृष्ट हो और शुभ ग्रह की दृष्टि न हो तो बालक एक वर्ष के अन्दर मृत्यु को प्राप्त हो।

(७) यदि क्षीण चन्द्रमा लग्न में और पाप ग्रह केन्द्र अथवा अष्टम स्थान में हो तो बालक की मृत्यु हो।

(८) यदि सप्तम स्थान में शनि, राहु, मंगल से युक्त चन्द्रमा सप्तम स्थान में हो तो बालक की सातवें दिन अथवा सातवें मास मृत्यु हो।

(९) यदि लग्न में सूर्य, पंचम भाव में चन्द्रमा हो और अष्टम भाव में शनि हो तो बालक नहीं जीवे।

(१०) यदि लग्न में शत्रु-राशिस्थ शनि पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो बालक की एक वर्ष के अन्दर मृत्यु हो।

(११) जिसके समस्त शुभ ग्रह छठे-आठवें स्थान में हो और पाप ग्रहों से दृष्ट हों तो वह बालक महीने के अन्दर मृत्यु को प्राप्त होता है।

(१२) जिसके शनि के घर में सूर्य और सूर्य के घर में शनि हो तो दैव भी रक्षा करें तो भी बारहवें वर्ष में मृत्यु होती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अन्य अरिष्ट योग-(१) तृतीया, दशमी, षष्ठी और शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी यह तिथियां यदि मंगल या शनिवार को हों, साथ ही मूल नक्षत्र का योग हो तो ऐसे योग में उत्पन्न बालक सम्पूर्ण कुल का नाश करता है।

(२) यदि तीन पुत्रों के पश्चात् कन्या का और तीन पुत्रियों के पश्चात् बालक का जन्म हो तो त्रिखल दोष होता है।

(३) यदि चन्द्रमा पाप ग्रहों से युक्त पाप ग्रहों के बीच में हो अथवा चन्द्रमा से सातवें पाप ग्रह हो तो बालक की माता का नाश होवे।

(४) यदि सूर्य पाप ग्रह से युक्त हो और लग्न भी पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पाप ग्रहों के बीच में हो तो बालक के पिता का नाश होवे।

(५) यदि छठे स्थान में पाप ग्रह बारहवें चन्द्रमा और चौथे घर में मंगल हो तो उसकी माता न जीवे।

(६) यदि लग्न भाव में शनि छठे भाव में चन्द्रमा और सातवें भाव में मंगल हो तो जातक का पिता न जीवे।

(७) चतुर्थ भाव में पाप ग्रह माता को, दशम भाव में पिता को और सप्तम भाव में पिता और माता दोनों का नाश करता है।

(८) उच्च या नीच किसी के सातवें सूर्य हो तो बालक शीघ्र ही माता का नाश करे।

(९) जिसके दशम भाव में मंगल शत्रु राशिस्थ हो, उसका पिता शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो।

अरिष्ट भंग योग-(१) ऊपर दिए गए अरिष्ट योग होने पर भी यदि लग्नपति अत्यन्त बली हो, शुभ ग्रहों से युक्त व केन्द्र में स्थित हो तथा पाप ग्रह की दृष्टि से रहित हो तो जातक दीर्घायु होता है।

(२) गुरु, शुक्र और बुध में से कोई एक भी बली होकर केन्द्र में हो और उस पर पाप ग्रह की दृष्टि न हो तो अरिष्ट का नाश करता है।

(३) यदि चन्द्रमा अपनी उच्चराशि, स्वराशि अथवा मित्र राशि में हो और शुभ दृष्ट हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(४) यदि राहु तीसरे, छठे या ग्यारहवें बैठा हो और उसे शुभ ग्रह देखते हों, अथवा वृष, कर्क, मेष राशि का राहु लग्न में हो तो अरिष्टों का नाश करता है।

(५) यदि सभी ग्रह मित्रक्षेत्री हों तो अरिष्ट दूर होते हैं।

आयुर्दाय विचार बोधक चक्र

दीर्घ	मध्य	अल्प
चर चर	चर स्थिर	चर द्विस्वभाव
स्थिर द्विस्वभाव	द्विस्वभाव द्विस्वभाव	स्थिर स्थिर

उपरोक्त चक्र से आयु का विचार तीन प्रकार से करें। १. लग्नेश अष्टमेश से, २. शनि चन्द्रमा से, ३. लग्न वा होरा लग्न से—जैसे लग्न चर में है और अष्टमेश भी चर में हो तो दीर्घ, लग्न स्थिर में हो और चन्द्रमा द्विस्वभाव में हो तो दीर्घ, लग्न द्विस्वभाव में हो और होरा लग्न स्थिर में हो तो दीर्घ आयु।

यदि तीनों प्रकार से आयु भिन्न-भिन्न आये और चन्द्रमा लग्न और सप्तम में न हो तो लग्न वा होरा लग्न से जो आयु आये उसे ग्रहण करें, यदि लग्न से या सप्तम में चन्द्रमा हो तो शनि और चन्द्रमा से जो आयु आये उसे ग्रहण करें।

होरा लग्न—इष्ट घड़ी को १२ अंशों से गुणा कर जो फल अंशादि आयेगा उसको राश्यादि करके स्पष्ट सूर्य में जोड़ने से होरा लग्न होगा।

उपरोक्त तीनों प्रकार से दीर्घायु आये तो १२० वर्ष तथा तीनों प्रकार से मध्यमायु ८० वर्ष है, दो प्रकार से ७२ और एक प्रकार से ६४ वर्ष होती है एवं तीनों प्रकार से अल्पायु ३२ वर्ष, दो प्रकार से २६ और एक प्रकार से अल्पायु २० वर्ष होती है।

उपरोक्त तीनों प्रकार से आयु निर्णय करने पर जिस-जिस प्रकारों से आयु का निर्णय हो अर्थात् लग्नेश अष्टमेश से हानि चन्द्रमा, लग्न व होरा से यदि इन तीनों प्रकार से एक ही प्रकार की आयु आये तो तीनों का अर्थात् लग्नेश का अष्टमेश शनि चन्द्रमा का लग्न या होरा लग्न से स्पष्ट की राशि को छोड़ कर मेष अंश कलादि फल को युक्त कर ६ से भाग दें जो अंश कला विकला आये ऊपर लिखी सारणी में अंश फल सारणी में अंशों के नीचे का फल, कला फल सारणी में कला का फल, विकला फल सारणी में विकला का फल लेकर तीनों को युक्त करो तो यह युक्तफल वर्ष आदि आएंगे। इन को ऊपर कही आयु में घटाने से स्पष्ट आयु आ जायेगी। दो प्रकार की आयु आने पर उनके अंशादि के योग में ४ का भाग देना और एक प्रकार से २ का भाग देना। उदाहरण—जैसे लग्न सिंह और लग्न का स्वामी चर राशि में पड़ा है और अष्टमेश गुरु भी चर राशि में है दीर्घायु। (२) शनि चन्द्रमा स्थिर में हो तो अल्पायु लग्न और होरा लग्न स्थिर में हो तो अल्पायु होती है यह दो प्रकार से अल्पायु है।

अतः शनि चन्द्रमा होरा लग्न की राशि को छोड़कर शेष अंशादि को युक्त करके ४ का भाग देने से जो अंश कला विकला आए उनका फल नीचे लिखी सारणी से लेकर उसको २६ वर्ष में से घटावें तो स्पष्ट आयु आ जायेगी।

अष्टमक्षं तृतीयं च लग्नादायुरुदाहृतम्। द्वितीयं सप्तमं स्थानं मारकस्थानमुच्यते। क्वचिद् लग्नेश व्ययेश-अष्टमेश दशास्वपि मारकसम्भवः। परस्पर षष्टाष्टमेशयो दशन्ति रुच्व न शोभनम्। मारके मारकातरम् शोभनम् व्यय द्वितीयेश वद्ग्रहाः फलप्रदाः लग्नेशदशाऽतिष्टे सम्बन्ध रहिता न मारककारिणी पापदशात्वदनिष्टवेति।

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु विचार सारणी

अंश	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वर्ष	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	१	१	३	४	४	५	६	७	८	८	९	१०	११	०	०	०	१	२	२	४	४	६	७	७	७	८	६	१	१
दिन	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०	२४	१८	१२	६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन कला ज्ञान सारणी

कला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
मास	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६
दिन	६	११	१३	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८	२६	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२	२९	५	१२
घड़ी	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
कला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
मास	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२
दिन	१९	२४	१	७	१४	२०	२३	३	५	१३	२२	२८	५	११	१८	२४	०	७	१३	२०	२६	१	३	१५	२२	२८	४	११	१७	२४
घड़ी	२४	४८	३६	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

जैमिनीय सूत्रोक्त आयु साधन विकला फल सारणी

विकला	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३
घड़ी	६	१२	१९	२५	३२	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२३	२९	३६	४२	४८	५५	१	८	१४	२१	२७	३३	४०	४६	५२	५९	५	१२
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०
विकला	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
दिन	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६
घड़ी	१८	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५९	४	११	१७	२०
पल	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

द्वादश लग्न अथवा राशियों के प्रभाव

मेष लग्न— मेष लग्न में पैदा हुए व्यक्ति का गेहुँआ रंग, लम्बा कद, दुबला किन्तु बलिष्ट शरीर, गोल नेत्र, मुख पर चिह्न, कठोर किन्तु घुंघराले केश, क्रोधी एवं उपद्रवी स्वभाव, अत्यन्त साहसी, उद्यमी, उग्र-प्रकृति वाला होता है। यह जातक स्वतंत्र विचार वाला, प्रगतिशील, महत्वाकांक्षी, सदैव नेतृत्व की चाह करने वाला, प्रभावशाली, स्वछन्द विचरण करने की लालसा करने वाला होता है। मेष लग्न वाले व्यक्ति नई योजनाओं की सृष्टि करते हैं तथा अद्भुत विचारों के अन्वेषक होते हैं। बड़े होकर योग्य प्रशासक, इंजीनियर (मेकेनिकल), सर्जन, सेनापति, सफल व्यापारी बन सकते हैं। इनके लिए गुरु शुभ होता है। शनि, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनके लिए प्रायः शनि अथवा बुध ही मारकेश बनते हैं। जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों की सम्भावना होती है तथा ज्वर, अग्नि अथवा शस्त्र भय रहता है। इनका भाग्योदय १६, २२, २८, ३२, ३६वें वर्ष में होता है।

वृष लग्न— जातक का ठिगना कद, पुष्ट एवं स्थूल शरीर होता है। यह लोग कामी, चतुर, ईर्ष्यालु, शान्त स्वभाव वाले, इच्छानुसार काम करने वाले तथा सभी कार्यों को गुप्त रखने वाले, सांसारिक द्रव्य एवं धन सम्पत्ति एकत्रित करने वाले तथा अधिकार सुख की कामना करने वाले होते हैं। इनकी स्मरण शक्ति प्रबल होती है। यह लोग बैंकिंग, कास्मैटिक्स, भवननिर्माण, जवाहरात, विज्ञापन एवं प्रचार इत्यादि व्यवसायों में सफल होते हैं। इनको कण्ठ सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना होती है। इनके लिए सूर्य, बुध शुभ तथा शुक्र, बृहस्पति एवं चन्द्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६ एवं ४२वें वर्ष में होता है।

मिथुन लग्न— जातक का कद लम्बा किन्तु दुबला, सुन्दर नेत्र, छोटी नाक होती है। यह व्यक्ति प्रसन्नचित्त, चपल, तीक्ष्ण बुद्धि, मधुर एवं स्पष्टवक्ता, शीघ्र गतिवान, दूरदर्शी, मेधावी, यात्रा एवं परिवर्तन प्रेमी, खेलों का शौकीन, साहित्य-कला सौन्दर्य में रुचि रखने वाला होता है। मिथुन लग्न वाले व्यक्तियों में बुद्धि तथा भाव तत्व दोनों ही प्रबल रूप में होते हैं। बड़े होकर पत्र-व्यवहार, सम्पादन, लेखन, प्रचार-प्रसार, अध्यापन, एकाउन्ट्स, संगीत, यात्रा, क्रय-विक्रय सम्बन्धी व्यवसाय में सफल होते हैं। इनको फेफड़े तथा स्नायु-सम्बन्धी रोग होने की सम्भावना रहती है। इनकी भाग्योन्नति २२, ३२, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होती है। इनके शुक्र शुभ, चन्द्रमा अशुभ, मंगल, सूर्य, अरिष्टकारक होते हैं।

कर्क लग्न— जातक का मध्यम कद, गौर वर्ण, सुन्दर मुख, सुगठित शरीर होता है। इस लग्न के व्यक्ति बुद्धिमान, गतिशील, अस्थिर स्वभाव वाले, उदार, विशाल हृदय, कल्पनाशील, परिश्रमी, भावुक मन वाले, विलासी, सम्पत्तिवान, समयानुसार काम करने वाले होते हैं। बड़े होकर यह राज्याधिकारी, डाक्टर, नेता, मंत्री, प्राध्यापक, नाविक तथा जलोत्पन्न वस्तुओं के व्यवसायी बनते हैं। इनको उदर, हृदय, मूत्राशय-सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए मंगल शुभ, शुक्र एवं बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २५, २८ एवं ३२वें वर्ष में होता है।

सिंह लग्न— जातक की चौड़ी छाती, बली भुजाएं एवं दृढ़ हड्डी तथा पुष्ट, शरीर, प्रभावशाली एवं आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग नेतृत्व की चाह करने वाले प्रशासनिक अधिकारों का पूर्ण सदुपयोग करने में सफल होते हैं। इनका रहन-सहन आडम्बरपूर्ण तथा रईस मिजाज होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति अभिनेता, प्रशासक, सैनिक, वकील, व्यापारी, वन-सम्बन्धी व्यवसाय करते हैं। इनको ज्वर एवं मस्तिष्क पीड़ा आदि रोग हो सकते हैं। इनके लिए सूर्य एवं मंगल शुभ, बुध एवं शुक्र अशुभ, राहु केतु मारक स्थान में स्थित होने से मृत्युकारक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २४, २६, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

कन्या लग्न— जातक का छोटा कद, कोमल शरीर तथा छोटे बाजू होते हैं। इनका स्त्री स्वभाव होता है तथा यह लज्जाशील, मधुरभाषी, विचारशील, धैर्यवान, बुद्धिवाले, गणितज्ञ, तार्किक एवं साहित्य प्रेमी होते हैं। कन्या लग्न वाले व्यक्तियों की स्मरणशक्ति तीव्र होती है तथा यह सभी कार्य गुप्त रखते हैं। इनमें आत्म विश्वास की कमी रहती है। बड़े होकर यह व्यक्ति गणितज्ञ, पुस्तक विक्रेता, सचिव, दलाल, साहित्यिक, अध्यापक, ज्योतिषी अथवा मनोवैज्ञानिक बन सकते हैं। व्यापार की अपेक्षा इनको नौकरी में अधिक लाभ हो सकता है। इनको पेट की बीमारियां लग सकती हैं। इनके लिए बुध, शुक्र शुभ, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, २५, ३२, ३३, ३५, ३६वें वर्ष में होता है।

तुला लग्न— जातक दुबला किन्तु लम्बा, सुन्दर प्रसन्नचित्त तथा तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। न्याय एवं शान्तिप्रिय, मध्यस्थता का कार्य करने में निपुण, सत्यवक्ता, धार्मिक, सुधारवादी, दार्शनिक, साधु स्वभाव, लोकप्रिय, बच्चों का विशेष स्नेही, स्त्री-कला-नृत्य संगीत प्रेमी, प्रतिष्ठित होता है। इस लग्न के व्यक्ति न्यायाधीश, वकील, परामर्शदाता, साहित्य प्रेमी, कवि, नीतिज्ञ तथा व्यापारी बनते हैं। इनको गुर्दा, मूत्रस्थली एवं कमर सम्बन्धी रोगों की सम्भावना रहती है। इनके लिए शनि योगकारक, बुध, शुक्र शुभ, सूर्य, मंगल, बृहस्पति अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २४, २५, ३२, ३३, ३५ वर्ष में होता है।

वृश्चिक लग्न— जातक सुन्दर, परिश्रमी, आत्मविश्वासी, साहसी, शंकालु, स्वेच्छाचारी, आतंककारी, नीतिज्ञ, गूढ़ विद्याओं का ज्ञात होता है। ऐसे व्यक्ति मितव्ययी एवं संग्रह करने में चतुर होते हैं। यदि लग्न पाप दुष्ट हो तो जातक झगड़ालु, असंयमी, कुतिचारी, निर्दयी, अपराधी तथा गुप्त रूप से दुष्कर्म करने वाला होता है। बड़े होकर यह व्यक्ति पुलिस अधिकारी, राजनीतिज्ञ, ठग, इंजीनियर, खनिज विशेषज्ञ, दन्त विशेषज्ञ बनते हैं। इनको छाती, कण्ठ अथवा गर्मी या वायु सम्बन्धी एवं बवासीर आदि गुप्त रोग होने की सम्भावना रहती है। इनके लिए सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बृहस्पति शुभ, बुध, शुक्र अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय २२, २४, २८, ३२वें वर्ष में होता है।

धनु लग्न— बड़े कान, लम्बी गर्दन, बली तथा स्थूल शरीर धनु लग्न की विशेषता है। यह व्यक्ति स्वाभिमानी, निस्वार्थी, साधु स्वभाव, न्यायप्रिय, मेधावी, धनवान, उदार, गम्भीर, विवेकशील, तार्किक, कुलभूषण, संवेदनशील, विश्वासपात्र, उत्तेजित अवस्था में अत्यन्त क्रुद्ध एवं स्पष्टवक्ता, निष्कपट, त्यागी, आदर्शवादी, अवसर का लाभ उठाने वाले होते हैं। इन्हें केवल प्रेम और शान्ति से वशीभूत किया जा सकता है। यदि लग्न पाप पीड़ित हो तो जातक दंभी, आडम्बरपूर्ण एवं कठोर स्वभाव का होता है। इस लग्न के व्यक्ति बड़े होकर प्रोफेसर, अध्याक, राजनीतिज्ञ, दार्शनिक, परामर्शदाता, उपदेशक, वकील, बैंकर तथा सफल व्यवसायी बनते हैं। इनको फेफड़े तथा वायु सम्बन्धी रोग होने की संभावना रहती है। इनके लिए सूर्य, बुध, बृहस्पति शुभ तथा चन्द्रमा शनि अशुभ फलदायक होते हैं। इनका भाग्योदय १६, २२, ३२वें वर्ष में होता है।

मकर लग्न— जातक का लम्बा कद, सुन्दर नेत्र, सेवाभावी, धैर्यवान, गम्भीर, मननशील, महत्वाकांक्षी, उद्योगी, संयमी, परिश्रमी एवं कार्यशील, उदासीन, दार्शनिक, आस्तिक, गृहस्थ जीवन से असंतुष्ट, आत्मप्रशंसा में विश्वास न करने वाला होता है। यह व्यक्ति बड़े होकर अधिकारी, कृषि अथवा भूमि से उत्पन्न वस्तुओं सम्बन्धी व्यवसाय अथवा कार्यालयों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको जोड़ों का दर्द तथा अन्य वायु जनित रोग होने की संभावना रहती है। इनका भाग्योदय २५, ३३, ३५, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

कुम्भ लग्न— जातक का मध्यम कद, मांसल होंठ, आकर्षक व्यक्तित्व होता है। यह लोग तीव्र बुद्धि, दयालु, मिलनसार, प्रभावशाली, अनेक मित्रों से युक्त, स्वच्छ हृदय तथा विशाल दृष्टिकोण वाले, क्रान्तिकारी, विचारक, रोचकवक्ता एवं साहित्य में रुचि रखने वाले होते हैं। अगर शनि शत्रु राशिस्थ अथवा नीच हो तो जातक दम्भी, कामी, लांछन प्राप्त करने वाला, उद्दण्ड एवं निर्लज्ज होता है। बड़े होकर यह लोग प्राध्यापक, सुधारक, इंजीनियर, मुद्रण, रेडियो, बिजली, यात्रा, वायुयान एवं तकनीकी कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं। इनको सिर अथवा पेट दर्द, वायुरोग, उदर पीड़ा एवं कोष्ठ बद्धता इत्यादि रोग हो सकते हैं। इनके लिए शुक्र शुभ तथा गुरु एवं चन्द्र अशुभ फलदायक है। इनका भाग्योदय २५, २८, ३६, ४२वें वर्ष में होता है।

मीन लग्न— जातक का छोटा कद, स्थूल शरीर, शान्त एवं विनम्र स्वभाव होता है। यह लोग धर्मपरायण, रूढ़िवादी, आस्तिक, परोपकारी, लज्जाशील, महत्वाकांक्षी, सुनिश्चित एवं सुसंस्कृत बहुकुटुम्बी, सद्गृहस्थी होते हैं। बड़े होकर यह लोग समाज सुधारक, आध्यात्मवादी, चलचित्र व्यवसाय, पुरातत्व वस्तुओं के व्यापारी, काव्य एवं हास्य व्यंग्य लेखक, कलाकार, औषधी विषयक, जल परिवहन सम्बन्धी कार्यों में सफल होते हैं। इन्हें छूतछात की बीमारियां होने का डर रहता है। इनके लिए मंगल शुभ, सूर्य, शुक्र, शनि, बुध अशुभ होते हैं। इनका भाग्योदय १२, १६, २८, ३३वें वर्ष में होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नूतन वेध सिद्ध वर्ष प्रवेश सारिणी

गताब्द	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वार	१	२	३	५	६	०	१	३	३	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४
घटी	१५	३०	४६	१	१६	३२	४७	३	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७
पल	२२	४५	८	३१	५४	१७	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
वार	५	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१
घटी	२३	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५
पल	१	२४	४७	१०	३३	५६	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	६०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२	३	४	६	०	१	२	४	५
घटी	३०	४६	१	१६	३२	४७	२	१८	३३	४९	४	१९	३५	५०	६	२१	३६	५२	७	२३
पल	४०	३	२६	४९	१२	३५	५८	२१	४४	७	३०	५३	१६	३९	२	२५	४८	११	३४	५७
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३२	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

गताब्द	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
वार	६	०	२	३	४	५	०	१	२	३	५	६	०	१	३	४	५	६	१	२
घटी	३८	५३	९	२४	३९	५५	१०	२६	४१	५६	१२	२७	४३	५८	१३	२९	४४	५९	१५	३०
पल	१९	४२	५	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४१	४	२७	५०	१३	३६
विपल	५७	५४	५१	४८	४५	४२	३९	३६	३३	३०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	९	६	३	०

प्राचीनमान वर्ष प्रवेश सारिणी

वर्ष	०१	०२	०३	०४	०५	०६	०७	०८	०९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
वार	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२
घड़ी	१५	३१	४६	०२	१७	३३	४८	०४	१९	३५	५०	०६	२१	३७	५२	०८	२३	३९	५४	१०	२६	४१	५७	१२	२८	४३	५९	१४	३०	४५
पल	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
वार	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०३	०४	०५
घड़ी	०१	१६	३१	४७	०३	१८	३४	४९	०५	२१	३६	५२	०७	२३	३८	५४	०९	२५	४०	५६	११	२७	४२	५८	१३	२९	४४	००	१५	३१
पल	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३७	०९	४०	१२	४३	१५	४६	१८	४९	२१	५२	२४	५५	२७	५८	३०
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
वार	०६	०१	०२	०३	०४	०६	०७	०१	०२	०४	०५	०६	०७	०२	०३	०४	०५	०७	०१	०२	०३	०५	०६	०७	०१	०३	०४	०५	०७	०१
घड़ी	४७	०२	१८	३३	४९	०४	२०	३५	५१	०६	२२	३७	५३	०८	२४	३९	५५	१०	२६	४२	५७	१२	२८	४४	५९	१५	३०	४६	०१	१७
पल	०१	३३	०४	३६	०७	३९	१०	४२	१३	४५	१६	४८	१९	५१	२२	५४	२५	५७	२८	००	३१	०३	३४	०६	३९	०९	४०	१२	४३	१५
विपल	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००	३०	००

वर्ष फल साधन

जिस सम्वत् का वर्ष फल बनाना हो, उस सम्वत् से जन्म का सम्वत् घटाने से जो शेष हो वह गत वर्ष जानो। ऊपर दी गई सारिणी में गतवर्षांक के नीचे के वारादि अंकों में जन्म के वार और इष्ट के घटी पल जोड़ने से वर्ष प्रवेश का वार और इष्ट घटी पल हो जाते हैं। इस इष्ट के अनुसार लग्न सारिणी से लग्न बना लेना वह वर्ष लग्न होगा। तदन्तर वर्ष प्रवेश के इष्ट घटी पल के समय पर जो ग्रहों की इष्ट वर्ष के पंचांग में स्थिति होगी उसके अनुसार वर्ष कुण्डली में ग्रहों को स्थापित करें।

मुन्था— गत वर्षों में जन्म लग्न का अंक जोड़ो तदन्तर १२ से भाग देने पर जो शेष बचे उस राशि में मुन्था रखें।

त्रिपताका चक्र— वर्ष प्रवेश के वर्षों को ९ से भाग दें जो शेष बचे जन्म राशि से उतने घर में चन्द्रमा लगावें। शेष ग्रहों के लिए प्रवेश के वर्षों को ४ से भाग देवें जो शेष बचे वर्ष कुण्डली में (जन्म कुण्डली में जिस राशि में ग्रह स्थित हो उससे) उतने घर छोड़कर बाकी ग्रह लगावें। राहु केतु उल्टे गिनें। वर्ष लग्न को त्रिपताका के मध्य में रखकर क्रमशः अंक लिखें। माना वर्ष लग्न कर्क है। त्रिपताका चक्र निम्नवत है।

दशा— गत वर्षों में जन्म नक्षत्र संख्या जोड़ कर उसमें २ घटायें तदन्तर ९ का भाग देने से जो शेष बचे सो इस तरह दशा जानो—१ बचे तो सूर्य, २ बचे तो चन्द्रमा, ३ बचे तो मंगल, ४ बचे तो राहु, ५ बचे तो बृहस्पति, ६ से शनि, ७ से बुध, ८ से केतु, ९ से शुक्र की दशा होगी। दशा दिन नीचे दिए गए हैं:—

त्रिपताका चक्र
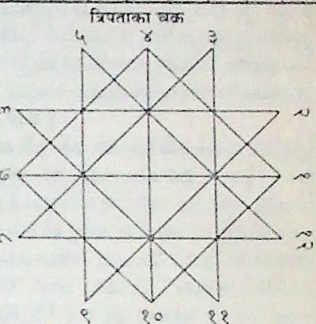
मुद्दा दशा

सूर्य	चं.	मं.	रा.	बृ.	श.	बु.	के.	शु.	ग्रह
१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	३०	दिन

त्रिराशिपति— वर्ष लग्न की जो राशि हो उस राशि के सामने नीचे दिए गए चक्र में देखो। दिन में वर्ष प्रवेश हो तो दिनपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, रात्रि में हो तो रात्रिपति के सामने राशि के नीचे जो ग्रह लिखा है, वह त्रिराशिपति होगा:—

राशि	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
दिनपति	सू.	शु.	श.	शु.	बृ.	चं.	बु.	मं.	श.	मं.	बृ.	चं.
रात्रिपति	बु.	चं.	बु.	मं.	सू.	शु.	श.	शु.	श.	मं.	बृ.	चं.

दृष्टि ज्ञान— वर्ष एवं कुण्डली में जो ग्रह जिस भाव में स्थित हो वह उस भाव से पांचवें, नवें भाव को प्रत्यक्ष मित्र दृष्टि तथा तीसरे, ग्यारहवें, भाव को गुप्तमित्र दृष्टि से देखता है। ग्रह अपने स्थान से पहले और सातवें भाव को प्रत्यक्ष शत्रु दृष्टि से तथा चतुर्थ-दशम भाव को गुप्त शत्रु दृष्टि से देखते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ष कुण्डली में शुभाशुभ योग

शुभ योगः-

वर्ष लग्न वर्ष लग्न का स्वामी तीसरे, छठे, दसवें घर में बलयुक्त हो तो सुख और मन में प्रसन्नता होती है, धन प्राप्ति, शत्रु नाश तथा अरिष्टनाश होता है।

जिस वर्ष में लग्न और दशम भाव का स्वामी एक ही हो तो उस वर्ष में सब अरिष्ट दूर होकर धन की प्राप्ति हो तथा अधिकारियों एवं मित्रों से यश और सुख मिले।

यदि गुरु, बुध, शुक्र, इनमें से कोई एक ग्रह भी केन्द्र में स्थित हो, नीच का न हो और शत्रु के साथ न हो, सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण अरिष्ट दूर होते हैं।

जो ग्रह जन्म कुण्डली में नीच का हो परन्तु वर्ष कुण्डली में वही ग्रह अष्टम वा मित्रभाव में हो तो अनेक सुख धन देने वाला होता है, मित्र का आगमन करने वाला तथा वर्ष में सम्पूर्ण अरिष्ट दूर करता है।

यदि मुंथापति १, ३, ४, ७, १०, ११ स्थान में स्थित हो तो जातक को यश-मान मिलता है।

यदि वर्षपति केन्द्र व त्रिकोण में स्थित हो और सौम्य ग्रह से युक्त हो तो सम्पूर्ण वर्ष में शुभ हो तथा शत्रु नाश, धनधान्य तथा यश का लाभ हो।

यदि जन्म लग्नेश वर्ष कुण्डली में केन्द्र अथवा त्रिकोण में स्थित हो तो सब अरिष्ट योग का नाश और धर्म-कर्म की प्राप्ति करता है।

यदि जन्म लग्न और वर्ष लग्न एक ही हो जाए तो उस वर्ष में कर्म का उदय हो और जातक का बाहुबल बढ़े तथा यश-सम्मान मिले।

यदि छठे, आठवें भाव का स्वामी बारहवें भाव में स्थित हो अथवा शनि एवं क्रूर ग्रहों से युक्त हो तो उस वर्ष का अरिष्ट दूर होता है। तथा अपने वर्ग का अरिष्ट होता है।

यदि मुंथा से सूर्य व मंगल पंचम स्थान में पड़े हों तो उस वर्ष में क्षेम, आरोग्य और सब अरिष्ट नाश होते हैं।

यदि वर्ष लग्नेश सप्तम भाव में हों और सप्तमेश लग्न में हो तो उस वर्ष अर्थ की सिद्धि होकर अरिष्ट दूर होता है।

यदि सूर्य नवम अथवा दशम भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो तो धन का लाभ तथा अरिष्ट दूर होता है।

सन्तान योगः-

गुरु जन्म कुण्डली में जिस राशि में हो, वर्ष में वह राशि यदि पंचम भाव में हो अथवा उस भाव में वर्षपति या बुध वा मंगल हो तो पुत्र की प्राप्ति हो।

यदि चन्द्र मुंथा सहित पंचम भाव में हो और पंचमेश भी पंचम भाव में हो अथवा पंचमेश बलवान हो तो उस वर्ष पुत्र हो।

नेत्र रोगः-

शुक्र लग्न में अथवा बारहवें सूर्य, मंगल सहित हो तो वर्ष में नेत्र रोग होता है।

यदि पाप ग्रह द्वितीय, द्वादश लग्न व सप्तम भाव में हो और इन शुभ ग्रहों की दृष्टि न हो ते अंध रोग होगा।

नौकरी से निलम्बित होने का योगः-

वर्ष कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी नीच होकर अष्टम स्थान में पड़े या कर्म स्थान में पाप ग्रह स्थित हो तो जातक नौकरी से अपदस्थ होता है और सुख का नाश होता है। वर्ष कुण्डली में अष्टम भाव का मालिक दशम स्थान में स्थित हो और दशमेश अष्टम भाव में क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो भी नौकरी छूटने का डर रहता है तथा धन का नाश होता है।

अशुभ योगः-

यदि मुंथापति वर्ष लग्नेश के साथ अष्टम भाव में स्थित हो तो मृत्यु तुल्य कष्ट देता है, जननेन्द्रिय पीड़ा, रुधिर प्रकोप, कंठावरोध उत्पन्न करता है।

यदि राहु सप्तम भाव में मंगल, चन्द्रमा और सप्तमेश सहित स्थित हो तो वर्ष में स्त्री को मृत्यु-तुल्य कष्ट देते हैं।

चतुर्थ भाव का स्वामी यदि छठे, आठवें, बारहवें भाव में पाप ग्रह युक्त हो, लग्न और चतुर्थ भाव क्रूर ग्रह युक्त अथवा वीक्षित हो तो उस वर्ष में माता का क्षय, अनेक रोग होते हैं।

मुंथापति यदि अष्टम भाव में हो और मुंथा छठे घर में हो तो स्त्री के अगं में पीड़ा, उदर में गुल्मादि रोग तथा अरिष्ट हो।

यदि सप्तमेश, शनि के साथ बारहवें भाव में स्थित हो तो उस वर्ष में कसत्र पीड़ा करे, लोकापवाद, स्वजनों में वैर, सन्तान पीड़ा, मन में व्यग्रता हो।

यदि अष्टमेश, छठे भाव में स्थित हो और चन्द्रमा क्रूर ग्रह युक्त हो अथवा क्रूर ग्रह उसे देखते हों और उस पर बृहस्पति की [illegible] तो मनुष्य यमलोक को गमन करता है।

यदि अष्टमेश केन्द्र में हो, लग्नेश बारहवें या छठे भाव में हो, चन्द्रमा पाप युक्त अष्टम में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट होता है।

यदि सूर्य सप्तम भाव में हो और शनि उसके साथ हो, वा रन्ध्रेश शनि युक्त हो तो उस वर्ष में सम्पूर्ण धन का नाश हो।

यदि चन्द्रमा केतु युक्त होकर अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो तथा स्त्री का वियोग हो।

यदि गुरु, चन्द्रमा सहित अष्टम भाव में स्थित हो और शनि सहित मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो।

वर्ष कुण्डली में यदि शनि मेष अथवा वृश्चिक में हो और मंगल सप्तम स्थान में पाप ग्रह से युक्त हो तो कलत्र नाश और धन हानि हो।

यदि सप्तम स्थान में पाप ग्रह हो, अष्टम में शुक्र और चन्द्र हो तो वर्ष में रोग से पीड़ा हो।

छठे, आठवें लग्नेश हो और मंगल, चन्द्रमा अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष विष अथवा दुर्घटना से पीड़ा हो।

यदि लग्न में पाप ग्रह के साथ अष्टमेश स्थित हो और लग्नेश चन्द्र सहित अष्टम भाव में स्थित हो तो उस वर्ष रोग शोकादि से शरीर क्षय हो।

यदि अष्टम भाव में गुरु पापयुक्त हो, चन्द्रमा बारहवें शनि युक्त हो तो उस वर्ष राज्याधिकारियों से दंड अथवा पीड़ा हो।

यदि मुंथा अष्टम हो, अष्टमेश रवि मंगल से युक्त हो तो मनुष्य का कफ पित्त रोगों से शरीर नष्ट हो।

चतुर्थ भाव में शनि, दशम भाव में मंगल हो, द्वितीयेश नीच राशि का होकर अस्त हो गया हो तो माता-पिता का अवश्य क्षय हो।

दूसरे, बारहवें, पहले, सातवें भाव में पाप ग्रह हो और शुभ ग्रहों की उन पर दृष्टि न हो तो जातक अवश्य अन्धा हो जाता है।

अष्टमेश लग्न में हो और लग्नेश अष्टम भाव में हो तो उस वर्ष में अरिष्ट हो, धन, स्त्री, कुटुम्ब में कष्ट हो।

वर्ष लग्नपति तथा अष्टमेश चतुर्थ अथवा अष्टम भाव में हो, उसी स्थान में मुंथा हो तो उस वर्ष मृत्यु-तुल्य कष्ट हो। लग्न, सप्तम, अष्टम में यदि पाप ग्रह हो तो उस वर्ष में चोर, अग्नि, शस्त्र से भय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह-शील-चक्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
पर्याय	हेलि	ग्लौ, शीत रश्मि	आर, वक्र भू-सुत	ज्ञ, इंदु-पुत्र विद्, बोधन	जीव, अंगि सुरगुरुइज्य	भृगु, भृगुसुत सितदे, गुरु	कोण, मद सूर्य-पुत्र	तम, अगु, असुर	शिखी
शुभ, पाप	उग्र	शुभ, क्षीण चन्द्र पाप	क्रूर	शुभ, पाप युक्त पाप	शुभ	शुभ	अति पाप	पाप	पाप
देवता	अग्नि	वरुण	स्कन्द	विष्णु	इन्द्र	इन्द्राणी	ब्रह्मा	वायु	आकाश
काल-पुरुष अंग	आत्मा	मन	सत्व, शौर्य	वाणी	ज्ञान-सुख	काम-सुख	दु:ख	मृति	स्थिति
पुरुषादि लिंग	पुरुष	स्त्री	पुरुष	नपुंसक	पुरुष	स्त्री	नपुंसक	पुरुष	पुरुष
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	क्षत्रिय	वैश्य, शूद्र	ब्राह्मण	ब्राह्मण	अंत्यज	शुद्र	संकर
आकार	चतुरस्त्र	वर्तुल	चतुष्कोण	वृत्त	वृत्त	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ	पुच्छ
स्वभाव	स्थिर	चंचल	उग्र	मिश्र	मृदु	लघु	अतितीक्ष्ण	....	......
स्थान	पर्वत	जलचर	पर्वत, वनचर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	विद्वानों से युक्तग्रा. चर	जलचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर	पर्वत, वनचर
काल	अयन	क्षण मुहूर्त	दिन	ऋतु	मास	पक्ष	वर्ष	....	......
दिशा, कोण	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	अग्नि	पश्चिम	नैऋत्य	सर्वदिशा
ग्रह-शांति में दिशा	मध्य	अग्नि	दक्षिण	ईशान	उत्तर	पूर्व	पश्चिम	नैऋत्य	वायव्य
राजादि पदवी	राजा	राजरानी	सेनापति	युवराज	मंत्री	गुप्त मंत्री	प्रेष्य दूत	सेवक	परिचारक
वय-वर्ष अवस्था	प्रौढ़ (५०)	युवा	तरुण	कुमार	युवा(३०)	किशोर	वृद्ध(१००)	अतिवृद्ध	अतिवृद्ध
रंग	पाटल	गौर	रक्तगौर	दूर्वाश्याम	गौर-पीत	श्वेत-श्याम	नील	कृष्ण	धूम्र
ह्रस्वदीर्घ	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	ह्रस्व	दीर्घ	ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घ	दीर्घ
विद्या	वैद्यक	ज्योतिष	शस्त्र	शिल्प	व्याकरण	संगीत	यावनी लि[illegible]	गारुडी	मन्त्र-तंत्र

ग्रह चिन्ह	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
नशा व गोचर फल काल	प्रथम भाग	अन्त्य	प्रथम भाग	सर्वदा	मध्य	मध्य	अन्त्य	......	......
कारक	पिता	माता	बन्धु, पितृव्य	मामा, बुद्धि वाणी	पुत्र, बुद्धि ज्ञान, धर्म	स्त्री	दूत, भृत्य दारिद्रय	दादा, शत्रु	नाना
कारक भाव	१,९,१०	४	३, ६	४, १०	२,५,९,१०	७	६,८,१०	......	......
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	......	......
तत्व	अग्नि	जल	अग्नि	पृथ्वी	आका.तेज	जल	वायु	जल-वायु	तेज
गुण	सत्व	सत्व	तामस	राजस	सत्व	राजस	तामस	अति तामस	किंचित तामस
धात्वादि	मूल	जीव	धातु	मिश्रण	जीव	मूल	मूल	धातु	धातु
रस	तिक्त	क्षार	कटु	मिश्र	मधुर	अम्ल, खट्टा	कशायकसे	तीखा	नीरस फीका
धातु	सुवर्ण	रौप्य	लोहा	यशद	बंग	ताम्र	नाग	पञ्चधातु	अष्टधातु
वस्त्र	मोटा	नवीन	अग्नि-दग्ध	आर्द्र	मध्यम	दृढ़	मलिन	चित्र-विचित्र	जीर्ण-शीर्ण
काल-बल	मध्याह्न	अपराह्न	मध्याह्न	प्रात:	प्रात:	अपराह्न	संध्या	संध्या	संध्या
पाद	चतुष्पद	बहुपद	चतुष्पद	द्विपद	द्विपद	द्विपद	भुजंगअपद	अपद	अपद
भूमि	पशुभूमि	जलभूमि	दग्ध	श्मशान	सुरालय	जलभूमि	उत्कट	ऊषर	ऊषर
स्थान	वन	जल	वन	ग्राम	ग्राम	ग्राम	सन्धि	विवर	विवर
शरीर-धातु	अस्थि	रुधिर	मज्जमांस	चर्म त्वचा	मेद	वीर्य-ओज	स्नायु	......	रस
पित्तादि प्रकृति	पित्त	श्लेष्मा	पित्त	समधातु	समधातु	कफ	वात	वात	वात
रोग	नेत्र रोग	नेत्र-पीड़ा	रक्त	त्रिदोष	ज्वर	वीर्य-रोग	वातव्याधि	अस्थि-रोग	अस्थि-रोग
ऋतु	ग्रीष्म	वर्षा	ग्रीष्म	शरद	हेमन्त	वसन्त	शिशिर	शिशिर	शिशिर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंग्रेजी जन्म दिनांक के अनुसार महत्वपूर्ण वर्ष

जनवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के लिए १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ४, १३, २२, ३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६वें वर्ष भी महत्वपूर्ण होते हैं। इनका १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका २, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से स्नेह होता है। **जनवरी ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के ३, ८, १२, १७, २१, २६, ३०, ३५, ३९, ४४, ४८, ५३, ५७, ६२, ६६वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जनवरी ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होगा। **जनवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ तथा १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ५, १४, २३ तिथि को जन्मे व्यक्तियों से आकर्षण होता है। **जनवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ विशिष्ट होते हैं तथा ६, १५, २४ तारीख में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ७, १६, २५** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्व के होते हैं। २, ७, १६, २०, २५, २९ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **जनवरी ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनका ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से लगाव होता है। **जनवरी ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए ९, ८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१, ९०वें वर्ष उत्कर्ष के होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २७, ३० तारीख में जन्मे लोगों से आकर्षण होता है।

फरवरी १, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१ तारीखों में जन्मे व्यक्तियों से इनका लगाव होता है। **फरवरी २, ११, २०, २९** में जन्मे व्यक्तियों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति आकर्षण अनुभव करते हैं। **फरवरी ३, १२, २१** को जन्मे व्यक्तियों के ३, १२, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५वें वर्ष उत्कृष्ट होते हैं। ३, १२, २१, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति इनका लगाव होता है। **फरवरी ४, १३, २२** को जन्मे लोगों के मुख्य वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ और ७६ हैं। १, ४, ८, १०, १३, १७, १९, २२, २६, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों से गहरा आकर्षण होगा। **फरवरी ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण हैं। दिनांक ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से गहरा लगाव होगा। **फरवरी ६, १५, २४** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६८, ८७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ६, १५, २४, तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **फरवरी ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२,५६, ६१, ६५ तथा ७० वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। इनके लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ में उत्पन्न लोग विशेष आकर्षण का कारण होते हैं। **फरवरी ८, १७, २६** इनके लिए ४, ८, १३,१७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से इनका गहरा लगाव होता है। **फरवरी ९, १८, २७** ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ इनके जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं तथा ९, १८ तारीख को जन्मे लोगों का ८, ९, १७, १८, २६, २७ तारीख वालों की ओर तथा २७ को जन्मे लोगों का ३, ९, १२, १८, २१, २७ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

मार्च १, १०, १९, २८ में जन्मे लोगों के जीवन के १, ३, ४, १०, १२, १३, १९, २१, २२, २८, ३०, ३१, ३७, ३९, ४०, ४८, ४९, ५०, ५७, ५८, ६४, ६६, ६७, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च २, ११, २०, २९** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ तथा ७, १६, २५, ३४, ४३, ५२, ६१, ७० हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ३, १२, २१, ३०** में जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७, ६६, ७५ होते हैं तथा तारीख ३, ६, ९, १२, १५, २१, २४, २७, ३० में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ४, १३, २२, ३१** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ४, १०, १३, १९, २३, २८, ३१, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ हैं और १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ तारीख में पैदा हुए लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ होते हैं और ३, १२, २१, ३० तारीख में जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **मार्च ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६० तथा ७८ होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **मार्च ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **मार्च ८, १७, २६** में जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६७, ७१, ७६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ४, ८, १२, १३, १७, २१, २२, २६, ३०, ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मार्च ९, १८, २७** में जन्मे लोगों के जीवन के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तथा १, १०, १९, २८ मार्च में जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

अप्रैल १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ३७, ४५, ४६, ५४, ६४, ७२, ७३ होते हैं तथा १, ४, ८, ९, १०, १३, १७, १८, १९, २२, २६, २७, २८, ३१ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण लखते हैं। **अप्रैल २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ९, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ५२, ५४, ६१, ६३, ७०, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। **अप्रैल ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३०, ३३, ३६, ३९, ४२, ४५, ४८, ५१, ५४, ५७, ६०, ६३, ६६, ६९ होते हैं तथा ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ४, १३, २२** में जन्मे लोगों को जीवन के ४, ८, १३, १९, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६९ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं तथा ४, ८, १३, २२, २६ तथा ३१ तारीख में जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **अप्रैल ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ हैं। इनका ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के लिए जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८, ७२ होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अप्रैल ७, १६, २५** जन्मदिन वाले लोगों के लिए ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ तारीख को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **अप्रैल ८, १७, २६** जन्म तिथि वाले लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ८, १३, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७६ होते हैं। ये ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ तारीख में जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **अप्रैल ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ होते हैं। १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है।

मई १, १०, १९, २८ तारीख वालों के लिए १, २, १०, ११, १५, १९, २१, २४, २८, २९, ३३, ३७, ३८, ४२, ४६, ४७, ५१, ५५, ५६, ६०, ६४, ६५, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। इनका १, २, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। **मई २, ११, २०, २९** जन्म तिथि वाले लोगों के भाग्यशाली वर्ष २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९ होते हैं। तारीख १, २, ६, ७, १०, ११, १५, १६, १९, २०, २४, २५, २८, २९ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६, ६९ वर्ष उत्कर्ष वाले होते हैं। ये ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० तारीख को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **मई ४, १३, २२, ३१** जन्म दिन वालों के महत्वपूर्ण वर्ष ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१, ४०, ४२, ४९, ५१, ५८, ६०, ६७, ६९ होते हैं। किसी भी माह की ४, ६, १३, १५, २२, २४, ३१ ता. को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **मई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए भाग्यशाली वर्ष ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ६९, ७७ होते हैं। तारीख ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति खास लगाव होता है। **मई ६, १५, २४** इनके भाग्यशाली वर्ष २, ६, १५, २०, २४, २९, ३३, ३८, ४२, ५१, ५६, ६०, ६५, ६९, ७८ होते हैं। २, ३, ६ मूलांक वाली तारीखों को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। **मई ७, १६, २५** को जन्मे व्यक्तियों को जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५६, ६१, ६९वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। किसी माह की १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **मई ८, १७, २६** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ४, ८, १३ १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं और ४, ८, १३, १७, २२, २६ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **मई ९, १८, २७** को जन्मे व्यक्तियों के विशेष महत्वपूर्ण वर्ष ६, ९, १५, १८, २४, २, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०,६ ३, ६९, ७२ होते हैं और ६, ९, १५, १८, २४, २७ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१, ३२, ३७, ४०, ४१, ४६, ५०, ५५, ५८, ५९, ६४, ६८, ७३ होते हैं तथा १, ४, ५, १०, १३, १४, १९, २२, २३, २८, ३१ तारीख को जन्मे व्यक्तियों से विशेष आकर्षण होता है। **जून २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के २, ४, ५, ११, १३, १४, २०, २२, २३, २९, ३१, ३२, ३८, ४०, ४१, ४७, ४९, ५०, ५६, ५८, ५९, ६६, ६७, ६८ वर्ष महत्वपूर्ण होंगे। **जून ३, १२, २१, ३०** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३०, ३२, ३९, ४१, ४८, ५०, ५७, ५९, ६६, ६८, ७५ होते हैं। ये ३, ५, १२, १४, २१, २३, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण रखते हैं। **जून ४, १३, २२** को जन्मे व्यक्तियों के लिए जीवन के ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१, ३२, ४०, ४९, ५०, ५९, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ४, ५, १३, १४, २२, २३, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ५, १४, २३** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ६९ तथा ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **जून ६, १५, २४** को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६०, ६८, ७८ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। ता. ५, ६, १४, १५, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव रखते हैं। **जून ७, १६, २५** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ६२, ६७ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०,२५, २९ जन्मतिथि वाले लोगों से विशेष लगाव होता है। **जून ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५४, ५९, ६३, ६८ विशेष महत्व के होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं।

जूलाई १, १०, १९, २८ जन्म तिथि वालों को १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१, ३४, ३७, ३८, ४०, ४३, ४७, ४९, ५२, ५५, ५६, ५८, ६१, ६४ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। दि. १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई २, ११, २०, २९** को जन्मे लोगों के वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० अच्छे होते हैं। दि. १, २, ७, १०, ११, १६, १९, २०, २५, २८, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। **जुलाई ३, १२, २१, ३०** जन्मतिथि वालों को ३, १२, १६, २०, २१, २५, ३०, ३४, ३९, ४३, ४८, ५२, ५७, ६१ वर्ष भाग्यशाली [illegible] को जन्मे व्यक्तियों को ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **जुलाई ५, १४, २३** को जन्मे लोगों को ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्व के होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों से लगाव होता है। **जुलाई ६, १५, २४** के लोगों के जीवन के २, ६, ७, ११, १५, १६, २०, २४, २५, २९, ३३, ३४, ३८, ४२, ४३, ४७, ५१, ५२, ५६, ६०, ६१, ६५, ६९, ७० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। **जुलाई ७, १६, २५** वाले जन्म दिन के लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० तथा ७९वें वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **जुलाई ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७वें वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं. **जुलाई ९, १८, २७** को जन्मे लोगों के लिए १, ९, १०, १८, १९, २७, २८, ३६, ४५, ४६, ५४, ५५, ६३, ६४, ७२वें वर्ष अति महत्वपूर्ण होते हैं तथा ८, ९, २७ तारीखों में जन्मे लोगों के प्रति विशेष अकर्षण होता है।

अगस्त १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ४९, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३, ७६ महत्वपूर्ण वर्ष होते हैं। ये दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। **अगस्त २, ११, २०, २९** को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। इनके दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। **अगस्त ३, १२, २१, ३०** को जन्मे लोगों के लिए १, ३, १०, १२, १९, २१, २८, ३०,३७, ३९, ४६, ४८, ५५, ५७, ६४, ६६ वर्ष भाग्यशाली होते हैं। **अगस्त ४, १३, २२, ३१** को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३८, ४०, ४९, ५५, ५८, ६४, ७३ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति विशे: रूप से आकर्षित होते हैं। **अगस्त ५, १४, २३** को जन्मे लोगों के लिए ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं तथा ५, १४, २३ तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ६, १५, २४** वाले लोगों को १, ६, १०, १५, १९, २४, २८, ३३, ३७, ४२, ४६, ५१, ५५, ६०, ६४, ६९ वर्ष महत्व के होते हैं। दि. १, ४, १०, १३, १९, २२, २८ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। **अगस्त ७, १६, २३** को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७०, ७४ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। **अगस्त ८, १७, २६** को जन्मे लोगों के लिए ४, १३, २२

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३१, ४०, ४९, ५८, ६७, ७६ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं तथा ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ता. में जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। अगस्त ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ९, १०, १८, १९, २७, २८ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण का अनुभव करते हैं।

सितम्बर १, ९, १०, १९, २८ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के १, १०, १९, २८, ३७, ४६, ५५, ६४, ७३ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. १, २, ४, ७, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। सितं. २, ११, २०, २९ जन्मदिन वालों को २, ११, २०, २९, ३८, ४७, ५६, ६५, ७४ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. २, ७, ११, १६, २०, २५ और २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण अनुभव करते हैं। सितं. ३, १२, २१, ३० को जन्मे लोगों के ३, १२, २१, ३०, ४८, ५७, ६६, ७५ वर्ष महत्व के होते हैं। ३, ५, ६ मूलांक वाली तिथियों में जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६ को जन्मे लोगों से आकर्षण रखते हैं। सितं. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७ वर्ष महत्त्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षण का अनुभव करते हैं। सितं. ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के जीवन के ५, ६, १४, १५, २३, २४, ३२, ३३, ४१, ४२, ५०, ५१, ५९, ६० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ५, ६, २३, २४, २५ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव रखते हैं। सितं. ७, १६, २५ को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५ विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। सितं. ८, १७, २६ तिथि को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं तथा दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। सितं. ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९ के क्रम में जन्मे लोगों से इनका विशेष लगाव होता है।

अक्टू. १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के १, ६, ८, १०, १५, १७, १९, २४, २६, २८, ३३, ३५, ३७, ४२, ४४, ५१, ५३, ५५, ६०, ६२, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ४, ६, ८, १०, १३, १५, १७, १९, २२, २४, २६, २८, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति आकर्षित होते हैं। अक्टू. २, ११, २०, २९ को जन्मे लोगों के लिए २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। अक्टू. ३, १२, २१, ३० को जन्मे लोगों के लिए ३, [illegible] भाग्यशाली होते हैं। दि. ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। अक्टू. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ४९, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ६७, ८० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। अक्टू. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ६८, ७७, ८६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। ता. ५, ६, ८, १४, १५, १७, २३, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। अक्टू. ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के लिए ६, १५, २४, ३३, ४२, ५१, ६०, ६९ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। अक्टू. ७, १६, २५ को जन्मे लोगों के जीवन के उत्कर्ष वर्ष २, ७, ११, १६, २०, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दि. २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण रखते हैं। अक्टू. ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के उत्कर्ष के ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१ वर्ष होते हैं। दिनांक ८, १७, २६ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। अक्टू. ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ होते हैं। दि. ६, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है।

नवम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के लिए १, ४, १०, १३, १९, २२, २८, ३१, ३७, ४०, ४६, ५५, ५८, ६४, ६७, ७३ विशेष महत्व के होते हैं। दिनांक १, २, ४, ७, १०, ११, १३, १६, १९, २०, २२, २५, २८, २९, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष लगाव होता है। नवम्बर २, ११, २०, २९ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष २, ७, ११, १६, २५, २९, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ६१, ६५, ७० होते हैं। दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। नवम्बर ३, १२, २१, ३० को जन्मे लोगों के लिए ३, ९, १२, १८, २१, २७, ३०, ३६, ४८, ५४, ५७, ६३, ६६, ७२, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, १२, १८, २१, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। नवम्बर ४, १३, २२ को जन्मे लोगों के जीवन के वर्ष ४, ८, १३, १७, १८, २२, २६, २७, ३१, ३५, ३६, ४०, ४४, ४५, ४९, ५३, ५४, ५८, ६२, ६३, ६७ और ७१ महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, ९, १३, १७, १८, २२, २६, २७ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत ही लगाव होता है। नवं. ५, १४, २३ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ५, ९, १४, १८, २३, २७, ३२, ३६, ४१, ४५, ५०, ५८, ६३, ६८, ७२ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ५, ९, १४, १८, २३, २७ को जन्मे व्यक्तियों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। नवम्बर ६, १५, २४ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के ६, ९, १५, १८, २४, २७, ३३, ३६, ४२, ४५, ५१, ५४, ६०, ६३, ६९ वर्ष अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ६, ९, १५, १८, २४, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष लगाव होता है। नवम्बर ७, १६, २५ को जन्मे लोगों के जीवन के २, ७, ११, १६, १८, २०, २५, २७, २९, ३४, ३६, ३८, ४३, ४५, ४७, ५२, ५४, ५६, ६१, ६३, ६५, ७०, ७२ वर्ष विशेष महत्व के होते हैं। इन लोगों का दिनांक २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। नवम्बर ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१, ३५, ४०, ४४, ५३, ५८, ६२, ६७, ७१, ७६ वर्ष अत्यन्त महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षित होते हैं। नवं. ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२ वर्ष बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

दिसम्बर १, १०, १९, २८ को जन्मे लोगों के जीवन के महत्वपूर्ण वर्ष १, ७, १०, १६, १९, २४, २८, ३४, ३७, ४३, ४६, ५२, ५५, ६१, ६४, ७० होते हैं तथा १, ३, १०, १२, १९ २१, २८, ३० तारीख को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दिसम्बर २, ११, २०, २९ को जन्मे लोगों के लिए २, ३, ७, ११, १२, १६, २१, २५, २९, ३०, ३४, ३८, ३९, ४३, ४७, ४८, ५२, ५७, ६१, ६५, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. २, ३, ७, ११, १२, १६, २०, २१, २५, २९, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। दिसम्बर ३, १२, २१, ३० को जन्मे लोगों के जीवन के ३, १२, २१, ३०, ३९, ४८, ५७,६६, ७५ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दि. ४, १३, २२, ३१ को जन्मे लोगों के जीवन के ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१,३५, ४०, ४४,४९, ५२, ५८, ६२, ६७, ७१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दि. १, ३, ४, ८, १०, १२, १३, १७, १९, २१, २२, २६, २८, ३० को जन्मे लोगों से विशेष आकर्षण होता है। दिसं. ५, १४, २३ को जन्मे लोगों के जीवन के ५, १४, २३, ३२, ४१, ५०, ५९, ६८, ७७ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिनांक ३, ६, १२, १४, २१, २३ को जन्मे लोगों के प्रति बहुत आकर्षित होते हैं। दिसम्बर ६, १५, २४ को जन्मे लोगों के लिए ३, ६, १२, १५, २१, २४, ३०, ३३, ३९, ४२, ४८, ५१, ५७, ६०, ६६ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षित होते हैं। दिसम्बर ७, १६, २५ को जन्मे व्यक्तियों के जीवन के २, ७, ११, १६, २०, २५, ३४, ३८, ४३, ४७, ५२, ५६, ७० वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिसम्बर २, ७, ११, १६, २०, २५, २९ को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है। दिसम्बर ८, १७, २६ को जन्मे लोगों के लिए ८, १७, २६, ३५, ४४, ५३, ६२, ७१, ८० वर्ष विशेष महत्वपूर्ण होते हैं। दिसम्बर ४, ८, १३, १७, २२, २६, ३१ को जन्मे व्यक्तियों से विशेष लगाव होता है। दिसम्बर ९, १८, २७ को जन्मे लोगों के लिए ९, १८, २७, ३६, ४५, ५४, ६३, ७२, ८१ वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं। दिसम्बर ३, ६, ९, १२, १५, १८, २१, २४, २७, ३० को जन्मे लोगों के प्रति विशेष आकर्षण होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा गणित

ज्योतिषियों को फल कथन करने के लिए दशा गणित करने की आवश्यकता होती है। दशा तथा गोचर की सहायता से ही भविष्य कथन किया जाता है, इसके लिए जन्म समय पर किस ग्रह की कौन सी दशा चल रही है और उसकी कितनी अवधि समाप्त हो गई है तथा कितनी भोग्य रहती है। इसका यदि ठीक गणित नहीं किया गया तो भविष्य कथन भी अशुद्ध रहेगा, इसलिए यह आवश्यक है कि दशा का भोग्य ठीक निकाला जाए। परन्तु देखा गया है कि एक ही व्यक्ति की एक ही समय स्थान की एक से अधिक ज्योतिषियों द्वारा बनाई गई जन्मपत्री में दशा का भोग्य काल बहुधा एक जैसा नहीं मिलता। अधिकांश ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य काल भयात भभोग के द्वारा निकालते हैं। भयात भभोग अर्थात् नक्षत्र का मान और जन्म समय तक नक्षत्र का कितना अंश व्यतीत हो गया है, इसको भयात भभोग कहते हैं। पंचांगों में नक्षत्र का मान घड़ी पलों में दिया रहता है और पंचांग जिस स्थान विशेष के अक्षांश पर बना होता है, नक्षत्र का घड़ी पलों का मान भी उसी स्थान के लिए होता है। अब ज्योतिषी को चाहिए कि जन्मपत्री बनाते समय वह तिथि, वार, नक्षत्र, योग, करण आदि सभी मानों को स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करें, परन्तु अधिकांश ज्योतिषी ऐसा नहीं करते। इस कारण गणित में अन्तर रहता है। भयात भभोग से चन्द्रस्पष्ट की विधि हम यहां पर दे रहे हैं।

आजकल स्तरीय पंचांग चित्रा पक्षीय केतकी दृक् गणित पद्धति से बनाये जाते हैं। इनका गणित शुद्ध व सही माना जाता है, परन्तु अभी भी कुछ पंचांग पुरानी पद्धति से ही चिपके हुए हैं। पुरानी पद्धति से गणित करने पर काफी अन्तर आता है। २०-२५ वर्ष पहले के तो प्राय: सभी पंचांग पुरानी पद्धति पर ही बने हुए मिलते हैं। आजकल कुछ पंचांगों में तिथि नक्षत्र आदि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है। यह घंटे-मिनटों का समय भारतीय स्टैण्डर्ड समय में होने से भारत के सभी स्थानों के लिए एक सा होता है और भयात भभोग यदि घड़ी पलों के स्थान पर इन घंटे-मिनटों के आधार पर बनाया जाए तो दशा गणित भारत के सभी स्थानों के लिए एक जैसा तथा सही आयेगा। जहां नक्षत्रादि का मान घड़ी पलों में दिया हो वहां उसे स्थानीय मान में परिवर्तित करके ही गणित करना चाहिए। पंचांग परिवर्तन पद्धति इस पंचांग में पृष्ठ ९८ पर दी हुई है। आर्यभट्ट पंचांग में तिथ्यादि का मान घंटे-मिनटों में भी दिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय वेधशाला ग्रीनविच से प्रतिदिन शून्यकाल के ग्रहस्पष्ट प्रसारित किये जाते हैं। यहां ५-३० प्रात:काल के समय के ग्रहस्पष्ट भारत के लिए होते हैं। ग्रीनविच से भारत के समय का अन्तर साढ़े पांच घंटे का है। भारत के प्राय: सभी स्तरीय पंचांगों में यही ग्रहस्पष्ट दिये जाते हैं। आजकल कम्प्यूटरों से जन्मपत्री गणित भी इन्हीं पर आधारित होता है। प्राय: सभी प्रौढ़ ज्योतिषीगण दशा का भुक्त भोग्य भयात भभोग के स्थान पर चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से निकालते हैं और कम्प्यूटर भी इसी पद्धति पर गणित करता है। इस प्रकार निकाली गई दशायें ठीक होती हैं। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर चन्द्रस्पष्ट से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालने से सहायता करने वाली एक विस्तृत सारिणी आर्यभट्ट पंचांग में सम्मिलित की गई है। इसकी सहायता से ...

चन्द्र स्पष्ट

जन्मपत्री बनाते समय सभी ग्रहों के जन्म समय का स्पष्ट किया जाता है, दशा गणित के लिए चन्द्रमा का स्पष्ट करना आवश्यक होता है। पंचांग में प्रतिदिन का प्रात: ५-३० का चन्द्रस्पष्ट दिया रहता है। प्रात: ५-३० से जन्म समय तक कितने घंटे-मिनट बीत चुके हैं, यह जानने के लिए जन्म समय में से ५-३० घटाना होता है। दोपहर बारह बजे के बाद के घंटों में १२ जोड़कर और रात के बारह बजे के बाद के घंटों में २४ जोड़कर लिखते हैं। फिर उसमें से ५-३० घटाने से ५-३० प्रात: से जन्म समय तक की अवधि घंटे-मिनटों में प्राप्त हो जाती है। मान लो जन्म समय किसी भी महीने की १५ तारीख को ९-४५ रात्रि का है तो २१-४५ में से ५-३० घटाने पर १६ घंटा १५ मिनट अर्थात् ९७५ मि. भुक्त अवधि हुई। अब चन्द्रमा की एक दिन अर्थात् २४ घंटे या १४४० मिनट की गति ज्ञात की। १६ तारीख को ५-३० प्रात: के चन्द्रस्पष्ट में से १५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट घटाने से चन्द्रमा की एक दिन की गति ज्ञात की जा सकती है।

	राशि	अंश	कला
१६ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	२१	५४
१५ तारीख का चन्द्रस्पष्ट ५-३० प्रात:	६	१०	०२
२४ घंटे की गति	०	११	५२

११ अंश ५२ कला अर्थात् ७१२ कला — ७१२ कला

१४४० मिनट में चन्द्रमा की गति—

तो ९७५ मिनट में चन्द्रमा की गति $\frac{७१२\times९७५}{१४४०}$

=६९४२००÷१४४०=४८२ कला =८ अंश २ कला

	राशि	अंश	कला
१५ तारीख ५-३० प्रात: का चन्द्रस्पष्ट	६	१०	०२
प्रात: ५-३० से रात्रि ९-४५ तक की गति	०	८	०२
१५ तारीख ९-४५ जन्म समय पर चन्द्रस्पष्ट	६	१८	०४

चन्द्रस्पष्ट की एक और सरल विधि निम्न प्रकार से भी है—

	राशि	अंश	कला
२४ घंटे की गति	०	११	५२
१२ घंटे की गति (२ से भाग किया)	०	५	५६
४ घंटे की गीत (३ से भाग किया)	०	१	५९
०-१५ घंटे की गति (१६ से भाग किया)	०	०	०७
१६-१५ घंटे की गति	०	८	०२
	+६	१०	०२
	६	१८	०४

चन्द्रमा की २४ घंटे की गति जन्म समय पर चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि में लेना चाहिए। यदि प्रात: ५-३० और जन्म समय के मध्य चन्द्रमा ने राशि बदल दी हो तो चन्द्रमा की गति उसी राशि की लेनी चाहिए। चन्द्रमा की गति प्रत्येक राशि में भिन्न होती है। चन्द्रमा एक राशि में ... आगे-पीछे की तारीखों में चन्द्रमा जन्म की राशि में हो उनका ही ...

CC-0.In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

क्रमांक १

चन्द्र स्पष्ट

सर्वर्क्ष	५३ ०	५३ ६	५३ ९	५३ १३	५३ १६	५३ २०	५३ २३	५३ २७	५३ ३०	५३ ३४	५३ ३८	५३ ४१	५३ ४५	५३ ४८	५३ ५	५३ ५६	५३ ५९	५४ ३	५४ ७	५४ १०
गति	१५ ५	१५ ४	१५ ३	१५ २	१५ १	१५ ०	१४ ५९	१४ ५८	१४ ५७	१४ ५६	१४ ५५	१४ ५४	१४ ५३	१४ ५२	१४ ५१	१४ ५०	१४ ४९	१४ ४८	१४ ४७	१४ ४६
सर्वर्क्ष	५४ १४	५४ १८	५४ २१	५४ २५	५४ २९	५४ ३२	५४ ३७	५४ ४०	५४ ४४	५४ ४८	५४ ५१	५४ ५५	५४ ५९	५५ ३	५५ ६	५५ ११	५५ १४	५५ १७	५५ २१	५५ २५
गति	१४ ४५	१४ ४४	१४ ४३	१४ ४२	१४ ४१	१४ ४०	१४ ३९	१४ ३८	१४ ३७	१४ ३६	१४ ३५	१४ ३४	१४ ३३	१४ ३२	१४ ३१	१४ ३०	१४ २९	१४ २८	१४ २७	१४ २६
सर्वर्क्ष	५५ २९	५५ ३३	५५ ३६	५५ ४०	५५ ४४	५५ ४८	५५ ५२	५६ ५६	५६ ०	५६ ४	५६ ८	५६ १२	५६ १६	५६ २०	५६ २४	५६ २८	५६ ३२	५६ ३६	५६ ४०	५६ ४०
गति	१४ २५	१४ २४	१४ २३	१४ २२	१४ २१	१४ २०	१४ १९	१४ १८	१४ १७	१४ १६	१४ १५	१४ १४	१४ १३	१४ १२	१४ ११	१४ १०	१४ ९	१४ ८	१४ ७	१४ ६
सर्वर्क्ष	५६ ४८	५६ ५२	५६ ५६	५७ ०	५७ ४	५७ ८	५७ १२	५७ १६	५७ २०	५७ २४	५७ २८	५७ ३२	५७ ३६	५७ ४१	५७ ४५	५७ ५०	५७ ५४	५७ ५८	५८ २	५८ ६
गति	१४ ५	१४ ४	१४ ३	१४ २	१४ १	१४ ०	१३ ५९	१३ ५८	१३ ५७	१३ ५६	१३ ५५	१३ ५४	१३ ५३	१३ ५२	१३ ५१	१३ ५०	१३ ४९	१३ ४८	१३ ४७	१३ ४६
सर्वर्क्ष	५८ ११	५८ १५	५८ १९	५८ २३	५८ २८	५८ ३२	५८ ३६	५८ ४०	५८ ४५	५८ ४९	५८ ५४	५८ ५८	५९ ०	५९ ७	५९ ११	५९ १६	५९ २०	५९ २४	५९ २९	५९ ३३
गति	१३ ४५	१३ ४४	१३ ४३	१३ ४२	१३ ४१	१३ ४०	१३ ३९	१३ ३८	१३ ३७	१३ ३६	१३ ३५	१३ ३४	१३ ३३	१३ ३२	१३ ३१	१३ ३०	१३ २९	१३ २८	१३ २७	१३ २६
सर्वर्क्ष	५९ ३८	५९ ४२	५९ ४७	५९ ५१	५९ ५५	५९ ०	६० ४	६० ९	६० १३	६० १८	६० २२	६० २७	६० ३१	६० ३६	६० ४१	६० ४६	६० ५०	६० ५५	६० ५९	६१ ४
गति	१३ २५	१३ २४	१३ २३	१३ २२	१३ २१	१३ २०	१३ १९	१३ १८	१३ १७	१३ १६	१३ १५	१३ १४	१३ १३	१३ १२	१३ ११	१३ १०	१३ ९	१३ ८	१३ ७	१३ ६
सर्वर्क्ष	६१ ८	६१ १३	६१ १७	६१ २२	६१ २७	६१ ३२	६१ ३७	६१ ४१	६१ ४६	६१ ५१	६१ ५६	६२ १	६२ ६	६२ १०	६२ १५	६२ २०	६२ २५	६२ ३०	६२ ३५	६२ ३९
गति	१३ ५	१३ ४	१३ ३	१३ २	१३ १	१३ ०	१२ ५९	१२ ५८	१२ ५७	१२ ५६	१२ ५५	१२ ५४	१२ ५३	१२ ५२	१२ ५१	१२ ५०	१२ ४९	१२ ४८	१२ ४७	१२ ४६
सर्वर्क्ष	६२ ४४	६२ ४९	६२ ५४	६२ ५९	६३ ४	६३ ९	६३ १४	६३ १९	६३ २४	६३ २९	६३ ३४	६३ ३९	६३ ४४	६३ ४९	६३ ५४	६३ ०	६३ ५	६३ १	६४ १५	६४ २०
गति	१२ ४५	१२ ४४	१२ ४३	१२ ४२	१२ ४१	१२ ४०	१२ ३९	१२ ३८	१२ ३७	१२ ३६	१२ ३५	१२ ३४	१२ ३३	१२ ३२	१२ ३१	१२ ३०	१२ २९	१२ २८	१२ २७	१२ २६
सर्वर्क्ष	६४ २६	६४ ३१	६४ ३६	६४ ४१	६४ ४६	६४ ५२	६४ ५७	६५ ३	६५ ८	६५ १३	६५ १८	६५ २४	६५ २९	६५ ३४	६५ ४०	६५ ४५	६५ ५२	६५ ५६	६५ १	६६ ७
गति	१२ २५	१२ २४	१२ २३	१२ २२	१२ २१	१२ २०	१२ १९	१२ १८	१२ १७	१२ १६	१२ १५	१२ १४	१२ १३	१२ १२	१२ ११	१२ १०	१२ ९	१२ ८	१२ ७	१२ ६
सर्वर्क्ष	६६ १२	६६ १८	६६ २३	६६ २९	६६ ३४	६६ ४०	६६ ४६	६६ ५२	६६ ५९	६७ ५	६७ ११	६७ १६	६७ २३	६७ ३०	६७ ३७	६७ ४३	६७ ५०	६७ ५७	६८ ३	+ +
गति	१२	१२	१२	१२	१२	१२	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	+

चन्द्र स्पष्ट सारणी विधि-(१) भयात भभोग निकालना-६०।० में गत नक्षत्र के घटी-पल घटा देवें तथा वर्तमान नक्षत्र के घटी पल जोड़ देवें यह भभोग होगा, तथा ६।० में से घटाये अंकों के घटी पलों में इष्ट घटिका जोड़े तो भयात होगा। (२) भभोग के घटी पल अंकों को चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ में देखें, उसमें भभोग घटीपल अंक तुल्य या समकक्ष अङ्क के नीचे जो गति दी है, उससे भयात घटी पलों में गुणा करें, ६० के भाग से अंशात्मक ३ अंक लेवें, इनको गत नक्षत्र सारणी (चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम २) के अंकों में जोड़ देवें तो स्पष्ट चन्द्रमा होगा। (३) गति स्पष्ट विधि-चन्द्र स्पष्ट सारणी क्रम १ से प्राप्त जो गति है उसकी केवल कला को ६० से गुणा कर गुणनफल में गति के विकलांक जोड़ देवें यह चन्द्र स्पष्ट गति मध्यम मानेन स्पष्ट रहेगी।

चन्द्र स्पष्ट साधक सारणी

क्रमांक २

अश्विन	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिर	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्ले
० १३ २० ०	० २६ ४० ०	१ १० ० ०	१ २३ २० ०	२ ६ ४० ०	२ २० ० ०	३ ३ २० ०	३ १६ ४० ०	४ ० ० ०
मघा	**पू.फा.**	**उ.फा.**	**हस्त**	**चित्रा**	**स्वाति**	**विशाखा**	**अनुराधा**	**ज्येष्ठा**
४ १३ २० ०	४ २६ ४० ०	५ १० ० ०	५ २३ २० ०	६ ६ ४० ०	६ २० ० ०	७ ३ २० ०	७ १६ ४० ०	८ ० ० ०
मूल	**पू.षा.**	**उ.षा.**	**श्रवण**	**धनिष्ठा**	**शतभिषा**	**पू.भा.**	**उ.भा.**	**रेवती**
८ १३ २० ०	८ २६ ४० ०	९ १० ० ०	९ २३ २० ०	१० ६ ४० ०	१० २० ० ०	११ ३ २० ०	११ १६ ४० ०	० ० ० ०

उदाहरण-यथा भभोग ६५।५० के नीचे दी गई चन्द्र गति १२।०९ को और भभात् १९।०३ को गुणा किया (१२।०९)×(१९।०३)=२३१°।२७'।२७" या ३°।५१'।२७" इनको गत नक्षत्र विशाखा का मान सारिणी से लेकर युक्त किया।

गुणनफल	=	३।५१।२७
गत नक्षत्र विशाखा का मान	=	७।०३।२०।००
चन्द्र स्पष्ट प्राप्त हुआ	=	७।०७।११।२७

चन्द्र गति १२।०९ में केवल अंश १२ को ६० से गुणा कर कला जोड़ दिया।

१२×६०=७२०+९=७२९ कला चंद्र गति हुई। गणितागत एवं इस विधि द्वारा चन्द्र स्पष्ट में [illegible] नहीं होने से जन्मपत्रादि हेतु यह सामग्री उपयुक्त तथा शीघ्र ही काम [illegible] श्रम विशेष की आवश्यकता नहीं रही।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आपका चन्द्र स्पष्ट ६-१८-४ है, इससे विंशोत्तरी दशा का ज्ञान किस प्रकार होगा, यह समझाते हैं। चन्द्रमा तुला राशि में है इसलिए सारिणी के तीसरे कोष्ठक में जिसके ऊपर मिथुन, तुला व कुम्भ लिखा है वह देखना होगा। चन्द्रमा जिस राशि में हो उसी राशि से सम्बन्धित कोष्ठक को देखना चाहिए। प्रथम कोष्ठक में अंश कला दिए गए हैं। इसमें १८ अंश के सामने तुला राशि वाले तीसरे कोष्ठक में राहु की महादशा के २ वर्ष ८ मास १२ दिन भोग्य रहते हैं। हमारे उदाहरण का चन्द्रमा स्पष्ट ६-१८-०४ है। अब ४ कला के लिए हमें पूरक सारिणी में राहु दशा के अन्तर्गत ४ कला के सामने देखने पर ज्ञात हुआ कि ४ कला पर ३२ दिन का अन्तर आता है। जैसे-२ चन्द्रमा के अंश कला बढ़ते जाते हैं, दशा का भुक्त काल बढ़ता जाता है और भोग्य काल कम होता जाता है, अतएव २-८-१२ में से ०-१-२ घटा दिया। तो ६-१८-०४ स्पष्ट चन्द्र पर राहु की भोग्य दशा २-७-१० अर्थात् २ वर्ष ७ मास १० दिन निकली।

चन्द्रमा के राशि अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य बोधक सारिणी

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
०	०	केतु	७	—	—	सूर्य	४	६	—	मंगल	३	६	—	गुरु	४	—	—
०	१०		६	१०	२९		४	५	३		३	४	२९		३	९	१८
०	२०		६	९	२७		४	४	६		३	३	२७		३	७	६
०	३०		६	८	२६		४	३	९		३	२	२६		३	४	२४
०	४०		६	७	२४		४	२	१२		३	१	२४		३	२	१२
०	५०		६	६	२३		४	१	१५		३	—	२३		३	—	—
१	०		६	५	२१		४	—	१८		२	११	२१		२	९	१८
१	१०		६	५	२०		३	११	२१		२	१०	२०		२	७	६
१	२०		६	३	१८		३	१०	२४		२	९	१८		२	४	२४
१	३०		६	२	१७		३	९	२७		२	८	१७		२	२	१२
१	४०		६	१	१५		३	९	—		२	७	१५		२	—	—
१	५०		६	—	१४		३	८	३		२	६	१४		१	९	१८
२	०		५	११	१२		३	७	६		२	५	१२		१	७	६
२	१०		५	१०	११		३	६	९		२	४	११		१	४	२४
२	२०		५	९	९		३	५	१२		२	३	९		१	२	१२
२	३०		५	८	८		३	४	१५		२	२	८		१	—	—
२	४०		५	७	६		३	३	१८		२	१	६		—	९	१८
२	५०		५	६	५		३	२	२१		२	—	५		—	७	६
३	०		५	५	३		३	१	२४		१	११	३		—	४	२४
३	१०		५	४	२		३	—	२७		१	१०	२		—	२	१२
३	२०		५	३	—		३	—	—		१	९	०	शनि	१९	०	०
३	३०		५	१	२९		२	११	३		१	७	२९		१८	९	४
३	४०	केतु	५	—	२७	सूर्य	२	१०	६	मंगल	१	६	२७	शनि	१८	६	९
३	५०		४	११	२६		२	९	९		१	५	२६		१८	३	१३
४	०		४	१०	२४		२	८	१२		१	४	२४		१८	०	१८
४	१०		४	९	२३		२	७	१५		१	३	२३		१७	९	२२
४	२०		४	८	२१		२	६	१८		१	२	२१		१७	६	२७
४	३०		४	७	२०		२	५	२१		१	१	२०		१७	४	१
४	४०		४	६	१८		२	४	२४		१	—	१८		१७	१	६
४	५०		४	५	१७		२	३	२७		—	१०	१७		१६	१०	१०
५	०		४	४	१५		२	३	—		—	१०	१५		१६	७	१५
५	१०		४	३	१४		२	२	३		—	९	१४		१६	४	१९
५	२०		४	२	१२		२	१	६		—	८	१२		१६	१	२४
५	३०		४	१	११		२	—	९		—	७	११		१५	१०	२८
५	४०		४	—	९		१	११	१२		—	६	९		१५	८	३
५	५०		३	११	८		१	१०	२५		—	५	८		१५	५	७
६	०		३	१०	६		१	९	१८		—	४	६		१५	२	१२
६	१०		३	९	५		१	८	२१		—	३	५		१४	११	१६
६	२०		३	८	३		१	७	२४		—	२	३		१४	८	२१
६	३०		३	७	२		१	६	२७		—	१	१		१४	५	२५
६	४०		३	६	—		१	६	—	राहु	१८	—	—		१४	३	—
६	५०		३	४	२९		१	५	३		१७	९	९		१४	—	४
७	०		३	३	२७		१	४	६		१७	६	१८		१३	९	९
७	१०		३	२	२६		१	३	९		१७	३	२७		१३	६	१३
७	२०		३	१	२४		१	२	१२		१७	१	६		१३	३	१८
७	३०		३	—	२३		१	१	१५		१६	१०	१५		१३	—	२२
७	४०		२	११	२१		१	०	१८		१६	७	२४		१२	९	२७
७	५०		२	१०	२०		—	११	२१		१६	५	३		१२	६	१
८	०		२	९	८		—	१०	२४		१६	२	१२		१२	४	६
८	१०		२	८	१७		—	९	२७		१५	११	२१		१२	१	१०
८	२०		२	७	१५		—	९	—		१५	९	—		११	१०	१५
८	३०		२	६	१४		—	८	३		१५	६	९		११	७	१९
८	४०		२	५	१२		—	७	६		१५	३	१८		११	४	२४
८	५०		२	४	११		—	६	९		१५	—	२७		११	१	२८
९	०		२	३	९		—	५	१२		१४	१०	६		१०	११	३
९	१०		२	२	८		—	४	१५		१४	७	१५		१०	८	७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
९	२०	केतु	२	१	६	सूर्य	—	३	१८	राहु	१४	४	२४	शनि	१०	५	१२
९	३०		२	—	५		—	२	२१		१४	२	३		१०	२	१६
९	४०		१	११	३		—	१	२४		१३	११	१२		९	११	२१
९	५०		१	१०	२		—	—	२७		१३	८	२१		९	८	२५
१०	०		१	९	—	चन्द्र	१०	—	—		१३	६	—		९	६	—
१०	१०		१	७	२९		९	१०	१५		१३	३	९		९	३	४
१०	२०		१	६	२७		९	९	—		१३	—	१८		९	—	९
१०	३०		१	५	२६		९	७	१५		१२	९	२७		८	९	१३
१०	४०		१	४	२४		९	६	—		१२	७	६		८	६	१८
१०	५०		१	३	२३		९	४	१५		१२	४	१५		८	३	२२
११	०		१	२	२१		९	३	—		१२	१	२४		८	०	२७
११	१०		१	१	२०		९	१	१५		११	११	३		७	१०	१
११	२०		१	—	१८		९	—	—		११	८	१२		७	७	६
११	३०		—	११	१७		८	१०	१५		११	५	२१		७	४	१०
११	४०		—	१०	१५		८	९	—		११	३	—		७	१	१५
११	५०		—	९	१४		८	७	१५		११	—	९		६	१०	१९
१२	०		—	८	१२		८	६	—		१०	९	१८		६	७	२४
१२	१०		—	७	११		८	४	१५		१०	६	२७		६	४	२८
१२	२०		—	६	९		८	३	—		१०	४	६		६	२	३
१२	३०		—	५	८		८	१	१५		१०	१	१५		५	११	७
१२	४०		—	४	६		८	—	—		९	१०	२४		५	८	१२
१२	५०		—	३	५		७	१०	१५		९	८	३		५	५	१६
१३	०		—	२	३		७	९	—		९	५	१२		५	२	२१
१३	१०		—	१	१		७	७	१५		९	२	२१		४	११	२५
१३	२०	शुक्र	२०	—	—		७	६	—		९	—	—		४	९	—
१३	३०		१९	९	—		७	४	१५		८	१०	९		४	६	४
१३	४०		१९	६	—		७	३	—		८	६	१८		४	३	९
१३	५०		१९	३	—		७	१	१५		८	३	२७		४	—	१३
१४	०		१९	—	—		७	—	—		८	१	६		३	९	१८
१४	१०		१८	९	—		६	१०	१५		७	१०	१५		३	६	२२
१४	२०		१८	६	—		६	९	—		७	७	२४		३	३	२७
१४	३०		१८	३	—		६	७	१५		७	५	३		३	१	१
१४	४०		१८	—	—		६	६	—		७	२	१२		२	१०	६
१४	५०		१७	९	—		६	४	१५		६	११	२१		२	७	१०
१५	०		१७	६	—		६	३	—		६	[illegible]	[illegible]		२	४	१४

चन्द्रमा के		चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु				चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर				चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ				चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन			
अंश	कला	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
१५	१०		१७	३	—	चन्द्र	६	१	१५	राहु	६	६	९	शनि	२	१	१९
१५	२०	शुक्र	१७	—	—		६	—	—		६	३	१८		१	१०	२४
१५	३०		१६	९	—		५	१०	१५		६	१	२७		१	७	२८
१५	४०		१६	६	—		५	९	—		५	१०	६		१	५	३
१५	५०		१६	३	—		५	७	१५		५	७	१५		१	२	७
१६	०		१६	—	—		५	६	—		५	४	२४		—	११	१२
१६	१०		१५	९	—		५	४	१५		५	२	३		—	८	१६
१६	२०		१५	६	—		५	३	—		४	११	१२		—	५	२१
१६	३०		१५	३	—		५	१	१५		४	८	२१		—	२	२६
१६	४०		१५	—	—		५	—	—		४	६	—	बुध	१७	—	—
१६	५०		१४	९	—		४	१०	१५		४	३	९		१६	९	१३
१७	०		१४	६	—		४	९	—		४	—	१८		१६	६	२७
१७	१०		१४	३	—		४	७	१५		३	९	२७		१६	४	१०
१७	२०		१४	—	—		४	६	—		३	७	६		१६	१	२४
१७	३०		१३	९	—		४	४	१५		३	४	१५		१५	११	७
१७	४०		१३	६	—		४	३	—		३	१	२४		१५	८	२१
१७	५०		१३	३	—		४	१	१५		२	११	३		१५	६	४
१८	०		१३	—	—		४	—	—		२	८	१२		१५	३	१८
१८	१०		१२	९	—		३	१०	१५		२	५	२१		१५	१	१
१८	२०		१२	६	—		३	९	—		२	३	—		१४	१०	१५
१८	३०		१२	३	—		३	७	१५		२	—	९		१४	७	२८
१८	४०		१२	—	—		३	६	—		१	९	१८		१४	५	१२
१८	५०		११	९	—		३	४	१५		१	६	२७		१४	२	२५
१९	०		११	६	—		३	३	—		१	४	६		१४	—	९
१९	१०		११	३	—		३	१	१५		१	१	१५		१३	१०	२२
१९	२०		११	—	—		३	—	—		—	१०	२४		१३	७	६
१९	३०		१०	९	—		२	१०	१५		—	८	३		१३	४	१९
१९	४०		१०	६	—		२	९	—		—	५	१२		१३	२	३
१९	५०		१०	३	—		२	७	१५		—	२	२१		१२	११	१६
२०	०		१०	—	—		२	६	—	गुरु	१६	—	—		१२	९	—
२०	१०		९	९	—		२	४	१५		१५	९	१८		१२	६	१३
२०	२०		९	६	—		२	३	—		१५	७	६		१२	३	२७
२०	३०		९	३	—		२	१	१५		१५	४	२४		१२	१	१०
२०	४०		९	—	—		२	—	—		१५	२	१२		११	१०	२४
२०	५०		८	९	—		१	१०	१५		१५	—	—		११	८	७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्रमा के अंश	कला	चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२१	०	शुक्र	८	६	—	चन्द्र	१	९	—	गुरु	१४	९	१८	बुध	११	५	२१
२१	१०		८	३	—		१	७	१५		१४	७	६		११	३	४
२१	२०		८	—	—		१	६	—		१४	४	२४		११	०	१८
२१	३०		७	९	—		१	४	१५		१४	२	१२		१०	१०	१
२१	४०		७	६	—		१	३	—		१४	—	—		१०	७	१५
२१	५०		७	३	—		१	१	१५		१३	९	१८		१०	४	२८
२२	०		७	—	—		१	—	—		१३	७	६		१०	२	१२
२२	१०		६	९	—		—	१०	१५		१३	४	२४		९	११	२५
२२	२०		६	६	—		—	९	—		१३	२	१२		९	९	९
२२	३०		६	३	—		—	७	१५		१३	—	—		९	६	२२
२२	४०		६	—	—		—	६	—		१२	९	१८		९	४	६
२२	५०		५	९	—		—	४	१५		१२	७	६		९	१	१९
२३	०		५	६	—		—	३	—		१२	४	२४		८	११	३
२३	१०		५	३	—		—	१	१५		१२	२	१२		८	८	१६
२३	२०		५	—	—	मंगल	७	—	—		१२	—	—		८	६	—
२३	३०		४	९	—		६	१०	२९		११	९	१८		८	३	१३
२३	४०		४	६	—		६	९	२७		११	७	६		८	०	२७
२३	५०		४	३	—		६	८	२६		११	४	२४		७	१०	१०
२४	०		४	—	—		६	७	२४		११	२	१२		७	७	२४
२४	१०		३	९	—		६	६	२३		११	—	—		७	५	७
२४	२०		३	६	—		६	५	२१		१०	९	१८		७	२	२१
२४	३०		३	३	—		६	४	२०		१०	७	६		७	०	४
२४	४०		३	—	—		६	३	१८		१०	४	२४		६	९	१८
२४	५०		२	९	—		६	२	१७		१०	२	१२		६	७	१
२५	०		२	६	—		६	१	१५		१०	—	—		६	४	१५
२५	१०		२	३	—		६	—	१४		९	९	१८		६	१	२८
२५	२०		२	—	—		५	११	१२		९	७	६		५	११	१२
२५	३०		१	९	—		५	१०	११		९	४	२४		५	८	२५
२५	४०		१	६	—		५	९	९		९	२	१२		५	६	९
२५	५०		१	३	—		५	८	८		९	—	—		५	३	२२
२६	०		१	—	—		५	७	६		८	९	१८		५	१	६
२६	१०		—	९	—		५	६	५		८	७	६		४	११	१९
२६	२०		—	६	—		५	५	३		८	४	२४		४	८	३
२६	३०		—	३	—		५	४	२		८	२	१२		४	५	१६
२६	४०	सूर्य	६	—	—		५	३	—		८	—	—		४	३	—

चन्द्रमा के अंश	कला	चन्द्रमा राशि मेष, सिंह, धनु महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि वृष, कन्या, मकर महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि मिथुन, तुला, कुम्भ महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन	चन्द्रमा राशि कर्क, वृश्चिक, मीन महादशा ग्रह	वर्ष	मास	दिन
२६	५०	सूर्य	५	११	३	मंगल	५	१	२९	गुरु	७	९	१८	बुध	४	—	१३
२७	०		५	१०	६		५	—	२७		७	७	६		३	९	२७
२७	१०		५	९	९		४	११	२६		७	४	२४		३	७	१०
२७	२०		५	८	१२		४	१०	२४		७	२	१२		३	४	२४
२७	३०		५	७	१५		४	९	२३		७	—	—		३	२	७
२७	४०		५	६	१८		४	८	२१		६	९	१८		२	११	२१
२७	५०		५	५	२१		४	७	२०		६	७	६		२	९	४
२८	०		५	४	२४		४	६	१८		६	४	२४		२	६	१८
२८	१०		५	३	२७		४	५	१७		६	२	१२		२	४	१
२८	२०		५	३	—		४	४	१५		६	—	—		२	१	१५
२८	३०		५	२	३		४	३	१४		५	९	१८		१	१०	२८
२८	४०		५	१	६		४	२	१२		५	७	६		१	८	१२
२८	५०		५	—	९		४	१	११		५	४	२४		१	५	२५
२९	०		४	११	१२		४	—	९		५	२	१२		१	३	९
२९	१०		४	१०	१५		३	११	८		५	—	—		१	—	२२
२९	२०		४	९	१८		३	१०	६		४	९	१८		—	१०	६
२९	३०		४	८	२१		३	९	५		४	७	६		—	७	१९
२९	४०		४	७	२४		३	८	३		४	४	२४		—	५	३
२९	५०		४	६	२७		३	७	२		४	२	१२		—	२	१७
३०	०		४	६	—		३	६	—		४	—	—		—	—	—

चन्द्र स्पष्ट से विंशोत्तरी दशा भोग्य बोधक पूरक सारिणी

कला	केतु ७ वर्ष मास	दिन	शुक्र २० वर्ष मास	दिन	सूर्य ६ वर्ष मास	दिन	चन्द्रमा १० वर्ष मास	दिन	मंगल ७ वर्ष मास	दिन	राहु १८ वर्ष मास	दिन	गुरु १६ वर्ष मास	दिन	शनि १९ वर्ष मास	दिन	बुध १७ वर्ष मास	दिन
१	०	३	०	९	०	३	०	५	०	३	०	८	०	७	०	९	०	८
२	०	६	०	१८	०	५	०	९	०	६	०	१६	०	१४	०	१७	०	१५
३	०	९	०	२७	०	८	०	१४	०	९	०	२४	०	२२	०	२६	०	२३
४	०	१३	१	६	०	११	०	१८	०	१३	१	२	०	२९	१	४	१	१
५	०	१६	१	१५	०	१४	०	२३	०	१६	१	११	१	६	१	१३	१	८
६	०	१९	१	२४	०	१६	०	२७	०	१९	१	१९	१	१३	१	२१	१	१६
७	०	२२	२	३	०	१९	१	२	०	२२	१	२७	१	२०	२	०	१	२४
८	०	२५	२	१२	२	२२	१	६	०	२५	२	५	१	२८	२	८	२	१
९	०	२८	२	२१	०	२४	१	११	०	२८	२	१३	२	५	२	१७	२	६
१०	१	१	३	०	०	२७	१	१५	१	२	२	२१	२	१२	२	२६	२	१७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विंशोत्तरी दशा पद्धति

ज्योतिष शास्त्र में भविष्य कथन के लिये अनेक प्रकार की दशाओं का वर्णन है। महर्षि पाराशर ने ही लगभग ४२ प्रकार की दशाओं का वर्णन किया है। इनमें केवल तीन प्रकार की दशायें ही आजकल प्रयोग में लाई जाती हैं। विंशोत्तरी दशा, अष्टोत्तरी दशा और योगिनी दशा। योगिनी दशा पद्धति में सभी ग्रहों की दशा की एक आवृत्ति ३६ वर्षों में होती है, अष्टोत्तरी में यह अवधि १०८ वर्ष है और विंशोत्तरी दशा पद्धति में १२० वर्ष। अष्टोत्तरी दशा दक्षिण भारत महाराष्ट्र आदि में, योगिनी दशा उत्तर भारत में विशेष रूप से प्रचलित है, विंशोत्तरी दशा पद्धति सर्वत्र सर्वाधिक प्रचलित है। मनुष्य की आयु १२० वर्ष मानकर यह दशा पद्धति बनाई गई है, यह तर्क भी दिया जाता है। परन्तु सूर्यादि सब ग्रहों की दशा अवधि की वर्ष संख्या तथा उनका क्रम वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। इसका विस्तार में विवेचन हमारी पुस्तक ज्योतिष शिक्षा मध्यमा फलित में किया गया है।

ग्रहों की महादशा की अवधि पूर्ण वर्षों में होती है। यथा सूर्य ६, चन्द्रमा १०, मंगल ७, राहु १८, गुरु १६, शनि १९, बुध १७, केतु ७ और शुक्र २० वर्ष। किसी ग्रह की महादशा में पूर्ण अवधि तक उस ग्रह का प्रभाव तो रहता ही है। उस महादशा अवधि में सभी ग्रहों की अन्तर दशायें भी उसी क्रम से चलती हैं। यथा शुक्र की महादशा में प्रथम तीन वर्ष चार मास शुक्र की ही अन्तर दशा रहती है। अब यह ४० मास की अवधि में भी शुक्र का प्रभाव तो सर्वोपरि होता ही है। अन्य सभी ग्रहों की प्रत्यन्तर दशायें भी चलती रहती हैं। इन्हीं प्रत्यन्तर दशाओं का ज्ञान कराने के लिए हम अपने पाठकों के लाभार्थ यह सारिणियां दे रहे हैं। इनका गणित कहीं-कहीं पलों तक भी दिया जाता है। परन्तु घड़ियों तक ही सीमित रखा है। शास्त्रों में प्रत्यन्तर दशा के भी सूक्ष्म दशा तथा प्राण दशा में भाग-विभाग किये गये हैं परन्तु व्यवहार में प्रत्यन्तर दशा तक का ही अधिक प्रचलन है। आजकल कम्प्यूटर से बनी जन्मपत्रियों में तो इसे दिनों तारीखों तक ही सीमित रखा गया है। घण्टों मिनटों सैकिण्डों अर्थात् घटी-पलों तक का गणित विशेष परिस्थितियों में ही किया जाता है। जन्म समय पर दशा का भुक्त भोग्य अर्थात् किस ग्रह की कितनी दशा भोग्य है, किस ग्रह की कौन सी अन्तर दशा का कौन सा प्रत्यन्तर कितना भोग्य है। यह गणित चन्द्रमा के स्पष्ट राशि अंशों से करना चाहिए। यह सारिणी इस पंचांग के पृष्ठ १३८ पर दी हुई है।

विंशोत्तरी महादशा चक्र

ग्रह	सू.	च.	मं.	रा.	वृ	श.	बु.	के.	शु.
वर्ष	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२०

सूर्य महादशा ६ वर्ष

सूर्य की अन्तर दशा

ग्रह	सू	चं	मं	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु
वर्ष	०	०	०	०	०	०	०	०	१
मास	३	६	४	१०	९	११	१०	४	०
दिन	१८	०	६	२४	१८	१२	६	६	०

सूर्य-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	च.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	५	९	६	१६	१४	१७	१५	६	१८
घ.	२४	०	१८	१२	२४	६	१८	१८	०

सूर्य-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	च	मं.	रा.	वृ	श	बु.	के	शु	सू.
मास	०	०	०	०	०	०	०	१	०
दिन	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०	९
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

सूर्य-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा	वृ.	श	बु.	के	शु.	सू.	च.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	१८	१६	१९	१७	७	२१	६	१०
घ.	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०	१८	३०

सूर्य-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	वृ	श.	बु	के	शु	सू	च.	मं
मास	१	१	१	१	०	१	०	०	०
दिन	१८	१३	२१	१५	१८	२४	१६	२७	१८
घ.	३६	१२	१८	५४	५४	०	१२	०	५४

सूर्य-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु	के	शु	सू	च	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	८	१५	१०	१६	१८	१४	२४	१६	१३
घ	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

सूर्य-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु.	सू	च.	मं	रा	वृ
मास	१	१	०	१	०	०	०	१	१
दिन	२४	१८	१९	२७	१७	२८	१९	२१	१५
घ.	९	२७	५७	०	६	३०	५७	१८	३६

सूर्य-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के	शु.	सू	चं	मं	रा	वृ	श
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	१३	१७	२१	१५	२५	१७	२५	१०	१८
घ.	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८	२७

सूर्य-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सू	च.	मं	रा	वृ	श	बु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	७	२१	६	१०	७	१८	१६	१९	१७
घ.	२१	०	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१

सूर्य-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू	च.	मं	रा.	वृ	श.	बु	के
मास	२	०	१	०	१	१	१	१	०
दिन	०	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्रमा महादशा १० वर्ष

चन्द्र अन्तर दशा

ग्रह	च	मं	रा	वृ.	श	बु	के	शु	सू.
वर्ष	०	०	१	१	१	१	०	१	०
मास	१०	७	६	४	७	५	७	८	६
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा	वृ	श	बु	के	शु.	सू
मास	०	०	१	१	१	१	०	१	०
दिन	२५	१७	१५	१०	१७	१२	१७	२०	१५
घ.	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०

चन्द्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श	बु	के.	शु	सू.	च
मास	०	१	०	१	०	०	१	०	०
दिन	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०	१७
घ.	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०	३०

चन्द्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु	के.	शु	सु	च	मं
मास	२	२	२	२	१	३	०	१	१
दिन	२१	१२	२५	१६	१	०	२७	१५	२
घ.	०	०	३०	३०	३०	३०	०	०	०

चन्द्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	च.	मं.	रा.
मास	२	२	२	०	२	०	१	०	२
दिन	४	१६	८	२८	२०	२४	१०	२८	१२
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श	बु	के	शु	सू	च	मं.	रा	वृ
मास	३	२	१	३	०	१	१	२	२
दिन	०	२०	३	५	२८	१७	३	२५	१६
घ	१५	४५	१५	०	३०	३०	१५	३०	०

चन्द्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू.	च	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	२	०	२	०	१	०	२	२	२
दिन	१२	२९	२५	२५	१२	२९	१६	८	२०
घ.	४५	४५	०	०	३०	४५	३०	०	४५

चन्द्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं	मं	रा	वृ.	श	बु
मास	०	१	०	०	०	१	०	१	०
दिन	१२	५	१०	१७	१२	१	२८	३	२९
घ.	१५	०	३०	३०	१५	३०	०	१५	४५

चन्द्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सु	चं	मं.	रा.	वृ	श.	बु.	के.
मास	३	१	१	१	३	२	३	२	१
दिन	१०	०	२०	५	०	२०	५	२५	५
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चन्द्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श	बु	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	१
दिन	९	१५	१०	२७	२४	२८	२५	१०	०
घ	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

भौम (मंगल) महादशा ७ वर्ष

भौम अन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श	बु	के	शु	सु	चं
वर्ष	०	१	०	१	०	०	१	०	०
मास	४	०	११	१	११	४	२	४	७
दिन	२७	१८	६	९	२७	२७	०	६	०

भौम-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा	वृ.	श	बु	के	शु	सु	चं
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घ.	३४	४	३६	१६	५०	३४	३०	२१	१५

भौम-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा	वृ	श	बु	के	शु	सु	च.	मं
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

भौम-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श	बु	के	शु	सू	चं	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	२	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

भौम-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३२	१३	३०	५७	१५	१३	५१	१२

भौम-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के	शु	सू	चं	मं	रा	वृ.	श
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

भौम-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के	शु	सु	च.	मं	रा	वृ.	श.	बु
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घ	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

भौम-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु	सू	चं.	मं	रा	वृ	श	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घ	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

भौम-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सु	चं	मं	रा	बृ.	श	बु	के	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घ	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

भौम-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	च.	मं	रा.	वृ	श	बु	के	शु	सु
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घ	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

राहु महादशा १८ वर्ष

राहु अन्तर दशा

ग्रह	रा	वृ.	श	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं
वर्ष	२	२	२	२	१	३	०	१	१
मास	८	४	१०	६	०	०	१०	६	०
दिन	१२	२४	६	१८	१८	०	२४	०	१८

राहु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु	के.	शु	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	२५	९	३	१७	२६	१२	१८	२१	२६
घ.	४८	३६	५४	४२	४२	०	३६	०	४२

राहु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ	श	बु	के.	शु.	सू.	चं	मं	रा
मास	३	४	४	१	४	१	२	१	४
दिन	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०	९
घ.	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४	३६

राहु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु	के.	शु	सू	च	मं	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	५	४
दिन	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९	३	१६
घ.	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१	५४	४८

राहु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु	के.	शु	सू	चं	मं.	रा.	वृ	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	४
दिन	१०	२३	३	१५	१६	२३	१७	२	२५
घ.	३	३३	०	५४	३०	३३	४२	२४	२१

राहु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु	सू.	चं.	मं	रा	वृ.	श	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	१	१
दिन	२२	३	१८	१	२९	२६	२०	२९	२३
घ.	३	०	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

राहु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	४	५	५	२
दिन	०	२४	०	३	१२	२४	२१	३	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

राहु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१६	२७	१८	१८	१३	२१	१५	१८	२४
घ.	१२	०	५४	३६	१२	१८	५४	५४	०

राहु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	२	२	१	३	०
दिन	१५	१	२१	१२	२५	१६	१	०	२७
घ.	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०	०

राहु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	२	०	१
दिन	२२	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१
घ.	३	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०

गुरु (बृहस्पति) महादशा १६ वर्ष

गुरु अन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
वर्ष	२	२	२	०	२	०	१	०	२
मास	१	६	३	११	८	९	४	११	४
दिन	१८	१२	६	६	०	१८	०	६	२४

गुरु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	३
दिन	१२	१	१८	१४	८	८	४	१४	२५
घटी	२४	३६	४८	४८	०	२४	०	४८	१२

गुरु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	४	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६	१
घटी	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८	३६

गुरु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	३	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२५	१७	२६	१०	८	१७	२	१८	९
घटी	३६	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२

गुरु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	१९	२६	१६	२८	१०	२०	१४	२३	१७
घटी	३६	०	४८	०	३६	२४	४८	१२	३६

गुरु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	४	४	५	४	१
दिन	१०	१८	२०	२६	२४	८	२	१६	२६
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१४	२४	१६	१३	८	१५	१०	१६	१८
घटी	२४	०	४८	१२	२४	३६	४८	४८	०

गुरु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१०	२८	१२	४	१६	८	२८	२०	२४
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

गुरु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	१९	२०	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८
घ.	६	२४	४८	१२	३६	३६	०	४८	०

गुरु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	३	४	४	१	४	१	२	१
दिन	९	२५	१६	२	२०	२४	१३	१२	२०
घ.	३६	१२	४८	२४	२४	०	१२	०	२४

शनि महादशा १९ वर्ष

शनि अन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
वर्ष	३	२	१	३	०	१	१	२	२
मास	०	८	१	२	११	७	१	१०	६
दिन	३	९	९	०	१२	०	९	६	१२

शनि-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	५	२	६	१	३	२	५	४
दिन	२१	३	३	०	२४	०	३	१२	२४
घ.	२८	२५	११	३०	९	१५	११	२७	२४

शनि-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	४	४	५
दिन	१७	२६	२१	२८	२०	२६	२५	९	३
घ.	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२	२५

शनि-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	१	१	२	१
दिन	२३	६	१९	३	२३	२९	२३	३	२६
घ.	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२	१०	३१

शनि-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	१	३	२	५	५	६	५	२
दिन	१०	२७	५	६	२१	२	०	११	६
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

शनि-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१७	२८	१९	२१	१५	२४	१८	१९	२७
घटी	६	३०	५७	१८	३६	९	२७	५७	०

शनि-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	२	२	३	२	१	३	०
दिन	१७	३	२५	१६	०	२०	३	५	२८
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

शनि-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२३	२९	२३	३	२६	२३	६	१९	३
घटी	१७	५१	१२	१०	३१	१७	३०	५७	१५

शनि-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	४	१	५	१	२	१
दिन	३	१६	१२	२५	२९	२१	२१	२५	२९
घटी	५४	४८	२७	२१	५१	०	१८	३०	५१

शनि-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	४	४	१	५	१	२	१	४
दिन	१	२४	९	२३	२	१५	१६	२३	१६
घटी	३६	२४	१२	१२	०	३६	०	१२	४८

बुध महादशा १७ वर्ष

बुध अन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
वर्ष	२	०	२	०	१	०	२	२	२
मास	४	११	१०	१०	५	११	६	३	८
दिन	२७	२७	०	६	०	२७	१८	६	९

बुध-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	४	१	२	१	४	३	४
दिन	२	२०	२४	१३	१२	२०	१०	२५	१७
घटी	४९	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६

बुध-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	१	०	०	०	१	१	१	१
दिन	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६	२०
घटी	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१	३४

बुध-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	५	१	२	१	५	४	५	४	१
दिन	२०	२१	२५	२९	३	१६	११	२३	२९
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

बुध-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	१	१	१	१	०	१
दिन	१५	२५	१७	१५	१०	१८	१३	१७	२१
घटी	१८	३०	५१	५४	४८	२७	२१	५१	०

बुध-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	०	२	२	२	२	०	२	०
दिन	१२	२९	१६	८	२०	१२	२९	२५	२५
घटी	३०	४५	३०	०	४५	१५	४५	०	३०

बुध-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	१	१	१	१	०	१	०	०
दिन	२०	२३	१७	२६	२०	२०	२९	१७	२९
घटी	५०	३३	३६	३१	३४	५०	३०	५१	४५

बुध-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	४	४	४	४	१	५	१	२	१
दिन	१७	२	२५	१०	२३	३	१५	१६	२३
घटी	४२	२४	२१	३	३३	०	५४	३०	३३

बुध-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	३	४	३	१	४	१	२	१	४
दिन	१८	९	२५	१७	१६	१०	८	१७	२
घटी	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

बुध-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	५	४	१	५	१	२	१	४	४
दिन	३	१७	२६	११	१८	२०	२६	२५	९
घटी	२५	१६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२

केतु महादशा ७ वर्ष

केतु अन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
वर्ष	०	१	०	०	०	१	०	१	०
मास	४	२	४	७	४	०	११	१	११
दिन	२७	०	६	०	२७	१८	६	९	२७

केतु-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२४	७	१२	८	२२	१९	२३	२०
घटी	३५	३०	२१	१५	३५	३	३६	१६	४९

केतु-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	२	०	१	०	२	१	२	१	०
दिन	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९	२४
घटी	०	०	०	३०	०	०	३०	३०	३०

केतु-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	६	१०	७	१८	१६	१९	१७	७	२१
घटी	१८	३०	२१	५४	४८	५७	५१	२१	०

केतु-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	०	०	१	०	१	०	०	१	०
दिन	१७	१२	१	२८	३	२९	१२	५	१०
घटी	३०	१५	३०	०	१५	४५	१५	०	३०

केतु-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	०	०	०	०	०	०	०	०
दिन	८	२२	१९	२३	२०	८	२४	७	१२
घटी	३५	३	३६	१६	४९	३५	३०	२१	१५

केतु-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	१	१	१	१	०	२	०	१	०
दिन	२६	२०	२९	२३	२२	३	१८	१	२२
घ.	४२	२४	५१	३३	३	०	५४	३०	३

केतु-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	१	१	१	०	१	०	०	०	१
दिन	१४	२३	१७	१९	२६	१६	२८	१९	२०
घ.	४८	१२	३६	३६	०	४८	०	३६	२४

केतु-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	२	१	०	२	०	१	०	१	१
दिन	३	२६	२३	६	१९	३	२३	२९	२३
घ.	१०	३१	१७	३०	५७	१५	१७	५१	१२

केतु-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	१	०	१	०	०	०	१	१	१
दिन	२०	२०	२९	१७	२९	२०	२३	१७	२६
घ.	३४	५०	३०	५१	४५	५०	३३	३६	३१

शुक्र महादशा २० वर्ष

शुक्र अन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
वर्ष	३	१	१	१	३	२	३	२	१
मास	४	०	८	२	०	८	२	१०	२
दिन	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शुक्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.
मास	६	२	३	२	६	५	६	५	२
दिन	२०	०	१०	१०	०	१०	१०	२०	१०
घटी	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-सूर्य प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.
मास	०	१	०	१	१	१	१	०	२
दिन	१८	०	२१	२४	१८	२७	२१	२१	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-चन्द्र प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.
मास	१	१	३	२	३	२	१	३	१
दिन	२०	५	०	२०	५	२५	५	१०	०
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-भौम प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.
मास	०	२	१	२	१	०	२	०	१
दिन	२४	३	२६	६	२९	२४	१०	२१	५
घ.	३०	०	०	३०	३०	३०	०	०	०

शुक्र-राहु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	रा.	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.
मास	५	४	५	५	२	६	१	३	२
दिन	१२	२४	२१	३	३	०	२४	०	३
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-गुरु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	वृ.	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.
मास	४	५	४	१	५	१	२	१	४
दिन	८	२	१६	२६	१०	१८	२०	२६	२४
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०

शुक्र-शनि प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	श.	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.
मास	६	५	२	६	१	३	२	५	५
दिन	०	११	६	१०	२७	५	६	२१	२
घ.	३०	३०	३०	०	०	०	३०	०	०

शुक्र-बुध प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	बु.	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.
मास	४	१	५	१	२	१	५	४	५
दिन	२४	२९	२०	२१	२५	२९	३	१६	११
घ.	३०	३०	०	०	०	३०	०	०	३०

शुक्र-केतु प्रत्यन्तर दशा

ग्रह	के.	शु.	सू.	चं.	मं.	रा.	वृ.	श.	बु.
मास	०	२	०	१	०	२	१	२	१
दिन	२४	१०	२१	५	२४	३	२६	६	२९
घ.	३०	०	०	०	३०	०	०	३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह दशा फल

ग्रह दो प्रकार के हैं एक शुभ और दूसरा अशुभ। अत: प्रथम शुभ और अशुभ ग्रहों का सामान्यत: किस तरह का फल मिलता है यह ध्यान में लाना चाहिए।

शुभ ग्रह दशा फल— आरोग्य, धनवृद्धि, शत्रु पराजय, इष्ट कार्य की सिद्धि, ऐश्वर्य आदि सुख।

अशुभ ग्रह दशा फल— लोकोपवाद, विश्वासघात, द्रव्य हानि, रोग, आप्तवर्ग के सदस्यों की मृत्यु, वियोग और कार्य में हानि आदि।

ग्रह दशा का फल निश्चित करने से पूर्व प्रथम उस ग्रह की स्थिति का विचार नीचे लिखे अनुसार करना चाहिए।

१. ग्रह किस भाव वा राशि में हैं, उच्च अथवा नीच और शुभ अथवा अशुभ भाव में हैं।
२. ग्रह शुभ या अशुभ ग्रह से युक्त या दृष्ट हैं अथवा नहीं।
३. महादशा के ग्रह से अन्तर्दशा का ग्रह किस स्थान में है और दोनों परस्पर शुभ योग करते हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।
४. महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हैं या मित्र और गोचर ग्रह, शत्रु फलदायी हैं अथवा अशुभ फलदायी हैं।

महादशा का स्वामी और अन्तर्दशा का स्वामी परस्पर शत्रु हों तो अधिक अशुभ, मित्र हों तो शुभ, सम हों तो साधारण फल मिलता है। इसी प्रकार जन्म दशा का स्वामी और गोचर ग्रह दोनों अनुकूल हों तो शुभ फल, प्रतिकूल हों तो अशुभ फल और एक अनुकूल दूसरा प्रतिकूल हो तो मध्यम फल मिलता है।

इस तरह प्रत्येक विषय अर्थात् भाग्योदय काल, विद्या, उद्योग व्यापार, नौकरी, धन लाभ आदि का विचार करने से योग्य फल मिल सकता है।

ग्रहों की दशा अन्तर्दशा आदि का फल कहते समय यदि गोचर में शुभ ग्रहों की दृष्टि महादशा, अन्तर्दशा और प्रत्यन्तर्दशा के स्वामियों पर हों तो कुछ अशुभ फलों का नष्ट होना सम्भव है। इसके विपरीत यदि अशुभ ग्रह से इन दशाओं के स्वामी युक्त वा दृष्ट हों अशुभ फल अधिक बढ़ेगा।

इस तरह किसी भी ग्रह का शुभ या अशुभ फल कुंडली के ग्रहों पर से ध्यान में आ सकता है।

१, ४, ७, १० यह केन्द्र स्थान हैं, ५, ९ यह त्रिकोण, ३, ६, ११ यह त्रिषडाय स्थान कहलाते हैं और २, ८, १२ आपोक्लिम स्थान कहलाते हैं।

कई आचार्यों के मत से— ४, ७, १० केन्द्र, १, ५, ९ त्रिकोण और शेष स्थान ऊपरवत कहे हैं।

दशा फल कहने से पहले ग्रहों के शुभाशुभत्व में विशेषता देखनी चाहिए। ग्रहों में शुभाशुभत्व दो प्रकार से देखना चाहिए। एक तो स्वाभाविक, दूसरा तात्कालिक।

स्वाभाविक शुभाशुभ— सू.मं. शनि नैसर्गिक क्रूर तथा गुरु शुभ नैसर्गिक पूर्ण बली चन्द्रमा शुभ, क्षीण बली पापी होता है तथा राहु केतु सहचर्य से फलप्रद हैं।

और तात्कालिक शुभाशुभ इस प्रकार कहा है, त्रिकोण का स्वामी हो तो शुभ फलदायक होता है और यदि त्रिषडाय का स्वामी हो तो पाप फलदायक होता है।

इससे सिद्ध हुआ कि स्वाभाविक पाप ग्रह भी त्रिकोणपति हो तो शुभ होता है तथा स्वाभाविक शुभ ग्रह यदि त्रिकोणपति हो तो अत्यन्त शुभदायक होता है। इसी प्रकार स्वाभाविक शुभ भी यदि त्रिषडायपति हो तो पाप फलदायक होता है। तथा स्वाभाविक पाप ग्रह त्रिषडायपति हो तो अत्यन्त पाप फलदायक होता है।

इसी प्रकार यदि शुभ ग्रह (गुरु, शुक्र, बुध पूर्ण चन्द्र) केन्द्र के अधिपति हों तो प्राणियों को शुभाशुभ फल नहीं देते तथा पाप ग्रह (क्षीणचन्द्र, पापयुत बुध, रवि, शनि, मंगल) यदि केन्द्र के स्वामी हों तो अपने स्वभावानुसार पाप फल नहीं देते। अत: केन्द्र के स्वामी होने से शुभ ग्रह में पापत्व और पापग्रह में शुभत्व आ जाता है। इस से यह स्पष्ट है कि केन्द्राधिप न शुभ फल देता है और न अशुभ फल देता है।

लग्न से द्वादशेष तथा द्वितीयेष दूसरे ग्रहों के साहचर्य से तथा अपने स्थानान्तर (अन्य स्थानों) के अनुसार ही शुभ अथवा अशुभ दशा फल को देते हैं। इससे सिद्ध है कि व्ययेश और धनेष स्वभावानुसार शुभाशुभ फल नहीं देते। जिस प्रकार शुभ या अशुभ स्थान में रहते हैं, तथा जिस प्रकार के शुभ या अशुभ भावेश के साथ रहते हैं, अथवा जिस दूसरे स्थान के स्वामी हों वह राशि जैसी शुभ या अशुभ भाव में हो तदनुसार ही शुभ या अशुभ फल देते हैं। भावार्थ यह है कि द्वितीयेश आदि के साथ जो ग्रह रहता है वह तदनुसार ही फल देता है। यदि बहुत ग्रह साथ में हों तो उनमें जो बली हो तदनुरूप ही फल देता है।

दीप्तादि अवस्था के भेद से भी फल में विशेषता होती है, यथा-दीप्त, स्वस्थ हर्षित और शान्त अवस्था बलि ग्रहों की दशा शुभ और अन्य अवस्था वालों की दशा अशुभ है।

शुभ ग्रहों का केन्द्राधिपत्य दोष जो कहा गया है वह गुरु और शुक्र का बलवान होता है। तथा शुभ ग्रहों के मारकत्व (सप्तमेशत्व) होने पर भी गुरु शुक्र में ही विशेषकर मारकत्व दोष होता है। इन दोनों में न्यून दोष बुध में और बुध से न्यून चन्द्रमा में होता है। अष्टमेष यदि त्रिकोणपति हो तो शुभ फलदायक और यदि त्रिषडायपति हो तो अत्यन्त अशुभ फलदायक होगा।

इसी प्रकार यदि पाप ग्रह केन्द्र पति हो तो उसका स्वभाविक पापत्व मात्र नष्ट होता है। अत: केन्द्रपति होकर यदि त्रिकोणपति भी हो जावे तो उसमें शुभत्व आ जाता है। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि स्वभाविक पाप ग्रह यदि केन्द्रपति होकर त्रिषडायपति हो तो पापकारक हो जाता है।

प्रबल होने पर भी राहु और केतु जिस भाव में और जिस-जिस भावेश के साथ रहते हैं उसी के अनुसार शुभ या अशुभ फल देते हैं। जैसे कहा है—

यद्यद्‌भावगतै वाऽपि यद्यद्‌भावेश संयुतै। तत्तत्फलानि प्रबलौ प्रदर्शितातमौ ग्रहौ॥

योग— केन्द्रेश और त्रिकोणेश में परस्पर सम्बन्ध हो किसी अन्य भाव के स्वामी से यह वास न हो तो विशेषकर शुभ लाभदायक होते हैं।

ग्रहों की दीप्तादि अवस्था

ग्रह अपनी उच्चराशि में हो तो दीप्त अपनी राशि में स्वस्थ, मित्र राशि में हर्षित, शुभ राशि में शान्त, नीच राशि में दीन, शत्रु राशि में पीड़ित, उदय राशि में शक्त, अस्तंगत राशि में लुप्त अवस्था होती है।

ग्रहावस्था फल— दीप्त अवस्था सुस्वरूप, कांतिमान, बुद्धिमान तीनों में जाने वाला और शत्रु का नाश करने वाला। **स्वस्थ अवस्था**— विजयी, राजपूजित, कीर्तिमान, सदा प्रसन्न, मलकीयत कराने वाला व ज्योतिषी। **हर्षित अवस्था**— धर्मात्मा, सदाचारी। **शान्त अवस्था**— तेजस्वी, शान्त, बंधनमुक्त। **दीन अवस्था**— बुद्धिहीन, पर स्त्री आसक्त। **पीड़ित अवस्था**— चिंता युक्त, मानसिक दु:ख, रोगी। **शक्त अवस्था**— निरोगी, सुन्दर, मधुर भाषी, प्रशंसनीय। **लुप्त अवस्था**— अधर्मी, रोगी, शत्रु पीड़ित।

नोट— जन्म समय के ग्रहों की अवस्था के अनुसार प्रत्येक मनुष्य को आजन्म सुख या दु:ख मिलता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहों की शान्ति हेतु सप्तवार व्रत विधि

यदि किसी जातक की जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रह की स्थिति हो अथवा अशुभ ग्रह को दशा अन्तर्दशा चल रही हो तो निम्नलिखित विधि अनुसार अनिष्ट ग्रह की शान्ति हेतु व्रत रखने से कल्याण होगा।

रविवार के व्रत की विधि—समस्त कामनाओं की सिद्धि नेत्र रोग और कुष्ठादि चर्म व्याधियों के नाश एवं आयु व सौभाग्य की वृद्धि के लिए रविवार का व्रत किया जाता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से प्रारम्भ करके एक वर्ष पर्यन्त अथवा कम से कम बारह व्रत करें। व्रत के दिन केवल गेहूं की रोटी अथवा गुड़ से बना दलिया घी शक्कर के साथ भक्षण करें। भोजन से पूर्व स्नानान्तर शुद्ध वस्त्र धारण करके "**ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः**" बीज मन्त्र का पाठ पांच माला करें। फिर रविवार कथा पढ़ें। तत्पश्चात् सूर्य को गन्धाक्षत, लाल फूल, दूर्वायुक्त जल से निम्न मंत्र पढ़ते हुए अर्घ्य दें। **नमः सहस्त्रकिरण सर्वव्याधि विनाशन। गृहाणार्घ्यं मया दत्तं संज्ञया सहितो रवे॥** फिर प्रदक्षिणा करके लाल चन्दन का तिलक लगाएं। अन्तिम रविवार को हवन के पश्चात् ब्राह्मण दम्पत्ति को भोजन कराकर यथाशक्ति लाल वस्त्र फल पुष्पादि एवं दक्षिणा से प्रसन्न करें।

सोमवार के व्रत की विधि—यह व्रत श्रावण, चैत्र, बैशाख, कार्तिक या मार्गशीर्ष के महीनों के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से प्रारम्भ करें। इस व्रत को पांच वर्ष, चौदह वर्ष अथवा सोलह सोमवार पर्यन्त श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक करें। चैत्र शुक्लाष्टमी तिथि आर्द्रा नक्षत्र सोमवार को अथवा श्रावण मास के प्रथम सोमवार को प्रारम्भ करने का विशेष महात्म्य है। व्रतारम्भ करने वाले स्त्री पुरुष को चाहिए कि प्रातःकाल जल में कुछ काले तिल डालकर स्नान करें। स्नानान्तर "**ॐ नमः शिवाय**" आदि शिव मन्त्रों द्वारा तथा श्वेत फूलों, सफेद चन्दन, पंचामृत, अक्षत, सुपारी, फल, गंगाजल, बिल्व पत्रादि से शिव-पार्वती का पूजन करें और पूजनोपरान्त ब्राह्मण को दान दक्षिणा देकर स्वयं भोजन करें। भोजन एक समय नमकरहित होना चाहिये। व्रत का उद्यापन भी उपरोक्त महीनों में करना श्रेयस्कर होता है। उद्यापन में दशमांश जप का हवन करके सफेद पदार्थ, दूध, दही, क्षीर, चांदी सफेद फलों का दान करना चाहिए। यह व्रत करने से मानसिक शान्ति, धन पुत्रादि सुखों की प्राप्ति होती है। सर्व प्रकार के कष्टों की निवृत्ति होती है।

मंगलवार के व्रत की विधि—सर्वप्रकार के सुखों, रक्त विकार, शत्रुदमन, स्वास्थ्य रक्षा, पुत्र प्राप्ति के लिए मंगलवार का व्रत उत्तम है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम मंगलवार से प्रारम्भ करके २१ सप्ताह तक अथवा यथा शक्ति जीवन पर्यन्त रखें। इस व्रत में गेहूं और गुड़ सहित भोजन करें। भोजन नमक रहित एक समय ही करना चाहिए। इस व्रत से मंगल ग्रह के अरिष्ट दोष भी शान्त हो जाते हैं। व्रत में श्री हनुमान जी की लाल पुष्पों, फलों, ताम्र वर्तन व नारियल द्वारा पूजा व दान करना चाहिए तथा श्री हनुमान चालीसा का पाठ करना चाहिए। भौम ग्रह की शान्ति के लिए '**ॐ क्रां, क्रीं, क्रौं सः भौमाय नमः**' की ५ मालाएं करनी चाहिए और गुड़, पीले लड्डुओं व लाल वस्त्र दान करना चाहिए।

बुधवार के व्रत की विधि—बुधवार का व्रत बुध ग्रह की शान्ति तथा धन, बुद्धि, विद्या और व्यापार में वृद्धि हेतु किया जाता है। यह व्रत विशाखा नक्षत्र कालीन बुधवार को प्रारम्भ करके सात अथवा हर बुधवार का करें। व्रत के दिन स्नानोपरान्त हरे वस्त्र पहिनकर श्री विष्णु सहस्रनाम का पाठ तथा ग्रह शान्ति के लिए बीजमंत्र '**ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः**' का पाठ करना चाहिए। इस दिन एक समय नमक रहित भोजन, घी, मूंग अथवा मूंग की दाल से बने मिष्ठान्न का दान करें तथा स्वयं भी इन्हीं वस्तुओं का भक्षण करें। अन्तिम बुधवार मधुसर्पी, दधि और घृत के साथ हवन करें और हरे वस्त्र, दो फल और मूंग का दान करें। गाय को हरा वास डालें।

वृहस्पतिवार के व्रत की विधि—यह व्रत गुरु ग्रह की शान्ति तथा वैवाहिक सुखों, विद्या, पुत्र संतान एवं धन प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार को अनुराधा नक्षत्र हो उस दिन से प्रारम्भ करें। यह व्रत १३ मास अथवा सात मास तक रख सकते हैं। व्रत के दिन स्नानोपरान्त पीले वस्त्र, पीला यज्ञोपवीत धारण करके बृहस्पति की पूजा स्वयं अथवा श्रेष्ठ ब्राह्मण द्वारा करवानी चाहिए। पादुका, उपानह, छाता, कमण्डलु रखें, पीले रंग के पुष्प, चने की दाल, पीले कपड़े, पीला चन्दन, हल्दी व पीले चावल, लड्डू आदि का भोग लगाना चाहिए। दान करके ही स्वयं एक समय भोजन करें। नमक का प्रयोग न करें। इस दिन केले के वृक्ष का पूजन शुभ होता है। गुरु शान्ति के लिए '**ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः**' मंत्र की ५ माला का जाप करें। उद्यापन में दशमांश भाग का २८ समिधा व मधु सर्पी, घृत, दधि के साथ हवन करना चाहिए।

शुक्रवार के व्रत की विधि—यह व्रत धन, विवाह, संतान भौतिक सुखों को देने वाला है। श्रावण मास के प्रथम शुक्रवार को प्रारम्भ करने से विशेष रूप से लक्ष्मी की कृपा रहती है। व्रत के दिन स्नानोपरान्त सफेद वस्त्र धारण करके श्री लक्ष्मी देवी की धूप, दीप, श्वेत चन्दन, चावल, श्वेत पुष्प, चीनी, सुपारी से पूजा करके बच्चों में श्वेत मिठाई, क्षीर, फलादि बांट दें। ग्रह शान्ति के लिए '**ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः**' की तीन माला का पाठ करें। स्वयं भी एक समय क्षीरादि श्वेत वस्तुओं का सेवन करें। नमक न प्रयोग करें। उद्यापनोपरान्त हवनादि के पश्चात् ब्राह्मण बालकों को क्षीर चावलादि से युक्त भोजन कराने तथा श्वेत वस्त्र, खाण्ड, चावल, चाँदी, फलादि सफेद पदार्थों का दान करें।

शनिवार के व्रत की विधि—यह व्रत शनि ग्रह की अरिष्ट शान्ति तथा जीर्ण रोग, शत्रुभय, आर्थिक संकट, मानसिक संताप का निवारण करता है, धन धान्य और व्यापार में वृद्धि करता है। यह व्रत शुक्ल पक्ष के शनिवार विशेषकर श्रावण मास लौह निर्मित शनि की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान कराकर धूप गंध, नीले पुष्प, फल और नैवेद्य आदि से पूजन करें और '**ॐ शं शनैश्चराय नमः**' मंत्र की तीन माला का जाप करें, व्रत के दिन नीले वस्त्र धारण करें। एक वर्तन में शुद्ध जल, काले तिल, नीले पुष्प, लौंग, तेल, गंगाजल, दूध डालकर पश्चिम दिशा की ओर अभिमुख होकर पीपल वृक्ष की जड़ में डाल दें। तत्पश्चात् शिवोपासना करें। १९ शनिवार करने के बाद उद्यापन के समय शनि स्त्रोत का पाठ जूते, जुराब, नीले रंग का वस्त्र, काले माश, चाकू और तेल से निर्मित वस्तुओं का दान किसी वृद्ध ब्राह्मण को दें और स्वयं भी उड़दादि तथा तैल निर्मित पदार्थों का सेवन करें। **राहु की शान्ति के लिए** भी शनिवार का व्रत उपरोक्त विधि अनुसार करें। और दान में नारियल, भूरा कम्बल या वस्त्र दें तथा पक्षियों को बाजरा डालना चाहिए। राहु के बीज मंत्र का पाठ करना श्रेयकर होता है।

केतु ग्रह की शान्ति हेतु—केतु के बीज मंत्र '**ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः**' की पांच माला का जाप तथा पूजा मंगलवार के व्रत जैसे करनी चाहिए।

सप्तधान्य (सतनजा)—१ काले माश (उड़द), २. मूंग, गेहूं, चने, जौ, चावल, कंगनी।

अष्टगंध—अगर, तगर, कस्तूरी, कुंकुम, कपूर, चन्दन, लौंग और गोरोचन।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सूर्यादिग्रहाणां भावानुसार गोचर फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	स्थानांतर	भयं	श्री:	मानभंग	दैत्य	विजय:	मार्ग:गमन	पीड़ा:	सुकृ नाश	सिद्धि:	धनलाभ	द्रव्यनाश
चन्द्र:	धनलाभ	सन्तोष	सुखं	रोग:	ज्ञानवृ.	धनलाभ	स्त्रीलाभ	रोग:	धर्मलाभ	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
भौम:	शत्रुभय	धनहानि	धनलाभ	शत्रुभी:	पुत्रकष्ट	धनलाभ	स्त्रीकष्ट	शत्रुभय	शत्रुपीड़ा	शोक	धनलाभ	धनहानि
बुध:	सुख	धनलाभ	शत्रुभय	पशुलाभ	सुखं	स्थानलाभ	पीड़ा	धनलाभ	पीड़ा	सौख्यं	धनलाभ	धनहानि
गुरु:	भयं	धनलाभ	क्लेश	धनलाभ	सुखं	शोक:	राजमान्य	पीड़ा	सौख्यं	दैन्यं	धनलाभ	पीड़ा
शुक्र:	शत्रुनाश	धनलाभ	सौख्यं	धनलाभ	पुत्रलाभ:	शत्रुभय	शोक:	धनलाभ	वस्त्रलाभ	दुख:	धनलाभ	धनलाभ
शनि:	भयं	धनहानि	ऐश्वर्य	शत्रु भी:	पुत्र कष्ट	धनलाभ	दोष:	पीड़ा	धर्मनाश	दौर्मन	धनलाभ	धनलाभ
राहु:	हानि:	धनहानि	धनलाभ	वैरं	शोक:	श्री:	कलह:	मृत्यु	दु:खं	वैरं	सुखं	शोक:
केतु:	रोग:	वैर	सुखं	भयं	सुखं	धनलाभ	कलह:	रोग:	पाप	शोक:	कीर्ति:	शत्रुभय

अथ वर्षकुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सूर्य:	चिन्ता	नृपभी:	धनलाभ	हानि:	कष्टम्	शत्रुना.	पीड़ा	कष्टम्	धर्म नाश	सुखं	धनलाभ	पीड़ा
चन्द्र:	पीड़ा	धनलाभ	हर्ष:	शत्रुनाश	सुखम्	पीड़ा	कष्टम्	दु:खम्	भाग्योदय	विजय:	धनलाभ	व्यग्र:
भौम:	प्रणा:	धननाश	जय:	व्यसनं	दुर्मति	शत्रुना.	स्त्रीकष्ट	पीड़ा	पुण्योदय	राज्य लाभ	धनलाभ	विरोध
बुध:	सौख्यम्	धनलाभ	सुखम्	द्रव्यलाभ	पुत्रलाभ	कलह	धनलाभ	व्यग्रता	सुखम्	मान लाभ	सुखलाभं	रोग:
गुरु:	सुखम्	धनलाभ	जय:	वाह.लाभ	पुत्र: प्राप्ति	कष्टम्	सुखम्	रोग:	धर्म लाभ	राज्य लाभ	धन लाभ	शोक:
शुक्र:	मानप्रा.	धनप्राप्ति	कीर्तिला	सुख लाभ	धनलाभ	शभु भी:	स्त्रीसुख	कष्टम्	धर्मोदय	मान लाभ	क्षेम लाभ	व्यय
शनि:	वातार्ति	पीड़ा	धनलाभ	दु:खम्	पुत्रपीड़ा	जय:	स्त्रीकष्ट	रोग:	भाग्य हानि	धनहानि	धन लाभ	चिन्ता
राहु:	शिरोर्ति	राजभी:	सुखम्	दु:खम्	बुद्धिनाश	शत्रुना.	रोगभी:	कष्टम्	धर्म हानि	विजय:	सुलाभं	व्याधि
केतु:	चिन्ता	क्लेश:	आरोग्य	राजभी:	दुर्बुद्धि:	सुखम्	क्लेश:	पीड़ा	भाग्य नाश	धन लाभ	लाभ:	शोक:
मुंथा	सुखम्	यशोऽर्थ:	पुष्टि:	दु:खम्	सुखाप्ति:	कष्टम्	व्यसनं	दुखम्	भाग्योदय	राज्य प्राप्ति	लाभ:	कष्टम्

अथ पुरुषजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्रात: ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	स्त्री ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म: १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	शूर:	धनी	सुखी	दुखी	अपुत्र:	बली	स्त्रीजित	अल्पायु:	सुखी	शूर:	धनी	पतित:
चन्द्र:	जड़:	कुटुम्बी	क्रूर:	सुशील:	पुत्रवान्	अल्पायु:	ईर्ष्यालु:	रोगी	सुभग:	धीर:	ख्यात:	हीनांग
भौम:	व्रणी:	कुटिल:	विक्रमी	पीड़ित:	अपुत्र:	शत्रुजित	स्त्रीपीड़ा	रोगी	पापात्मा	सुखी	धनाढ्या	पतित:
बुध:	विद्वान्	धनी	दुर्जन:	सुखी	मंत्री	दु:शील	धर्मज्ञ:	गुणी	पुत्रवान्	विक्रमी	धनी	जड़:
गुरु:	चिरायु:	धनी	कृपण:	सुखी	प्रतापी	कामी	प्रसिद्ध:	अल्पायु:	पुत्रवान्	सुकृति:	धनी	दरिद्र:
शुक्र:	सुखी	धनी	पापी	सुखी	धीमान्	रोगी	क्रोधी	नीच:	प्रतापी	सुमति:	धनाढ्य:	खल:
शनि:	रोगी	वक्ता	विक्रमी	दु:खी	दरिद्र:	सुखी	दु:खी	नेत्ररोगी	सुखी	पराक्रमी	धनी	दु:खी
राहु:	रोगी	विरोधी	विक्रमी	दु:खी	दुर्भग:	बली	अशुचि:	गतायु:	दैन्यं	मानी	ख्यात:	पतित:
केतु:	अल्पायु:	धर्म हानि	शूर:	दु:खी	अपुत्र:	बली	दारहा	क्लेशी	पापी	अधर्मी	धनी	दुर्जन:

अथ स्त्रीजन्म कुण्डल्यां तन्वादिभावस्थ ग्रह फलम्

ग्रहा:	तनु: १	धनं २	भ्राता ३	सुखं ४	पुत्र: ५	शत्रु: ६	पति ७	मृत्यु: ८	धर्म: ९	कर्म १०	लाभ: ११	व्यय: १२
सूर्य:	सक्रोधा	निर्धना	सुपुत्रा	सपीड़ा	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्ता	विधवा	धर्मिष्ठा	सती	सधना	सक्रोधा
चन्द्र:	अल्पायु:	सधना	सुखिनी	दुर्भगा	सुपुत्रा	रोगिणी	पति प्रीति	दु:खार्ता	सुखिनी	धन्या	गुणिनी	हीनांगी
भौम:	दु:खार्ता	वन्ध्या	अभ्रातृ	दु:खिनी	अपुत्रा	नीरोगा	विधवा	कुलटा	दु:खिनी	कुपुत्रा	सुधर्मा	दुष्टा
बुध.	सुभगा	धनाढ्या	सुखिनी	सुगृहा	सुबुद्धि:	सक्रोधा	सती	कृतघ्ना	सुधर्मा	सुधर्मा	सुलाभा	कृशांगी
गुरु:	सती	सधना	भ्रातृम.	सुखिनी	साध्वी	सापदा	सुकीर्ति	रोगिणी	पुत्राढ्या	सुभगा	सुरूपा	सद्व्यया
शुक्र:	सुखिनी	सहर्षा	धनाढ्या	सुकीर्ति	सुसुता	दरिद्रा	पतिप्रि.	प्रमत्ता	सुपुण्या	सुकर्मा	सुपुत्रा	सद्व्यया
शनि:	वन्ध्या	निर्धना	दंक्षा	हृद्रोगा	अपुत्रा	सुगुणा	विधवा	दु:खार्ता	वन्ध्या	पापा	सुलाभा	मूढ़ा
राहु:	अपुत्रा	दरिद्रा	धनाढ्या	रोगार्ता	अपुत्रा	धनाढ्या	दु:खार्ता	क्लेशिनी	वन्ध्या	कुकर्मा	सुभगा	खला
केतु:	दु:खार्ता	शोकार्ता	रोगाढ्या	मातृहीना	विपुत्रा	धनाढ्या	विधवा	सदु:खा	शोकार्ता	पापा	सुभगा	सरोगा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

फलित में परमोपयोगी ग्रह-दृष्ट्यादि विवरण-चक्र

ग्रह और उनके चिह्न	रवि	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
ग्रहों की एक-पाद दृष्टि	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	३-१०	०	३-१०	३-१०
दो-पाद दृष्टि	५-९	५-९	५-९	५-९	०	५-९	५-९	५-९	५-९
तीन-पाद दृष्टि	४-८	४-८	०	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८	४-८
सम्पूर्ण दृष्टि	७	७	४-७-८	७	५-७-९	७	३-७-१०	७	७
नक्षत्र-दृष्टि	५-१५	१५	७-८-१०-१५	९-१२-१५	१०-१५-१९	९-१२-१५	३-५-१५-१९	९-१५	९-१५
मित्र-ग्रह	च.मं.गु.	र.बु.	र.च.गु.	र.शु.रा.	र.चं.मं.	बु.श.रा.	बु.शु.रा.	बु.शु.श.	बु.
सम-ग्रह	बु.	मं.गु.शु.श.	शु.श.	मं.गु.श.	श.रा.	मं.गु.	मं.	गु.	×
शत्रु-ग्रह	शु.श.रा.	रा.	बु.रा.	चं.	बु.शु.	र.चं.	र.चं.मं.	र.चं.मं.	×
बलवत्तम भाव	दशम	चतुर्थ	दशम	प्रथम	प्रथम	चतुर्थ	सप्तम	×	×
कारक भाव	१-९-१०	४	३-६	४-१०	२-५-९-१०-११	७	६-८-१०-१२	×	×
उच्चराशि एवं परमोच्चांश	मेष १०°	वृषभ ३°	मकर २८°	कन्या १५°	कर्क ५°	मीन २७°	तुला २०°	मिथु.१५°	धनु१५°
नीचराशि एवं परम नीचांश	तुला १०°	वृश्चिक ३°	कर्क २८°	मीन १५°	मकर ५°	कन्या २७°	मेष २०°	धनु १५°	मिथुन १५°
मूल त्रिकोण राशि, अंश	सिंह २०°	ष४°से ३०°	मेष १८	कं.१६°से२०°	धनु१३°	तुला१०°	कुम्भ २०°	कर्क	मकर
स्वगृह- (राशि)	सिंह	कर्क	मेष वृश्चिक	मि., कन्या	धनु, मीन	वृष, तुला	म. कुम्भ	कन्या	मीन
हर्ष-स्थान	९	३	६	१	११	५	१२	×	×
शत्रु-राशियां	२-६-७-१०-११	६	३-६-६-७	४	२-३-	४-५	१-४-५-८	१-४-५-८	×
स्वगृह से सप्तम (अस्त) राशि	११	१०	२-७	९-१२	३-६	१-८	४-५	१२	६
विंशो. दशा-नक्षत्र व वर्ष	कृ., उ.षा., उ.फा. ६	रो., ह., श्र. १०	मृ., चि., ध. ७	आश्लेषा, ज्ये. रे. १७	पुन. वि., पू. भा. १६	म.पू.फा., पू.षा. २०	पुष्य, अनु., उ.भा. १९	आर्द्रा, स्वा., शत. १८	अश्विनी, भ. मू. ७
ग्रहों के भाग्योदयकारी वर्ष	२२	२४	२८	२	१६	२५	३६	४२	४२
दिशा	पूर्व	वायव्य	दक्षिण	उत्तर	ईशान	आग्नेय	पश्चिम	नैऋत्यु	नैऋत्यु
कुण्डली-भाव-दिशा	१	५-६	१०	४	२-३	११-१२	७	८-९	८-९
राशि चक्र-परिभ्रमण वर्ष	१	०-०-७४	१-९	०-२	११-९	०-६	२९-५	१८-६	१८-६
मध्यम राशि-भ्रमण-काल	१ मास	२१ दिन	१॥ मास	२५ दिन	१३ मास	२८ दिन	३० मास	१८ मास	१८ मास
नक्षत्र-चार-दिन	१३	१	२०	१०	१७३	१२	४००	२४०	२४०
नक्षत्र-पाद (नवांश) चार-दिन	३½	½	५	२½	४३	३	१००	६०	६०
मध्यम दिनगति,कला,विकला	५९'-८"	७९०'-३५"	३१'-२७"	५९'-८"	४'-५९"	५९'-८"	२'-०"	३'-११"	३'-११"
शीघ्र गति, कला, विकला	६०'-४"	८२३'-४८"	३९'-१"	१०४'-४६"	१२'-२२"	७३'-४३"	५'-२७"	×	×
परमशीघ्र गति (अतिचारी)	६१'	८५७'	४६'-११"	११३'-३२"-	१४'-४"	७५'-४२"	७'-४५"	×	×
अतिचार-दिन (स्थूल)	×	×	१५	१०	४५	१०	१८०	×	×
सन् ८३ का मध्यम शर (विक्षेप) नव्य मत	×	५°-८'-४३".४३	१°५०'-५९".४	७°-०'-१५".९	१°-१८'-१४".४	३°-२३'-४०".१	२°-२९'-२१".३	×	×
गोचर से निंद्य	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२	४-८-१२
गोचर से पूज्य	१-२-५-७-९	२-५-९	१-२-५-७-९	१-३-५-७-९	१-३-६-१०	५-६-७-१०	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९	१-२-५-७-९
गोचर से शुद्ध	३-६-१०-११	१-३-६-७-१०-११	३-६-१०-११-	२-६-१०-११	२-५-७-९-११	१-२-३-९-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११	३-६-१०-११
अनुक्रम से वेध स्थान	९-१२-४-५ शनि वर्जित	५-९-१२-२-४-८ बुध वर्जित	१२-९-१०-५	५-१-८-१२ चन्द्र वर्जित	१२-४-३-१०-८	८-७-१-११-३	१२-९-१०-५ सूर्य वर्जित	१२-९-१०-५	१२-९-१०-५

टिप्पणी— चन्द्रमा शुक्लपक्ष में २,५,९वें स्थानों में भी शुभ होता है, यदि क्रमशः ६,८,४ स्थान में बुध के सिवा अन्य ग्रह न हों। ग्रह जिस दिशा का स्वामी है, यात्रा-कालिक कुण्डली में उसी दिशा में पड़े तो ललाट-योग होता है। जो युद्ध-यात्रा में वर्ज्य है। यात्रा की दिशा का स्वामी-ग्रह तात्कालिक कुण्डली के केन्द्र में हो तो यात्रा विहित है। (मुहूर्त-मार्तण्ड)।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

१. मूंग
२. हरितवस्त्र
३. सुवर्ण
४. कांस्य
५. मृगमद
६. आज्य
७. पंचरत्न
८. दासी
९. हस्तिदंत

ईशान्यांबाणाकारमंडल अं. ४ मगधदेश आत्रेयसगोत्र पीतवर्ण कन्यामिथुन को स्वामी जप ४०००

१. चित्रांबर
२. श्वेताश्व
३. धनु
४. हीरा
५. रौप्य
६. सुवर्ण
७. तंदुल
८. सुगंध
९. धृत

पूर्वे पचकोणमंडल वृषतुलाक स्वामी भोजकूट देश भार्गवसगोत्र श्वेतवर्ण जप १६०००

१. वशपात्र
२. तंदुल
३. कर्पूर
४. मौक्तिक
५. श्वेतवस्त्र
६. वृषभ
७. रौप्य
८. घृतकुंभ
९. शंख

चंद्र

आग्नेयां चतुरस्त्रमंडल अं. ४ यमुनातीर देश आत्रेयसगोत्र श्वेतवर्ण कर्कको स्वामी जप १६०००

१. अश्व
२. शर्करा
३. हलद
४. पीतधान्य
५. पीतवस्त्र
६. पुष्पराग
७. लवण
८. कांचन

उ. दाघचतुरस्त्रमंडल अगुल ६ सिंधुदशाद्भव आंगिरसगोत्र पी. व. धनु मीन का स्वामी जप १९०००

१. माणिक
२. गेहूं
३. धेनु
४. कुसुंभ
५. गुड़
६. ताम्र
७. रक्तवस्त्र
८. रक्तपुष्प
९. सुवर्ण

मध्यवतुलमंडल अ. १२ कलिंगदशाद्भव काश्यपस गोत्र रक्तवर्ण सिंह को स्वामी जप ७०००

१. प्रस्त्रल
२. गेहूं
३. मसूर
४. ताम्रवस्त्र
५. गुड़
६. सुवर्ण
७. ताम्र
८. कणहेर
९. वृषभ

द. त्रिकोणमंडल अं. ३ अवंतीदेशद्भव भारद्वाजसगोत्र रक्तवर्ण वृश्चिकमेषे को स्वा. जप १००००

१. वैडूर्य
२. तिल
३. कंबल
४. कस्तूरी
५. शस्त्र
६. कृष्णवस्त्र
७. तैल
८. कृष्णपुष्प
९. छाग
१०. लाहपात्र
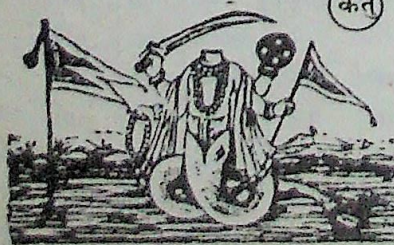
वाय. ध्वजाकारमंडल केतु अंगलु ६ अवंतिदेश जैमिनिसगोत्र धूम्रवर्ण जप १७०००

१. माष
२. तिल
३. तैल
४. कुलित्थ
५. महिषी
६. लोहू
७. कृष्णागौ
८. इंद्रनील
९. श्यामवस्त्र

प. धनुर कारमंडल अं. २ सौराष्ट्र देश काश्यपस गोत्र मकरकुंभको स्वा. कृ. व. जप २३०००

१. गोमेदरत्न
२. अश्व
३. नीलवस्त्र
४. कंबल
५. तिल
६. तैल
७. लोह
८. अंभ्रक

नैर्ऋत्या शूर्पाकारमंडल अं. १२ काश्मीरदेश पठानसगोत्र कृष्णवर्ण जप १८०००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रहा:	गोचराद्येर्दशाक्रमाद्यैर्ग्रहकृतानिष्टफलशमनार्थं प्रत्येकग्रहाणां दानपदार्था:												जप सं.	जपनीय मंत्रा:	समय	समिध:
सूर्य	माणिक	सुवर्ण	ताम्र	गेहूं	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तपुष्प	केसर	मूंगा	रक्त गौ	रक्तचंदन	७०००	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं स: सूर्याय नम:	सु. उ.	अर्क
चन्द्र	मोती	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दही	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	शंख	कपूर	श्वेत बैल	श्वेतचंदन	११०००	ॐ श्रां श्रीं श्रौं स: चन्द्रमसे नम:	संध्या	पलाश
भौम	मूंगा	सुवर्ण	ताम्र	मसूर	गुड़	घी	रक्तवस्त्र	रक्तकनेर	केसर	कस्तूरी	रक्त बैल	रक्तचंदन	१००००	ॐ क्रां क्रीं क्रौं स: भौमाय नम:	घ. २	खदिर
बुध	पन्ना	सुवर्ण	कांसी	मूंग	खांड	घी	हरावस्त्र	सर्वपुष्प	हाथीदांत	कपूर	शस्त्र	फल	९०००	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं स: बुधाय नम:	घ. ५	अपामार्ग
गुरु	पुखराज	सुवर्ण	कांसी	दालचणे	खांड	घी	पीतवस्त्र	पीतपुष्प	हल्दी	पुस्तक	घोड़ा	पीतफल	१९०००	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं स: गुरवे नम:	संध्या	अश्वत्थ
शुक्र	हीरा	सुवर्ण	रजत	चावल	मिसरी	दूध	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	सुगन्ध	दधि	श्वेत घोड़ा	श्वेतचंदन	१६०००	ॐ द्रां द्रीं द्रौं स: शुक्राय नम:	सू. उ.	उदुम्बर
शनि	नीलम	सुवर्ण	लोहा	उड़द	कुलथी	तेल	कृष्णवस्त्र	कृष्णपुष्प	कस्तूरी	कृष्ण गौ	भैंस	उपानह	२३०००	ॐ प्रां प्रीं प्रौं स: शनये नम:	संध्या	शमी
राहु	गोमेद	सुवर्ण	सीसा	तिल	सरसों	तेल	नीलवस्त्र	कृष्णपुष्प	खड़्ग	कंबल	घोड़ा	शूर्प	१८०००	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं स: राहवे नम:	रात्री	दूर्वा
केतु	लसनी	सुवर्ण	लोहा	तिल	सप्तधान्य	तेल	धूम्रवस्त्र	धूम्रपुष्प	नारियल	केबल	बकरा	शस्त्र	१७०००	ॐ स्रां स्रीं स्रौं स: केतवे नम:	रात्री	कुशा
मुन्था	मोती	सुवर्ण	कांसी	चावल	सुवर्ण	घी	श्वेतवस्त्र	श्वेतपुष्प	कपूर	मिसरी	श्वेतचंदन	हाथीदांत	मुंथेशवत्	मुन्थेश मन्त्र	मुन्थेशकाले	

अथ ग्रहाणां विंशोत्तरी महादशायामन्तर्दशाज्ञानाय चक्रमिदम्

सूर्य दशा वर्ष ६				चन्द्र दशा वर्ष १०				भौम दशा वर्ष ७			
कृ. उ.फा. उ.षा. तन्मध्येऽन्तरम्				रो. ह. श्रवण तन्मध्येऽन्तरम्				मृ. चि. ध. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
र	०	३	१८	चं	०	१०	०	मं	०	४	२७
चं	०	६	०	मं	०	७	०	रा	१	०	१८
मं	०	४	६	रा	१	६	०	बृ	०	११	६
रा	०	१०	२४	बृ	१	४	०	श	१	१	९
बृ	०	९	१८	श	१	७	०	बु	०	११	२७
श	०	११	१२	बु	१	५	०	के	०	४	२७
बु	०	१०	६	के	०	७	०	शु	१	२	०
के	०	४	६	शु	१	८	०	र	०	४	६
शु	०	०	०	र	०	६	०	चं	०	७	०

राहु दशा वर्ष १८				गुरु दशा वर्ष १६				शनि दशा वर्ष १९			
आर्द्रा स्वा. श. तन्मध्येऽन्तरम्				पुन. वि. पू.भा. तन्मध्येऽन्तरम्				पु. अनु. उ.भा. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
रा	२	८	१२	बृ	२	१	१८	श	३	०	३
बृ	२	४	२४	श	२	६	१२	बु	२	८	९
श	२	१०	६	बु	२	३	६	के	१	१	९
बु	२	६	१८	के	०	११	६	शु	३	२	०
के	१	०	१८	शु	२	८	०	र	०	११	१२
शु	३	०	०	र	०	९	१८	चं	१	७	०
र	०	१०	२४	चं	१	४	०	मं	१	१	९
चं	१	६	०	मं	०	११	६	रा	२	१०	६
मं	१	०	१८	रा	२	४	२४	बृ	२	६	१२

बुध दशा वर्ष १७				केतु दशा वर्ष ७				शुक्र दशा वर्ष २०			
अश्ले. ज्ये. रे. तन्मध्येऽन्तरम्				म. मू. अश्वि . तन्मध्येऽन्तरम्				पू.फा. पू.षा. भ. तन्मध्येऽन्तरम्			
ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.	ग्रह	व.	मा.	दि.
बु	२	४	२७	के	०	४	२७	शु.	३	४	०
के	०	११	२७	शु	१	२	०	र	१	०	०
शु	२	५०	०	र	०	४	६	चं	१	८	०
र	०	१०	६	चं	०	७	०	मं	१	२	०
चं	१	५	०	मं	०	४	२७	रा	३	०	०
मं	०	११	२७	रा	१	०	१८	बृ	२	८	०
रा	२	६	१८	बृ	०	११	६	श	३	२	०
बृ	२	३	६	श	१	१	९	बु	२	१०	०
श	२	८	९	बु	०	११	२७	के	१	२	०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जन्म राशि से ग्रहों के गोचर-फल

भाव	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहू	केतु
प्रथम	स्थान नाश: पन्था:	अन्नलाभ: पुष्टि:	भयं, पीड़ा च	बन्धनं	अरिष्टादि भयं	शत्रु नाश: सुखम्	पीड़ा भयं सर्वनाश:	कष्टम् हानि:	हानि रोगभयं
द्वितीय	हानि: भयं	धनलाभ: सुखं	धन नाश:	धन लाभ:	धनादि लाभ:	अर्थ लाभ: सुखं	धन हानि: शोक:	व्यञ्च नै:स्वं	वित्तनाश: वैरी भयं
तृतीय	सुखं श्रीप्राप्ति:	द्रव्याप्ति: सुखं	श्रीप्राप्ति: सुखम्	शत्रुतो भयम्	रोगाप्ति: भयम्	अर्थ लाभ: सुखं	अर्थ लाभ: सुखं	धन प्राप्ति नैरूज्यं	वृद्धि: सुखलाभ:
चतुर्थ	माननाश: रोगभयं	रोगदानार्थ सिद्धि:	कष्टम्	वित्तलाभ: सुखं	धन हानि व्ययम्	धनागम:	शत्रुवृद्धि: पीड़ा भयं	शोकश्च वैरं	पीड़ा च भीति:
पंचम्	हानि दैन्यं	कार्यनाश:	धन नाश: रुग्भयं	रूक् शोकश्च	लाभ: सुखंच	पुत्र लाभ:	धनुपुत्रयोर्नाश:	हानि: शोकश्च	शोक, अर्थनाश:
षष्ठ	रिपुनाश: सुखं	वित्तलाभ:	सुखम् अर्थलाभ:	अलाभ: स्थिति	रोग: शोकाश्च	शत्रु वृद्धि, पीडाच	सुखं वित्तलाभ:	लक्ष्मीप्राप्ति: सुखं	धन लाभ: सुखं
सप्तम्	गमनं धनहानि:	द्रव्य प्राप्ति: सुखम्	धन नाश:	विग्रह पीड़ा भयं	सम्मान सुखं च	शोक: अतिभयं	दोष पीड़ाभयं	कलह: हानि:	दुर्गति: पीड़ा च
अष्टम्	रोगाप्ति: भयम्	मृत्यु क्लेशभयम्	पापवृद्धि भयम्	धनान्नादि लाभ:	मत्युभयं पीड़ा च	विपत्ति: धनक्षय:	शत्रु वृद्धि रोग:	मृत्यु भयं	हानि, पीड़ाभयं
नवम्	पापवृद्धि: कान्तिक्षय	राजभयम्	रोगभयम्	धननाश: रुग्भयम्	सुख सम्मानम्	सुखं लाभ:	पापं धननाश:	पाप कर्मरति:	पापदैन्यञ्च
दशम्	सौख्यं कर्मसिद्धि:	शुभम् सुखम्	शोक:	सुख सुखभोग:	दैन्यम्	धर्म लाभ:	वैमत्यम्	वैरी सुखं	शोकश्च भयं
एकादश	वित्ताप्ति: सुखं	विविधार्थ लाभ:	लाभ: सुखप्राप्ति:	शुभ अर्थागम:	सौख्य प्राप्ति:	दुखं धनागम:	सुख वित्तलाभ:	वित्तलाभ: सुखं	अर्थलाभ: सुयशो
द्वादश	द्रव्यनाश: पीड़ा	रोग: धन नाश:	रोग: शोकश्च	शोक: धन नाश:	देहे पीड़ा भयं	धनागम:	क्लेशम् अनर्थश्च	पीड़ा च हानि:	वैरश्च पीड़ा

घात चक्र

(प्रवास, राज्याधिकारी से मिलने, यात्रा आदि में घात चक्र वर्ज्य करें लेकिन विवाहादि मंगल कार्यों में नहीं)

राशि	मेष	वृषभ	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	राशि	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन
घात मास	कार्तिक	मार्गशीर्ष	आषाढ़	पौष	ज्येष्ठ	भाद्रपद	घात मास	माघ	आश्विन	श्रावण	वैशाख	चैत्र	फाल्गुन
तिथि	१।६।११	५।१०।१५	२।७।१२	२।७।१२	३।८।१३	५।१०।१५	तिथि	४।९।१४	१।६।११	३।८।१३	४।९।१४	३।८।१३	५।१०।१५
वार	रवि	शनि	सोम	बुध	शनि	शनि	वार	बृहस्पति	शुक्र	शुक्र	मंगल	बृहस्पति	शुक्र
नक्षत्र	मघा	हस्त	स्वाति	अनुराधा	मूल	श्रवण	नक्षत्र	शतभिषा	रेवती	भरणी	रोहिणी	आर्द्रा	आश्लेषा
योग	विष्कुम्भ	शुक्ल	परिघ	व्याघात	धृति	शूल	योग	शूल	व्यतिपात	वरीयान	वैधृति	गण्ड	वैधृति
करण	बव	शकुनि	चतुष्पद	नाग	बव	कौलव	करण	तैतिल	गर	तैतिल	शकुनि	किंस्तुघ्न	चतुष्पद
लग्न	मेष	मिथुन	कन्या	मकर	वृष	सिंह	लग्न	मीन	मिथुन	सिंह	वृश्चिक	मेष	कर्क
प्रहर	१	४	३	१	१	१	प्रहर	४	१	१	४	३	४
चन्द्र (पु.)	मेष	कन्या	कुम्भ	सिंह	मकर	मिथुन	चन्द्र (पु.)	धनु	वृषभ	मीन	सिंह	धनु	कुम्भ
चन्द्र (स्त्री)	मेष	धनु	धनु	मीन	वृश्चिक	वृश्चिक	चन्द्र (स्त्री)	मीन	धनु	कन्या	वृश्चिक	मिथुन	कुम्भ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुहूर्तादि कार्येषु शुभाशुभ समय विचार

सूर्यादि वारों में कृत्य

रविवार में कृत्य— राजाभिषेकोत्सवयान-सेवा-गोवह्निमन्त्रौषधिशस्त्रकर्म।
सुवर्णताम्रौर्णिकचर्मकाष्ठसंग्रामपण्यादिरवौ विदध्यात्॥

राज्याभिषेक, उत्सव (गाना बजाना), नई सवारी (वायुयान आदि) पर चढ़ना, यात्रा, नौकरी, गाय, बैल आदि पशु क्रय-विक्रय, अग्नि सम्बन्धी कर्म (हवन यज्ञादि), मन्त्रोपदेश, औषधि निर्माण और सेवन, अस्त्र-शस्त्र व्यवहार (युद्धादि), सोना, तांबा, ऊन-काष्ठ सम्बन्धी कार्य, युद्ध और व्यापार सम्बन्धी सब कार्य रविवार में करने चाहिए।

सोमवार में कृत्य— शंखाब्जमुक्तारजतेक्षुभोज्य स्त्रीवृक्ष कृष्यम्बु विभूषणानि।
गीतक्रतुक्षीर विकारशृङ्गी पुष्पाक्षरारम्भणमिन्दुवारे॥

शंख आदि जलोत्पन्न वस्तु, मुक्ता, चांदी, ऊखरस से उत्पन्न गुड़, चीनी आदि भोज्य पदार्थ, स्त्री-प्रसंग, वृक्ष (बीज) रोपणादि, कृषि कर्म, जल सम्बन्धी कार्य (नहर निकालना, तालाब, कुआं बनाना आदि) वस्त्राभूषण धारण, गीत-नृत्य, यज्ञादि कर्म, दूध, दही, घृत, बर्फ सम्बन्धी, पशु सम्बन्धी, पुष्प तथा अक्षरारम्भ (विद्याध्ययन) सम्बन्धी सभी कार्य सोमवार में करने चाहिए।

मंगलवार में कृत्य— भेदानृतस्तेयविषाग्निशस्त्रवधानि-धाताहवशाठ्यदम्भात्।
सेनानिवेशाकरधातुहेम प्रबालकार्यादि कुजे हि कुर्यात्॥

चुगलखोरी, चोरी, विष सम्बन्धी, अग्नि सम्बन्धी, शस्त्रघात, बन्धन, संग्राम (लड़ाई शुरू), शठता, दम्भ-पाखण्ड, सेना सम्बन्धी, खान धातु सोना तथा मूंगा आदि सम्बन्धी सभी कार्य मंगलवार में करने चाहिए।

बुधवार में कृत्य— नैपुण्य-पण्याध्ययनं कलाश्च-शिल्पादि सेवालिपिलेखनानि।
धातुक्रिया काञ्चनयुक्तिसन्धि-व्यायामवादाश्च बुधेविधेयाः॥

ट्रेनिंग, व्यापार, अध्ययन, कला कौशल, शिल्प, खेलकूद, चित्रकारी, धातु सम्बन्धी सोना, कांसा, पीतल आदि, सन्धि समझौता, व्यायाम, वाद-विवाद, नौकरी प्रवेशादि कार्य बुधवार में करने चाहिए।

गुरुवार में कृत्य— धर्मक्रिया पौष्टिककर्म यज्ञ-माङ्गल्यहेमाम्बरवेश्मयात्राः।
रथाश्वभैषज्यविभूषणाद्यं कार्य विदध्यात् सुरमन्त्रिणोऽह्नि॥

धर्मानुष्ठानादि कर्म, पौष्टिक (स्वास्थ्य), यज्ञ, विद्याध्ययन, मंगलोत्सव, सोना सम्बन्धी गृहकर्म, वस्त्राभूषण, यात्रा, रथ, घोड़ा, गाड़ी, कार, मोटर, वायुयान आदि सवारी सम्बन्धी कार्य, औषधि-आभूषण का निर्माण व प्रयोग सभी शुभ काम गुरुवार में करने चाहिए।

शुक्रवार में कृत्य— स्त्रीगीतशय्यामणिरत्नगन्धं वस्त्रोत्सवालंकरणादि कर्म।
भूषण्यगोकोश-कृषिक्रियाश्च सिद्ध्यन्तिशुक्रस्यदिने समस्तम्॥

स्त्री सम्बन्धी, शय्या, मणि, रत्न, सुगन्ध,वस्त्र, उत्सव, आभूषण, भूमि, व्यापार, गोसम्बन्धी, कृषि कर्म, जमीन, जायदाद तथा भण्डार (संग्रह) से सम्बन्धित सभी कार्य शुक्रवार में करने चाहिए।

शनिवार में कृत्य— लोहाश्मसीसत्रपुरस्त्रदास्य पापानृतस्तेयविषासवाद्यम्।
गृह प्रवेशो द्विपबन्ध-दीक्षा-स्थिरं च कर्मार्कसुतेहि कुर्यात्॥

लोहा, पत्थर, सीसा, रांगा सम्बन्धी कर्म, अस्त्र-शस्त्र, नौकरी या नौकर रखना, पाप कर्म, चोरी, मिथ्यालाप, विषाक्त कर्म, आसव निर्माण व प्रयोग, गृह प्रवेश, हाथी को बांधना, अन्य पशु को सिखाना, दीक्षा (मन्त्र ग्रहण) आदि स्थिर कर्म शनिवार में करने चाहिए।

समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य

१. जन्म नक्षत्र, जन्म तिथि, जन्म मास, श्राद्ध दिवस (माता-पिता का मृत्यु दिन), चित्त भंग, रोग या कोई उत्पादित। २. क्षय तिथि, वृद्धि तिथि, क्षय मास, अधिक मास, क्षय वर्ष, दग्धा तिथि, अमावस्या। ३. विष्कुम्भ योग की प्रथम पांच घटिकायें, परिधि योग का पूर्वार्द्ध, शूल योग की प्रम ७ घटिकायें, गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटिकायें एवं व्याघात योग की प्रथम आठ घटिकाएं, हर्षण और वज्र योग की नौ घटिकाएं, व्यतिपात और वैधृति योग समस्त शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। मतान्तर से विषकुम्भ की तीन, शूल की पांच, गण्ड और अतिगण्ड की सात, व्याघात व वज्र की ९ घटिकाएं शुभ कार्यों में त्याज्य हैं। ४. महापात का समय में भी कार्य न करें। ५. तिथि, नक्षत्र और लग्न इन तीनों प्रकार का गण्डान्त समय। ६. भद्रा (विष्टीकरण)। ७. तिथि नक्षत्र तथा दिन के परस्पर बने कई दुष्ट योग जैसे सप्तमी+अश्विनी+मंगल, पंचमी+हस्त+रवि, छठ+मृगशिर+सोम, अष्टमी+अनुराधा+बुध, नौमी+पुष्य+गुरु, दशमी+रेवती+शुक्र, एकादशी+रोहिणी+शनि आदि योगों को शुभ कार्य में त्याज्य करना चाहिए। ८. पाप ग्रंह युक्त, पाप भुक्त और पाप ग्रह विद्ध नक्षत्र एवं नक्षत्रों की विष संज्ञक घटिकायें। ९. पाप ग्रह युक्त चन्द्र, पाप युक्त लग्न का नवांश। १०. जन्म राशि, जन्म लग्न से अष्टम लग्न। दुष्ट स्थान ४, ८, १२ का चन्द्र, क्षीण चन्द्र वर्जित है। १२. लग्नेश ६, ८, १२ न हो, जन्मेश और लग्नेश अस्त नहीं हो, पाप ग्रहों का कर्तरी योग भी वर्जित है। १३. मासान्त दिन, सभी नक्षत्रों के आदि की २ घटिका, तिथि के अन्त की एक घटी और लग्न के अन्त की आधी घड़ी शुभ कार्यों में वर्जित करें। १४. जिस नक्षत्र में ग्रहण या पापी ग्रहों का युद्ध हुआ हो वह नक्षत्र शुभ कार्यों में ६ महीने तक नहीं लेना चाहिए (ग्रहों के एक राशि अंश कलादि सम होने पर ग्रह युद्ध कहा है)। १५. ग्रहण के पहले ३ दिन और बाद के ६ दिन वर्जित, ग्रहण नक्षत्र वर्जित, ग्रहण खग्रास हो तो वह नक्षत्र ६ मास, आधे में ३ मास, चौथाई ग्रहण में १ मास, उदयोदय और अस्तास्त में ३ दिन पहले और ३ दिन पीछे कोई शुभ कार्य न करें। १६. गुरु-शुक्र का अस्त, बाल्य, वृद्धत्व, गुर्वादित्य समय भी शुभ कार्यों में त्याज्य कहे हैं। बाल्य और वृद्धत्व के ३ दिन वर्जनीय हैं। १७. कृष्ण पक्ष १४ का चन्द्र वार्द्धिक्य, अमावस का अस्त, शुक्ल एकम् के बाल्य चन्द्र के समय में भी शुभ काम न करें।

सामान्य रूप से दिन शुद्धि

१. दोनों पक्षों की २, ३, ४, ७, १०, १२, १५, कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा तथा शुक्ला की १३ तिथि शुभ हैं। परन्तु तिथि-क्षय-वृद्धि त्याज्य हैं। २. शुभवार-सोम, बुध, गुरु और शुक्र शुभ हैं। ३. बव, बालव, कौलव, तैतिल, गर और वणिज करण शुभ हैं। ४. अश्विनी,

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा,

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्ध योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा शतभिषा और रेवती नक्षत्र शुभ हैं। ५. योगों का वर्णन किया है उनका शुभ कार्यों में त्याज्य करना चाहिए। ६. तारा-जन्म नक्षत्र से इष्टकालीन नक्षत्र तक की संख्या को ९ से भाग दें। शेष १, २, ४, ६, ८ या ० रहे तारा शुद्ध जानो यदि ३, ५, ७ शेष रहे तो तारा अशुभ जानो। शुक्ल पक्ष में चन्द्र बल व कृष्ण पक्ष में तारा बल विशेष महत्व रखता है। ७. चन्द्र बल-क्षीण-वार्द्धक्य, अस्त, बाल्य, पाप ग्रह युक्त विशेष रूप से शुभ कार्यों में वर्जित करें। राशि अनुसार जन्म राशि १, २, ३, ५, ६, ७, ९, १०, ११वीं राशि का चन्द्र शुभ होता है। ४, ८, १२ राशि का चन्द्रमा हर प्रकार से नेष्ट माना गया है। मुहूर्त प्रकाश में लिखा है—यदि लग्न शुभ ग्रहों और संपूर्ण गुणों से युक्त हो परन्तु १२, ८, ६ भाव में चन्द्र हो तो अशुभ ही जानो। लग्न में गुरु-शुक्र तथा चन्द्र अपनी उच्च राशि ४ या नीच राशि ८ अथवा मित्र राशि या शत्रु के घर में हो और सम्पूर्ण गुणों सहित लग्न हो परन्तु पाप ग्रह युक्त चन्द्रमा हो तो दोष कारक ही होता है। इसलिए चन्द्र को सभी प्रकार से देखना चाहिए। ८. पाप ग्रह १२, ८, १ इन जगह में तथा ६ में शुभ ग्रह और पाप ग्रह केन्द्र १, ४, ७, १० त्रिकोण ९, ५ में अशुभ होते हैं और सौम्य ग्रह केन्द्र व त्रिकोण में और पाप ग्रह ३, ६, ११ भावों में और सम्पूर्ण ग्रह ११ भाव में श्रेष्ठ होते हैं। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित पाप ग्रहों पर बुध, बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो। यदि केन्द्र या त्रिकोण में स्थित बुध शुक्र या गुरु की दृष्टि पाप ग्रहों पर हो तो पाप ग्रहों का फल शुभ हो जाता है। **विशेष**—चर लग्न, चर नवाँश तथा राशि स्थित चन्द्रमा ये तीनों चर शुभ कार्यों में वर्जित करें। शास्त्रों में लिखा है कि तिथि का १ गुण, नक्षत्र का ४, वार का ८, करण का १६, योग का ३२, तारा का ६०, चन्द्रमा का १०० और लग्न का १ करोड़ गुण होता है। अतः गुण व दोष इन दोनों के तारतम्य से विद्वानों को विचार कर मुहूर्त्त करना चाहिए। क्योंकि गुण सैकड़ों दोषों का विनाश करता है तो कहीं पर एक दोष ही असंख्य गुणों को नष्ट करता है। इसलिए शुभ-अशुभ का न्यूनाधिक देखकर ही मुहूर्त्त विचारने चाहिए।

हमारे नित्य दैनिक जीवन में महत्वपूर्ण लिखा-पढ़ी, राजकीय या व्यापारिक कन्ट्रैक्ट, भेंट-मुलाकात, आवेदन या नवीन टेण्डर, नवीन मुलाकात द्वारा कार्य सिद्धि, नवीन विषय पर लेखन कार्य प्रारम्भ आदि अनेकानेक महत्वपूर्ण कार्य हमारे दैनिक जीवन में आते हैं जिसके लिए हम शुभ मुहूर्त्त चाहते हैं। पर यथा शीघ्र सर्वाङ्ग शुद्ध मुहूर्त्त की प्रतीक्षा में अधिक दिन तक नहीं रुक सकते अतः हम अपने प्रिय पाठकों के लिए वार-तिथि-नक्षत्र-योग अनुसार सुयोग व कुयोग मुहूर्त्तों की सारिणी दे रहे हैं। इस सारिणी की सहायता से सरलतापूर्वक शीघ्र ही शुभा-शुभ काल ज्ञात करके अपना कार्य आरम्भ कर सकते हैं।

योग	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
सिद्ध योग तिथि	—	—	३-८-१३	२-७-१२	५-१०-१५	१-६-११	४-९-१४
दग्धा तिथि	१२	११	५	३	६	८	९
हुताशन तिथि	१२	६	७	८	९	१०	११
विषाख्या तिथि	४	६	७	२	८	९	७
अधम तिथि	७, १२	११	१०	१, ९	८	७	६
वर्जित तिथि नक्षत्र	५ हस्त	६ मृग	७ अश्विनी	८ अनु.	९ पुष्य	१० रेवती	११ रोहि.
मृत्यु योग तिथि	१-६-११	२-७-१२	१-६-११	३-८-१३	४-९-१४	२-७-१२	५-१०-१५
क्रकच तिथि	१२	११	१०	९	८	७	६
उत्पात नक्षत्र	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.
मृत्यु योग नक्षत्र	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	आश्लेषा	हस्त
काण योग	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
दग्धा योग	भरणी	चित्रा	उ.षा.	धनिष्ठा	उ.फा.	ज्येष्ठा	रेवती
यम घंट योग	मघा	विशाखा	आर्द्रा	मूल	कृत्तिका	रोहिणी	हस्त
मुसल योग	अभिजित्	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
काल दण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तराषाढ़	शतभिषा	अश्विनी	मृग.
राक्षस योग	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पू.भा.	भरणी
धूम्र	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति	मूल
आनन्द	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
सौम्य	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी
छत्र	पू.फा.	स्वाति	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
शुभ	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	विशाखा
अमृत	उ.षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिर	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा
मित्र	उ.फा.	विशाखा	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
सिद्ध योग	मूल	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पू.फा.	स्वाति
अमृत सिद्धि	हस्त	श्रवण	अश्विनी	अनुराधा	पुष्य	रेवती	रोहिणी
सर्वार्थ सिद्धि	हस्त, मूल	श्र.रो.मृ.	अश्विनी	रोहिणी	रेव.,अनु.,	रेव. अनु.,	श्रवण
	३ उ.,	पुष्य,	उ.भा.,	अनु., हस्त	अश्वि.,पुन.	अश्वि.,	रोहिणी
	पु., अश्विन	अनुराधा	कृत्ति., अश्ले.	कृत्ति., मृग.	पुष्य	पुन., श्रव.	स्वाति
दुष्ट तिथि	१, ३, ७	२-११	३-९-१२	७-९-११	—	—	११-१३

सर्वार्थ सिद्धि के साथ दुष्ट तिथि पड़ जाये तो ये योग दूषित हो जाता है। ऐसे ही अमृत सिद्धि में लिखा है। यदि यमदंष्ट्रा राक्षस आदि कुयोग में साथ ही कोई सुयोग सर्वार्थ आदि भी पड़े तो बुरे के बजाय शुभ फल देगा। अतः कार्यारम्भ शुभ रहता है। वैसे तत्कालीन लग्न शुद्धि कुयोगों का नाश कर सुयोग को अपना शुभ फल प्रदान करने की शक्ति रखती है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विविध मुहूर्त्त विचार

भारतीय संस्कृति में संस्कारों को अत्यधिक महत्व दिया गया है। जन्म से मनुष्य शूद्र होता है भले ही वह किसी भी जाति में जन्म ले, जब तक वह संस्कारित नहीं किया जाता शूद्र ही बना रहता है। पूर्व में चालीस संस्कारों का प्रचलन था, किन्तु आज समयाभाव के कारण इनकी संख्या में कमी आई है। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक सोलह संस्कार माने गये हैं। इनमें से भी कुछ मुख्य संस्कारों की ही मान्यता आज प्रचलित है।

गर्भाधान— सभी संस्कारों में गर्भाधान संस्कार का विशेष महत्व है क्योंकि भावी सन्तान के संस्कारों की आधारशिला इसी संस्कार पर निर्भर करती है। यह सर्वविदित तथ्य है कि सन्तान्नोत्पत्ति माता-पिता के पारस्परिक संयोग से होती है। अतः इन दोनों के चेतन-अचेतन मन तथा देह की पवित्रता आवश्यक मानी गई है। जैसे सुसमय में बीजवपन से सस्य में पुष्टता होती है उसी प्रकार सुसमय में गर्भाधान से सन्तान गुणी एवं दीर्घजीवी उत्पन्न होती है।

रजोदर्शन होने के चार दिन पश्चात्, समरात्रि काल में पुत्रोत्पत्ति एवं विषम रात्रि में कन्या सन्तति उत्पन्न होती है। गण्डान्त, रवि, चन्द्रग्रहण, ७वीं तारा, मूल, अश्विनी, भरणी, मघा, रेवती नक्षत्रों, व्यतिपात, वैधृति योग, अमावस्या माता-पिता की मृत्यु तिथि, क्षयतिथि, बुधवार-शनिवार, को छोकर अन्य तिथि-वार नक्षत्र-योग में तथा केन्द्र स्थान (१-४-७-१०) और त्रिकोण (५-९) में शुभ ग्रह हों तथा ३-६-११वें स्थान में पाप ग्रह हों तब प्रसन्नचित्त होकर रात्रिकाल में गर्भाधान-कृत्य करें। विवाह और गर्भाधान में स्त्री के चन्द्रबल को प्रधानता दें।

पुंसवन— गर्भाधान के पश्चात् पुंसवन संस्कार किया जाता है ताकि गर्भस्थ शिशु का शारीरिक और मानसिक विकास हो सके। इस संस्कार में मलमास, गुरु शुक्रास्त प्रभृति निषिद्ध योग बाधक नहीं होते, जो दिन-नक्षत्र शुभ हो उसी दिन कर लेना चाहिये। यह संस्कार गर्भ के दूसरे व तीसरे मास में किया जाता है। शास्त्रकारों का मत है कि पुंसवन संस्कार के लिए पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मृगशिरा, मूल, श्रवण आदि नक्षत्र शुभ रहते हैं।

पारस्कर गृह्यसूत्र के अनुसार यह संस्कार तब करना चाहिये जब चन्द्रमा पुरुष नक्षत्र से युक्त हो।

सीमन्तोन्नयन— यह तीसरा संस्कार है तथा गर्भ के छठे या आठवें मास में किया जाता है। सीमन्तोन्नयन का शब्दार्थ होता है "शिर की मांग" लेकिन इसका भावार्थ है सौभाग्य सम्पन्न होना। इस संस्कार से गर्भवती के मन में आने वाली सन्तान के प्रति प्रेम तथा कर्त्तव्य की निष्ठा का समावेश होता है। पारस्कर गृह्य सूत्र में कहा है कि—"**प्रथम गर्भेमासे षष्ठेऽष्टमेवा**" तथा "**पुंसवनवत्**" कहकर यह स्पष्ट कर दिया है पुंसवन संस्कार में कहे गये मुहूर्त में इसे करें।

आश्वलायन गृह्य सूत्र के अनुसार जब चन्द्रमा शुक्ल पक्ष में पुमान् नक्षत्र से युक्त हो तब करना चाहिये साथ ही इन्होंने गर्भ के चौथे मास में इसे करने का निर्देश किया है, लेकिन अधिक मत छठे और आठवें मास में करने को मिलते हैं।

मेधा-जनन संस्कार— शिशु के जन्म लेने के उपरान्त यह संस्कार किया जाता है ताकि आगे चलकर वह यशस्वी और बुद्धिमान हो। जब बच्चा जन्म ले चुके तो नालछेदन से पूर्व दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में स्वर्ण भस्म शहद और गौघृत लगा कर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलकर बच्चे को शहद चटा दें। चार मंत्र हैं प्रत्येक को एक बार बोल कर चटाना चाहिये। *मन्त्र—* **ॐ भूस्त्वीयदधामि, ॐ भुवस्त्वीयदधामि, ॐ स्वस्त्वीय दधामि, ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वस्त्वीय दधामि।**

स्तन पान मुहूर्त्त— रिक्ता, तिथि, भद्रा, व्यतिपात, वैधृति योग को त्याग कर शुभ तिथि-वार में पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, चित्रा, श्रवण, रेवती नक्षत्र में स्तन पान करना शुभ है।

प्रसूता स्नान का मुहूर्त्त— उत्तरा तीनों, रोहिणी, मृगशिरा, स्वाती, रेवती, हस्त, अनुराधा, पूर्वाफाल्गुनी, धनिष्ठा, अश्विनी इन नक्षत्रों में रवि, मंगल एवं बृहस्पति वारों में रिक्ता तिथि एवं अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियों में प्रसूति स्नान प्रशस्त है।

जातकर्म— मेघा-जनन संस्कार से पूर्व यह संस्कार किया जाता है। नाल काटने पर सूतक लग जाता है और सूतक में जातकर्म करने का निषेध है। इस समय तिथ्यादि शुद्धि देखने की आवश्यकता नहीं होती, यदि किसी कारणवश पिता जन्म समय उपस्थित न हो तो जन्म के ११वें या १२वें दिन शुभ मुहूर्त में जातकर्म करना प्रशस्त है।

नामकरण संस्कार— जातकर्म संस्कार के पश्चात् नामकरण संस्कार किया जाता है लेकिन आज के युग में समयाभाव के कारण नामकरण के साथ ही जातकर्म करने का प्रचलन है। नामकरण संस्कार मूलतः दश दिन पश्चात् हो जाना चाहिये लेकिन इसके बारे में आचार्यों के भिन्न-भिन्न मत हैं। पाराशर स्मृति के अनुसार—

जाते विप्रो दशाहेन द्वादशाहेन भूमिपः। वैश्य पंच दशाहेन शूद्रो मासेन शुद्ध्यति॥

अर्थात् ब्राह्मण के लिए सूतक दस दिन, क्षत्रिय के लिए बारह दिन, वैश्य के लिए पंद्रह दिन तथा शूद्र के लिए एक मास तक रहता है। कुलाचार के अनुसार सूतक के अन्त होने के दूसरे दिन नामकरण करें। चिर-क्षिप्र-ध्रुव और मृदु नक्षत्रों में रवि, सोम, बुध, बृहस्पति, शुक्रवारों में, रिक्तामा को छोड़कर अन्य तिथियों में लग्न शुद्धि और चन्द्र-तारा का बल देखकर नामकरण करना प्रशस्त है।

निष्क्रमण संस्कार— घर से बाहर निकालने को निष्क्रमण कहते हैं। यह संस्कार तब किया जाता है जब बच्चे को घर से बाहर ले जाना होता है। जब माता अपने पिता के यहां जाये या माता-पिता को कहीं अन्यत्र जाना हो तो बच्चे को भी ले जाना अनिवार्य रहता है। इसलिए नामकरण संस्कार के पश्चात् निष्क्रमण किया जाता है। जन्म से चतुर्थ मास में यात्रा में विहित तिथियों में निष्क्रमण करना प्रशस्त है। यदि अत्यधिक शीघ्रता करनी पड़ जाये तो जन्म से बारहवें दिन यह संस्कार करें।

भूम्युपवेशन संस्कार— भूम्युपवेशन का अर्थ है भूमि पर बिठाना। प्रथम बार जब बच्चे को भूमि पर बिठना होता है। तब यह संस्कार किया जाता है। इसे जन्म से पांचवें महीने में करना चाहिये। भगवान् वराह और पृथ्वी का पूजन करके रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में शुभ ग्रह के बार में लड़के को कटिसूत्र धारण कराकर, ध्रुव, मृदु, लघु संज्ञक नक्षत्र में तथा मंगल बच्चे के लिए विशेष शुभ हो तब यह संस्कार करना उचित है।

इस समय बालक की आजीविकाज्ञानार्थ विद्या, कृषि, युद्ध व सेवा-सम्बन्धी पदार्थ उसके सामने रखें बालक जिस को पहले ग्रहण करे उसी के अनुसार उसकी जीविका जानें। बच्चे को भूमि पर बिठा तथा हाथ में पकड़े रह कर बालक का पिता, चाचा, दादा और नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करें—

रक्षैनं वसुधेदेवि सदा सर्वगतं शुभे।
आयु प्रमाणं लिखितं निक्षिपस्व हरिप्रिये॥

अन्न प्राशन— देह की पुष्टि-शक्ति और स्वास्थ्य के लिए यह संस्कार किया जाता है। तैत्तरीय उपनिषद् में "प्राणो वै अन्नम" अर्थात् अन्न ही प्राण है कहा गया है। बालक के जन्म से छठे, आठवें, दशवें आदि सम मासों में यदि कन्या हो तो पांचवें, सातवें आदि विषम मास में, रिक्ता-नन्दा और क्षयतिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, शनि, मङ्गल को छोड़कर अन्य वारों में, पुन., पु., हस्त, रो., चि., मृ., अनु., अश्वि., स्वा., तीनों उत्तरा., ध., म. और रेवती नक्षत्रों में, वृष, मिथुन, कन्या, मीन लग्न में अन्न प्राशन प्रशस्त है।

कर्ण वेध— जहां कर्ण वेध श्रवण शक्ति की वृद्धि में सहायक होता है वहीं आन्त्र उतरने (हानियां) जैसी भयानक व्याधि से बचाता है। यह संस्कार जन्म से बारहवें या सोलहवें दिन,

हरिशयन (आषाढ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हरिशयन, (आषाढ़ शुक्ल ११ से कार्तिक शुक्ल ११ तक) पौष, चैत्र और जन्म मास को छोड़ कर ६, ८, १०वें मास में, ३, ५वें विषम वर्षों में, जन्म नक्षत्र और रिक्ता तिथि को त्याग कर अन्य तिथियों में, अश्वि., पुन., पु., ह., श्र., अनु., ध., रे., स्वा., मृ., चित्रा आदि नक्षत्रों में, चं., बु., गु., शु. वारों में, मे., वृश्चि., म., कु. लग्नों एवं नवांश को छोड़कर अन्य लग्नों में, चन्द्र तारा की शुद्धि देखकर कर्ण बेध करना शुभ है। लड़के का प्रथम दाहिना और लड़की का बायां करना प्रशस्त है।

मुण्डन संस्कार—जीवन के आरम्भ काल में जो बाल जन्म के साथ उत्पन्न होते है वे पशुता के सूचक माने गयें हैं। इन्हें कटाने से जहां वह पशुता समाप्त होती है वहीं मानवीं गुणों की प्रखरता के साथ बुद्धि और ज्ञान की भी वृद्धि होती है। जन्म से तीसरे, पांचवें आदि विषम वर्षों में चैत्र को छोड़कर उत्तरायण समय में २, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३ इन तिथियों में, सो., बु., गु., शु. आदि वारों में जन्म नक्षत्र को छोड़ कर मृ., चि., रे., ज्ये., श्र., ध., शत., स्वा., पु., ह., अश्वि., पुष्य इन नक्षत्रों में लग्न शुद्धि देखकर अपराह्न से पूर्व मुण्डन संस्कार प्रशस्त हैं।

अन्यमत से प्रथम, द्वितीय वर्ष भी विहित हैं तथा ब्राह्मण के लिए रविवार, क्षत्रिय के लिए मंगलवार, वैश्य तथा शूद्र के लिए शनिवार भी प्रशस्त हैं तथा याम्यायन (दक्षिणायन) में मार्गशीर्ष भी श्रेष्ठ हैं।

उपनयन संस्कार—मानवजीवन में इस संस्कार का अत्यन्त महत्त्व है क्योंकि इसके पश्चात् मानव की भौतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त होता है। गर्भाधान से आठवें वर्ष ब्राह्मण का, ग्यारहवें वर्ष वैश्य का उपनयन संस्कार हो जाना चाहिये। इसके पश्चात् उपरोक्त काल के दूने काल में निन्द्य माना गया है अर्थात् ब्राह्मण के सोलहवें, क्षत्रिय का बाईसवें और वैश्य का चौबीसवें। इसलिए विहित वर्ष में हरिशयन से पूर्व उत्तरायण के सूर्य में शुक्ल पक्ष में २, ३, ५, १०, ११, १२ तिथियों में, क्षिप्र, ध्रुव, चर, मृदु संज्ञक, श्ले., मृ., आ., तीनों पूर्वा नक्षत्रों में सो., बु., गु., शु., वारों में वृ., मि., सिं., क., तुला, धनु और मीन लग्न में, चन्द्र, तारा, रवि, गुरु की शुद्धि देखकर उपनयन संस्कार करना श्रेष्ठ है।

विशेष—ज्येष्ठ शुक्ल २, आषाढ़ शुक्ल दशमी, पौष शुक्ल ११, और माघ शुक्ल १२ उपनयन संस्कार में निषिद्ध मानी गई हैं।

अक्षरारम्भ मुहूर्त्त—जन्म से पाँचवें वर्ष में गणपति, विष्णु, सरस्वती और लक्ष्मी की पूजा करके कुम्भ के सूर्य को छोड़ कर उत्तरायण में २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में, मृ., आ., पुन., पु., श्ले., ह., चि., स्वा., ध., शत., अश्वि., मू., तीनों पूर्वा और उत्तरा, रो, रे, इन नक्षत्रों में रवि, गु., शु. वारों में, लग्न, चन्द्र, तारा बल विचार कर अक्षरारम्भ श्रेष्ठ माना गया है। वारों में सो., बु., मध्यम माने गये हैं।

विद्यारम्भ मुहूर्त्त—शिशिर, बसन्त एवं ग्रीष्म ऋतु में कुम्भ (कुम्भ के सूर्य को छोड़कर) रवि, बुध, गुरु और शुक्रवार, २, ३, ५, ६, १०, ११, १२ इन तिथियों में मृ., आ., पुन., ह., चि., स्वा., श्र., ध., शत., अश्वि., मूल, तीनों पूर्वा, पु. और श्लेषा इन नक्षत्रों में केन्द्र स्थान एवं त्रिकोण स्थान में शुभग्रह हों ३, ६, ११ स्थानों में पापग्रह हों, आठवां स्थान खाली हो तो विद्यारम्भ शुभ है।

जल पूजन के मुहूर्त्त—अधिक मास, चैत्र, पौष, गुरु, शुक्रास्त काल, मास पूर्ति होने पर ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, बु., सो., गुरुवार में श्र., पुन., पु., मृ., ह., मू., अनु. इन नक्षत्रों में प्रसूता का जल पूजन करना शुभ है।

नित्यक्षौर का मुहूर्त्त—शनि, रवि और मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, मघा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा, कृत्तिका इन नक्षत्रों में ४, ९, १४, ६ ८ अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथियां, रात्रिकाल, सन्ध्या, भद्रा, गण्डान्त काल और भोजन तथा स्नान के पश्चात् क्षौर करना वर्जित है।

दाह कर्म में, मृतकान्त में, जेल से छूटने पर, यज्ञ में, दीक्षा लेने में, राजा और ब्राह्मण की आज्ञा से क्षौर कर्म में मुहूर्त देखने की आवश्यकता नहीं है।

विवाह मुहूर्त्त विचार

विवाहे दस दोष

मुहूर्त्त ग्रन्थों में विवाह के अनेक दोष बतलाये गये हैं लेकिन इनमें प्रमुखता मात्र दश दोषों की है। इनकी शुद्धि होने पर अन्य दोष प्रभावहीन हो जाते हैं। वे दश दोष हैं—(१) लत्ता (२) पात (३) युति (४) वेध (५) यामित्र (६) वाण (७) एकार्गल (८) उपग्रह (९) क्रान्तिसाम्य (१०) दग्धातिथि। पंचांग में जो विवाह मुहूर्त्त दिये गये हैं वे इनका विचार करके दिये गये हैं। जहां कोई दोष नहीं है वहां सीधी रेखा और जहां दोष है वहां (⌇) टेढ़ी रेखा बनाई गई है। इन दस दोषों का विचार इस प्रकार किया जाता है—

१. लत्ता—सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनैश्चर जिस नक्षत्र में हों क्रम से उससे अगले १२, ३, ६ और ८वें नक्षत्र को लत्ता से दूषित करते हैं। यह अग्र लत्ता दोष माना गया है। चन्द्र, बुध, शुक्र और राहु जिस नक्षत्र में हो क्रम से उससे पीछे के २२, ७, ५ और ९वें नक्षत्र को लत्तित करते हैं। यह पृष्ठ लत्ता दोष माना गया है। जैसे मंगल भरणी में हो और विवाह नक्षत्र रोहिणी हो तो यह मंगल का लत्ता दोषयुक्त साहा कहा जाएगा। इसी प्रकार अन्य ग्रहों का लत्ता दोष का ज्ञान करें।

सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	ग्रहाः
१२	२२	३	७	६	५	८	९	वि.नक्षत्र
सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	सम्मुख	पृष्ठ	दिशा
धननाश	भय	मृत्यु	भय	बन्धुनाश	कार्यनाश	कुलनाश	मृत्यु	फल

२. पात—साध्य, हर्षण, शूल, गण्ड, वैधृति और व्यतीपात इन योगों का अन्त जिन नक्षत्रों में होता है वे पात दोषयुक्त माने जाते हैं।

पात दोष चक्र

रो.	मृ.	म	उ.फा.	ह	स्वा	अनु.	मूल	उ.षा.	उ.भा.	रे	नक्षत्र
आर्द्रा	मृग.	अश्वि.	कृत्ति.	भर.	कृत्ति.	अनु	रोहि.	भर.	भर.	अश्वि.	सूर्याधिष्ठित नक्षत्र
पुन.	आर्द्रा	मृग.	आर्द्रा	मृग.	श्रव.	आर्द्रा	ज्ये	पुन.	शत.	ज्ये	
शत.	ज्ये.	ज्ये.	विशा.	शत.	धनि	उ.षा.	धनि	शत.	विशा.	धनि	
पू.फा.	धनि	पुष्य	पू.फा	पू.भा	पु.	पू.भा	आ	वि	उ.फा	म	
चित्रा	मघा	हस्त	उ.भा	स्वा.	हस्त	पू.षा	भर.	अनु	पू.फा	पू.फा	
मूल	हस्त	रेव.	पू.भा	भर.	रेव.	पू.फा	उ.भा	उ.षा	भर.	स्वा	

३. युति—जब विवाह के नक्षत्र में कोई ग्रह हो तो उसे ग्रह की युति युक्त दोष माना जाता है। ग्रहों की विवाह नक्षत्रों में युति धन नाशक, मृत्युदायक और भयप्रद कही गई है, विशेषतया शुक्र की युति वर्जित है। चन्द्र यदि स्वक्षेत्री, मित्र गृही व उच्च का हो तो युति दोष (चन्द्र का) नहीं माना जाता उल्टे इसे शुभ कहा गया है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४. वेध— पंचशलाका चक्र में यदि विवाह के नक्षत्र के सम्मुख नक्षत्र में कोई ग्रह पड़े तो वेध दोष माना जाता है। शुभ ग्रह के वेध से स्वल्प और पाप ग्रह के वेध से अधिक दोष माना जाता है। नीचे वेध दोष चक्र दिया है इसमें ऊपर लिखे नक्षत्र में विवाह हो और नीचे लिखे नक्षत्र में ग्रह हो तो वेध होता है यह विवाह काल में वर्जित है।

वेध दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	मू.	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अश्वि	उ.षा	श्र	रे	उ.भा	श	भ	पुन	मृ	ह	उ.षा.	वेध नक्षत्र

५. यामित्र— विवाह लग्न या चन्द्र से सप्तम में कोई ग्रह हो तो यामित्र दोष होता है। यदि लग्न और सप्तमस्थ ग्रह का अन्तर ठीक ६ राशि (अंश कलादि तक) तक हो तो पूर्ण यामित्र दोष अन्यथा अल्पदोष कहा गया है।

यामित्र दोष चक्र

रो	मृ	म	उ.फा	ह	स्वा	अनु	भ	उ.षा	उ.भा	रे	वि.नक्षत्र
अनु	ज्ये	ध	पू.भा	उ.भा	अ	कृ	मृ	पुन	उ.फा	ह	ग्रह नक्षत्र

६. बाण— किसी राशि में सूर्य के (स्पष्ट सूर्य के) भुक्तांश ८, १७ और २६ हों तो रोगबाण, २, ११, २० और २९ हों तो अग्निबाण, ४, १३, २२ हों तो राजबाण, ६, १५, २४ हों तो चोरबाण तथा १, १०, १९ और २८ हों तो मृत्यु बाण दोष माना जाता है। विवाह में मृत्यु बाण, यात्रा में चोरबाण, सेवा कर्म में (नौकरी करने में) राजबाण, गृहारम्भ में अग्निबाण और उपनयन में रोगबाण त्याज्य कहे गये हैं।

७. एकार्गल— विवाह के दिन विष्कुम्भ, वज्र, परिघ, अतिगण्ड, शूल, व्याघात, वैधृति और व्यतिपात इनमें से कोई योग हो तथा सूर्य नक्षत्र से (इसमें अभिजित के सहित गणना करें) चन्द्र विषम नक्षत्र में हो तो एकार्गल दोष होता है।

८. उपग्रह— विवाह के दिन सूर्य नक्षत्र से चन्द्रमा ५, ७, ८, १०, १४, १५, १८, १९, २१, २२, २३, २४ और २५वें नक्षत्र में हो तो उपग्रह दोष होता है। कुरू और वाह्लक क्षेत्र में विशेष दोषावह है।

९. क्रान्तिसाम्य— जब मेष और सिंह, वृषभ और मकर, मिथुन और धनु कर्क और वृश्चिक, कन्या और मीन तथा तुला और कुम्भ इन दोनों राशियों में से एक पर सूर्य तथा दूसरी पर चन्द्र हो तो क्रान्तिसाम्य दोष होता है। यह स्थूल क्रान्तिसाम्य है। सूक्ष्म क्रान्तिसाम्य ही सर्वत्र वर्जित माना गया है।

१०. दग्धा तिथि— जब सूर्य धनु-मीन, वृष, कुम्भ, मेष-कर्क, मिथुन-कन्या, सिंह-वृश्चिक, तुला-मकर इन दोनों राशियों में से किसी राशि में सूर्य हो तो क्रम से २, ४, ६, ८, १०, १२ तिथियां दग्धा मानी गई हैं।

दग्धा तिथि चक्र

मेष कर्क	वृषभ कुम्भ	मिथुन कन्या	सिंह वृश्चिक	तुला मकर	धनु मीन	सूर्यराशि
६	४	८	१०	१२	२	तिथि

लत्तादि दोष परिहार— लत्ता उज्जैन क्षेत्र में सौराष्ट्र में, पात कुरुक्षेत्र, भटिण्डा, फिरोजपुर जिले में, एकार्गल जम्मू-कश्मीर में, वेध सब जगहों में, उपग्रह कुरुक्षेत्र, आगरा व अवध, बंगाल, जगन्नाथपुरी (कलिंग में) त्याज्य हैं। लग्न यदि सूर्य और चन्द्र के बल से बली हो तो एकार्गल, उपग्रह, लत्ता तथा पात दोष का परिहार हो जाता है।

विवाह समय के विहित मास, तिथि, नक्षत्र और लग्नादि

विवाह के लिए वृश्चिक, मकर, कुम्भ, मेष, वृषभ और मिथुन के सूर्य (मिथुन का सूर्य हरिशयनी एकादशी से त्याज्य माना गया है) रिक्ता और अमावस्या को छोड़कर अन्य तिथि, रोहिणी, मृगशिर, मघा, उत्तरा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, मूल, उ.षा., उत्तराभाद्रपद और रेवती (कुछ आचार्यों के मत से अश्विनी, चित्रा, श्रवण और धनिष्ठा भी विवाह नक्षत्र विहित माने गये हैं)। विवाह लग्न में मिथुन, कन्या, तुला, धनु और मीन का नवांश प्रशस्त कहा गया है।

वाग्दान विचार (वरवरण मुहूर्त्त)— रिक्ता अमावस्या तिथि को छोड़कर अन्य तिथियों में, शुभवार में तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी और कृत्तिका इन नक्षत्रों में लग्न और चन्द्रबल देखकर लड़की का भाई या पुरोहित पूर्वाभिमुख बैठे वर के मस्तक पर केशरादि का तिलक करें, पूजन करे तथा वर के मुख में मीठा या पान देकर गोद में वस्त्र, नारियल और द्रव्यादि दें।

विवाह के पूर्व कन्या का नाम बदलना— आजकल कन्या का नाम विवाह से पूर्व बदलने का नियम चल पड़ा है। इसके पीछे कारण है कि कन्या का जन्म नाम मालूम न होना, वैसे भी प्राय: लोग जन्म नाम को बदल कर दूसरा नाम रख लेते हैं। यदि विवाह से पूर्व कन्या का नाम बदलना हो तो ध्यान रखें कि बोलता नाम बदला जा सकता है जन्म नाम नहीं।

विवाह विचार में विशेष— दो सगी बहनों का दो सगे भाइयों के साथ विवाह न करें। दो सगी बहनों या भाइयों का तथा सगे बहन-भाई का विवाह ६ मास के भीतर न करें। आवश्यकता में लड़की के विवाह के बाद लड़के का विवाह हो सकता है। जुड़वां भाई-बहन का विवाह करने में भी कोई हानि नहीं। विवाह के पश्चात् ६ मास तक मुण्डन, यज्ञोपवीत आदि संस्कार न करें। यदि संवत् बदल जाये तो ६ मास के भीतर किया जा सकता है। सगाई के पश्चात् वर या कन्या की तीन पीढ़ी में मृत्यु होने पर १ मास तक विवाह न करें। अत्यावश्यकता में सूतक समाप्त होने पर शान्ति करा कर विवाह करें। सबसे बड़े लड़के और सबसे बड़ी लड़की का विवाह ज्येष्ठ मास में न करें। जन्म नक्षत्र और जन्म तिथि में भी विवाह शुभ नहीं होता। अत्यावश्यक हो कि ज्येष्ठ लड़के और लड़की का विवाह ज्येष्ठ में करना पड़े तो सूर्य के कृत्तिका नक्षत्र में रहते कदापि न करें। अन्य नक्षत्रों में शान्ति कराकर किया जा सकता है।

त्रिबल शुद्धि

श्रेष्ठ गुरु— जब गुरु जन्म राशि से २।५।७।९।११वें हो।
पूज्य गुरु— जब गुरु जन्म राशि से १।३।६।१०वें हो।
नेष्ट गुरु— जब गुरु जन्म राशि से ४।८।१२ वें हो।
परिहार— जब गुरु स्वराशिस्थ (धनु-मीन) या उच्च में हो तो नेष्ट भी श्रेष्ठ माना गया है।
श्रेष्ठ रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ३।६।१०।११वें हो।
पूज्य रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से २।५।९।१।७वें हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

नेष्ट रवि— यदि सूर्य जन्म राशि से ४।८।१२वें हो।

श्रेष्ठ चन्द्र— जन्म राशि से १।२।३।५।६।७।९।१०।११।१२वां चन्द्र श्रेष्ठ है। विवाह में १२ भी लिया जा सकता है।

नेष्ट चन्द्र— जन्म राशि से ४।८वां चन्द्र नेष्ट है।

गोधूलिका लग्न— हेमन्त ऋतु में सायंकाल जब सूर्य का बिम्ब लाल होकर पश्चिम में अस्त होने वाला होता है तब, ग्रीष्म में जब सूर्य आधा अस्त हो जाता है तब, वर्षा ऋतु में जब सूर्य सम्पूर्ण अस्त हो जाता है तब गोधूलि कही जाती है। वारों में जब गुरुवार को सूर्यास्त होने पर और शनिवार को सूर्य अस्त होने से पूर्व गोधूलि लग्न होती है। विवाह काल में यदि गोधूलि लग्न हो तथा लग्न, षष्ठ और अष्टम् में चन्द्र हो तो कन्या के लिए अशुभ, लग्न, सप्तम, अष्टम इन स्थानों में मंगल हो तो वर के लिए अशुभ रहता है। लग्न से दूसरे, तीसरे और ग्यारहवें चन्द्र हो तो शुभ होता है।

वधु प्रवेश मुहूर्त्त— विवाह के पीछे १६ दिनों के भीतर सम दिन में अर्थात् २, ४, ६, ८, १०वें आदि दिनों में या ५, ७, ९वें विषम दिनों में वधु प्रवेश शुभ होता है, इसके बाद १, ३, ५, ७, ९, ११वें मास में, १, ३, ५वें वर्ष में वधु प्रवेश शुभ होता है। ५ वर्ष के पश्चात् कभी भी शुभ दिन देखकर वधु प्रवेश कराया जा सकता है।

द्विरागमन मुहूर्त्त— विवाह से विषम वर्षों में द्विरागमन शुभ है। कुम्भ, वृश्चिक और मेष में सूर्य हो, चन्द्र, गुरु और सूर्य बली हों तथा शुभ दिनों में, कन्या, तुला, वृष, मिथुन और मीन लग्न में तथा लघु, चर, ध्रुवसंज्ञक और मूल नक्षत्र में द्विरागमन शुभ है। शुक्र के सन्मुख और दक्षिण रहने पर नवविवाहिता, गर्भवती तथा बच्चे वाली स्त्री का पति घर जाना अशुभ है। रेवती में मृगशिर नक्षत्र तक चन्द्रमा के रहने से दक्षिण और सन्मुख शुक्र का दोष नहीं होता क्योंकि तब शुक्र अन्ध होता है।

नूतन वधू द्वारा पाकारम्भ— कृत्तिका, मृगशिर, पुष्य, ज्येष्ठा, विशाखा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती, नक्षत्रों में शुभ तिथि में, रवि, मंगल छोड़कर अन्य वारों में, स्थिर लग्न में तथा लग्न से ४, ८, १२वें कोई ग्रह न हो तो नवोढ़ा से पाकारम्भ कराना श्रेष्ठ रहता है।

धार्मिक कृत्य मुहूर्त्त— व्रत-अनुष्ठान, पुराण कथा, भागवत श्रवण, देव पूजन, रामायण कथा श्रवण इत्यादि कृत्तिका, अश्विनी, रोहिणी, मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा तथा रेवती नक्षत्रों में, १, ४, ९, १४ तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार, शनिवार को छोड़कर अन्य वारों में करना शुभ है। जिस विशिष्ट व्रत-अनुष्ठान के लिए विशिष्ट तिथि नक्षत्रादि निश्चित है, वह उसी समय करना चाहिए।

विवाह मेलापक विचार

विवाह सामाजिक आवश्यकता है, यह संस्कार वासना पूर्ति के लिए नहीं वरन् गृहस्थ धर्म के निर्वाह के लिए किया जाता है। इस विषय में विद्वानों का मत है—

दाम्पत्य जीवनोद्देश्यो महान सेवामयस्था।
समाज देश विश्वेभ्यो दिव्यात्मानं समर्पयेत्॥

विवाह में लत्ता आदि दस दोष मुख्य माने गये हैं, इनमें अल्प दोष हो तो विवाह हो सकता है ऐसी शास्त्राज्ञा है, लेकिन जहां वर पक्ष और कन्या पक्ष दोनों में परस्पर सन्तोष हो जाये तो विहित नक्षत्रों में विवाह हो सकता है—

मनसश्चक्षुषोर्यस्मिन वरे यस्यां च योषिति।
सन्तोषो जायते तत्र नाव्यत् किञ्चिद् विचिन्तयेत्॥

वर और कन्या की कुण्डली हो तो दोनों के ग्रह मेलापक और नक्षत्र मेलापक शुद्धि देखनी चाहिये।

नक्षत्र मेलापक

इसमें वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणमैत्री, भकुट और नाड़ी ये आठ कूट होते हैं।

१. **वर्ण**— वर कन्या के वर्ण राशि चक्र से ज्ञात करने चाहियें। यदि दोनों के समान वर्ण हों या वर का कन्या से श्रेष्ठ वर्ण हो शुभ अन्यथा अशुभ समझना चाहिये। वर्ण का एक गुण होता है।
२. **वश्य**— राशि चक्र से वर-कन्या के वश्य ज्ञात कर देखना चाहिये कि दोनों का एक वश्य है तब दो गुण, एक का द्विपद (मानव) और दूसरे का चतुष्पदया कीट है तो शून्य गुण बाकी में एक गुण जानें।
३. **तारा**— वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक तथा कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक गिन कर दोनों संख्याओं को पृथक-पृथक लिख कर ९ का भाग दें १, २, ४, ६ अथवा शून्य शेष रहने पर शुभ अन्यथा अशुभ जानें। दोनों से तारा शुभ हो तो श्रेष्ठ, एक से शुभ हो तो मध्यम और दोनों से अशुभ हो तो निन्द्य समझना चाहिये। हमने यहां पर बिना तारा जाने सीधे वर-कन्या के जन्म नक्षत्र से तारा गुण की सारिणी दी है। अतः वर-कन्या के तारा निकालने की इसमें आवश्यकता नहीं है।
४. **योनि**— राशि चक्र से दोनों की योनि ज्ञात करें। दोनों की एक योनि हो या योनि में मैत्री हो व सम हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।
५. **ग्रह मैत्री**— राशि चक्र से राशि स्वामी जानें। राशि स्वामी एक हों, दोनों में मैत्री हो या एक-दूसरे के लिये सम हों तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।
६. [illegible]शि चक्र (अवकहड़ा) से गण ज्ञात करें। दोनों का एक गण हो या एक का देव दूसरे का मनुष्य हो तो शुभ अन्यथा अशुभ जानें।
७. **भकुट**— वर की राशि से कन्या की राशि २, १२, ६, ८, ५, ९ हो तो अशुभ अन्यथा शुभ जानें।
८. **नाड़ी**— अवकहड़ा चक्र से दोनों की नाड़ी ज्ञात करें, यदि दोनों की एक ही नाड़ी हो तो अशुभ यदि भिन्न-२ नाड़ी हो तो शुभ समझना चाहिये।

इन आठों कूटों के शुभ होने पर ३६ गुण मिलते हैं। शास्त्राज्ञा है कि मेलापक में गुण १८ से अधिक हों तो विवाह शुभ रहते हैं। यदि ग्रह मेलापक ठीक हो तो इससे कम गुण भी ग्राह्य हैं।

ग्रह मेलापक

लग्न, चतुर्थ, सप्तम्, अष्टम्, द्वादश में पापी ग्रह (मंगल, शनि, राहु, सूर्य आदि) हों तो जातक का दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता ऐसी ज्योतिष शास्त्र की मान्यता है। इनमें मंगल विशेषतया अधिक हानिकारक होता है इसलिए इस प्रकार की ग्रह स्थिति वालों को मंगली कहा जाता है। दक्षिण भारत में द्वितीय भाव से भी इन ग्रहों की स्थिति वाले जातक को मंगली कहा जाता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वितीय भाव आठवें पड़ता है और आठवां भाव मृत्यु का है अतः सहचर या सहचरी की आयु का विचार इसी भाव से किया जाता है। यहां हम इस दोष का परिहार दे रहे हैं ताकि ग्रह मेलापक में सुभीता रहे।

यदि वर और कन्या दोनों की कुण्डली में उक्त स्थानों में मंगल आदि पाप ग्रह पड़े हों तो विवाह शुभ, लड़के व लड़की की कुण्डली में उक्त स्थानों में पाप ग्रह की संख्या देखें यदि लड़के की कुण्डली में लड़की की कुण्डली से पाप ग्रह संख्या बराबर हो या अधिक हो तो विवाह शुभ अन्यथा अशुभ प्रद जानें। सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो अथवा अधिमित्र के गृह में हो तो मंगली दोष का परिहार हो जाता है।

वर और कन्या के नक्षत्र एवं ग्रह मेलापक देख कर नक्षत्र मेलापक चक्र से वर और कन्या के नक्षत्र के सामने के कोष्ठक में गुणयोग देखें। यदि योग २७ से अधिक हो तो मिलान अत्युत्तम समझें, यदि २७ से कम २० तक गुण मिलें तो उत्तम और १८ तक गुण मिलें तो मध्यम जानें। यदि १८ से कम गुण मिलें तो निंद्य है। यदि ग्रह मेलापक उत्तम हो तो १२ से १८ तक भी गुण मिलें तो विवाह करना शास्त्र सम्मत है।

मंगलीदोष

सभी प्रकार के ज्ञान एवं भारतीय शास्त्रों की उत्पत्ति भारतीय दर्शन से मानी गई है। भारतीय दर्शन जीवन और जगत् के रहस्यों का अनुसंधान और सन्तोष जनक सिद्धान्तों के आधार पर उनकी व्याख्या करता आया है। ज्ञान, दर्शन का स्वरूप और उस की सीमा है। मनुष्य स्वभाव से ही जिज्ञासु प्राणी है और अपनी इसी प्रवृत्ति के कारण किंवा अदम्य जिज्ञासा की प्रेरणा से, वह सदैव दार्शनिक समस्याओं का समाधान

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

खोजने में लगा रहता है। भारतीय दर्शन आत्मा को अजर-अमर मानता है और कर्मानुसार (कर्मों के अनादि प्रवाह-प्रारब्ध के कारण) देह परिवर्तन को इसका स्वाभाविक गुण मानता है। प्राणी मात्र की देह में रहने वाला यह अविनाशी आत्मतत्व, स्वतंत्र, रूपहीन, नित्य एवं चैतन्य है। यह कर्म बन्धन के ही कारण विनाशशील और परतन्त्र दीख पड़ता है। संसार के इस निगूढ़ तत्व को समझने के लिए ज्योतिष एक दिव्य चक्षु है। इसीलिए इसे वेदांग में गिना जाता है। वेद के अंगों में यह छठा अंग है। ज्योतिष के तेजस् को देख कर ही इसे चाक्षुष प्रत्यक्ष कहा जाता है। ज्योतिष के तीन स्कन्ध हैं जिन में फलित भी एक है। फलित स्कन्ध से ही सामान्य व्यक्ति अधिक प्रभावित होता है। फलित के कारण ही वह ज्योतिषी को सम्मान की दृष्टि से देखता है। वह नहीं जानता कि उस की जन्म पत्रिका में कहां गणितीय त्रुटि है, क्योंकि यह विषय उस की पकड़ से बाहर है। वह तो फलित के प्रति आसक्ति रखता है और उसी से प्रभावित होता है। लोक श्रद्धा ही इस विषय को जीवित रखे हुए है। आज की सबसे बड़ी बिडम्बना यह है कि ज्योतिषी को जीविका के लिए संघर्ष भी करना है और लोग श्रद्धा को अनुकण्ठ बनाये रखने के लिए अनुशीलन भी।

ज्योतिषशास्त्र और ज्योतिषी स्वतन्त्र भारत में इतनी दयनीय अवस्था में आ पहुंचे कि सभी कुछ उन्हें स्वयं करना है और समाज में इस विद्या के प्रति आस्था को सजीव बनाये रखना है। सामन्त तो रहे नहीं, श्रेष्ठी भी नहीं रहे, धर्म-निरपेक्ष राष्ट्र में यह विज्ञान प्रचार और प्रोपेगंडा में ही सिमट कर रह गया। सभी लोग जानते हैं कि ज्योतिषी होना तो दूर रहा नक्षत्रों की श्रेणी में भी जो नहीं आते वे अपने आप को विश्व विख्यात भविष्यवक्ता कहते नहीं अघाते। ऐसे लोगों द्वारा भविष्यवाणी करने से जो स्थिति बनती है वह ज्योतिष पर आक्षेप लगाती है। ऐसे व्यक्ति अपनी अज्ञानता को छिपाने के लिए अनेक नाटक रचते हैं। उनकी नाट्य कला से उनको भले ही लाभ हो लेकिन इससे ज्योतिष शास्त्र की अपकीर्ति होती है, वह अविश्वसनीय बनता है और लोगों को उसे अन्धविश्वास (सुपरस्टीशन) कहने का अवसर मिलता है।

ऐसे ही मंगली दोष के विषय में अनेक भ्रान्तियां समाज में प्रचलित हैं। प्राचीन काल से ही भारत में कुण्डली मिलान की प्रथा है। विवाह से पूर्व वर तथा कन्या से ग्रहों का मेलापक पर निर्णय लिया जाता है कि आगामी जीवन दोनों का सुखमय रहेगा या दुखमय। विवाह मेलापक के लिए यूं तो अनेकानेक बातों को ध्यान में रखा जाता है लेकिन जितना महत्व मंगली दोष को दिया जाता है इतना अन्य किसी दोष को नहीं।

मंगली दोष का निर्णय करने के लिए वर-कन्या के प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भावों को लिया जाता है, दक्षिण भारत में द्वितीय भाव को और मिला लेते हैं। इन भावों में कोई भी क्रूर किंवा पापी ग्रह (मंगल, शनि, सूर्य, राहु, केतु) स्थित हो तो मंगली दोष मान लिया जाता है। चूंकि मंगल वैवाहिक सुख को बिगाड़ने में अपना विशिष्ट स्थान रखता है इसलिए इसी ग्रह के नाम पर इस दोष को मंगली दोष कहा जाता है। प्रायः सर्वत्र ही यह मत प्रचलित है। यहां हम मंगली दोष कब-कितना हो सकता है इस पर विचार करते हैं। ग्रहों की ९ अवस्थाएं मानी जाती हैं, उच्च राशि, मूल, त्रिकोण, स्वराशि, अधिमित्र राशि, मित्र राशि, सम राशि, शत्रु राशि, अधिशत्रु राशि और नीच राशि। अब शंका उठती है कि इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह क्या समान फल कर सकता है। इसका उत्तर है नहीं। दूसरी बात क्या सभी ज्योतिर्विद इन नवों अवस्थाओं में स्थित ग्रह को समझकर मंगली दोष का निर्णय करते हैं इसका उत्तर भी नहीं है, क्योंकि उपरोक्त तथ्य को समझकर मंगली दोष का निर्णय किया जाता तो मंगली दोष को इतना भयंकर नहीं समझा जाता जितना कि आज माना जा रहा है। मंगली दोष का भयावह रूप दर्शाने के लिए किसने कब यह श्लोक रच डाला ज्ञात नहीं है-

लग्नेव्यये च पाताले, जामित्रे चाऽष्टमे कुजे।
कन्याभर्तुर्विनाशाय, भर्तुः कन्या विनाशकः॥

अर्थात् कुण्डली में १, ४, ७, ८, १२वें स्थान में मंगल हो तो क्या कन्या भर्ता का और भर्ता कन्या का नाश करते हैं। अगर हम इसकी शब्दावली पर ध्यान दें तो यह श्लोक किसी ऋषि प्रणीत प्रतीत नहीं होता। विवाह से पूर्व कन्या संज्ञा ठीक है लेकिन भर्ता शब्द यहां अनुचित है क्योंकि विवाह से पूर्व लड़के की संज्ञा वर है भर्ता तो विवाह पश्चात् बनेगा। दूसरे जब भर्ता हो गया तो भार्या आना चाहिए कन्या कहां से आया। अतः यह स्वतः प्रमाणित है कि यह श्लोक क्षेपक है आप्त वाक्य नहीं। कितने खेद का विषय है कि ऐसे अनार्थ श्लोकों को मान्यता देकर ज्योतिर्विद जहां अच्छे से अच्छे सम्बन्धों को अनादृत कर देते हैं वहीं ज्योतिष शास्त्र की प्रतिष्ठा को भी आघात पहुँचाते हैं। ज्योतिष जगत् में फैली इन विसंगतियों के कारण जन-साधारण की आस्था इस शास्त्र के प्रति लुप्त होती है और कभी-कभी माता-पिता अपने बच्चों की नकली कुण्डलियां बनवाकर विवाह सम्बन्ध कर देते हैं।

प्रथम भाव तन है, चतुर्थ सुख-स्थान, सप्तम भाव कामोपयोग को जतलाने वाला है। अष्टम भाव जीवन साथी कुटुम्ब को बतलाता है और द्वादश भाव शय्या सुख का निर्देशक स्थान है। यहां स्थित होकर मंगल उस भाव को दूषित करता ही है साथ ही दृष्टि दोष से दूसरे स्थानों को भी बिगाड़ता है, जैसे लग्न में स्थित मंगल की चतुर्थ, सप्तम और अष्टम स्थान पर ही दृष्टि रखता है, द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से द्वादश में होकर भी सप्तम स्थान पर दृष्टि डालता है। चूंकि सप्तम स्थान से जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना जीवन साथी के सुख का निर्णय किया जाता है और उसका पाप प्रभाव में रहना इस सुख से न्यूनता लाता है। इसलिए मंगलीक दोष का विचार बड़ी सूक्ष्मता से करना चाहिए। यदि हम सुदर्शन पद्धति का आश्रय लें तो अधिक सत्यता के निकट पहुंच सकते हैं। जैसे लग्न से मंगली दोष मानते हैं वैसे ही चन्द्र से भी देखें तथा शुक्र से भी। शुक्र चूंकि भोग कारक ग्रह है और इससे बना मंगली दोष अधिक बाधाकारक देखा गया है। कुछ लोगों की मान्यता है कि वर और कन्या दोनों मंगली हों तो वैवाहिक सुख नहीं बिगड़ता लेकिन मैंने कई ऐसे जोड़े देखे हैं जिनका दाम्पत्य सुख नगण्य सा ही है। कुछ लोग मानते हैं कि मंगल-शनि आदि ग्रह यदि कारक हों तो बुरा फल नहीं करते ऐसा भी अकाट्य सत्य नहीं है। वृष लग्न की कुण्डली में शनि सर्वाधिक कारक ग्रह है लेकिन दूसरे, आठवें और दसवें स्थान का शनि विवाह विच्छेद कराने में सक्षम होता है। अब तक हमने मंगली योग पर विचार किया अब उसके परिहार पर विचार करते हैं। अर्थात् मंगली दोष किन स्थितियों में अपना फल नहीं दे पाता।

१. सप्तमेश स्वराशिस्थ हो, उच्च का हो, मित्र राशिस्थ होकर स्वस्थान को देखता हो। २. सप्तमेश पर बृहस्पति या शुक्र की पूर्ण दृष्टि हो तो मंगली दोष समाप्त हो जाता है। ३. सप्तम भाव को बली शुक्र या बृहस्पति देखते हों तो मंगली दोष का प्रभाव नगण्य सा ही रहता है। ४. नीचस्थ या त्रिकस्थ होकर भी सप्तमेश सप्तम भाव को देखें तो मंगली दोष क्षीण हो जाता है।

बेड़ा जातक में एक श्लोक आता है:-

त्यक्तार्के विधवारेऽत्र पापेक्ष्यार्को चिरा प्रिया।
सौम्यैर्धन्या प्रियाऽस्तस्थैः क्रूरैः रण्डा च मिश्रितैः॥

अर्थात् स्त्री की कुण्डली में लग्न से सप्तम सूर्य हो तो पति द्वारा वह स्त्री त्याग दी जाती है या दाम्पत्य सुख से वंचित कर दी जाती है। मंगल हो तो विधवा होती है। शनि हो तो देर से विवाह हो तथा लम्बे समय बाद पति की प्रिया बने। शुभ ग्रह हो तो उत्तम भाग्य वाली, पापग्रह हो तो विधवा, पाप और शुभ दोनों हों तो मिश्रित फल मिलता है। कुण्डली के मात्र सप्तम स्थान में पापग्रह देखकर विधवा कह देना युक्ति-युक्त नहीं है। कुण्डली का सूक्ष्मातिसूक्ष्म अध्ययन करने के पश्चात् ही कोई निर्णय लेना चाहिए क्योंकि इस निर्णय पर ही दो प्राणियों के वैवाहिक सुख बनाना और बिगाड़ना निर्भर करता है। अनुभव में आया है कि सप्तम और अष्टम स्थान का पापग्रह जितना पीड़ा कारक है इतना अन्य स्थान का नहीं। मैं स्वयं मंगली हूँ मेरी पत्नी मंगली नहीं है इतने पर भी पिछले ४२ वर्षों से हम सानन्द साथ रह रहे हैं। इससे मेरा यह आशय बिलकुल नहीं है कि कुण्डली में मंगली दोष को अनदेखा कर दिया जाये बल्कि इतना ही है कि जहां मंगली दोष देखे वहां उसके परिहार और अन्य शुभ योगों को भी अनदेखा नहीं करना चाहिए। मंगल से अमंगल की कल्पना से समाज में जो भयावह-प्रभाव उत्पन्न हो गया है। उसी भय को समाप्त करने के लिए लघु लेख की रचना की गई है। आशा है जन-साधारण इससे लाभान्वित होंगे।

वर्ण के गुण | वश्य के गुण | योनिगण चक्र (४) | ग्रह मैत्री के गुण चक्र

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वर्ण के गुण

	ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
ब्राह्मण	१	०	०	०
क्षत्रिय	१	१	०	०
वैश्य	१	१	१	०
शूद्र	१	१	१	१

वश्य के गुण

	च.	मा.	ज.	व.	की.
चतुष्पद	२	१	१	०	१
मानव	१	२	१	०	१
जलचर	१	१	२	१	१
वनचर	०	०	१	२	०
कीट	१	१	१	०	२

जन्म कुण्डली मिलान में ३६ गुण हैं। १८ गुण से ऊपर मिलने पर शुभ, २७ गुण से ऊपर अत्यंत शुभ मानते हैं। अन्य बातें भी विचार करते हैं।

तारागुण चक्र (३)

	१	२	३	४	५	६	७	८	९
१	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

तारा देखने की रीति—कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र तक व वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र तक गिनकर ९ का भाग देने से जो शेष बचे, वह तारा जानिए।

नैसर्गिक ग्रह-मैत्री चक्र

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चं.मं.बृ.	बुध	शु.श.
चन्द्र	सू.बु.	मं.बृ.शु.श.	०
मंगल	सू.चं.बृ.	शु.श.	बुध
बुध	सू.शु.	मं.बृ.श.	चन्द्र
बृहस्पति	सू.चं.मं.	शनि	बु.शु.
शुक्र	बु.श.	मं.बृ.	सू.चं.
शनि	बु.शु.	बृह	सू.चं.मं.

योनिगुण चक्र (४)

	अ.	ग.	मे.	स.	श्वा.	मा.	मू.	गो	म.	व्या.	मृ.	वा.	न.	सि.
अश्व	४	२	३	२	२	३	३	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	३	३	३	३	१	३	२	२	०
मेष	३	३	४	२	२	३	२	३	३	१	३	३	२	१
सर्प	२	२	२	४	२	१	१	२	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	३	३	३	१	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	३	२	२	२	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	२	१	२	२	४	३	०	२	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	३	३	२	०	३	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	२	२	२	२	२	४	२
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	१	२	२	२	२	४

भकूटगुण चक्र (७)

	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी
मेष	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृष	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मिथुन	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
कर्क	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिंह	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
कन्या	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तुला	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृश्चिक	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
धनु	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
मकर	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कुम्भ	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मीन	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

ग्रह मैत्री के गुण चक्र

	सू.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श
सूर्य	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मंगल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१		५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	५

गण मैत्री के गुण ६

	दे.	म.	रा.
देवता	६	५	१
मनुष्य	६	६	०
राक्षस	०	०	६

नाड़ीगुण चक्र-८

	आदि	मध्य	अन्त्य
आदि	०	८	८
मध्य	८	०	८
अन्त्य	८	८	०

कुंडली में मंगलादि का विचार १, ४, ७, ८ व १२वें स्थान में मंगल होने से मंगली, वर की कुण्डली में हो तो स्त्री की ओर स्त्री की में हो तो पति को अनिष्ट, यदि दोनों की कुण्डली में हो तो दोष नहीं। इसी प्रकार इन स्थानों में शनि, राहु, केतु व सूर्य का भी विचार करते हैं। यह सब पाप ग्रह मंगल के परिहार हैं। चन्द्र कुंडली से भी इन स्थानों में मंगल आदि का विचार किया जाता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भाग-१

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्वे द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २
मेष	अ. ४	२८ ३	३३ ०	२८॥	१८॥ ४	२१॥ -४	२२॥ -४	२६	१७ ३	१९ ३	२३॥ ३	३१॥	२८	२१ +५	२५ +५	१५॥ ३.५	११ ३.६	९ २.३.६	१३ ६
	भ. ४	३४	२८ ३	२९ ०१	१९ ०.४.१	२१॥ -४	१४॥ ३४	१८ ३	२६	२७	३१॥	२३॥ ३	२५॥ १	२० १५-	१८ २.५	२६ +५	२१॥ ६	२० ६	४ १.३.६
	कृ. १	२७॥	२९ १	२८ ३	१८ ३.४	१० १.३.४.५	१६॥ ४	२०	२० १	२१	२५॥	२६॥	२३॥ ३	१६॥ ३.५	२० १.५	२० १.५	१५॥ १.६	१५॥ ६	१८ ६
वृष	कृ. ३	१८॥ -४	२० १.४	१९ ३.४	२८ ३	२० ०.१.३	२६॥	१७॥ +४	१७॥ १.४	१८॥ +४	२२	२३	२० ३	१८॥ ३	२२ १	२२ १	२१ १.५	२१ +५	२३॥ +५
	रो. ४	२३॥ -४	२३॥ ४	११ ३४१	२० ३१	२८ ३	३६ ०	२५॥ ०४	२३॥ +४	२२॥ +४	२६	२७	२२ ३१	१०॥ ३१	२४॥	२७	२६ +५	२६ +५	२० १५-
	मृ. २	२३॥ -४	१४॥ ३४	१८॥ -४	२७॥	३५	२८ ३	१९ ३४	२४ ०४	२२॥ +४	२६	१९ १	२१	१९॥	१५॥ ३	२४॥	२३॥ +५	२६ +५	१३ ३५
मिथुन	मृ. २	२७	१८ ०३	२२	१९॥ +४	२७ +४	२० ३४	२८ ३	३३ ०	३१॥	१९ -४	१२ ३४	१४ ४	२३॥	१९॥ ३	२८॥	३१॥	३४	२१ ३
	आ. ४	१९ ३	२७	२१ १	१८॥ १४+	२४॥ +४	२६ +४	३४	२८ ३	२५ ०३	१२॥ ०३४	२० -४	१३ १४	२३॥ १	२९॥	२१॥ ३	२४॥ ३	२४॥ ३	२७ १
	पुन. ३	२० ३	२७	२३	२०॥ +४	२२॥ +४	२३॥ +४	३१॥	२४ ३	२८ ३	१५॥ ३४-	२२॥ ०४	१७ -४	२२॥ +२	२६॥ +२	२१॥ ३	२४॥ ३	२५॥ ३	२७॥
कर्क	पुन. १	२२॥ ३	२१॥	२५॥	२२	२४	२५	१८ ४	१०॥ ३४	१४॥ ३४	२८ ३	३५ ०	२१॥	१६॥ २४	२०॥ २४	१५॥ ३४	१८ ३	१९ ३	२१
	पु. ४	३०॥	२१॥ ३	२६॥ .	२३	२५	१८ ३	११ ३४	१८ ४	२१॥ ४	३५	२८ ३	३० ०	१९॥ +४	१५॥ ३४	२३॥ +४	२६	२७	१२ ३
	अश्ले. ४	२६	२४॥ १	२२॥ ३	१९ ३	११ ३१	१९	१२ ४	१२ १४	१५ ४	२८॥	२९	२८ ३	१५ ३४२	१५॥ १४२	१८॥ १४	२१ १	२१	२६
सिंह	म. ४	२० +५	२० १५	१६॥ ३५	१७॥ ३	९॥ ३१	१७॥	२१॥	२२॥ १	२०॥ -२	१६॥ २४+	१९॥ +४	१६ ३४२	२८ ३	३० ०१	२७॥ १	१६॥ १४	१६॥ +४	२१॥ ४
	पू.फा. ४	२६ +५	१८ ३५	२० १५-	२१ १	२३॥	१५॥ ३	१९॥ ३	२८॥	२६॥ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३४	१६॥ १२४	३० -१	२८ ३	३५ ०	२४ ०४	२२ +४	७॥ १३४
	उ.फा. १	१६॥ ३५	२६ +५	२० १५-	२१ १	२६	२४॥	२८॥	२०॥ ३	२१॥ ३	१७॥ ३४	२५॥ +४	१९॥ १४-	२७॥ -१	३५	२८ ३	१७ ३४	१६ ०३४	१३॥ १४२
कन्या	उ.फा. ३	१३ ३६	२२॥ ६	१६॥ १६	२१ १५+	२६ +५	२४॥ +५	३१॥	२३॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२२ १	१७॥ १४	२५ +४	१८ ३४	२८ ३	२७ ०३	२४॥ १२+
	ह. ४	१० २३६	२० ६	१७॥ ६	२२ +५	२५ +५	२६ +५	३३	२२॥ ३	२४॥ ३	२० ३	२८	२३	१८॥ +४	२२॥ +४	१६ ३४	२६ ३	२८ ३	२८ ०
	चि. २	१३ ६	५ १३६	१९ ६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	१९ ३	२६ १	२५॥	२१	१२ ३	२७	२२॥ +४	८॥ १३४	१४॥ १२४	२४॥ १२	२७	२८ ३

कन्या ↓	वर →	तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
मेष	अ. ४	२२॥	२६॥ -२	२२॥	१८॥ -६	२५॥ -६	१४ ३.६	१३॥ ३.५	२५ +५	२३॥ +५	२५	२६	२०	२०	१५ ३	१६ ३	१४॥ ३.४	२४॥ +४	२६॥ +४
	भ. ४	१३॥ १.३	२९॥	२१॥ १	१७॥ -१६	१७॥ ३.६	१९॥ -१६	२० -१.५	१८ ३.५	२६ +५	२७॥	२६	१० १३२	१० १.३.२	२० -२	२४ -२	२२॥ २४+	१७॥ +३.४	२६॥ +४
	कृ. १	२७॥	१५॥ ३	१९॥ ३	१५॥ ३.६	१९॥ -६	२५॥ -६	२४॥ +५	१८ १.२.५	१२ ३.१.५	१३॥ १३	११॥ २.३	२५	२५	२७	१९ १	१७॥ १.४	१९॥ १.४	११॥ ३.४
वृष	कृ. ३	२२॥ -६	१०॥ ३.६	१४॥ ३.६	२०॥ ३	२४॥	३०॥	२० ६	१३॥ १.२.६	७॥ १.३.६	१२ १.३.५	१० ३.५.२	२३॥ +५	२९॥	३१॥	२३॥ १	२० १	२२ १	१८ ३
	रो. ४	१९ १६	१५॥ ३.६	९॥ ३१६	१५॥ ३१	२९॥	२३॥ १	१४ १६	१९॥ ६	११॥ ३६२	१६ ३५२	१७ ३५	२० १५-	२४॥ -१	२४॥ -१	३०॥	२७	२७	१९ ३
	मृ. २	१२ ३६	२५ -६	१८॥ -६	२४॥	२१॥ ३	२४॥	१५ ६	१० ३६	१७ २६	२१॥ +२५	२५ +५	१३ ३५	१९ ३	२७	२९॥	२६	१८ ३	२७
मिथुन	मृ. २	१४ ३५	२७ +५	२०॥ +५	१४ ६	११ ३६	१४ ६	२३	१८ ३	२५ +२	२० -२६	२३॥ -६	११॥ ३६	१३ ३५	२१ +५	२३॥ +५	२५॥	१७॥ ३	२६॥
	आ. ४	२० -१५	२७ +५	२० १५+	१३॥ १६	१७ २६	५ १३६२	१६ १३	२८	२८	२३ -६	२३ -६	१७॥ -१६	१९ +१५	१२ १३५	१७ ३५	१९ ३	२६॥	२६॥
	पुन. ३	२०॥ +५	२८ +५	२२ +५	१५॥ ६	२१॥ ६	७ ३६	१४ ३	२७	२७	२२ -६	२३ -६	१७॥ -६	१८॥ +५	१४ ३५	१६ ३५	१८ ३	२८	२७॥
कर्क	पुन. १	२०॥	२८	२२	२०॥ +५	२६ +५	११॥ ३५	८ ३६	२१ -६	२१ -६	२६	२७	२१	१२॥ ६	८ ३६	१० ३६	१६ ३५	२६ +५	२५॥ +५
	पु. ४	११॥ ३	२६॥	२१	१९ -५	१८ ३५	२१ -५	१७	११ २३६	२१ ६	२६	२५ -२	१३ ३	८॥ ३६	१४॥ ६	१८ ६	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	अश्ले. ४	२५॥	१२॥ ३	१७॥ ३	१५॥ ३५	२० -५	२६ -५	२२॥ ६	१६ १६	८ ३१६	१३ १३	१३ ३	२६	१७॥ ६	१९॥ ६	११॥ १६	१७॥ १५-	२१ १५	१३ ३५
सिंह	म. ४	२४॥	११॥ ३	१६॥ ३	२२॥ ३	२५॥	३३	२५ +५	१९ १५	८॥ १३५	३॥ ३१६	४॥ ३६	१८॥ ६	२४॥	२५॥	१८॥ १	१८॥ १६-	१९॥ १६-	१३ ३६
	पू.फा. ४	१०॥ १३	२५॥	१८॥ १	२४॥ -१	२३॥ ३	२५॥ -१	१९ १५+	१७ ३५	२४ +५	१७॥ ६	१८॥ ६	४॥ १३६	१० १३	१९॥ १	२४॥	२४॥ -६	१७॥ ३६	२५॥ -६
	उ.फा. १	१६॥ १२	२५॥	१६॥ १२	२२॥ -१२	३१॥	१७॥ १३	९॥ १३५	२५ +५	२५ +५	२० ६	२० ६	११॥ १६	१७॥ १	११॥ १३	१५॥ ३	१५॥ ३६	२६॥ -६	२५॥ -६
कन्या	उ.फा. ३	१६॥ १२४-	२५॥ +४	१६॥ १२४	१८ १२	२७	१३ १३	१४ १३	२९॥	२९॥	२४॥ +५	२४॥ +५	१६ १५+	१६॥ -६	१०॥ ३१६	१४॥ ३६	१७॥ ३	२८॥	२७॥
	ह. ४	२० ०४	२६॥ +४	१८॥ +४	२०	२६	१३ ३	१५ ३	२७	२८॥	२३॥ +५	२४॥ +५	१८॥ +५	१९ ६	८॥ ३६२	१३॥ ३६	१६॥ ३	२६॥	२७॥
	चि. २	२० ३४	१९ ०४	२६॥ +४	२८	११ ३	२५	२७	१४ १३	२२ १	१७ १५	१८॥ +५	१५॥ ३५	१६ ३६	२४ -६	१६॥ १६	१९॥ १	१०॥ १३२	१९॥

वर्णवश्य आदि के संयोग से निर्मित यह गुण-दोष सारणी जिसमें ऊपर की पंक्ति में वर के नक्षत्र, खड़ी लाइन में कन्या के नक्षत्र लिखे हैं और सम्पात कोष्ठकों के ऊपरी भाग में गुण संख्या तथा नीचे महादोषों के चिन्ह दिए हैं। जिनका अभिप्राय है। एक नाड़ी दोष की जगह (३), गण महा दोष (मनुष्य राक्षस) के स्थान में (१), भकूट महादोष (षडाष्टक) में (६), नव पंचम में (५) द्विर्द्वादश में (४) बैर योनी में (२) लिखे हैं।

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम् 159
भाग-२
वर-वधू गुण मेलापक सारणी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

भाग-२

वर-वधू गुण मेलापक सारणी

ऊर्ध्वाधरस्थाम्यपि भानि पुंसां पार्श्व द्वयस्थानि तथा वधू नाम्। संपात कोष्ठे शुभयोर्गुणैक्यं सर्वे शुभं तत्सस्मृतितोऽधिकं यत्॥

कन्या ↓	वर →	मेष			वृष			मिथुन			कर्क			सिंह			कन्या			तुला			वृश्चिक			धन			मकर			कुम्भ			मीन		
	नक्षत्र चरण	अ. ४	भ. ४	कृ. १	कृ. ३	रो. ४	मृ. २	मृ. २	आ. ४	पुन. ३	पुन. १	पु. ४	श्ले. ४	म. ४	पू.फा ४	उ.फा १	उ.फा ३	ह. ४	चि. २	चि. २	स्वा. ४	वि. ३	वि. १	अनु. ४	ज्ये. ४	मू. ४	पू.षा ४	उ.षा १	उ.षा. ३	श्र. ४	ध. २	ध. २	श. ४	पू.भा ३	पू.भा १	उ.भा. ४	रे. ४
तुला	चि.२	२२॥	१४॥ १३	२८॥	२३॥ +६	२० १६	१२ ३६	१३ ३५	२१ १५	१९॥ +५	२०॥	११॥	२६॥	२५॥	११॥ १३	१७॥ १२	१७॥ १२४	२० +४	२१ ३४	२८ ३	२७ ०	३४॥	२३॥ ४	६॥ ३४	२०॥ ४	२७	१४ १३	२२ १	२५ ०१	२६॥	२३॥ ३	१८ ३५	२६ +५	१८॥ १५	१२॥ १६	३॥ १३६२	१२॥ ६
	स्वा.४	२७॥ +२	२१॥	१७॥ ३	१२॥ ३६	१५॥ ३६	२६ -६	२७ +५	२६ +५	२८ +५	२९	२७॥	१४॥ ३	१३॥ ३	२५॥	२५॥	२५॥ +४	२७॥ +४	२१ +४	२८	२८	२० ०३	९ ०३४	२१॥ ४	१६॥ ४	२३	२७	१९ ३	२२ ३	२३ ३	२६॥	२१ +५	२० ५२+	२५ +५	१९ ६	१९॥ ६	१२॥ ३६
	वि.३	२२॥	२२॥ १	२०॥ ३	१५॥ ३६	१०॥ १३६	१८॥ -६	१९॥ +५	२० १५	२१ +५	२२	२१	१८॥ ३	१७॥ ३	१९॥ १	१७॥ १२	१७॥ १४२	१८॥ +४	२७॥ +४	३४॥	१९ ३	२८ ३	१७ ३४	१६ ०४	२०॥ ४	२७	२२ १	१४ १३	१७ १३	१७ ३	३०	२४॥ +५	२६ +५	२० १५	१४ १६	१३ १६२	४॥ ३६
वृश्चिक	वि.१	१६॥ +६	१६॥ १६	१४॥ ३६	१९॥ ३	१४॥ १३	२२॥	१२ ६	१२॥ १६	१३॥ ६	१९ -५	१८ -५	१५॥ -५	२१॥ ३	२३॥ १	२१॥ १२	१७ १२	१८	२७	२२॥ ४	७ ३४	१६ ३४	२८ ३	२७ ०	३१॥	२१॥ +४	१६॥ ४१	८॥ १३४	१२ १३	१२ ३	२५	२४	२५॥	१९॥ १	१९ १५	१८ १५	९॥ ३२५
	अनु.४	२४॥ -६	१५॥ ३६	१९॥ -६	२४॥	२७॥	२०॥ ३	१० ३६	१५ २६	२०॥ ६	२६ -५	१८ ३५	२१ -५	२४॥	२०॥	२९॥	२५	२६	११ ३	६॥ ३४	२१॥ ४	१६ ४	२८	२८ ३	३१ ०	१५॥ २४+	१३॥ ३४	२१॥ +४	२५	२६	१२ ३	११ ३	२१	२४॥	२४ +५	१८ ३५	२७ +५
	ज्ये.४	१२ ३६	१८॥ १६	२४॥ -६	२९॥	२२॥ १	२२॥	१२ ६	२ ३१६२	५ ६३	१०॥ ५३	२० +५	२६ -५	३१	२३॥ १	१६॥ १३	१२ १३	१२ ३	२४ ०	१९॥ ४	१४॥	१९॥ ४	३१॥	३०	२८ ३	१४ ०२३४	१६॥ १४	१६॥ १४	२० १	२०	२५	२४	१८ ३	१० १३	९॥ १३५	२१ १५	२१ +५
धन	मू.४	१२ ३५	२० १५	२४॥ +५	१९॥ ६	१३ १६	१३ ६	२१	१५ १३	१२ ३	८ ३६	१७ ६	२३॥ ६	२५ +५	१९ १५	९॥ १५३	१३ ३१	१३ ३	२७	२६	२१	२६	२२॥ +४	१५॥ +२४	१५ ३४२	२८ ३	२८ ०१	२६॥ १	१५ १४	१५ ४	२० ४	२८॥	२१॥ ३	१४॥ १३	१६ १३	२५ १	२६॥
	पू.षा.४	२६ +५	१८ ३५	१८ -१२५	१२॥ १६२	१८ ६	१० ३६	१८ ३	२७	२७	२३ ६	१३ २३६	१७ १६	१९ -१५	१७ ३५	२५ +५	२८॥	२७	१३ १३	१३ १३	२७	२१ १	१७॥ १४-	१५॥ ३४	१७॥ १४-	२८ +१	२८ ३	३४ ०	२२॥ ०४	२३ ४	६ १३४	१४॥ १३	२३॥ १	२८॥	३०	२३ ३	३१
	उ.षा.१	२४॥ +५	२६ +५	१२ १३५	६॥ १३६	१०॥ २३६	१७ २६	२५ +२	२७	२८	२३ ६	२३ ६	९ १६३	८॥ १५३	२४ +५	२५ +५	२८॥	२८॥	२१ १	२१ १	१९ ३	१३ १३	९॥ १३४	२३॥ +४	१७॥ -१४	२६॥ -१	३४	२८ ३	१६॥ ३४	१४॥ ३६०	१५ १४	२३॥ १	२३॥ १	२९॥	३१	३१	२३ ३
मकर	उ.षा.३	२७	२८॥	१४॥ १३	१२ १३५	१६ २३५	२२॥ २५+	२० २६+	२२ -६	२२ -६	२८	२८	१४ १३	४॥ १३६	२० ६	२१ ६	२४॥ +५	२४॥ ११	१७ १५	२४ -१	२२ ३	१६ १३	१३ ३१	२७	२१ १	१६ १४	२३॥ ४	१७॥ ३४	२८ ३	२६ ३०	२६॥ +१	१७ १४+	१७ १४+	२३ +४	३०॥	३०॥	२२॥ ३
	श्र.४	२७	२६	१३॥ ३२	११ ३५२	१६ ३५	२५ +५	२२॥ -६	२१ -६	२२ -६	२८	२६ +२	१५ ३	६॥ ३६	१८॥ ६	२० ६	२३॥ +५	२४॥ +५	१९॥ ५	२६॥	२२ ३	१७ ३	१४ ३	२७	२२	१७ ४	२३ ४	१४॥ ३४	२५ ३	२८ ३	२८ ०	१८॥ ०४	१८ +४	२१ +४	२८॥	२९॥	२२॥ ३
	ध.२	२०	११ १३२	२६	२३॥ +५	२० १५	१२ ३५	९॥ ३६	१६॥ १६	१५ -६	२१	१३ ३	२७	१९॥ ६	५॥ १३६	१२॥ १६	१५॥ १५	१७॥ +५	१५॥ ३५	२२॥ ३	२४॥	२९	२६	१२ ३	२६	२१ ४	७ ३४१	१६ ४१	२६॥ १	२७	२८ ३	१८॥ ३४	२३॥ ४०	१९ १४	२६॥ १	१५॥ १३	२२॥ +२
कुम्भ	ध.२	२०	११ १३२	२६	३०॥	२७ १	११ ३	१२ ३५	१९ १५	१७॥ +५	१२॥ ६	४॥ ३६	१८॥ ६	२६॥	११॥ १३	१८॥ १	१७॥ १६	१९ +६	१७ ३६	१८ ३५	२० -५	२४॥ -५	२५	११ ३	२५	२९॥	१५॥ १३	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	१९॥ +४	२८ ३	३३ ०	२८॥ १	१८ १४	७ १३४	१४ ४२
	श.४	१५ ३	२१ १	२८	३२॥	२५॥ १	२७	२० +५	१२ १३५	१३ ३५	६॥ ३६	१४॥ ६	२०॥ ६	२६॥	२०॥ १	१२॥ १३	११॥ १३६	८॥ २३६	२५ ६	२६ +५	१९ +५	२६ +५	२६॥	२१ ३	१९ ३	२२॥ १	२४॥ १	२४॥ १	१८ १४	१८॥ +४	२४॥ +४	३३	२८ ३	१९ ०	८॥ ०	१७ १४	१६ ४
	पू.भा.३	१८ ३	२५ +२	२० -१	२४॥ -१	३१॥	३१॥	२४ +५	१७ ३५	१८ ३५	१२ ३६	२० ६	१२॥ १६	१९॥ १	२५॥	१६॥ ३	१५॥ ३६	१५॥ ३६+	१७॥ १६	१८॥ १५	२६ +५	२० +१५	२०॥ १	२६॥	११ १३	१५॥ १३	२९॥	३०॥	२४ +४	२३॥ +४	२० -१४	२८॥ -१	१९ १३	२८ ३	१७॥ ३४	२२॥ ०४	२० ४२
मीन	पू.भा.१	१४॥ ३४	२१॥ +२४	१६॥ -१४	११ १	२६	२६	२५॥	१८ ३	१८ ३	१७ ३५	२५ ५	१७॥ १५	१७॥ -१६	२३॥ +६	१४॥ +३६	१६॥ ३	१६॥ ३	१८॥ +१	११॥ १६	१९ ६	१३ १६	१९ १५-	२५ +५	९॥ १३५	१५ १३	२९	३०	२९॥	२८॥	२५॥ १	१७ १४	७॥ १३४	१६॥ ३४	२८॥ ३	३३ ०	३०॥ +२
	उ.भा.४	२४॥ +४	१६॥ ३४	१८॥ -१४	२२ १	२६	१८ ३	१७॥ ३	२५॥	२८	२७ ५	१९ ३५	२१ १५	१८॥ -१६	१६॥ ३६	२५॥ +६	२७॥	२६॥	९॥ १३२	२॥ १३६२	१९॥ ६	१२ १६२	१८ १५२	१९ ३५	२२ -१५	२४ ०१	२२ ३	३०	२९॥	२९॥	१४॥ १३	६ १३४	१६ १४	२१॥ ४	३३	२८ ३	३५ ०
	रे.४	२५ +४	२४॥ +४	११॥ ३४	१४ ३	१७ ३	२६	२५॥	२४॥	२६॥	२५॥ ५	२७ ५	१४ ३५	१३ ३६	२३॥ +६	२३॥ +६	२५॥	२६॥	१९॥	१२॥ ६	११॥ ३६	४॥ ३६	१०॥ ३५	२७ +५	२२ +५	२६॥	२९	२१ ३	२०॥ ३	२१॥ ३	२२॥ -२	१४ ४२	१६ ४	१८ ४२	२९॥ +२	३४	२८ ३

और जहां थोड़ा दोष समझा गया वहां (-) चिन्ह है, जहाँ (स्वामी मैत्री आदि के) दोष का पूरा निर्वाह है वहां (+), ऐसा चिन्ह बता दिया है और जिस जगह वर के नक्षत्र से पूर्व वधू का नक्षत्र है (इस का भी महादोष हैं) वहां ० शून्य का चिन्ह है और जहां कोई भी महादोष नहीं मिलता वहां केवल गुण ही लिखे है। जैसे कृतिका के प्रथम चरण वर का नक्षत्र और अश्विनी वधू नक्षत्र के सामने सम्पात कोष्ठक में २८॥ गुण ही लिखे हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ताराबल-बोधिनी तालिका

जन्म नक्षत्र	अश्विनी	भरणी	कृत्तिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
जन्मर्क्ष	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती
कर्मर्क्ष	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले
आधान	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा
विपत्कर	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धन.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी
	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.
	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.फा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.
प्रत्यरि	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी
	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त
	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण
नैधन	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा
	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अस्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति
(वध)	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.
संपत्कर	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.
	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा
	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल
क्षेम्य	रोहि.	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.
	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.
	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.
साधक	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहि.	मृग.
	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा
	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्ये.	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.
मैत्र	पुष्य	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.
	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.
	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.
अतिमैत्र	आश्ले	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य.
	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृत्ति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.
	रेवती	अश्वि.	भरणी	कृति.	रोहिणी	मृग.	आर्द्रा	पुन.	पुष्य	आश्ले.	मघा	पू.फा.	उ.फा.	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशा.	अनु.	ज्येष्ठा	मूल	पू.षा.	उ.षा.	श्रवण	धनि.	शत.	पू.भा.	उ.भा.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दिन का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल

रात का चौघड़िया

रवि	सोम	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग
चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
रोग	लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत
काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर
लाभ	शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चर	काल
शुभ	चर	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

यात्रा मुहूर्त

यात्रा मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, कालराहु तथा दिशाशूल का विचार किया जाता है। चन्द्रमा सामने या सीधे हाथ की दिशा में शुभ होता है और राहु, योगिनी तथा दिशाशूल पीठ पीछे या बांये हाथ की तरफ लेना चाहिये।

दिशाशूल ले जावै बांये राहु योगिनी पृठ।
सम्मुख लेवै चन्द्रमा लावै लक्ष्मी लूट॥

चन्द्रमा मेष, सिंह व धनु का पूर्व में, वृष, कन्या, मकर का दक्षिण में, मिथुन, तुला, कुम्भ का पश्चिम में तथा कर्क, वृश्चिक, मीन का उत्तर दिशा में वास करता है। यात्रा में चन्द्रमा सम्मुख हो तो धन लाभ, सीधे हाथ की तरफ हो तो सुख सम्पदा प्राप्त होती है। बांये हाथ की ओर हो तो धन हानि तथा पीठ पीछे हो तो मृत्यु भय होता है। जैसे यदि आपने पूर्व दिशा की ओर जाना है तो उस दिन चन्द्रमा पूर्व में या दक्षिण में होना चाहिये। अर्थात् मेष, सिंह या धनु का अथवा वृष, कन्या या मकर राशि का होना चाहिए। **सम्मुखे अर्थ लाभाय दक्षिणे सुख सम्पदा। पृष्ठतो मरणं चैव वामे चन्द्रे धनक्षयः॥**

दिशाशूल— सोमवार और शनिवार को दिशाशूल पूर्व दिशा में होता है। गुरुवार को दक्षिण में, रविवार व शुक्रवार को पश्चिम दिशा में तथा बुध और मंगल को उत्तर दिशा में होता है। यदि आपको पूर्व दिशा में यात्रा करनी है तो दिशाशूल उत्तर या पश्चिम में होना चाहिये अतएव पूर्व दिशा की यात्रा सोमवार, शुक्रवार तथा गुरुवार को ही की जानी चाहिये।

दिशाशूल चक्रम्
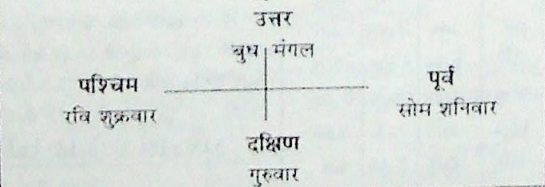
दिशा	चन्द्रमा का वास	दिशाशूल	समय शूल
पूर्व दिशा	मेष, सिंह, धनु	सोम, शनि	प्रातःकाल
दक्षिण दिशा	वृष, कन्या, मकर	गुरु	मध्याह्न
पश्चिम दिशा	मिथुन, तुला, कुम्भ	रवि, शुक्र	सन्ध्या काल
उत्तर दिशा	कर्क, वृश्चिक, मीन	बुध, मंगल	अर्धरात्रि

योगिनी वास— प्रतिपदा तथा नवमी तिथियों को योगिनी का वास पूर्व दिशा में होता है। तृतीया व एकादशी को अग्नि कोण (पूर्व दक्षिण मध्य) में, पंचमी व त्रयोदशी को दक्षिण में, चतुर्थी व द्वादशी को दक्षिण पश्चिम के मध्य नैऋत्य कोण में, षष्ठी व चतुर्दशी को पश्चिम दिशा में, सप्तमी व पूर्णिमा को पश्चिम उत्तर मध्य वायव्य कोण में, द्वितीया व दशमी को उत्तर दिशा में तथा अष्टमी व अमावस्या को उत्तर व पूर्व के मध्य ईशान कोण में होता है। योगिनी यात्रा समय पर सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होनी चाहिये। इस प्रकार पूर्व दिशा की यात्रा १।९।३।११ व ५।१३ तिथियों को नहीं करनी चाहिये।

कालराहु वास— शनिवार को पूर्व में, शुक्र को अग्नि कोण में, गुरुवार को दक्षिण में, बुधवार को नैऋत्य कोण में, मंगलवार को पश्चिम में, सोमवार को वायव्य कोण में तथा रविवार को उत्तर दिशा में होता है। यात्रा वाले दिन कालराहु का वास सम्मुख या दक्षिण भाग में नहीं होना चाहिये। अतएव पूर्व दिशा की यात्रा शनिवार, शुक्रवार या गुरुवार को नहीं की जा सकती।

योगिनी वास

उत्तर २।१० · ईशान ८।३० · पूर्व १।९ · अग्नि ३।११ · दक्षिण ५।१३ · नैऋत्य ४।१२ · पश्चिम ६।१४ · वायव्य ७।१५ · तिथियां

कालराहु चक्रम्

उत्तर रविवार · ईशान · पूर्व शनिवार · अग्नि शुक्रवार · दक्षिण गुरुवार · नैऋत्य बुधवार · पश्चिम मंगलवार · वायव्य सोमवार
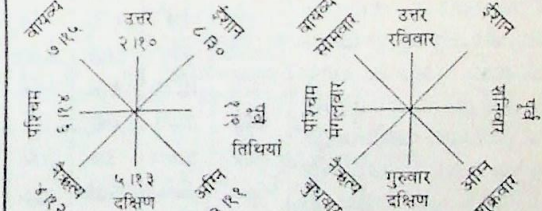
दिशा	योगिनी वास	कालराहु वास
पूर्व दिशा	१।९ तिथ्य	शनिवार
अग्नि कोण	३।११	शुक्रवार
दक्षिण दिशा	५।१३	गुरुवार
नैऋत्य कोण	४।१२	बुधवार
पश्चिम दिशा	६।१४	मंगलवार
वायव्य कोण	७।१५	सोमवार
उत्तर दिशा	२।१०	रविवार
ईशान कोण	८।३०	—

समय शूल— पूर्व दिशा की यात्रा के लिये प्रातः काल में समय शूल होता है, अर्थात् पूर्व दिशा की यात्रा प्रातःकाल नहीं करनी चाहिये। इसी प्रकार दक्षिण के लिए समयशूल मध्याह्न में, पश्चिम के लिये संध्याकाल में और उत्तर के लिये समय शूल मध्य रात्रि के समय होता है। समय शूल के काल में यात्रा नहीं करनी चाहिये। महत्वपूर्ण यात्रा के लिये तो आवश्यक है कि मुहूर्त में चन्द्रमा, योगिनी, दिशाशूल, कालराहु, समय शूल सभी बातों का ध्यान रखा जाय। परन्तु यदि आपने आवश्यक कार्यवश यात्रा करनी है और उपर्युक्त मुहूर्त तक प्रतीक्षा नहीं कर सकते तो निर्धारित पदार्थ खाकर यात्रा कर सकते हैं। यदि मुहूर्त के दिन के कुछ समय पश्चात् यात्रा करना चाहते हैं तो मुहूर्त समय प्रस्थान कराके इच्छित समय पर यात्रा की जा सकती है। आवश्यक कार्यों में भी जहां तक हो सके अनुकूल चन्द्रमा का ध्यान अवश्य रखा जाना चाहिये। राज्य कार्य सेवा कार्य में मुहूर्त नहीं देखा जाता, केवल शूल पदार्थ खाकर ही यात्रा कर सकते हैं। पूर्ण चन्द्र सम्मुख हो तो अन्य दोष नष्ट हो जाते हैं।

पन्था राहु चक्र

धर्म के नक्षत्र	अश्वि.	पुष्य	ऽश्ले.	वि.	ऽनु.	धनि.	शत.
अर्थ के नक्षत्र	भरणी	पुन.	मघा	स्वा.	ज्ये.	श्रवण	पू.भा.
काम के नक्षत्र	कृतिका	आर्द्रा	पू.फा.	चित्रा	मूल	अभि.	उ.भा.
मोक्ष के नक्षत्र	रोहिणी	मृग.	उ.फा.	हस्त	पू.षा.	उ.षा.	रेवती

पन्था विचार— यात्रा से समय सूर्य धर्म नक्षत्र में हो और चन्द्रमा अर्थ या मोक्ष के नक्षत्र में हो तो यात्रा शुभ होगी। सूर्य अर्थ में और चन्द्र धर्म या मोक्ष में तो भी शुभ जाने। सूर्य काम में और चन्द्रमा धर्म, अर्थ या मोक्ष में होने पर भी शुभ होगा। सूर्य मोक्ष में चन्द्रमा धर्म शुभ जानें। इनसे अन्यथा सूर्य- चन्द्र की स्थिति होती अशुभ जानो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यात्रा में त्याज्य तिथियां

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, पड़वा (शुक्ल पक्ष की), पूर्णमासी, अमावस्या, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी ये तिथियां यात्रा में निषिद्ध हैं।

जन्म लग्न तथा राशि से अष्टम यात्रा लग्न में अशुभ है। कुम्भ लग्न और कुम्भ का निवास मीन लग्न यात्रा में वर्जित हैं। केन्द्र १-४-७-१० और त्रिकोण ५-९ स्थान में ग्रह शुभ होते हैं। चन्द्रमा लग्न से ६-८-१२वां अशुभ होता है। दशम में शनि और सप्तम में शुक्र ६-१-९-१२ इन स्थानों में लग्नेश अशुभ होता है। यात्रा में नक्षत्रों की त्याज्य घड़ी-तीनों पूर्वाओं की प्रथम १६ घड़ी, कृत्तिका की प्रथम २१ घड़ी, मघा की ११ घड़ी, भरणी की ७ घड़ी और स्वाति, विशाखा, ज्येष्ठा, अश्लेषा इन नक्षत्रों की १४ घड़ी निषिद्ध हैं। यात्रा में भद्रा सर्वथा वर्जित है। पहला, सातवां, पांचवां और तीसरा तारा यात्रा में वर्जित है।

अगर जरूर जाना हो और दिशाशूल दोष हो तो वारों के मुताबिक पदार्थ खाकर जाने से दोष-निवृत्ति हो जाती है। नीचे चक्र में देखें।

चक्रम्

वार	र.	चं.	मं.	बु.	गु.	शु.	श.
खाने के पदार्थ	घृतयुक्त पान	चंदन	गुड़	तिल	दही	चून	तिल

भद्रायां मुखपुच्छ घटीज्ञानम्

४	८	११	१५	३	७	१०	४	मासां तिथीनाम्
१	अ.	उ.	नै.	ई.	द.	वा.	पू.	मासां तिथीनाम्
५	२	७	४	८	३	६	१	एषुयामेष्वादौ
५	५	५	५	५	५	५	५	विष्टेर्मुखप५कृशु
८	१	६	३	७	२	५	४	चषुयामेष्वन्त्यम्
३	३	३	३	३	३	३	३	घटीत्रयंपुच्छंशुभम्

द्विपुष्कर-त्रिपुष्कर योग ज्ञानार्थ चक्र

(क्रूर) वार	रविवार, मंगलवार, शनिवार
(भद्रा) तिथि	२-७-१२
विषम चरण वाले नक्षत्र	कृति. पुन. उ.फा. विशा. उ.षा. पू.भा.
द्वि-दे नक्षत्र योग बनता है।	मृग. चि. धनि. से द्विपुष्कर

त्रिपुष्कर-द्विपुष्कर योग फलम्-वार तिथि विषम चरण वाले नक्षत्रों के योग से त्रिपुष्कर योग होता है। यह योग मृत्यु, विनाश और वृद्धि में त्रिगुण फल देता है।

इसी प्रकार द्विपुष्कर योग के विषय में जानना चाहिए। इन योगों में किसी के यहां मृत्यु हो तो शास्त्रोक्त शान्ति करा लेनी चाहिए।

यात्रा के नक्षत्र

अ. अनु. ज्ये, मू. ह. म. पुन. पु. रे. रो. इन नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, ११, १३ तिथियों में शुभ वारों में अच्छा शकुन विचार कर अनुकूल और सामने व दाहिने होने पर यात्रा करें। योगिनी बाएं या पीठ पीछे हो तो यात्रा सफल होती है।

यात्रा में शकुन

हाथी, घोड़ा, ब्राह्मण, शराब, मांस, मछली, जल से भरा एक कलश, दही, नेवला, पुत्रवती स्त्री, शृंगार किए स्त्री, कन्या, ममोला, सरसों—ये शकुन हों तो कार्य सिद्ध होगा।

अशुभ शकुन परिहार

यात्रा में पहला अपशकुन हो तो ११ श्वास लेकर, दूसरा अपशकुन हो तो १६ श्वास लेकर और अगर तीसरा अपशकुन हो तो कभी न जाये। अनेक आचार्यों का मत है कि एक कोस जाने पर शुभ-अशुभ शकुनों का फल नहीं होगा।

यात्रा में अपशकुन

बिडाल, युद्ध, विधवा स्त्री, बन्ध्या स्त्री, चमड़ा, सन्यासी, लकड़ियां, छींक, बुरे शब्द, हड्डियां अगर इनमें से कोई यात्रा के समय सामने आवे तो कार्य नष्ट होता है, नई आपत्ति आती है।

यात्रा आदि में शुक्र-विचार

गांव से गांव जाने में, दुर्भिक्ष व विवाह में सम्मुख शुक्र का दोष नहीं होता। शुक्रान्ध—रे., अ., भ. व कृ. के प्रथम चरण तक शुक्र अन्धे रहते हैं। उसमें सम्मुख शुक्र दोष नहीं। शुक्र एवं गुरु, उदय व अस्त के ३ दिन पहले व ३ दिन बाद क्रमशः बाल व वृद्ध रहते हैं। इसमें शुभ कार्य न करें।

गोरखपतरा यात्रा मुहूर्त

पौष	माघ	फाल्गु.	चैत्र	वैशा.	ज्येष्ठ	आषा.	श्राव.	भाद्र.	आश्वि.	कार्ति.	अग्र.	मासों की तिथियों का फल
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	बहुत सुख और अर्थपूर्ण हो, क्लेश न हो
२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	भय, जीवहानि, पछतावा हो A सहित घर आवे
३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	कामना सिद्धि व अर्थपूर्ण हो B कुशल घर आवे
४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	क्लेश व जीव हानि, कुशल से घर न आवे
५	६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	वस्तु-लाभ, व्याधि व संकट कटे, मित्र मिलें
६	७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	घर की चिंता, मित्र संकट, कदाचित घर आवे
७	८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	भाग्योदय, मित्र व साधनों की प्राप्ति, रत्न A
८	९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	बहुत बुरा हो, लेन-देन करना नहीं, जीवनाश हो
९	१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	कामना व आशापूर्ण हो, सौभाग्य का उदय हो
१०	११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	सौभाग्य प्राप्त हो, बहुत दिन लगें किन्तु स-B
११	१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	क्लेश हो, जीव हानि नहीं, सौभाग्य पावे नहीं
१२	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	सिद्धि प्राप्त, मित्र मिलें, विघ्न मिटे, धन लाभ

प्रहर १	प्रहर २	प्रहर ३	प्रहर ४	पूर्व दिशा	दक्षिण दिशा	पश्चि. दिशा	उत्तर दिशा
अर्थ	सुख	शोक	सुख	सुख	क्लेश	भीति	द्र-लाभ
भय	क्लेश	सुख	सुख	शून्य	नेष्ट	दारिद्र	समता
लाभ	सुख	सुख	हानि	क्लेश	दुख	इष्टला	धन प्रा.
क्लेश	लाभ	क्लेश	विना	लाभ	सुख	मंगल	श्री.प्रा.
संकट	क्लेश	भाग्य	सुख	लाभ	द्रव्य	धन	सुख
संकट	क्लेश	भय	अर्थ	भीति	लाभ	मृत्यु	अर्थ
विना	लाभ	सुख	सुख	लाभ	कष्ट	द्रव्यला.	सुख
शून्य	शून्य	शून्य	शून्य	कष्ट	सुख	क्लेश	सुख
लाभ	भाग्य	मित्र	मित्र	सुख	लाभ	का.सि.	कष्ट
लाभ	संपूर्ण	मरण	कुशल	क्लेश	कष्ट	अर्थ	श्री.प्रा.
मरण	अर्थ	कुशल	मरण	मृत्यु	लाभ	द्र.लाभ	शून्य
मरण	सुख	सुख	सुख	शून्य	सुख	मृत्यु	अतिक.

योगिनी फल

पृष्ठे सुख की दायिनी। सन्मुख हरती प्रान॥ दाहिनी दुःख की दायिनी। कौशिक योगिनी जान।

नोट-युद्ध, यात्रा में बायें और सन्मुख योगिनी त्याज्य है।

टिप्पणी-आग्नेया पूर्वद्विज्ञेया दक्षिणादिक च नैऋता वायवी पश्चिमादिक स्यादशानी च तथोत्तरा। अग्नेय को पूर्व में, नैऋत्य को दक्षिण, वायव्य को पश्चिम और ईशान को उत्तर दिशा में जानकर चन्द्र निवास व दिशाशूल जानना चाहिये।

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा-गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

स्थानों में शुभ और ३६११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होता है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य,

CC-0. In Public Domain. Kirikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

अथ गृहारंभ-द्वारशाखा गृह प्रवेश कूपादि मुहूर्त्ताः

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

भूमि सुप्तज्ञानम्

संक्रांतिमिति दिन पांचवें ५ सप्तम ७ नवमें ९ जोय। दश १० इक्कीस २१ चौबीसवें घट दिन पृथ्वी सोय॥

आवश्यके त्याज्य घटिका

पंचमेवाण ५ घट्यांश्चसप्तमेरुद्र ११ संज्ञका। नवमे ऋषय७श्चैवदशमे चषट् ६ नाड़िका: एक विंशेयम् १४श्चैव चतुर्विंशेदश १० नाड़िकार्घटिका वर्ज्यनीयाश्च भूमीकर्मणिसर्वदा।

काकिणी विचार

अवर्ग (१) कवर्ग (२) चवर्ग (३) टवर्ग (४) तवर्ग (५) पवर्ग (६) यवर्ग (७) शवर्ग (८) इन आठ प्रकार के वर्गों में से मनुष्य का नाम जिस वर्ग की संख्या में हो उस संख्या को २ से गुणाकर ग्राम के वर्ग की संख्या को मिलाकर ८ का भाग दें तो मनुष्य की काकिणी होगी। इसी तरह ग्राम का नाम जिस वर्ग संख्या में हो उसकी द्विगुण कर अपने नाम की वर्ग संख्या को युक्त कर ८ का भाग दें तो ग्राम की काकिणी होगी। इसमें से जिसकी काकिणी अधिक हो वह दूसरे का ऋणी होता है, अर्थात् मनुष्य की काकिणी से ग्राम की काकिणी सदा अधिक होनी चाहिए। ग्राम के निवास को जान कर गृहारम्भ के मुहूर्त का विचार करें।

गृहारम्भ मासे नक्षत्रादि विचार

वैशाख, श्रावण, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन महीने गृहारम्भ में श्रेष्ठ कहे हैं। भाद्रपद और कार्तिक मास मध्यम हैं। २।३।५।१०।११।१२।१३ इन तिथियों में, चं.बु.शु.श. वारों में, रो. मृ. पुन. ह. चि. स्वा. अनु. उत्तरा ३ ध.श.रे. नक्षत्रों में, २।३।५।६।८।९।११।१२ लग्नों में अग्निवाण और भूमिशयन से रहित दिनों में लग्न से केन्द्र त्रिकोण स्थानों में शुभ और ३।६।११ स्थानों से पापग्रह तथा अष्टम स्थान शुद्ध होने पर गृहारम्भ मुहूर्त शुभ होता है।

गृहारम्भ मुहूर्त के दिन सूर्य जिस नक्षत्र पर हो उस नक्षत्र से अभिजित नक्षत्र सहित दिन का नक्षत्र जितनी संख्या पर आवे नीचे लिखे चक्र के अनुसार उतनी संख्या पर जो अंक हो, उसका फल जान लें।

सूर्यभात वृषवास्तु चक्र

अग्रपादे पृष्ठपाद			पृष्ठे	द.कु.	पुच्छे	वामकुक्षौ	मुखे
३	४	४	३	४	३	४	३
दाह	नाक	स्थिर	श्री	नाभ	नाश	नेष्ट	पीड़ा

द्वारशाखा स्थापन मुहूर्तः

अश्वि. रो. मृ. पुष्य हस्त स्वा.श्रव. उत्तरा ३ इन नक्षत्रों में शुभ तिथि शुभ वारों में द्वारशाखा देहली (दलीज) स्थापन करना शुभ है।

सूर्य भात् देहली चक्र

शिरसि	कोण	शाखाया	देहल्यां	मध्य	स्थानानि
४	८	८	३	४	नक्षत्राणि
लक्ष्मी	उद्वेग	देहसौख्य	मृत्यु	सौख्य	फलम्

जलाशय देवालय प्रतिष्ठां

अश्वि. मृग. पु. पुष्य चित्रा स्वाति अनुराधा अभि. श्रवण धनिष्ठा शत. रेवती एषुभेषु. २।३।५।६।७।१०।११।१२।१३।१५ एषु तिथिषु भौमवार बिना उत्तरायणे गुरु, चन्द्र, शुक्र दृश्ये: शुभे लग्ने वा स्थिर लग्ने प्रतिष्ठा कार्या। तत्स्वामी नक्षत्रे तिथि मुहूर्त-लग्ने वा स्थिर लग्ने। कुम्भे ब्रह्मा। कन्यायां विष्णु। मिथुने रुद्र:। सिंहे सूर्य: मिथुन कन्या धनु मीनेषु देव्य:। मेष कर्क तुला मकरेषु योगिनी। वृष सिंह वृश्चिक कुम्भेषु सर्व देवानां प्रतिष्ठा कार्या।

कूप चक्र

नक्षत्र वारो तिथि संयुक्ता वेदाहृतं तद् गणकेनकार्यम्। एकावशिष्टं च जलहिनागे द्वाभ्यां च शेषं सलिलं च स्वर्गे। त्रिशून्य शेषे भुवसंस्थितं च भूसंस्थितं सुष्ठु वदन्ति विज्ञा:।

इशान्ये पुष्टि:	पूर्वे ऐश्वर्य्यम्	अग्नेये पुत्रनाश:
उत्तरे सुखम्	मध्येऽर्थनाश:	दक्षिणे स्त्रीनाश
वायव्ये शत्रुभयम्	पश्चिमे धनलाभ:	नैऋत्ये स्वामीनाश

गृह की जिस दिशा में कूप लगाया जावे उस का फल ऊपर लिखे चक्र से जान लें। जैसे घर की उत्तर दिशा में सुख इत्यादि।

सूर्यभात्कूप जल विचारः

३	३	३	३	३	३	३	३	३
स्वादु	खंडित	स्वादु	क्षय	स्वादु	क्षार	शिक्षा	मिष्ठ	क्षार
जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल	जल

राहु मुख ज्ञानम्

देवालय प्रारम्भ में मीनादि से तीन-तीन राशिपर्यन्त सूर्य की स्थितिवश में ईशाणादि विपरीत विदिशा के क्रम से राहु का मुख होता है। इसी तरह गेहविधि में सिंहादि तीन-तीन राशि की स्थिति वश ऊपर कहे हुए क्रम से राहु का मुख कहा है मुख की विदिशा से जो पृष्ठ की विदिशा हो उस में खात करना शुभ है।

खात चक्रम्

इशान्ये	वायव्ये	नैऋत्ये	आग्नेये	राहोर्मुखम्
१२।१।२	३।४।५	६।७।८	९।१०।११	देवालये
५।६।७	८।९।१०	११।१२।१	२।३।४	गेहविधौ
१०।११।१२	१।२।३	४।५।६	७।८।९	जलाशये
आग्नेय	ईशाने	वायव्ये	नैऋत्ये	कोणा:
खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ	खात: शुभ

नूतन गृह प्रवेश

वै. ज्ये. माघ फाल्गुन महीनों में रा. रे., ति. अनु. उत्तरा ३ नक्षत्रों में २।३।४।५।६।७।८।९।१०।११।१२।१३।१४।१५ तिथियों में चं. बु., बृ. शु. श. वारों में अपने जन्म ग्न वा जन्म राशि से आठवां लग्न न हो। उपचय लग्न में वा स्वजन्मलग्नात् एते उपचंया ३।६।१०।११ स्थिर लग्न में से ४।८ स्थान शुद्ध होने पर पर्व-रहित दिन में लग्न से १२५७९१० स्थानों में शुभ और ३।६।११ में पाप ग्रह हों तो नूतनगृह में प्रवेश शुभ होता है। पुरातन गृहप्रवेश में श्रा., का., मार्ग., मासेषु ह. अश्वि., पुष्य, मृग., श्र., ध., एषुभेषु चापि शुभ:। आवश्यके गुरु शुक्रास्त न विचारणीयम्।

सूर्य भात्प्रवेश समय कुम्भ चक्र

मुख	पूर्व	दक्षिण	पश्चिम	उत्तर	गर्भ	गुदे	कंठे
१	४	४	४	४	४	३	३
अग्निदाह	उद्वेग	लाभ	कीर्ति:	कलह	नाश	स्थिर	स्थिर

दुकान खोलने का मुहूर्त

वाणिज्य कर्म — अनु., तीनों उत्तरा, पुष्य, रेवती, रोहि., मृगशिरा, हस्त, चित्रा, अश्वि. नक्षत्रों में रिक्ता तिथि छोड़कर शुभवार में वाणिज्य कर्म शुभ है।

बहीखाता पत्रारम्भ मुहूर्त्त — अश्विनी, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, श्रण, रेवती शुभ है। ४, ९, १४, ३० रहित तिथि रवि, सोम, बुध, गुरु, शनिवार शुभ मुहूर्त्त चर एवं द्विस्वभाव लग्न में ८, १२ घर पाप रहित तथा केन्द्र कोण में शुभ ग्रह हों।

मशीनरी चालू करना — आश्लेषा, धनिष्ठा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, पुष्य, ज्येष्ठा, पुनर्वसु, रेवती नक्षत्र शुभ है।

मुकद्दमा दायर करना — ४, ९, १४ तिथि, मंगलवार, शनिवार, कृत्तिका, आर्द्रा, धनि., आश्ले., मघा, ज्येष्ठा, मूल, विशा., तीनों पूर्वा हों, भद्रा हो तो उत्तम है।

ऋण लेने का मुहूर्त्त — अश्विनी, स्वाति, पुनर्वसु, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा में चर लग्न में ऋण लेना शुभ है। मंगल के दिन, वृद्धि योग में, सूर्य संक्रांति के दिन, धनिष्ठा आदि पंचकों में, हस्त, द्विपुष्कर, त्रिपुष्कर योगों में ऋण नहीं लेना। रविवार को ऋण ले तो कभी मुक्ति नहीं मिलती। मंगलवार को ऋण वापस करना अच्छा है।

हट्ट चक्र

नक्षत्र	२	२	४	४	३	४	४	४
फल	सौख्य	विक्रयनाश	धननाशे	सुख	श्रेष्ठ	क्षोभ	हानि	शुभ

नौकरी का मुहूर्त

अ. मृ. पुष्य, ह. चि. अनु. रेवती एषु मेषुरिक्ता रहित तिथिषु सू.बु.बृ.शु. वारेषुशुभ लग्ने १०, ११ स्थान में सूर्य भौम वा स्वामी सेवक की राशिश और योनि से मित्रता हो।

हल प्रवाहनम् — अ.रो.मृ.पुन.पु. उत्तरा ३, ह.चि.स्वा. अनु.मू.श्र.ध.श.रे. एषुमेषु २।३।५।७।१०।१२।१३ तिथिषु चन्द्र बुध बृह. शुक्रवारेषु २।३।१।८।९।१२ लग्नेषु व्यतिपात पूर्वे रहित काले शुभस्यात्।

सूर्य भात हल चक्रम्

३	३	३	५	३	५	३	३	नक्षत्र
अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	फलम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ बीज बीजने का मुहूर्त

अ. रो. मृ. पुन. पुष्य म. उत्तरा ३, ह. चि. स्वा. अनु. मूल. धनि. रेवती एषुमेषु चन्द्र बुध बृह शुक्र वारेषु २. ३. ५. ७, १०. ११. १३ एषु तिथिषु शुभंलग्ने शुभस्यात्।

राहु भात बीज वापन चक्रम्

८	३	१	३	१	३	१	३	४	नक्षत्र
अशु	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	फलम्

अथ खेती काटने का मुहूर्त

भ.कृ.मृ.आर्द्रा. पुष्य.श्ले. मघा, पूर्वा ३, उत्तरा ३, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा एषुमेषु शुभवासरे, शुभ लग्ने शुभं स्वात्।

अथ खेतों से अन्न निकालने का मुहूर्त

रोहिणी. मघा. पू.फा., उ.फा. अनु., ज्येष्ठा, मूल, श्रवण एषुमेषु चन्द्र बुध, बृह. शुक्र. वारेषु २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १३, १५ तिथिषु शुभलग्ने कण मर्दन स्यात्।

अथ अन्न घर लाने का मुहूर्त

अश्विन, रोहिणी, मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनि., रेवती एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २. ३. ५. ७. १०. ११. १३. १५ तिथिषु शुभे लग्ने शुभस्यात्।

अथ नवान्न भक्षणम्

अश्वि., रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, श्रवण, धनि., शत., रेवती एषुमेषु शुभवारेषु १, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, तिथिषु शुभलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न बेचने का मुहूर्त

कृत्तिका, रोहिणी, तीनों उत्तरा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु, शुभवासरे शुभस्यलग्ने शुभस्यात्।

अथ अन्न खरीदने का मुहूर्त

रोहिणी, ध., शत., तीनों उत्तरा एषुमेषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३ तिथिषु शुभे लग्ने शुभंस्यात्।

अथ बीज संग्रह मुहूर्त

हस्त, चित्रा, स्वाति, पुन., रोहिणी, मृग., श्रवण, धनि. एषुमेषु २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३, १५ एषु तिथिषु चन्द्र, बुध, बृह., शुक्र वारेषुशुभे लग्नेशु शुभंस्यात्।

अथ लता औषधि लगाने का मुहूर्त

अश्वि., रोहिणी, मृग., आर्द्रा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, विशाखा एषुमेषु चं.बु.बृ.शु. वारेषु शुभ तिथौ शुभलग्ने शुभंस्यात्।

अथ अर्जी देने का मुहूर्त

भरणी, मूल, आर्द्रा, अश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा एषुमेषु शनि, मंगल वारौ ४, ९, १४ तिथौ क्रूर चन्द्रे सति शुभंस्यात्।

अथ होलाष्टकम्

शुक्लाऽष्टमी समारभ्य फाल्गुनस्य दिनाष्टकम्
विपाशैरावती तीरे शतुद्राश्य त्रिपुष्करे।
विवाहादि शुभे नेष्टं होलिका प्राग दिनाष्टकम्॥

अथ होम अग्नि वासः

शुक्लादि तिथि वर्तमान वार दोनों को जोड़ कर एक और मिलाओ ४ का भाग दो यदि ३ या चार बचे तो अग्नि का वास पृथ्वी पर जानना होम में सुख होता है। यदि १ या दो बचे तो अग्नि का वास वर्ग वा पाताल में होता है होम में प्राण और धन का नाश करता है।

अथ ग्रहों के मुख में आहुति

सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिने प्रथम इसे सूर्य मुख में, इसी तरह सब ग्रहों के मुख में आहुति जाननी।

सूर्य	बुध	शुक्र	शनि	चन्द्र	मंगल	बृह.	राहु	केतु	ग्रह
३	३	३	३	३	३	३	३	३	नक्षत्र
शुभ	शुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	शुभ	अशुभ	अशुभ	फल

अथ ग्रहायां होमयेंसमिधः। अर्क-पलाशः खदिरस्त्वपामर्गो ऽर्थपिप्पलः॥ औदुम्बरः शमी दूर्वाकुशाच्चसमिधः क्रमादिति॥ सन्तानप्रदमंत्रौ। देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगतपते। देही मे तनयं कृष्णत्वामहं शरणंगतः। कौशल्याशुशुभेतेन पुत्रेणामिततेजसा। यथावरे ह णदे वाननामदितवं जपाणिना॥ सपादलक्ष जपः तिल पायसधृतंदशांशहवनं। तद् शांततर्पणम्। दद्दशांश ब्राह्मण भोजनम्।

यात्रायां द्वादशराशिगत चन्द्रफलम् आद्यचन्द्रःश्रियं कुर्याद्द्वितीये धनधान्यदः। तृतीये राजसन्मानं चतुर्थेकलहा गमः॥१॥ पंचमे ज्ञानवृद्धिश्च षष्ठे सम्पत्तिरुत्तमा॥ सप्तमे सुखकृच्चन्द्रो ह्यष्टम मरणं भवेत् (कष्टं वा)। ९वें भाग्यवृद्धिश्च दशमे सुखसबः। एकादशे सर्वलाभोद्वादशं चाशुभावहः॥ आवश्यके द्वादशगतेऽपि यात्रा कार्यानिष्टचन्द्रदानतु। दधि तण्डुलश्वेतघृतरजतमुक्तादयः॥

कदा द्वादशस्वस्थश्चन्द्रमाशुभवः॥ आधाने-सम्प्रदाने च विवाहे राजविग्रह॥ पाणिग्रहे प्रयाणे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः। अभिषेके निवेके च गृहे पुंसवनादिषु। यात्रा युद्धे विवाहे च चन्द्रो द्वादशगः शुभः।

अथ सर्वेषां श्राद्धानां कालविंभावगः पूर्वार्द्धदैविकं श्राद्धमपरान्हे तु पार्षणम्। एकोदिष्टं तु मध्यान्हे प्रातवृद्धिनिमित्तके शुक्लपक्षस्य पूर्वान्हे श्राद्धंकुर्याद्विचक्षणः॥ कृष्णपक्षेऽपराह्ने च रौहणं न तुलच्छयेत्॥ क्षयाहे विशेषः। न ज्ञायते मृताहश्चेत्यमीते प्रोषिते सति। मासश्चैत्प्रतिविज्ञात-स्तच्छशस्यान्मतेऽहनि। श्राद्धविघ्न निर्णयः। श्राद्धविघ्नं समुत्पन्ने ह्यविज्ञाते मुतेऽहनि। एकादश्यां तु कर्तव्य कृष्णपक्षे विशेषतः॥ इति॥

गयाश्राद्धकालः॥ मीने मेषेस्थिते सूर्य कन्यायां कार्म के घटे दुर्लभं त्रिषु लोकेषु गयायां पिण्डपातनम्। मकरे वर्तमाने च ग्रहणे चन्द्रसूर्ययोः दुर्लभत्रि.। गयायासर्वकालेषुपिण्डं दद्याद्विचक्षणः। अधिमासे जन्मदिने अस्ते चगुरुशुक्रयोः॥ न त्यक्तव्यं गया श्राद्ध सिंहस्थे च बृहस्पतौ।

ऋण देना या धन व्यापार में लगाना— स्वाती, पुनर्वसु, चित्रा, अनुराधा, मृगशिरा, रेवती, विशाखा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, इन नक्षत्रों में, चर, लग्न में और १, ५, ८ स्थानों में कोई ग्रह न हो तो तब द्रव्य को ऋण में देना रोजगार में लगाना शुभ है। मतान्तर से १, १२, ६ तिथि छोड़कर अन्य तिथियों में, तीनों उत्तरा और रोहिणी अन्य नक्षत्रों में शनिवार छोड़कर अन्य वार में कर्ज देना चाहिए।

बंटवारे का मुहूर्त — अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपद, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाति, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती नक्षत्रों में २, ३, ५, ७, १०, ११, १३ तिथियों में शुभ लग्न में बंटवारा करना शुभ रहता है।

वसीयतनामा एवं उत्तराधिकार देने का मुहूर्त — चैत्र मास छोड़कर उत्तरायण में अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, उत्तराफाल्गुनी, उत्तराभाद्रपद, उत्तराषाढ़ा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण एवं रेवती नक्षत्रों में रिक्ता तिथि (४, ९, १४) छोड़कर अन्य तिथियों में मंगलवार छोड़कर अन्य वारों में गुरु, शुक्र, चन्द्र के उदय रहते शुभ लग्न में वसीयतनामा अथवा राज्याभिषेक करना शुभ होता है।

मंत्री अथवा उच्चाधिकारी से मिलने का मुहूर्त — तीनों उत्तरा, श्रवण, धनिष्ठा, मृगशिर, पुष्य, अनुराधा, रोहिणी, रेवती, अश्विनी, चित्रा, हस्त ये नक्षत्र रविवार सहित शुभ दिनों में तथा गोचरोक्त सूर्य बली हो तो मुलाकात करना शुभ है।

मन्त्री पद की शपथ लेना — उत्तरायण में, गुरु, शुक्र, चन्द्र ग्रहों के उदित रहते और मंगल, सूर्य तात्कालिक लग्न का स्वामी, तात्कालिक दशा का स्वामी, जन्म लग्नेश इन ग्रहों के बली रहते शुभ है। चैत्र मास, मलमास और ४, ९, १४ तिथि मंगलवार तथा रात्रि में अशुभ है इसलिए वर्जित है। ज्येष्ठा, श्रवण, हस्त, अश्विनी, पुष्य, मृगशिरा, रेवती, चित्रा, अनुराधा, रोहिणी, तीनों उत्तरा में और ३, ५, ६, ७, ८, ११ राशि की लग्न में या जातक की जन्म लग्न, जन्म राशि से ३, ६, ११वें शुभ राशि के लग्न में रहने और शपथकालिक लग्न से ३, ६, ११वें स्थान में पाप ग्रह हों या केन्द्र त्रिकोण में शुभ ग्रह हों तब शपथ ग्रहण करना शुभ है।

देव-प्रतिष्ठा का मुहूर्त — विभिन्न देवताओं की (चैत्र को छोड़कर उत्तरायण सूर्य में) प्रतिष्ठा तथा जलाशय, नाग आदि की प्रतिष्ठा, अश्वि., रो., मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., श्रवण, धनि., शत., रेवती नक्षत्रों में मंगलवार को छोड़कर अन्य वारों में, शुक्ल पक्ष की २, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३ तिथियों में गुरु शुक्रोदय पंचांग शुद्धि, चन्द्र तारा शुद्धि देख कर करना चाहिए।

प्रेत क्रिया मुहूर्त — अश्विनी, पुष्य, हस्त, आश्लेषा, मूल, ज्येष्ठा, श्रवण, आर्द्रा और स्वामी नक्षत्र में प्रेत क्रिया करना उचित है, यदि मरणकाल में किसी कारणवश न की गई हों। धनिष्ठा नक्षत्र का उत्तरार्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद रेवती इन साढ़े चार नक्षत्रों में प्रेत का दाह वर्जित है।

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त्ताः

नाम मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण	नाम मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विभिन्न प्रकार के उपयोगी मुहूर्त:

नाम मुहूर्त	तिथि	वार	नक्षत्र-मास-लग्नादि शुद्धिकरण
सीमन्तोन्नयन मुहूर्त	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	रवि गुरु मंगल	मृग., पुष्य, मूल, श्र., पुन, हस्त मतान्तर से तीनों उत्तरा, रोहिणी, रेवती। मासेश्वर केबली रहते गर्भाधान से ८ या ६ मास में, केन्द्र व त्रिकोण के शुभ ग्रहों के रहते ३, ६, ११ स्थान में क्रूर ग्रह और पुरुष ग्रह लग्न या नवांश में शुभ होता है।
पुंसवन मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३	मंगल गुरु शु. रवि	श्रव., रोहि., पुष्य, उत्तम। मृग., पुन., हस्त, रेवती, मूल और तीनों उत्तरा मध्य है। गर्भाधान से तीरे मास में पुरुष संज्ञक लग्न में, लग्न से १, ४, ५, ७, ९, १० इन स्थानों में शुभ ग्रह हो। चन्द्रमा १।६।८।१२वें न हो, पाप ग्रह ३।६।११वें शुभ होंगे।
सूतिका स्नान	१, २, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. मं. गुरु	रेवती, तीनों उत्तरा, रोहिणी, मृगशिर, हस्त,स्वाति, अश्विनी अनुराधा। पंचम में कोई ग्रह न हो, केन्द्र १।४।१०।७ में शुभ ग्रह हो।
नामकरण	१, २, ३, ५, ७, १०, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	अश्विन, रोहिणी, मृग., पुन., पुष्य, तीनों उत्तरा,हस्त, चित्रा, स्वाति, अनुराधा, अभि., श्रवण, दनि, शत, रेवती। लग्न से १।५।७।९।१० स्थानों में शुभ ग्रह हो। ३।६।११ में पाप ग्रह शुभ, ८।१२ में सभी ग्रह अशुभ।
स्तनपान	शुभ	शु. भु. चं. गु.	अश्विन, रोहिणी, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
कर्ण बेध	१, २, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १३, १५	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., पुन., पुष्य, मृग., हस्त, चित्रा, अनु., श्रव., धनि और रेवती लग्न २।३।४।६।७।९।१२ यदि गुरु लो विशेष उत्तम, शुभ ग्रह १।३।४।५।७।९।१०।११ में उत्तम। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ, ८वें कोई ग्रह न हो।
मुण्डन	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	चंद्र बुध गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, ज्ये., श्रवण, धनि., शत. रेवती। लग्न २।३।४।६।७।९।१२ शुभ ग्रह १।२।४।५।७।८।१०वें हो। पाप ग्रह ३।६।११ में शुभ ८वें कोई ग्रह न हो, जन्म से विषम वर्ष शुभ।
विद्यारम्भ	५, ६, २, ३, ११, १२, १०	र. गु. शु.	अश्विनी, मृग., आर्द्रा, पुन., पुष्य, अश्ले, तीनों पूर्वा, हस्त, चित्रा, स्वाति, मूल, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा।
यज्ञोपवीत	शु. प. २, ३, ५, १०, ११, १२ कृ. पक्ष की १, २, ३, ५	सू. च. बुध गुरु शुक्र	अश्विनी, रोहिणी, आर्द्रा, पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रवण, धनि., शत., रेवती, तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ। लग्नेश ६।८ में अशुभ, शुभ ग्रह १।४।७।५।९।१०वें स्थान में शुभ, पाप ग्रह ३।६।११वें में शुभ पुरुष १।४।८वें में सभी पाप ग्रह अशुभ होंगे।
जल पूजा कुआ पूजा	शुभ	चं. बु. गुरु	मृग., पुन., पुष्य, हस्त, अनु., मूल, श्रवण नक्षत्र श्रेष्ठ। रिक्ता तिथि, गुरु, शुक्रास्त, बाल वृद्ध, चैत्र पौष व मलमास, श्राद्ध पक्ष, मासान्त आदि वर्ज्य करें।
सगाई/वाग्दान	शुभ	शुभ	तीनों पूर्वा, तीनो उ., कृ., रो., मृग., मघा, ह., स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., रेव
द्विरागमन (गौना) (मुकलावा)	शुभ	चन्द्र बुध गुरु शुक्र	तीनों उत्तरा, अश्वि., रोहि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वा., अनु., मूल, श्रव., धनि., शत., रेवती। विवाह के बाद विषम वर्षों में, मेष वृश्चिक और कुम्भ के सूर्य में। २।३।६।७।१२ लग्न में शुभ. लग्न से १।२।३।५।७।१०।११वें शुभग्रहा और ३।६।११वें भाव में पाप ग्रह शुभ होते हैं।
पुनर्विवाह	शुभ	सू. मं. गु. शु.	अश्वि., हस्त, चित्रा, स्वा., विशाखा, अनु., धनि.। लग्न २।५।८।११, लग्न से १।२।३।५।७।१०।११ में शुभ ग्रह हों और ३।६।११ में पाप ग्रह होते हैं।
गन्धर्व विवाह	शुभ	मृ. मं. शनि	अश्वि., कृत्तिका, आर्द्रा, पुन., अश्ले., ज्ये., धनि., शत. नक्षत्र शुभ गुरु शुक्रास्त एवं मासादि दोषेपि नास्ति।
बीज बोने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १२, १३, १५	च. बु. गु. शु.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति अनु., मूल, धनि., रेवती सम्मुख चन्द्रमा शुभ होता है।
फसल काटने का मुहूर्त	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. च. बु. गु. शु.	भर., कृति., मृग., आर्द्रा, पुष्य, अश्ले., मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वा., ज्ये., मूल, पूर्वाषाढ़, श्रवण, धनिष्ठा, पूर्वाभाद्रपद। लग्न २।५।८।११ शुभ होता है।
कुआँ व ट्यूबवेल	शुभ	बु. गु. शु. चं.	रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य, मघा, तीनों उत्तरा, हस्त, अनुराधा, पूर्वाषाढ़ा, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दुकान	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३	सू. च. बु. गु. शु. श.	अश्वि., रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनु., रेवती। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते, १२, ८, पाप ग्रहों के न रहते, २, १०, ११वें शुभ ग्रहों के रहते दुकान खोलना श्रेष्ठ है।
बड़े-बड़े व्यापार करना	२, ३, ५, ७, ११, १३	बु. गु. शु.	पुष्य, हस्त चित्रा और तीनों उत्तरा। कुम्भ लग्न को छोड़, चन्द्र शुक्र लग्न में रहते ८, १२वें पाप ग्रह न हो। २, १०, ११वें शुभ ग्रह हो।
ऋण का लेन देन करना			रवि, मंगलवार, संक्राति दिन, वृद्धि योग, द्विपुष्कर व त्रिपुष्कर योग और हस्त नक्षत्र के दिन कभी ऋण न लें। अगर ले लिया जाये तो उस ऋण से मुक्ति न मिले और बुधवार के दिन कभी द्रव्य न दिया जाये।
बही खाता	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. चं. बु. गु. श.	मृगशिर, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, अनुराधा, श्रवण, रेवती। चर तथा द्विस्वभाव लग्न श्रेष्ठ है।
क्रय खरीदना	शुभ	शुभ	शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक की तिथियों में अश्विनी, चित्रा, स्वाति, श्रवण, शतभिषा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
विक्रय बेचना	शुभ	शुभ	भरणी, कृत्तिका, अश्लेषा, तीनों पूर्वा, विशाखा नक्षत्र। शुक्ल पक्ष की ११ से कृष्ण पक्ष की ५ तक कुम्भ लग्न को छोड़कर बेचना शुभ होता है।
नौकरी करने का मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३	सू. बु. गु. शु.	अश्विनी, मृगशिरा, पुष्य, हस्त, चित्रा, अनुराधा, रेवती नक्षत्र शुभ होते हैं।
कार्य सीखना	२, ३, ५, ७, ८, १०, १२, १३, १५	च. बु. गु. शु.	अश्विनी, रोहिणी, मृगशिरा, पुनर्वसु, पुष्य, तीनों उत्तरा, स्वाति, अनुराधा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, रेवती।
दत्तक (पुत्र गोद लेना)	२, ३, ५, ६, ७, ८, १०, ११, १२, १३, १५	सू. मं. गु. शु.	अश्विनी, पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, विशाखा, अनुराधा, धनिष्ठा नक्षत्र; स्थिर लग्न २।५।८।११ शुभ हैं।
गृह निर्माण	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, श्रावण, पौष, माघ, फाल्गुन श्रेष्ठ हैं। लग्न २।३।५।६।८।९।११।१२ शुभ। शुभ ग्रह लग्न से १।४।७।१०।५।९ इन स्थानों में एवं पाप ग्रह ३।६।११ शुभ होते हैं। ८।१२ में कोई ग्रह नहीं लेना चाहिए।
नूतन गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु. शनि	रोहि., मृग., चित्रा, अनु., रेवती, तीनों उत्तरा नक्षत्र शुभ हैं। लग्न २।५।८।११ उत्तम हैं ३।६।९।१२ मध्यम हैं। लग्न से १।२।३।५।७।९।१०।११ स्थानों में शुभ ग्रह शुभ होते हैं। ३।६।११ स्थानों में पाप ग्रह शुभ होते हैं। ८।४ में कोई ग्रह नहीं होना चाहिए। माघ, फाल्गुन, बैशाख, ज्येष्ठ मास में प्रवेश उत्तम होता है।
जीर्ण गृह प्रवेश	२, ३, ५, ६, ७, १०, ११, १२, १३	चन्द्र बुध गु. शु.	रोहि., मृग., पुष्य, तीनों उत्तरा, चित्रा, स्वाति, अनु. धनि., शत., रेवती नक्षत्र शुभ हैं। बैशाख, ज्येष्ठ, श्रावण, कार्तिक, मार्गशीर्ष, माघ, फाल्गुन मास श्रेष्ठ होते हैं। लग्न शुद्धि अवश्यक करें।
मन्त्र सिद्धि मुहूर्त	२, ३, ५, ७, १०, ११, १३, १५	सू. चं. बु. गु. शु.	अश्विन, मृगशिर, उ.फा., हस्त, विशाखा, श्रवण नक्षत्र शुभ हैं।
मुकदमा दायर करना	३, ५, ८, १०, १३, १५	र. बु. गुरु शुक्र	भरणी, आर्द्रा, श्ले, मघा, तीनों पूर्वा, ज्येष्ठा, मूल नक्षत्र शुभ होते हैं। लग्न ३।६।७।८।११ शुभ होते हैं। सूर्य, बुध, गुरु, शुक्र, चन्द्रमा १।४।७।१० स्थान में पाप ग्रह ३।६।११ स्थान में शुभ होते हैं परन्तु ८वें कोई ग्रह न हो।
वाहन लेना	शुभ	चं. बु. गु. शु.	अश्वि., मृग., पुन., पुष्य, हस्त, चित्रा, स्वाति, अनु., श्रवण, धनि., शत. रेवती नक्षत्र शुभ हैं। लग्न शुद्धि आवश्यक है। सूर्य नक्षत्र से दिन के नक्षत्र तक गणना करें। १ से ९ तक नेष्ट, १० से १५ श्रेष्ठ, १६ से २४ नेष्ट, २५ से २७ श्रेष्ठ होते हैं। लग्न से ८।१२ कोई ग्रह हो।
सर्वारम्भ मुहूर्त	शुभ	शुभ	लग्न से १२।८ स्थान शुद्ध हो अर्थात् कोई ग्रह न हो तथा जन्म लग्न व जन्मराशि से ३।६।१०।११ स्थान में हो तो सभी प्रकार कार्य प्रारम्भ करना शुभ होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त

सर्व कार्य-सिद्धि के लिए होरा मुहूर्त पूर्ण फलदायक और अचूक माने गए हैं। सात ग्रहों के सात होरा हैं जो दिन-रात के २४ घण्टों में घूमकर मनुष्य को कार्य-सिद्धि के लिए अशुभ समय में भी सुसमय सुअवसर प्रदान करते हैं। सूर्य का होरा राज-सेवा के लिए उत्तम है, प्रवास के लिए शुक्र का होरा, ज्ञानार्जन के लिए बुध का होरा, सर्वकार्य सिद्धि के लिए चन्द्रमा का होरा, द्रव्य-संग्रह के लिए शनि का, विवाह के लिए गुरु का तथा युद्ध, कलह और विवाद के लिए मंगल का होरा उत्तम होता है। प्रत्येक होरा १ घण्टे का होता है। जिस दिन जो वार होता है, उस वार के (सूर्योदय के समय) १ घण्टा तक उसी वार का होरा रहता है। उसके बाद १ घण्टे का दूसरा होरा उस वार के छठे वार का होता है। इसी प्रकार दूसरे होरे के वार से छठे वार का होरा तीसरे घण्टे तक रहता है। इस क्रम से २४ घण्टे में २४ होरा बीतने पर अगले वार के सूर्योदय-समय उसी (अगले) वार का होरा आ जाता है। जिस कार्य की सिद्धि के लिए ऊपर जो होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, किसी भी दिन उस होरा के १ घण्टे-मुहूर्त में वह कार्य करेंगे तो सफलता आपके हाथ रहेगी। प्रत्येक वार २४ घण्टों का होरा चक्र नीचे भी दिया जा रहा है। उदाहरण के लिए मान लीजिए, आज गुरुवार है और आज ही आपको कहीं प्रवास करना (जाना) है। ऊपर प्रवास के लिए शुक्र का होरा श्रेष्ठ लिख आए हैं, अतः मालूम करना है कि आज गुरुवार के दिन शुक्र का होरा किस-किस समय रहेगा। चक्र में गुरुवार के सामने खाने में देखा तो चौथे, ग्यारहवें घण्टे में शुक्र का होरा मिला।

वार	हो. १	हो. २	हो. ३	हो. ४	हो. ५	हो. ६	हो. ७	हो. ८	हो. ९	हो. १०	हो. ११	हो. १२	हो. १३	हो. १४	हो. १५	हो. १६	हो. १७	हो. १८	हो. १९	हो. २०	हो. २१	हो. २२	हो. २३	हो. २४
र.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.
चं	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.
मं.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.
बु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.
गु.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.
शु.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.
श.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.	र.	शु.	बु.	चं.	श.	गु.	मं.

बिना सारिणी के किसी वार को अभीष्ट होरा निकालने का नियमः— किसी भी वार का प्रथम होरा वारेश (उसी वार) से प्रारम्भ होता है। उस वार से विपरीत क्रम से वारों को एक-एक के अन्तर से गिनें। जैसे, बुधवार को प्रथम होरा बुध का, तत्पश्चात् विपरीत क्रम से मंगल को छोड़कर सोम (चन्द्र) का होरा होगा एवं रवि को छोड़कर शनि का होरा होगा। इसी क्रम से आगे शेष २१ होरा उस दिन व्यतीत होंगे।

किस होरा में कौन सा कार्य करें?

रवि की होरा— राज्याभिषेक, प्रशासनिक कार्य, नवीन पद-ग्रहण, राज-दर्शन, राज्यसेवा, औषधि का निर्माण, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, यज्ञ-यागादि, मन्त्रोपदेश, गाय-बैल एवं वाहन का क्रय उत्सव।

चन्द्र (सोम) की होरा— कृषि सम्बन्धी कार्य, नवीन वस्त्र अथवा मोती रत्न, आभूषण धारण, नवीन योजना, परिकल्पना, कला सीखना, बाग-बगीचा लगाना, वृक्षारोपण, चांदी की वस्तुओं का निर्माण।

मंगल की होरा— वाद-विवाद, मुकद्दमा, जासूसी कार्य, छल करना, असद् कार्य, ऋण देना, युद्ध-नीति, साहस कृत्य, खनन कार्य, स्वर्ण-ताम्रादि कार्य, शल्य-क्रिया (आपरेशन), व्यायाम।

बुध की होरा— साहित्यारम्भ, पठन-पाठन, शिक्षा-दीक्षा, लेखन, प्रकाशन, अध्ययन, शिल्पकला, मैत्री, क्रीड़ा, धान्य-संग्रह, चातुर्य, बही-खाता, हिसाब-किताब, लोक-सम्पर्क, पत्र व्यवहार।

गुरु की होरा— धार्मिक कार्य, विवाह, ग्रह-शान्ति, यज्ञ-हवन, दान-पुण्य, मांगलिक कार्य, देवार्चन, देव-प्रतिष्ठा, न्यायिक कार्य, नवीन वस्त्राभूषण धारण, विद्याभ्यास, वाहन क्रय-विक्रय, तीर्थाटन।

शुक्र की होरा— नृत्य-संगीत, स्त्री-प्रसंग, प्रेम-व्यवहार, प्रियजन-समागम, उत्सव, वस्त्र व अलंकार धारण, लक्ष्मी-पूजन, व्यापारिक कार्य, कृषि-कार्य, ऐश्वर्यवर्द्धक कार्य, फिल्म-निर्माण।

शनि की होरा— गृह-प्रवेश, नौकर-चाकर रखना, सेवा विषयक कार्य, मशीनरी कल-पुर्जों के कार्य, असत्य भाषण, छल-कपट, अर्क-निष्कासन, विसर्जन, धन-संग्रह, पद-ग्रहण।

नामाक्षरों से वर्ग बोधक चक्र (स्ववर्ग से पंचम वर्ग बैरी होता है।)

अ इ उ ए	क ख ग घ ङ	च छ ज झ ञ	ट ठ ड ढ ण	त थ द ध न	प फ ब भ म	य र ल व	श ष स ह
गरुड़	मार्जार	सिंह	श्वान	सर्प	मूषक	मृग	मेढ़ा

कर्म-योग

करा‍ग्रे वसते लक्ष्मीः कर मध्ये सरस्वती। कर पृष्ठे तु गोविन्दः प्रभाते कर दर्शनम्॥

हाथों के अगले भाग में लक्ष्मी, मध्ये में सरस्वती और पृष्ठ पर गोविन्द का निवास है अतः प्रातः काल में इन का दर्शन करना चाहिए। इस का भावार्थ है कर्म करके ही जीव पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष) पा सकता है।

शिववास ज्ञान

वर्तमान तिथि को दो से गुणा कर पांच जोड़ें। फिर सात का भाग देवें। शेष १ रहे तो कैलाश में श्रेष्ठ। २ से गौरी पार्श्व में श्रेष्ठ। ३ से वृषारूढ़ श्रेष्ठ। ४ से सभा में सामान्य। ५ से ज्ञान वेला में श्रेष्ठ। ६ से क्रीड़ा में नेष्ट, ० से श्मशान में मृत्यु।

सर्व कार्येषु सप्तशलाका चक्रम्

विवाहे पंचशलाका चक्रम्

CC-0. In Public Domain. Kulikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

शुभाशुभ भूमि विचार— जिस भूमि पर मकान बनाना है, उस भूमि में सूर्यास्त समय एक हाथ चौकोर और एक हाथ गहरा गड्ढा खोद कर जल भर दें। प्रातः यदि जल रहे तो शुभ, नहीं रहे तो मध्यम, गड्ढा फट जाय तो अशुभ भूमि समझें।

नींव खोदने में पत्थर आदि मिलने का फल— नींव खोदने में पहले पत्थर, ईंट, धन, ताँबा आदि मिलने से सुख लाभ। कपाल, हड्डी, कोयला, केशादि मिलने से कष्ट होता है।

मण्डलेश का निर्णय— गृह-स्वामी के हाथ से लम्बाई-चौड़ाई नाप कर दोनों के योग को दूना करके ८ से भाग देने पर शेष १ में इन्द्र, २ में विष्णु, ३ में यम, ४ में वायु, ५ में कुबेर, ६ में शिव, ७ में ब्रह्मा, ८ शेष में गणेश मण्डलेश होते हैं।

दूसरा प्रकार— लम्बाई-चौड़ाई के योग में ९ से भाग देने पर शेष १ में दाता, २ में भूपति, ३ में नपुंसक, ४ में चोर, ५ में विलक्षण, ६ में भोगी, ७ में धनाढ्य, ८ में दरिद्र एवं ९ में कुबेर मण्डलेश होता है।

चन्द्र-सूर्य-वेध-विचार— चन्द्रवेधी ग्रह होना चाहिए और सूर्यवेधी जलाशय होना चाहिए। हृदया वाटिका सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों शुभ मानी जाती हैं। पूर्व-पश्चिम लम्बा मकान सूर्यवेधी होता है और उत्तर-दक्षिण लम्बा मकान चन्द्रवेधी होता है। मकान चन्द्रवेधी शुभ होता है। चन्द्रवेधी मकान में धन और कुल की वृद्धि होती है। सूर्यवेधी मकान धन, कुल का नाशक होता है। बाग-बगीचा सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी दोनों प्रशस्त माना गया है। देवालय मन्दिर के लिए सूर्यवेधी और चन्द्रवेधी का विचार नहीं होता।

शिलान्यास— पहले दक्षिण-पूर्व के कोण में नींव के अन्दर पूजा करके शिला की स्थापना करनी चाहिए, बाकी ४ शिलाओं को स्तम्भ-शिला के चारों तरफ स्थापित करना चाहिए।

राशि-द्वार का निर्णय— ब्राह्मण वर्ण, (कर्क, वृश्चिक, मीन राशि वालों) को पूर्व दिशा का, क्षत्रिय वर्ण (मेष, सिंह, धनु राशि वालों) को उत्तर दिशा का, वैश्य वर्ण (वृष, कन्या, मकर, राशि वालों) को दक्षिण दिशा का और शूद्र वर्ण (मिथुन, तुला, कुम्भ राशि वालों) को उत्तर दिशा का द्वारा शुभ होता है।

गृह-द्वार का निर्णय— मकान के जिस भाग में द्वार करना हो, उस भाग के ९ भाग करके पाँच भाग दक्षिण और तीन भाग उत्तर में छोड़कर शेष भाग में द्वार बनाना चाहिए। वाम, दक्षिण का अर्थ मकान से निकलते समय का लेना चाहिए।

देव-मन्दिर के पास मकान बनाने का निषेध— ब्रह्मा के मंदिर के बगल में तथा विष्णु, सूर्य, शिव-मंदिर के सामने, जैन मंदिर के पीछे, देवी-मन्दिर के किसी भी भाग में गृह बनाना शुभ नहीं होता है।

दरवाजों (किंवाड़ों) का फल— कपाट (दरवाजा) स्वयं खुलता है तो उन्माद, स्वयं बन्द हो तो कुल नाश, प्रमाण से अधिक हो तो राज-भय, प्रमाण से कम चोर-भय, कष्ट हो। द्वार के ऊपर द्वार नहीं रखना। किवाड़ पतले अशुभ, विशेष मोटे होने से क्षुधाभय, टेढ़े होने से गृह-स्वामी को कष्ट, अन्दर की तरफ टेढ़े से स्वामी को मृत्युकारक, बाहर की तरफ टेढ़े होने से विदेश-वास, दूसरी दिशा में चोर-भय करता है।

लड़का होगा या लड़की

गर्भिणी के नाम के अक्षरों को तिगुना करें। उसमें घोड़ा के अक्षर, देश के अक्षर, वर्तमान तिथि जोड़ें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ८ का भाग दें। यदि विषम अंक बचे तो लड़का, यदि सम अंक बचे तो लड़की होगी। ऐसा जानना चाहिए।

जन्म-कुण्डली जीवित की है या मृत की

जन्म-लग्न के अंक, प्रश्न-लग्न के अंक और जन्म-लग्न से आठवें भाव के अंक, इन तीनों का जोड़ करें। जो संख्या आवे उसमें जन्म-लग्नेश को गुणा करें। गुणनफल में अष्टमेश का भाग दें यदि सम बचे तो मृत की और विषम अंक बचे तो जीवित की जाननी चाहिए।

लड़कियों की कुण्डलियों में आवश्यक विचार

योग नं. (१) अश्ले. नक्षत्र तिथि २, शनिवार। नं. (२) तिथि ७, शतभिषा नक्षत्र, मंगलवार। (३) तिथि १३, कृत्तिका नक्षत्र, रविवार — इन योगों में पैदा हुई कन्या **विषकन्या** कहलाती है।

ग्रह-गति से वैधव्य (विषकन्या) योग

१. जिस कन्या की जन्म-कुण्डली में ९ में मंगल, १ में शनि, ५ में सूर्य हों।

स्त्री के बांझ होने का योग

१ — जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें सूर्य-चन्द्रमा अपनी राशि के हों।

२ — जिस स्त्री की कुण्डली में १, ८, १०, ११ राशियों में चन्द्रमा शुक्र के साथ हो और पाप ग्रहों से देखा गया हो।

३ — जिस स्त्री के सातवें सूर्य व राहु हों और शनि की पूर्ण दृष्टि हो तो बालक पैदा होकर मर जाते हैं।

४ — जिस स्त्री के जन्म लग्न से आठवें चन्द्रमा और बुध अपनी राशि के हों तो स्त्री के ही एक प्रसव होता है।

अथ पक्षी शकुन-विचार

प्रश्न कर्त्ता अपने मन में विचार करके इस चिड़िया पर जो 'श्री' लिखी हैं उनमें से किसी एक पर उंगली धरें। उसका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

चोंच दुःख पंखे मरण, कंठे मिलन समाज।
उदर सुभोजन पूंछ धन, मस्तक पावै राज॥
शुभ लक्षण पांवन परै, घर में मङ्गलचार।
प्रश्नोत्तर के समय यह बुधजन करें विचार॥

पुरुष की मृत्यु पहले होगी या स्त्री की

पुरुष और स्त्री के नाम के अक्षर गिनकर दुगुने करें और दोनों के नाम में जो मात्रा हों उसको चौगुनी करें। फिर अक्षरों की दुगुनी-की हुई संख्या तथा मात्राओं की चौगुनी की हुई संख्या, दोनों का जोड़ करें। जोड़कर जो संख्या आवे उसमें ३ का भाग दें। यदि शेष ०, १ रहे तो पुरुष की, यदि शेष २ रहे तो स्त्री की मृत्यु पहले होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त रेखायें बोलती हैं

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे। इसलिये उन्होंने अभिवाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किये। यह विषय व्याकरण का रहा पर ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे। परिणामतः जिस प्रकार वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धारित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। पराशर, गर्ग, भृगु, वराह जैसे स्वनामधन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान दिया। धरती मानव के आवास के लिए उपयुक्त है, धरती की गंध, रूप, रंग से उसके सम्पर्क में आने पर हमारी देह एवं विचारधारा में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा या प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही सम्बन्ध हैं।

ज्योतिष की एक शाखा है सामुद्रिक। सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रस्तुत चिह्नों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना-यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम मात्र इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना गया शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है। यह शास्त्र व्यक्ति की रूपरेखा को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुखमण्डल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिये जो उपमायें दी गई हैं। वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं की ही पुष्टि करती हैं। कमलपत्र के समान आयत विशाल आँखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह का ही सूचक है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचक रहती है। बिहारी की रतनारी आंखें मुखमण्डल को सुन्दर ही नहीं बनाती बल्कि उसके कामी होने की सूचना भी देती हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखो में उभार कुण्डली में मंगल की सुदृढ़ स्थिति एवं नेत्र स्थान से सीधे सम्बन्ध के कारण होता है तथा इनमें रंग और चमक चन्द्रमा और शुक्र के कारण होती है। जहाँ इन ग्रहों का संयोजन किंवा युति हुई वहीं व्यक्ति आकृति से मोहक एवं व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये बाहरी चिन्ह व्यक्ति की ग्रह स्थिति के जन्म कालिक समीकरण को स्पष्ट करते हैं और उस स्थिति को जान लेने के पश्चात् भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर मात्र इतना है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजन और संघटनों का ही फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान किंवा सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार प्राचीन समय से रहा है। बाल्मीकि ने श्रीराम को अजान बाहु और अरविन्द दलायताक्ष अर्थात घुटनों तक लम्बे हाथ और कमल पत्र जैसी विशाल आंखों वाला कहा है और सामुद्रिक शास्त्र के इस कथन की पुष्टि की है। जिस व्यक्ति के हाथ घुटनों तक लम्बे हों वह सम्राट होता है। पैरों के तलवों की रेखायें, ललाट पर पड़ने वाली वलियों तथा नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन को पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन है। हाथों की रेखायें भी भविष्यत् ज्ञान का माध्यम रही हैं।

हाथ का रूप और आकार हमारे जन्म लग्न की भांति भविष्यत् कथन का आधार बनता है। अर्थात् व्यक्ति के हाथ का सामान्य आकार और रूप उसकी प्रकृति और चरित्र की सूचना देता है तो रेखायें और उन पर बने चिन्ह दशा-अन्तर्दशा में घटने वाली घटनाओं को दर्शाते हैं। पर्वत यह निश्चित करते हैं कि व्यक्ति में कौन से गुण या अवगुण विद्यमान हैं तथा वह कौन सी आजीविका अपनायेगा। इसके साथ ही व्यक्ति के वर्ग विशेष में रहने की सूचना भी इन्हीं के माध्यम से मिलती है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि पर्वतों के सूक्ष्म निरीक्षण-परीक्षण करने के पशचत् एक कुशल रेखाविद् यह निश्चित कर लेता है कि सम्बद्ध व्यक्ति का हाथ किस वर्ग का है। प्रत्येक हाथ का वर्ग किंवा श्रेणी उसके मूल्य को दर्शाती है। यह सब कुछ ऐसा ही है जैसे एक मूर्तिकार विभिन्न मुखाकृतियों के प्रतिरूप मूर्तियां बनाता है और उनको श्रेणीबद्ध कर उनका मूल्य निश्चित करता है।

हस्त सामुद्रिक में अंगुलियों का आकार प्रकार और इन पर अंकित चिन्ह भी विशेष महत्व रखते हैं जैसे अंगुलियां वर्गाकार और छोटी हों व्यक्ति के संकीर्ण विचार युक्त होने की सूचना देती हैं। लम्बी वर्गाकार अंगुलियां व्यक्ति की मानसिक सबलता और तार्किक होने का संकेत देती हैं। अंगूठा व्यक्ति के हाथ में महत्वपूर्ण अंग है क्योंकि इस की सहायता के बिना अंगुलियां कुछ भी नहीं कर सकतीं। व्यक्ति का समग्र व्यक्तित्व अंगूठे में छिपा है। अंगूठे का मस्तिष्क से गहरा सम्बन्ध है, इस तथ्य की पुष्टि वैज्ञानिक भी करते हैं।

मस्तिष्क मानव देह का केन्द्रिय अंग है जो सारी देह के क्रिया कलापों का संचालन करता है। मस्तिष्क को गतिशील रखने में अनेक ज्ञानतन्तु अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं। मस्तिष्क और हृदय में हो रहे रासायनिक अमलों का प्रतिरूप मानव की हथेली पर अंकित रेखायें हैं। हम जब किसी के मन और मस्तिष्क के भावों को पढ़ना चाहें तो हमें उसके करतल की रेखाओं को देखना-समझना होगा। अगली पंक्तियों में रेखा के आकार-प्रकार एवं इस पर बने चिन्हों के अनुसार व्यक्ति के जीवन में कैसी घटनायें होंगी इस पर प्रकाश डाला जा रहा है। आशा है पाठक वृन्द लाभान्वित होंगे।

आई०ए०एस० अधिकारी— यदि बुध की उंगली अर्थात् कनिष्ठिका लम्बी हो और उसका सिरा अनामिका के प्रथम पौर के आधे हिस्से को भी पार कर चुका हो और सूर्य रेखा उच्चकोटि की हो तो जातक आई०ए०एस० अधिकारी अथवा उच्च पदाधिकारी बनता है।

न्यायाधीश होने का योग— यदि गुरु पर्वत अधिक विकसित हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो, तर्जनी अंगुली अनामिका से बड़ी हो, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के प्रथम पौर के मध्य भाग तक पहुँच गया हो तो जातक न्यायाधीश होता है।

व्यवसायी होने का योग— यदि बुध पर्वत उभरा हुआ हो और निर्दोष हो, मस्तिष्क रेखा सीधी हो और बुध पर्वत तक जाती हो तो जातक सफल व्यापारी होता है।

पुलिस अधिकारी— मंगल पर्वत उभरा हुआ हो तथा उस पर उज्जवल तारे का चिन्ह हो और शरीर हृष्ट-पुष्ट हो तथा भाग्य रेखा निर्दोष हो तो जातक सफल पुलिस अधिकारी बनता है।

इंजीनियर होने का योग— यदि शनि पर्वत विकसित हो और निर्दोष भाग्य रेखा शनि पर्वत पर आती हो, बुध पर्वत पर तीन चार खड़ी रेखा हों और सभी उंगलियां लम्बाई लिए हुए हों तो जातक इंजीनियर होता है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

डॉक्टर होने का योग—यदि बुध पर्वत और मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित हों, कनिष्ठिका का सिरा अनामिका के ऊपरी पौर के मध्य तक जाता हो, बुध पर्वत पर तीन खड़ी रेखाएं हों तो जातक डॉक्टर होता है। अगर मंगल की बजाय बृहस्पति पर्वत विकसित हो तो जातक सफल वैद्य होता है।

शिक्षक होने का योग—बृहस्पति पर्वत उभरा हुआ हो और उस पर क्रास का चिन्ह हो तथा इसके साथ ही सूर्य रेखा, भाग्य रेखा, निर्दोष हो तथा तर्जनी उंगली अनामिका से बड़ी हो तो व्यक्ति शिक्षक होता है।

अभिनेता-अभिनेत्री योग—अनामिका उंगली विशेष लम्बी हो और ऊपर से नोकदार हो, सूर्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो, सभी उंगलियां कोमल और दलवी हों, भाग्य रेखा पूरी लम्बाई लिए हुए हो तो जातक सफल अभिनेता या अभिनेत्री होती है।

साहित्यकार—हथेली में चन्द्र पर्वत और गुरु पर्वत उभरे हुए हों, अनामिका तर्जनी से लम्बी हो, सूर्य रेखा तथा बुध पर्वत निर्दोष हों तो जातक सफल साहित्यकार बनता है। अगर चन्द्र पर्वत से धनुषाकार रेखा बुध पर्वत की ओर आती हो तो जातक श्रेष्ठ कवि बनता है।

विवाह में अड़चन—(१) यदि विवाह रेखा कई स्थानों पर कटती हो, (२) चन्द्र पर्वत पर आड़ी तिरछी रेखाएं बनी हों।

अनमेल विवाह का योग—(१) यदि विवाह रेखा सूर्य रेखा को काटती हो तो अनमेल विवाह होता है, (२) यदि शुक्र पर्वत अधिक विकसित हो तब भी।

सुखहीन विवाह का योग—(१) यदि भाग्य रेखा पर क्रास हो, (२) विवाह रेखा पर द्वीप का चिन्ह हो, (३) शुक्र पर्वत कम उभरा हुआ हो।

तलाक होने के योग—(१)विवाह रेखा के अन्त में रेखाओं का गुच्छा हो, (२) यदि मंगल क्षेत्र से चलकर कोई रेखा विवाह रेखा को काटे तो पति-पत्नी पृथक् रहते हैं, (३) यदि विवाह रेखा से निकल कर एक शाखा मस्तिष्क रेखा से मिलती हो, (४) शुक्र पर्वत से प्रभाव रेखा जीवन रेखा को काटती हुई विवाह रेखा से मिलती है अथवा विवाह रेखा को काटती है तो तलाक होता है, (५) अविवाहित रहने का योग:- विवाह रेखा ऊपर अर्थात् कनिष्ठका उंगली की ओर झुकी हो तो विवाह नहीं होता।

हस्त रेखा और रोग

- यदि चन्द्र पर्वत अत्यधिक उठा हुआ हो तो जातक को नजला जुकाम रहता है।
- यदि चन्द्र पर्वत जरूरत से ज्यादा उभरा हुआ हो और उस पर एक से अधिक क्रास अथवा बिन्दु हो तो जलोदर रोग होता है।
- यदि मस्तिष्क रेखा कई जगह से टूटी हुई हो तो जातक की स्मरण शक्ति कम होती है।
- यदि मस्तिष्क रेखा जरूरत से ज्यादा चौड़ी हो तथा उस पर काला धब्बा हो तो जातक को मस्तिष्क रोग होता है।
- यदि जीवन रेखा अंत में कई शाखाओं में बंट जाती हो तो वायु रोग होता है।
- यदि दोनों हाथों में मंगल रेखा पर शाखाएं निकली हों अथवा जीवन रेखा के प्रारम्भ में तारे का चिन्ह हो तो जातक को कैंसर रोग होने का भय होता है।
- यदि मंगल पर्वत पर तीन या तीन से अधिक बारीक-बारीक रेखाएं दिखाई दें तो जातक को गुप्तांगों के रोग रहते हैं।
- अगर स्वास्थ्य रेखा दूषित हो और हृदय रेखा जंजीरदार हो तो जातक को हृदय रोग होने का भय है।

अन्य अशुभ योग

बाल्यावस्था में माता-पिता की मृत्यु—भाग्य रेखा के शुरू में त्रिकोण या द्वीप हो तो माता-पिता में से किसी एक की मृत्यु होती है।

हत्यारा होने का योग—मंगल का पर्वत उठा हो, उस पर तारे का चिन्ह हो। शनि के नीचे-मस्तक रेखा पर नीले रंग की रेखा हो।

विदेश में मृत्यु—जीवन रेखा अंत में दो शाखाओं में बंट जाए और उसमें से एक शाखा चन्द्र स्थान पर जाए तो विदेश में मृत्यु होती है।

मुकद्दमेबाजी में जायदाद और धन नाश होना—दोनों हाथों में मंगल पर्वत का काला धब्बा, तिल या अन्य चिन्ह हो तो मुकद्दमेबाजी में जायदाद बर्बाद होती है।

शराबी होने का योग—चन्द्र पर्वत अधिक उठा हो तो प्राणी मद्य सेवी होता है।

अकाल मृत्यु का योग—(१) जीवन रेखा कटी हुई हो, हृदय रेखा शनि पर्वत को स्पर्श करती हो तो जातक की अकाल मृत्यु होने का भय होता है, (२) जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो अथवा टूटी हुई हो, मस्तिष्क रेखा तथा हृदय रेखा बुध पर्वत के नीचे आपस में मिली हो तो अकाल मृत्यु होती है।

हथेली पर तिल:-

- यदि लाल रंग का तिल मस्तिष्क रेखा के ऊपर हो तो जातक के लिए सिर पर चोट लगने का खतरा रहता है।
- शनि पर्वत पर काला तिल जातक के प्रणय सम्बन्धों में निराशा लाता है। पति-पत्नी के आपसी झगड़े के कारण उनमें से एक को आत्महत्या करनी पड़ती है।
- चन्द्र पर्वत पर काला तिल पानी में डूबने से मृत्यु का होना। जातक को प्रेमी अथवा प्रेमिका धोखा देती है।
- हृदय रेखा पर गहरे काले रंग का तिल हो तो जातक को हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है।
- जिस व्यक्ति के बुध पर्वत पर काला तिल हो, वह व्यक्ति ठग, कपटी तथा धूर्त होता है। ऐसे व्यक्ति से व्यापार में भागीदारी नहीं करनी चाहिए।
- बृहस्पति के पर्वत पर काला तिल हो तो विवाह में बाधा आती है।
- शुक्र पर्वत पर काला तिल जातक को अत्यधिक भोगी बनाता है जिससे वीर्य दूषित हो जाता है।
- जीवन रेखा पर काला तिल हो तो दिमाग पर चोट लगने का डर रहता है तथा शत्रु द्वारा आघात लगने का भी खतरा रहता है।
- भाग्य रेखा पर काला तिल भाग्योदय में बिलम्ब तथा संघर्ष का सूचक है।
- यदि सूर्य रेखा पर काला तिल हो तो जातक को असफलता का सामना करना पड़ता है तथा धन हानि होती है।
- यदि अंगूठे के मूल में काला तिल हो तो जातक के प्रथम सन्तान की मृत्यु हो अथवा गर्भ-क्षय हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मुखाकृति से भविष्य ज्ञान

वर्गाकार मुखाकृति—वर्गाकार मुखाकृति वाले व्यक्ति पृथ्वी तत्व प्रधान व्यक्ति होते हैं। ऐसे व्यक्तियों की मुखाकृति की तस्वीर लेकर अगर चारों ओर लाइन लगा कर चतुष्कोण खींचा जाए तो इनका चेहरा चतुष्कोण में पूरा फिट आ जाएगा। यह जातक स्वस्थ सुडौल एवं शक्तिसम्पन्न होते हैं। इनमें उद्योगशीलता, व्यावहारिकता तथा संचय करने की प्रवृत्ति एवं गुण पाए जाते हैं। यह लोग भौतिक साधनों से सम्पन्न सुखी समृद्ध होते हैं। यह लोग सिद्धान्तों पर चलने वाले होते हैं और दूसरे के प्रभाव में आकर आसानी से अपने सिद्धान्त नहीं बदलते। अगर इनके चेहरे में, पृथ्वी तत्व की अत्यधिक मात्रा हो तो यह व्यक्ति हठी, अदूरदर्शी, आलसी, विलासी होते हैं तथा अपनी अकर्मण्यता के कारण बाद में दुखी होते हैं।

वर्गाकार मुखाकृति वाली स्त्रियों का शरीर स्थूल होता है। इनकी चाल धीमी तथा मतवाली होती है। ऐसी स्त्रियां कर्मठ, व्यवहारकुशल तथा मन..जी होती हैं। अगर इनकी मुखाकृति में पृथ्वी तत्व अत्यधिक मात्रा में हो तो यह स्वभाव तथा चरित्र की दृष्टि से दुर्बल होती हैं।

वृत्ताकार मुखाकृति—वृत्ताकार मुखाकृति वाले जल तत्व प्रधान होते हैं। यदि इनके चेहरे का चित्र लेकर एक गोले में फिट किया जाए तो उनमें यह लगभग फिट हो जाता है। ऐसे जातक के गाल भरे हुए मांसल एवं स्निग्ध होते हैं। इनका शरीर स्थूल तथा उदर लम्बा होता है। यह लोग भावुक, कल्पनाशील, प्रसन्नचित्त, सहृदय, स्वप्नदर्शी मिलनसार एवं संवेदनशील होते हैं। यह लोग आराम पसंद जीवन बिताना पसन्द करते हैं तथा संघर्ष से दूर भागते हैं। जिनके चेहरे पर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो वह निराशावादी और अकर्मण्य होते हैं।

गोल चेहरे वाली औरतें शृंगारप्रिय हावभाव वाली, बुद्धिमती तथा पतिव्रता, उदार हृदय, स्नेही तथा चंचल होती हैं। अगर जल तत्व का अत्यधिक प्रभाव हो तो यह दुर्बल, निराश एवं रोगग्रस्त होती हैं।

सूच्याकार मुखाकृति—सूच्याकार मुखाकृति वाले व्यक्ति अग्नि तत्व प्रधान होते हैं। अगर इनके चेहरे की तस्वीर चतुष्कोण में फिट की जाए तो ललाट वाला ऊपर का भाग चौड़ा होगा और नीचे का ठोड़ी वाला भाग संकरा होगा अथवा यूं कहा जा सकता है कि इनके चेहरे की आकृति बाल्टी की आकृति जैसी होगी। कोनों में गोलाई नहीं होगी। ऊपर का भाग विस्तृत होने के कारण यह लोग बुद्धिमान, चिंतक, दूरदर्शी, साहसी, स्वस्थ एवं समृद्ध, स्पष्ट वक्ता, अभिमानी, नेतृत्वप्रिय एवं हठी होते हैं। यह लोग शक्ति में विश्वास करते हैं और अगर कहीं वाद-विवाद में उलझ जाएं तो पीछे नहीं हटते। यह लोग रचनात्मक एवं ध्वंसात्मक दोनों प्रकार के कार्य करते हैं। अगर चेहरे पर अग्नि तत्व का अधिक प्रभाव हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, हिंसात्मक एवं पाश्विक वृत्ति वाला होगा।

सूच्याकार मुखाकृति वाली स्त्रियां स्वाधीनताप्रिय, असहिष्णु एवं वाचाल होती हैं। गृहस्थ जीवन में यह औरतें सफल नहीं होतीं क्योंकि जरा-सी बात पर इनको क्रोध आ जाता है। हां, नौकरी, राजनीतिक एवं सामाजिक क्षेत्र में यह स्त्रियां उन्नति कर सकती हैं।

अंडाकार मुखाकृति—अंडाकार मुखाकृति वायु तत्व प्रधान मुखाकृति होती है। इनका ललाट विशाल एवं उन्नत तथा हनु और कपोल एक विशेष प्रकार मुड़ी उतार होते हैं। जातक सामान्य कद के, पुष्ट शरीर एवं उभरे स्निग्ध गालों वाले, आकर्षक और लुभावने होते हैं। यह व्यक्ति आशावादी, स्वच्छन्द, साहसी होते हैं तथा हर बात तर्क से करते हैं। यह हमेशा ज्ञान की जिज्ञासा, आनन्द की खोज, शान्ति की चाह रखते हुए प्रगति की राह पर चलते हैं। अगर चेहरे का नीचे का भाग पुष्ट हो तो यह व्यक्ति प्रेम और सौन्दर्य की इच्छा, काम पिपासा तथा व्यर्थ आचरण की कामना रखते हैं।

यदि इन व्यक्तियों का चेहरा उल्टे अण्डे की तरह हो अर्थात् इनका ललाट का भाग संकुचित हो और नीचे का भाग विस्तृत हो तो ऐसे व्यक्तियों की बुद्धि इतनी विकसित नहीं होती। यह लोग हास्य एवं व्यंगप्रिय, मनमौजी, उथले स्वभाव के होते हैं। चेहरे के नीचे के भाग में वायु तत्व की प्रधानता जातक को असत्यवादी, अस्वस्थ एवं चिड़चिड़ा बनाती है।

अंडाकार मुखाकृति वाली स्त्रियां सामान्य होती हैं परन्तु थोड़े प्रयत्न से अच्छा जीवन साथी सिद्ध हो सकती हैं।

उल्टे घड़े समान मुखाकृति—ऐसे जातक को देखकर ऐसा लगता है जैसे शरीर पर गर्दन सहित उल्टा घड़ा रखा हो। इनमें आकाश तत्व की प्रधानता होती है। इनके चेहरे पर अद्भुत कांति तथा आंखों में विशेष तेज होता है। यह लोग उदार हृदय, महत्वाकांक्षी, स्वाभिमानी एवं आदर्शयुक्त, एकान्तप्रिय, सौम्य, तेजस्वी, आध्यात्मवादी, आत्मबली एवं असाधारण प्रवृति के व्यक्ति होते हैं। यह अपने क्षेत्र में उच्च पद पर होते हैं तथा लोगों का तथा समाज का जिसमें भला हो, ऐसा कार्य करते हैं।

अध्ययन के लिए चेहरे को तीन भागों में बांटा जाता है:—

(१) ललाट क्षेत्र (२) नासिका क्षेत्र तथा (३) मुख क्षेत्र।

ललाट क्षेत्र का विकास व्यक्ति की मानसिक, बौद्धिक एवं सात्विक शक्ति का सूचक है। नासिका क्षेत्र मनुष्य की भौतिक, व्यावहारिक एवं राजसी प्रवृत्तियों का सूचक है। मुख क्षेत्र जातक की जैविक, वासनात्मक एवं तामसिक इच्छाओं का सूचक है।

जिस जातक का ललाट एवं नासिका क्षेत्र उन्नत, विकसित तथा विस्तृत होता है वह बुद्धिमान, ज्ञानवान, विचारशील, व्यवहारिक, चतुर तथा साहसी होता है तथा जीवन में सफल होता है। यश, धन, सुख तीनों को प्राप्त करके जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।

जिस जातक के ललाट एवं मुख क्षेत्र विकसित, उन्नत एवं विस्तृत हों वह गम्भीर, धीमा, चतुर, चालाक, धूर्त, कामी, दम्भी, विचारवान, समय और स्थिति को पहचानने वाला होता है। यह व्यक्ति अधिक स्वार्थी होता है और जरूरत पड़ने पर असत्य एवं अन्याय का भी सहारा लेता है।

जिस जातक के नासिका क्षेत्र एवं मुख क्षेत्र विस्तृत, उन्नत, विकसित हों, विशेषकर मुख क्षेत्र नासिका क्षेत्र से अधिक विकसित एवं उन्नत हो ऐसा व्यक्ति कामी, वासनायुक्त, असभ्य, मन्दबुद्धि, हिंसक होगा। यदि नासिका क्षेत्र, मुख क्षेत्र से अधिक विकसित हो तो जातक उत्तेजित, आक्रामक, द्रुतगामी, स्पष्टवक्ता, मनमौजी, संरक्षक एवं न्यायप्रिय होगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

स्त्रियों के तिलादि एवं हस्त रेखा का विचार

भारतीय सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानों ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध में अनेक तथ्यों का विश्लेषण किया है। इनमें कुछ मुख्य बातों का उल्लेख करते हैं —

यदि किसी स्त्री के भौंहों के मध्य भाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिए। यदि स्त्री के बायें कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान्न भोजन प्राप्त करने वाली होती है।

यदि किसी स्त्री के हृदय स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य सूचक समझना चाहिये। यदि दायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री तीन कन्या तथा दो पुत्रों को जन्म देती है। यदि बायें स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले बच्चे को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल का चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिये। यदि गुप्त स्थान में तिल हो तो वह दारिद्र्य कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बाईं ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का तिल हो तो, सदैव समधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो तो वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है। ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

मस्सा विचार

जिस स्त्री के कण्ठ, होंठ, दायें हाथ अथवा बायें कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्च पद प्राप्त करते हैं।

जिस स्त्री के बायें गाल पर लाल रंग का मस्सा हो, तो वह सदैव विभिन्न प्रकार के भोजन प्राप्त करती है। जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्य भाग में मस्सा हो तो वह स्वयं सर्विस के ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

नख विचार

बन्धूक पुष्प के समान लाल रंग के तथा ऊंचे उठे हुए नखों वाली स्त्री, ऐश्वर्य शालिनी होती है। टेढ़े, खुरदरे विवर्ण, श्वेत तथा चमकतेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है। जिन स्त्रियों के नखों पर स्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारिणी होती हैं। चिकने सुन्दर रंग के अरुणाभायुक्त, वैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा श्वेत बिन्दु युक्त चिह्न सुख देने वाले होते हैं।

चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पुष्टभाग पर रोम हों, ऐसी अंगुलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे लाल रंग की तथा विरल अंगुलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि अंगुलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

यदि अंगुलियां गोलाई लिए हुए हों, उनके पर्व बराबर हों वे आगे से पतली कोमल त्वचा युक्त तथा गांठ रहित हों तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

यदि अंगुलियां बहुत छोटी हों तथा दोनों हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच में छेद रहें तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है। अर्थात् वह धन का संचय करने वाली नहीं होती, खर्चीली होती है।

स्त्रियों के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है। जिस स्त्री के अंगूठे अथवा अंगुलियों में यव का चिह्न हो तथा उस यव (जौ) चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लंबा हो तो वह भाग्य हीन होती है।

स्त्रियों की हस्त रेखा विचार

यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखायें हों तो वह बहुत बातूनी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी होता है।

यदि किसी स्त्री के दायें हाथ में भाग्य रेखा के दाईं ओर अथवा बायें हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनों ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दायें हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं विदेश गमन आदि से लाभ प्राप्त होते रहते हैं।

यदि विवाह रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है। स्त्री के हाथ और पाँव की उंगलियां यदि टेढ़ी-बांकी हों तो वैधव्य अथवा हीनता का लक्षण समझना चाहिए। हृदय-रेखा श्रृंखलाकार होकर बीच में शनि क्षेत्र की ओर छुकी हुई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्रियों को पुरुषों की परवाह नहीं रहती।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

प्रश्न विचार

जिस भाव सम्बन्धी विषय का विचार करना हो उस भाव का स्वामी कार्येश कहलाता है, और लग्न का स्वामी लग्नेश कहलाता है। अगर प्रश्न लग्न में निम्नलिखित योग हों तो कार्यसिद्धि होती है—

१. लग्न का स्वामी कार्यभाव में हो और कार्येश लग्न में हो।
२. लग्न का स्वामी लग्न में हो और कार्यभाव का स्वामी कार्यभाव में हो।
३. यदि लग्न का स्वामी और कार्यभाव का स्वामी दोनों ही लग्न में हों।
४. लग्नेश और कार्येश दोनों कार्यभाव में हों।

इन चारों योगों में से कोई एक योग हो तथा लग्नेश और कार्येश इन दोनों पर चन्द्रमा की दृष्टि हो और चन्द्रमा को भी लग्नेश कार्येश देखे तो कार्य सिद्धि जाननी चाहिए। यदि चन्द्रमा मित्रक्षेत्री हो तो और भी अधिक शुभ जानना चाहिए।

यदि लग्नेश कार्येश के ऊपर चन्द्रमा की दृष्टि न हो तथा अन्य शुभ ग्रह की दृष्टि हो तो प्रश्न सम्बन्धी कार्य से भिन्न कोई नवीन शुभ प्रयोजन उत्पन्न हो।

लग्नेश लग्न को और कार्येश कार्य भाव को देखता है तो कार्यसिद्धि होगी। यह कार्यसिद्धि तब होगी जब चन्द्रमा कार्यभाव पर आएगा।

धन लाभ कब होगा

१. लग्न का स्वामी लेने वाला होता है और ग्यारहवें स्थान का स्वामी देने वाला होता है। जब लग्नेश और एकादशेश का योग होता है और चन्द्रमा लाभ भाव को देखता है तो लाभ होता है।
२. यदि लग्नेश छठे, आठवें, बारहवें घर में हो तो धन का नाश होता है।

गर्भ सम्बन्धी प्रश्न

१. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को न देखता हो और पाप ग्रह पंचम भाव में स्थित हो या पंचम भाव को देखता हो तो गर्भपात हो जाएगा।
२. यदि पंचम भाव का स्वामी पंचम भाव को देखता हो तो प्रसव होता है।
३. यदि प्रश्नकाल में जिस किसी चार स्थानों में दो-दो ग्रह हों तो एक साथ दो सन्तानों का प्रसव होता है।
४. प्रश्न लग्न से शुक्र जितने संख्यक स्थान में स्थित हो उतने महीने पर्यन्त गर्भ की स्थिति कहना और शुक्र यदि दसवें, ग्यारहवें, बारहवें भाव में हो तो पंचम भाव से लेकर शुक्र के स्थान तक गिनकर मास संख्या जानी जाती है।

यदि गर्भिणी स्त्री पिता के घर में हो तो पिता से धारित नाम और पति के घर में हो तो ससुराल का नाम ग्रहण करके जो अक्षर संख्या हो उसमें पति की नामाक्षर संख्या मिलाने फिर शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से लेकर प्रश्न पूछने के दिन तक जो तिथि हो यहां तक गिनकर जोड़ दें, योगांक में तीन का भाग दें, एक शेष बचे तो पुत्र, दो बचें तो कन्या, शून्य बचे तो गर्भ नहीं है या गर्भ गिर जाएगा अथवा उत्पन्न होने पर भी उस गर्भ की सन्तति का नाश होगा, ऐसा कहना चाहिए।

सन्तान सम्बन्धी प्रश्न

- पंचम भाव में बुध या शुक्र हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति सम्भव है।
- ग्यारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक को कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
- लग्नेश की पंचम भाव में स्थिति और पंचमेश तथा बृहस्पति का बलवान् होना भी सन्तति कारक योग बनाता है।
- शुभ ग्रह दृष्ट लग्नेश और पंचमेश का केन्द्रस्थ होना सन्तान योग बनाता है।
- यदि पाँचवें भाव में सूर्य, मंगल और राहु तीनों ही हों तो सन्तान देर से होगी।
- यदि पाँचवें भाव में केतु हो तो सन्तान की प्राप्ति में देर होगी।
- यदि प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव में पाप ग्रह और पाँचवे भाव में बृहस्पति हो तो सन्तानाभाव का योग है।
- यदि तीसरे और आठवें भाव में शनि हो तो सन्तान नहीं होगी।
- यदि दूसरे, पांचवें या दशम भाव में मंगल हो तो पुत्रहीन योग बनता है।
- यदि पांचवें भाव में शनि और राहु के साथ सूर्य हो तो सन्तान उत्पन्न होते ही नष्ट हो जाती है।

भूमि, मकान सम्बन्धी प्रश्न

- यदि चतुर्थ भाव में शनि द्वारा दृष्ट राहु स्थित हो तो बटवारे में भूमि मकान आदि की प्राप्ति होती है।
- यदि चतुर्थेश द्वितीय अथवा ग्यारहवें भाव में हो तो भूमि आदि का प्रचुर लाभ होता है।
- यदि चतुर्थ भाव शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक को घर, भूमि की प्राप्ति होती है।
- यदि बृहस्पति और शुक्र से दृष्ट चतुर्थेश त्रिकोण अथवा केन्द्र में हो तो जातक अपने परिश्रम से भूमि, मकान, खेत आदि प्राप्त करता है।
- यदि चतुर्थेश और दशमेश में राशि परिवर्तन योग हो तो जातक को घर, भूमि, खेती, बगीचा आदि की प्राप्ति शीघ्र होती है।

मुकदमें में जीत हार

१. यदि प्रश्न समय पाप ग्रह लग्न में बैठा है तो वादी जीते और यदि वही पाप ग्रह नीच राशि में, सूर्य के सानिध्य से अस्त या शत्रुग्रह के राशि में हो तो वादी नहीं जीतेगा अर्थात् उसकी हार होगी।
२. यदि सप्तम भाव में बली पापग्रह हो तो शत्रु की विजय हो।
३. यदि लग्न और सप्तम भाव में बराबर पापग्रह हों और वह बराबर बली हों तो मुकद्दमा अथवा लड़ाई देर तक चले और अन्त में दोनों घरों में जो ग्रह अधिक बली होगा उस भाव वाला जीतेगा— प्रश्न लग्न वाला पापग्रह अधिक बली होगा तो वादी की जीत होगी। अगर सप्तम भाव स्थित पाप ग्रह अधिक बली होगा तो प्रतिवादी की जीत होगी।

विवाह में, शत्रु को मारने में, युद्ध में, संकट (आवश्यक विवाद यात्रादि) में भी पापग्रह लग्न में हों तो विजय होती है और प्रश्न लग्न पर पापग्रह की दृष्टि हो तो पराजय होती है।

प्रवासी सम्बन्धी प्रश्न

अगर कोई प्रश्न करे कि अमुक पुरुष विदेश गया है, घर नहीं पहुँचा, बंधा हुआ है या मर गया है?

१. यदि प्रश्न लग्न में पापग्रह हो तो वह मारा नहीं गया है और बन्धन में भी नहीं है अर्थात कुशल से है, ऐसा कहना।
२. प्रश्न लग्न से सप्तम या अष्टम भाव में यदि पापग्रह, अथवा लग्न और सप्तम इन दोनों में पापग्रह हों तो मरण व बन्धन कहना।

यदि प्रश्नकाल में चर राशि अर्थात् मेष, कर्क, तुला और मकर इनमें से कोई राशि लग्न में हो तथा चर राशि का नवांश भी लग्न में हो और लग्न से चौथे भाव में चन्द्रमा हो तो विदेशी अपने घर पहुँच गया ऐसा कहना।

प्रवासी का आगमन

१. प्रश्नकाल में केन्द्र से द्वितीय स्थानों (दूसरे, पाँचवें, आठवें, ग्यारहवें) में ग्रह प्राप्त हो तो विदेश गए व्यक्ति का आगमन कहना। अगर दूसरे, पाँचवें, आठवें और ग्यारहवें भाव में ग्रह न हों तो गोचर में जब इन भावों में ग्रह आने की सम्भावना हो तो प्रवासी तब लौट कर आएगा ऐसा कहना।
२. सातवें केन्द्र को छोड़कर अन्य केन्द्र भाव (१, ४, १०) से द्वितीय भाव (२, ५, ११) में चन्द्रमा हो तो विशेष रूप से आगमन कहना।

रोगी के जीवन मरण का विचार

१. यदि प्रश्न लग्न से सप्तम, द्वादश और दूसरे भाव में पापग्रह हों और लग्न, छठे, आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो शीघ्र मृत्यु करने वाला योग होता है अथवा चन्द्रमा के दोनों तरफ यदि पापग्रह हों तो भी शीघ्र मृत्यु कारक योग होता है।
२. लग्न में सूर्य और सातवें भाव में चन्द्रमा हो तो भी मृत्यु योग होता है।

अगर जीवन-मरण प्रश्न का न होकर अन्य विषय सम्बन्धी हो तो मृत्यु योग नहीं कहना, खाली कठिनाईयां आएंगी ऐसा कहना।

बन्धन एवं दण्ड विषयक प्रश्न विचार

१. दूसरे-बारहवें अथवा पांचवें-नवें भाव में पाप ग्रह हो तो जातक को कारावास दण्ड भोगना पड़ेगा।
२. चौथे भाव में मंगल और दसवें भाव में शनि हो तो लम्बे कारावास या मृत्युदण्ड का सूचक है।
३. यदि नवम भाव में शुक्र, शनि और सूर्य तीनों एक साथ बैठें हों तो किसी घृणित अपराध में दण्ड भुगतना होगा।
४. यदि लग्नेश और षष्टेश राहु, केतु से युक्त या दृष्ट होकर केन्द्र अथवा त्रिकोण में बैठे हों तो कठोर कारावास का दण्ड मिलेगा।

अमुक वस्तु खरीदने में लाभ रहेगा

प्रश्नलग्न का स्वामी खरीदने वाला और ग्यारहवें भाव का स्वामी बेचने वाला होता है। यदि लग्न का स्वामी लग्न को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो उस वस्तु को खरीदने से प्रश्नकर्त्ता को लाभ होता है। लग्न का स्वामी उदित, स्वक्षेत्री, मित्रक्षेत्री, वर्गोत्तम आदि में

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्थित होकर लग्न को जितनी दृष्टि से देखता हो, उतना ही लाभ होगा। अर्थात् एक चरण दृष्टि से देखता हो तो सवाया लाभ, दो चरण दृष्टि से देखता हो तो ड्योढ़ा लाभ, ऐसा जानना।

आमुक वस्तु बेचने में लाभ रहेगा

प्रश्नकाल में प्रश्न लग्न से एकादश भाव बलवान हो तो खरीदी हुई वस्तु बेचने में लाभ होगा, अर्थात् एकादश भाव का स्वामी एकादश भाव में हो या एकादश भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता हो तो लाभ होगा, ऐसा कहना।

अमुक वस्तु सस्ती रहेगी या महंगी

१. ऐसे प्रश्न में जिस ग्रह से लग्न बलयुक्त होता है वह ग्रह जितने मास तक उस प्रश्न लग्न से अशुभदायक नहीं होता तब तक वह वस्तु सस्ती रहती है।

२. यदि लग्न में पापग्रह हो अथवा लग्न पर एवं लग्नेश पापग्रहों से युक्त एवं दृष्ट हो तो वस्तु महंगी होती है। परन्तु कब तक महंगी रहेगी? इतने दिन में वह प्रश्न लग्न गोचर में शुभत्व को प्राप्त हो तब तक महंगी उसके बाद सस्ती होगी जब लग्न शुभयुक्त और शुभदृष्ट होगा।

३. क्रय-विक्रय के प्रश्न लग्न बलवान् हों तो वस्तु सस्ती और लग्न निर्बल हो तो वस्तु महंगी होती है। लग्न शुभ ग्रह और स्वामी से देखा जाता हो तथा केन्द्र (१, ४, ७, १०) में शुभ ग्रह स्थित हो तो लग्न बलवान होती है। इसके विपरीत अर्थात् पाप ग्रह से दृष्ट, केन्द्र में पाप ग्रह हों तो निर्बल कहलाता है।

अमुक स्थान में गढ़ा धन है या नहीं

१. प्रश्न कुण्डली में चौथे भाव का स्वामी चौथे भाव को देखता हो तो धन है ऐसा कहना। यदि चतुर्थ स्थान पर पापग्रह की भी दृष्टि हो तो धन है परन्तु प्राप्ति नहीं होगी।

२. चौथे भाव में कोई भी ग्रह हो तो धन उत्तम पात्र में है ऐसा जानना। यदि चौथा यानि चतुर्थ भाव पर चतुर्थेश की दृष्टि न हो तो भी यदि चन्द्रमा चतुर्थ स्थान में हो तो धन है, ऐसा कहना।

नष्ट वस्तु प्रश्न

प्रश्न, तिथि, वार, नक्षत्र, लग्न तीनों एकत्र कर उनको पांच से भाग देने से शेष १ रहे तो वस्तु पृथ्वी में है। २ बचे तो जल में है मिलेगी नहीं। ३ बचे तो आकाश में है मिलेगी नहीं। ४ बचे तो राजा ले गया। ५ बचे तो वायुगत हुई शोक जानो।

मन्दी तेजी जानने का सुलभ प्रकार

तिथि, वार, नक्षत्र, योग, सूर्य संक्रांति, राशि और धान्य इनके ध्रुवांकों की संख्या को जोड़कर ७ से गुणा कर ३ का भाग देने से एक शेष बचे तो भाव उस पदार्थ का समान रहेगा। २ शेष रहे तो सस्ता और ३ अर्थात् ० शेष रहे तो महंगा रहेगा।

नक्षत्र	ध्रुवा	योग	ध्रुवा
अश्विनी	१७	विष्कुम्भ	१३
भरणी	५	प्रीति	१२
कृत्तिका	३२	आयुष्मान	४७
रोहिणी	१४	सौभाग्य	५९
मृगशिर	४	शोभन	३६
आर्द्रा	१३	अतिगंड	४७
पुनर्वसु	२८	सुकर्मा	१८
पुष्य	३६	धृति	४४
अश्लेषा	३६	शूल	१३
मघा	१५	गंड	२५
पूर्वाफाल्गुनी	३	वृद्धि	१७
उत्तराफाल्गुनी	३१	ध्रुव	२२
हस्त	१८	व्याघात	२५
चित्रा	२५	हर्षण	२५
स्वाति	१४	वज्र	१४
विशाखा	२४	सिद्धि	२२
अनुराधा	२९	व्यतीपात	१३
ज्येष्ठा	३७	वरीयान	३९
मूल	१८	परिधि	१५
पूर्वाषाढ़	७३	शिव	१३
उत्तराषाढ़	३०	सिद्धि	१९
श्रवण	२५	साध्य	१२
धनिष्ठा	२३	शुभ	२५
शतभिषा	२४	शुक्ल	२२
पूर्वाभाद्रपद	९	ब्रह्महू	१३
उत्तराभाद्रपद	४१	ऐन्द्र	२७
रेवती	२८	वैधृति	२६

वस्तु	ध्रुवा
धान्य	७७
कनक	१००
ज्वार	१३३
मूंग	४१
चणा	३५
झोना	७५
तोरी	७७
तेल	३९
घृत	९९
खाण्ड	९९
गुड़	४७
शक्कर	१०१
कपास	१२९
रुई	४४
कांस्य	३७
वस्त्र	१०९
स्वर्ण	९६
हल्दी	७३
चंदन	१८७
चांदी	८१
मिर्च	६८
पित्तल	९९
जौं	५०७
कस्तू.	१३४

वार	ध्रुवा
रविवार	२१
सोमवार	१५
मंगलवार	१२
बुधवार	१२
गुरुवार	१३
शुक्रवार	१४
शनिवार	००
राशि	**ध्रुवा**
मेष	३
वृष	२२
मिथुन	२२
कर्क	२५
सिंह	१९
कन्या	१७
तुला	२०
वृश्चिक	१३
धन	१६
मकर	१९
कुम्भ	२३
मीन	१४
तिथि	**ध्रुवा**
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९
१०	१०
११	११
१२	१२
१३	१३
१४	१४
१५	१५

मेष—सोना, दालें, कंबल, गेहूं, जौ, मसूर।
वृष—वस्त्र, पुष्प, सरसों, गेहूं, यव, चावल, महिप, बेल
मिथुन—रुई, कपास, कमलकंद, बाजरा, जुवार, मुनक्का
कर्क—केला, धान, जायफल, तमालपत्र, दालचीनी, चाय, चीनी
सिंह—शाली, षटरस, मृगछाल, गुड़, खांड
कन्या—ज्वार, बाजरा, कुलथी, मूंग, गेहूं, अलसी
तुला—उड़द, गेहूं, नारियल, सरसों, मटर, हरड़
वृश्चिक—गुड़, खांड, नागरपान, लोहा, शक्कर
धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र, वस्त्र, शस्त्र, कंदफल
मकर—कनीर, सकुट, मजीठ, जमींकन्द
कुंभ—रस, पोस्त, रत्न, रंगदार वस्तुएं
मीन—सीप, मोती, समुद्र झाग, हीरा, पंसारियों की दवाएं

षट् सप्तमगो हानि वृद्धशुक्रः करोति शेषेपु उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेपु हानिकराः इति। जिस वस्तु की तेजी या मंदा देखना हो उस वस्तु की चत्र में राशि कौन सी ऐसा प्रथम देखना। फिर उस राशि में कनसा ग्रह कहां है ऐसा देखना। जिस वस्तु की राशि से बृहस्पति ४।१०।२।११।७।९।५ इतनी राशि पर हो तो वस्तु को मंदा करता है और १।३।६।८।१२ इतनी पर गुरु हो तो तेजी करता है। ऐसा हो २।११।१०।५।८ पर बुध हो तो मंदा करता है और १।३।४।६।७।९।१२ इन स्थानों पर होवे तो तेजी करता है। शुक्र ६।७ पर सर्वदा तेजी करता है और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।१२ पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, केतु, सूर्य, क्षीण चन्द्रग्रह ३।६।१०।११ मंदा करते हैं और १।२।४।५।७।८।९ पर तेजी करता है। पूर्ण चन्द्रमा का फल गुरु सदृश देखना। ऐसा मंदा तेजी का फल जानना चाहिए।

नक्षत्रों के पदार्थ—चांदी आदि धातुओं के कारक मंगल, सूर्य हैं। पुनर्वसु, पुष्य, उ.फा., चित्रा, ज्ये., श्रवण, धनि., पू.भा. उ.भा. नक्षत्र हैं। रुई—पुनर्वसु, मूला, रोहि., उ.भा., तेल पदार्थ—आर्द्रा, पुष्य, स्वाति, कृत्तिका, शत., मघा। धान्य—(मक्की, गुवार), उ.भा. पू.षा. श्ले. रोहिणी, कृत्तिका, स्वा., भर। गुड़—मघा, ज्ये., उ.भा.। गुवार—पुष्य, पू.भा.। मटर—श्ले., उ.फा.। सिल्क—पुन., म.। बिनौला—मूल। खिल—उ.भा.। ऊपर के नक्षत्रों में शुभ ग्रह के गमन से नक्षत्र पदार्थों में मंदा का असर रहेगा और अशुभ ग्रहों के गमन से तेजी का असर पड़ेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली

श्री भैरव भविष्यज्ञान प्रश्नावली को सिद्ध यंत्र ३२(बत्तीसा) के आधार पर तैयार किया गया है। निम्नांकित किसी भी इच्छित प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने के लिए इसे प्रयोग में लाया जा सकता है। इस प्रश्नावली में मुख्य-मुख्य बत्तीस प्रश्न दिये गये हैं। कोई भी पाठक साधारण (धन अथवा ऋण) गणित द्वारा अपने प्रश्न का उत्तर पा सकता है। व्यर्थ में किंवा सत्यता की परख करने में प्रश्नावली का उत्तर सही नहीं आयेगा। तीन प्रश्न (एक बार में) से अधिक प्रश्नों के उत्तर भी संदेह पूर्ण होंगे, अतः उपर्युक्त बातों का ध्यान रखना आवश्यक ही नहीं परमावश्यक है।

प्रश्नावली में उत्तर जानने की विधि यह है कि दिये बत्तीसा यंत्र के किसी भी कोष्ठक में प्रच्छक (प्रश्न पूछने वाला) अपने दाहिने (दक्षिण) हाथ की मध्यमा अंगुली रखने से पूर्व "ॐ नमो भैरवाय" मन्त्र को तीन बार जप लें। आगे प्रश्न क्रम संख्या और जिस अंक पर अंगुली रखी है दोनों का योग कर लें तथा इस योग में से १ घटा दें, शेष जो संख्या बचे उसे संख्या वाले प्रश्न के सामने देवता का नाम देख लें। जिस देवता का नाम लिखा है उसके नीचे यन्त्र कोष्ठक संख्या के आगे उत्तर देख लें-

मान लो कोई प्रश्न पूछना चाहता है कि मेरा विवाह होगा या नहीं तो यह प्रश्न संख्या हुई १२ (बारह) और प्रश्न कर्ता ने यंत्र में १५ के अंक पर अंगुली रखी। अतः यन्त्र के कोष्ठक की संख्या है १५ (पन्द्रह) दोनों का योग आया २७ (सत्ताईस)। इसमें से १ (एक) घटाया तो शेष रहे २६ (छब्बीस) २६वीं संख्या का देवता है केतु, अतः केतु के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर आया अर्थात् विवाह उपाय से होगा।

जब प्रश्न संख्या और यंत्र संख्या कोष्ठक संख्या का योग एक घटाने से भी ३२ से अधिक आये तो इसमें से ३२ घटा कर तब उपर्युक्त विधि से उत्तर देखना चाहिये जैसे प्रच्छक का प्रश्न है मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी। प्रश्न संख्या है २९ यन्त्र के कोष्ठक (जिसमें अंगुली रखी है) की संख्या है १५ इनका योग किया तो आया ४४ इसमें १ ऋण किया शेष रहा ४३ वह बत्तीस की संख्या से अधिक है अतः इसमें से ३२ की संख्या घटाई शेष रहे ११ अब पूर्व विधि से ११ की संख्या का देवता देखा तो ज्ञात हुआ "इन्द्र" और देवता इन्द्र के नीचे १५वीं संख्या का उत्तर मिला "पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी" इसी प्रकार सभी प्रश्नों के उत्तर ज्ञात कर लें।

३२ बत्तीसा यंत्र

८	१५	२	७
६	३	१२	११
१४	९	८	१
४	५	१०	१३

प्र. सं.	प्रश्न	अधिपति देवता
१.	मुझे सन्तान सुख मिलेगा या नहीं?	श्री भैरव
२.	मेरी मुकद्दमे में हार होगी अथवा जीत?	शिव
३.	मेरा भाग्योदय कब होगा?	कृष्ण
४.	मुझे नौकरी मिलेगी या नहीं?	राम
५.	मुझे उन्नति के अवसर मिलेंगे या नहीं?	सीता
६.	खेती से मुझे लाभ मिलेगा या हानि?	राधा
७.	मैं अपना मकान बना सकूँगा या नहीं?	लक्ष्मी
८.	क्या मुझे परीक्षा में सफलता मिलेगी?	विष्णु
९.	मेरे लिए विद्या प्राप्ति के योग हैं अथवा नहीं?	नारायण
१०.	मैं इस जीवन में सफलता पा सकूंगा या नहीं?	दामोदर
११.	क्या मुझे भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव है?	इन्द्र
१२.	मेरा विवाह होगा अथवा नहीं?	गणेश
१३.	अमुक रोगी रोग मुक्त होगा या नहीं?	अग्नि
१४.	मेरे स्वप्न का फल कैसा?	वायु
१५.	क्या मेरा स्थानान्तरण हो जायेगा?	वरुण
१६.	मुझे व्यापार में लाभ मिलेगा अथवा हानि?	यम
१७.	क्या मेरी चिन्ता दूर हो जायेगी?	कुबेर
१८.	मित्र के साथ मित्रता कैसी रहेगी?	सूर्य
१९.	मुझे कर्ज मिलेगा या नहीं?	चन्द्र
२०.	मेरी खोई हुई वस्तु मिलेगी अथवा नहीं?	मंगल
२१.	प्रवासी (परदेश गया हुआ) कब लौटेगा?	बुध
२२.	क्या मुझे यात्रा से लाभ मिलेगा?	बृहस्पति
२३.	मेरे भाईयों से कैसे निभेगी?	शुक्र
२४.	क्या मैं कुंआ बनवा सकूंगा?	शनि
२५.	मेरे लिए यह वर्ष कैसा है?	राहु
२६.	मेरा आज का दिन कैसा बीतेगा?	केतु
२७.	अमुक स्त्री को पुत्रोत्पन्न होगा या पुत्री?	मित्र
२८.	क्या मेरी इच्छा पूर्ण होगी?	पृथ्वी
२९.	मुझे पत्नी कैसे स्वभाव की मिलेगी?	काल
३०.	क्या मेरा सम्बन्धी धोखा देगा?	शेष
३१.	प्रेमिका/प्रेमी का प्रेम शुद्ध है या नहीं?	यक्ष
३२.	मैं तीर्थ यात्रा करुंगा अथवा नहीं?	तक्षक

१. श्री भैरव

१. सन्तान सुख मिलेगा।
२. तीर्थ यात्रा में विघ्न पड़ेगा।
३. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
४. सम्बन्धी धोखा दे सकता है। होशियार।
५. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
६. इच्छा पूरी होने में अभी देर है।
७. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
८. यह दिन शुभ नहीं है।
९. वर्तमान वर्ष मध्यम रहेगा।
१०. कुआं बनना अभी सम्भव नहीं है।
११. भाईयों से प्रेम बना रहेगा।
१२. यात्रा में हानि होने की आशंका अधिक है।
१३. प्रवासी शीघ्र लौटेगा।
१४. खोई वस्तु शीघ्र मिल जायेगी।
१५. कर्ज मिलने में कठिनाई झेलनी पड़ेगी।

२. शिव

१. मुकद्दमे में जीत होगी
२. सन्तान सुख गृह देवता की पूजा से मिलेगा।
३. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूर्ण हो जायेगी।
४. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम नहीं करता/करती।
५. संबन्धी धोखा देगा, सावधान।
६. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
७. अभी इच्छा पूरी नहीं होगी।
८. कन्या सन्तान उत्पन्न होगी।
९. आज का दिन शुभ रहेगा।
१०. यह साल उत्तम नहीं है।
११. कुआं बनवाने की इच्छा पूर्ण होगी।
१२. भाईयों में अनबन रहेगी।
१३ यात्रा लाभकारी रहेगी।
१४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का इच्छुक नहीं है।
१५. नष्ट वस्तु (खोई) नहीं मिलेगी।

3. कृष्ण

१. आपका भाग्योदय शीघ्र होगा।
२. आप मुकद्दमे मे जीतें इसमें संदेह है।
३. सन्तान सुख मिलेगा किन्तु उपाय से।
४. तीर्थ यात्रा की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
६. संबंधी धोखा नहीं देगा।

७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।

११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

७. पत्नी उत्तम स्वभाव की मिलेगी।
८. निकट भविष्य में इच्छा पूर्ण नहीं होगी।
९. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१०. आज का दिन मानसिक परेशानी वाला रहेगा।
११. वर्ष अत्याधिक लाभप्रद रहेगा।
१२. कुंआं नहीं बनवा सकोगे।
१३. भाईयों से तकरार होने का भय है।
१४. यात्रा से लाभ मिलना कठिन है।
१५. चिन्ता न करें, प्रवासी कुछ दिनों में लौट आयेगा।

४. राम

१. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
२. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
३. आप मुकद्दमा हार जायेंगे।
४. सन्तान प्राप्ति की इच्छा पूरी हो जायेगी।
५. तीर्थ यात्रा होने में संदेह है।
६. प्रेमी/प्रेमिका प्रेम करता/करती है।
७. संबंधी धोखा दे सकता है सावधान रहें।
८. पत्नी के स्वभाव से मेल खा जायेगा।
९. इच्छा अवश्य पूरी होगी।
१०. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
११. यह दिन शुभ ही बीतेगा।
१२. यह वर्ष कष्टमय बीतेगा।
१३. कुआं बनवाने की इच्छा पूरी हो जायेगी।
१४. भाईयों से अनबन रहेगी।
१५. यात्रा करना लाभप्रद रहेगा।

५. सीता

१. उन्नति मिलने का समय आ गया है।
२. नौकरी मिलेगी किन्तु अत्याधिक प्रयत्न से।
३. भाग्योदय होने में अभी देरी है।
४. चिन्ता न करें मुकदमा जीत जाओगे।
५. सन्तान सुख के लिए पुत्रेष्टि यज्ञ करायें।
६. तीर्थ यात्रा पर अवश्य जाओगे।
७. प्रेमी/प्रेमिका का दिखावटी प्रेम है।
८. संबंधी गुप्त चाल चलेगा सावधानी से रहें।
९. पत्नी उत्तम स्वभाव वाली मिलेगी।
१०. इच्छा पूरी हो इसमें संदेह है।
११. कन्या सन्तान जन्म लेगी।
१२. आज का दिन विशेष शुभ नहीं है।
१३. यह वर्ष आप के लिए चुनौतियों से भरा होगा।
१४. [illegible]
१५. भाईयों से मेल मिलाप रहेगा।

६. राधा

१. खेती से लाभ मिलेगा।
२. उन्नति में अभी देरी है धैर्य रखें।
३. नौकरी नहीं मिलेगी।
४. भाग्योदय शीघ्र होगा।
५. मुकदमा जीत लो ऐसी सम्भावना कम ही है।
६. सन्तान सुख अभी देर में मिलेगा।
७. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
८. प्रेमी/प्रेमिका मात्र दिखावा करता/करती है।
९. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१०. पत्नी का स्वभाव अच्छा नहीं होगा।
११. इच्छा पूरी होने में सन्देह है।
१२. पुत्र सन्तान जन्म लेगी।
१३. यह दिन उत्तम प्रकार से व्यतीत होगा।
१४. यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा।
१५. कुंआ बन जायेगा।

७. लक्ष्मी

१. मकान की इच्छा पूरी हो जायेगी।
२. खेती से लाभ कम मिलेगा।
३. प्रमोशन हो जाये ऐसा सम्भव नहीं दिखता।
४. नौकरी अथक प्रयत्न करने पर मिलेगी।
५. निकट भविष्य में ही भाग्योदय होने वाला है।
६. मुकद्दमे में जीतना कठिन है।
७. सन्तान सुख मिल जायेगा।
८. तीर्थ यात्रा पर जाने में विघ्न-बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।
९. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध नहीं है।
१०. संबंधी धोखा देने से नहीं चूकेगा।
११. पत्नी चिड़चिड़े स्वभाव की मिलेगी।
१२. इच्छा पूरी हो जायेगी।
१३. कन्या रत्न उत्पन्न होने की सम्भावना प्रबल है।
१४. आज का दिन अच्छा नहीं है।
१५. यह वर्ष मध्यम फलप्रद रहेगा।

८. विष्णु

१. परीक्षा में सफलता मिलेगी।
२. मकान निकट भविष्य में नहीं बना पाओगे।
३. खेती मत करो लाभ की आशा कम है।
४. प्रमोशन शीघ्र ही मिलने वाला है।
५. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
६. भाग्योदय होगा किन्तु थोड़ा समय धैर्य रखें।
७. मुकद्दमे में जीत जाओगे।
८. संतान सुख के लिए संतान गोपाल का अनुष्ठान करें।
९. तीर्थ यात्रा सकुशल होगी।
१०. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम छल है।
११. संबंधी धोखा दे ऐसा नहीं दिख रहा।
१२. पत्नी का स्वभाव अच्छा होगा।
१३. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१४. पुत्र सन्तानन जन्म ले ऐसे योग हैं।
१५. यह दिन शुभ रहेगा।

९. नारायण

१. विद्या प्राप्त कर लोगे, विश्वास करो।
२. परीक्षा में पास हो जाओ इसमें संदेह है।
३. मकान नहीं बन सकेगा।
४. खेती करने से लाभ मिलेगा।
५. प्रमोशन अभी मिलना सम्भव नहीं है।
६. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
७. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
८. मुकद्दमा जीतने में संदेह है।
९. सन्तान सुख अभी देरी से मिलेगा धैर्य रखें।
१०. तीर्थ यात्रा पर जाने का अवसर नहीं मिलेगा।
११. प्रेम का चक्कर हानिकारक है। सावधान रहें।
१२. संबंधी धोखा अवश्य देगा सावधान।
१३. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं मिलेगी।
१४. इच्छा पूरी होने में संदेह है।
१५. कन्या सन्तान का जन्म होगा।

१०. दामोदर

१. जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।
२. अल्प विद्या प्राप्ति के योग हैं।
३. परीक्षा में असफलता हाथ लगेगी।
४. मकान बनाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
५. खेती से अल्प लाभ की आशा रखें।
६. प्रमोशन के योग बन रहे हैं।
७. नौकरी मिलने में अभी देरी है।
८. भाग्योदय निकट भविष्य में हो जायेगा।
९. मुकद्दमे में जीत निश्चित है।
१०. सन्तान सुख थोड़ा देरी से मिलेगा।
११. तीर्थ यात्रा पर जाने की इच्छा पूरी नहीं होगी।
१२. प्रेमी/प्रेमिका मन से प्रेम करता/करती है।
१३. संबंधी धोखा नहीं देगा।
१४. पत्नी मधुर स्वभाव की मिलेगी।
१५. इच्छा पूर्ण हो जावेगी।

११. इन्द्र

१. भूमिगत धन की प्राप्ति हो जायेगी।
२. जीवन में सफलता प्राप्त कर लो ऐसे योग हैं।
३. विद्या पूर्णतया प्राप्त कर लो इसमें संदेह है।
४. परीक्षा उत्तीर्ण कर लोगे।
५. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
६. खेती से लाभ नहीं होगा।
७. प्रमोशन हो इसमें संदेह है।
८. नौकरी अभी नहीं मिलेगी।
९. भाग्योदय शीघ्र हो जायेगा।
१०. मुकद्दमे में जीत जाने का अवसर क्षीण है।
११. सन्तान सुख मिलेगा। लेकिन उपाय से।
१२. तीर्थ यात्रा पर जाना सम्भव नहीं हो सकेगा।
१३. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम झूठा है, बच कर रहें।
१४. संबंधी धोखा देने की योजना बना रहा है।
१५. पत्नी अति नम्र और स्नेहशील होगी।

१२. गणेश

१. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
२. भूमिगत धन की प्राप्ति सम्भव नहीं है।
३. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
४. विद्या प्राप्त कर लोगे।
५. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के चांस नहीं हैं।
६. मकान अभी देर से बनेगा।
७. खेती से लाभ मिलेगा।
८. उन्नति (प्रमोशन) अभी नहीं होगी, देर है।
९. नौकरी मिल जायेगी।
१०. भाग्य का सितारा चमकने वाला है।
११. ऐसे आसार हैं कि मुकद्दमा हार जाओगे।
१२. संतान सुख मिल जायेगा।
१३. तीर्थ यात्रा को नहीं जा सकोगे।
१४. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम नहीं है।
१५. संबंधी गुप्त रूप से सहायता करेगा।

१३. अग्नि

१. बीमार अच्छा हो जायेगा।
२. विवाह होने के आसार नहीं हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

३. गड़ा धन मिलेगा, गृह देवता की पूजा करें।
४. जीवन में सफलता मिलेगी।
५. विद्या प्राप्त कर लोगे।
६. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
७. मकान शीघ्र ही बन जायेगा।
८. खेती से लाभ मिलेगा।
९. फिलहाल तरक्की मिलना कठिन है।
१०. नौकरी मिलने के आसार नहीं हैं।
११. भाग्योदय शीघ्र होगा।
१२. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१३. सन्तान सुख मिल जायेगा।
१४. तीर्थयात्रा करने की इच्छा पूर्ण होगी।
१५. प्रेमी/प्रेमिका का शुद्ध प्रेम है।

१४. वायु

१. स्वप्न का फल उत्तम फलप्रद है।
२. रोगी के रोगमुक्त होने में अभी देरी है।
३. विवाह संबंध के लिए उपाय करना।
४. भूमिगत धन मिलने की सम्भावना है।
५. जीवन में सफलता मिलने में संदेह है।
६. विद्या प्राप्त हो जायेगी शिवार्चन करें।
७. परीक्षा में उत्तीर्ण होना कठिन है।
८. मकान बनाने में कठिनाइयां आयेंगी।
९. खेती से लाभ होने की आशा है।
१०. प्रमोशन होने में अभी समय लगेगा।
११. नौकरी निकट भविष्य में नहीं मिलेगी।
१२. भाग्योदय शीघ्र ही होने वाला है।
१३. मुकद्दमे में जीत निश्चित मिलेगी।
१४. सन्तान सुख पाने के लिए सन्तान गोपाल का अनुष्ठान करें।
१५. तीर्थयात्रा नहीं हो सकेगी।

१५. वरुण

१. तबादला शीघ्र ही हो जायेगा।
२. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
३. बीमार के ठीक होने के आसार नहीं हैं।
४. विवाह हो जायेगा चिन्ता न करें।
५. गड़ा धन मिल जायेगा लेकिन उपाय से।
६. जीवन में अधिक सफलता मिले आशा कम है।
७. विद्या प्राप्ति में विघ्न आयेंगे।
८. परीक्षा में उत्तीर्ण होने के लिए शिवार्चन करें।
९. मकान बन जायेगा।
१०. खेती से विशेष लाभ की आशा रखना निर्मूल है।
११. उन्नति शीघ्र मिल जायेगी।
१२. नौकरी निकट भविष्य में मिल जायेगी।
१३. भाग्योदय अभी नहीं हो रहा देर लगेगी।
१४. मुकद्दमा जीतना कठिन है।
१५. संतान सुख भाग्य में नहीं है।

१६. यम

१. व्यापार में लाभ मिलेगा, परन्तु सावधानी आवश्यक है।
२. तबादले के योग बन रहे हैं।
३. स्वप्न का फल अच्छा है।
४. बीमार अच्छा हो जायेगा।
५. विवाह के लिए कुमार मन्त्र का सवा लाख जप करें।
६. गड़ा धन मिल जायेगा।
७. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
८. उच्चशिक्षा प्राप्ति के लिए गणपति मन्त्र जपें।
९. परीक्षा में पास हो जाओगे।
१०. मकान बनाने में देर लगेगी।
११. खेती से लाभ हो इसमें संदेह है।
१२. प्रमोशन कठिनाई से मिलेगा।
१३. नौकरी मिलने में संदेह है।
१४. भाग्योदय शीघ्र होने वाला है।
१५. मुकदमे में जीत निश्चित है।

१७. कुबेर

१. चिन्ता अभी देर से मिटेगी।
२. व्यापार में लाभ मिलेगा।
३. स्थानांतरण अभी नहीं होगा।
४. स्वप्न शुभ फलप्रद है।
५. बीमार के अच्छा होने की संभावना कम है।
६. विवाह होने की संभावना नहीं है।
७. गड़े धन प्राप्ति के लिए आसुरी सिद्धि करें।
८. जीवन में सफलता मिल जायेगी।
९. विद्या से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. उत्तीर्ण होने के लिए हनुमत् उपासना करें।
११. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१२. खेती से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तरक्की मिल जाये ऐसा योग नहीं है।
१४. नौकरी शीघ्र मिल जायेगी।
१५. भाग्योदय होने के लिए स्वर्णाकर्षण भैरव मन्त्र का जप करें।

१८. सूर्य

१. मित्र धोखा दे सकता है सावधान रहें।
२. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।
३. व्यापार से लाभ नहीं रहेगा।
४. तबादला हो जायेगा।
५. स्वप्न का फल उत्तम नहीं है।
६. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
७. विवाह शीघ्र हो जायेगा।
८. गड़ा धन भाग्य में नहीं है।
९. जीवन में सफलता प्राप्त करने की सम्भावना नहीं है।
१०. विद्या प्राप्ति नहीं हो सकेगी।
११. परीक्षा में पास होने में संदेह है, मन लगाकर पढ़ो।
१२. मकान शीघ्र बन जायेगा।
१३. खेती से लाभ मिलेगा।
१४. प्रमोशन के योग प्रयत्न साध्य हैं।
१५. नौकरी देर से मिलेगी।

१९. चन्द्र

१. कर्ज मिलने में विघ्न-बाधाएं आयेंगी।
२. मित्र कपट करेगा सावधानी अपेक्षित है।
३. चिन्ता मिट जाएगी, ईश्वराधना करें।
४. व्यापार से लाभ रहेगा।
५. तबादला होकर रुक जायेगा।
६. स्वप्न का फल विशेष अच्छा नहीं है।
७. रोगी स्वास्थ्य लाभ कर लेगा।
८. विवाह के लिए विस्वासु मन्त्र का अनुष्ठान करें।
९. गड़ा धन पितृ पूजन करने से मिलेगा।
१०. जीवन में सफलता नहीं मिलेगी।
११. विद्या प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ेगा।
१२. परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाओगे।
१३. मकान बन जाये इसमें सन्देह है।
१४. खेती से अधिक लाभ नहीं मिलेगा।
१५. उन्नति होने के योग क्षीण हैं।

२०. मंगल

१. खोई वस्तु मिल जायेगी प्रयत्न करें।
२. कर्जा मिल जायेगा।
३. मित्र के साथ निभ जाये ऐसा नहीं लगता।
४. चिन्ता शीघ्र दूर हो जायेगी।
५. व्यापार में हानि होने के योग हैं।
६. ट्रांसफर नहीं हो सकेगा।
७. स्वप्न का फल उत्तम है।
८. बीमार के अच्छे होने की सम्भावना नहीं है।
९. विवाह अभी देर से होगा।
१०. गड़ा धन मिलने में सन्देह है।
११. जीवन में सफलता कष्ट से मिलेगी।
१२. विद्या प्राप्त कर लोगे।
१३. पास होना कठिन है।
१४. मकान अभी नहीं बन सकेगा।
१५. खेती से लाभ रहेगा।

२१. बुध

१. प्रवासी लौट कर आ रहा है।
२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
३. कर्जा इस समय नहीं मिलेगा।
४. मित्र के साथ मित्रता बनी रहेगी।
५. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
६. व्यापार से लाभ मिलेगा।
७. तबादला हो जायेगा।
८. स्वप्न का फल मध्यम है।
९. बीमार अच्छा हो जायेगा।
१०. विवाह हो जायेगा।
११. गड़ा धन मिल जायेगा।
१२. जीवन में सफलता प्राप्त करना असम्भव है।
१३. विद्या प्राप्ति का योग नहीं है।
१४. उत्तीर्ण होने के लिए परिश्रम एवं हनुमत मन्त्र जपें।
१५. मकान नहीं बन सकेगा।

२२. बृहस्पति

१. यात्रा लाभदायक रहेगी।
२. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
३. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
४. कर्जा बिलम्ब से मिलेगा।
५. मित्र के साथ नहीं निभ सकेगी।
६. चिन्ता दूर हो जायेगी।
७. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
८. तबादला हो जायेगा आश्वस्त रहें।
९. स्वप्न का फल अशुभ है।
१०. बीमार अच्छा नहीं होगा।
११. गड़ा धन मिलना सम्भव नहीं हैं।
१२. विवाह होना सम्भव नहीं है।
१३. जीवन में श्रेष्ठ सफलता प्राप्त कर लोगे।
१४. विद्या प्राप्ति के योग नहीं हैं।
१५. परीक्षा में पास हो जाओगे चिन्ता न करो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

२३. शुक्र

१. भाईयों से अनबन रहेगी।
२. यात्रा से लाभ कम मिलेगा।
३. परदेशी (बाहर गया हुआ) शीघ्र लौट जायेगा।
४. खोई हुई वस्तु बहुत जल्दी मिल जायेगी।
५. कर्जा नहीं मिलेगा।
६. मित्र के साथ अच्छा मेल-मिलाप रहेगा।
७. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
८. व्यापार से लाभ मिलेगा।
९. तबादला के योग बन रहे हैं।
१०. स्वप्न का फल शुभ है।
११. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१२. विवाह के लिए उपाय करो।
१३. भूमिगत धन शीघ्र मिलेगा।
१४. जीवन में सफलता पाना कठिन है।
१५. विद्या प्राप्ति के लिए गायत्री उपासना करें।

२४. शनि

१. कुंआ बनवाने की इच्छा पूरी होगी।
२. भाईयों से बन जाएगी।
३. यात्रा लाभकारी रहेगी।
४. प्रवासी निकट भविष्य में लौटने का विचार नहीं कर रहा।
५. खोई वस्तु प्रयत्न करने पर मिल सकती है।
६. कर्ज मिल जाएगा।
७. मित्र से अनबन होने की सम्भावना है।
८. चिन्ता मिट जाएगी, श्री बटुक भैरवार्चन करें।
९. व्यापार में लाभ मिलने की आशा क्षीण है।
१०. तबादला प्रयत्न करने पर हो सकता है।
११. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।
१२. बीमार का स्वास्थ लाभ लेना असम्भव ही है।
१३. विवाह हो जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
१४. गड़ा धन नहीं मिलेगा।
१५. जीवन में अच्छी सफलता मिलेगी।

२५. राहु

१ यह वर्ष मध्यम रहेगा।
२. कुंआ बन जाएगा।
३. भाईयों से नहीं बनेगी।
४. यात्रा से लाभ मिलेगा।
५. परदेशी शीघ्र ही लौट आएगा।
६. नष्ट वस्तु मिल जाएगी।
७. [illegible]
८. मित्र धोखा देगा सावधान।
९. चिन्ता मिट जाएगी।
१०. व्यापार में लाभ होगा।
११. तबादला हो जाएगा।
१२. स्वप्न का फल शुभ है।
१३. बीमार के अच्छा होने में संदेह है।
१४. विवाह हो जाएगा लेकिन उपाय से।
१५. गड़ा धन इष्ट देव के पूजन से मिलेगा।

२६. केतु

१. यह दिन शुभ नहीं है।
२. यह वर्ष अच्छा रहेगा।
३. कुंआ नहीं बन सकेगा।
४. भाईयों के साथ प्रेम रहेगा।
५. यात्रा से कोई लाभ नहीं मिलेगा।
६. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा बीमार है।
७. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
८. कर्ज देरी से मिलेगा।
९. मित्र कपटी है अतः उसका त्याग करें।
१०. चिन्ता अभी नहीं मिटेगी।
११. व्यापार से लाभ की सम्भावना नहीं है।
१२. तबादला नहीं होगा।
१३. स्वप्न का फल शुभ नहीं है।
१४. रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।
१५. विवाह उपाय से होना सम्भव है।

२७. मित्र

१. पुत्र सन्तान का जन्म होगा।
२. यह दिन शुभ है।
३. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
४. कुंआ बन जाएगा व्यर्थ चिन्ता न करें।
५. भाईयों से बिगाड़ रहेगा।
६. यात्रा से लाभ मध्यम रहेगा।
७. प्रवासी आने के लिए चल चुका है।
८. खोई वस्तु नहीं मिलेगी।
९. कर्ज कठिनाई से मिलेगा।
१०. मित्र के साथ अच्छी पट जायेगी।
११. चिन्ता मिट जाएगी।
१२. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१३. तबादला हो जाएगा।
१४. स्वप्न का फल उत्तम है।
१५. रोगी के स्वस्थ होने में संदेह है।

२८. [illegible]

१. इच्छा पूरी होने में देरी है।
२. कन्या रत्न की प्राप्ति होगी।
३. यह दिन मध्यम रहेगा।
४. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
५. कुंआं बनने में बाधाएं हैं।
६. भाइयों से मिलाप रहेगा।
७. यात्रा में लाभ मिलेगा।
८. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा है।
९. खोई वस्तु मिलने में संदेह है।
१०. कर्ज नहीं मिलेगा।
११. मित्र के साथ बनने की संभावना नहीं है।
१२. चिन्ता बढ़ सकती है।
१३. व्यापार में लाभ मिलना कठिन है।
१४. तबादले की सम्भावना क्षीण है।
१५. स्वप्न का फल अच्छा नहीं है।

२९. काल

१. पत्नी सरल स्वभाव की मिलेगी।
२. इच्छा पूरी होगी।
३. पुत्रोत्पत्ति का हर्ष होगा।
४. यह दिन शुभ है।
५. यह वर्ष अधम रहेगा।
६. कुंआं बन जाएगा।
७. भाईयों से अनबन रहेगी।
८. यात्रा में लाभ प्राप्त करना असमभव है।
९. परदेशी निकट भविष्य में नहीं लौट रहा है।
१०. खोई वस्तु शीघ्र नहीं मिलेगी।
११. कर्ज देर से मिलेगा।
१२. मित्र के साथ नहीं बनेगी।
१३. चिन्ता शीघ्र दूर होगी।
१४. व्यापार से लाभ नहीं मिलेगा।
१५. तबादला हो जाएगा।

३०. शेष

१. सम्बन्धी धोखा नहीं देगा।
२. पत्नी उग्र स्वभाव की मिलेगी।
३. इच्छा पूरी होने में देरी है।
४. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
५. यह दिन मध्यम रहेगा।
६. यह वर्ष उत्तम रहेगा।
७. कुआं बनने में आकस्मिक बाधा आएगी।
८. भाईयों से बनना मुश्किल है।
९. यात्रा से लाभ नहीं मिलेगा।
१०. परदेशी शीघ्र लौट कर आने वाला है।
११. खोई वस्तु मिलना कठिन है।
१२. कर्ज अभी नहीं मिलेगा।
१३. मित्र के साथ मेल-जोल रहेगा।
१४. चिन्ता अभी दूर नहीं होगी।
१५. व्यापार से लाभ मिलेगा।

३१. यक्ष

१. प्रेमी-प्रेमिका का प्रेम गुप्त है।
२. सम्बन्धी से धोखे की आशा नहीं है।
३. पत्नी का स्वभाव सरल होगा।
४. इच्छा देरी से पूरी होगी।
५. पुत्रोत्पत्ति होगी।
६. दिन शुभ रहेगा।
७. यह वर्ष मध्यम शुभप्रद है।
८. कूआं निर्माण की इच्छा पूरी होगी।
९. भाइयों से साधारण मेल रहेगा।
१०. यात्रा से लाभ मिलेगा।
११. प्रवासी अभी नहीं लौट रहा।
१२. खोई वस्तु मिल जायेगी।
१३. कर्ज मिल जायेगा।
१४. मित्र के साथ नहीं निभेगी।
१५. चिन्ता शीघ्र मिट जायेगी।

३२. तक्षक

१. तीर्थ यात्रा अभी नहीं हो सकेगी।
२. प्रेमी/प्रेमिका का प्रेम शुद्ध है।
३. सम्बन्धी धोखा दे सकता है।
४. पत्नी अच्छे स्वभाव की नहीं होगी।
५. इच्छा पूरी होने में देरी है।
६. कन्या सन्तान का जन्म होगा।
७. दिन शुभ रहेगा।
८. यह वर्ष अरिष्टप्रद होगा।
९. कुंआ देर से बनेगा।
१०. भाईयों से मेल कम रहेगा।
११. यात्रा से लाभ नहीं होगा।
१२. प्रवासी नहीं लौटेगा।
१३. खोई वस्तु मिलना सम्भव नहीं है।
१४. कर्ज मिलने में सन्देह है।
१५. मित्र का साथ कम रहेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रमल प्रश्नावली

इस प्रश्नावली का यह तरीका है कि चंदन की लकड़ी का चौकोर पासा बना कर उस पर १, २, ३, ४ और खुदवा लें, फिर अपने कार्य का चिंतन करते हुए तीन बार पासा छोड़ें उसका जो नम्बर बने, उसी नम्बर पर फल देखें यदि किसी के पास पासा नहीं हो, तो अगले पृष्ठ के कोष्ठों में अनामिका अंगुली रखवा कर उसका फल देखें।

१११	१३१	२११	२३१	३११	३३१	४११	४३१
११२	१३२	२१२	२३२	३१२	३३२	४१२	४३२
११३	१३३	२१३	२३३	३१३	३३३	४१३	४३३
११४	१३४	२१४	२३४	३१४	३३४	४१४	४३४
१२१	१४१	२२१	२४१	३२१	३४१	४२१	४४१
१२२	१४२	२२२	२४२	३२२	३४२	४२२	४४२
१२३	१४३	२२३	२४३	३२३	३४३	४२३	४४३
१२४	१४४	२२४	२४४	३२४	३४४	४२४	४४४

१११ मंगल भवन अमंगल हारी, होगी मनोकामना तुम्हारी।
११२ इष्ट देव का ध्यान धरोगे, मन इच्छा सब काम करोगे।
११३ होत काम में हुआ अंधेरा, बैरी पहुंच गया है तेरा।
११४ झटपट करो देर नहीं लाओ, यह अवसर फेर नहिं पाओ।
१२१ जो तुम मन में नहीं उपाई, होगा काम ढील से भाई।
१२२ आगे विघन है बड़ा भारी, ईश्वर राखे लाज तुम्हारी।
१२३ संकट हटे सर्व सुख आया, दिन-दिन दुगुनी बढ़े माया।
१२४ वा शुभकाम करो दिन राती, पांच जिमादे गोती नाती।
१३१ कपट भेद है मन में उसके, करि विश्वास जाय तू जिसके।
१३२ होगी फतेह देर नहि लाओ, सूरज से तुम विनय सुनाओ।
१३३ दुविधा हटे सर्व सुख पाओ, गुरु गोविंद से ध्यान लगाओ।
१३४ बार-बार समझाऊं थाने, आज भला दीखे नहिं म्हाने।
१४१ विपत्तियां बीत गयीं सब पाछे, अब तो दिन आवेंगे आछे।
१४२ अब सुनता ना कोई तेरी, घर में पैठि रहा है बैरी।
१४३ धन परिवार सदा सुखदाई, कर्म विपाक देख ले जाई।
१४४ रात दिना की चिंता भारी, कुछ दिन में मिट जाये सारी।
२११ जर जमीन खोवे फिर होवे, चिंता करि तन को क्यों खोवे।
२१२ यह तो काम बड़ा दुखदाई, कर्म-विपाक देख लो भाई।
२१३ सत्य बात तुम सुन लो म्हारी, जिगरी लाग रही है थारी।
२१४ हिम्मत बड़ी भरोसा खोटा, कर्म विपाक देख दुख मोटा।
२२१ कितना ही गुणकर मनमाहीं, यश तुमको मिलने का नाहीं।
२२२ होगी फतह देर नहिं लाओ, रविवार को व्रत बनाओ।
२२३ संकट देखि डरे क्यों भाई, ईश्वर थारी करे सहाई।
२२४ धर्म हार धन कोई खाओ, मन अपने में क्यों घबराओ।
२३१ सोच समझ के करना भाई, बिन सोचे होता दुखदाई।
२३२ रस्ते में जो भूखा टोहवो, भोजन के देके सोवो।
२३३ भली बुरी उसके ही हाथ, निर्धन धनी बना वही नाथ।
२३४ यह अवसर करने का नाहीं, चुप बैठि रहो घर माहीं।
२४१ वह तुमसे लेने को डोले, इस कारण मुख मीठा बोले।
२४२ धीरज धरि रहो उर माही, गई वस्तु घर आवे नाहीं।
२४३ किया कबूल भूलि गया भाई, वो ही थारी करे सहाई।
२४४ उदय पाप हो गये अब सारे, कर्म विपाक देखिल्यो थारे।
३११ तीन बार ऊकी है तेरी, पीछे लाग रही है वैरी।
३१२ करि कुछ यतन देर नहीं करना, कर ले जाप नहीं दुख भरना।
३१३ जो तुम मन में नई उपाई, होगा काम ढील से भाई।
३१४ करि कुछ दान वचन सुन मेरा, संकट दूर हो गया तेरा।
३२१ यो तो बात नयी बनि आई, कर्म विपाक देख ले जाई।
३२२ करि विश्वास सत्य सुनि भाई, संकट मिटै होय सुखदाई।
३२३ करना हो सो जल्दी करिए, ध्यान गुरु का हृदय धरिए।
३२४ तुम तो सबकी करो भलाई, ईश्वर राखै लाज सदाई।
३३१ जस तुमको मिलना नहिं भाई, चाहे जितनी करो भलाई।
३३२ कर ले काम देर नहीं करना, ईश्वर ध्यान हिये में धरना।
३३३ देखि चंद्रमा काम करोगे, नित नये मंगल मोद भरोगे।
३३४ जिस नर को तुम करते आशा, उसका कौन करे विश्वासा।
३४१ तुम जानो अपना सा मन को, बुद्धि बदलि रही उस तन की।
३४२ अब तो समझि देखि मनमाहीं, घात ग्रह बिन होता नाहीं।
३४३ करिले यतन काम है तीका, अब तो फिकर मिटेगा जीका।
३४४ दुर्गा पठित कराना भाई, तो यह संकट वेग नशाई।
४११ चुपका बैठि रहो घर माहीं, यह अवसर करने का नाहीं।
४१२ करि विश्वास जाय जो कोई, उसकी हानि कबे नहीं होई।
४१३ यह सब दोष कर्म का भाई, कर्म विपाक देख लो जाई।
४१४ मन अपने को डाटो भाई, मन के डटे सर्व सुखदाई।
४२१ शुभ आचरण बने रहे भाई, तो सुख संपत्ति रहे सदाई।
४२२ अपना मन में तुम्हीं विचारो, भूलि गये सो बेगि संभारो।
४२३ ये है दोष कर्म के भाई, करि कुछ जाय लेय छुटवाई।
४२४ मनि अपने को राखि जचाया, अब तो दिन अच्छे अनआया।
४३१ करिले यतन देर नहीं करना, इष्ट देव का ले ले सरना।
४३२ वो तेरी सब भली करेगा, उस ही से सब काम सरेगा।
४३३ अब तो फिकर तजो तुम भाई, कुछ दिन गये होते सुखदाई।
४३४ धीरज धरो फिकर तजि डारो, है ईश्वर को बड़ो सहारो।
४४१ नीच निचाई नहीं तजेंगे, फिर भी सज्जन राम भजेंगे।
४४२ मन अपने करो विचारा, इस तन को देखो रखवारा।
४४३ रोस देव का तुम पर भारी, पहिले उसकी करो मनुहारी।
४४४ ठहर-ठहर कर जागे जोती, कुछ दिन गये सिद्ध सब होती।

अथ केरल प्रश्न चक्रम्

प्रातः काले वदेत्पुष्पं मध्यान्हे तु फलं वदेत्॥ सायंकाले वदेन्द्यः रात्रौतु देवतां वदेत्॥१॥

ध्वज	धूम्र	सिंह	श्वान	वृष	खग	गज	ध्वांग	ध्वजादि अष्टकवर्गाः
अइउएओ	कखगघङ	चछजझञ	टठडढण	तथदधन	पफबभम	यरलव	शषसह	उच्चारित प्रश्नाक्षराणि
अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	अस्ति	नास्ति	सत्यासत्य प्रश्न निर्णयः
धातु	धातु	मूल	जीव	जीव	जीव	मूल	जीव	धातुमूल जीव ज्ञान
कुशल	रोग	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी सुख दुःख
स्थिर	महाकष्ट	चंचल	चंचल	महाकष्ट	कष्ट	सुख	कष्ट	प्रवासी चर स्थिरादिज्ञानम्
समीप	समीप	दूरस्थ	पुनर्गत	मार्गस्थ	मार्गस्थ	दूरस्थ	पुनर्गत	प्रवासी रदनावधि ज्ञानम्
पत्र	अस्ति	फल	काष्ठ	धान्य	तृण	जीव	पुष्प	मुष्टि प्रश्ने द्रव्यं ज्ञानम्
गोधूम	तिल	पीतान्न	दाल	तण्डुल	चणक	गुड़	यव	साधमादि धान्य ज्ञानम्
कुसुम्भ	श्वेतांग	लोहित	पांडु	पीत	आकाश	श्याम	मिश्र	मुष्टि प्रश्ने वर्ण ज्ञानम्
सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	सुख	कष्ट	रोगी प्रश्ने सुखदि ज्ञानम्
४५ दिन	दो मास	४५ दिन	१ मास	१५ दिन	१ मास	७ दिन	२ मास	कष्ट दिनादि ज्ञानम्
लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	लाभ	हानि	नष्ट लाभालाभ ज्ञानम्
पूर्व	आग्नेय	दक्षिण	नैऋत्य	पश्चिम	वायव्य	उत्तर	ईशान	नष्ट वस्तुदिक ज्ञानम्
ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र	धनिक	नौकर	नीच	नाई	चोर जाति प्रश्न ज्ञानम्
उखल	अग्निगृहे	अरण्य	अन्तरिक्ष	भांडगते	काष्टगते	गृहे	भूमिस्थे	चोरित द्रव्य स्थानम्
भैरव	दुर्गा	सूर्य	हनुमन्त	रुद्रगण	सरस्वती	गणेश	पितर	देव पूजा उपासनादि
आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	आगम	न आगम	शत्रु गमागम प्रश्न ज्ञानम्
जय	हानि	जय	हाद्रि	जय	हानि	जय	हानि	जय गति प्रश्न ज्ञानम्
न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	न मोक्ष	मोक्षण	बन्दी मोक्ष मोक्ष ज्ञानम्
७ दिन	१ वर्ष	१५ दिन	६ मास	१ मास	६ मास	३ मास	१ वर्ष	बन्दी मोक्ष अवधि
स्थिर	न सिद्धि	कलह	दीर्घकाल	त्वरित	दीर्घकाल	स्थिर	न सिद्धि	कार्य सिद्धि भविष्यति नवा
शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	शुभ	कलह	विवाह प्रश्ने शुभाशुभम्
पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र	कन्या	पुत्र व कन्या प्राप्ति ज्ञानम्
१००वर्ष	१ वर्ष	१०० वर्ष	२० वर्ष	६० वर्ष	१२ वर्ष	४५ वर्ष	६ वर्ष	आयु प्रश्न आयु ज्ञानम्
लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	लाभ	न लाभ	धन-लाभ प्रश्न लाभ
विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	विलम्ब	उत्तम	वर्षा प्रश्न भविष्यति नवा
७ दिन	७ दिन	३० दिन	२० दिन	१० मास	२ मास	२ मास	२ मास	वर्षा वर्षण दिनादि

।मेषादि लग्नोपरि प्रश्न, फल चक्रम्।

लग्न	मनश्चिन्तित प्रश्नः	रोगिणां प्रश्नः
मेष	मानवीय जीव की चिन्ता	दैवीय कुल दोषः
वृषभ	चौपाये जीव पशु की चिन्ता	पितृ अतृप्ति दोषः
मिथुन	गर्भस्थ संतान की चिन्ता	शाकिनी-डाकिनी दोषः
कर्क	व्यवसाय की चिन्ता	भूत पिशाचादि दोषः
सिंह	नभचर, थलचर जीव	स्वकुलीय मात्र दोषः
कन्या	दाम्पत्य सुखोपयोग चिन्ता	स्वकुलीय देव दोषः
तुला	गुप्त दिये गये धन की चिन्ता	कुपित चण्डिका दोषः
वृश्चिक	दैहिक और भौतिक क्लेश	मृत्वत्सा नारि दोषः
धनु	धनोपार्जन की चिन्ता	यक्षिणी व पिशाचिनी दोषः
मकर	शत्रु पर जय-पराजय चिन्ता	स्थान व ग्राम देव दोषः
कुम्भ	स्वकीय जायदाद की चिन्ता	अपुत्री कुलटा स्त्री दोष
मीन	देव, भूतपिशाचादि की चिन्ता	आकाश गामी वायु प…

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

श्रीरामशलाका प्रश्नावली

मानसानुरागी महानुभावों को श्रीरामशलाका प्रश्नावली का विशेष परिचय देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। उसकी महत्ता एवं उपयोगिता से प्रायः सभी मानसप्रेमी परिचित होंगे। अतः नीचे उसका स्वरूपमात्र अंकित करके उससे प्रश्नोत्तर निकालने की विधि तथा उसके उत्तर-फलों का उल्लेख कर दिया जाता है। श्रीरामशलाका प्रश्नावली का स्वरूप इस प्रकार है—

सु	प्र	उ	बि	हो*	मु	ग	ब	सु	नु	बि	घ	धि	इ	द
र	रु	फ	सि	सि	रैं	बस	है	मं	ल	न	ल	य	न	अं
सुज	सो	ग	सु	कु	म	स	ग	त	न	ई	ल	धा	बे	नो
त्य	र	न	कु	जो	म	रि	र	र	अ	की	हो	सं	रा	य
पु	सु	थ	सी	जे	इ	ग	म	सं	क	रे	हो	स	स	नि
त	र	त	र	स	हु	ह	ब	ब	प	चि	स	य	सु	तु
म	का	ा	र	र	मा	मि	मी	म्हा	ा	जा	हू	हीं	ा	जू
ता	रा	रे	री	ह्र	का	फ	खा	जी	ई	र	रा	पू	द	ल
नि	को	मि	गो	न	म	ज	य	ने	मनि	क	ज	प	स	ल
हि	रा	मे	स	रि	न	द	न	ष	म	खि	जि	मनि	त	जं
सिं	मु	न	न	को	मि	ज	र	ग	धु	ख	सु	का	स	र
गु	क	म	अ	ध	नि	म	ल	ा	न	ब	ती	न	भि	भ
ना	पु	व	अ	ढा	र	ल	का	ए	तु	र	न	नु	व	थ
सि	ह	सु	म्ह	रा	र	स	हिं	र	त	न	ष	ा	ज	ा
र	सा	ा	ला	धी	ा	री	जा	हू	हीं	षा	जू	ई	रा	रे

इस रामशलाका प्रश्नावली के द्वारा जिस किसी को जब कभी अपने अभीष्ट प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने की इच्छा हो तो सर्वप्रथम उस व्यक्ति को भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान करना चाहिये। तदनन्तर श्रद्धा-विश्वासपूर्वक मन से अभीष्ट प्रश्न का चिन्तन करते हुए प्रश्नावली के मनचाहे कोष्ठक में अँगुली या कोई शलाका रख देना चाहिये और उस कोष्ठक में जो अक्षर हो उसे अलग किसी कोरे कागज या स्लेट पर लिख लेना चाहिये। प्रश्नावली के कोष्ठक पर भी ऐसा कोई निशान लगा देना चाहिये जिससे न तो प्रश्नावली गंदी हो और न प्रश्नोत्तर प्राप्त होने तक वह कोष्ठक भूल जाय। अब जिस कोष्ठक का अक्षर लिख लिया गया है उससे आगे बढ़ना चाहिये तथा उसके नवें कोष्ठक में जो अक्षर पड़े उसे भी लिख लेना चाहिए। इस प्रकार प्रति नवें अक्षर क्रम से लिखते जाना चाहिए और तब तक लिखते जाना चाहिए, जब तक उसी पहले कोष्ठक के अक्षर तक अँगुली अथवा शलाका न पहुँच जाय। पहले कोष्ठक का अक्षर जिस कोष्ठक के अक्षर से नवाँ पड़ेगा, वहाँ तक पहुँचते-पहुँचते एक चौपाई पूरी हो जायगी, जो प्रश्नकर्ता के अभीष्ट प्रश्न का उत्तर होगी। यहाँ इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी-किसी कोष्ठक में केवल 'आ' की मात्रा (ा) और किसी-किसी कोष्ठक में दो-दो अक्षर हैं। अतः गिनते समय न तो मात्रा वाले कोष्ठक को छोड़ देना चाहिए और न दो अक्षरों वाले कोष्ठक को दो बार गिनना चाहिए। जहाँ मात्रा का कोष्ठक आवे वहाँ पूर्वलिखित अक्षर के आगे मात्रा लिख लेना चाहिए और जहाँ दो अक्षरों वाला कोष्ठक आवे वहाँ दोनों अक्षर एक साथ लिख लेना चाहिए।

अब उदाहरण के तौर पर इस रामशलाका प्रश्नावली से किसी प्रश्न के उत्तर में एक चौपाई प्रदर्शित कर दी है। पाठक ध्यान से देखें। किसी ने भगवान् श्रीरामचन्द्रजी का ध्यान और अपने प्रश्न का चिन्तन करते हुए यदि प्रश्नावली के * इस चिह्न से संयुक्त 'हो' वाले कोष्ठक में अँगुली या शलाका रखी और वह ऊपर बताये क्रम के अनुसार अक्षरों को गिन-गिनकर लिखता गया तो उत्तरस्वरूप यह चौपाई बन जायेगी—

हो इ हैं सो इ जो रा म र चि रा खा। को क रि त र क बु ढ़ा व हिं सा खा॥

यह चौपाई बालकाण्डान्तर्गत शिव और पार्वती के संवाद में है। प्रश्नकर्ता को इस उत्तरस्वरूप चौपाई से यह आशय निकालना चाहिए कि कार्य होने में सन्देह है, अतः उसे भगवान् पर छोड़ देना श्रेयस्कर है। इस चौपाई के अतिरिक्त श्रीरामशलाका प्रश्नावली से आठ चौपाइयाँ और बनती हैं, उन सबका स्थान और फल सहित उल्लेख नीचे किया जाता है। कुल नौ चौपाइयाँ हैं—

- **सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजहि मन कामना तुम्हारी॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड में श्रीसीताजी के गौरीपूजन के प्रसंग में है। गौरीजी ने श्रीसीताजी को आशीर्वाद दिया है।
  फल—प्रश्नकर्त्ता का प्रश्न उत्तम है, कार्य सिद्ध होगा।
- **प्रबिसि नगर कीजे सब काजा। हृदय राखि कोसलपुर राजा॥**
  स्थान—यह चौपाई सुन्दरकाण्ड में हनुमान्‌जी के लङ्का में प्रवेश करने के समय की है।
  फल—भगवान् का स्मरण करके कार्यारम्भ करो, सफलता मिलेगी।
- **उघरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड के आरम्भ में श्री सीताजी के सत्संग-वर्णन के प्रसंग में है।
  फल—इस कार्य में भलाई नहीं है। कार्य की सफलता में सन्देह है।
- **बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥**
  स्थान—यह चौपाई भी बालकाण्ड के आरम्भ में ही सत्संग-वर्णन के प्रसंग की है।
  फल—खोटे मनुष्यों का संग छोड़ दो। कार्य पूर्ण होने में सन्देह है।
- **मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड में संत-समाज रूपी तीर्थ के वर्णन में है।
  फल—प्रश्न उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।
- **गरल सुधा रिपु करहिं मिताई। गोपद सिंधु अनल सितलाई॥**
  स्थान—यह चौपाई श्रीहनुमानजी के लङ्का में प्रवेश करने के समय की है।
  फल—प्रश्न बहुत श्रेष्ठ है, कार्य सफल होगा।
- **बरुन कुबेर सुरेस समीरा। रन सनमुख धरि काहुँ न धीरा॥**
  स्थान—यह चौपाई लंकाकाण्ड में रावण की मृत्यु के पश्चात मन्दोदरी के विलाप के प्रसंग में है।
  फल—कार्य पूर्ण होने में संदेह है।
- **सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे॥**
  स्थान—यह चौपाई बालकाण्ड में पुष्पवाटिका से पुष्प लाने पर विश्वामित्रजी का आशीर्वाद है।
  फल—प्रश्न बहुत उत्तम है। कार्य सिद्ध होगा।

इस प्रकार रामशलाका प्रश्नावली से कुल नौ चौपाइयाँ बनती हैं, जिनमें सभी प्रकार के प्रश्नों के उत्तराशय सन्निहित हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंक क्या है

भारत संसार को ब्रह्म की कृति मानता है। ब्रह्म क्या है? इस प्रश्न का समाधान करने के लिए वेद पुराण, उपनिषद् और दर्शन अस्तित्व में आए, फिर भी हम आज तक उस ब्रह्म की केवल आभासिक सत्ता या कार्य को देखकर कारणगत अनुमान तक ही पहुंच सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि ब्रह्म हमारे लिए अज्ञात रहा, अगर अज्ञात रहता तो इतना विवेचन किसका होता? किन्तु समस्या यह रही कि ब्रह्म को जान लेने के बाद ब्रह्मज्ञ व्यक्ति स्वयं ब्रह्मरूप हो गया और उसने ब्रह्म को वाणी या ज्ञान का विषय मानने से मना कर दिया, अर्थात् ब्रह्म शून्य है। शून्य अपने आप में अपरिभाषित है, किन्तु वह इस दृश्य जगत के विस्तार का कारण बनता है यह भी सुविदित सत्य है।

हमारी यह दार्शनिक सूक्ति विज्ञान की परिभाषा पर कसने से भी कोई व्यतिक्रम या असंगति नहीं होती। हमने ब्रह्म को अगोचर, निष्क्रिय और रूप-आकार रहित माना। यह बात आज भी हमारे आस-पास है और विज्ञान भी इसे स्वीकार किए बिना नहीं चलता। संसार में ऐसा कोई पदार्थ है ही नहीं जिसमें शून्य न हो, दैत्याकार पहिये में भी शून्य है, उसका केन्द्र भाग शून्य है, निष्क्रिय भी और रूपाकार रहित भी। इस बिन्दु के बिना गति संभव नहीं और यह बिन्दु (केन्द्रस्थ शून्य) न देखा जा सकता है, न जाना जा सकता है। हां परिणामों को देखकर इसकी कल्पना ही की जा सकती है और वही हम लोग करते आयें हैं, वही विज्ञान करता है, विज्ञान का अनन्त ब्रह्म के विराट किंवा अपरिमेय स्वरूप को बताता है तो चक्र के केन्द्र में स्थित बिन्दु इसको सूक्ष्मतम अवस्था में जानने की बात कहता है। इसी सत्य को हमने अणोरणीयान् और महतो महीयान् के रूप में कहा है।

ब्रह्म के यों तो अनन्त स्तर और व्यवहार (कारण रूप) हैं, किन्तु हम यहां उसके कुछेक आयामों को विचार का विषय बनाते हैं जिससे हमारे विषय का दार्शनिक अतएव मूल विश्लेषण समझ में आ सके। ब्रह्म का अर्थ होता है ब्रह्मणशील अर्थात फैलता अथवा विस्तार पाता हुआ। ब्रह्म का निष्क्रिय स्वरूप किंवा शून्य का गुणाकार रहित अस्तित्व जब प्रेरक रूप में अपनी ही शक्ति को विस्तृत करता है तो वह सत्, चित, अतएव आनन्दमय शून्य विविध प्रकार के पदार्थों का जन्मदाता बन जाता है। इस सत्य को हम इस प्रकार भी कह देते हैं — ब्रह्म स्वयं विस्तृत होने लगता है। विष्णु की नाभि से निकले कमलनाल पर विराजमान ब्रह्मा का प्रतीक चित्र क्या इस तथ्य का प्रतिपादन नहीं करता कि गति के केन्द्र में स्थित शून्य ही गति का कारक है, वह निष्क्रिय होकर भी गति को प्राणवान् बनाता है।

इस शून्य और गुणातीत के ज्ञानगम्य विस्तार को व्यक्त करने का माध्यम क्या हो? या क्या रहा होगा? यह दूसरा प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस विस्तार को ब्रह्म की ब्रह्मणशीलता को सम्प्रेषणीय बनाने के लिए शब्द के अलावा कोई माध्यम नहीं दिया जा सकता था। इसका भी कारण था — शून्य में जो विक्षोभ होता है या ब्रह्म की क्रियाशीलता की जो पद्धति है उसमें नाद प्रारम्भिक स्तर है और वही नाद आगे चलकर शब्दों के रूप में विकीर्ण-प्रसृत होता चला जाता है। यही एक कारण है कि संसार के समस्त दार्शनिकों ने शब्द को ब्रह्म का स्वरूप मानकर मुक्ति का प्रतीक कहा है।

यों शब्द या भाषा का इतना विस्तृत क्षेत्र है कि हम संख्या को भी शब्दों में लिख सकते हैं तथा अंकों के लिपिगत स्वरूप के अलावा उच्चारणगत रूप में वे शब्दों को ही अपना माध्यम बना सकते हैं, अर्थात् जिस प्रकार संकेतों में संख्या का अपना एक स्वतंत्र संसार है, उस तरह का स्वतंत्र व्यक्तित्व उनके बोलने में नहीं है। इस तथ्य को हम ऐसे कह सकते हैं कि जिस तरह लिखने में संख्याएं भाषा में एकरूप न होकर भिन्न दिखाई देती है उस तरह बोलने में इनके विशिष्ट संकेत नहीं हैं।

एक विचित्रता और है कि प्रकृति ने ब्रह्म के इस विस्तार को शब्दों के जितने स्तर और स्वरूप दिये हैं वे सारे अक्षर (शब्द) संसार के विभिन्न प्राणियों को दे दिए, जैसे कोयल को 'कू', कुत्ते को 'हू', या गाय को 'मां', किन्तु विश्व के किसी भी प्राणी को उसने संख्या नहीं दी। यह भी समानान्तर तथ्य है कि मनुष्येत्तर प्राणी संख्या के महत्त्व और क्षेत्र से अपरिचित है। क्या हम इसे मनुष्य जाति का सौभाग्य और अति विकसित स्तर नहीं मान सकते कि वह संख्या को जानती भी है, और समझती भी है?

प्रकृति ने प्राणिवर्ग को शब्दावली देते समय दूसरे प्राणियों को संख्या-बोध न देकर मनुष्य के साथ पक्षपात क्यों किया अथवा हम आज तक संख्या के लिए भाषागत शब्दों से भिन्न ध्वनियां क्यों नहीं खोज सके? इन दोनों प्रश्नों के उत्तर में भारतीयों के गहन चिन्तन के निष्कर्षों को और आस्तिक बनकर प्रकृति के लीला-विलास को समझना व मानना होगा।

वस्तुत: शब्दावली एक परिणाम है और संख्या एक क्रिया है। व्यवहार में हम एक या दो या पांच जैसी संख्याएं बोलते हैं। वे किसी घटक या आवृत्ति की पूर्णता की सूचक हैं, क्योंकि संख्या में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया जैसा भेद नहीं है। शब्दशास्त्रियों द्वारा विभाजित नाम और आख्यात जैसे भेद नहीं है, अत: हम संख्या-सूचक अंकों को ही क्रिया और परिणाम मानने के लिए विवश हैं।

हमारे घर में जल रहा बिजली का बल्व या चल रहा पंखा असल में परिणाम है, क्रिया तो तरंगों में हो रही है। यह दूसरी बात है कि क्रिया की परिणति भी क्रिया में ही हो रही है। संसार का अर्थ शरणशीलता है, एक ब्रह्म के सिवा सभी कुछ तो चंचल है, गतिशील है, क्रियावान् है। ऐसी स्थिति में यदि क्रिया का विपाक भी क्रिया ही हो तो क्या आश्चर्य है?

मनुष्य की प्रखर विचारशीलता ने उस पर गणित के रहस्य प्रकट किए या उसकी अतृप्त जिज्ञासा शब्द से भिन्न अंक के क्षेत्र और दिगन्तों तक जा पहुंची। यह उसका पुरुषार्थ और भाग्य दोनों का समन्वित फल है। मूलत: प्रकृति संख्या के स्तर पर कार्य करती है किन्तु संख्या भी एक, दो या चार-पाँच के रूप में नहीं बल्कि वृत्त और कोण के रूप में याने ज्यामितीय स्तर पर वृत्त बिन्दु का प्रतीक है जो संख्या में शून्य का बोध कराता है और कोण संख्याओं का। हम जानते हैं कि बिन्दु का विस्तार त्रिकोण में होता है, बिन्दु या वृत्त या प्रतीक के रूप में शून्य का अपने आपमें कोई अर्थ नहीं हुआ करता। वह संख्याओं के साथ जुड़कर ही अपनी शक्ति एवं व्यक्तित्व को प्रकट कर पाता है, इसलिए शून्य संख्या ही नहीं बिन्दु के रूप में ध्वनि का भी मूल रूप है। माना शून्य का स्वयं में कोई अर्थ या महत्व नहीं, पर उसमें संख्याओं को सृजन करने की अद्भुत क्षमता है, इस तथ्य को अस्वीकारा नहीं जा सकता।

ऊपर हम कह आए हैं कि जिस तरह बल्ब और पंखे विद्युत की क्रिया के परिणाम हैं, उसी तरह भाषा प्रकृति के परिणामों को सहेजती है, उसकी क्रिया के कार्यों को अभिव्यक्ति देती है, प्रकृति की क्रियामयता को वह अभिव्यंजना नहीं दिया करती। यह बात प्रथम दृष्टि में हमें विरोधाभास कराती है किन्तु थोड़ा गहराई से चिन्तन करने पर हम इससे सहमत हो सकते हैं।

आशय यह कि प्रकृति ज्यामितिय आकृतियों में काम करती है यानी प्रकृति का क्रियापरक रूप कोण और वृत्तमय होता है। ज्यामितिय संख्या से भिन्न नहीं है भले ही हम ज्यामितिय को सम्पूर्ण रूप से अंकगणितीय रूप न दे सकें पर ज्यामितिय को अपनी स्पष्ट अभिव्यंजना के लिए अंक का सहारा लेना ही पड़ता है। त्रिकोण में त्रि के रूप में जो संकेत है वह संख्या ही है।

अंक क्या है?

अंक का शाब्दिक अर्थ है-चिह्न। अमरकोशकार द्वारा 'कलंकांकौ लाञ्छानं च चिह्नं लक्ष्म च लक्ष्मणम्' अंक, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्म, लक्ष्मण, कलंक ये एक दूसरे के पर्याय हैं। यह भिन्न बात है कि परमार्थत: एवं व्यवहार में हम इन सारे शब्दों को अलग-अलग परिस्थितियों में प्रयोग करते हैं। अंकों के लिए दूसरा शब्द संख्या है

जिसका व्याकरण की व्युत्पत्ति से सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक् आख्यान। ये दोनों शब्द गणित या गणना से स्पष्ट होते हैं अन्यथा

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जिसका व्याकरण की व्युत्पत्ति से सिद्ध अर्थ होता है — [illegible] आख्यान। ये दोनों शब्द गणित या गणना से स्पष्ट होते हैं अन्यथा अंक शब्द को तो हम संख्या के पर्यायवाचक के बिना भी प्रयोग में लाते हैं। गणित की आधारभूमि देने से ये शब्द अपना वास्तविक परिप्रेक्ष्य प्रकट कर देते हैं, क्योंकि गणना एक समग्र क्रिया की, आवृत्ति के सम्पूर्ण क्षेत्र की, किंवा एक पूरे घटक की होती है। गणना शब्द ही इस अवस्था को सूचित करता है।

संख्या के रूप में ये एक, दो, दस, हजार जैसे अंक वास्तव में संकेत है और यह संकेतात्मकता ही इनकी शक्ति है। भाषा एवं शब्द प्रतीक बोध पर चलते हैं और अंक संकेत विधि से कार्य करते हैं। शब्दों में कोई भी शब्द ऐसा नहीं जो संख्या के संकेत जितने बड़े क्षेत्र को व्यक्त कर सके। 'राम' जैसे संज्ञा शब्द, 'वह' जैसे सर्वनाम 'अथवा' जैसे अव्यय और 'जाता' है, जैसे क्रिया पद अपनी विशेष सूचकता के कारण हमारे व्यवहार और सम्प्रेषण को पूर्ण बनाते हैं, फिर भी संकेतों की विश्वजनीनता ज्यामितीय सत्य है। प्रेयसी से रमण करने की इच्छा करने से प्रेरित प्रेमी का संकेत सारे संसार में एक है तो क्रोधाविष्ट का आक्रामक स्वरूप भी सार्वजनीन संकेत है। इस दृष्टि से संकेत का क्षेत्र सीमित रहकर भी अपनी व्यापकता की दृष्टि से अधिक विस्तृत और समर्थ रहेगा।

यों तो भाषा भी एक अभिव्यक्ति के रूप में निर्दोष है। किन्तु तदपि वह अपनी प्रतीकात्मकता के कारण गाली बन जाती है या किसी को रुष्ट करने का कारण बन जाती है। इसी का दूसरा पक्ष यह भी है कि भाषा की शब्दावली से कोई व्यक्ति प्रसन्न भी हो सकता है और अपने को मोहग्रस्त भी कर सकता है, जबकि संख्या अपनी संकेत शक्ति के कारण तटस्थ रहा करती है। जब तक संख्या हमारे प्रसंग को ग्रहण नहीं करती तब तक वह नि:संग रहती है। सड़क पर एक छपा हुआ पन्ना पड़ा है, उसके एक तरफ संयोजित अतएव प्रसंगबद्ध कोई वक्तव्य छपा हुआ है और दूसरी तरफ कोई संख्याओं का जाल मुद्रित है। इस पृष्ठ के दो भागों भाषा एवं संख्यामय भागों को पढ़कर हम यह स्वीकार करेंगे कि एक पृष्ठ के प्रसंग से हम अनजान होकर भी जुड़ सकते हैं, यानी वह प्रतीक बोध हम तक सरलता से आ जाया करता है, जबकि संख्याए हमारे तक नहीं आतीं, उनके प्रसंग से हम सहसा परिचित नहीं हुआ करते। यह विचित्रता तब और बढ़ जाती है जब भाषा की रचना यानी एक वाक्य का संयोजन निरर्थक हो सकता है या एक शब्द भी केवल अक्षरों का संयोजन मात्र हो सकता है। जैसे आकाश के लिए हाथियों की खुर मात्र उपयोगिता नहीं है, ऐसे वाक्य अथवा 'तुखो' जैसे शब्द निरर्थक हो सकते हैं पर संख्या का कोई भी संयोजन निरर्थक नहीं हुआ करता। उसकी क्रमिकता और नि:संगता अपने में सार्थक है।

[illegible] समाने हुआ करते हैं। उच्च गणित के विद्यार्थी जानते हैं कि गणित की अनन्तगामिता ही उसका रहस्य है और शक्ति भी है।

परिवार नियोजन की आवश्यकता आज भी हमारे लिए राष्ट्रीय कर्त्तव्य के रूप में प्रस्तुत है, क्यों? क्योंकि हम गणित के रहस्य एवं शक्ति से परिचित हैं, अन्यथा समुद्र में रहने वाली मछलियाँ, जंगल में उगने वाली वनस्पति, शहरों में फैलने वाली कुत्तों की वंशावली, ये सब अपने अनर्गल विस्तार से भय नहीं करते, वे पूर्णतया प्रकृति के खिलौने हैं, दास हैं उनके क्रिया-व्यवहार में कहीं भी, किंचित् भी स्वामित्व का भाव नहीं है। इसके विपरीत मनुष्य अपनी सतत साधना, विकसित चेतना और उर्वर कल्पना-शक्ति के कारण अपवाद के रूप में ही दासवत् व्यवहार किया करता है। मनुष्य का यह ज्ञान-विज्ञान कभी-कभी उसे अस्वाभाविक भी बना दिया करता है दो, ढाई, तीन, चार फुट के बच्चों का औसत लेकर नदी के जल का औसत निकालकर नदी पार करने वाले अपने बच्चों के डूब जाने पर अपने सवाल को जाँचने या उसमें कोई गलती न रहने पर बच्चों के डूबने पर आश्चर्य करने लगें तो यह उनका व्यावहारिक दोष है — अंक और उनकी पद्धति अपने आप में निरपेक्ष है, उसे किसी भी तरह का दोष नहीं दिया जा सकता, अथवा भारत में पनप रहे प्रजातंत्र में बीस या तीस प्रतिशत भी बहुमत हो जाय तो इसमें गणित को छलिया कैसे कहा जा सकता है, या आज की जनसंख्या और उसकी वृद्धि की गति को (-) जिसमें किसी भी प्रकार का संदेह या दोष नहीं है — गणितीय आधार देने पर इस धरती पर किसी समय मनुष्य के सिवा कोई नहीं मिलेगा-इस तरह की कल्पना को गणित का ठोस आधार देने पर इसके भविष्यत् की भयावहता से स्तब्ध होना सहज है। किन्तु यह सब अंकों का तटस्थ व्यापार है, वे किसी को प्रसन्न या विषण्ण करने जैसा रूप धारण नहीं करते। यदि ऐसा ही होता तो एक व्यक्ति चक्रवृद्धि ब्याज का हिसाब करके एक दो पीढ़ियों में (एक लाख रुपये के मूलधन से) सारे देश की मुद्रा का स्वामित्व प्राप्त कर लेने के हर्ष से पागल भी हो सकता है।

आशय यह है कि भाषा के शब्दों या वर्णों का अपना क्षेत्र व प्रभाव अवश्य रहता है और वे भी एक सीमा तक अपने आपमें निरपेक्ष है, किन्तु उन शब्दों में या शब्द-समूहों में एक स्वाभाविक लय रहा करती है और वह लय ही एक सम्पूर्ण आर्केस्ट्रा के रूप में हमें प्रभावित किया करती है, जबकि संख्या के संकेतों में लय नहीं होती, वेलय की आवृत्ति को गिनते हैं। यही इनका मौलिक स्वरूप और परिचय होता है।

इस दृष्टि से संख्या का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। वह किसी भी वाचक या संकेतक बनकर ही अपनी अर्थवत्ता प्रकट करती है अर्थात् [illegible] है। इसके बावजूद भी यह निश्चित है कि संख्या प्रकृति की कार्य-पद्धति की सूचक होकर भी प्रकृति के व्यवहार के वर्गीकृत स्वभाव का परिचय एवं गणना कराती है। मोटे तौर पर हम सम और विषम संख्या के रूप में किये गये विभाजन को देखें तो हमें उनमें गणितीय संयोजन एवं समरूपता दृष्टिगत होती है। सम संख्या के चतुष्कोण या चतुर्भुजों में परस्पर संयोजन सरलता एवं सहज रूप से हो जाया करता है। उसमें विषम संख्या के ज्यामितीय रूपों को हम परस्पर आसानी से जोड़ नहीं सकते हैं। संख्याओं के माध्यम से प्रकृति की कार्य-विधि को समझने तथा उसके संभावित-सुनिश्चित परिणामों को खोज निकालना ही अंक विद्या है और अंक ज्योतिष के रूप में हम संख्याओं की संकेत शक्ति व उन संकेतों के परिणामों का विश्लेषण-मूल्यांकन करते हैं।

भारत ने शब्दशास्त्र का जितना सूक्ष्म अध्ययन किया हैउतना ही संख्याओं का भी, अर्थात् जिस तरह किसी रंगीन चित्र में रेखाओं और रंगों का संयोजन संयुक्त रूप से एक अनुभूति देता है, किन्तु रेखाओं और रंगों के स्वभाव, प्रभाव एवं गुणों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन करना भी महत्वपूर्ण रहता है, क्योंकि रंगों की दुनिया और रेखा की दुनिया का भी अपना व्यक्तित्व है।

अंक का माध्यम या संकेत के रूप में हमने निर्बंध उपयोग किया, किन्तु उनको स्वतंत्र रूप से, उनकी सहज गति व प्रकृति को निरपेक्ष भाव से समझने की भी चेष्टा की गई। अंकों से बनने वाले यंत्र निर्विवाद रूप से अंकों की शक्ति व प्रकृति को सिद्ध करते हैं तो केरलीय ज्योतिष में या अन्य प्रसंगों का केवल संख्या के आधार पर समाधान ढूंढने की पद्धति भी अंकों के महत्व को प्रतिपादित करती है, रमल शास्त्र तो अपने आप में अंकों की ही दुनियां है।

ज्योतिष का काम अंकों के बिना नहीं चल सकता, सूर्य का पिण्डीय गोल रूप इन ग्रहों का अयन पथ, ये सब अपने प्राकृतिक रूप में वृत्ताकार है किन्तु उस वृत्त से हमारा काम नहीं चलता जिस तरह अकेले शून्य से कोई सार्थक उपयोगिता सिद्ध नहीं होती जहाँ वृत्त के विभाजन का प्रश्न आया वहीं वह 'शून्य' विभिन्न इकाइयों, कोणिक आकृतियों में विभक्त हो गया और इस विभाजन के लिए अन्य संख्याओं को आधारभूमि बन गई।

ज्योतिष में षडष्टक सम्बन्ध, त्रिक स्थान और त्रिषडाय स्थानों को स्वभावत: अहितकर माना जाता है, क्योंकि लग्न से इन स्थानों से लेकर बनने वाले कोण विषम स्थिति के सूचक होते है। इन कोणिक आवृत्तियों को संख्या का संकेत देना ही फलित की विशेषता बन जाती है। इसी विचार-परंपरा और अंकों की कार्य- शैली को समझने से अंको द्वारा हमारे जीवन के विभिन्न रहस्यपूर्ण-सम्पूर्ण उद्घाटी लेते हैं। अतएव अज्ञात भविष्य को जानने का उपक्रम अंक ज्योतिष का विषय है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अंक क्या है

भारत संसार को ब्रह्मा की कृति मानता है। ब्रह्म क्या है? इस प्रश्न का समाधान करने के लिए वेद पुराण, उपनिषद् और दर्शन अस्तित्व में आए, फिर भी हम आज तक उस ब्रह्म की केवल आभासिक सत्ता या कार्य को देखकर कारणगत अनुमान तक ही पहुंच सके। इसका अर्थ यह नहीं है कि ब्रह्म हमारे लिए अज्ञात रहा, अगर अज्ञात रहता तो इतना विवेचन किसका होता? किन्तु समस्या यह रही कि ब्रह्म को जान लेने के बाद ब्रह्मज्ञ व्यक्ति स्वयं ब्रह्मरूप हो गया और उसने ब्रह्म को वाणी या ज्ञान का विषय मानने से मना कर दिया, अर्थात् ब्रह्म शून्य है। शून्य अपने आप में अपरिभाषित है, किन्तु वह इस दृश्य जगत के विस्तार का कारण बनता है यह भी सुविदित सत्य है।

हमारी यह दार्शनिक सूक्ति विज्ञान की परिभाषा पर कसने से भी कोई व्यतिक्रम या असंगति नहीं होती। हमने ब्रह्म को अगोचर, निष्क्रिय और रूप-आकार रहित माना। यह बात आज भी हमारे आस-पास है और विज्ञान भी इसे स्वीकार किए बिना नहीं चलता। संसार में ऐसा कोई पदार्थ है ही नहीं जिसमें शून्य न हो, दैत्याकार पहिये में भी शून्य है, उसका केन्द्र भाग शून्य है, निष्क्रिय भी और रूपाकार रहित भी। इस बिन्दु के बिना गति संभव नहीं और यह बिन्दु (केन्द्रस्थ शून्य) न देखा जा सकता है, न जाना जा सकता है। हां परिणामों को देखकर इसकी कल्पना ही की जा सकती है और वही हम लोग करते आये हैं, वही विज्ञान करता है, विज्ञान का अनन्त ब्रह्म के विराट किंवा अपरिमेय स्वरूप को बताता है तो चक्र के केन्द्र में स्थित बिन्दु इसको सूक्ष्मतम अवस्था में जानने की बात कहता है। इसी सत्य को हमने अणोरणीयान् और महतो महीयान् के रूप में कहा है।

ब्रह्म के यों तो अनन्त स्तर और व्यवहार (कारण रूप) हैं, किन्तु हम यहां उसके कुछेक आयामों को विचार का विषय बनाते हैं जिससे हमारे विषय का दार्शनिक अतएव मूल विश्लेषण समझ में आ सके। ब्रह्म का अर्थ होता है ब्रह्मणशील अर्थात फैलता अथवा विस्तार पाता हुआ। ब्रह्म का निष्क्रिय स्वरूप किंवा शून्य का गुणाकार रहित अस्तित्व जब प्रेरक रूप में अपनी ही शक्ति को विस्तृत करता है तो वह सत्, चित, अतएव आनन्दमय शून्य विविध प्रकार के पदार्थों का जन्मदाता बन जाता है। इस सत्य को हम इस प्रकार भी कह देते हैं — ब्रह्म स्वयं विस्तृत होने लगता है। विष्णु की नाभि से निकले कमलनाल पर विराजमान ब्रह्मा का प्रतीक चित्र क्या इस तथ्य का प्रतिपादन नहीं करता कि गति के केन्द्र में स्थित शून्य ही गति का कारक है, वह निष्क्रिय होकर भी गति को प्राणवान् बनाता है।

इस शून्य और गुणातीत के ज्ञानगम्य विस्तार को व्यक्त करने का माध्यम क्या हो? या क्या रहा होगा? यह दूसरा प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं कि इस विस्तार को ब्रह्म की ब्रह्मणशीलता को सम्प्रेषणीय बनाने के लिए शब्द के अलावा कोई माध्यम नहीं दिया जा सकता था। इसका भी कारण था — शून्य में जो विक्षोभ होता है या ब्रह्म की क्रियाशीलता की जो पद्धति है उसमें नाद प्रारम्भिक स्तर है और वही नाद आगे चलकर शब्दों के रूप में विकीर्ण-प्रसृत होता चला जाता है। यही एक कारण है कि संसार के समस्त दार्शनिकों ने शब्द को ब्रह्म का स्वरूप मानकर मुक्ति का प्रतीक कहा है।

यों शब्द या भाषा का इतना विस्तृत क्षेत्र है कि हम संख्या को भी शब्दों में लिख सकते हैं तथा अंकों के लिपिगत स्वरूप के अलावा उच्चारणगत रूप में वे शब्दों को ही अपना माध्यम बना सकते हैं, अर्थात् जिस प्रकार संकेतों में संख्या का अपना एक स्वतंत्र संसार है, उस तरह का स्वतंत्र व्यक्तित्व उनके बोलने में नहीं है। इस तथ्य को हम ऐसे कह सकते हैं कि जिस तरह लिखने में संख्याएं भाषा में एकरूप न होकर भिन्न दिखाई देती है उस तरह बोलने में इनके विशिष्ट संकेत नहीं हैं।

एक विचित्रता और है कि प्रकृति ने ब्रह्म के इस विस्तार को शब्दों के जितने स्तर और स्वरूप दिये हैं वे सारे अक्षर (शब्द) संसार के विभिन्न प्राणियों को दे दिए, जैसे कोयल को 'कू', कुत्ते को 'हू', या गाय को 'मां', किन्तु विश्व के किसी भी प्राणी को उसने संख्या नहीं दी। यह भी समानान्तर तथ्य है कि मनुष्येतर प्राणी संख्या के महत्त्व और क्षेत्र से अपरिचित है। क्या हम इसे मनुष्य जाति का सौभाग्य और अति विकसित स्तर नहीं मान सकते कि वह संख्या को जानती भी है, और समझती भी है?

प्रकृति ने प्राणिवर्ग को शब्दावली देते समय दूसरे प्राणियों को संख्या-बोध न देकर मनुष्य के साथ पक्षपात क्यों किया अथवा हम आज तक संख्या के लिए भाषागत शब्दों से भिन्न ध्वनियां क्यों नहीं खोज सके? इन दोनों प्रश्नों के उत्तर में भारतीयों के गहन चिन्तन के निष्कर्षों को और आस्तिक बनकर प्रकृति के लीला-विलास को समझना व मानना होगा।

वस्तुत: शब्दावली एक परिणाम है और संख्या एक क्रिया है। व्यवहार में हम एक या दो या पांच जैसी संख्याएं बोलते हैं। वे किसी घटक या आवृत्ति की पूर्णता की सूचक हैं, क्योंकि संख्या में संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया जैसा भेद नहीं है। शब्दशास्त्रियों द्वारा विभाजित नाम और आख्यात जैसे भेद नहीं है, अत: हम संख्या-सूचक अंकों को ही क्रिया और परिणाम मानने के लिए विवश हैं।

हमारे घर में जल रहा बिजली का बल्ब या चल रहा पंखा असल में परिणाम है, क्रिया तो तरंगों में हो रही है। यह दूसरी बात है कि क्रिया की परिणति भी क्रिया में ही हो रही है। संसार का अर्थ शरणशीलता है, एक ब्रह्म के सिवा सभी कुछ तो चंचल है, गतिशील है, क्रियावान् है। ऐसी स्थिति में यदि क्रिया का विपाक भी क्रिया ही हो तो क्या आश्चर्य है?

मनुष्य की प्रखर विचारशीलता ने उस पर गणित के रहस्य प्रकट किए या उसकी अतृप्त जिज्ञासा शब्द से भिन्न अंक के क्षेत्र और दिगन्तों तक जा पहुंची। यह उसका पुरुषार्थ और भाग्य दोनों का समन्वित फल है। मूलत: प्रकृति संख्या के स्तर पर कार्य करती है किन्तु संख्या भी एक, दो या चार-पाँच के रूप में नहीं बल्कि वृत्त और कोण के रूप में याने ज्यामितीय स्तर पर वृत्त बिन्दु का प्रतीक है जो संख्या में शून्य का बोध कराता है और कोण संख्याओं का। हम जानते हैं कि बिन्दु का विस्तार त्रिकोण में होता है, बिन्दु या वृत या प्रतीक के रूप में शून्य का अपने आपमें कोई अर्थ नहीं हुआ करता। वह संख्याओं के साथ जुड़कर ही अपनी शक्ति एवं व्यक्तित्व को प्रकट कर पाता है, इसलिए शून्य संख्या ही नहीं बिन्दु के रूप में ध्वनि का भी मूल रूप है। माना शून्य का स्वयं में कोई अर्थ या महत्व नहीं, पर उसमें संख्याओं को सृजन करने की अद्भुत क्षमता है, इस तथ्य को अस्वीकारा नहीं जा सकता।

ऊपर हम कह आए हैं कि जिस तरह बल्ब और पंखे विद्युत की क्रिया के परिणाम हैं, उसी तरह भाषा प्रकृति के परिणामों को सहेजती है, उसकी क्रिया के कार्यों को अभिव्यक्ति देती है, प्रकृति की क्रियामयता को वह अभिव्यंजना नहीं दिया करती। यह बात प्रथम दृष्टि में हमें विरोधाभास कराती है किन्तु थोड़ा गहराई से चिन्तन करने पर हम इससे सहमत हो सकते हैं।

आशय यह कि प्रकृति ज्यामितिय आकृतियों में काम करती है यानी प्रकृति का क्रियापरक रूप कोण और वृत्तमय होता है। ज्यामितिय संख्या से भिन्न नहीं है भले ही हम ज्यामितिय को सम्पूर्ण रूप से अंकगणितीय रूप न दे सकें पर ज्यामितिय को अपनी स्पष्ट अभिव्यंजना के लिए अंक का सहारा लेना ही पड़ता है। त्रिकोण में त्रि के रूप में जो संकेत है वह संख्या ही है।

अंक क्या है?

अंक का शाब्दिक अर्थ है-चिह्न। अमरकोशकार द्वारा 'कलंकांकौ लाञ्छानं च चिह्नं लक्ष्म च लक्ष्मणम्' अंक, लाञ्छन, चिह्न, लक्ष्म, लक्ष्मण, कलंक ये एक दूसरे के पर्याय हैं। यह भिन्न बात है कि परमार्थत: एवं व्यवहार में हम इन सारे शब्दों को अलग-अलग परिस्थितियों में प्रयोग करते हैं। अंकों के लिए दूसरा शब्द संख्या है

जिसका व्याकरण की व्युत्पत्ति से सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक्

परोपजीवी है। इसके बावजूद भी यह निश्चित है कि संख्या प्रकृति

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

जिसका व्याकरण की व्युत्पत्ति से सिद्ध अर्थ होता है — [illegible] आख्यान। ये दोनों शब्द गणित या गणना से स्पष्ट होते हैं अन्यथा अंक शब्द को तो हम संख्या के पर्यायवाचक के बिना भी प्रयोग में लाते हैं। गणित की आधारभूमि देने से ये शब्द अपना वास्तविक परिप्रेक्ष्य प्रकट कर देते हैं, क्योंकि गणना एक समग्र क्रिया की, आवृत्ति के सम्पूर्ण क्षेत्र की, किंवा एक पूरे घटक की होती है। गणना शब्द ही इस अवस्था को सूचित करता है।

संख्या के रूप में ये एक, दो, दस, हजार जैसे अंक वास्तव में संकेत हैं और यह संकेतात्मकता ही इनकी शक्ति है। भाषा एवं शब्द प्रतीक बोध पर चलते हैं और अंक संकेत विधि से कार्य करते हैं। शब्दों में कोई भी शब्द ऐसा नहीं जो संख्या के संकेत जितने बड़े क्षेत्र को व्यक्त कर सके। 'राम' जैसे संज्ञा शब्द, 'वह' जैसे सर्वनाम 'अथवा' जैसे अव्यय और 'जाता' है, जैसे क्रिया पद अपनी विशेष सूचकता के कारण हमारे व्यवहार और सम्प्रेषण को पूर्ण बनाते हैं, फिर भी संकेतों की विश्वजनीनता ज्यामितीय सत्य है। प्रेयसी से रमण करने की इच्छा करने से प्रेरित प्रेमी का संकेत सारे संसार में एक है तो क्रोधाविष्ट का आक्रामक स्वरूप भी सार्वजनीन संकेत है। इस दृष्टि से संकेत का क्षेत्र सीमित रहकर भी अपनी व्यापकता की दृष्टि से अधिक विस्तृत और समर्थ रहेगा।

यों तो भाषा भी एक अभिव्यक्ति के रूप में निर्दोष है। किन्तु तदपि वह अपनी प्रतीकात्मकता के कारण गाली बन जाती है या किसी को रुष्ट करने का कारण बन जाती है। इसी का दूसरा पक्ष यह भी है कि भाषा की शब्दावली से कोई व्यक्ति प्रसन्न भी हो सकता है और अपने को मोहग्रस्त भी कर सकता है, जबकि संख्या अपनी संकेत शक्ति के कारण तटस्थ रहा करती है। जब तक संख्या हमारे प्रसंग को ग्रहण नहीं करती तब तक वह निःसंग रहती है। सड़क पर एक छपा हुआ पन्ना पड़ा है, उसके एक तरफ संयोजित अतएव प्रसंगवद्ध कोई वक्तव्य छपा हुआ है और दूसरी तरफ कोई संख्याओं का जाल मुद्रित है। इस पृष्ठ के दो भागों भाषा एवं संख्यामय भागों को पढ़कर हम यह स्वीकार करेंगे कि एक पृष्ठ के प्रसंग से हम अनजान होकर भी जुड़ सकते हैं, यानी वह प्रतीक बोध हम तक सरलता से आ जाया करता है, जबकि संख्याए हमारे तक नहीं आतीं, उनके प्रसंग से हम सहसा परिचित नहीं हुआ करते। यह विचित्रता तब और बढ़ जाती है जब भाषा की रचना यानी एक वाक्य का संयोजन निरर्थक हो सकता है या एक शब्द भी केवल अक्षरों का संयोजन मात्र हो सकता है। जैसे आकाश के लिए हाथियों की खुर मात्र उपयोगिता नहीं है, ऐसे वाक्य अथवा 'तुखो' जैसे शब्द निरर्थक हो सकते हैं पर संख्या का कोई भी संयोजन निरर्थक नहीं हुआ करता। उसकी क्रमिकता और निःसंगता अपने में सार्थक है।

[illegible] समाने हुआ करते हैं। उच्च गणित के विद्यार्थी जानते हैं कि गणित की अनन्तगामिता ही उसका रहस्य है और शक्ति भी है।

परिवार नियोजन की आवश्यकता आज भी हमारे लिए राष्ट्रीय कर्त्तव्य के रूप में प्रस्तुत है, क्यों? क्योंकि हम गणित के रहस्य एवं शक्ति से परिचित हैं, अन्यथा समुद्र में रहने वाली मछलियाँ, जंगल में उगने वाली वनस्पति, शहरों में फैलने वाली कुत्तों की वंशावली, ये सब अपने अनर्गल विस्तार से भय नहीं करते, वे पूर्णतया प्रकृति के खिलौने हैं, दास हैं उनके क्रिया-व्यवहार में कहीं भी, किंचित् भी स्वामित्व का भाव नहीं है। इसके विपरीत मनुष्य अपनी सतत साधना, विकसित चेतना और उर्वर कल्पना-शक्ति के कारण अपवाद के रूप में ही दासवत् व्यवहार किया करता है। मनुष्य का यह ज्ञान-विज्ञान कभी-कभी उसे अस्वाभाविक भी बना दिया करता है। दो, ढाई, तीन, चार फुट के बच्चों का औसत लेकर नदी के जल का औसत निकालकर नदी पार करने वाले अपने बच्चों के डूब जाने पर अपने सवाल को जाँचने या उसमें कोई गलती न रहने पर बच्चों के डूबने पर आश्चर्य करने लगें तो यह उनका व्यावहारिक दोष है — अंक और उनकी पद्धति अपने आप में निरपेक्ष है, उसे किसी भी तरह का दोष नहीं दिया जा सकता, अथवा भारत में पनप रहे प्रजातंत्र में बीस या तीस प्रतिशत भी बहुमत हो जाय तो इसमें गणित को छलिया कैसे कहा जा सकता है, या आज की जनसंख्या और उसकी वृद्धि की गति को (-) जिसमें किसी भी प्रकार का संदेह या दोष नहीं है — गणितीय आधार देने पर इस धरती पर किसी समय मनुष्य के सिवा कोई नहीं मिलेगा-इस तरह की कल्पना को गणित का ठोस आधार देने पर इसके भविष्यत् की भयावहता से स्तब्ध होना सहज है। किन्तु यह सब अंकों का तटस्थ व्यापार है, वे किसी को प्रसन्न या विषण्ण करने जैसा रूप धारण नहीं करते। यदि ऐसा ही होता तो एक व्यक्ति चक्रवृद्धि ब्याज का हिसाब करके एक दो पीढ़ियों में (एक लाख रुपये के मूलधन से) सारे देश की मुद्रा का स्वामित्व प्राप्त कर लेने के हर्ष से पागल भी हो सकता है।

आशय यह है कि भाषा के शब्दों या वर्णों का अपना क्षेत्र व प्रभाव अवश्य रहता है और वे भी एक सीमा तक अपने आपमें निरपेक्ष हैं, किन्तु उन शब्दों में या शब्द-समूहों में एक स्वाभाविक लय रहा करती है और वह लय ही एक सम्पूर्ण आर्केस्ट्रा के रूप में हमें प्रभावित किया करती है, जबकि संख्या के संकेतों में लय नहीं होती, वेलय की आवृत्ति को गिनते हैं। यही इनका मौलिक स्वरूप और परिचय होता है।

इस दृष्टि से संख्या का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध नहीं होता। वह किसी भी वाचक या संकेतक बनकर ही अपनी अर्थवत्ता प्रकट करती है अर्थात् [illegible] है। इसके बावजूद भी यह निश्चित है कि संख्या प्रकृति की कार्य-पद्धति की सूचक होकर भी प्रकृति के व्यवहार के वर्गीकृत स्वभाव का परिचय एवं गणना कराती है। मोटे तौर पर हम सम और विषम संख्या के रूप में किये गये विभाजन को देखें तो हमें उनमें गणितीय संयोजन एवं समरूपता दृष्टिगत होती है। सम संख्या के चतुष्कोण या चतुर्भुजों में परस्पर संयोजन सरलता एवं सहज रूप से हो जाया करता है। उसमें विषम संख्या के ज्यामितीय रूपों को हम परस्पर आसानी से जोड़ नहीं सकते हैं। संख्याओं के माध्यम से प्रकृति की कार्य-विधि को समझने तथा उसके संभावित-सुनिश्चित परिणामों को खोज निकालना ही अंक विद्या है और अंक ज्योतिष के रूप में हम संख्याओं की संकेत शक्ति व उन संकेतों के परिणामों का विश्लेषण-मूल्यांकन करते हैं।

भारत ने शब्दशास्त्र का जितना सूक्ष्म अध्ययन किया हैउतना ही संख्याओं का भी, अर्थात् जिस तरह किसी रंगीन चित्र में रेखाओं और रंगों का संयोजन संयुक्त रूप से एक अनुभूति देता है, किन्तु रेखाओं और रंगों के स्वभाव, प्रभाव एवं गुणों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन करना भी महत्वपूर्ण रहता है, क्योंकि रंगों की दुनिया और रेखा की दुनिया का भी अपना व्यक्तित्व है।

अंक का माध्यम या संकेत के रूप में हमने निर्बाध उपयोग किया, किन्तु उनको स्वतंत्र रूप से, उनकी सहज गति व प्रकृति को निरपेक्ष भाव से समझने की भी चेष्टा की गई। अंकों से बनने वाले यंत्र निर्विवाद रूप से अंकों की शक्ति व प्रकृति को सिद्ध करते हैं तो केरलीय ज्योतिष में या अन्य प्रसंगों का केवल संख्या के आधार पर समाधान ढूंढने की पद्धति भी अंकों के महत्व को प्रतिपादित करती है, रमल शास्त्र तो अपने आप में अंकों की ही दुनियां है।

ज्योतिष का काम अंकों के बिना नहीं चल सकता, सूर्य का पिण्डीय गोल रूप इन ग्रहों का अयन पथ, ये सब अपने प्राकृतिक रूप में वृत्ताकार है किन्तु उस वृत्त से हमारा काम नहीं चलता जिस तरह अकेले शून्य से कोई सार्थक उपयोगिता सिद्ध नहीं होती जहाँ वृत्त के विभाजन का प्रश्न आया वहीं वह 'शून्य' विभिन्न इकाइयों, कोणिक आकृतियों में विभक्त हो गया और इस विभाजन के लिए अन्य संख्याओं की आधारभूमि बन गई।

ज्योतिष में षडष्टक सम्बन्ध, त्रिक स्थान और त्रिषडाय स्थानों को स्वभावतः अहितकर माना जाता है, क्योंकि लग्न से इन स्थानों से लेकर बनने वाले कोण विषम स्थिति के सूचक होते हैं। इन कोणिक आवृत्तियों को संख्या का संकेत देना ही फलित की विशेषता बन जाती है। इसी विचार-परंपरा और अंकों की कार्य- शैली को समझने से अंको द्वारा हमारे जीवन के विभिन्न रहस्यपूर्ण-सम्पूर्ण उद्‌घाटी लेते हैं। अतएव अज्ञात भविष्य को जानने का उपक्रम अंक ज्योतिष का विषय है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जिस प्रकार कोई व्यक्ति गंगा की धार में बहकर उसके यात्रा-पथ व विविध भौगोलिक प्रभावों को भोगने के लिए बाध्य है, उसी प्रकार हम अपने नाम जन्मदिन, स्थान के नाम आदि के स्वयं-सिद्ध प्रभावों को भोगने के लिए बाध्य है। इस यात्रा के प्रभावों का आकलन करके सुरक्षित व सुविधाजनक रूप से गन्तव्य तक पहुंचना हमारी बुद्धिमता और दूरदर्शिता है तथा इसके लिये अंक ज्योतिष सशक्त आधार है।

संख्या का दार्शनिक पक्ष

संख्या का व्यवहारगत अर्थ है — यूनिट, वर्ग या समूह। संख्या का व्याकरण-सिद्ध अर्थ होता है — सम्यक् प्रकार से कथन-ज्ञापन। संस्कृत में संख्यान और आख्यान शब्द इस अर्थ में प्रयुक्त हुए है, किन्तु कालान्तर में यह शब्द केवल गिनती के अर्थ में रूढ़ हो गया।

अंक ज्योतिष या न्यूमरोलाजी के रूप में हम आजकल जिस विवेचन या विधा को देख रहे हैं वह भी मूलतः संख्या का, गणित का ही विशेष प्रकार का फलित है। किन्तु संख्या शब्द ज्योतिष के परिप्रेक्ष्य को प्रकट नहीं कर पाता, इसलिए इस अंक ज्योतिष या अंक विद्या के नाम से हम जानते हैं। अंक शब्द का अर्थ है चिन्ह अमर कोश के 'कलंकांकौ लाञ्छनं च चिन्हं लक्ष्म च लक्षणम्' अनुसार अंक एक चिह्न है। यह चिह्न गणितीय भी हो सकता है। बीजीय भी और रेखीय भी। अंक ज्योतिष में या वैसे भी ज्योतिष में संकेत अधिक चलते हैं। कुण्डलियों में राशि का नाम न लिखकर केवल उसकी संकेतक संख्या लिखी जाती है।

अंक और भाषा एक ही वस्तु के दो पहलू हैं। प्रत्येक वस्तु संख्या की सीमा में आती है। संख्या की बोधकता एक स्थान पर भाषा की शक्ति का भी अतिक्रमण कर जाती है और वह है शून्य का संकेतन। भाषा में या हमारे व्यवहार में उपस्थित विषमता को संख्या ने हल कर दिया — यह संख्या का अपना अधिकार सम्पन्न क्षेत्र रहा है अन्यथा भाषा का बहुवचन अस्पष्ट रहता है — वह केवल एकाधिक की सूचना देता है, मात्रागत या परिमाणगत स्थिति केवल संख्या से ही सूचित हो सकती है।

भाषा प्रतीक बोध पर चलती है और संख्या संकेत पर जिसे हम सिम्बलिज्म और सिग्नल सिस्टम कहा करते हैं। संकेत अपनी सीमा में स्वतंत्र है। प्रतीक वर्गीकृत है। जहां हमने चार कहा, वहां यह संकेत यूनिट का संकेत करता है। इसके अलावा कुछ नहीं करता। इसके विपरीत जहाँ हमने राम, चन्द्रमा, मैं या वह कहा, वहां ये शब्द प्रतीक रूप में इन नामधारियों का ज्ञान कराते हैं।

संख्या आवृत्ति किंवा फ्रीक्वैंसी की सूचना देती है। यह आवर्तनशीलता संख्या का आधार है। किन्तु इस आवर्तनशीलता का भी एक रूप और प्रभाव है जिसे भौतिकशास्त्री अच्छी तरह जानते हैं। फ्रीक्वैंसी में यत्किंचित् परिवर्तन होने पर तरंगों की प्रकृति और स्वरूप में अन्तर आ जाता है। यही स्थिति रसायन शास्त्र में आती है, जहाँ घटकों की संख्या नियत रहती है तथा उसमें परिवर्तन होते ही पदार्थ के अन्तर एवं तदधारित ग्राह्य में भी परिवर्तन हो जाता है।

विश्व में अनेक घटक इस प्रकार हैं जिनकी संख्या नियत रहती है, इसलिए उन सभी पदार्थों या व्यक्तियों का उन स्थायी वर्ग वाले पदार्थों से संख्यागत संबंध जुड़ जाता है और उनका प्रभाव परोक्ष रूप से उन व्यक्तियों एवं वस्तुओं पर पड़ता ही है।

माना किसी का नाम पुनीत या विपुल है। ये शब्द दो स्तरों पर नामी को प्रभावित करते हैं-पहला भाषा और दूसरा संख्या। संख्या के रूप में पुनीत या विपुल एक-एक व्यक्ति हैं। किन्तु इन नामों के अक्षरों के ध्रुवांक और उन ध्रुवांकों के चरित्र के अनुसार इन व्यक्तियों का जीवन एक अर्थ में प्रभावित होगा। ज्योतिष में जैसे जातक और गोचर दो पद्धतियां होती हैं और मनुष्य दोनों ही प्रभावों से प्रभावित होता है, उसी तरह व्यक्ति नाम के संख्यांक और भाषागत अर्थ से प्रभावित हुआ करता है। भारतीय अपने बालकों का नामकरण करने के लिए प्रत्येक नक्षत्र के चरण पर आने वाले अक्षर से प्रारंभ होने वाले नाम रखा करते हैं। नाम रखने में किस प्रकार के शब्द ग्रहण करने चाहिए और किस प्रकार के छोड़ देने चाहिए, इस प्रकार की व्यवस्था का निर्देश करने वाले ऋषियों ने उनके नामों के ध्रुवांक और संख्यापरक तथ्य पर भले ही ध्यान न दिया हो, (क्योंकि इस प्रकार का विश्लेषण किसी ग्रन्थ में स्वतंत्र रूप में देखने को नहीं मिलता, संकेत के रूप में मिलता हो तो कोई बात नहीं।

चित्रकला के विद्यार्थी या यंत्र रचना के ज्ञाता लोग यह जानते है कि रेखा और रंगों का भी अपना व्यक्तित्व होता है, उसी तरह प्रत्येक नाम या संज्ञा शब्द का गणित भी हुआ करता है।

जहां तक भाषागत महत्व का प्रश्न है, उससे असहमत हुआ जा सकता है क्योंकि सत्यनारायणजी असत्य के भण्डार हो सकते हैं और पुनीत बिल्कुल अपवित्र हो सकते हैं, तो भी इस तथ्य से इन्कार नहीं किया जा सकता कि जिस नाम से उसे पुकारा जाता है उस नाम के जप का प्रभाव उस व्यक्ति पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से न्यून या अधिक रूप में पड़ता ही है।

व्यक्ति अपने नाम से विपरीत चरित्र एवं प्रकृति का होता है — यह अनुसंधान का विषय है। यद्यपि इस प्रभाव के पीछे संकरता, वातावरण का प्रभाव और हमारे लोगों का काम सम्बन्धों में उच्छृंखलता का होना भी है तदपि यही एकमात्र कारण नहीं है।

अंक और ऐतिहासिक घटनाएं

पूर्व जन्म में सम्पूर्ण प्राणियों ने शुभाशुभ जैसे जो भी कर्म किये हैं, उन कर्मों के फलों को प्राणी इस जन्म में या अगले जन्म में किस प्रकार भोगकर समाप्त करेगा यही ज्योतिष शास्त्र बतलाता है। जैसे अन्धकार में पड़ी हुई वस्तु को दीपक का प्रकाश बतला देता है।

यह पुस्तक ज्योतिष की एक शाखा अंक विद्या के ज्ञान का हम अपने जीवन में किस प्रकार उपयोगी बनाकर अपनी समस्याओं से छुटकारा पा सकते हैं तथा आने वाले भविष्य को अपने अनुकूल बना सकते हैं, का मार्ग प्रशस्त करेगी। अंक चिन्ह को भी कहते हैं, इसे संख्या भी कहा जाता है। आज के युग में क्या प्राचीन युग में भी अंक की महत्ता रही है।

पाश्चात्य ज्योतिषी कीरो ने अपनी पुस्तक 'बुक आफ नम्बर' में यह उल्लेख किया है कि जब मैं भारत का भ्रमण कर रहा था तो मुझे कुछ ऐसे ब्राह्मणों के सान्निध्य में रहने का सौभाग्य मिला जो प्रकृति के बहुत से गूढ़ रहस्यों को अपने हृदय में छिपाये थे और कृपा करके कुछ का ज्ञान मुझे भी कराया था। वे सभ्य होने से पहले से इस अंक विद्या के ज्ञान से परिचित थे।

जिस तरह शब्द को ब्रह्म की संज्ञा देकर महत्वपूर्ण माना है, इसी तरह अंक भी महत्वपूर्ण है। शून्य (०) एक अंकीय चिन्ह है और यह भी ब्रह्म की विराट सत्ता का प्रतीत है। वैज्ञानिकों के दृष्टिकोण से अंक सर्वाधिक महत्वपूर्ण, प्राचीनतम कटु सत्य है। हमारे आर्ष पुरुषों, ऋषि-मुनियों ने, दैवज्ञों तथा वैज्ञानिकों ने परखा है, सोचा समझा एवं मनन किया है, तभी इसे इतना महत्वपूर्ण माना है।

अंक हमारे जीवन में भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। अंक द्वारा हम अपने मन्तव्य को भली भाँति समझा सकते हैं। जैसे किसी ने कहा कि इस पेड़ पर कुछ कबूतर बैठे हैं, लेकिन ठीक उत्तर के लिए उनके कितने हैं बतलाने के लिए किसी प्रतीक का सहारा लेना पड़ेगा और वह प्रतीक है अंक। ऊपर लिखे वाक्य को हम अगर स्पष्ट रूप से समझाने का प्रयास करें तो वाक्य इस पेड़ पर बारह कबूतर बैठे हैं इस प्रकार हो गया। इसी प्रकार अंक हमारे दैनिक जीवन का अभिन्न अंग है। इसके बिना हमारी बात अधूरी है, अस्पष्ट है।

राम देहली ७ बजे जायेगा। देहली २३ मील दूर है। वहां का किराया ३१ रुपये है। मेरी आयु ४१ वर्ष है इत्यादि। इन वाक्यों में आपने देखा कि अंक किस तरह हमारे दैनिक उपयोग में आता है, इसके बिना हमारी बात अधूरी रहेगी। अंक भूत, भविष्य, वर्तमान बतलाता है। हमारे दुख-दर्द का सच्चा साथी है। अंक द्वारा ही हम अपनी उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। हमारे पूर्वजों ने अंक के महत्व को समझा, इसका गहन अध्ययन किया और इसे जन उपयोगी पाकर सर्वसाधारण को इसकी महत्ता एवं शक्ति से परिचित कराया।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सहधर्मी वस्तुएं आकर्षण करती हैं और विधर्मी विकर्षण, यह विज्ञान-सम्मत बात है। कबूतर कबूतरों में ही रहेगा, बाज अथवा कौओं में नहीं। इसी प्रकार प्रत्येक अंक अथवा संख्या अपने जैसे संख्या अथवा अंक को आकर्षित करेगी और इनमें आपस में मैत्री एवं सौहार्द रहेगा। इसी प्रकार विरोधी अंक संख्या में विकर्षण, शत्रुता एवं विरोध रहेगा। यूं कोई भी अंक अपने आप में बुरा प्रभाव नहीं रखता, परन्तु स्थान तथा परिस्थितिवश शुभ या अशुभ हो जाता है।

कई लोग जो ज्योतिष से परिचित नहीं होते, मात्र उन्होंने कहीं से सुन रखा होता है कि राहु और शनि बुरे ग्रह हैं और इनकी दशा भुक्ति कष्टकर होती है। ये जब किसी अन्य को अथवा स्वयं को कठिन परिस्थिति में दुःख तकलीफ में देखते हैं तो राहु-शनि को इसका कारण मानकर कह देते हैं कि बुरे दिन चल रहे हैं, शनि राहु की दशा के कारण। शनि-राहु पापी ग्रह हैं यह माना, परन्तु ये हर एक को बुरा फल देते हों मैं यह मानने को तैयार नहीं। जिनकी कुण्डली में शनि या राहु कारक होकर शुभ स्थानस्थ हों तो अपनी भुक्ति में मान-सम्मान, धन और राज्य भी देते हैं। मैंने कई ऐसी कुण्डली देखी हैं, जिनमें मात्र शनि ने उच्च पद तथा राहु ने आकस्मिक धन दिया है।

कहने का तात्पर्य यह है कि पाठक स्वयं अपने जीवन को रिश्तेदारों, प्रियजनों, जानकारों के जीवन को टटोलकर देखें तो पायेंगे अंक की आश्चर्यजनक समानता—चमत्कारिक रूप। यह सत्य है कि ज्योतिष कठिन विषय है। इसे समझना हर एक के बूते की बात नहीं, क्योंकि जन्म पत्रिका बनाना आसान काम नहीं, न ही बनाकर देखना और समझना। गणित की जटिल प्रक्रिया से निकलकर मनुष्य फलित के जाल में फंस जाता है। किन्तु अंक विद्या (ज्योतिष) सरल विधि है। इसे थोड़ा ज्ञान रखने वाला व्यक्ति भी समझकर अपने भविष्य को सुखद बना सकता है। जीवन की जटिल समस्याओं का समाधान कर सकता है।

अंकों में गति है, क्रम-बद्धता है, अगले पृष्ठों में कुछ उदाहरण दिये जा रहे हैं जिससे आप समझ सकेंगे कि घटनाओं के घटने का क्रम अंकों की किस सुनिश्चित योजना द्वारा क्रमबद्धता द्वारा घटित होता है। नीचे वाले उदाहरण में आप देखेंगे कि चमत्कारिक रूप से ५३९ साल के अन्तर से सेंटलूई तथा लूई सोलहवें के जीवन की घटनाएं समान रूप से घटित हुई।

सेंट लूई का जन्म	२३ अप्रैल	१२१५
		+ ५३९
लूई सोलहवें का जन्म	२३ अगस्त	१७५४
सेंट लूई की बहन ईसाबेला का जन्म		१२२५
		+ ५३०
लूई सोलहवें की बहन अलजावेथ		१७६४
का जन्म सेंट लूई के पिता आठवें की मृत्यु १२२६		
		+ ५३९
लूई सोलहवें के पिता डाफिन की मृत्यु		१७६५
सेंट लूई की बादशाहत की शुरुआत		१२२६
		+ ५३९
लूई सोलहवें की बादशाहत की शुरुआत		१७६५
सेंट लूई का विवाह		१२३१
		+ ५३९
लूई सोलहवें का विवाह		१७७०
सेंट लूई को वयस्काधिकार मिला		१२३५
		+ ५३९
लूई सोलहवें को वयस्काधिकार मिला		१७७४
सेंट लूई और इंग्लैंड के बादशाह हेनरी तृतीय में युद्ध के बाद सन्धि हुई		१२४३
		+ ५३९
लूई सोलहवें और इंग्लैंड के बादशाह जार्ज तृतीय में युद्ध के बाद सन्धि हुई		१७८२
एक पूर्वदेशीय राजकुमार ईसाई बनने के लिए सेंट लूई से मिला		१२४९
		+ ५३९
एक अन्य राजकुमार ने अपना दूत इसी आशय के लिए लूई सोलहवें के पास भेजा		१७८८
युद्ध में सेंट लूई की हार, साथियों द्वारा छोड़ा जाना तथा बन्दी होना		१२५०
		+ ५३९
लूई सोलहवें का उसके दल द्वारा छोड़ा जाना तथा बन्दी होना		१७८९
सेंट लूई की मां का स्वर्गवास हुआ		१२५३
		+ ५३९
लूई सोलहवें की मां की मृत्यु हुई		१७९२
सेंट लूई ने जैकोबियन धर्म अपनाना चाहा		१२५४
		+ ५३९
जैकोबियनों द्वारा लूई सोलहवें का अन्त		१७९३

एक अन्य उदाहरण देखिए-

पूज्य गाँधीजी के जीवन में अंक २ व ४ का वर्चस्व रहा था

जन्म -२ अक्टूबर	२
विवाह हुआ १८८३ में	२
पिता का स्वर्गवास हुआ १८८५ में	४
वकालत की १८९२ में	२
भारत आए १९०१	२
ट्रांसवेल ब्रिटिश इंडिया बनी १९०३	४
स्वराज्य फण्ड कमेटी बनी २ अक्टूबर	२
पत्नी की मृत्यु २२ फरवरी	४
स्वयं का स्वर्गवास १९४८	४

एक और उदाहरण अंक १३ का। यूं पश्चिम में इस अंक को लोग अशुभ समझते हैं और प्रायः इस अंक का प्रयोग वे जीवन के किसी भी क्षेत्र में नहीं करते। परन्तु ज्योतिर्विदों की दृष्टि में यह अंक नवीनता का प्रतीक माना गया है। अमेरिका में १३ की अंक संख्या का काफी महत्व रहा है। वैसे भी अमेरिका नई दुनिया के नाम से जाना जाता है।

अमेरिका में जार्ज वाशिंगटन का सत्कार किया १३ तोपों की सलामी देकर

अमेरिका के राष्ट्रीय झण्डे में कुल पत्तियां	१३
" " " " बाण	१३
" " " " ईगल पर कुल सितारे	१३
" " " " ईगल के हर डेने में कुल पंख	१३
" " " " सर्वप्रथम अमेरिका के कुल राज्य	१३

अमेरिका की स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर १३ व्यक्तियों ने किये।

एक अन्य उदाहरण भारतीय अकाली दल (गुरनाम सिंह ग्रुप) का यू.एन.आई. से साभार-

गुरनामसिंह ग्रुप अकाली दल के सचिव श्री राजिन्दरसिंह ने अपने एक बयान में बतलाया कि पार्टी को १३ का अंक सर्वाधिक अशुभ रहा।

इस दल का जन्म	१३ जून १९७१
दल समाप्त हुआ	१३ फरवरी १९७२
कार्यकारिणी के २० सदस्यों ने दल छोड़ा १३ सदस्यों ने १३ फरवरी को	
दल के कार्यवाही रजिस्टर में अंकित कार्यवाही	१३ पेज तक
दल के चपरासी ने दफ्तर आना बन्द कर दिया	१३ फरवरी
दल के सचिव का अपने साथियों सहित दल से इस्तीफा	१३ फरवरी
दल के चार प्रत्याशी हारे हुए घोषित हुए	१३ मार्च

एक अन्य उदाहरण जब भी सन् के आखिर में ७ की संख्या आई है वह भारत के लिए महत्वपूर्ण वर्ष रहा है, यथा-

महाराणा प्रताप की मृत्यु	१५९७
शाहजहां की हुकूमत	१६२७ से १६५७
शिवाजी की पैदाइश	१६२७
औरंगजेब की मृत्यु	१७०७
हिन्द की पहली जंगे आजादी	१८५७
दक्षिण का कहत	१८७७
मिण्टो रिफार्म एक्ट बना	१९०७
इसे लागू किया गया	१९१७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

साइमन कमीशन आया, शारदा एक्ट बना	१९२७
प्रथम बार कांग्रेस वजारतें बनीं	१९३७
भारत आजाद हुआ	१९४७
प्रथम बार केरल में कम्युनिस्ट वजारत बनी	१९५७
सभी दलों ने किसी न किसी प्रान्त में मिली-जुली सरकार बना ली (कांग्रेस के खिलाफ)	१९६७
जनता पार्टी का राज्य काल तथा कांग्रेस की उत्तरी भारत में हार	१९७७

विदेशों में इस प्रकार की घटनाओं का वृहद् संकलन किया गया है। भारत में इस विधा पर कोई खास गौर नहीं किया गया वर्ना यहाँ भी ऐसे अनेक उदाहरण होंगे। ऊपर पाठकों ने अंक का घटना-क्रम से सम्बन्ध देखा, अगर वे अपना अथवा अपने सम्बन्धियों का जीवन टटोलें तो ऐसी ही आश्चर्यजनक समता मिलेगी।

मूलांक कैसे निश्चित किए जाएं

हर व्यक्ति का जन्म अंग्रेजी महीने की किसी भी तारीख को हो सकता है। एक महीने में १ से लेकर ३१ दिन तक हो सकते हैं। इस अध्याय में हम जन्म की तारीख से मूलांक बनाने की विधि का अवलोकन करेंगे। जन्म की तारीख से मूलांक (जन्मांक) लिखे अनुसार होंगे, यथा—

जन्म तिथि	मूलांक (जन्मांक)	जन्म तिथि	मूलांक (जन्मांक)
१	१	६	६
२	२	७	७
३	३	८	८
४	४	९	९
५	५		

एक से लेकर ९ तक की अंक संख्या ईकाई में है। आगे १० से लेकर ३१ तक की संख्या दहाई में है, इस दहाई की संख्या को इकाई में बदलना पड़ता है जैसे—

१०	१+ ०= १	१
११	१+ १= २	२
१२	१+ २= ३	३
१३	१+ ३= ४	४
१४	१+ ४= ५	५
१५	१+ ५= ६	६
१६	१+ ६= ७	७
१७	१+ ७= ८	८
१८	१+ ८= ९	९
१९	१+ ९= १० = १+ ०= १	१
२०	२+ ०= २	२
२१	२+ १= ३	३
२२	२+ २= ४	४
२३	२+ ३= ५	५
२४	२+ ४= ६	६
२५	२+ ५= ७	७
२६	२+ ६= ८	८
२७	२+ ७= ९	९
२८	२+ ८= १० = १+०= १	१
२९	२+ ९= ११ = १+१= २	२
३०	३+ ०= ३	३
३१	३+ १= ४	४

ऊपर आपने मूलांक बनाने की विधि देखी नीचे मूलांक एक नजर में—

दि.	१, १० १९, २८	का मूलांक	१
दि.	२, ११, २०, २९	का मूलांक	२
दि.	३, १२, २१, ३०	का मूलांक	३
दि.	४, १३, २२, ३१	का मूलांक	४
दि.	५, १४, २३	का मूलांक	५
दि.	६, १५, २४	का मूलांक	६
दि.	७, १६, २५	का मूलांक	७
दि.	८, १७, २६	का मूलांक	८
दि.	९, १८, २७	का मूलांक	९

मूलांक और उनके अधिपति ग्रह

मूलांक	स्वामी ग्रह	मूलांक	स्वामी ग्रह
१	सूर्य	६	शुक्र
२	चन्द्रमा	७	नेपच्यून
३	बृहस्पति	८	शनि
४	हर्षल	९	मंगल
५	बुध		

नीचे मूलांक और उनके वार लिखे जाते हैं।

मूलांक	वार
१	रविवार
२	सोमवार (चन्द्रवार)
३	बृहस्पतिवार (गुरु.)
४	रविवार
५	बुधवार
६	शुक्रवार
७	सोमवार
८	शनिवार
९	मंगलवार

भारतीय ज्योतिष के अनुसार निम्नलिखित १२ राशियां हैं—

राशि	स्वामी ग्रह
१. मेष	मंगल
२. वृष	शुक्र
३. मिथुन	बुध
४. कर्क	चन्द्र
५. सिंह	सूर्य
६. कन्या	बुध
७. तुला	शुक्र
८. वृश्चिक	मंगल
९. धनु	वृहस्पति
१०. मकर	शनि
११. कुम्भ	शनि
१२. मीन	वृहस्पति

नीचे २७ नक्षत्र एवं उनके चरण तथा चरणाक्षर दिये जा रहे हैं ताकि आसानी से अपनी राशि, राशिपति, नक्षत्र तथा चरण एवं चरणाक्षर जाना जा सके। एक राशि का मान ९ चरण का माना गया है।

नाम नक्षत्र	चरणाक्षर राशि	राशि	स्वामी
१. अश्विनी	चू, चे, चो, ला	मेष	मंगल
२. भरणी	ली, लू, ले, लो,	मेष	मंगल
३. कृतिका	अ, इ, उ, ए	मेष/वृष	मंगल/शुक्र
४. रोहिणी	ओ, वा, वी, वू	वृष	शुक्र
५. मृगशिरा	वे, वो, का, की	वृष/मिथुन	शुक्र/बुध
६. आर्द्रा	कू, घ, ङ, छ	मिथुन	बुध
७. पुनर्वसु	के, को, ह, ही	मिथुन/कर्क	बुध/चन्द्र
८. पुष्य	हू, हे, हो, डा	कर्क	चन्द्र
९. आश्लेषा	डी, डू, डे, डो	कर्क	चन्द्र
१०. मघा	मा, मी, मु, मे	सिंह	सूर्य
११. पू.फा.	मो, टा, टी, टू	सिंह	सूर्य
१२. उ. फा.	टे, टो, पा, पी	सिंह/कन्या	सूर्य/बुध
१३. हस्त	पू, ष, ण, ठ	कन्या	बुध
१४. चित्रा	पे, पो, रा, री	कन्या/तुला	बुध/शुक्र
१५. स्वाति	रू, रे, रो, ता	तुला	शुक्र
१६. विशाखा	ती, तु, ते, तो	तुला/वृश्चि.	शुक्र/मंगल
१७. अनुराधा	ना, नी, नू, ने	वृश्चिक	मंगल
१८. ज्येष्ठा	नो, या, यी, यू	वृश्चिक	मंगल

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महाविद्या ध्यान

साधक को ध्यान करते समय मूल श्लोक का ही प्रयोग करना चाहिए।

चतुर्भुजां महादेवीं नागयज्ञोपवीतिनीम्।
महाभीमां करालस्यां सिद्धविद्याधरैर्युताम्॥
मुण्डमालालिकीर्णां मुक्तकेशीं स्मितानन्नाम्।
एवं ध्योन्महादेवीं सर्वकामार्थसिद्धये॥

महाविद्या देवी चार भुजाओं वाली, सर्प का यज्ञोपवीत धारण करने वाली, महाभीमा, करालवदना, सिद्ध और विद्याधरों से युक्त, मुण्डमाला से अलंकृत, बिखरे हुए केशों वाली और हास्यमुखी हैं। सर्वकाम अर्थ की सिद्ध देने वाली देवी का इस प्रकार ध्यान करना चाहिए।

महाविद्या स्तोत्र

श्रीशिव उवाच— दुर्लभं तारिणीमार्गं दुर्लभं तारिणीपदम्।
मन्त्रार्थं मन्त्रचैतन्यं दुर्लभं शवसाधनम्॥
श्मशानसाधनं योनिसाधनं ब्रह्मसाधनम्
क्रियासाधनकं भक्तिसाधनं मुक्तसाधनम्।
तव प्रसादाद्देवेशि सर्वाः सिध्यन्ति सिद्धयः॥

श्रीशिवजी ने कहा- तारिणी की उपासना का मार्ग अत्यन्त ही दुर्लभ है, इसी प्रकार उनके पद की प्राप्ति भी दुर्लभ है। मन्त्रार्थ ज्ञान, मंत्र चैतन्य, शव साधन, श्मशानसाधन, योनिसाधन, ब्रह्मसाधन, क्रियासाधन, भक्तिसाधन और मुक्तसाधन यह सब भी दुर्लभ हैं। किन्तु हे देवेशि! तुम जिसके ऊपर प्रसन्न होती हो, उसको सब विषय में सिद्धि प्राप्त होती है।

नमस्ते चण्डिके चण्डमुण्डविनाशिनि।
नमस्ते कालिके कालमहाभयविनाशिनी॥

हे चण्डिके! तुम प्रचण्डस्वरूपिणी हो। तुमने ही चण्ड-मुण्ड का वध किया था। तुम्हीं काल के भय से त्रण दिलाने वाली हो। हे कालिके! तुमको नमस्कार है।

शिवे रक्ष जगद्धात्रि प्रसीद हरवल्लभे।
प्रणमामि जगद्धात्रि जगत्पालनकारिणीम्॥
जगत्क्षोभकरीं विद्यां जगत्सृष्टिविधायिनीम्।
करालां विकटां घोरो मुण्डमाला विभूषिताम्॥
हरार्चितां हराराध्यां गौरवर्णालंकारभूषिताम्।
हरिप्रियां महामायां नमामि ब्रह्मपूजिताम्॥

हे शिवे! जगद्धात्रि हरवल्लभे! मेरी संसार के भय से रक्षा करो, तुम्हीं जगत की माता और तुम्हीं अनन्त जगत की रक्षा करती हो। तुम्हीं जगत का संहार करने वाली और तुम्हीं उत्पन्न करने वाली हो। तुम्हारी मूर्ति महाभयंकर है, तुम मुण्डमाला से अलंकृत हो, कराल और विकटाकार हो। तुम्हीं हर से सेवित, हर से पूजित और हरप्रिया हो। तुम्हारा गौर वर्ण है, तुम्हीं गुरुप्रिया और श्वेत विभूषणों से अलंकृत हो, तुम्हीं विष्णु प्रिया और महामाया हो, ब्रह्माजी तुम्हारी ही पूजा करते हैं तुमको नमस्कार है।

सिद्धां सिद्धेश्वरी सिद्धविद्याधरगणैर्युताम्।
मन्त्रसिद्धिप्रदायोनिसिद्धिदां लिंगशोभिताम्॥
प्रणमामि महामायी दुर्गां दुर्गतिनाशिनीम्।

तुम्हीं सिद्धा और सिद्धेश्वरी हो। तुम्हीं सिद्ध तथा विद्याधरों से वेष्टित, मंत्रसिद्धि-दायिनी, योनिसिद्धि देने वाली, लिंग शोभिता, महामाया, दुर्गा और दुर्गति नाशिनी हो। तुम्हें नमस्कार है।

उग्रामुग्रमयीमुग्रतारामुग्रगणैर्युताम्।
नीलां नीलघनश्यामां नमामि नीलसुन्दरीम्॥

तुम्हीं उग्रमूर्ति, उग्रगणों से युक्त, उग्रतारा, नीलमूर्ति, नील मेघ के समान श्यामवर्ण तथा नीलसुन्दरी हो तुमको नमस्कार है।

श्यामांगी श्यामघटितां श्यामवर्णविभूषिताम्।
प्रणमामि जगद्धात्री गौरीं सर्वार्थसाधिनीम्॥

तुम्हीं श्यामलांगी, श्यामवर्ण से विभूषित, जगद्धात्री सब कार्यों की साधन करने वाली और गौरी हो, तुमको नमस्कार है।

विश्वेश्वरी महाघोरां विकटां घोरनादिनीम्।
श्रीदुर्गां धनदामन्नापूर्णां पद्मां सुरेश्वरीम्॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं चन्द्रशेखरवल्लभाम्॥

तुम्हीं विश्वेश्वरी, महाभीमाकार विकटमूर्ति हो, तुम्हारा शब्द महाभयंकर है, तुम्हीं सबकी आद्या, आदिगुरु महेश्वर की भी आदि मां हो आद्यना महादेव सदा तुम्हारी पूजा करते हैं, तुम्हीं धन देने वाली अन्नपूर्णा और पद्मास्वरूपिणी हो, तुम्हीं देवताओं की ईश्वरी (स्वामिनी) जगत् की माता, हरवल्लभा हो। तुमको नमस्कार है।

त्रिपुरासुन्दरीं बालामबलागणभूषिताम्।
शिवदूतीं शिवाराध्यां शिवध्येयां सनातनीम्॥
सुन्दरीं तारिणीं सर्वशिवागणविभूषिताम्।
नारायणीं विष्णुपूज्यां ब्रह्मविष्णुहरप्रियाम्॥

हे देवि! तुम्हीं त्रिपुरसुन्दरी, बाला, अबला गणों से विभूषित, शिवदूती, शिव की आराध्य, शिव से ध्यान की हुई, सनातनी, सुन्दरी, तारिणी, शिव गणों से अलंकृत, नारायणी, विष्णु की आराध्य और ब्रह्मा, विष्णु तथा हर की प्रिया हो।

सर्वसिद्धप्रदां नित्यामनित्यगुणवर्जिताम्।
सगुणां निर्गुणां ध्येयामर्चितां सर्वसिद्धदाम्॥
दिव्यां सिद्धिप्रदां विद्यां महाविद्यां महेश्वरीम्।
महेश भक्तां माहेशीं. महाकालप्रपूजिताम्॥
प्रणमामि जगद्धात्रीं शुम्भासुरविमर्दिनीम्॥

तुम्हीं सब सिद्धियों की दात्री, नित्या, अनित्य गुणों से रहित सगुणा, निर्गुणा, ध्यान के योग्य, अर्चिता (पूजिता), सर्व सिद्धि की देने वाली, दिव्या, सिद्धिदाता, विद्या, महाविद्या, महेश्वरी, महेश की भक्तिवाली, माहेशी, महाकाल से पूजित, जगद्धात्री और शुंभासुर का मर्दन करने वाली हो। तुमको नमस्कार है।

रक्तप्रियां रक्तवर्णां रक्तबीजविमर्दिनीम्।
भैरवीं भुवनां देवीं लोलजिह्वां सुरेश्वीरम्॥
चतुर्भुजां दशभुजामष्टादशभुजां शुभाम्।
त्रिपुरेशीं विश्वनाथप्रियां विश्वेश्वरीं शिवाम्॥
अट्टहासामट्टहासप्रियां धूम्रविनाशिनीम्।
कमलां छिन्नभालाञ्च मातंगीं सुरसुन्दरीम्॥
षोडशीं विजयां भीमां धूमाञ्च बगलामुखीम्।
सर्वसिद्धिप्रदां सर्व्वविद्यामन्त्रविशोधिनीम्।
प्रणमामि जगत्तारां साराञ्च मन्त्रसिद्धये॥

तुम रक्त से प्रेम करने वाली, रक्तवर्णा, रक्तबीज का विनाश करने वाली, भैरवी, भुवना देवी, चलायमान जीभवाली, सुरेश्वरी, चतुर्भुजा कभी दशभुजा, कभी अठारह भुजा वाली देवी हो। तुम्हीं विश्वनाथ की प्रिया, ब्रह्मांड की ईश्वरी, कल्याणमयी, अट्टाहास से युक्त ऊंचे हास्य से प्रीति करने वाली, धूम्रासुर विनाशिनी, कमला, छिन्नमस्ता, मातंगी, सुर-सुन्दरी, षोडशी, विजया, भीमा, धूम्रा, बगलामुखी, सर्वसिद्धिदायिनी, तारिणी हो, मैं मन्त्रसिद्धि के लिए तुमको नमस्कार करता हूँ।

इत्येवञ्च वरारोहे स्तोत्रं सिद्धिकरं परम्।
पठित्वा मोक्षमाप्नोति सत्यं वै गिरिनन्दिनी॥

हे वरारोहे! यह स्तव परम सिद्धि देने वाला है, इसका पाठ करने से अवश्य ही मोक्ष प्राप्त होता है।

कुजवारे चतुर्दश्यामामायां जीववासरे।
शुक्रे निशिगते स्तोत्रं पठित्वा मोक्षमाप्नुयात्।
त्रिपक्षो मन्त्रसिद्धिः स्यात्स्तोत्रपाठाद्धि शंकरि॥

मंगलवार चतुर्दशी तिथि में बृहस्पतिवार अमावस्या तिथि में तथा शुक्रवार को रात्रि काल में यह स्तुति पढ़ने से मोक्ष प्राप्त होता है। हे शंकरि! तीन पक्ष तक इस स्तव के पढ़ने से मन्त्र सिद्ध हो जाता है, इसमें सन्देह नहीं।

चतुर्दश्यां निशाभागे शनिभौमदिने तथा।
निशामुखे पठेत्सतोत्रं मन्त्रसिद्धिमवाप्नुयात्॥

कृष्ण चतुर्दशी की रात हो तथा शनि और मंगलवार हो तब इस स्तव का विधिपूर्वक पाठ करने से मंत्रसिद्धि होती है।

केवलं स्तोत्रपाठाद्धि मन्त्रसिद्धिरनुत्तमा।
जागर्ति सततं चण्डी स्तोत्रपाठाद्भुजंगिनी॥

जो पुरुष केवल इस स्तोत्र मात्र को पढ़ता है, वह अनुत्तमा मंत्र सिद्धि प्राप्त होता है। इस स्तवपाठ के फल से चण्डिका कुलकुण्डलिनी नाड़ी जाग्रित होती है।

॥श्रीमुण्डमालातंत्रान्तर्गत महाविद्यास्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शाबर मन्त्र

शाबर मन्त्र-तन्त्र की ग्राम्य शाखा के मन्त्र हैं। तन्त्र मार्ग के प्रवर्तक भगवान् शंकर माने गये हैं किन्तु शाबर मन्त्रों के प्रवर्तक भगवान शंकर प्रत्यक्ष रूप में नहीं हैं, लेकिन जिन सिद्ध पुरुषों ने इनको आविर्भूत किया वे सभी तन्त्र मार्ग के साधक और शिवानुरागी अवश्य थे। इन मन्त्रों का भले ही कोई शास्त्रीय आधार नहीं है किन्तु लाभकारिता की दृष्टि से या उपयोगिता में ये अशास्त्रीय प्रयोग भी किसी प्रकार कम नहीं हैं।

कुछ विद्वानों का मत है कि साबरमती के तटीय क्षेत्रों पर बसी जाति के सिद्धों ने ये मन्त्र प्रचारित किये इसलिए इन्हें साबर या शाबर मन्त्र कहा जाता है। शाबर मंत्र की शुरूआत कब से हुई और कौन इनके प्रवर्तक थे इस बारे में कई मत हैं, किन्तु यह निर्विवाद रूप से कहा जा सकता है कि इस मार्ग को प्रामाणिक स्वरूप प्रदान किया नाथ सम्प्रदाय के आदि गुरु मत्स्येन्द्र नाथ और गोरखनाथ ने। नाथ सम्प्रदाय के इन सिद्धों का यह समाज पर बहुत बड़ा अहसान है कि उन्होंने मन्त्र विज्ञान जैसे जटिल विषय के गूढ़ रहस्यों को साधारण जनों के लिए उपयोगी बना दिया एवं सुलभ कर दिया। साबर का अर्थ होता है अपरिष्कृत, यह तो माना जा सकता है कि साबर तन्त्र से न तो हमें अच्छा ज्ञान प्राप्त होता है। न ही इनके द्वारा हम मुक्ति मार्ग को पा सकते हैं, किन्तु इस विद्या में जितने भी प्रयोग हैं वे सब काम्य प्रयोग हैं। आज हमें यह विदित नहीं है कि इनमें कुछ तथ्य हैं या हम प्रमादवश इनको उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं, किन्तु इस विद्या में अचूक मन्त्र और तन्त्र प्रयोग हैं जो हमारे जीवन में आये विघ्न-बाधाओं को समूल नष्ट करने, सामान्य आकांक्षाओं को पूर्ण करने और एक सीमा तक रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए ग्राम्य अंचलों में आज भी प्रयोग किये जा रहे हैं। जहां इस विद्या के जानकार सर्वसाधारण को लाभ पहुंचाते हैं वहीं उनमें से कुछ अल्पज्ञानी अपने अहं और लोभ से प्रेरित होकर जनता को हानि भी पहुंचाते हैं। कई बार ऐसे लोग प्राकृत रोग-दोषों को भी झाड़-फूंक से दूर करने का ढोंग रचा कर रोगी का अहित कर डालते हैं। इसमें मुख्य कारण है ऐसे लोगों का विद्याव्यसनी न होना और निरक्षर व्यक्ति अहं और भ्रान्ति का शिकार हो जाये तो क्या आश्चर्य, दूसरे इनका जीवन जिस विश्वास और वातावरण में चलता है वहां सुविधा और सम्पर्क की बात थोड़ी रहती है। शाबर मंत्रों में आम बोल चाल की भाषा रहती है। इसमें न्यास, ध्यान, तर्पण, हवन-मार्जन आदि शास्त्रीय मर्यादाओं को पालने का बन्धन नहीं है। जहां शास्त्रीय मन्त्र तुरन्त कोई विश्वस्त कार्य नहीं कर सकते वहां साबर मन्त्र पूर्णतया लाभप्रद रहते हैं। रोग, भूत बाधा से मुक्ति दिलाने एवं चौकी बैठाने (अभिचार कर्म) में इनसे चमत्कारिक रूप से कार्य सम्पन्न हो जाते हैं। शाबर मंत्रों में आन, शाप, श्रद्धा और धमकी का प्रयोग ही किया जाता है और साधक का कार्य सम्पन्न हो जाता है। साबर मन्त्रों का रूप विचित्रता और विविधता लिए हुए मिलता है। शुद्ध बीज मंत्रों को लेकर ग्रामीण भाषा की शब्दावली को वाक्य रूप दे दिया जाता है। जिससे इन मन्त्रों में विचित्रता का आभास होता है, एक ही मंत्र में कई शैलियों के सम्मिश्रण के कारण इनमें विविधता आ जाती है। साबर मंत्रों में कुछ मंत्र तो ऐसे हैं जिन्हें देखकर आश्चर्य होता है क्योंकि उनका वाक्यगत कोई अर्थ नहीं निकलता जैसे सिर दर्द दूर करने का मन्त्र है:-

''हजार घर घाले एक घर खाय, आगे चले तो पीछे जाय, फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा॥''

प्रत्यक्ष में इस शब्दावली को निरर्थक कहा जा सकता है किन्तु इसका प्रभाव असाधारण रूप से पड़ता ही है। शाबर मन्त्र प्रायः संस्कृत, प्राकृत और क्षेत्रीय भाषाओं में रचे गये हैं। कुछ एक मंत्रों में कई भाषाओं का समावेश कर दिया गया है। तो कई-एक मंत्रों में ठेठ क्षेत्रीय भाषा तथा ग्राम्य लहजा, शैली और कल्पना भी। अधिक मन्त्र हिन्दी भाषा में मिलते हैं चूंकि हिन्दी एक बड़े भू-भाग की बोलचाल की भाषा प्राचीन काल से रही है। एक बात और भी है कि जहां शास्त्रीय मन्त्रों में षडंग (ऋषि, देवता, बीज, शक्ति, छन्द-कीलक) की आवश्यकता रहती है वहां शाबर मंत्रों में इनकी कोई आवश्यकता नहीं है मन्त्र ही अपने आप में पूर्ण हैं। शाबर मन्त्रों में श्रद्धा ही प्राण हैं, इसी के दृढ़ और विस्तार हो जाने पर शाबर मन्त्र अपना प्रभाव और फल दे देते हैं। साबर मन्त्रों में दूसरा प्रभाव सौगन्ध के रूप में देखने को मिलता है। यह सौगन्ध आन के रूप में दिखाई जाती है जिसमें गाली, शाप जैसी स्थितियों का उल्लेख होता है जैसे:--**''हे अमुक देव! तू मेरा कार्य कर अगर मेरा कहा नहीं करेगा तो अपनी माता की शैय्या पर पग धरे, चमार के कुंड में गिरे, धोबी की नांद में कंकर बनकर पड़े इत्यादि।''**

इस प्रकार का व्यवहार समाज के दृष्टिकोण से उचित नहीं कहा जा सकता, किन्तु शाबर मन्त्र के साधक का व्यवहार वैसे ही क्षम्य है जैसे किसी अबोध बच्चे की की गई अभद्रता को माता-पिता अपने वात्सल्य और बच्चे की अवस्था के कारण क्षमा कर देते हैं। बच्चा चूंकि छल-कपट से दूर होता है उसे अपनी जिद के आगे कुछ सूझता नहीं और वह कहनी-अनकहनी कह जाता है, ठीक यही हाल शाबर मन्त्र साधक का होता है, वह भी बाल-सुलभ सरलता के कारण, श्रद्धा और विश्वास के बल पर मन्त्र साधना का अधिकार और सिद्धि प्राप्त कर लेता है।

शाबर मन्त्रों में सबसे बड़ी खूबी यह है कि इनमें अधिक झंझट नहीं है ये सरलता से सिद्ध हो जाते हैं। साबर मंत्रों में गुरु की भी इतनी आवश्यकता इसलिए नहीं रहती क्योंकि इस विद्या के प्रवर्तक स्वयं सिद्ध गुरु गोरखनाथ हैं। इतने पर भी किसी निष्ठावान साधक को गुरु बना लेना लाभ देगा, क्योंकि साधना में आने वाले विघ्नों से वह बचा लेगा, शाबर मन्त्रों की साधना करते समय ब्रह्मचर्य और व्रतोपवास का पालन किया जा सके तो अधिक अच्छा रहे अन्यथा साधन करते समय शुद्ध होकर बैठना चाहिये। परोपकार पुण्य है और परपीड़न पाप। यदि हम इस दृष्टिकोण से सोचें तो दैहिक, मानसिक रोगों का शमन करने वाले मन्त्रों को सिद्ध करना चाहिये। इससे हमें दोहरा लाभ मिलेगा, एक तो हम परोपकार का पुण्य अर्जित करेंगे दूसरे अपने पूर्वजों की धरोहर को सहेजेंगे भी।

नीचे कुछ शाबर मन्त्र दिये जा रहे हैं। मन्त्र व्यवहारिक विषय है। धैर्य और विश्वास से अपना लेने पर सिद्धि मिलेगी ही। असफलताएं और विघ्न हर क्षेत्र में आते हैं, परन्तु इनसे घबराने से काम नहीं चलेगा। साधना करते समय गुठली को प्रतिपल उखाड़ कर देखने की (कि उगी या नहीं) बाल सुलभ चंचलता मत रखिये, आतुर मत होईये। एकनिष्ठ होकर करते रहिये।

प्रेत बाधा निवारण के लिए:-'' ॐ नमो दीप मोहे दीप जागे पवन चले पानी चले, शाकिनी चले डाकिनी चले, भूत चले, प्रेत चले, नौ सौ निन्यानवे नदी चले हनुमान वीर की शक्ति, मेरी भक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' किसी मंगलवार से किसी हनुमान मन्दिर में तेल का दीपक जलाकर इस मन्त्र का एक लाख पच्चीस हजार जप करें तो यह सिद्ध हो जाता है। सिद्ध मन्त्र से रोगी को सामने बिठाकर मोर पंख से १०८ बार मन्त्र बोलकर झाड़ा देना चाहिये।

पीलिया निवारण के लिए:-'' ॐ नमो वीर वेताल असराल, नार करे तू देव खादी तू बादी, पीलिया कूं भिदाती कारे झारे पीलिया रहे न एक निशान, जो कहीं रह जाय तो हनुमन्त की आन, मेरी भक्ति गुरु की शक्ति फुरो मन्त्र ईश्वरी वाचा।'' ग्रहण काल में इस मन्त्र को जप कर सिद्ध करलें। पीलिया के रोगी को सामने बिठा कर उसके सिर पर कांसे के बरतन में तिल्ली का तेल डालकर रखें और मन्त्र का जप करते हुए उसे कुशा (डांभ) से चलाते रहें ऐसा तीन दिन करें तो तेल पीला पड़ जायेगा और रोगी रोग मुक्त हो जायेगा।

घर की रक्षा के लिए:-''या अल्लाह पाक इस आंगन को मैं करता हूँ आज बन्द, हजरत सुलेमान की बरकत से बन्द, हजरत मूसा के हुकुम से बन्द, हजरत अली की शमशीर से बन्द, हजरत अहमद के कलाम से बन्द, या रहमान की रहमत से बन्द, या करीम के करम से बन्द या खालिक की बरकत से बन्द या मालिक की रहमत से बन्द या अल्लाह पाक मालिक रब्बुलगफूर, हमारी इस दुआ को तू करले कबूल, ला इलाहाइल्लल्लाह मुहम्मदुर्र सूलल्लाह।'' नौचन्दी की जुमेरात को इस मन्त्र को जाप कर सिद्ध कर लेने के पश्चात् सोते समय वजु कर के मन्त्र का उच्चारण कर लोटे के पानी में फूंक मारें यह क्रिया पांच बार करें, पानी को घर में छिड़क दें और ताली बजा कर सो रहें।

गणपति सिद्धि मन्त्र:- ॐ गणपति गणपति बसे मसान, जो फल मांगूं देते आन। पंजे लड्डू सेर सन्दूर भर आन आन आनन्दपुर। न द्वैतीभान फूल फलन्त जागे भरल्यावे तो एक फूले हाथी जो तू मोहन रहे मूवा बाल साथ करी जाऊं तो मुट्ठी करो।

भाद्रपद की गणेश चतुर्थी से इस मन्त्र को नित्य १०८ बार जपें यह क्रम १०८ दिन तक चलना चाहिये। इस से गणपति प्रसन्न होकर मन की इच्छा पूर्ण करते हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मृत्यु सूचक चिह्न

पुष्पं यथापूर्व रूपं फलस्येह भविष्यतः।
तथालिंगमरिष्टाख्यं पूर्व रूपमरिष्यतः॥
नत्वरिष्टिरस्य जातस्य नाशोस्ति मरणादृते।
मरणं चापि तन्नास्ति यत्रारिष्ट पुरःसरम्॥

अर्थात जिस तरह फल लगने वाले वृक्ष पर पहले फूल आता है, पश्चात् फल। इसी प्रकार मरण से पूर्व अरिष्टों द्वारा मरण काल, मृत्युकाल का परिचय मिलता है। शास्त्रों में वर्णित बहुशः मरण चिह्नों में से कुछ अरिष्टों का उल्लेख नीचे सप्रमाण दिया जाता है।

१. निजस्य प्रतिविम्बस्य निश्चलेपृदकादिषु।
उत्तमांगं न पश्येत् यःषणमासेन विनश्यति॥

अर्थात् स्थिर जल में जो व्यक्ति अपनी छाया मस्तक हीन देखे, वह छः महीने में मृत्यु को प्राप्त होगा।

२. करावरुद्ध श्रवणः संशृणोति न च ध्वनिम्।
स्थूलः कृशः कृशः स्थूलस्तदामासान्नवर्त्तते॥

हाथों के द्वारा दोनों कान बन्द कर लेने से बाहर का शब्द सुनाई नहीं पड़ता है, किन्तु कानों में वायु का एक प्रकार अस्पष्ट अव्यक्त शब्द सुनाई पड़ता है। यही स्वाभाविक नियम है, पर यदि यह स्वाभाविक शब्द भी जिसे न सुनाई पड़े, और यदि मोटा आदमी अकस्मात् दुबला और दुबला मोटा हो जाए। को एक महीने में वह मृत्यु को प्राप्त होगा।

३. विधाय कर्णनिर्घोषं न श्रृणोत्यात्मसम्भवम्।
चक्षु षोर्नश्यतिर्ज्योतिर्यस्य सोऽपि न जीवति॥

ऊपर कहे दूसरे नियमानुसार हाथों से कानों के बन्द करने पर बाहर का कोई शब्द स्पष्ट नहीं सुन पड़ता पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द स्पष्ट सुनाई देता है। यदि किसी को कान बन्द करने पर अपने मुख से कहा हुआ शब्द भी सुनाई नहीं देता हो और नेत्रों की ज्योतिः अकस्मात् नष्ट हो जाए तो वह मनुष्य भी न बचेगा।

४. नासिका वक्रतामेति कर्णोयातोनतिंपुनः।
नेत्रं वाष्पं क्षरेद्र यस्य सगच्छेद् यममन्दिरम्॥

नाक टेढ़ी हो गई हो, कान नीचे की ओर ढल पड़े हों और नेत्रों से जल बहता हो, चाहे एक से और चाहे दोनों से, ऐसा मनुष्य शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होगा।

५. सुस्नातस्या पियस्याशु हृदयं परिशुष्यति।
चरणौ च करौचापि त्रिमासं तस्य जीवितम्॥

स्नान करते ही जिसकी छाती का जल और हाथ पैर तुरन्त सूख जायें वह तीन महीने जीवित रहेगा।

६. भाद्रंऽह्निवासरे सूर्येछाया सूर्यस्यनिर्मलाम्।
निश्चलाप्सुन पश्येत् यःषणमासेन समृत्युभाक्॥

भाद्रपद महीने के रविवार को दिन में जो मनुष्य जल में सूर्य की छाया न देख पावे, तो छः महीने में उसकी मृत्यु हो।

७. घृतेतैले तथादर्शे तोयेच तनुमात्मनः।
अशिरस्कञ्चयः पश्येद् मासादूर्ध्व न जीवित॥

जिस मनुष्य को तये घी, तेल, दर्पण और जल में अपनी देह मस्तक रहित दिखाई पड़े, वह एक महीने से अधिक जीवित नहीं रहेगा।

८. यस्य वीर्य मलं मूत्रं क्षुत्त नूनंनिरन्तरं।
इहैकदा भवेद्वापि अब्दं तस्ययुरुच्यते॥

जिस मनुष्य का वीर्य, मल, मूत्र और क्षुत एक साथ निकले तो समझ लो उसकी आयु एक वर्ष शेष है।

९. मूत्रं पुरीषं वायुश्च समकालं प्रजायते।
तदासौचलितो ज्ञेयो दशाहे ध्रियते ध्रुवम्॥

जिस मनुष्य का मूत्र, मल, वायु (पाद) एक साथ चलते हों तो उसकी दस दिन में निश्चय ही मृत्यु होगी।

१०. मैथुने संप्रवृत्ते यो मध्येवान्ते क्षछिक्कति।
निश्चितं पञ्चमेमासि धर्मराजातिथिर्भवेत्॥

जिस मनुष्य को स्त्री संसर्ग में प्रवृत होकर, बीच में और अंत में छींक आये तो वह पांचवें महीने अवश्य धर्मराज का अतिथि होगा, अर्थात् उसकी पांचवें महीने मृत्यु होना निश्चय समझना चाहिए।

११. यस्यावैस्नातगात्रस्य कपोलमाशु शुष्यति।
पीतञ्चापि जलं पश्येत् दशाहं तस्य जीवनम्॥

जिस मनुष्य के स्नान करते ही गाल तुरन्त सूख जायें और जो जल को पीले रंग का देखे, वह दस दिन मात्र ही जीवित रहेगा।

१२. यस्य वक्तेशवगन्धो गात्रे दसनयोरपि।
तस्यायु मासमेकं स्यात् योगिनामपिनोऽधिकम्॥

जिस मनुष्य के मुख, शरीर और वस्त्रों में मुरदे की सी गंध आती हो, वह चाहे योगी भी क्यों न हो, तो भी वह एक महीने भर ही जी सकेगा, अर्थात् एक महीने पश्चात् मर जाएगा।

१३. यस्यवै भुक्तमात्रस्य हृदयं वाध्यते क्षुधा।
जायते दन्तहर्षश्च सगतायुर्न संशय॥

जिस मनुष्य को भरपेट खा लेने के बाद भी भूख मालूम पड़े और दन्त हर्ष उत्पन्न हो तो उसकी आयु समाप्त हुई समझे।

१४. अहोरात्रं यदैकत्र बहते यस्य मारुतः।
तदातस्य भवेदायुः सम्पूर्ण वत्सरत्रयं॥

जिसके दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ एक रात-दिन श्वास वायु प्रवाहित हो उसकी आयु तीन वर्ष में पूर्ण होगी।

१५. अहोरात्रं द्वयं यस्य पिङ्गलायां सदागतिः।
तस्य वर्षद्वयं ज्ञेयं जीवितं तत्ववेदिभिः॥

जिस मनुष्य के दक्षिण नासिका छिद्र से ही दो दिन-रात लगातार श्वास चलता रहे, उसको दो वर्ष तक जीवित समझो अर्थात् दो वर्ष के बाद मर जाएगा।

१६. त्रिरात्रं बहते यस्य वायु रेकपुरे स्थितः।
सम्वत्सरं यावदायुः स्यात् वदन्ति मनीषिणः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

यदि किसी मनुष्य के किसी* एक नासिका छिद्र से तीन दिन-रात श्वास वायु बहती रहे तो उसकी आयु एक वर्ष मनीषियों ने बताई है।

१७. एकादिषोडशाहेषु यदि भानुर्निरन्तरम्।
वहेत् यस्य च व मृत्युः शेषाहेन च मासिकैः॥

यदि किसी मनुष्य का एकादि क्रम से १६ दिन दक्षिण नासिका छिद्र से श्वास वायु प्रवाहित हो तो उसकी मृत्यु एक महीने में होगी।

१८. सम्पूर्ण बहते सूर्यचन्द्रमानैव दृश्यते।
पक्षेण जायते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्॥

यदि किसी के दक्षिण नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहती रहे और एक बार भी वाम नासिका से न बहे तो पक्ष वा १५ दिन में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

१९. सम्पूर्ण बहते चन्द्रः सूर्य्यो नैव च दृश्यते।
मासेन दृश्यते मृत्युः कालज्ञानेन भाषितम्॥

यदि किसी मनुष्य के वाम नासिका छिद्र से पूरे दिन श्वास वायु बहता रहे और एक बार भी दक्षिण नासिका से बहता न दीखे तो एक महाने में उसकी मृत्यु होगी, ऐसा कालज्ञानी महात्मा कहते हैं।

२०. रात्रौचन्द्रोदिवासूर्यो बहेत् यस्यनिरन्तरम्।
विजानीयास्तस्य मृत्युः षण्मासाभ्यन्तरेध्रुवम्॥

जिस मनुष्य के वाम नासिका से रात्रि में और दक्षिण नासिका से दिन में बराबर श्वास चलता रहे, उसकी मृत्यु छः महीने के भीतर निश्चय जानो।

* सब लोग यही जानते हैं कि दोनों नासिका छिद्रों से एक साथ ही समान श्वास वायु चला करती है, पर यह लोगों का भ्रम है। एक-एक घण्टे एक नासिका छिद्र से प्रबल रूप से और दूसरे एक छिद्र से बहुत ही निर्बल अथवा नहीं के समान श्वास वायु बहता है। पर दोनों से समान वायु कभी-कभी ही बहा करती है, जो भी परमायुनाशक और विपद् आदि का पूर्व रूप होता है। इस विषय को विस्तार रूप से जिन्हें देखना हो वह हमारी "मनोकामना सिद्धि" और "वनौषधि चिकित्सा" नामक ग्रन्थ में देखें।

२१. अरुन्धतीं ध्रुवञ्चैव विष्णोस्त्रीणिपैदानिच।
आयुर्हीना न पश्यन्ति चतुर्थ मातृमण्डलम्॥

जिस मनुष्य की आयु हीन अर्थात् समाप्त हो जाती है, उसे अरुन्धती, ध्रुव तारा, विष्णु के तीन पद और चौथा मातृमण्डल दिखाई नहीं पड़ते।

सूचना — यह तारागण आकाश में सदैव उदय होते हैं, पुराने आदमी बहुधा इन्हें जानते हैं, जो न जानते हों वे किसी से पूछकर जान सकते हैं।

दूसरी बात इन सबको मनुष्य देह में भी स्थित बताया है, यथाहि —

२२. अरुन्धती भवेञ्जिह्वा ध्रुवो नासाग्रमुच्यते।
भ्रुवोर्मध्ये विष्णु पदं तारके मातृमण्डलम्॥

अर्थात् जीभ की अरुन्धती, नासिका का अग्रभाग ध्रुव, दोनों भोहों के बीच का भाग विष्णु पद और आंखों का तारा मातृमण्डल कहलाते हैं।

जो मनुष्य इन सबको अपनी आंखों से बिना दर्पण आदि के नहीं देख सकता उसकी मृत्यु समीप अर्थात् आयु समाप्त समझनी चाहिए।

आवश्यक वक्तव्य

ऊपर कहे हुए पदार्थों में से आँख का तारा बिना बताये अपने नेत्रों से नहीं देखा जा सकता। अतः इसके लिये महापुरुषों ने एक सहज उपाय बताया है और वह यह कि नेत्र बन्द करके नेत्र के कोने व कोरों को किसी भी अंगुली से किञ्चित् दबाओ, तो जिस कोने को दबाओगे उसके सम्मुख विपरित दिशा में आँखों के मध्यवर्ती तारा की आकृति एक गोल ज्योति मण्डल दीख पड़ेगा। इसे मातृ-मण्डल कहते हैं, यद्यपि यह सदैव ऐसा करने पर दिखाई दिया करता है, पर जिसकी मृत्यु सन्निकट होती है उसे नहीं दिखाई देता।

२३. दन्ताश्चदृषणौ यस्य न किञ्चिदपि पीड्यते।
तृतीये मासिचावश्यं कालग्रासो भवेन्नर॥

जिस मनुष्य के दाँत और अण्डकोष को जोर से दबाने पर कुछ भी वेदना नहीं होती वह ३ महीने में अवश्य मृत्यु को प्राप्त होगा।

२४. मध्यमांगुलिनां त्रितयं वक्रयातिरुजम्बिना।
षण्मासेतस्यमृत्युः स्याद्यस्यकण्ठोऽपिशुष्यति॥

जिस मनुष्य के हाथ की बीच की तीन अंगुलियां तर्जनी, मध्यमा और अनामिका बिना किसी कारण के टेड़ी हो जायें और बिना किसी रोग के जिसका गला सूखता हो तो उसकी छः महीने में निश्चय मृत्यु होगी।

२५. वाष्पं पुरीष मूत्राणिपश्येद्रूप्यसुवर्णवत्।
प्रत्यक्षमथवा स्वप्ने दशमासोऽत्र जीवति॥

जो मनुष्य जाग्रत वा निद्रितावस्था वा स्वप्न में मलमूत्र, सुवर्ण तथा चाँदी के समान देखें, वह १० महीने में मरेगा।

२६. मर्त्यैर्लक्षितलक्षणैर्हिसलिले भानुर्यदादृश्यते।
क्षीणोदक्षिणपश्चिमोत्तरपुर षट्त्रिद्विमासकतः॥
मध्यं छिद्रमिदंभवेत् दशदिनं धूमाकुलंतद्दिने।
सर्वज्ञैरपि भाषितं मुनिवरैरायुः प्रमाणं स्फुटम्॥

सर्वज्ञ मुनिवर कहते हैं कि जिस मनुष्य को जल में सूर्य की छाया दक्षिण की ओर कटी दीखे तो वह छः महीने, पश्चिम की ओर कटी दीखे तो तीन महीने और उत्तर की ओर कटी दीखे तो दो महीने में और पूर्व की ओर कटी दीखे तो एक महीने में, छाया के बीच में छिद्र दीखे तो दस दिन में और छाया को धुंए के रंग देखे तो उसी दिन मृत्यु होगी।

२७. जो मनुष्य दीप बुझने पर उसकी गंध अनुभव नहीं करता और रात्रि में अग्नि को देखकर भय मानता है वह छः महीने से अधिक जीवित नहीं रह सकता।

२८. जिसके शरीर से अग्नि की गन्ध आती हो तो वह एक महीने के बाद मर जायेगा।

२९. दक्षिण की मुट्ठी बन्द करके नाक की सीध में और भौंहों के बीच में नेत्र के सम्मुख रखकर हाथ की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

कलाई को देखा जाता है तो वह बहुत ही पतली दिखाई पड़ती है यही स्वाभाविक नियम है। परन्तु मृत्यु के छ: महीने पहले से कलाई पतली मिली हुई नहीं दिखाई देती किन्तु अलग सी दिखाई देने लगती है।

३०. जिस मनुष्य के स्तन का चर्म असाद हो वह पांच महीने में यमालय में पहुँच जायेगा अर्थात् पांच महीने में मर जायेगा।

३१. जिस मनुष्य की छाती स्नान करते ही तुरन्त सूख जाय उसकी मृत्यु छ: महीने में अवश्य होगी।

स्वप्न फल विचार

मृत्यु से पूर्व जिस प्रकार शारीरिक विकार से पीछे कहे हुए लक्षण प्रकट होते हैं, उसी प्रकार अरिष्टजनक स्वप्न भी दिखाई पड़ते हैं। स्वप्नों का वर्णन वेद तक में पाया जाता है। मनुष्य जागृत अवस्था में जिन-जिन विषयों का चिन्तन करता और जिन वस्तुओं को इस जन्म में देखता व सुनता है अथवा पूर्व किसी जन्म में देखा वा सुना वा चिन्तन किया हो उन्हीं विषयों के सम्बन्धी अविकल अथवा भिन्न-भिन्न संयोग जनित अनेक प्रकार स्वप्न में देखता है अत: कैसा भी असम्बन्ध असामञ्जस्य भिन्न-भिन्न स्थान, भिन्न-भिन्न लोक आदि असम्भव से असम्भव स्वप्न भी क्यों न देखे जायें सब ठीक हैं। यद्यपि सम्पूर्ण स्वप्न सफल नहीं होते हैं। अत: यह भलीभाँति स्मरण रखने योग्य है कि कौन-कौन से स्वप्न ठीक नहीं होते और कौन-कौन से ठीक होते हैं। इनका संक्षिप्त वर्णन शास्त्रों से यहां उद्धृत कर देते हैं।

चिन्ताव्याधिसमायुक्तोनर: स्वप्नञ्चपश्यति।
तत्सर्व निष्फलं तात प्रयात्यवे न संशय:॥
जड़ोमूत्र पुरीषण पीड़ितश्च भयाकुल:।
दिगम्बरो मुक्तकेशो न लभते स्वप्नजं फलं॥

अर्थात् चिन्ता और व्याधि (रोग) रामायुत मनुष्य जो स्वप्न देखता है वह सब हे तात! निष्फल हैं इसमें संशय न करो।

मुत्र, पुरीष दु:खित, भयाकुल चित्त, बाल खुले और सोते में पहने हुए वस्त्र खुल जाने से अथवा नंगे होकर सोने वाले को जो स्वप्न दिखाई पड़ते हैं उनका फल कुछ नहीं होता।

दृष्ट्वास्वप्नञ्च निद्र:लुर्यदि निद्रां प्रयातिच।
———— नलभेत स्वप्नजं फलं॥
उक्त्वाकाश्यपगोत्राय विपत्तिं लभते ध्रुवं।
प्रकाशयेन सुस्वप्न: पण्डिते कश्यपान्वये॥

अर्थात् स्वप्न देखने के बाद फिर सो जाने से तथा काश्यपगोत्रज मनुष्य से स्वप्न का वर्णन कर देने से फिर उसका फल नहीं मिलता।

धातु विकार की दशा में कभी भी देखा स्वप्न दिखाई पड़े तो वह ठीक नहीं होता।

मृत्यु सूचक स्वप्न

१. जो मनुष्य लाल, श्वेत रस अथवा विष्ठा मूत्र को वमन होते देखे, उसकी केवल १० महीने आयु समझनी चाहिए।

२. जो कोई आदमी स्त्री को काले अथवा लाल वस्त्र पहने हुए हंसते, अपनी दाहिनी ओर जाते हुए देखे तो उसकी मृत्यु निकट समझनी चाहिए।

३. जो आदमी भयानक काले रंग के आदमी को हथियार लिये वा पत्थर से मारने को देखे तो उसकी उसी दिन मृत्यु होगी।

४. जो आदमी नंग धड़ंगा फकीर को नाचते, हंसते और क्रूर दृष्टि से अपनी ओर देखते देखे तो समझ लो कि शीघ्र ही मृत्यु होगी।

५. काले रंग का काले वस्त्र पहने और लोहे का डंडा हाथ में लिये सन्मुख खड़ा दीखे तो ३ महीने में मृत्यु होगी।

६. जो मनुष्य काले रंग की स्त्री दोनों बाहुओं से पकड़े वह छ: महीने पश्चात् मृत्यु को प्राप्त होगा।

७. अपने शरीर को गन्ध पुष्प आदि से भूषित देखे तो समझ लो ८ महीने से अधिक नहीं बचेगा।

८. राख के ढेर अथवा दीपक के ऊपर अपने को खड़े हुये देख पड़े तो ८ महीने मात्र जीवित रहना चाहिए।

९. अपने मस्तक वा शरीर पर सूखी लकड़ी अथवा तृण रखा हुआ देखने से ६ महीने जीवित रहना चाहिए।

१०. श्रृगाल, कुक्कुर, शूकर, शकुनि, राक्षस, असुर, पिशाच, भूत, प्रेत, पतङ्ग, कुरङ्ग अथवा श्येन पक्षी में से किसी का दर्शन हो अथवा इन्हें खाते हुए देखे तो एक वर्ष में निश्चय यमलोक को जाना होगा।

११. अपने मुख से सब दांत गिर पड़े हुए देख पड़े तो शीघ्र मृत्यु होगी।

१२. बन्दर की पीठ पर चढ़कर पूर्व की ओर जाता हुआ दिखाई पड़े तो पांच दिन में मरण होगा।

१३. गधा व भेंस की पीठ पर चढ़ कर दक्षिण की ओर जाता देख पड़े तो उसकी मृत्यु सन्निकट समझो।

विशेष ध्यान देने योग्य

१४. उक्त मृत्यु सूचक स्वप्नों में सब ही एक आदमी को दिखाई नहीं पड़ते हैं। इनमें से कोई-कोई स्वप्न किसी-किसी को एक अथवा अधिक दिखाई पड़ते हैं। पर २१ और २७ नम्बर पर लिखित चिह्न प्रत्येक को देख पड़ते हैं। यह जब देख पड़ें तब से नित्य प्राय: तारामण्डल को देखते रहना चाहिए। जिस दिन तारामण्डल न दिखाई दे उस दिन से दशवें दिन मृत्यु होना निश्चय जान लें। और संसार से मोह छोड़ पुण्य काम कर परमेश्वर का स्मरण करते हुए मृत्यु के लिये प्रस्तुत रहना चाहिए। और "अन्तेयादशीमति गतिर्भवतितादृशी" के लिये मन को स्थिर करना चाहिए। यदि स्थिरता न हो सके क्योंकि "मनश्चञ्चलमस्थिरम्" तो उत्तम भावना रखनी चाहिए कि जिससे आगामी जन्म उत्तम कुल में प्राप्त हो।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

स्वप्न विचार

जीव की तीन अवस्थायें कही गई हैं- जागृत, सुषुप्ति और स्वप्न। पूर्ण बोध युक्त रहकर क्रियाशील होने को जागृत, सोने अर्थात निद्रावस्था को सुषुप्ति तथा सोने और जागने (सुषुप्ति एवं जागृत) के बीच की अवस्था स्वप्न कहलाती है। स्वप्न के मुख्यत: सात भेद हैं। बहुत लम्बे तथा बहुत छोटे स्वप्न प्राय: निष्फल होते हैं। स्वप्न का फल कब मिलेगा। इसके बारे में शास्त्रकारों का मत है कि रात्रि के प्रथम प्रहर में देखे गए स्वप्न का फल एक वर्ष पश्चात्, दूसरे प्रहर में देखे गये का छ: मास में, तीसरे प्रहर में देखे गये का तीन मास में, चौथे प्रहर में देखे गये का एक मास में, अरुणोदय अर्थात् सूर्योदय से कुछ काल पूर्व में देखे गये स्वप्न का फल एक सप्ताह में मिल जाता है।

स्वप्न	फल
आकाश में उड़ना	लम्बी यात्रा, पदोन्नति हो
आकाश से गिरना	कष्ट मिले, अवनति हो
अनाज भरना	धन लाभ हो
आग देखना	धन प्राप्ति हो
आग उठाना	कष्ट मिले
अनाज बेचना	हानि हो
अंगूठी पहनना	सुन्दर स्त्री मिले
आम खाना	लाभ मिले
आंधी देखना	यात्रा में कष्ट, चिन्ता
अनार खाना	अधिक धन लाभ हो
ऊंट देखना	लाभ, उन्नति हो
ऊंट से गिरना	अवनति हो
हंसना	कठिनाई आवे
रोना	अच्छा समाचार मिले
शत्रु के साथ खाना	समझौता हो
अपने को मृत देखना	चिन्तामुक्ति, हर्ष मिले
अपने को बूढ़ा देखना	सम्मान मिले
बाल कटाना	व्यापार में हानि
हाथ, पैर धोना	चिन्ता मुक्ति
मां का आलिंगन करना	सौभाग्य प्राप्ति
गर्भवती का आलिगन	कष्ट, हानि
सफेद मांस देखना	लाभ मिले
काला मांस देखना	सन्तान को कष्ट
अपना कटा पैर देखना	यात्रा में विघ्न हो
स्वयं को जलते देखना	बदनामी हो
सफेद वस्त्र पहनना	लाभ मिले
काले वस्त्र पहनना	हानि चिन्ता
पीले वस्त्र पहनना	दमा रोग हो
लाल वस्त्र पहनना	शुभ, प्रशंसा मिले
वस्त्र फटे देखना	चिन्ता से मुक्ति मिले
बर्फ गिरती देखना	शत्रु वृद्धि हो
सूखा वृक्ष देखना	लाभ मिले
दूध देखना	शत्रु नष्ट हो
शराब फेंकना	मन को शान्ति मिले
शराब पीना	कष्ट मिले
कई प्रकार की शराब मिलाते देखना	झगडे, फसाद में फंसे, अपवाद फैले
जल पीना	सौभाग्य सूचक
अपने को नंगा देखना	सम्पत्ति की हानि
अपने को गंदगी के ढेर पर बैठे देखाना	कठिनाइयों का सामना करना पड़े
सापों को पांवों से रौंदना	शत्रु का नाश हो
मिठाई खाना	विपत्ती आये
तलवार लिए व्यक्ति देखना	किसी से झगड़ा हो
बिच्छू काटे	बीमारी हो
अण्डे खाना	व्यर्थ का झगड़ा हो
कुत्ता भौंकता दिखे	शत्रुओं का नाश हो
चूहा दिखाई दे	शुभ है, लाभ हो
बर्रे (भिड, ततैया) दिखें	शत्रु परास्त हों
मरा बैल देखना	सूखा पड़े
सुरमा लगाना	रोग हो
सूर्य देखना	उच्चाधिकारी से मिलना
बादल देखना	उन्नति हो
थूक देखना	परेशानी हो
थूकना	खर्चा बढ़े
भैंस देखना	मुसीबत आये
हंस देखना	प्रतिष्ठा बढ़े
भेड़िया देखना	राजभय हो
अपने बाल सफेद देखना	आयु बढ़े
मल (टट्टी) खाना	धन मिले
मल त्यागना	व्यय बढ़े
कोई फल दे	पुत्र हो, लाभ हो
फूल देखना	प्रेमी से मिलन हो
पकवान खाना	प्रसन्नता हो
पान खाना	स्त्री संग हो
पिंजड़ा देखना	कारागार मिले
तीतर देखना	अच्छा समाचार मिले
हरा वन देखना	अच्छा समाचार मिले
सूखा वन देखना	चिन्ता हो
तालाब भरा देखना	दूसरे से धन मिले
मुर्दा देखना	स्वास्थ्य लाभ हो
स्त्री से सहवास करना	धन प्राप्ति हो
चन्द्रमा देखना	प्रतिष्ठा मिले
ग्रहण देखना	आफत आये
तेल पीना	रोग हो
खाना बनाना	बच्चे बीमार हों
तिल खाना	बदनामी हो
घोड़े पर चढ़ना	व्यापार में लाभ
घोड़े से गिरना	व्यापार में हानि
बांहे कटी देखना	भाई की मृत्यु हो
सुअर देखना	आयु कम हो
बुलबुल देखना	विद्वानों से मिलन हो
चित्र देखना	राज्य से लाभ
जुआ खेलना	आर्थिक तंगी
कुएं में गिरना	परेशानी हो
कुत्ता काटे	शत्रुभय हो
सफेद सांप काटे	लाभ हो
काला सांप काटे	हानि हो
लाल सांप काटे	शौर्यपूर्ण कार्य करे
पीला सांप काटे	रोग हो
बरात देखना	रोगी हो
रीछ देखना	अच्छा समाचार मिले
विष खाना	चिन्ता, शोक हो
सोना पाना	हानि हो
सांप पकड़ना	शत्रु का नाश हो
सांप मारना	कष्ट से राहत मिले
चीता देखना	असफलता मिले
विद्यालय से भागना	सफलता मिले
ढोलक बजाना (स्त्री)	शीघ्र विवाह हो
ढोलक बजाना (पुरुष)	कठिनाई आये
हस्ताक्षर करना	धन हानि हो
स्याही देखना	इच्छाएं पूरी हों
बिल्ली देखना	हानि, भय
चूहा काटे	दुर्घटना से बचाव
रथ पर सवारी करना	उच्च पद मिले
जिह्वा (जीभ) कटी देखना	मन्त्री पद मिले
वमन (उलटी) पीना	राज्य पद मिले
जीभ पर लिखना	विद्या प्राप्ति हो
नगर व ग्राम को घेरना	मुखिया पद मिले
गले में मोती का हार पहनना	राज्य पद मिले
कानों में कुण्डल पहनना	राज्य पद मिले
मुकुट धारण करना	राज्य पद मिले
लिङ्ग कटा देखना	स्त्री की प्राप्ति हो
वीर्य पान करना	धन मिले
मूत्र पान करना	धन मिले
रक्त पान करना	धन मिले
शरीर से रक्त निकलना	धन मिले
अपना सिर काटना	धन मिले
गुदा से जल पीना	धन मिले
घर जलता देखना	धन मिले
इन्द्र धनुष देखना	धन मिले
शिव मंदिर देखना	धन मिले
धुंआ पीना	लक्ष्मी मिले
अग्नि खाना	लक्ष्मी मिले
मोती, मूंगा, कौड़ी देखना	धन प्राप्ति हो
चावल खाना	धन प्राप्ति हो
मूंग खाना	धन प्राप्ति हो
सूखे मेवे देखना	धन प्राप्ति हो
इलायची, लौंग इत्यादि खाते देखना	धन मिले
गन्ना चूसना	लक्ष्मी बढ़े
कुंकुम लगाना	कष्ट निवृत्ति हो
देवी, देवता देखना	कष्ट निवृत्ति हो
सुगन्धित पदार्थ देह पर लगाना	सम्मान मिले
झाग वाला दूध पीना	सम्मान मिले
फल खाना व देखना	सम्मान मिले
बादलों, तारों को छूना	सम्मान मिले
मक्खी, मच्छर काटें	स्त्री लाभ मिले
हाथ में वीणा लेना	स्त्री लाभ मिले
अगम्य स्त्रियों से कामुक क्रीड़ा करना	स्त्री लाभ मिले
गेहूँ, जौ, सरसों देखना	विद्या लाभ हो
भगवान विष्णु देखना	विद्या लाभ हो
सरस्वती देखना	विद्या लाभ हो
जूते फटे देखना	सन्तति नाश हो
सूअर पर बैठी स्त्री पकड़ें	मृत्यु हो
सिंह, मगरमच्छ पकड़ें	कारागार मिले
गधे पर सवार होना	मृत्यु हो
लाल वस्त्र वाली स्त्री से रमन करना	मृत्यु हो
अपना विवाह देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध, नोचते देखना	मृत्यु हो
कौवे, गीध सिर पर बैठे	मृत्यु हो
पिशाच, प्रेतों के साथ मदिरा पीना	मृत्यु हो
सूर्य अस्त होते देखना	मृत्यु हो
कान में सर्प घुसना	भयंकर पीड़ा हो
अपना मांस खाना	अङ्ग-भङ्ग हो
स्त्री का स्तन पान करना	मृत्यु हो
शमशान में मदिरा पीना	मृत्यु हो
पर्वत की गुफा में जाना	आपत्तियां आएं
दांतों का गिरना	धन हानि हो
नाक-कान कटना	धन हानि हो
जलमुर्गी, उल्लू देखना	धन हानि हो
हिरण, बकरा देखना	धन हानि हो
जूते चोरी चले जाना	स्त्री वियोग हो
दोनों हाथ कटे देखना	माता-पिता की मृत्यु
छिपकली देखना	दुर्भाग्य सूचक
दर्पण में मुख देखना	सन्तान प्राप्त हो
सोने, चांदी की टट्टी करना	दश माह में मृत्यु हो
अचानक मोटा होना	आठ माह में मृत्यु हो
अचानक पतला होना	आठ माह में मृत्यु हो
अपने को कीचड़ में फंसे	शीघ्र मृत्यु हो
केंचुए देखना	गुप्त शत्रु हों
हाथों में दस्ताने पहनना	सम्मान मिले
बकरी देखना	धन लाभ हो
ओले गिरते देखना	दु:ख, कष्ट मिले
टोपी फटना	मानहानि हो
टोपी सिर से गिरना	मानहानि हो
स्वर्ग में जाना	यश-गौरव मिले
नर्क में जाना	दु:ख क्लेश हो
सीढ़ी पर चढ़ना	उन्नति हो
शहतूत का पेड़ देखना	धन-सम्पत्ति बढ़े

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

छिपकली (कोढ़किरली) पतन फल

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	राज्यलाभ	नीचे का होंठ	धन नाश
नाक की नोक	व्याधि	हृदय	धन लाभ
बायीं बांह	राज भय	उदर	भूषण लाभ
दाहिनी बांह	राजा समान सुख	कन्धा	विजय
ललाट	बन्धु मिलन	स्तन	दुर्भाग्य सूचक
गुल्फ	कारावास	नाभी	बहुत धन मिले
जानु	शुभ लाभ	नाखुन	धान्य लाभ
नेत्र	धनागम	दाहिने अंगुष्ठ	धन लाभ
भौंह	राज्याधिकार प्राप्ति	बायें अंगुष्ठ	हानि, दुःख
वाम मणिबंध	बदनामी	बायां पैर	नाश
दक्षिण मणिबंध	धन लाभ	दायां पैर	यात्रा
कपोल	स्त्री सुख	जंघा	शुभ लाभ
कण्ठ	शत्रु नाश	पादमध्य	स्त्री नाश
बायें कान	बहुलाभ	पादान्ते	मृत्यु
दायें कान	आयु वृद्धि	केशान्ते	मरण तुल्य कष्ट
मुख	मिष्ठान्न भोजन	पीठ पीछे	बुद्धि नाश
ऊपर का होंठ	ऐश्वर्य प्राप्ति	कटि प्रदेश	वाहन लाभ

अङ्ग स्फुरण विचार

अङ्ग	फल	अङ्ग	फल
सिर	यात्रा हो	बायीं भौंह	आदर, सम्मान
बायां माथा	प्रसन्नता	बायां कान	परेशानी
दायां माथा	कष्ट, यात्रा	दायां कान	पदोन्नति
दायीं आंख	खुशी होगी	गर्दन	लाभ, स्त्री सुख
बायीं आंख	स्त्री वियोग	जीभ	झगड़ा
भौंह के मध्य	प्रेम मिलन	नाक	खुशी हो
बायीं पलक	दुःख कष्ट	पेट	खुशखबरी मिले
दायीं पलक	सुख आनन्द	पीठ	बुरा समाचार मिले
दाहिनी कपोल	लाभ	अण्डकोष	भोगानन्द मिले
बायां कपोल	हानि, व्यय	दायीं बगल	ऐश्वर्य बढ़े
दायीं भौंह	पुत्र सुख	बायीं बगल	पद घटे

योगासनों का अभ्यास

१. साधना करते समय शरीर को चुस्त रखना चाहिए। किसी समय भी ढीलापन व आलस्य नहीं आने देना चाहिए। २. हर एक साधना के पश्चात् शव आसन करना चाहिए। ३. अपने आप को हर समय स्वस्थ और बलवान् मनन् करना चाहिए। ४. साधना करते, खाते-पीते तथा चलते समय हर हालत में रीढ़ की हड्डी को सीधा रखना। ५. प्रत्येक आसन का अपना विशेष गुण व प्रभाव होता है। अतः यह आवश्यक है कि साधक अपनी प्रकृति व्यवसाय, आयु व ऋतु के अनुसार आसनों को करें। ६. रोगी साधक को चाहिए कि पूर्ण आरोग्यता प्राप्त होने तक ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करें। चक्रासन से मोटापा कम होता है व अनेक बीमारियों का ईलाज भी होता है जैसे:— १. यह कमर दर्द व गुर्दे के रोगों के लिए लाभकारी है। २. हर्नियां व नलों के रोगों से छुटकारा दिलाता है। ३. चक्रासन से पेट के वायु- विकार दूर होते हैं। ४. चक्रासन से पाचन शक्ति बढ़ती है।

वर्षा ज्ञान

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
१५	५०	४२	३९	३४	२९	३०	२८	२४	२१	१६	१५	१२

सूर्य के रोहिणी नक्षत्र पर रहते नीचे लिखे दिनों में जहां कहीं थोड़ी सी वर्षा हो तो इतने दिनों तक वहां वर्षा न होवे जैसे रोहिणी में सूर्य प्रवेश के प्रथम दिन में थोड़ी सी वर्षा हो तो उस दिन से ७२ दिन तक वर्षा की खेंच रहती है। सूर्य रोहिणी पर रहे उन दिनों से गर्मी ज्यादा पड़े तो आगे वर्षा श्रेष्ठ, राजाओं में विग्रह, थोड़ी वर्षा से संवत नष्ट, यदि अधिक वर्षा हो जावे और नदियों में वर्षा का जल भी चल पड़े तो अशुभ फल नष्ट होकर वर्षा अच्छी होती है। उन दिनों में बिजली वर्षा की कमी। अधिक दिन की बिजली में शुभ, बादल की दिशा में वर्षा की कमी, निर्मल दिशा में वर्षा अधिक होती है।

वर्षा ज्ञान ज्ञान सारणी से वर्षा जानने की रीति दिसम्बर, जनवरी, फरवरी, मार्च इन चारों मासों की तारीखों में जिन जिन तारीखों में जहाँ वर्षा होती है। उसके हिसाब से वर्षा होती है। उसके हिसाब से ही वर्षा ऋतु में जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्टूबर इन चार मासों में वहां वर्षा प्रायः हुआ करती है। प्राचीन ज्योतिष के दृष्टि विज्ञान के सिद्धान्त से आधुनिक समय के अनुसार भारत में १२ दिसम्बर के बाद ही शीतकाल में वर्षा साधारण रूप से होने का नियम है। जैसे मान लो कि शीतकाल में लुधियाना से १९ दिसम्बर को वर्षा हुई है तो वर्षा ऋतु में वहां-वहां जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार मान लिया कि शीतकाल में १५ जनवरी को देहली में वर्षा हुई है तो ऊपर की वर्षा ज्ञान सारणी यह पता देगी कि वर्षा ऋतु में वहां २९ जुलाई को वर्षा होगी। इसी प्रकार जैसे कि २२ फरवरी को शीतकाल में वर्षा हुई तो वहां ५ सितम्बर को वर्षा होगी। वर्षा ज्ञान के लिए शीतकाल में होने वाली वर्षा की तारीख वार टाईम सहित नोट करके देखने से वर्षा ऋतु की वर्षा का ज्ञान ठीक हो सकता है। विशेष सुगमता लिए मेघगर्भ तथा ग्रहों के रस नाड़ी चक्रादि का विचार करना चाहिए।

चक्रासन की विधि

भूमि पर सीधे लेट जाइये। और 3 बार 1 : 4 : 2 के अनुपात से पूरक कुम्भक व रेचक करना चाहिए। फिर दोनों हथेलियों को दोनों कन्धों के पास भूमि पर टेक लीजिए। पैरों को सिकोड़ कर श्वास की गति समान रखते हुए हाथों और पावों के बल कमर को धीरे-धीरे इस प्रकार उठायें कि वह गोलाकार हो जावे। जितनी देर हाथ व पैर सुख पूर्वक शरीर का भार सहन कर सकें इस आसन को करना चाहिए। पुनः धीरे-धीरे पूर्वावस्था में आ जाना चाहिए। यह आसन एक मिन्ट से शुरू करके तीन मिन्ट तक किया जा सकता है। जो इस तरह नहीं कर सकते उन्हें स्टूल का सहारा लेना चाहिए। योग के हर आसन जहां तक सम्भव हो अनुभवी योगाचार्य की देखरेख में ही करने चाहिए।

वर्षा ज्ञान सारणी

दिसम्बर	जून	जनवरी	जुलाई	फरवरी	अगस्त	मार्च	सितम्बर	अप्रैल	अक्टूबर
१	१४	१	१५	१	१५	१	१५	१	१५
२	१५	२	१६	२	१६	२	१६	२	१६
३	१६	३	१७	३	१७	३	१७	३	१७
४	१७	४	१८	४	१८	४	१८	४	१८
५	१८	५	१९	५	१९	५	१९	५	१९
६	१९	६	२०	६	२०	६	२०	६	२०
७	२०	७	२१	७	२१	७	२१	७	२१
८	२१	८	२२	८	२२	८	२२	८	२२
९	२२	९	२३	९	२३	९	२३	९	२३
१०	२३	१०	२४	१०	२४	१०	२४	१०	२४
११	२४	११	२५	११	२५	११	२५	११	२५
१२	२५	१२	२६	१२	२६	१२	२६	१२	२६
१३	२६	१३	२७	१३	२७	१३	२७	१३	२७
१४	२७	१४	२८	१४	२८	१४	२८	१४	२८
१५	२८	१५	२९	१५	२९	१५	२९	१५	२९
१६	२९	१६	३०	१६	३०	१६	३०	१६	३०
१७	३०	१७	३१	१७	३१	१७	O१	१७	३१
१८	J१	१८	A१	१८	S१	१८	२	१८	N१
१९	२	१९	२	१९	२	१९	३	१९	२
२०	३	२०	३	२०	३	२०	४	२०	३
२१	४	२१	४	२१	४	२१	५	२१	४
२२	५	२२	५	२२	५	२२	६	२२	५
२३	६	२३	६	२३	६	२३	७	२३	६
२४	७	२४	७	२४	७	२४	८	२४	७
२५	८	२५	८	२५	८	२५	९	२५	८
२६	९	२६	९	२६	९	२६	१०	२६	९
२७	१०	२७	१०	२७	१०	२७	११	२७	१०
२८	११	२८	११	२८	११	२८	१२	२८	११
२९	१२	२९	१२		१२	२९	१३	२९	१२
३०	१३	३०	१३		१३	३०	१४	३०	१३
३१	१४	३१	१४		१४	३१	१५		१४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अशौच व्यवस्था

अशौच दो प्रकार का होता है—(१) जननाशौच जिसे सूतक और (२) मरणाशौच जिसे पातक कहते हैं।

गर्भस्रावादि अशौच व्यवस्था

चार मास तक गर्भ के गिरने को 'गर्भस्राव' कहते हैं। पांचवे और छठे मास में 'गर्भपात' और इस के उपरान्त 'प्रसव' कहलाता है। तीन मास के भीतर किसी भी मास में गर्भ के गिराने से गर्भिणी को तीन दिन का और चौथे महीने में चार दिन का अशौच रहता है, पिता आदि सपिण्ड केवल स्नान मात्र से शुद्ध हो जाते हैं। पांचवें और छठे महीने में गर्भपात हो तो क्रम से ५ और ६ दिन का गर्भिणी को अशौच रहता है, पितादि सपिण्ड को ३ दिन का 'सूतक' होता है। गर्भस्राव और गर्भपात में चारों वर्णों को एकसा ही होता है।

जननाशौच व्यवस्था

सात महीने से लेकर किसी भी महीने में जन्म हो तो माता-पितादि सपिण्डों को अपने-अपने वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। जैसे ब्राह्मण को १० दिन, क्षत्रिय को १२ दिन, वैश्य को १५ दिन और शूद्र को एक मास का सूतक रहता है, किन्तु माता को सूतक निकालने के बाद भी पुत्र जन्मा हो तो २० दिन और कन्या उत्पन्न होने से १ मास तक धर्म कार्य करने का अधिकार नहीं होता। नाल-छेदन से पीछे सूतक हो जाने के कारण जात कर्म का अधिकार नहीं होता।

जननाशौच दान भोजन निर्णय

जननाशौच में पहले तथा छठे-दसवें दिन दान, पति ग्रह का दोष नहीं है। केवल अन्न भोजन का ही निषेध है।

मृतौत्पत्ति में विचार

यदि मरा हुआ बालक उत्पन्न हो तो पितादि सपिण्डों को अपने-२ वर्ण के अनुसार पूरा अशौच (सूतक) होता है। बालक जन्म लेकर नाल-छेदन से पूर्व ही मर जाय तो माता को १० दिन का सूतक और पितादि सपिण्डों को ३ दिन का जननाशौच (सूतक) होता है। नाल-छेदन के बाद १० दिन के भीतर अर्थात् नाम संस्कार से पूर्व बालक की मृत्यु हो जाये हो पितादि सपिण्डों को पूर्ण जननाशौच (सूतक) रहता है। पातक में देवकर्म और पितृकर्म का अधिकार नहीं रहता।

मृताशौच व्यवस्था

नामकरण अर्थात १० दिन के बाद ६ महीने के भीतर अर्थात् दांत आने से पहले बालक के मरने पर माता और पिता को ३ दिन का मृताशौच (पातक) होता है किन्तु सपिण्ड स्नानमात्र से शुद्ध हो जाते हैं। कन्या मरने पर पिता को एक दिन का पातक लगता है। स्मरण रखना चाहिए ७वें महीने से अर्थाथ् दांत निकलने के पीछे ३ वर्ष तक अर्थात् चूड़ाकरण संस्कार न होने पर बालक के मरने पर माता-पिता को ३ दिन सपिण्डों को १ दिन तक पातक हो जाता है, और ३ वर्ष तक मुण्डन-संस्कार हो गया हो तो बालक को जलाना चाहिए।

कन्या अशौच व्यवस्था

सगाई होने से पहले कन्या मरने पर तीन पुरुषों तक १ दिन का पातक होता है, सगाई हो जाने के बाद और विवाह से पहले कन्या मरने पर पिताकुल के और पतिकुल को ७ पुरुषों तक ३ दिन का पातक रहता है। यदि विवाह हुई कन्या पिता के घर में मर जाये व प्रसूता हो तो माता पिता और सहोदर भाइयों को ३ दिन का पातक, चाचा आदि को १ दिन का अशौच होता है। परन्तु पतिकुल में पूर्ण अशौच होता है। विवाहित कन्या को १० दिन के भीतर माता पिता की मृत्यु की खबर मिले तो ३ दिन का पातक, १० दिन के बाद सुने तो १ दिन का।

मातामह मातामही दौहित्र मरण पर विचार

नाना मरे तो दौहित्र को ३ दिन, नानी मरने पर १॥ दिन का पातक होता है। यज्ञोपवीत संस्कार हुए दौहित्र के मरने पर नाना की ३ दिन, बिना यज्ञोपवीत के १॥ दिन का पातक होता है।

सास ससुर तथा जामातृ मरण पर अशौच विचार

सास और ससुर यदि मर जायें तो जामातृ पास होने से ३ दिन, बिना समीप होने से १॥ दिन का पातक लगता है। जमाई के मरने से १ दिन का पातक होता है।

बन्धुत्रय विचार

भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को आत्मबांधव कहते हैं। पिता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को पितृबांधव कहते हैं। माता की भूआ, मासी और मामी के पुत्रों को मातृबांधव कहते हैं। इन तीन प्रकार के बांधवों में से किसी की मृत्यु हो जाये तो ३ दिन का पातक होता है। इनकी बहिन मरे तो १॥ दिन का पातक होता है, और विवाहित कन्या मरने पर १ दिन का पातक होता है।

अशौच-सम्पात पर निर्णय

१० दिन के अशौच में यदि ५ दिन के भीतर दूसरा १० दिन का अशौच हो जावे तो पहले के अशौच की समाप्ति पर दूसरे अशौच की भी समाप्ति हो जाती है। ५ दिन के बाद ९ दिन के भीतर हो तो पिछले के साथ शुद्धि हो जाती है। यदि १० वें दिन की रात्रि में दूसरा अशौच हो जाय तो दो दिन अशौच और बढ़ जाता है। जननाशौच में मृताशौच अथवा मृतशौच में जननाशौच हो जावे तो मृताशौच के साथ शुद्धि होती है।

प्रथमाब्दे निषिद्ध कार्याणि

प्रथमाब्दे निषिद्धानि महातीर्थस्य गमनपुपवासव्रतानि च अब्दमध्यये न कुर्वीत महागुरुनिपातने। प्रभोतौ पितरौ यस्य दहस्तस्याशुचिर्भवेत्। नदेयंनापिवैपिच्यं पूर्णो न वत्सरः। प्रथमाब्दे गयाश्राद्धनिषेध उक्तः—तीर्थ श्राद्धं गयाश्राद्ध श्राद्धमञ्च पैत्रिकम्। अब्दमध्ये न कुर्वीतमहा गुरु विपत्तिषु। गयाश्राद्धं मृतानां तु पूर्णे त्वब्दे प्रशास्यते शुक्रस्यास्तमने चैव देवेज्यस्य तथैव च। प्रेतकार्य न दुष्येत प्रथम वत्सरं विना॥ गयायां सर्वकालेषुपिंडंदद्याद्विचक्षण अधिमासे जन्मदिने, अस्ते च गुरुशुक्रयोः। गोदावर्योगयायां च श्री शैले ग्रहणाद्वये। सुरासुरगुरूणां च मौढ्यदोषो न विद्यते॥

गंगायामस्थिनिक्षेपने विचार

अस्तगते गुरौ शके तथैव चाधिमास के। गंगायास्थिनिक्षेप न कुर्यादिति गौतमः॥ दशाहाभ्यन्तरे न दोषः॥

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

दैनिक शुभाशुभ देखने का चन्द्रकालानल चक्र

दिये हुए चित्र के समान एक चंद्र कालानल चक्र बनावें। फिर जिस दिन का शुभाशुभ विचार करना हो उस दिन का नक्षत्र देखें कि पंचांग में चन्द्रमा किस नक्षत्र पर है। प्रातःकाल जिस नक्षत्र पर चंद्रमा हो उसको चित्र में १ अंक पर रखकर फिर आगे के २८ नक्षत्रों को अंकों के क्रमानुसार लिखें। इसमें अभिजित का समावेश भी है। फिर देखें कि आपके नाम का नक्षत्र कहां पड़ रहा है। उसी के अनुसार फल समझें। यदि त्रिशूल में नाम नक्षत्र पड़े तो अशुभ, वादविवाद, रोग, धनहानि आदि। वृत के अन्दर पड़े तो आयुवृद्धि, धनलाभ, हर्ष, मित्रों का मिलन आदि शुभ फल हो। यदि वृत के बाहर (३,६,१०,१३,१७,२०,२४,२७ अंको पर) पड़े तो कुछ प्रसन्नता और कुछ दुःख। आधा दिन अच्छा और आधा क्लेश, चिन्ता, धन हानि से बीतेगा। इस प्रकार आप रोज देख सकते हैं कि "आज का दिन कैसा बीतेगा।"
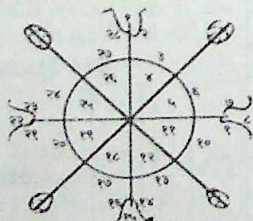
शनि पीड़ा नाशक यंत्र

यदि किसी व्यक्ति को शनि की ढैया या साढ़ेसाती के कारण बहुत परेशानी आ रही है हो तो चित्र में दिये हुए यंत्र को एक पत्थर की स्लेट के टुकड़े पर लकड़ी के कोयले से शनिवार को व्रत रख कर लिखें। तथा उस शनि से परेशान व्यक्ति के ऊपर सिर से पैरों की ओर सात बार उतार कर उस व्यक्ति के द्वारा ही किसी ऐसे कुएं (या पानी के तालाब) में फिकवादें जिसका पानी वह स्वयं कभी न पियें। उसके बाद वह पीछे मुड़कर न देखें। यह कार्य सांय काल को अधिक प्रभावशाली रहता है। ऐसा करने से उसको शनि की पीड़ा से मुक्ति मिल जाएगी यह अनुभूत है।

यंत्र

१०	३	८
५	७	९
६	११	४

सर्वरोग नाशक यंत्र

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अनार की कलम और केशर की स्याही से लिखें। देवदत्त के स्थान पर रोगी का नाम लिखें। फिर उस भोजपत्र को लपेट कर तावीज के रूप में लाल कपड़े में लपेटकर सिल लें। और धूपदेकर तथा घी के दीपक के ऊपर ७ बार फिराकर अपने दाहिने बाजू में बांध लें। यह क्रिया करते समय कोई देखे या टोके नहीं इसलिए एकान्त में करना चाहिये। इसके बांधने से प्रायः सभी रोग नष्ट हो जाते हैं और सुख मिलता है।

यंत्र

ह्रीं	श्रीं	श्रीं	श्रीं
ह्रीं	देवदत्त		ह्रीं
श्रीं			श्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

व्यापार में वृद्धिकारक लक्ष्मी यंत्र

दीपावली की रात्रि में भोजपत्र पर अनार की कलम और अष्टगंध की स्याही से लिखकर गुगुल की धूप तथा दीप से यंत्र की पूजा करें। और उसी समय "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः" मंत्र की २१ माला (१०८ दानेवाली) जपकर प्रत्येक माला के बाद यंत्र पर फूंक मारें। फिर इस यंत्र को दुकान की गद्दी के नीचे लाल कपड़े में लपेट कर रख दें तथा नित्य प्रातः स्नान करके गद्दी पर बैठने से पहले धूप दीप से पूजा करके तब गद्दी पर बैठें। ऐसा करने से कुछ ही दिनों में व्यापार में आश्चर्य जनक तरक्की होगी।

यंत्र

१०	१८	१	१४	२२
११	२४	७	२०	३
१७	५	१३	२१	९
२३	६	१९	२	१५
४	१२	२५	८	१६

शत्रु दमन कारक यंत्र

इस यंत्र को चिता की भस्म की पानी में स्याही बनाकर आक (मदार) की लकड़ी की कलम से भोजपत्र पर लिखकर मंगल वार के दिन श्मशान की अग्नि में शत्रु का नाम लेकर डालने से शत्रु पूरी तरह से परास्त होकर वशीभूत हो जाता है और हमेशा के लिए दास बन जाता है।

यंत्र

६	७	२
१	५	९
८	३	४

मुकदमा जीतने का यंत्र

मंगलवार के दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर किसी तांबे के तावीज में भरकर, गुगुल की धूप देकर तथा घी के दीपक से पूजा करके अपने गले या दाईं भुजा में बांधें जब तक अंतिम फैसला न हो जाय बांधे रखें। मुकदमें में विजय होगी।

सूर्यादि ग्रहों के अरिष्ट निवारक मंत्र, यंत्र

सूर्यः- यदि सूर्य गोचर में ४, ८, १२वें हो तो कष्ट, रोग, धनहानि, असफलता प्रदान करता है। यही फल विंशोत्तरी दशा आने पर भी करता है। इसके निवारण के लिए सूर्य के बीज मंत्र "ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः" का ७००० जप उपयुक्त रहता है। किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम रविवार से आरंभ करें। लाल कपड़ा, गुड़, ताम्र पात्र, गेहूं का दान करें। रक्त पुष्पों से सूर्य की पूजा करें। सूर्य यंत्र को अष्टगंध की स्याही व अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखकर धूप दीप देकर ताबीज की भांति दाहिनी भुजा में रविवार प्रातः को ही धारण करें तो अरिष्ट निवारण होता है, सुखशान्ति मिलती है। ये सभी यंत्र सर्वार्थसिद्धि मुहूर्त में धारण किये जायें तो उत्तम है।

सूर्य यंत्र

६	१	८
७	५	३
२	९	४

चंद्रमा :- यदि चंद्रमा के कारण अरिष्ट हो रहा है तो इसके निवारण के लिए किसी भी माह के शुक्ल पक्ष के प्रथम सोमवार से "ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसेनमः" मंत्र का चन्द्रोदय समय में ११००० जप करें। जप एक सी संख्या में करें। कभी ज्यादा कभी कम, ऐसा न करें। श्वेत फूलों से चंद्रमा की पूजा करें। चांदी, चावल, चीनी, दही, श्वेत वस्त्र, श्वेत चंदन का दान करें। चन्द्र यंत्र को चांदी के तावीज या श्वेत वस्त्र के ताबीज में (भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखकर) दायीं भुजापर धारण करें। सुख-शान्ति होगी।

चन्द्र यंत्र

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

मंगलः मंगल एक पापी ग्रह है। गोचर में ४, ८, १२वें स्थान में आने पर या विंशोत्तरी दशा आने पर या जन्म कुण्डली में अशुभ होने पर बहुत हानिकरता है। इसकी शान्ति के लिए बीज मंत्र "ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमायनमः" का शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से जप आरम्भ करें। लाल फूलों से मंगल की पूजा करें। सोना, ताम्रपात्र, गुड़, घी, लाल वस्त्र, मसूर, केसर, लालचंदन का दान करें। अष्टगंध, अनार की कलम से भोजपत्र पर भौमयंत्र लिखकर, धूप, दीप देकर दायीं भुजा में धारण करें। शांतिहोगी, दुख दूर होंगे।

मंगल यंत्र

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

बुधः- पापी या क्रूर ग्रहों के साथ जन्म कुण्डली में बुध के बैठ जाने से बुध भी अनिष्ट कारक फल देता है। इसके निवारण के लिए बुध के बीजमंत्र "ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं ब्रों सः बुधायनमः" का शुक्ल पक्ष के ज्येष्ठ बुधवार से जप प्रारम्भ करें। सुवर्ण, कांसा, मूंग, खांड, घी, हरावस्त्र, फल का दान करें, जप ९००० हजार करें। केशर या अष्टगंध की स्याही तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर बुधयंत्र लिखकर हरे वस्त्र के ताबीज में रखकर, धूपदीप देकर दांयी भुजा में बांधे तो अवश्य कष्ट निवारण होगा।

बुध यंत्र

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

बृहस्पतिः- यद्यपि गुरु शुभ ग्रह है किन्तु यदि गोचर में ४, ८, १२ हो तो विवाहादि शुभ कार्यों में अड़चन डालता है। अन्य प्रकार से भी अनिष्टकारक हो सकता है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः" का १९००० जप करें। जप शुक्ल पक्ष के प्रथम गुरुवार से शुरू करें। सोना, चने की दाल, घी, पीला वस्त्र, केले के फल, हल्दी का

गुरु यंत्र

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

धर्मसन प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110006 ☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

दान करें। भोजपत्र पर केशर की स्याही व अनार की कलम से गुरु यंत्र लिखकर तथा सोने के या पीले वस्त्र के ताबीज में रखकर दांये हाथ में धारण करें। जप के लिए पीली माला लें।

शुक्र :- शुक्र के अनिष्ट कारक प्रभाव को दूर करने के लिए शुक्र के बीज मंत्र "ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः" का १६००० जप करें। श्वेत चंदन की माला प्रयोग करें। चांदी, चावल, चीनी, दूध, श्वेत वस्त्र, दही का दान करें। जप प्रातः सूर्योदय काल में करें। अष्टगंध तथा अनार की कलम से भोजपत्र पर शुक्र यंत्र लिखकर धूपदीप देकर श्वेत वस्त्र या चांदी के ताबीज में रखकर दांयी भुजा में धारण करें। अवश्य सुख व शान्ति मिलेगी।

शुक्र यंत्र

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शनि :- शनि एक क्रूर ग्रह है। बड़ा विनाशक ग्रह है। इसकी शांति के लिए बीजमंत्र "ॐ प्रां प्रीं प्रौं. सः शनये नमः" का कृष्णा पक्ष के प्रथम शनिवार से जप प्रारम्भ करें। जप संध्याकाल में करें। नीलम, लोहा, उड़द, तेल सरसों, कुलथी, काला, कम्बल व वस्त्र दान करें। जप संख्या २३००० है। भोज पत्र पर अनार की कलम व अष्टगंध की स्याही से शनि यंत्र लिखकर काले कपड़े या सोने के ताबीज में मंढवा कर धारण करें। शनि का प्रभाव दूर होगा।

शनि यंत्र

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

राहुः शनि की भांति राहु भी एक क्रूर छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए कृष्ण पक्ष के प्रथम शनिवार से बीजमंत्र "ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवेनमः" का जप रात्री के प्रथम प्रहर में कम्बल के आसन पर बैठ कर करें। जप संख्या १८००० है। तिल, सरसों, तेल, नीले वस्त्र, कम्बल (काले) का दान करें। भोजपत्र पर अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से राहुयंत्र को लिखकर, धूप दीप देकर, सोने के ताबीज में रख कर धारण करें।

राहु यंत्र

१३	८	१५
१४	१२	१०
९	१६	११

केतु :- मंगल की भांति केतु भी अनिष्ट कारक छाया ग्रह है। इसकी शांति के लिए शुक्लपक्ष के प्रथम मंगलवार से बीजमंत्र "ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः" से १७००० जप करें। लहसुनियां, सुवर्ण, लोहा, तिल, सप्तधान्य, तेल, धूम्रवस्त्र, नारियल का दान करें। केतु के यंत्र को राहु की भांति धारण करें।

केतु यंत्र

१४	९	१६
१५	१३	११
१०	१७	१२

कतिपय चमत्कारी मंत्र

(१) व्यापार वृद्धि के लिए :- "भंवर वीर तू चेला मेरा, खोल दुकान कहा कर मेरा, उठे तो डंडी बिकेजो माल, भंवरवीर सोखे नहिं जाय।" रविवार के दिन प्रातःकाल स्नान करके १ माला जप करें। फिर ११ दाने उड़द के इसी मंत्र से ११ बार पढ़कर अपनी व्यापार की गद्दी पर फैंक दें। तीन रविवार लगातार ऐसा करने से व्यापार में अवश्य वृद्धि होती है।

(२) सर्व मनोकामना पूर्ति के लिए :- श्री दुर्गामाता की मूर्ति सामने रखकर उसका विधिवत पूजन करके, हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना की पूर्ति के लिए संकल्प करें। फिर निम्नमंत्र का सवालाख जप करें। तो निश्चित मनोकामना पूर्ति होती है। मंत्र "ॐ सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमस्तुते॥"

(३) विवाह सम्पन्न करने के लिए:- "ॐ गौरी आवे शिवजी ब्याहवै, अमुक को विवाह तुरंत सिद्ध करै, देर न करै, देर होय तो शिवजी का त्रिशूल पड़े, गुरू गोरखनाथ की दुहाई फिरै" इस मंत्र का ११ दिन तक लगातार एक माला रोज, जप करै, दीपक व धूप बाले। ग्यारहवें दिन रात को एक कोरे कुल्हड़ में सात डली नमक की, सात काली मिर्च लाल कपड़े में बांधकर रखदें। कुल्हड़ का मुंह भी लाल कपड़े से बांध दें। कुल्हड़ पर बाहर की ओर सात बिन्दी कुमकुम की लगाकर और ऊपर लिखे मन्त्र की पांच माला जप करके, चुपचाप कुल्हड़ को आधी रात को किसी चौराहे पर रख आवें, पीछे मुड़कर न देखें। सारी रुकावटें दूर होकर बहुत जल्द शादी हो जाती है।

(४) आधाशीशी दूर करने का मंत्रः- ॐ नमो बन में ब्याई बानरी, उछल वृक्ष पै जाय। कूद कूद शाखान पै कच्चे बन फल खाय। आधा तोड़े आधा फोड़े आधादेय गिराय, हंकारत हनुमान जी आधा शीशी जाय" इस मंत्र से नीम की डाल या राख से रोगी को दक्षिण को मुख करए कर झाड़ा दें तो तीन दिन में आधा शीशी बिल्कुल ठीक हो जाती है।

(५) पुत्रदायक मंत्रः- "ॐ देवकी सुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते, देहिमे तनयं कृष्ण त्वामहं शरणं गतः" शुद्ध आसन पर पूर्व मुख होकर तुलसी या रुद्राक्ष की १०८ दाने की माला से सवा लाख जप करें। जप के बाद शहद, घी, शक्कर, तिल मिश्रित सामग्री से १०००० आहुतियों का हवन करें। १००० तर्पण, १०० मार्जन करें। भगवान कृष्ण का ध्यान करें, अभक्ष्य चीजों से दूर रहें। भगवान अवश्य कामना पूर्ति करेंगे।

(६) रोग नाश के लिए मंत्र :- "ॐ रोगान शेषानपहं सितुष्टा, रुष्टा तु कामान सकलान भीष्टान्। त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिताह्याश्रयतां प्रयांति।" इस मंत्र का दुर्गा सप्तशती में दी हुई विधि से सवा लाख मंत्र जप करें तो माँ भगवती की कृपा से कठिन से कठिन रोग से भी मुक्ति मिलती है।

(७) धन प्राप्ति के हेतु महालक्ष्मी मंत्रः- श्री लक्ष्मी नारायण जी की मूर्ति के समक्ष, धूप, दीप, फल, मिष्ठान्न रखकर मंत्रजप करें। मूर्ति का मुख पूर्व दिशा में तथा जपकर्ता का मुख उत्तर को रहे जलकलश पर नारियल अवश्य रखें। मंत्र "ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं ह्रीं कमले कमला लये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः।" सवा लाख मंत्र जप, हवन करें।

(८) शत्रु विनाशक मंत्रः- शत्रु विनाश के लिए श्री बगलामुखी मंत्र से बढ़कर अन्य कोई मंत्र नहीं है। पीली धोती व दुपट्टा आदि कपड़े धारण करें। बगलामुखी का चित्र सामने रख कर उसकी विधिवत पूजा करें, पीले फूल चढ़ावें, पीले मिष्ठान्न से भोग लगावें, पीली माला (हल्दी की) प्रयोग करें। ५१००० जप करें। जप के बाद नीम के पत्ते, कौए के पंख तथा सरसों के तेल से हवन करें। तो शत्रु का विनाश होता है। मंत्र-"ॐ ह्रीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय कीलय बुद्धिं नाशय नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा॥"

(९) रोग निवारण तथा दीर्घायु प्राप्ति के लिएः- इसके लिए महामृत्युञ्जय मंत्र का शिव की मूर्ति के समक्ष बैठकर विधि पूर्वक जप करें। जप सवा लाख हो, बाद में हवन, तर्पण, मार्जन दशांश करें। मंत्र -" ॐ ह्रौं जूं सः। ॐ भूर्भुवः स्वः। ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्धनम् उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ स्वः भुवः भूः। ॐ सः जूं ह्रौं ॐ।

(१०) मृत संजीवनी मंत्र :- ॐ तत्सवितुर्वरेण्यं त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनं भर्गो देवस्य धीमहि, उर्वारुक मिव बन्धनात् धियो योनः प्रचोदयात् मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात् ॐ।। इस मंत्र के सविधि जप से अकालमृत्यु भी टल सकती है।

(११) बिच्छू का विष उतारने का मंत्रः- "ॐ नमो आदेश गुरू को। काली बिच्छू कांकरवाली, उतर बिच्छू न कर टाली, उतरै तो उतारूं चढ़ै तो मारूं, गरुड़ मोर पंख हंकालूं। शब्द सांचा पिंड कांचा फुरौमंत्र ईश्वरी वाचा।" इस मंत्र को सूर्य ग्रहण में जितना जप संभव हो सके, जप करके सिद्ध करलें। फिर चिमटा, चाकू या झाडू से ७ बार मंत्र पढ़कर झाड़ा दे दें। विष उतर जायेगा।

(१२) पीलिया दूर करने का मंत्रः- "ॐ नमः आदेश गुरू को श्रीराम सर साधा लक्ष्मण साधा वाण, काला पीला रीता नीला थोथा पीला पीला पीला चारों गिरि जहि तो श्री रामचन्द्र जी रहे नाम। हमारी भक्ति गुरू की शक्ति, फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।" पहले इस मंत्र को सूर्यग्रहण या दिवाली की रात को अधिक से अधिक (१००००) जप करके सिद्ध कर लें। बाद में रोगी को पीतल के पात्र में शुद्ध जल देकर मंत्र का उच्चारण करते हुए सुई से सात बार शनिवार के दिन झाड़ें। सात शनिवार तक क्रिया करें। अवश्य लाभ होगा।

द्वादश राशियों के देवता और जपनीय मंत्रः- स्तोत्र ग्रंथों के अनुसार यदि व्यक्ति अपनी जन्म या नाम राशि के देवता का नियमित रूप से एक माला का जप करता रहे तो उसकी आपदा, कष्ट, रोगादि का स्वतः ही निवारण होता रहता है। राशियों के मंत्र निम्न प्रकार हैं (१) **मेष**- "ॐ विष्णवे नमः" (२) **वृष**- "ॐ वासु देवाय नमः (३) **मिथुन** :- ॐ केशवाय नमः (४) **कर्क** :- "ॐ राधा कृष्णायनमः" या "ॐ हरिहराय नमः"। (५) **सिंह**- "ॐ बालमुकुन्दाय नमः (६) **कन्या**:- "ॐ ह्रीं पीताम्बराय परमात्मने नमः (७) **तुला** :-ॐ श्रीराम दाशरथये नमः। (८) **वृश्चिक**:- "ॐ नमो नारायणाय नमः" (९) **धनु**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं धरणी धराय नमः (१०) **मकर** :- ॐ श्री वत्साय उपेन्द्राय नमः (११) **कुम्भ** राशि- के देवता गोविन्द गोपाल हैं। "ॐ गोपाल गोविन्दाय नमः।" (१२) **मीन**- ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं रथाङ्गचक्राय नमः।"

॥ चमत्कारी यंत्रों द्वारा सिद्धि॥

(१) शत्रु को वश में करने का यंत्र :- इस यंत्र को कागज पर हाथी दांत से लिखकर मरघट में गाड़ दें तो शत्रु वश में हो जाय।

५८	३७	५	८
७८	९	२	५२
५४	५	८४	९१
७	८७	६८	५८

यंत्र-१

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

(२) परदेशी को वापिस बुलाने का यंत्र:—इस यंत्र को तथा आने वाले का नाम तालाब की मिट्टी में बड़ के पत्ते पर लिखकर आगन्तुक की दिशा में गाड़ दें तो परदेशी शीघ्र आ जावेगा।

३८	६५	१	२१
१०	६३	६५	१६
४	५	८७	९१
३१	२८	२८	२८

(३) भूत प्रेत नाशक यंत्र:— यंत्र को असगंध से भोजपत्र पर लिखकर घर में रखें तो भय नहीं रहता या इस यंत्र को चांदी के वर्क पर या भोजपत्र पर श्मशान की मिट्टी से लिखकर भूत के सताये रोगी के सिर पर दो मिनट रखकर तालाब में फेंक आवें तो भूत भाग जाता है।

८५	५६	९	१२
१	६१	६२	१४
४६	४	१८	९१
८	६७	२८	५८

(४) बवासीर नाशक यंत्र:— रविवार के दिन पुष्य नक्षत्र में इस यंत्र को भोजपत्र पर नींबू के रस से लिखकर गले में बांध लें तो बवासीर से मुक्ति मिलती है।

९	३	८	१३
६५	४	१०	७७
७	६	१५	८०
१२	८२	११	१४

(५) पुरुष वशीकरण यंत्र:— इस यंत्र को भोजपत्र पर पान के रस या केशर से लिखें। अनार की कलम बनावें। फिर स्त्री उसे अपनी साड़ी में या भुजा में बांध लें तो उसका पुरुष उसके वश में रहता है।

९	६५	२	९२
७५	९	२	५२
१७	२८	८३	९१
६	७	३१	४५

(६) सर्व कार्य सिद्धि यंत्र:— इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध से अनार की कलम से लिखें। गुग्गुल, असगंध की धूप देकर तांबे के ताबीज में भुजा में बांध लें तो मनचाहा कार्य सिद्ध हो।

५७	५८	९	११
३३	५७	४८	३७
८६	६	४४	६८
२५	५५	६५	९

(७) नजर (दीठि) दूर करने का यंत्र:—यंत्र को भोजपत्र पर अनार की कलम तथा केसर की स्याही से लिखकर तांबे के ताबीज में मढ़कर इतवार या मंगलवार के दिन बच्चे के गले में बांध दें तो बच्चे को कभी नजर न लगे।

४६	६	८५	८५
९	८	४२	२५
७८	७२	८	५
७	५	३५	८

(८) सर्व बाधानाशक यंत्र:— पैंसठिया यंत्र यह सब प्रकार की बाधाओं को नाश करता है। इस यंत्र को भोजपत्र पर, अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से लिखें। इस यंत्र के चारों ओर **'ॐ श्री ह्रीं श्रीं महालक्ष्म्यै नमः'** लिखें। दीपावली की रात को यह यंत्र बनावें। गुगुल की धूप दें। महालक्ष्मी मंत्र का १००८ बार जप कर चांदी के ताबीज में मढ़वाकर दाहिनी भुजा में बांध लें। तो धन संबंधी सारी परेशानियां दूर हो जाती हैं। ***महालक्ष्मी मंत्र—'ॐ श्री ह्रीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्री ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्ये नमः॥'***

२२	३	९	१५	१६
१४	२०	२१	२	८
१	७	१३	१९	२५
१८	२४	५	६	१२
१०	११	१७	२३	४

(९) मुकद्दमा जीतने का यंत्र:—दीपावली की रात को या चंद्र ग्रहण या सूर्य ग्रहण में इस यंत्र को भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर गुगुल, असगंध की धूप देकर चांदी के ताबीज में मढ़वाकर गले या दांये बाजू में जब तक मुकद्दमा चले तब तक बांधे रहें। मुकद्दमे में अवश्य विजय होगी। शराब, मांस का परहेज रखें।

५९२	५९९	२	७
६	३	५९६	५९५
५९८	५९३	८	१
४	५	५९४	५९७

(१०) गर्भधारण यंत्र:—जिस स्त्री के गर्भ धारण में असुविधा हो रही हो उस की बांयी भुजा में इस यंत्र को जिस दिन रविवार को मूल नक्षत्र हो उस दिन भोजपत्र पर अष्टगंध की स्याही और अनार की कलम से लिखकर धूप-दीप देकर चांदी के ताबीज में रखकर बांध दें। अवश्य सिद्धि होगी।

ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ॐ	ॐ	ॐ	ॐ
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं
ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं	ह्रीं

(११) सन्तान प्राप्ति यंत्र:—इस यंत्र को शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन प्रात: ४ बजे से अष्टगंध द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना आरम्भ करें। लिखने की कलम चांदी की होना चाहिए। यंत्र ५००१ की संख्या में लिखने और बाद में नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस यंत्र के प्रभाव से सन्तान की प्राप्ति होती है।

८
२
९ ५
१२ ४
३ १० ७

(१२) मंदिर निर्माण यंत्र:—इस यंत्र को भोजपत्र के ऊपर केशर द्वारा शुक्ल पक्ष के गुरुवार के दिन ७००० की संख्या में लिखकर उसका धूप-दीप आदि से पूजन करें, फिर उन यंत्रों को किसी बहती हुई नदी के जल में प्रवाहित कर दें, तो मंदिर-निर्माण की अभिलाषा पूरी होती है।

१ ४
९ ६
३ २
७ ८

(१३) रोग मुक्ति यंत्र:—इस यंत्र को रविवार के दिन केशर द्वारा भोजपत्र या कागज के ऊपर २५०० की संख्या में लिखकर, यथाविधि पूजनोपरान्त नदी के जल में प्रवाहित कर दें। इस क्रिया को एक सप्ताह तक निरन्तर करता रहे तो रोग से छुटकारा मिल जाता है।

८ १
२ ९
३ ६
७ ४

(१४) ईश्वर-भक्ति यंत्र:—इस यंत्र को शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र वाले दिन लिखना आरम्भ करें तथा आठ दिन में ५००० की संख्या में यंत्र लिखकर अंत में उन्हें नदी के जल में प्रवाहित कर दें तो ईश्वर की कृपा तथा भगवद्भक्ति की प्राप्ति होती है। यंत्र लेख को आध्यात्मिक ज्ञान मिलता है।

७ ९
३ १
४ २
६ ८

(१५) पदोन्नति यंत्र:—इस यंत्र को मंगलवार अथवा गुरुवार के दिन लिखना आरम्भ करें। यंत्र को केशर द्वारा भोजपत्र के ऊपर लिखना चाहिए। प्रतिदिन १०० यंत्र लिखकर नदी के जल में प्रवाहित कर देने चाहिए। इस प्रकार कुल ५००० यंत्र लिखकर जल में प्रवाहित कर देने से पदोन्नति होती है।

१ ४
९ ६
३ २
७ ८

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूक्ष्म दशा सारिणी

सूक्ष्म दशा सारिणी की पूर्ण तालिका इस वर्ष हमारे शतक मार्तण्ड में प्रकाशित की गई है। जो सज्जन इसका प्रयोग करना चाहे वह शतक मार्तण्ड खरीदकर इससे लाभ उठा सकते है

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	००
घटि	१६	२७	१८	४८	४३	५१	४५	१८	५४
पल	१२	००	५४	३६	१२	१८	५४	५४	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०	२७
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	००	००	००	००	००	००	१	००	००
घटि	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३	१८	३१
पल	३	४२	२४	३९	३३	३	००	५४	३०

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	२	२	२	२	००	२	००	१	००
घटि	२५	९	३३	१७	५६	४२	४८	२१	५६
पल	४८	३६	५४	४२	४२	००	३६	००	४२

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	१	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	५५	१६	२	५०	२४	४३	१२	५०	९
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	२	२	००	२	००	१	००	२	२
घटि	४२	२५	५९	५१	५१	२५	५९	३३	१६
पल	२७	२१	५१	००	१८	३०	५१	५४	४८

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	२	००	२	००	१	००	२	२	२
घटि	१०	५३	३३	४५	१६	५३	१७	२	२५
पल	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४	२१

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	००	००	००	००
घटि	२२	३	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३
पल	३	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३

सूर्य की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	००	१	१	२	२	२	२	१
घटि	००	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	०	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा मे सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३१	३४	४९	३०	५१	४५	४९	३३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	३८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा मे सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	००	००	१	१	१	१	००	१	००
घटि	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राहादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	७	६	७	६	२	८	२	४	२
घटि	१७	२८	४२	५३	५०	६	२५	३	५०
पल	२४	४८	४२	६	६	००	४८	००	६

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	५	६	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१	२८
पल	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	८	७	२	८	२	४	२	७	६
घटि	७	१६	५९	३३	३३	१६	५९	४१	५०
पल	२१	३	३३	००	५४	३०	३३	४२	२४

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	६	७
घटि	३०	४	३९	१७	४९	४०	५३	७	१६
पल	९	३९	००	४२	३०	३९	६	१२	३

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	२	२
घटि	६	९	५६	३४	६	५०	३१	५९	४०
पल	९	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	८	७	३
घटि	००	४२	३०	९	६	१२	३३	३९	९
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४८	२१	५६	२५	९	३३	१७	५६	४२
पल	३६	००	४२	४८	३६	५४	४२	४२	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	३	१	४	१
घटि	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

सूर्य की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	३	००	१
घटि	६	५०	३१	५९	४०	६		५६	३४
पल	९	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	१	३	२	५
घटि	७	४	२६	१४	२५	४५	१२	१४	४५
पल	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	६	६
घटि	१३	२२	३९	३६	१६	४८	३९	५०	४
पल	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	५	२	६	२	३	२	६	५	६
घटि	४६	२२	४८	९	२४	२२	७	२६	२७
पल	४८	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	२	२	२	२
घटि	५८	४८	५०	२४	५८	३१	१४	३९	२२
पल	४८	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	६	२
घटि	००	२४	००	४८	१२	२४	३६	४८	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	१	२	२	००	२
घटि	४३	१२	५०	९	५५	१६	२	५०	२४
पल	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	३	१	४	१
घटि	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	००	२	२	२	२	००	२	००	१
घटि	५८	३१	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४
पल	४८	१२	२४	३६	४८	४८	००	२४	००

सूर्य की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	६	५	६	६	२	७	२	३	२
घटि	२८	४५	५०	७	३१	१२	९	३६	३१
पल	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	८	७	३	९	२	४	३	८	७
घटि	३४	००	९	१	४२	३०	९	७	१३
पल	२५	२६	३२	३०	२७	४५	३२	२१	१२
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	८	२	४	२	७	६	७
घटि	५१	४९	४	२५	२	४९	१६	२७	४०
पल	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६	१६
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	००	१	१	२	२	३	२
घटि	९	१९	५९	३९	९	५९	३९	९	४९
पल	४९	३०	५१	४५	४९	२३	३६	३२	३४
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	९	२	४	३	८	७	९	८	३
घटि	३०	५२	४५	१९	३३	३६	१	४	१९
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	५१	२५	५९	३३	१६	४२	२५	५९	५१
पल	१८	३०	५४	५४	४८	२७	२१	५४	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	३	४	४	१	४	१
घटि	२२	३९	१५	४८	३०	२	३९	४५	२५
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	२	२	३	२	१	३	००	१
घटि	९	५९	३९	९	४९	९	१९	५९	३९
पल	४९	२३	३६	३२	३४	४९	३०	५४	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	७	६	८	७	२	८	२	४	२
घटि	४७	५०	७	१६	५९	३३	३३	१५	५९
पल	०३	२४	२३	३	३३	००	५४	३०	२३

सूर्य की दशा शनि की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	७	२	३	२	६
घटि	४	१३	२७	३९	३६	१६	४८	३९	५०
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	८	३१	१३	१०	२६	३१	३०	४६	५१
पल	२८	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९	३१
पल	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४	४३
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	८	७	२
घटि	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४	१३	५८
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१६	५३	१७	२	२५	१०	५३	३३
पल	५८	३०	३३	४२	२४	२१	३	३३	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	४	३	१	४	१
घटि	७	२९	४९	२४	२	३६	२९	१५	१६
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	२	४०	२२	४९	३१	२	५८	५३	२९
पल	२८	३९	४८	३४	४३	२८	३०	३३	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	५	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	५३	७	१६	३०	४०	३९	१७	४९	४०
पल	६	१२	३	९	३९	००	४२	३०	३९

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२६	२३	४६	२२	४८	२	२४	२२	७
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	८	२	४	२	७	६
घटि	४०	५१	४९	४	२५	२	४९	१६	२७
पल	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४	३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	बु	श
दिन	००	१	००	००	००	१	००	१	१
घटि	२५	१३	२२	३६	२५	६	५८	९	२
पल	४३	३०	३	४५	४३	९	४८	४९	२८
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	३	१	१	१	३	२	३	२	१
घटि	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८	१३
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	००	००	००	००	००	१
घटि	१८	३१	२२	५६	५०	५९	५३	२२	३
पल	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२२	२१	४	२४	२४	४४	२१	४५	१
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	००	१	००	१	१	००	१	००	००
घटि	२५	६	५८	९	२	२५	१३	२२	३६
पल	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	२	२	२	२	१	३	००	१	१
घटि	५०	३१	५९	४०	६	९	५६	३४	६
पल	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	२	२	२	००	२	००	१	००	२
घटि	१४	३९	२२	५८	४८	५०	२४	५८	३१
पल	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	३	२	१	३	००	१	१	२	२
घटि	९	४९	९	१९	५९	३९	९	५९	३९
पल	३२	३४	४९	३०	५१	४५	४९	२३	३६
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	२	००	१	१	२	२	२
घटि	३१	२	५८	५३	२९	२	४०	२२	४९
पल	४३	२८	३०	३३	१५	२८	३९	४८	३४
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१०	३	५	३	९	८	९	८	३
घटि	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	१	२	२	२	२	१	३
घटि	५४	३०	३	४२	२४	५१	३३	३	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्रमा की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	च	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	४	४	४	४	१	५	१
घटि	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च
दिन	१	३	२	३	२	१	३	१	१
घटि	१३	९	४८	१९	५८	१३	३०	३	४५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ
दिन	८	७	८	७	३	९	२	४	३
घटि	६	१२	३३	३९	९	००	४२	३०	९

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में गुर्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	जी	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा
दिन	६	७	६	२	८	२	४	२	७
घटि	२४	३६	४८	४८	००	२४	००	४८	१२

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	श	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी
दिन	९	८	३	९	२	४	३	८	७
घटि	१	४	१९	३०	५१	४५	१९	३३	३६
पल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	बु	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श
दिन	७	२	८	२	४	२	७	६	८
घटि	१३	५८	३०	३३	१५	५८	३९	४८	४
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

सूर्य की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहा:	के	शु	सू	च	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	३	१	१	१	३	२	३	२
घटि	१३	३०	३	४५	१३	९	४८	१९	५८
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	२	१	३	३	३	३	१	४	१
घटि	५	२७	४५	२०	५७	३२	२७	१०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	२	२	२	२	१	२	००	१
घटि	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२	२७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	६	६	७	६	२	७	२	३	२
घटि	४५	००	७	२२	३७	३०	१५	४५	३७
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	५	६	५	२	६	२	३	२	६
घटि	२०	२०	४०	२०	४०	००	२०	२०	००
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	७	६	२	७	२	३	२	७	६
घटि	३१	४३	४६	५५	२२	५७	४६	७	२०
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	६	२	७	२	३	२	६	५	६
घटि	१	२८	५	७	३२	२८	२२	४०	४३
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	२	००	१	१	२	२	२	२
घटि	१	५५	५२	२७	१	३७	२०	४६	२८
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	८	२	४	२	७	६	७	७	२
घटि	२०	३०	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा चन्द्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	१	००	२	२	२	२	००	२
घटि	४५	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	शु
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
विपल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	१०	१२	११	४	१३	४	६	४
घटि	९	४८	४९	२८	४३	३०	३	४५	४३
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	११	१०	४	१२	३	६	४	१०
घटि	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२	४८
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१३	१२	४	१४	४	७	४	१२	११
घटि	३२	६	५९	१५	१६	७	५९	४९	२४
पल	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	११	१०	१२
घटि	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२	६
पल	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	४	४
घटि	५०	१५	३४	३७	५०	४३	१२	५९	२७
पल	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१३	१२	१४	१२	५
घटि	००	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	३	१	४
घटि	२१	१५	३४	३	३६	१६	४९	३४	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	६	७	६	२	७	२
घटि	४५	३७	४५	००	७	२२	३७	३०	१५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा राहु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	४	४	१	५	१	१
घटि	५०	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७
पल	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा गुरु की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	८	१०	९	३	१०	३	५	३	९
घटि	३२	८	४	४४	४०	१२	२०	४४	३६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शन्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१२	१०	४	१२	३	६	४	११	१०
घटि	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४	८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	९	३	११	३	५	३	१०	९	१०
घटि	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२	४	४६

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	३
घटि	३८	४०	२४	२०	३८	१२	४४	२६	५८

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१३	४	६	४	१२	१०	१२	११	४
घटि	२०	००	४०	४०	००	४०	४०	२०	४०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	३	३	१	४
घटि	१२	००	२४	३६	१२	४८	२४	२४	००

चन्द्र की दशा में गुरु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	५	२	६	२
घटि	२०	२०	००	२०	२०	४०	२०	४०	००

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	३	१	४	१	२
घटि	३८	१२	४४	२६	५८	३८	४०	२४	२०

चन्द्र की दशा गुरु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१०	९	११	१०	४	१२	३	६	४
घटि	४८	३६	२४	१२	१२	००	३६	००	१२

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१४	१२	५	१५	४	७	५	१३	१२
घटि	१७	४७	१५	२	३०	३२	१५	३२	२
पल	२२	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१२	४	१३	४	६	४	१२	१०	१२
घटि	२६	४२	२७	२	४३	४२	६	४६	४७
पल	२२	३७	३०	१५	४५	३७	[illegible]	००	७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	५	१	२	१	४	४	५	४
घटि	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६	१५	४२
पल	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००	५२	३७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१५	४	७	५	१४	१२	१५	१३	५
घटि	५०	४५	५५	३२	१५	४०	२	२७	३२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	३	४	४	१	४
घटि	२५	२२	३९	१६	४८	३०	२	३९	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	७	६	७	६	२	७	२
घटि	५७	४६	७	२०	३१	४३	४६	५५	२२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	४	५	४	१	५	१	२
घटि	५६	५९	२६	१५	४२	५६	३२	३९	४६
पल	२२	१५	००	५२	३७	२२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१२	११	१३	१२	४	१४	४	७	४
घटि	४९	२४	३२	६	५९	१५	१६	७	५९
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शनि की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४	११
घटि	८	२	४६	२६	४०	४८	२०	२६	२४

आर्यभट्ट पंचांग 199

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१०	४	१२	३	६	४	१०	९	११
घटि	१४	१२	२	३६	१	१२	५०	३८	२६
पल	७	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	१	४	१	२	१	४	३	४	४
घटि	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२	१२
पल	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७	५२
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१४	४	७	४	१२	११	१३	१२	४
घटि	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७	२	५७
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	३	३	४	३	१	४
घटि	१६	७	२९	४९	२४	२	३६	२९	१५
पल	३०	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	३	२	६	५	६	६	२	७	२
घटि	३२	२८	२२	४०	४३	१	२८	५	७
पल	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	१	४	३	४	४	१	४	१	२
घटि	४४	२७	५८	४२	१२	४४	५७	२९	२८
पल	७	४५	००	३७	५२	७	३०	१५	४५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	११	१०	१२	१०	४	१२	३	६	४
घटि	२८	१२	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७
पल	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	९	१०	९	३	११	३	५	३	१०
घटि	४	४५	३८	५८	२०	२४	४०	५८	१२

चन्द्र की दशा बुध की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१०	१२	४	१३	४	६	४	१२	१०
घटि	४३	२६	४२	[illegible]	२	४३	४२	६	४६
पल	७	२२	३७	३०	१५	४५	३७	४५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	२	००	१	००	१	१	१	१
घटि	४२	२	३६	१	४२	५०	३८	५६	४४
पल	५२	३०	४५	१५	५२	१५	००	२२	७
विपल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	२	५	४	५	४	२
घटि	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७	२
पल	००	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५
पल	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	१	२	२	२	२	१	२	००
घटि	२७	१	३७	२०	४६	२८	१	५५	५२
पल	३०	१५	३०	००	१५	४५	१५	००	३०

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	२	००	१
घटि	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६	१
पल	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५	१५
विपल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	४	४	४	१	५	१	२	१
घटि	४३	१२	५९	२७	५०	१५	३४	३७	५०
पल	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	४	३	१	४	१	२	१	४
घटि	४६	२६	५८	३८	४०	२४	२०	३८	१२

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	५	४	१	५	१	२	१	४	४
घटि	१५	४२	५६	३२	३९	४६	५६	५९	२६
पल	५२	३७	२२	३०	४५	१५	२२	१५	००
विपल	३०	३०	३०	००	००	००	३०	००	००

चन्द्र की दशा केतु की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	४	१	४	१	२	१	४	३	४
घटि	१२	४४	५७	२९	२८	४४	२७	५८	४२
पल	५२	७	३०	१५	४५	७	४५	००	३७
विपल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	१६	५	८	५	१५	१३	१५	१४	५
घटि	४०	००	२०	५०	००	२०	५०	१०	५०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	१	२	१	४	४	४	४	१	५
घटि	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	४	२	७	६	७	७	२	८	२
घटि	१०	५५	३०	४०	५५	५	५५	२०	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	२	५	४	५	४	२	५	१	२
घटि	२	१५	४०	३२	५७	२	५०	४५	५५
पल	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	१३	१२	१४	१२	५	१५	४	७	५
घटि	३०	००	१५	४५	१५	००	३०	३०	१५

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	१०	१२	११	४	१३	४	६	४	१२
घटि	४०	४०	२०	४०	२०	००	४०	४०	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	१५	१३	५	१५	४	७	५	१४	१२
घटि	२	२७	३२	५०	४५	५५	३२	१५	४०
पल	३०	३०	३०	००	००	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	१२	४	१४	४	७	४	१२	११	१३
घटि	३	५७	१०	१५	५	५७	४५	२०	२७
पल	३०	३०	००	००	००	३०	००	००	३०

चन्द्र की दशा शुक्र की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	२	५	१	२	२	५	४	५	४
घटि	२	५०	४५	५५	२	१५	४०	३२	५७
पल	३०	००	००	००	३०	००	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा,

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	१	१	१	००	१
घटि	२७	४५	३१	२१	१२	२५	१६	३१	३०
पल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	२	२	२	२	००	२	००
घटि	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
पल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा भौम की प्रत्यन्तर दशा में भौमादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३६	३४	२४	३९	२९	३६	४५	३१	५२
पल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	४	३	४	३	१	४	१	२	१
घटि	३	३६	१६	४९	३४	३०	२१	१५	३४
पल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा.

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	३	३	३	१	४	१	२	१	३
घटि	१२	४८	२४	२४	००	१२	००	२४	३६

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	४	४	१	४	१	२	१	४	३
घटि	३०	२	३९	४५	२५	२२	३९	१६	४८
पल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	३	१	४	१	२	१	३	३	४
घटि	३६	२९	१५	१६	७	२९	४९	२४	२
पल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३६	४५	३१	५२	३६	३४	२४	३९	२९
पल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

चन्द्र की दशा सूर्य की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	५	१	२	१	४	४	४	४	१
घटि	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५
पल	००	००	००	००	००	००	००	००	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा मंगल की प्रत्यन्तर दशा में मंगलादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं
दिन	००	१	१	१	१	००	१	००	००
घटि	३०	१७	८	२१	१२	३०	२५	२५	४२
पल	००	१०	३६	२७	५३	००	४५	४३	५२
विपल	४५	३०	००	४५	१५	४५	००	३०	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा राहु की प्रत्यन्तर दशा में राह्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	रा	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ
दिन	३	२	३	३	१	३	१	१	१
घटि	१८	५६	२९	७	१७	४०	६	५०	१७
पल	२७	२४	२८	२५	१०	३०	९	१५	१०
विपल	००	००	३०	३०	३०	००	००	००	३०

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा जीव की प्रत्यन्तर दशा में जीवादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	जी	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा
दिन	२	३	२	१	३	००	१	१	२
घटि	३६	६	४६	८	१६	५८	३८	८	५६
पल	४८	१२	३६	३६	००	४८	००	३६	२४

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शनि की प्रत्यन्तर दशा में शनि आदि ग्रहों की सूक्ष्म द शा

ग्रहाः	श	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी
दिन	३	३	१	३	१	१	१	३	३
घटि	४१	१७	२१	५२	९	[illegible]	२१	२९	६
पल	६	५०	२७	४५	४९	२२	२७	२८	१२
विपल	४५	१५	४५	००	३०	३०	४५	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा बुध की प्रत्यन्तर दशा में बुधादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	बु	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श
दिन	२	१	३	१	१	१	३	२	३
घटि	५७	१२	२८	२	४४	१२	७	४६	१७
पल	००	५३	१५	२८	७	५३	२५	३६	५०
विपल	४५	१५	००	३०	३०	१५	३०	००	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा केतु की प्रत्यन्तर दशा में केत्वादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	के	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु
दिन	००	१	००	००	००	१	१	१	१
घटि	३०	२५	२५	४२	३०	१७	८	२१	१२
पल	००	४५	४३	५२	००	१०	३६	२७	५३
विपल	४५	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा शुक्र की प्रत्यन्तर दशा में शुक्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	शु	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के
दिन	४	१	२	१	३	३	३	३	१
घटि	५	१३	२	२५	४०	१६	५२	२८	२५
पल	००	३०	३०	४५	३०	००	४५	१५	४५

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा सूर्य की प्रत्यन्तर दशा में सूर्यादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	सू	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु
दिन	००	००	००	१	००	१	१	००	१
घटि	२२	३६	२५	६	५८	९	२	२५	१३
पल	३	४५	४३	९	४८	४९	२८	४३	३०
विपल	००	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००

मंगल की दशा मंगल की अन्तर्दशा चन्द्र की प्रत्यन्तर दशा में चन्द्रादि ग्रहों की सूक्ष्म दशा

ग्रहाः	चं	भौ	रा	जी	श	बु	के	शु	सू
दिन	१	००	१	१	१	१	००	२	००
घटि	१	४२	५०	३८	५६	४४	४२	२	३६
पल	१५	५२	१५	००	२२	७	५२	३०	४५
विपल	००	३०	००	००	३०	३०	३०	००	००

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वास्तुशास्त्र और गृहसज्जा (पिरामिड, फैंग शुई के चमत्कार)

महर्षि गोपाल शर्मा (बी.ई.) बी.सी.-4, मियांवाली नगर, पश्चिम विहार, दिल्ली-110087 दूरभाष : 5687077, 5670033 तथा बड़ोदरा के प्रोफेसर डॉ. जितेन भट्ट

श्री आर्यभट्ट पंचांग के पाठक वास्तुशास्त्र की महत्ता व मूल सिद्धांतों से भलीभांति परिचित हैं और जानते हैं कि यदि भवन निर्माण के समय ही वास्तु नियमों का पालन किया जाए तो सर्वोत्तम है। इसका अर्थ यह नहीं है कि जो भवन बने हुए हैं इनमें तोड़-फोड़ की नहीं जा सकती, ऐसे भवन वास्तु नियमों का लाभ लेकर सुख-समृद्धि दायक बन सकते हैं। ऐसी स्थिति में दक्षिण-पूर्वी देशों में विकसित फैंग-शुई नामक उपचार पद्धति व मिस्र में उपजी पिरामिड शक्ति से बिना तोड़-फोड़ के मामूली परिवर्तन द्वारा भवन के वास्तु दोष-निवारण किये जा सकते हैं।

यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि भवन निर्माण में वास्तु-शास्त्र का पालन करने या विभिन्न तकनीकों द्वारा वास्तु-दोष निवारण से विभिन्न दैवीय शक्तियां उन सब व्यक्तियों के सोच-विचार एवं कार्यशैली में मदद करती हैं जो इन निर्माण स्थलों से जुड़े होते हैं। स्थान के मालिक, किरायेदार, भवन बनाने वाले ठेकेदार तथा मजदूरों पर भी इसका प्रभाव देखा गया है। उन सरल अनुभूत प्रयोगों से हर घर, दुकान, कार्यालय अथवा व्यावसायिक परिसर में ब्रह्मांड के प्रत्येक अणु में व्याप्त असीम ऊर्जा द्वारा सभी रुके कार्य अल्प प्रयास से थोड़े ही समय में पूर्ण किये जा सकते हैं। सर्वव्यापी मान्यता के अनुसार प्रकृति के विभिन्न तत्वों का स्थानन अथवा वर्गीकरण आठ मुख्य दिशाओं में किया जाता है।

आंतरिक भवन-सज्जा

घर, दुकान या कारखाने को वास्तु अनुरूप बनाने के लिये निर्माण के साथ-साथ उस जगह की आंतरिक सुव्यवस्था एवं साज-सज्जा अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। वास्तु, फैंग-शुई, पिरामिड शक्ति प्रयोग तंत्र में बिना तोड़-फोड़ किये निम्नलिखित उपाय प्रचलित हैं-

दर्पण-यह घर की सुख शांति तथा व्यापार में धन की वृद्धि करता है। इसी कारण होटलों, जलपान गृहों तथा बड़े ज्वैलर्स के यहां दर्पण का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। दक्षिण, पश्चिम, दक्षिण-पश्चिम के मुख्य द्वार वाले भवनों, कोने कटे मकानों, संकरे गलियारों या व्यावसायिक स्थानों पर भी दर्पण के उचित प्रयोग से काफ़ी हद तक वास्तु दोष दूर किया जा सकता है।

यथासंभव दर्पण का प्रयोग पूर्व, उत्तर या उत्तर-पूर्व में ही होना चाहिए। एक चीनी मान्यता के अनुसार शयनकक्ष में सोते समय शरीर का जो हिस्सा दर्पण में नजर आता है उस हिस्से में दर्द-बीमारी का वास हो जाता है। रात को ठीक से नींद नहीं आती है तथा सुबह शरीर थका-थका सा रहता है।

पौधे-प्रवेश द्वार के दोनों ओर पौधे रखने से मनुष्य की शक्ति, धन, वैभव में वृद्धि होती है। घर एवं स्कूल में बच्चों के अध्ययन कक्ष व व्यापारिक स्थल की उत्तरी दीवार के पास पौधे या बौन साई रखने से चमत्कारिक प्रभाव देखे जा सकते हैं। प्राकृतिक पौधों के अभाव में कागज तथा प्लास्टिक के फूल पत्ती तथा पेड़ों का प्रयोग भी किया जा सकता है।

प्रकाश-घर व्यवसाय में असमताओं को ठीक करने का अचूक साधन है। स्फटिक निर्मित शेन्डलियर से भी भवन की पारंपरिक सुंदरता बढ़ाने के अलावा वातावरण में समरसता व संतुलन लाया जा सकता है। प्रकाश का प्रयोग एल के आकार के समान भवन का दोष दूर करने में किया जा सकता है।

फव्वारे-झरने-पानी वैभव, धन तथा अधिकाधिक समृद्धि का प्रतीक है। फव्वारे एवं एक्वेरियम लगाने से परिवार में खुशी, धन, समृद्धि तथा आपस में प्रेम बढ़ता है। इनका प्रयोग भी पूर्व, उत्तर-पूर्व, उत्तर में ही अच्छा है।
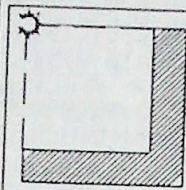
फ्लड लाइट द्वारा एल की आकृति वाले भवन का सुधार

वायु की झंकार-(घंटियां) आपसी संबंधों को नई दिशा, काम के नये आयाम, विभिन्न आकार व आवाज़ वाली घंटियां प्रोफेशनल जानकारी तथा व्यापार में नई उपलब्धियां प्रस्तुत करती हैं। द्वार, खिड़की के समीप या उत्तर-पश्चिम कोने में इनका प्रयोग सर्वोत्तम है।

पिरामिड शक्ति-भारत के प्राचीन ऋषि-मुनियों व तत्व वेत्ताओं तथा मिस्र के प्राचीन विद्वानों के अनुसार पिरामिड आकार एक अपरिचित शक्ति स्रोत है।

उचित प्रयोगों से अनगिनत स्वास्थ्य समस्याएं तथा भवनों में वास्तु दोष दूर किये जा सकते हैं। ई.एस.पी. प्रयोग शाला लॉसएंजिल्स (अमरीका) के निर्देशक एल. मेनिंग ने असंख्य परीक्षणों के बाद ये माना है कि पिरामिड संरचना में वास्तव में एक अबूझ विस्मयकारी व अचूक शक्ति है जो मानव कल्याण के लिए प्रयोग की जानी चाहिए। इस अमेरिकन संस्था के वैज्ञानिकों ने लिखा है कि अपनी राशि के अनुसार छोटे रंगीन पिरामिडों में अपनी फोटो तथा तिकोने कागज पर एक इच्छा लिखकर लगभग ३९ दिनों में पूरी की जा सकती है। प्लास्टिक के पिरामिड का कुछ समय प्रतिदिन सिर पर तथा छोटी पिरामिड शक्ति का कुर्सी या बिस्तर पर तकिये के नीचे प्रयोग करने से भी अनेकों अभिभावकों की बच्चों की पढ़ाई में ध्यान न देने या शीघ्र न समझ आने की शिकायतें दूर हुई हैं।
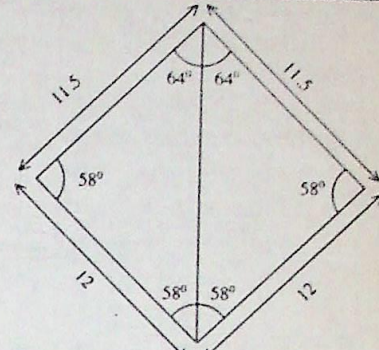
हैदराबाद के विश्व प्रसिद्ध वास्तु विशेषज्ञ डॉ. पूर्णचंद राव के अनुसार ९×९ अधिक शक्ति युक्त पिरामिड को दफ्तर, अध्ययन कक्ष, गोष्ठी कक्ष में रखने मात्र से सारा कमरा दैवी शक्ति से ओत-प्रोत हो जाता है। बहुत से लोगों के पत्र आये हैं कि यह उपकरण लगाने पर-

❖ कचहरियों के फैसले कंपनी के हक में हुए हैं। ❖ अधिक संस्थाओं में कर्ज के पुराने अनिर्णित प्रार्थनापत्रों के कर्ज मिल गये। ❖ अप्रत्याशित बिक्री के लक्ष्य प्राप्त हुए। ❖ मार्ग की सब रुकावटें समाप्त हुई। ❖ गंभीर बीमारियां ठीक हुई हैं। ❖ मन पसंद रिश्ते हुए। ❖ घर, कारखाने, व्यावसायिक स्थलों पर गंभीर वास्तु दोष दूर किये गये।

आवश्यकतानुसार एक या उससे अधिक पिरामिड शक्ति युक्त यंत्र लगाकर वे लोग उस दोष का निवारण करके सैकड़ों लोगों को २१ से ९० दिन में ही लाभान्वित कर चुके हैं।

अपने तीस साल के आध्यात्मिक जीवन के देश-विदेश के विभिन्न भागों में हुए पिछले ९ वर्ष के प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष अनुभवों के आधार पर मैं यह पूर्ण विश्वास से कह सकता हूं कि वास्तुशास्त्र, फैंग-शुई व पिरामिड शक्ति के उचित प्रयोग द्वारा घर-घर में व्याप्त चिंता व तनाव बहुत हद तक कम किया जा सकता है। हमारी इस प्राचीन अनमोल विरासत का आधुनिक विज्ञान के साथ सुखद तालमेल हो तथा अधिक से अधिक लोग सुखी व समृद्ध हों, यही हम सब के हित में हैं।

-गोपाल शर्मा

संकरे गलियारों एवं दुकानों का सुधार

दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार

दक्षिण-पश्चिम मुख्य द्वार का सुधार

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS
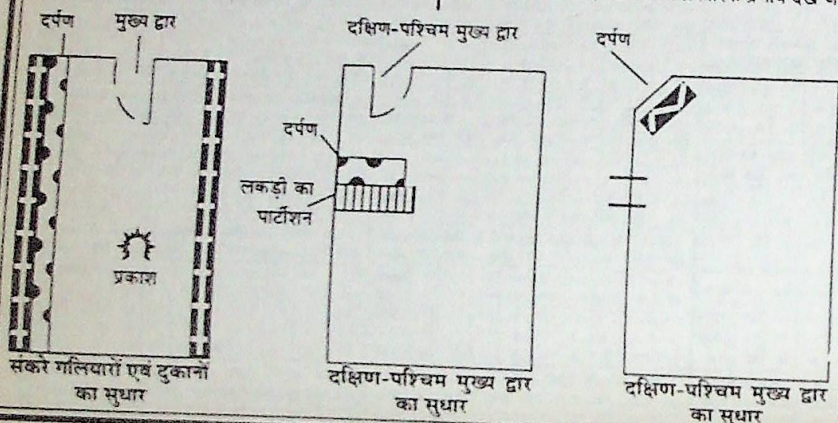
वास्तु शास्त्र

लेखक-श्री सत्यवीर शास्त्री

विश्वकर्मा जी बोले— हे मुनि श्रेष्ठ! मैं गृहस्थ आश्रम में रहने वाले लोगों के कल्याण के लिए गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय को विस्तारपूर्वक कहता हूँ। आप एकाग्रचित होकर सुनें। यह वही वास्तु शास्त्र है जिसे भगवान महादेव ने महर्षि पराशर को और पराशर जी ने मुनि वेद को और मुनि वेद ने मुझसे कहा था। पूर्वकाल (त्रेतायुग) में एक महाभूत उत्पन्न हुआ जिसने अपनी विशाल देह से समस्त चराचर को आच्छादित कर लिया। उससे इन्द्र आदि सभी देवता विस्मय युक्त होकर और भयभीत होकर ब्रह्मा की शरण में जाकर बोले— हे भूत भावन! हे भूतेपु लोक पितामह! हमारे लिए महाभयंकारी एक संकट उत्पन्न हुआ है। आप उससे तृण पाने का उपाय हमें बतलायें। ब्रह्माजी बोले— हे देवगण! भय मत करो। जो बलशाली महाभूत उत्पन्न हुआ है उसको पकड़ो और भूमि पर गिराकर तुम सभी निर्भय हो जाओ। ब्रह्माजी के वचन सुनकर देव समूह क्रोध में संतप्त हो उस महाभूत को पकड़कर आधोमुख धरती पर पटक कर निर्भय हो वहीं स्थित हो गये। उसी को लोक पितामह ब्रह्माजी ने वास्तु पुरुष की संज्ञा दी है। यह वास्तु पुरुष भाद्रपद मास की कृष्ण तृतीया शनिवार, कृतिका नक्षत्र, व्यतिपात योग, विष्टिकरण, भद्रा के मध्य और कुलिक मुहूर्त में उत्पन्न हुआ था। उस समय यह वास्तु पुरुष भारी शब्द करता हुआ ब्रह्माजी के पास पहुंचा और ब्रह्माजी के सम्मुख जाकर दीन स्वर में बोला— हे प्रभु! आपने इस सम्पूर्ण चराचर जगत की रचना की है और आपने ही मुझे रचा है फिर बिना अपराध के यह देव समूह मुझे पीड़ा क्यों पहुंचा रहा है? वास्तु पुरुष के दीन वचन सुनकर लोक पितामह ब्रह्माजी ने उसे वरदान दिया कि हे वास्तु पुरुष! जो व्यक्ति ग्राम, नगर, द्वार, गृह, जलाशय, देव स्थान इत्यादि के आरंभ करने में मोह वश हमारा पूजन करेगा वह व्यक्ति दरिद्रता को तो प्राप्त होगा ही परन्तु जीवन रहते भी मृत्यु सम कष्ट भोगेगा, उसके हर कार्य में विघ्न उपस्थित होंगे और अन्ततः वह हमारा आहार बन जायेगा। ऐसा कहकर लोकपति ब्रह्माजी अन्तर्ध्यान हो गये। इसलिए विज्ञ पुरुषों को चाहिए कि गृह आरम्भ और गृह प्रवेश के समय वास्तु पूजा अवश्य करें। इसके अतिरिक्त भी द्वार बनने के समय तीन प्रकार के गृह प्रवेश (यात्रा से लौटने पर, नवीन गृह में प्रवेश के समय, यदि यात्रा से लौटकर आने पर नूतन गृह प्रवेश) के समय उस प्रत्येक वर्ष यज्ञ आदि में, संतान के जन्म के समय, यज्ञोपवीत के समय, विवाह के समय, मंगल्य उत्सवों के समय, गृह के जीर्णोद्वार तथा गृह में धान रखने के समय, बिजली से टूटे हुए मकान में, अग्नि में जल जाने पर, गृह में सर्प और चण्डाल के वास करने पर जिस गृह में उल्लू और कौआ एक सप्ताह वास करे उस घर में, जिस गृह में हिरण वास करे, बिल्ला शब्द करे, हाथी-घोड़े क्रूर शब्द करें, जिस गृह में स्त्रियां कलह करती हों, मधुमक्खियों का छत्ता रखा हो। जंगली कबूतरों का वास हो अथवा अन्य अप्राकृतिक उत्पाद होते हैं वहां वास्तु शांति अवश्य करनी चाहिए।

गृह निर्माण योग्य भूमि के लक्षण

प्राचीन मुनियों में भूमि को ब्राह्मादि वर्णनक्रम से श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण वर्ण भूमि को शुभ कहा है। जिस भूमि में फूलों की सी सुन्दर गंध आती हो वह भूमि ब्राह्मण वर्णी कहलाती हैं। जिसमें रक्त जैसी गंध आती हो वह क्षत्रिय वर्णी, जिसमें मधु जैसी गंध आती हो वह वैश्य वर्णी और जिसमें मदिरा जैसी गंध आती हो वह भूमि शूद्र वर्णी कहलाती हैं। जिस भूमि की मिट्टी का स्वाद मधुर हो वह ब्राह्मण वर्णी, जिसका स्वाद कसैला हो वह क्षत्रिय वर्णी, जो स्वाद में खट्टी हो वह वैश्य वर्णी और जिस भूमि की मिट्टी तिती हो वह शूद्र वर्णी कहलाती है। भवन निर्माण के लिए जो भूमि चौकोर हो, हाथी के आकार की हो, सिंह, बैल, घोड़े आदि के समान रूप वाली हो, त्रिशूल, भद्रपीठ, शिवलिंग के समान हो, प्रसाद के ध्वज और कुंभ आदि के समान हो वह भूमि देवताओं को भी दुर्लभ है। जिसकी आकृति त्रिकोनी गाड़ी के आकार की, सूर्प बीज के समान, मदृग के आकार की, सर्प अथवा मेढक के रूप वाली, गधा, अजगर के सादृश्य, सूकर, ऊंट, बकरी के समान, धनुष, कुल्हाड़ी के सादृश्य, गिरगिट और शव के रूप वाली, जहां जाना कष्ट साध्य हो ऐसी भूमियों को गृह निर्माण के लिए उपयोग में नहीं लाना चहिए। गृह निर्माण के लिए उसी भूमि की परीक्षा करनी चाहिए जो सुन्दर हो। जो भूमि उत्तर और पूर्व की ओर नीची, दक्षिण और पश्चिम की ओर ऊंची होती है वह दृढ़ कही जाती है। ब्राह्मणों के लिए गंभीर भूमि, क्षत्रियों के लिए ऊंची भूमि, वैश्यों के लिए समतल भूमि और शूद्रों के लिए विकट भूमि पर गृह निर्माण शुभ रहता है। अथवा समतल भूमि पर सभी वर्ण वाले गृह निर्माण करे तो शुभ फल मिलते हैं। जिस भूमि का वर्ण श्वेत हो वह सभी वर्णों के लिए शुभ रहती है। जिस भूमि पर कुशा उगी हो वह ब्राह्मणी भूमि कही जाती है और ब्राह्मणों को शुभद रहता है। क्षत्रियों के लिये दुवा से युक्त भूमि शुभद रहती है। जो भूमि फल-पुष्प से युक्त हो वह वैश्यों को सुखकर रहती है। जिस भूमि पर कण आदि उत्पन्न होते हैं वह भूमि शूद्रों के लिए शुभ फलकारी होती है। जिस भूमि पर नदी कटाव दे रही हो अथवा उसमें बड़े-बड़े पत्थर हों, पर्वतों के साथ मिली हुई गड्ढे से युक्त छत वाली, टेढ़ी-मेढ़ी, सूप के आकार की दण्ड के समान, निस्तेज भल और रीछ के सादृश्य, मध्य में विकट रूप कुत्ता और शयारों के सादृश्य रूखी, चैतय श्मशान वामी आदि के स्थान से युक्त चौराहा युक्त, जहाँ बड़े- बड़े ऊँचे वृक्ष हों, जिस भूमि पर भूत आदि का निवास हो, जो नगर से दूर हो ऐसी भूमि को गृह निर्माण के लिये उपयोग में नही लाना चाहिए। जिस भूमि में अपने वर्ण की गंध आती हो, जो सुंदर स्वाद से युक्त हो उस पर गृह निर्माण करने से गृह स्वामी को धन-धान्य और सुख की प्राप्ति होती हैं। इसके विपरीत भूमि पर गृह निर्माण करने से विपरीत फल मिलता हैं। अतः भूमि की परीक्षा करना गृह निर्माण से पूर्व आवश्यक रहता हैं। जो भूमि चौकोर है उस पर गृह निमार्ण करने से धन- धान्य की वृद्धि होती है। जो भूमि हाथी के समान है उस पर गृह निर्माण करने से व्यवसाय में वृद्धि होती है। सिंह के समान भूमि पर गृह निर्माण करने से उत्तम संतान की प्राप्ति होती है। जो भूमि बैल के सादृश्य है उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी के पशु धन की वृद्धि होती है। जो भूमि गोल आकार की तथा भद्रपीठ के सादृश्य है उस भूमि पर वास करने से सुख की प्राप्ति और जो भूमि त्रिशूल के समान आकार वाली है उस पर वास करने से धन व सुख दोनों

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मिलते हैं। जो भूमि शिवलिंग के आकार की हो उस पर शिवालय आदि का निर्माण और साधुओं का निवास शुभद रहता है। जो भूमि प्रस्तुत ध्वज के समान हो उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को पदोन्नति मिलती है। कुंभ के सादृश्य भूमि पर गृह निर्माण कर गृहस्वामी अपनी धन-संपदा को बढ़ा लेता है। जो भूमि त्रिकोण के सादृश्य, गाड़ी के आकार वाली, सूर्प और बीज के सादृश्य हो उस पर गृह निर्माण करने से गृहस्वामी को क्रमशः पुत्र सुख, धन सुख में कमी और धर्म की हानि होती है। जो भूमि मृदंग के समान हो वह वंश की हानि करती है। सर्प और मेढ़क के आकार वाली भूमि भय उत्पन्न करती है, गधे के आकार वाली भूमि निर्धनता को जन्म देती है। अजगर के सादृश्य भूमि मृत्यु सम कष्ट पहुंचाती है। चपटी और मुदगर के सादृश्य भूमि पुरुषार्थ की हानि करती है। उल्लू और कौए की सादृश्य भूमि दुःख, सुख और भय को जन्म देती है। सर्पाकार भूमि संतति आदि को नष्ट करती है। सूकर, ऊँट और बकरे के साध्य भूमि मलिन, मूर्ख पुत्रों को उत्पन्न करती है। जो भूमि गिरगिट और सर्प के समान हो वह मृत संतान को उत्पन्न करती है। मार्गश्री, फाल्गुन, वैशाख, माघ, आश्विन और कार्तिक में गृह आदि का निर्माण करने से गृहपति को पुत्र तथा स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। यह नारद का मत है। वैशाख, आश्विन, मार्ग., आषाढ़, माघ, फाल्गुन में यदि कन्या, मिथुन, धनु और मीन से अन्य राशि में सूर्य हो तो गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह किसी आचार्य का मत है। चैत्र, ज्येष्ठ, आषाढ़, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक और माघ के महीनों में गृह आरम्भ नहीं करना चाहिए। यह योगेशाचार्य का मत है। मेष के सूर्य यदि वैशाख में गृह निर्माण करने से सुख, वृष के सूर्य अर्थात् ज्येष्ठ में धन वृद्धि, माघ के सूर्य अर्थात् आषाढ़ में मृत्यु, कर्क के सूर्य अर्थात् आश्विन में धन लाभ, सिंह सूर्य अर्थात् भाद्रपद में भद्रव्य वृद्धि, कन्या अर्थात् आश्विन में रोग से पीड़ा, तुला अर्थात् कार्तिक में धन वृद्धि, धनु के सूर्य अर्थात् पौष में हानि का भय, मकर के सूर्य अर्थात् माघ में धन का लाभ, कुंभ के सूर्य अर्थात् फाल्गुन में रत्नों का लाभ और मीन के सूर्य अर्थात् चैत्र में गृह निर्माण करना भयदायक होता है यह नारद का मत है।

फाल्गुन मास में कुंभ का सूर्य हो, आश्विन में सिंह अथवा कर्क के तथा पौष में मकर के तो पूर्व, पश्चिम द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। वैशाख में मेष और वृष मार्ग. दल में तुला और वृष के सूर्य हो तो दक्षिण-उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है। कर्क, मकर, सिंह, कुंभ के सूर्य में पूर्व, पश्चिम और द्वार में घर तुला, मेष, वृष, वृश्चिक के सूर्य में दक्षिण, उत्तर द्वार का गृह निर्माण करना शुभ होता है। मीन, धनु, कन्या के सूर्य में गृह निर्माण करना निषिद्ध है। जो अनभिज्ञ लोग इस काल में गृह निर्माण करते हैं वह सदैव ही दुःख और शोक को भोगते हैं यह श्रीपति का मत है। किसी आचार्य का मत है कि मेष के सूर्य में चैत्र, वृष में ज्येष्ठ, कर्क में आषाढ़, सिंह में भाद्रपद, तुला में आश्विन, वृश्चिक में कार्तिक, मकर में पौष और कुम्भ में माघ मास में गृह आरम्भ शुभ होता है। कार्तिक में कन्या का सूर्य और माघ में धनु का सूर्य शुभ नहीं होता। घास-फूस अथवा लकड़ी के घर बनाने में मास शुद्धि की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि यह लंबे समय तक रहने योग्य नहीं होता। ईंट अथवा पत्थर द्वारा गृह निर्माण निन्दित मासों में नहीं करना चाहिए। ज्येष्ठ में पशु गृह, आश्विन में धान्य गृह, माघ में गौशाला और चैत्र में नदी के तटवर्ती भवन का निर्माण शुभ होता है। शुक्ल पक्ष में गृह आरम्भ करने से सरवीत शोक, कृष्ण पक्ष में चौरों का भय तथा शुक्र और गुरु दोनों ही उदिय हों तो शुक्ल पक्ष में दिन के समय गृह आरम्भ करना चाहिए।

शास्त्र का ज्ञाता होना एक बात है, उसके रहस्य को जानना नितान्त भिन्न बात है। जब तक किसी भी शास्त्र के मर्म को नहीं जाना जाता तब तक केवल जमीन की सतह की पैमाइश करने वाली बात ही रहती है। रहस्य उस विषय के मर्मज्ञ जनों की कृपा से अथवा पराम्बा केप्रसाद से उद्घाटित होता है। ज्योतिष एवं सामुद्रिक शास्त्र जैसे विषय का रहस्य तो गुरू-कृपा से ही ज्ञात हो सकता है। ज्योतिष को त्रिपाक्षिकी की विद्या कहते हैं अर्थात् छः सप्ताह तक यदि ज्योतिष का प्रयोग ना किया जाए तो यह विस्मृत हो जाती है। किसी भी विद्या को चिरयुवा रखने का अमोघ आधार अभ्यास है इसलिए जो कोई भी इस विद्या में निपुणता प्राप्त करना चाहता है उसे निरन्तर अभ्यास से परिपुष्ट करते रहना चाहिए।

ज्योतिष को वेदांग के सुरूप में सम्मानित किया गया है और इस विषय की व्यापकता सूर्य की रश्मियों की तरह अपरिमेय है। भगवान् भास्कर हमें प्रकाश ही नहीं देते, सविता के रूप में विविध वस्तुओं को उत्पन्न भी करते हैं और सप्ताश्ववाही रथ पर अधिष्ठित होने के कारण हमारे जीवन और सृष्टि को तरंगी सतरंगी सुन्दरता से सजाते भी हैं। ये भुवनस्य गोप्ता हैं इसलिए इनकी प्रचण्ड किरणों के आवरण को भेदकर ब्रह्माण्डीय किरणें तथा अल्ट्रा वायलेट रेज जैसी घातक एवं शक्तिशाली तरंगे हमें क्षति नहीं पहुंचा सकतीं।

सूर्य की किरणें हमारे अन्तर्बाह्य को प्रभावित करती हैं, इसके निर्माण में भी इनका प्रमुख योगदान रहा है, हमारा ही नहीं समस्त संसार का इतिहास इस कालात्मा के विराट रूप में सुरक्षित है। ऐसे ही हमारा अज्ञात भविष्य भी इसके अलौकिक रूप में वर्तमान है अन्यथा हमारे सीमित पुरज्ञान में वर्तमान का अस्तित्व हस्तलभ्य होता ही कहां है। जो कुछ भी अतीत और ब्राह्यता बहुत सीमित है इसलिए हमारी व्यावहारिकता में केवल विगत और आगामिष्यत् हैं जबकि कालात्म के रूप में सभी कुछ वर्तमान है। ज्योतिषी इसी कालात्म को साक्ष्य मानकर हमारे लिए कुतूहल का विषय बन भविष्यत् का कथन करते हैं।

भारत में "तमसो मा ज्योतिर्गमय" की उद्घोषणा करने वाले ऋषि प्रकाश के सत्य और उसकी व्यापकता से परिचित रहे थे इसलिए उन्होंने अविभाज्य काल को पहचान कर उसको अपने जीवन से अच्छिन्न रखने के लिए क्रिया के भेद किए। यह विषय व्याकरण का रहा पर शुद्ध रूप से ज्योतिष की मीमांसा करते समय वे प्रकाश के प्रभाव और परिणामों का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहे परिणामतः जिस तरह वे व्यक्ति के बाह्य रूपाकार का आंकलन कर सके उसी तरह उसके आन्तरिक अतएव गुणात्मक स्वरूप का भी मूल्यांकन करने में समर्थ हो सके।

महर्षियों की यह साधना और निरीक्षण पद्धति केवल व्यक्ति तक ही सीमित नहीं रही, पर्यावरण, ऋतु, भूगर्भ और धरित्री की प्रकृति का अध्ययन भी उसकी सीमा में आया। लगध, वराह, पराशर, गर्ग, भृगु और रावण जैसे स्वनाम धन्य मनीषियों ने इस विषय को व्यापक और मानवोपयोगी बनाने में लोकोत्तर योगदान किया। धरती के नीचे कहां मीठे जल की धारा है, किस प्रकार की धरती मनुष्य के आवास के उपयुक्त है, धरती की गंध में जैव रासायनिक परिवर्तन किस तरह के होंगे, उनका हमारे पर अनुकूल प्रभाव होगा अथवा प्रतिकूल आदि विषय ज्योतिष शास्त्र से ही संबद्ध है।

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ज्योतिष की ही एक शाखा है, ''सामुद्रिक।'' सामुद्रिक शब्द व्यक्ति के रूप आकार में प्रसुत चिन्हों एवं संयोजनों को समझने का बोधक किस प्रकार बना — यह शब्द शास्त्र के विवेचन की बात है। हम इतना जानते हैं कि सामुद्रिक के नाम से जाना शास्त्र ज्योतिष की एक शाखा है और यह व्यक्ति की रूप रेखाओं की है को आधार बनाकर उसकी स्थिति एवं भविष्यत् का उपदेश करता है। इसमें मनुष्य के व्यक्तित्व, मुख मंडल, नासिका, ललाट आदि के संघटन को देखकर भविष्य ज्ञान किया जाता है।

हमारे काव्य शास्त्र में सुन्दर पुरुषों एवं स्त्रियों की सुन्दरता के लिए जो उपमायें दी गई हैं वे सामुद्रिक शास्त्र की मान्यताओं को सिद्ध करती हैं। कमल पत्र के समान आयत विशाल आंखें, लाल कमल के सदृश्य सुकोमल अरुण हाथ और पदतल व्यक्ति के सुन्दर स्वास्थ्य के ही सूचक नहीं हैं (क्योंकि लाल रंग सन्तुलित रक्त प्रवाह को ही संभव हुआ करता है) बल्कि उनकी कोमलता व्यक्ति के सम्पन्न स्तर की सूचना देता है। बिहारी की रचनाएं आँखें मुख मंडल को आकर्षक ही नहीं बनाती उसके कामी होने की सूचक भी हैं। क्योंकि ज्योतिष के अनुसार आंखों में भार मंगल की सुदृढ़ एवं नेत्र स्थान से सीधे संबंध के कारण होता है और उनमें रंग चंद्रमा के कारण होता है जहां इन दोनों ग्रहों का संयोजन हुआ। वही व्यक्ति आकृति से मोहक और व्यवहार में कामी हो गया। सामुद्रिक शास्त्र के ये वाह्य चिन्ह व्यक्ति की गृहस्थिति के जन्मकालिक सभी कारण को प्रकट करते हैं और उस स्थिति को जानने पर किसी के भविष्यत् को जान लेना कोई अगम्य बात नहीं रहती। अन्तर यही है कि सामुद्रिक शास्त्र ग्रहों की चर्चा नहीं करता वह संयोजना और संघटनों का फलित बतलाता है।

भारत में आकृति विज्ञान-सामुद्रिक शास्त्र का प्रचार बहुत पुराने समय से प्रचलित है। वाल्मीकि ने राम को आजानुबाहु और अरविन्द दलायताक्ष (घुटनों तक लंबे हाथ और कमल के पत्ते के समान विशाल आंख वाला) बतला कर सामुद्रिक शास्त्र के इस सिद्धान्त की पुष्टि की है कि घुटनों तक के लंबे हाथ वाला व्यक्ति सम्राट हुआ करता है। पैरों के तलवों की रेखाओं, लाल ललाट पर पड़ने वाली वलियों, नासिका आदि को देखकर व्यक्ति के स्तर एवं भावी जीवन का पढ़ने की परम्परा अति प्राचीन काल से है। हाथों की रेखा भी इस भविष्यत ज्ञान का एक माध्यम रहा है।

आज सामुद्रिक शास्त्र में हस्त सामुद्रिक का ही अधिक प्रचार है और निश्चय से इसका श्रेय कीरों को दिया जाना चाहिए। इस शताब्दी में वही एक चमत्कारी सामुद्रिक शास्त्री था जिसकी शुद्ध और चमत्कारी भविष्यवाणियों ने पश्चिम वासियों को इस विज्ञान पर विश्वास करने के लिए बाध्य कर दिया। यद्यपि कीरों की हस्त सामुद्रिक भी भारत की ही देन है (वह दक्षिणी भारत के धर्मपत्र पर लिखी हस्त सामुद्रिक की कोई पुस्तक ले गया था और वही उसके ज्ञान का आधार बनी थी), फिर भी उसने पामिस्ट्री को वैज्ञानिक आधार दिया। उसकी दृष्टि से हाथ की रचना में निर्मित कोई भी चिन्ह बचा नहीं। हाथ का आकार, अंगुलियों की बनावट, अंगूठा, चमड़ी, रेखाओं का रंग रूप आदि सारे अंग-उपांग उसके अध्ययन का विषय बने और इन सबकी उसने सम्यक् संगति करके अपने निष्कर्ष को प्रामाणिक एवं कारणवादी सिद्ध किया।

मेरा अपना विचार है कि कीरों को छोड़कर आज की प्रचलित हस्त रेखा की पुस्तकों को पढ़कर कोई भी उतनी सूक्ष्म और विस्तृत भविष्यवाणी नहीं कर सकता (कर भी सकता है तो मुझे ज्ञात नहीं) इसके साथ ही यह भी है कि ज्योतिष जितना विस्तृत आधार देता है उतना हस्त रेखा नहीं देती। हस्त रेखा वस्तुत: रेडी रालेज है, हस्तरेखा देखने वाले को किसी कुण्डली या समय की आवश्यकता नहीं रहती यह इस विद्या की विशेषता है या अपने सामने फैले हुए हाथ को देखकर व्यक्ति के चरित्र एवं भविष्यत् के गूढ़ रहस्यों को कह देने के खतरे से भी आमने-सामने होना पड़ता है।

इस विद्या से समय का दुरुपयोग अधिक होता है और लोग सच्ची भविष्यवाणियों पर इस विषय की प्रामाणिकता की प्रशंसा नहीं करते बल्कि एक गलत बात का उदाहरण देने लगते हैं। अन्तत: यह भी एक साइंस आफ एस्टीमेट है।

हस्त सामुद्रिक को सम्पूर्ण ज्योतिषीय आधार देने में कीरों ने अपनी तरफ से कोई कसर नहीं रखी। हाथ का रूप एवं आकार हमारे जन्म-लग्न की तरह भविष्य कथन का आधार बनता है अर्थात् हाथ का सामान्य आकार व्यक्ति के चरित्र एवं प्रकृति का ज्ञान कराता है तो रेखायें दशा अन्तर्दशा घटने वाली घटनाओं का ज्ञान कराती हैं। अंगुलियों में क्रियात्मकता है और इनका लचीलापन मनुष्य की विकसित बुद्धि का साहचर्य पाकर संसार को मानववृत्त रूप सज्जा से संवारता है।

भारत का तत्वसिद्धांत अंगूठे में आकाश तत्व का मानता है और इन पांच अंगुलियों में यही एक पुल्लिंग है तथा आकाश तत्व का प्रतिनिधि होने के कारण शून्य प्रतीक है और शून्य क्रियाशीलता की प्रत्येक मुद्रा का आधार है। तंत्र में बनाई जाने वाली मुद्राएं और अनिवार्य रूप से किया जाने वाला कर न्यास हमारे हाथ के महत्व को सिद्ध करता है। ''कराग्रे वसति लक्ष्मी: करमध्ये सरस्वती मूले तंत्र स्थितो ब्रह्मा'' हाथ के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल भाग में ब्रह्मा का निवास रहता है। इस रूप में सोचने वाले भारतीय प्रात:काल सबसे पहले अपने हाथ को देखने की व्यवस्था करते हैं।

आज की पामिस्ट्री में और भारतीय सामुद्रिक शास्त्र में मूलभूत अंतर है। जिसे समुद्र शास्त्र माता व पिता की रेखा मानता है। उसे पामिस्ट्री मस्तिष्क या शिर और जीवन की रेखा बतलाता है, भारतीय दृष्टि की जीवन रेखा पामिस्ट्री के अनुसार हृदय रेखा होती है। रेखाओं के अन्य स्थानों पर होने वाले चिन्हों के संबंध में कोई मूलभूत अंतर नहीं है।

ग्रहों के स्थानों का नामकरण पामिस्ट्री की अपना स्थापना है। इस विषय में सामुद्रिक शास्त्र केवल इनके आकार का फलित बतलाता है, नामकरण नहीं करता। हमारे हाथ के नीचे भाग मणिबंध के पास चन्द्र और शुक्र के स्थान माने जाते हैं ये दोनों जलीय ग्रह हैं और इनसे व्यक्ति को कल्पनाशीलता और कामुकता का ज्ञान होना एक व्यवहारिक बात रहती है। इससे आगे मंगल का स्थान तेजस्तत्वीय ग्रह का स्थान है। अंगूठे और तर्जनी के बीच के स्थान का पुष्ट होना व्यक्ति की आक्रामक शक्ति को सूचित करता है तो इसके नीचे कनिष्ठा अंगुली की सीध में व्यक्ति की निरोधक शक्ति को। हमारी हथेली के तीन चौथाई भाग में इन तीन ग्रहों का आधिपत्य है अंगुलियों के आधारभूत स्थान शेष चार ग्रहों के।

वृष वास्तु चक्र

गृह निर्माण के पूर्व जिस नक्षत्र में सूर्य हो उस नक्षत्र को दिन नक्षत्र तक गिनें। प्रथम तीन नक्षत्र वृष के शरीर में रहते हैं। उनमें गृह आरम्भ किया हो तो घर में अग्नि काण्ड का भय रहता है। अगले चार नक्षत्र वृष के अगले पैर में होते हैं उनमें गृह आरंभ हो तो घर जनशून्य रहता है। इसके बाद चार नक्षत्र वृष के पिछले पैर में होते हैं

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

इनमें किया गया गृह आरम्भ धन और शांतिदायक रहता है। उसके बाद तीन नक्षत्र वृष की पीठ पर स्थित होते हैं इनमें यदि गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी के व्यवसाय में उन्नति होती है। उसके बाद के चार नक्षत्र वृष के दाहिनी कुक्षि में स्थित होते हैं उसमें गृह आरम्भ हो तो लाभ रहता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष की पूंछ में स्थित होते हैं। इनमें गृह आरंभ हो तो गृह स्वामी नाश को प्राप्त होता है। इसके बाद के चार नक्षत्र वृष की बायीं कुक्षि में स्थित होते हैं इन्में गृह आरम्भ करना दरिद्रपना देता है। इसके बाद के तीन नक्षत्र वृष के मुख में स्थित होते हैं इनमें गृह आरम्भ किया जाये तो गृह स्वामी को अनेक पीड़ाएं भोगनी पड़ती हैं। सारांश यह है कि जिस नक्षत्र में सूर्य हो उसके सात नक्षत्र अशुभ, उसके बाद ग्यारह नक्षत्र शुभ और पीछे के दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। गृह निर्माण करने के लिए सूर्य किस राशि पर स्थित है इस पर विचार कर लेना भी श्रेष्ठकर रहता है। मेष के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदायक होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन-धान्य की वृद्धि करता है। मिथुन के सूर्य में घर बनाने वाले को मृत्यु सम कष्ट पहुंचाता है। कर्क के सूर्य में घर बनाना शुभ फलदाता रहता है। सिंह के सूर्य में घर बनाना दास-दासियों की वृद्धि करता है। कन्या के सूर्य में घर बनाना रोग उत्पन्न करता है। तुला के सूर्य में गृह निर्माण शुभकारी होता है। वृष के सूर्य में घर बनाना धन की वृद्धि करता है। धनु के सूर्य में घर बनाना हानिकारक रहता है। मकर के सूर्य में घर बनाना व्यवसाय में वृद्धि करता है। कुंभ के सूर्य में घर बनाना रत्नों का लाभ पहुंचाता है। मीन के सूर्य में घर बनाना भय उत्पन्न करता है। चैत्र मास में घर बनाने से गृहकर्त्ता को व्याधि का भय। वैशाख मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-रत्न आदि का लाभ। जेठ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मरण तुल्य कष्ट। आषाढ़ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को श्रेष्ठ एवं अधिक भद्र की प्राप्ति लेकिन पशुओं की हानि। इसलिए आषाढ़ मास में पशुओं के लिए घर न बनाना। सावन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को मित्र से लाभ। भाद्रपद मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को हानि का भय। आश्विन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता की स्त्री की मृत्यु। कार्तिक मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन-धान्य का लाभ। अगहन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को धन का लाभ। पौष मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को चोरों से भय। माघ मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को विविध भोगों की प्राप्ति परन्तु अग्नि का भय। फाल्गुन मास में गृह निर्माण करने से गृहकर्ता को रत्न आदि की प्राप्ति। मुहूर्त मार्तण्ड में, पौष में (मकर के सूर्य में) गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। पत्थर, ईंट आदि का घर निन्द मास में निर्माण नहीं करना चाहिए। तृण, काष्ठ आदि के गृह निर्माण के आरम्भ में मास दोष नहीं देखा जाता। यदि सूर्य कर्क, सिंह, मकर अथवा कुंभ राशि का है तो पूर्व या पश्चिम मुख के द्वार का गृह निर्माण करना शुभ रहता है। तुला, वृश्चिक और मेष में का सूर्य हो तो दक्षिण या उत्तर मुख का गृह बनाना। यदि मिथुन, कन्या, धनु और मीन का सूर्य हो तो गृह निर्माण नहीं करना चाहिए। शुक्ल पक्ष का गृह निर्माण करने से सुख मिलता है और कृष्ण पक्ष में गृह निर्माण करने से चोरों का भय रहता है। नारद आदि ऋषियों का मत है कि फाल्गुन, वैशाख, माघ, सावन, कार्तिक इन पाचों मासों में गृह निर्माण करना विशेष फलदायी रहता है। श्रीपति का मत है कि ब्राह्मण आदि वर्णों को क्रमशः पश्चिम, उत्तर, पूर्व, दक्षिण मुख का द्वार बनाना शुभ है। जैसे— ब्राह्मण को पश्चिम मुख, क्षत्रिय को उत्तर मुख, वैश्य को पूर्व मुख और शूद्र को दक्षिण मुख बनाना शुभ है। गृह निर्माण करते समय रवि, चन्द्रमा, वृहस्पति और शुक्र इन चारों ग्रहों में से कोई भी ग्रह निर्बल हो, अस्तगत हो अथवा नीचगस्त हो तो क्रमशः गृह स्वामी की स्त्री सुख और धन का नाश होता है। चन्द्रमा और ग्रह का नक्षत्र ये दोनों यदि आगे बढ़े तो उस ग्रह में गृह स्वामी की स्थिति नहीं होती। अगर उपरोक्त दोनों नक्षत्र पीछे पड़े तो चोरों का भय रहता है। जिस समय गृह बनाना प्रारम्भ करना हो उस समय की कुण्डली बनानी चाहिए। यदि उस कुण्डली के लग्न में सूर्य पड़े तो वज्रपात, चन्द्रमा पड़े तो कोष की हानि, मंगल पड़े तो मृत्यु का भय, शनि पड़े तो दरिद्रता, वृहस्पति पड़े तो धर्म अर्थ और काम की प्राप्ति, शुक्र पड़े तो सुत की उत्पत्ति, बुध पड़े तो बाहुबल और आयु की वृद्धि होती है। द्वितीय भाव में सूर्य पड़े तो हानि का भय, चन्द्रमा हो तो शत्रु का नाश, मंगल हो तो अनेक प्रकार के विघ्न, बुध हो तो अतुल संपत्ति, वृहस्पति हो तो धर्म का समागम, शुक्र हो तो काम सुख की प्राप्ति होती है। तीसरे भाव में शुभ ग्रह पड़े तो थोड़ा शुभ फल करते हैं, पाप ग्रह पड़े तो विशेष शुभफल करते हैं। चतुर्थ स्थान में वृहस्पति हो तो राजा को पूजित, बुध हो तो सर्वथा लाभ प्राप्ति करने वाला, शुक्र हो तो भूमि का लाभ, सूर्य हो तो मित्र से वियोग, मंगल हो तो मित्र से भेद, चन्द्रमा हो तो वृद्धि का नाश, शनि हो तो महा लाभ मिलता है। पंचम भाव में वृहस्पति हो तो वस्त्र और धन का लाभ, मित्र से समागम, शुक्र हो तो पुत्र और धन की प्राप्ति, बुध हो तो स्वर्ण आभूषण की प्राप्ति, सूर्य हो तो पुत्र को कष्ट, चंद्रमा हो तो कलह का आगमन, मंगल हो तो काम सुख में वृद्धि, शनि हो तो काम सुख का नाश करता है। छठे स्थान में सूर्य हो तो राजा को सम्मान, चंद्रमा हो तो पुष्टि, मंगल हो तो शत्रु का नाश, वृहस्पति हो तो धनागम, शुक्र हो तो विद्या का लाभ, बुध हो तो मान का ज्ञान प्राप्त होता है। सप्तम स्थान में वृहस्पति हो तो उच्च वाहन की प्राप्ति, बुध हो तो मध्यम वाहन की प्राप्ति, शुक्र हो तो भूमि और काम सुख की प्राप्ति, रवि हो तो यश का नाश, मंगल हो तो लड़ाई-झगड़े का भय, चंद्रमा हो तो मूर्खता से हानि और शनि हो तो शत्रु से भय रहता है। अष्टम भाव में सूर्य हो तो शत्रु से भय, अनेक विपत्तियों का आगमन, चंद्रमा हो तो सर्वस्व की हानि, मंगल-शनि हो तो महान भय की प्राप्ति, बुध हो तो महान धन की प्राप्ति, वृहस्पति हो तो शत्रु पर विजय का लाभ और शुक्र हो तो परिजनों से सुख मिलता है। नवम भाव में वृहस्पति हो तो बुद्धि और भाग्य की वृद्धि, बुध हो तो नाना प्रकार के भाग की प्राप्ति, शुक्र हो तो थोड़ा भाग उदय, चन्द्रमा हो तो धातु का श्रय, सूर्य हो तो धर्म की हानि, मंगल हो तो सामर्थ्य का नाश, शनि हो तो इच्छा पूर्ति में बाधा उत्पन्न करते हैं। दसम भाव में शुक्र हो तो उत्कृष्ट शयान, वृहस्पति हो तो बहुत सुख, बुध हो तो विजय की प्राप्ति, सूर्य हो तो धन की वृद्धि, चन्द्रमा हो तो कोष की वृद्धि, मंगल हो तो बाहुबल की वृद्धि, शनि हो तो यश का नाश होता है। एकादश स्थान में सभी ग्रह शुभ फलदायी होते हैं। बारहवें स्थान में बैठे हुए सभी ग्रह उदासी उत्पन्न करते हैं।

अगर वृहस्पति, सूर्य, बुध, शुक्र और शनि क्रमशः लग्न षष्ट, सप्तम, चतुर्थ और तृतीय भाव में हो तो ऐसे समय में घर बनाने से वह घर सौ वर्ष तक रहता है। यदि शुक्र, शनि, सूर्य, मंगल और बृहस्पति क्रमशः लग्न तृतीय, षष्ट और पंचम भाव में हो तो उस घर की आयु 200 वर्ष होती है। लग्न में शुक्र, दशम में बुध, एकादश में सूर्य और लग्न को छोड़कर बाकी किसी केन्द्र स्थान में बृहस्पति हो

आर्यभट्ट पञ्चाङ्गम्

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

उस घर की आयु सौ वर्ष होती है। यदि चौथे स्थान में वृहस्पति, दशवें में चन्द्रमा, मंगल और एकादश स्थान में शनि हो तो उस घर की आयु 80 वर्ष होती है। यदि उच्च में शुक्र लग्न का हो अथवा उच्च का बृहस्पति चतुर्थ में हो अथवा उच्च का शनि एकादश में हो तो ऐसे घर में सदैव लक्ष्मी का निवास रहता है। एक भी गृह शत्रु के नवांश में स्थित होकर सातवें या दशवें स्थान में हो तो उस समय बना हुआ घर एक वर्ष के भीतर ही दूसरे के हाथ में चला जाता है। ध्यान रहे ब्राह्मण आदि वर्ण स्वामी यदि दुर्बल हो तो ऐसा होता है यदि बलि हो तो उपरोक्त फल नहीं मिलता। पुष्य, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, रोहिणी, उत्तरा भाद्रपद, मृगशिरा, श्रवण, आश्लेषा, पूर्वाषाढ़ इन नक्षत्रों में से किसी एक पर बृहस्पति बैठा हो और उस समय में बृहस्पतिवार हो तो उस समय घर का प्रारम्भ करने से पुत्र-पौत्र आदि की प्राप्ति और राज्य के तुल्य सुख मिलता है। विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा, आर्द्रा इन नक्षत्रों में से किसी एक में शुक्र बैठा हो और उस दिन शुक्रवार ही हो तो घर आरम्भ करने से धन-धान्य की वृद्धि होती है। रामदेवाज्ञ के मत से विशाखा, अश्विनी, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा और आर्द्रा, नारद के मत से अश्विनी, शतभिषा, विशाखा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, चित्रा, धनिष्ठा और पुनर्वसु वशिष्ट के मत से आर्द्रा विशेष रूप से, दूसरे के मत से पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और पुनर्वसु नक्षत्रों में घर आरंभ विशेष शुभ फलदायी होता है। मूल, रेवती, कृतिका, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाफाल्गुनी, हस्त और मघा इन सात नक्षत्रों में से किसी एक में मंगल स्थित हो और उस दिन मंगलवार हो उस दिन घर आरंभ करने से वह घर अग्नि से जल जाता है और पुत्र-पौत्र आदि का नाश होता है। ये नारद का मत है। हस्त, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, अश्विनी और रोहिणी इनमें से किसी एक नक्षत्र में बुध स्थित हो और उस दिन बुधवार हो तो घर आरंभ करने से गृह स्वामी को धन, पुत्र और सुख मिलता है ये वशिष्ट का मत है। यदि पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद, भरणी, अनुराधा, ज्येष्ठा, स्वाती इन नक्षत्रों में से किसी एक में शनि बैठा हो और उस दिन शनिवार ही हो तो उस घर में उस दिन घर आरम्भ करने से भूत-प्रेत का वास होता है और गृह में निवास करने वालों को भूत और राक्षस प्रताड़ित करते हैं। यह भी वशिष्ट का मत है। हस्त, पुष्य, रेवती, मघा, पूर्वाषाढ़ और मूल इनमें से किसी एक नक्षत्र में मंगल बैठा हो और उस दिन मंगलवार ही हो तो उस दिन घर आरम्भ करने से गृह स्वामी को अग्नि से पीड़ा और पुत्र शोक भोगना पड़ता है। ये रामदेवाज्ञ का मत है। रोहिणी, अश्विनी, उत्तराफाल्गुनी, चित्रा, हस्त इन नक्षत्रों में से किसी एक नक्षत्र में स्थित बुध बैठा हो और उस दिन बुधवार ही हो तो उस दिन गृह आरम्भ करने से गृह स्वामी को पुत्र सुख और धन सुख मिलता है। यह भी देवा रामदेवाज्ञ का मत है। सूर्य, चन्द्र, गुरु, शुक्र इनमें से कोई भी ग्रह यदि निर्बल हो तो, नीच स्थागत अथवा हस्तगत हो तो क्रमशः गृहपति, उसकी पत्नी, धन और सुख का नाश होता है। भृगु के मत से सप्त शलाका का चक्र बनाकर और उस पर कृतिका से सात-सात नक्षत्र पूर्व आदि दिशाओं में स्थापित करें यदि वास्तु चंद्रमा का नक्षत्र आगे या पीछे हो तो शुभ नहीं होता। कृतिका से अश्लेषा तक पूर्व दिशा की, मघा से विशाखा तक दक्षिण दिशा की, अनुराधा से श्रवण तक तथा पश्चिम दिशा और धनिष्ठा से भरणी तक उत्तर दिशा के नक्षत्र होते हैं। यदि वास्तु का नक्षत्र पूर्व दिशा के नक्षत्रों में हो तो पश्चिम दिशा के नक्षत्रों में गृहारम्भ अशुभ होता है। यदि पश्चिम दिशा के किसी नक्षत्र में वास्तु नक्षत्र है तो पूर्व दिशा के नक्षत्रों में गृह आरम्भ अशुभ होता है। इसके विपरीत पूर्व में हो तो उत्तर में और पश्चिम में हो तो दक्षिण में गृह आरम्भ शुभ होता है। वज्र, व्याघ्रात, शूल, व्यतिपात, अतिगंड, विश्वकुंभ, गदय, परिघ इन योगों में गृह आरम्भ का निषेध किया गया। यदि गृह निर्माण के समय कर्क लग्न हो उसमें चंद्रमा स्थित हो, केन्द्र में वृहस्पति शेष ग्रह अपने मित्र अथवा उच्च अंश में हो तो ऐसे समय में बना हुआ गृह धन-धान्य से पूर्ण रहता है। यदि गृह आरम्भ के समय उपरोक्त ग्रह अन्य राशि में स्थित हो तो गृह स्वामी दिवालिया हो जाता है। यदि गृह निर्माण के समय एक भी ग्रह दशम या सप्तम में होकर शत्रु के भाव में हो तो वह ग्रह वर्ष भर में दूसरे के अधिकार में चला जाता है। वास्तु चक्र में सूर्य को यदि नक्षत्र तक गिनें पहले सात नक्षत्र अशुभ, अगले ग्यारह नक्षत्र शुभ और अंतिम दस नक्षत्र अशुभ होते हैं। सूर्य के नक्षत्र को चंद्रमा तक गिनें यदि पहले तीन नक्षत्रों में गृह आरम्भ का नक्षत्र हो तो अग्नि का भय, अगले चार नक्षत्रों में घर का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में धन लाभ, अगले चार नक्षत्रों में लक्ष्मी की प्राप्ति, अगले तीन नक्षत्रों में शून्यता, अगले चार नक्षत्रों में गरीबी और अगले तीन नक्षत्रों में मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यह रामदेवाज्ञ का मत है और वह वृष वास्तु चक्र के नाम से प्रसिद्ध है।

सम्पूर्ण अंगों वाले वृषभ के शरीर में सूर्य नक्षत्र से तीन नक्षत्र शीर्ष में रखें उनमें किया गया गृह आरम्भ अग्निकाण्ड में समाप्त हो जाता है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से शून्यता प्राप्त होती है। उसके अगले चार नक्षत्रों में गृह आरम्भ करने से स्थिरता, अगले तीन नक्षत्रों में लक्ष्मी प्राप्ति, अगले चार नक्षत्रों में लाभ, अगले तीन नक्षत्रों में गृह स्वामी का विनाश, अगले चार नक्षत्रों में निर्धनता और अगले चार नक्षत्रों में मृत्यु समय कष्ट मिलता है।

महाऋषि पराशर के मत से गृह आरम्भ करने वाली तिथि में चार मिलाकर उस संख्या को दुगुना कर उसमें गृहपति के नाम की अक्षरों की संख्या को जोड़कर तीन का भाग दें अतः एक शेष बचने पर स्वर्ग, दूसरे शेष में पाताल और शून्य शेष में मृत्यु लेकिन उस वास्तु पुरुष का वास समझें। वास्तु पुरुष के शरीर, पूंछ, दक्षिण, कुकक्षी और पृष्ठ भाग में लंबी आयु चाहने वाले पुरुष को गड्ढा नहीं खोदना चाहिए। वास्तु पुरुष को 28 भागों में बचे दस भाग शरीर की ओर और 17 भाग पूंछ की ओर छोड़ दें बाकी भाग में गड्ढा खोदें। ज्योति प्रकाश के मत से तिथि संख्या को पांच से गुणा करें और कृतिका आदि (शब्द शलाका चक्र के अनुसार) नक्षत्र संख्या को जोड़कर उनमें 12 और जोड़ें और इस योग को नौ से भाग दें यदि शेष 1, 4, 7 बचे तो जल में, 2, 5, 8 शेष बचे तो स्थल में, 3, 6, 0 शेष बचे तो आकाश में कुर्म का निवास होता है। इसका फल है जल में लाभ, स्थल में हानि और आकाश में मरण होता है। प्रसाद और गृह का आरम्भ और समाप्ति हरिप्रबोदनी एकादशी के बाद और हरिशयनि एकादशी से पूर्व ही कर लेना चाहिए। चैत्र मास में गृह आरम्भ करने से शोक, वैशाख में धन लाभ, ज्येष्ठ में मृत्यु, आषाढ़ में पशु हानि, सावन में पशु वृद्धि, भाद्रपद में शून्यता, आश्विन में कलह, कार्तिक में भ्रातृ नाश, मार्गशीर्ष और पौष में अन्य लाभ, माघ में अग्नि भय तथा फाल्गुन में श्री लाभ होता है।

जिस भूमि पर कठिनता से जाया जाये ऐसी भूमि गृह निर्माण के लिये त्याज्य होती है। मनोरम भूमि पुत्रों को देने वाली, दृढ़हा भूमि धन को देने वाली, उत्तर-पूर्व की ओर नीच भूमि पुत्र और धन दोनों को देती है। अपने वर्ण की भूमि अपने वर्ण को शुभद होती है,

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अन्य वर्ण को अधोगति देती है। जिस भूमि पर पुष्प और कुशकासा उगती है उस भूमि पर ब्रह्म तेजस्वी पुत्र उत्पन्न होते हैं। दुवा युक्त भूमि पर धीर पुत्र और फल युक्त भूमि पर घाती पुत्र उत्पन्न होते हैं। नदी के कटाव की भूमि पर गृह निर्माण करने से मूर्ख संतान को जन्म देते हैं। जिस भूमि पर पत्थर अधिक हों वह दरिद्री संतान को उत्पन्न करते हैं। गड्ढे युक्त भूमि पर गृह निर्माण करना झूठे और मलीन्वेशी पुत्रों को उत्पन्न करते हैं। जो भूमि छिद्र युक्त हो वे पशुओं की और सुख का नाश करती है तथा संपत्ति को दुःखदायी होती है। जो भूमि रेतीली और टेढ़ी हो वह विद्याहीन पुत्रों को जन्म देती है। सर्प, बिल्ली, लाकूट के समान भूमि भय को देने वाली और संतान को कष्टदायक होती है। मूसल के समान भूमि कुल घातक पुत्रों को जन्म देती है। रूखी भूमि दुर्गवैशनी पुत्रों को जन्म देती है। चैत्य भूमि गृह स्वामी को भय उत्पन्न करती है। जिस भूमि पर वामी हो वह विपत्ति को देती है। धूर्त के गृह के समीप गृह निर्माण करने से पुत्र-सुख नहीं मिलता। चौराहे पर गृह निर्माण करने से कीर्ति का नाश, देव मंदिर पर घर बनाने से उद्वेग, राजा के स्थान पर गृह बनाने से धन हानि, गड्ढे पर गृह बनाने से निकट अनेक विपत्ति और जिस भूमि पर अधिक गड्ढे हों उसमें गृह निर्माण करने से पिपासा और कछुए के सादृश्य भूमि पर गृह-निर्माण करने से धन का नाश होता है।

भूमि का परीक्षण

जिस भूमि पर गृह निर्माण करना हो उसमें कहीं पर भी एक हाथ लंबा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर उसे पुनः उसी खोदी हुई मिट्टी से भरना चाहिए। यदि मिट्टी अधिक है तो श्रेष्ठ फल, पूरी हो जाये तो मध्यम फल और कम पड़ जाये तो अदम फल मिलता है। दूसरी विधि है कि उस गड्ढे को जल से भरकर सौ कदम आगे जाकर पुनः लौटकर देखना चाहिए कि गड्ढे का जल कम तो नहीं हो गया यदि जल कम हो गया हो तो भूमि शुभ फलदायक नहीं होती अथवा जिस भूमि पर गृह बनाना हो उसमें हल जुतवाकर उसमें सभी आनाजों को बो दें। यदि वे भी 3, 5, 7 नग में न उगे तो ठस भूमि पर गृह निर्माण नहीं करना। यदि बोये हुए बीजों में 2-3 दिनों में अंकुर फूट आयें तो भूमि श्रेष्ठ होती है। पांच रात्रि में उगे तो मध्यम और सात दिन में ठगे तो अधम होती है। विरीह, साटी, मूंग, गोदूम, सरसों, तिल, जौ ये सात औषधियां हैं और यही सर्प बीज कहे जाते हैं। उपयुक्त सर्प बीजों को बोने के बाद उनके फूलों को देखना चाहिए। इस भूमि के किसी गड्ढे पर स्वर्ण अथवा तांबे के रंग के पुष्प दिखाई दें तो उस भूमि पर गृह निर्माण करना गृह स्वामी के लिये लाभप्रद रहता है। उस भूमि के धूल के कण को लेकर आकाश में फेंकें और देखें कि धूल अदम, मध्यम अथवा उद्धव इन तीनों में कहां जाती है। जहां जाये वही मति को भूमि पर गृह निर्माण कार्यकर्ता की होती है। भूमि में प्रवेश करते समय पुण्यावाचान, शंख और अध्ययन के शब्द, जल पूर्ण घड़ा, ब्राह्मण समुदाय, वीणाक शब्द, पुत्री युक्त स्त्री, माता-पिता अथवा गुरुजन आ जाये वह भूमि शुभ फल को देने वाली होती है। यदि प्रवेश करते समय स्वच्छ वस्त्र धारण किये हुए कन्या मिले, सुस्वादु और सुगंधित पुष्प, फल, सोना, चांदी, मृग, मोती अथवा अच्छे भोजन पदार्थों का दर्शन शुभ फलदायक रहता है। भूमि या गृह प्रवेश के समय मृग, सोरमा, चंदन बंधा हुआ पशु, पगड़ी अथवा भोज्य पदार्थों का दर्शन भी कल्याणप्रद होता है। भूमि या गृह प्रवेश करते समय मांस, दूध, दही, पालकी, छतर, मछलियां, स्त्री-पुरुष का जोड़ा दिखाई पड़े तो आयु और आरोग्यता बढ़ती है। भूमि अथवा गृह प्रवेश करते समय कमल का फूल, सफेद बैल, ब्राह्मण, मृग दिखलाई पड़े अथवा गीत गाने का शब्द सुनाई पड़े और हाथी, घोड़ा और सौभाग्यवती स्त्री दिखलाई पड़े तो धन सुख और अरोग्यता बढ़ती है। गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय वेश्या, अंकुश, दीपक, पुष्प माला, आभूषण धारण किये कन्या दिखाई पड़े अथवा वर्षा हो तो उत्तम फल मिलता है।

यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय श्रेष्ठ, वाणी, शत्रु, मदिरा, चमड़ा, हड्डी, तृण, भूसी, सर्प अथवा कोयला दिखाई दे तो अशुभ फल मिलता है। यदि गृह आरम्भ अथवा गृह प्रवेश के समय नमक, कीचड़, कपास, नापुंसक, तेल, औषधि, विष्टा, काले तिल, रोगी अथवा उपटन लगाये कोई व्यक्ति मिले तो अशुभ फल मिलता है। भूमि अथवा गृह प्रवेश के समय पापी, जटाधारी, पागल, मुण्डन कराया व्यक्ति, ईंधन, काला पक्षी दिखाई पड़े तो कल्याणप्रद नहीं होता। जलती हुई लकड़ी, धुएं से युक्त अथवा अधजली लकड़ी गृह आरम्भ अथवा प्रवेश के समय यदि मनुष्य देखे तो उसे मृत्यु सम कष्ट मिलता है। यदि उपयुक्त अपशकुन गृह आरम्भ के समय हो अथवा गृह प्रवेश के समय हो तो उस भूमि पर गृह कल्याण का विचार अथवा गृह प्रवेश का विचार त्याग देना चाहिए।

'नींव खोदने की विधि'

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार अच्छा लग्न व अच्छा मुहूर्त में स्नान आदि नित्य क्रिया से निवृत्त होकर पूर्वा अभियुक्त होकर कलश की स्थापना करें, कलश के ऊपर गणेश जी की और नव ग्रहों का पूजन करें, उस परिक्षित भूमि को गाय के गोबर से लीपें और उस भूमि पर ब्राह्मण और देवता का पूजन करे और उस भूमि की शुद्धि के लिये पांच गव्य सर्प औषधि पांचामृत और जल से उस भूमि के ऊपर छिड़काव कर उसे शुद्ध करें। स्थापित कलश में वरूण का आह्वान करें उसी में पर्वत, वन, नदी, नाग से युक्त आन्नद से युक्त कमलों से विभूषित, सागरों से युक्त भूमि की पूजा करें, प्रार्थना करें। दिगपालों और कुलदेवी तथा देवता और नागों का पूजन करें, उनकी बलि देकर सद् अष्ट अध्यायी का विधिप्रद पाठ करें और वास्तु पुरूष का पूजन करें। ऊं नमो भगवते वास्तु पुरुषये कपिलये चे, पृथ्वी धरये देवेय प्रधान पुरूषये चे, सकल गृह प्रसाद पुष्पकरोधान कर्मणि गृह आरम्भ प्रथमकाले सर्वासिद्धि प्रदायक सिद्ध देव मनुष्यैश्चे पूज्य नमो दिवा निशिय गृह स्थाने प्रजापति क्षेत्रे अस्मीन तिष्ठ साम प्रतम इहा गच्छ इमां पूजां गृहेण वर दो भव मंत्र से प्रार्थना करें, वास्तु पुरुष नमस्ते अस्तु------- हे वास्तु पुरुष भू शय्यागत् हे प्रभु मुझे घर से सर्वथा धन-धान्य से पूर्ण रखना यह कहकर पुष्प चढ़ावें और प्रार्थना करने के पश्चात् चावल की पीढ़ी की नग के आकार का वास्तु पुरुष बनावें। वास्तु मंत्रो का आह्वान करें, अपनी शक्ति के अनुसार पूजन करें। आह्वान करते समय विशेष ध्यान रखें और मन में विचार करके उस भूमि पर अधोमुख लेटे हुये वास्तु पुरुष का आह्वान कर रहे हैं। विश्नोरण इत्यादि मंत्र से वास्तु के स्वर्ण वास्तु के प्राण और पूर्व दिशा में प्रथम स्थित सर्प के स्वर्ण का पूजन करें अथवा अपने सामर्थ्य के अनुसार नमोअस्तु सर्पेभ्यो----आदि मंत्र से वास्तु का पूजन करें, कुकशी प्रदेश में नाग मंत्र को पढ़ता हुआ पृथ्वी को खोदें। गृह कुपतहाग आदि आरंभ में वास्तु पुरुष की स्थिति '' भाद्रपद से तीन मासों में क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में वास्तु पुरुष का मुख होता है। दूसरी दिशा के मुख वाले गृह को आरंभ करने से दुःख, शोक और भय उत्पन्न होते हैं। वृष से तीन-तीन राशि के क्रम को वेणी बनाने से तीन -तीन राशि के सूर्य गृह में और मीन को तीन-तीन राशि सूर्य देवालय और मकर आदि तीन-तीन राशि सूर्य तड़ाग लेना उत्तम है। युक्त तान-तीन राशियों के सूर्य में वास्तु पुरुष पूर्व आदि दिशाओ में शरीर करके सोता है।

''वास्तु पुरुष मुख ज्ञानार्थ चक्रमीदम''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लक्ष्मी प्रवेश कैसे हो?

लेखक: दैवज्ञ शिरोमणि, वास्तु इंजीयिर पंडित गोपाल शर्मा, मियांवाली नगर, रोहतक रोड, दिल्ली-41, दूरभाष : 5687077, 5688060 फैक्स : 5670033

हर आदमी को एक सफल जीवन जीने के लिए निरोगी काया, सरल और तनावरहित दिनचर्या, घर में सुख-सुविधा के सभी साधन उपलब्ध, निष्कंटक कारोबार या नौकरी की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त प्रकृति, विधाता,. पितृपक्ष, मातृपक्ष व बन्धुपक्ष का सहयोग या किसी प्रकार की आपदा, विपदा, अस्वस्थता आदि का न होना परमेश्वर का वरदान माना जाता है। यह सुखी और सफल जीवन महालक्ष्मी की कृपा के बिना संभव नहीं है।

लक्ष्मी, धन, दौलत किसी की बपौती या अधिकार की वस्तु नहीं है। देखने में आता है कि कुछ लोग जीवन भर परिश्रम करते रहते हैं, परन्तु उनकी बुनियादी जरूरतें भी भली भांति पूरी नहीं हो पातीं, दूसरी तरफ कुछ लोग ऐसे भी हैं जो धन दौलत देखना भी पसंद नहीं करते, परन्तु लक्ष्मी उनका पीछा ही नहीं छोड़ती। इसके पीछे भाग्य, पुरुषार्थ के अतिरिक्त भी एक बड़ा कारण होता है — **वह मकान जिसमें वे रहते हैं।**

लक्ष्मी, धन-दौलत, कारोबार व्यक्ति के अलावा घर, दुकान, फैक्ट्री, गोदाम आदि की बनावट तथा उसके आस-पास के वातावरण पर भी निर्भर करता है। मकान तो हर व्यक्ति की आवश्यकता होती है जिसमें रहकर मनुष्य सारा सोच-विचार करता है। वहां आराम करके वह दिन भर की थकान मिटाता है तथा आगे के लिए योजनाएं बनाता है। जिस प्रकार मनुष्य के शरीर में दैवी शक्ति और हृदय में खुद विष्णु भगवान् निवास करते हैं उसी तरह हर घर में लक्ष्मी, कुबेर, ब्रह्मा, यमराज, इन्द्र, वरुण, वायु, गंगा तथा अग्नि आदि सभी कुछ रहता है। प्राचीन ग्रन्थों के अतिरिक्त तीस वर्षों के आध्यात्मिक जीवन का निचोड़ भी इसमें शामिल है। पुराने या किसी भी नये मकान में किया गया एक उचित परिवर्तन भी आपका सम्पूर्ण जीवन बदल सकता है। खुले प्लाट या मकान, दुकान व कारखाने का कोई एक सिस्टम जैसे द्वार, पानी का निवास आदि। केवल एक सिस्टम ठीक होने से जीवन रूपी पूरी मशीनरी वर्किंग हालत में आ सकती है।

ईश्वर ने मानव को अपार प्राकृतिक सम्पदा प्रदान की है। हमारी पृथ्वी धन-दौलत से भरी हुई है। यदि मनुष्य ईश्वर प्रदत्त प्राकृतिक सम्पदा का प्रयोग करे तो निश्चय ही सुखी, निरोग एवं सम्पन्न हो सकता है। सूर्य, वायु, जल, पृथ्वी, अग्नि, पेड़-पौधे आदि मनुष्य को दीर्घजीवी और निरोग बनाने के लिए हैं। सूर्य जीवनदाता है। सूर्य के अभाव में मानव जीवन की कल्पना ही नहीं की जा सकती है। सूर्य के प्रकाश में रोगाणुओं को नष्ट करने की अपार क्षमता होती है। वह हमें प्रकाश एवं ऊष्मा प्रदान करता है। हमारा शरीर भी पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश नामक पंचतत्वों से बना है। अत: यह आवश्यक है कि पंच तत्वों से समन्वय बना रहे। जब तक यह समन्वय रहता है, हम निरोग एवं शक्ति सम्पन्न बने रहते हैं। जब इनमें संतुलन का अभाव हो जाता है, तब शारीरिक क्रियाओं में बाधा आ जाती है और हम बीमार हो जाते हैं। वास्तुशास्त्र हमें पांच भौतिक तत्वों में संतुलन बनाये रखने की शिक्षा देता है। वास्तुशास्त्र प्रकृति अनुसंधान पर आधारित उच्च कोटि का विज्ञान है।

वास्तुशास्त्र प्राकृतिक नियमों का पालन करता है। गुरुत्वाकर्षण बल चुम्बकीय बल, विद्युत तरंगों का प्रवाह वायु प्रवाह, जल प्रवाह, पर्यावरण का प्रभाव, सूर्य रश्मियों का प्रवाह, दिशाओं के महत्व आदि पर ही वास्तुशास्त्र के नियम आधारित हैं।

उगते सूर्य की किरणें हमारे स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हैं। इसके पीछे पूर्व, ईशान कोण को अधिक खुला रखने का नियम कार्य करता है। जिससे सौर ऊर्जा अधिकतम रूप में भवन और उसके निवासी को मिल सके। मकान के पूर्वी भाग को अपेक्षाकृत नीचा रखने के पीछे रहस्य भी यही है, ताकि पूर्व दिशा में ज्यादा खिड़कियों और दरवाजों के लिए स्थान रह सके। ढलते हुए सूर्य से इन्फ्रा रेड किरणें निकलती हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। इसलिए मकान के पश्चिम में खुली जगह कम छोड़ी जाती है।

विश्व का आधार स्रोत ऊर्जा है। यह ऊर्जा उत्तरी ध्रुव से दक्षिण ध्रुव की ओर चुम्बकीय लहरों के रूप में लगातार प्रवाहित होती रहती है। इस ऊर्जा को विद्युत-चुम्बकीय प्रवाह कहते हैं। यदि भवन का उत्तरी भाग नीचा और दक्षिणी भाग ऊंचा होगा तो यह ऊर्जा सहज ही भवन में प्रवेश कर निवासियों को शुभ लाभ देगी। यदि भवन का उत्तरी भाग अधिक ऊंचा होगा तो ऊर्जा का प्रवाह रुक जायेगा।

मानव शरीर में भी विद्युत तरंगें उसी रूप में प्रवाहित होती हैं, जिस रूप में भूमि पर प्रवाहित होती हैं। लेकिन यदि दोनों तरंगों का समन्वय नहीं होगा तो हमारा मस्तिष्क सही रूप से कार्य नहीं कर पायेगा। यही कारण है कि उत्तर की ओर सिर करके सोना वर्जित है। क्योंकि सिर की तरफ सकारात्मक और पैरों की तरफ नकारात्मक विद्युत तरंगें होती हैं। सिर के उत्तरी दिशा में होने से उत्तर की तरफ से आने वाली तरंगें मानव शरीर की सकारात्मक तरंगों से टकराती रहेंगी, जिससे मानव मस्तिष्क विचलित हो जाता है।

लक्ष्मी प्रवेश के लिए निम्नलिखित अहम बातों में से कोई एक ही काफी है।

१. उत्तर-पूर्व में या उत्तर में अन्डरग्राउंड टैंक, नल और पानी की व्यवस्था करें।

२. पूर्वमुखी मकान में हो सके तो द्वारा उत्तर-पूर्व या दक्षिण-पूर्व में बनाएं, द्वार न हो सके तो खिड़की या ऊपर का जाल या दर्पण लगवाना जरूरी है।

३. उत्तर व पूर्व का ज्यादा से ज्यादा भाग खुला रखें।

४. रसोई दक्षिण-पूर्व में हो।

५. छत व फर्श की ढलान उत्तर-पूर्व में हो।

६. मूर्तियां, फोटो आदि जितना हो सके पूर्व व पश्चिम की दीवार पर लगाएं। उत्तर की दीवार पर तो भूल कर भी कुछ न लटकायें।

७. हमेशा दक्षिण की ओर सिर करके सोयें। इससे स्वास्थ्य और आयु बढ़ेगी। अधिक कार्य के बाद थकान होने पर पूर्व की ओर सिर करके सोयें। इससे विरोधी पक्ष भी साथ देने लगता है। भारी से भारी संकट या समस्या का तुरन्त समाधान होता नजर आयेगा।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

जब हमारी घड़ियां १२ बजाती हैं

भिन्न-भिन्न देशों का समय

संसार के हर एक देश में दिन तो २४ घण्टे का माना जाता है परन्तु हर देश का स्टैंडर्ड टाईम अर्थात् समय भिन्न है। उदाहरण के रूप में जब भारत में दिन के १२ बजते हैं तो लन्दन में प्रातः के साढ़े छः बजे होते हैं। भिन्न-भिन्न देशों की राजधानियों के समय और भारत के समय में अन्तर स्पष्ट किये जाते हैं:-

नगर	देश	समय
लन्दन	ब्रिटेन	६.३० प्रातः
बैंकाक	थाईलैंड	९.३० रात
मक्का	सऊदी अरब	९.३० प्रातः
कुआलाम्पुर	मलेशिया	२.०० प्रातः
पेरिस	फ्रांस	७.३० प्रातः
नेरोबी	कीनिया	१०.०० प्रातः
तेहरान	ईरान	१०.०० प्रातः
काबुल	अफगान	११.०० प्रातः
बुडापेस्ट	हंगरी	७.३० प्रातः
कराची	पाकिस्तान	११.३० दोपहर
मास्को	रूस	९.३० प्रातः
पेइचिंग	चीन	२.३० दोपहर
बगदाद	इराक	९.३० प्रातः
न्यूयार्क	अमेरिका	२.३० प्रातः
टोकियो	जापान	३.३० सायं
बर्लिन	पू. जर्मनी	७.३० प्रातः
काहिरा	मिस्र	८.३० प्रातः
जेनैवा	स्वि. लैण्ड	७.३० प्रातः
कनाडा	कैनेडा	११.०० रात्रि

मन्त्रों को सिद्ध करने की विधि

कर्म छः प्रकार के होते हैं। १. शान्ति कर्म। २. वशीकरण। ३. स्तम्भन। ४. वैर। ५. उच्चाटन। ६. मारण।

कर्मों के लक्षण

१. रोग और ग्रहादि के निवारण को शंत कर्म कहते हैं।
२. सब वस्तुओं को वश में करने को वशीकरण कहते हैं।
३. चलते हुओं को रोकने को स्तम्भन कहते हैं।
४. दो मित्रों में वैर कहते हैं।
५. स्वदेश से निकल कर दूसरे देश में चले जाने को उच्चाटन कहते हैं।
६. जीव को मार देना मारण कहते हैं।

कर्मों की दिशा

शान्ति कर्म ईशान दिशा में करना चाहिए, वशीकरण उत्तर दिशा में करना चाहिए, स्तम्भन पूर्व दिशा में करना चाहिए, विदेश नेऋत्य दिशा में, उच्चाटन वायव्य दिशा में और मारण अग्नि दिशा में करना चाहिए।

खोई हुई वस्तु मिलेगी या नहीं?

१. अन्धाक्ष नक्षत्रों में खोई हुई अथवा चोरी हुई वस्तु पूर्व दिशा को जाती है और उसकी पुनः प्राप्ति शीघ्र हो जाती है। **२. सुलोचन** नक्षत्रों में गुम हुई वस्तु उत्तर दिशा में जाती है परन्तु उसका न तो पता चलता है और न ही प्राप्त होती है। **३. मध्याक्ष** नक्षत्र में खोई वस्तु पश्चिम दिशा की ओर अति दूर चली जाती है। इस बात का पता भी चल जाता है परन्तु प्राप्त (हस्तगत) नहीं होती। **४. मन्दाक्ष** नक्षत्र में गुम अथवा चोरी हुई वस्तु दक्षिण की ओर चली जाती है तथा अत्यधिक प्रयत्न करने पर अन्ततोगत्वा वह प्राप्त हो जाती है।

अन्धादि नक्षत्र निम्नलिखित हैं:-

नक्षत्र संख्या	नाम नक्षत्र							मिलेगी या नहीं
१. अन्धाक्ष	रोहिणी	पुष्य	उ.फा.	पू.फा.	विशा.	धनि.	रेव.	शीघ्र मिलेगी।
२. सुलोचन	कृकि.	पुन.	पू.फा.	स्वा.	मूला.	श्रव.	उभा.	नहीं मिलेगी।
३. मध्याक्ष	भर.	आर्द्रा	मघा	पू.भा.	चित्रा	ज्ये.	अभि.	पता लगने पर भी नहीं मिलेगी।
४. मन्दाक्ष	अश्वि.	मृग.	आश्ले.	हस्त	अनु.	उ.षा.	शत.	बहुत यत्न करने पर मिलेगी।

कैलेण्डर १८०१-१९९९

(अ) वर्ष

१८०१-१९००				१९०१-१९९९			
०१	२९	५७	८५		२५	५३	८१
०२	३०	५८	८६		२६	५४	८२
०३	३१	५९	८७		२७	५५	८३
०४	३२	६०	८८		२८	५६	८४
०५	३३	६१	८९	०१	२९	५७	८५
०६	३४	६२	९०	०२	३०	५८	८६
०७	३५	६३	९१	०३	३१	५९	८७
०८	३६	६४	९२	०४	३२	६०	८८
०९	३७	६५	९३	०५	३३	६१	८९
१०	३८	६६	९४	०६	३४	६२	९०
११	३९	६७	९५	०७	३५	६३	९१
१२	४०	६८	९६	०८	३६	६४	९२
१३	४१	६९	९७	०९	३७	६५	९३
१४	४२	७०	९८	१०	३८	६६	९४
१५	४३	७१	९९	११	३९	६७	९५
१६	४४	७२		१२	४०	६८	९६
१७	४५	७३		१३	४१	६९	९७
१८	४६	७४		१४	४२	७०	९८
१९	४७	७५		१५	४३	७१	९९
२०	४८	७६		१६	४४	७२	
२१	४९	७७	००	१७	४५	७३	
२२	५०	७८		१८	४६	७४	
२३	५१	७९		१९	४७	७५	
२४	५२	८०		२०	४८	७६	
२५	५३	८१		२१	४९	७७	
२६	५४	८२		२२	५०	७८	
२७	५५	८३		२३	५१	७९	
२८	५६	८४		२४	५२	८०	

(ब) महीने

जन.	फर.	मार्च	अप्रै.	मई	जून	जुला.	अग.	सितं.	अक्टू.	नवं.	दिसं.
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
५	१	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	२	६	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	०	३	५	१	३	६	२	४	०	२
६	२	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	५	१	३	६	१	४	०	२	५	०
३	६	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१
४	०	१	४	६	२	४	०	३	५	१	३
६	२	२	५	०	३	५	१	४	६	२	४
०	३	३	६	१	४	६	२	५	०	३	५
१	४	४	०	२	५	०	३	६	१	४	६
२	५	६	२	४	०	२	५	१	३	६	१

(स) साप्ताहिक दिन

रवि	१	८	१५	२२	२९	३६
सोम	२	९	१६	२३	३०	३७
मंगल	३	१०	१७	२४	३१	
बुध	४	११	१८	२५	३२	
गुरु	५	१२	१९	२६	३३	
शुक्र	६	१३	२०	२७	३४	
शनि	७	१४	२१	२८	३५	

कलैण्डर को प्रयोग में लाने की विधि

अगर हमें मालूम करना है कि किस तारीख को कौन सा दिन पड़ता है। जैसे १ मई १८८६ को कौन सा दिन था।? पहले वर्ष वाले कॉलम (अ) में (१८०१ से १९०० तक) सन् १८८६ पर अंगुली रखें उसकी सीध में अंगुली महीने वाले कॉलम (ब) में मई मास पर लें जाएं। जो अंक प्राप्त हो (६) उसे उस तारीख में जोड़ दें (१) जिस तारीख का हमें वार मालूम करना है। (६+१=७) अब आप कॉलम (स) में ७ के सामने शनिवार पाएंगे तो पहली मई १८८६ को शनिवार था।

प्रकाशक: धर्मसन प्रकाशन, २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ ☎ ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

ग्रह-राशियों की तेजी मंदी-विचार

राशियों के पदार्थ

मेष—सोना, गेहूं, जौ, कम्बल, पशमीना, दालें, मसूर और चावल। वृष—कपड़ा, सरसों, पुष्प, जौ, चावल, महिष, बैल, गेहूं और लघु धान्य। मिथुन—रुई, कपास, बिनौला, ज्वार, मकई, तोरिया, अलसी, मूंग और माष। कर्क—केला, घास, जायफल, दाल-चीनी, तम्बाकू, चाय, सोना, चांदी, जवाहरात। सिंह—गुड़, खांड, साठी चावल, तैल, घी, मृगछाल, पटरस। कन्या—ज्वार, बाजरा, कुल्थी, रत्न, गेहूं, अलसी, मूंग और माष। तुला—उड़द, गेहूं, सरसों, नारियल, हरड़, मटर, तोरिया, जौ। वृश्चिक—गुड़, खांड, नागर, पान, लोहा, चना, चौपाए, पीतल, तांबा आदि धातुएं। धनु—रस, घोड़ा, लवण, चित्र-वस्त्र, गुड़, रुई। मकर—कनीर, मजीठ, जिमीकन्द, सोना, चांदी, पीतल, तांबा, लोहा। कुम्भ—तैल, घी, पोस्त, जवाहरात, रंगदार, वस्तुएं, सोना, चांदी, ज्वार। मीन—सीप, मोती, पंसारियों की वस्तुएं।

ग्रहों के पदार्थ

सूर्य—तृष्य धान्य, बीज, गेहूं, गुड़, शक्कर, खांड, ऊनी वस्त्र, सोना, तांबा, सुगन्धिक वस्तुएं, घी, तैल, नमक, रस। चन्द्रमा—चावल, मीठे रस, फल, फूल, जलोदर वस्तुएं, नमक, मोती, औषधियां, गेहूं, कांसी, दूध, दही। मंगल—गेहूं, चना, मूंग, गुड़, शक्कर, लघु धान्य, सोना, तांबा, पीतल, चौपाए। बुध—सरसों, तोरिया, घी, बिनौला, मक्की, ज्वार, बाजरा, दाल, लघुधान्य, सब्ज, रंग की वस्तुएं, रुई। गुरु—मीठे रस, सुगन्धित पदार्थ, पारा, नमक, चाय, कपड़ा, पीले रंग की वस्तुएं, घी, गेहूं, चावल, घोड़ा। शुक्र—रुई, कपास, कपड़ा, चांदी, लघु धान्य और भोग सामग्री, खांड, चावल और सफेद रंग की वस्तुएं। शनि—कटु वस्तुएं, मिर्च काली, माष, चना, मटर, लोहा, रंग सीमा, तोरिया, अलसी, कंगनी, कोयला, काले रंग की वस्तुएं, तिल, तैल मूंगफली और नशीली वस्तुएं आदि।

ग्रहों-राशियों से मंदा-तेजी जानने का प्रकार

जब कोई राशि क्रूर ग्रहों से पीड़ित हो दूषित हो या उसको क्रूर ग्रह देखते हों अथवा वहां पड़े हों या वह राशि क्रूर ग्रहों की कर्तरी में हो तो उस राशि जन्य पदार्थों की तेजी होती है और राशि शुभ ग्रहों से युक्त, दृष्ट हो उसके पदार्थों का मन्दा होता है। इसी प्रकार जो ग्रह अशुभ ग्रहों से पीड़ित अथवा दृष्ट या युक्त हो तो उन ग्रहों के पदार्थों की तेजी होती है और जो ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हों उनके पदार्थों का मंदा होता है। जिस वस्तु की राशि से गुरु ४, १०, २, ११, ७, ९, ५ इतनी राशि पर हों तो उस वस्तु की मंदी करता है और १, ३, ४, ६, ७, ९, १२ इन स्थानों पर बुध हो तो इस वस्तु की तेजी करता है। ऐसे ही २, ११, १०, ५, ८ स्थानों पर शुक्र सर्वदा मंदा करता है। मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य और क्षीण चन्द्र यह ग्रह ३, ६, १०, ११ स्थानों पर मंदा और १, २, ४, ५, ७, ८, ९ स्थानों पर होने से तेजी हो।

तेजी-मंदी जानने के सिद्धान्त

(१) यदि रविवार को तेजी या मंदी हो तो सोमवार को मंदी अथवा तेजी आ जाती है। (२) सोमवार को एकदम मन्दी के आने पर मंगलवार को विचार से सौदा करना चाहिए। (३) सोमवार की मन्दी के बाद मंगलवार को तेजी अवश्य होती है अथवा सोमवार को तेजी हो तो मंगलवार को मन्दी अवश्य होगी। (४) मंगलवार को आई मन्दी बुधवार को १२ बजे तक चलती है इसी प्रकार मंगलवार की तेजी बुधवार १२ बजे हो।

पृष्ठ १९ का शेष..

सार सन् 2002 व विक्रम संवत् 2059

११ मार्च १९९८ को सरसों १२५१ के भाव थे, वो २८ अक्टूबर १९९८ को २७९९ के नये टॉप भाव बने—वहां बाजार गिरे और भाव बुरी तरह टूट गए। २७९९ वाली सरसों ३० मई २००० को १०२५ के भाव रह गए। मतलब यह कि सन् १९९९, सन् २००० का वर्ष तेलों में मन्दी चलने के कारण मायूसी पूर्ण रहा। जिस वर्ष मन्दी चलती है तो वो साल व्यापार के लिए निराशा जनक रहती है। फिर भी सन् १९९९ में शेयर्स मार्केट में तूफानी तेजी आई। रिलाइंस शेयर १०४ वाला फरवरी २००० तक ४४५ के करीब टॉप भाव बने। सवा वर्ष में साढ़े तीन पौने चार गुणे होना अपने आप में आश्चर्य जनक है और जी टैली फिल्म शेयर तो नीचे में २७३ वाला तो १६३० बिका फिर घटा १४ अप्रैल २००१ को ७१-७५ के नीचे भाव बिका। १०० शेयर्स में २७ हजार तीन सौ की रकम लगाते। फर. २००० में १६३० में बेचते। १४ अप्रैल २००१ के बीच ७५ से ९० के भाव खरीद कर देते तो आप ही सवा सत्ताईस हजार की रकम १५ लाख+१५ लाख=३० लाख की रकम बन जाती। ऐसी तेजी या मन्दी शेयर्स मार्केट ही संभव है। यानी १६३० वाला शेयर्स केवल ७१-७५ के भाव होना मामूली बात नहीं है। मार्केट में ऐसा व्यापार करना चाहिए जिसमें तूफानी तेजी आ रही हो।

जैसे कि २३-१०-१९९८ को ए.सी.सी. शेयर का भाव ८३ के करीब था, २७-१२-१९९९ को ३०३ भाव होकर १९-१०-२००० को ए.सी.सी. शेयर ८४ का भाव होकर बाद में २०० होकर अब मई २००१ में १३२ के आसपास भाव चल रहे हैं। अब नीचे में ७०-१११ के नीचे भाव होकर २१ सितम्बर २००१ या २१ जनवरी २००३ तक ७० वाला ए.सी.सी शेयर २९९-४०५ के टॉप भाव बनने की संभावना है। तूफानी तेजी किस वस्तु में आने की संभावना है। किस वस्तु में ड्योढ़े, २ गुणे, ५ गुणे होना है। जैन पोरसा वाले ०७५१ पी.पी. फोन ३४३२८३ पी.पी. ५४०३८९ व शर्मा एस.टी.डी. मुरार पी.पी. फोन ३६६५१८ व ३४०७२२ पर, ग्राफीकल सदस्य बन कर तेजी मंदी सलाह ले सकते हैं। नीचे भाव में खरीदने की सलाह व ऊंचे भाव पहचानने की सलाह यहां मुरार ग्वालियर आकर ले सकते हैं। ग्राफ गणित की गणना बताती है। सन् २००२ से २००३ के बीच अरहर १४०० वाली ३५००-४१९९, लहसुन ११-१५ रुपये किलो वाला ५५-८१ रुपये किलो, हल्दी १४ रुपये किलो वाली ३६-४५ रुपये किलो, सरसों तेल २७ रुपये किलो वाला ५५-७२ रुपए किलो, २ वर्ष में एक बार टॉप होकर फिर तेलों में भयंकर मंदी में ७० रुपये किलो वाला तेल २५-३० रुपये तेल के भाव रह सकते हैं। हर वर्ष तूफानी तेजी प्रत्येक वस्तु में नहीं आती है। ज्यादा सही भगवान जानें। सन् २००२ में ग्रहों की पोजिशन इस प्रकार है।

१ जनवरी २००१

शनि	गुरु	शुक्र	सूर्य	बुध	राहु	मंगल	चन्द्रमा
१	१	०	८	८	२	५	३
५	१५	२३	१६	२८	३	८	७

७ अप्रैल २००३ तक शनि ग्रह वृष राशि में, ७ अप्रैल से ६ सितम्बर २००४ तक मिथुन राशि, १४ जनवरी २००५ को वक्र गति से पुनः मिथुन राशि में शनि ग्रह का भ्रमण है। २८ फरवरी २००२ से २८ अगस्त २००३ तक राहु ग्रह वृष राशि में तथा १६ फरवरी २००१ से ५ जुलाई २००२ तक गुरु ग्रह मिथुन राशि में, ६ जुलाई २००२ से ३० जुलाई २००३ तक गुरु ग्रह का कर्क राशि में भ्रमण काफी महत्वशाली है।

शनि ग्रह वृष राशि में भ्रमण (वृष राशि जमीन तत्व की राशि) होने से जड़ीय वस्तु-लहसुन, प्याज, आलू, अदरक, सौंठ, हल्दी, अश्वगंधा आदि में सन् २००१ से लेकर सन् २००३ के बीच प्रचण्ड तेजी बन सकती है। मिथुन व कर्क राशि का गुरु ग्रह हल्दी, लाल मिर्च में अच्छी तेजी आ सकती है। व्यापार में लाभ हानि की जिम्मेदारी कभी भी नहीं होगी। ध्यान रहे कि एक्स-रे की खोज अचानक ८-११-१८९५ को पुष्य नक्षत्र में चन्द्रमा व गुरु ग्रह से युति होने पर ज्ञात हुई। २१ जुलाई से २२ सितम्बर २००२ तक गुरु ग्रह पुष्य नक्षत्र में भ्रमण बहुत ही महत्वशाली है। इस अवधि में जब चन्द्रमा पुष्य नक्षत्र में चन्द्र गुरु युति में नवीन आविष्कार ज्ञात किये जा सकते हैं। २१ जुलाई २००२ तक उड़द २९१५ के ऊंचे भाव बिकने वाली ७७७-९९९ के भाव रह सकते हैं।

नोट—खोज सम्बन्धी समस्या हल सम्बन्धी गुरु ग्रह जिस राशि में हों तो उस लग्न के उदय काल में २ घंटे में उस विषय पर खोज गणित आदि करें। तत्काल समस्या गणित का हल मिल जायेगा। जैसे कि जनवरी २००२ में मिथुन राशि में गुरु ग्रह हैं तो वृष लग्न अनुमानित समय सवा २ बजे से सवा चार बजे के बीच के समय कोई समस्या के बारे में १५-२१ दिन रोज-रोज २ घंटे मिथुन लग्न में समस्या का हल निकल सकता है।

ऐसे ही ज्वाला योग को अब इस काल कलियुग में ऐसा मानकर ग्रहों के प्रभाव कम होते हैं। ऐसा बिल्कुल नहीं है। ये ज्वाला योग पड़ें। मानों उस समय बड़ी हवाई जहाज दुर्घटना हो गई तो हर २७ दिन के अन्तर से ३ महीने उस तारीख के पास हवाई दुर्घटना होगी।

६ मार्च २००२

शनि	राहु	गुरु	चन्द्र	बुध	सूर्य	शुक्र	मंगल
१	१	२	७	९	१०	११	०
१४	२९	११	२०	२७	२१	३	९

वृष राशि में शनि राहु एक साथ होने पर देश विदेश में युद्ध विग्रह आदि हो सकते हैं। सितम्बर १९३९ मेष राशि में होने पर द्वितीय विश्व युद्ध हुआ था। यह युद्ध ६ वर्ष करीब चला।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् विक्रम २०५९ (सन् २००२-२००३ ई.) का सामूहिक व्यापार भविष्य

लेखक—ओंकार दैवज्ञ (व्यापार अनुसंधान केन्द्र, पो. हापुड़), गाजियाबाद (यू.पी.)

आकाशी चुनाव

संवत् विक्रम २०५९ ता. १३ अप्रैल विक्रम संवत् के अलावा सन् २००२ को प्रारम्भ होगा और ता. ३ मार्च २००३ को समाप्त होगा। इस २०५९ का राजा शनि देव हैं और मंत्री भी शनि महाराज हैं। एक ही अधिकारी राजा और मंत्री का होना और चूंकि शनि २ अधिकार लेकर तमाम सं. में वृष शुक्र की राशि में यह शुक्र शनि का मित्र है तथा स्त्रियों पर अधिकार रखता है। इस वास्ते २०५९ वर्ष विक्रम में स्त्रियों के अधिकार बढ़ेंगे तथा स्त्रियों का वर्चस्व इतना बढ़ेगा कि जनता हैरत में पड़ेगी। राजा मंत्री के अलावा धान्येश भगवान भास्कर मेघेश शनि बनने से तीसरा पद ग्रहण कर लिया है। रसेश गुरु जी हैं तो नीरसेश पृथ्वी पति भौम बने हैं। फलेश शुक्र, धनेश चन्द्र, दुर्गेश शुक्र। इन उपरोक्त अधिकारों के साथ यह सिद्ध होता है कि पाप क्रूर ग्रहों के अधिकार ज्यादा हैं—इस वास्ते शासन में कड़ाई वर्ती जायेगी और विदेशों से माल का आयात निर्यात भी होगा। मन्मथ नामक संवत् का नाम होने से तस्करी की वृद्धि, वर्ष नाम मार्गशीर्ष में टैक्स वृद्धि होगी। मेघ नाम पुष्कर मंद वृष्टि का विशेष सूचक है। रोहिणी निवास खंड वृष्टि सूचक है। ऐसा ज्योतिष शास्त्र का कथन है कि समय निवास वणिक गृहे शुभम् नास्ति एवं संचित्य दैवज्ञं कथनीय शुभा शुभम्।

भैरव भवानी संवाद सं. २०५९ की झलकी पढ़िये—

पूछे भैरव माता से पूर्ण ध्यान लगाय।
उनसठ विक्रम का कहो हाल चाल समुझाय॥

माता का उत्तर—

राजा मंत्री के तीन पद संचय करो सब कोय।
तेजी कारक वर्ष है, दुगना दाम भी होय॥
रवि सुत राजा मंत्री मेघेश का पद भी पाय।
रोग युद्ध बिजली का भय भी होय जगत के माय॥
तीन पद प्राप्त शनि के मलेच्छ चलेंगे चाल।
रोहिणी वसी संधि में करे वर्षा का बेहाल॥
समय निवास वैश्य घर इसका फल शुभ नाय।
ओंकार शर्मा कहे काली देवी मनाय॥

स्पेशल विशेष टिप्पणी—इस वर्ष में नव ग्रह अधिकार में शनि, सूर्य प्रथमे ३ अधिकार प्राप्त करने के कारण काली वस्तु, काला रंग का विगुल बजेगा, यानि मोटे अनाजों में काली वस्तुओं में तेजी तथा काल भैरव का चक्र घूमेगा। तथा असभ्यता की वृद्धि होगी तथा दूसरे देशों के माल का आयात निर्यात खुलेगा।

चैत्र सं. २०५९ का व्यापार भविष्य—ये महीना ही आकाशी कौंशिल में वर्ष का राजा कायम करता है। जिस बार को वर्ष नया लगता है। वही राजा माना जाता है। इस वर्ष २०५९ में मेष संक्रांति भी शनिवार को लगने से मंत्री पद भी संभाल लिया है। मेघेश भी शनि है। ३ पद १ ही ग्रह पावर में आने से साथ ही चन्द्र दर्शन रविवारी होने से और बुधोदय पश्चिम में चैत्र शुदि ६ को होने से यह निश्चय है कि—इस वर्ष किसी-किसी वस्तु में दुगने भाव होंगे।

चैत्र शुदि १ लोहेतर धातुओं में तथा विशेष रूप से मैटीरियल तथा रुई के भाव बढ़ेंगे और आज अगर आज से पहिले बुध के ऊंचे नीचे के भाव नोट करें। अगर १२ बजकर २ मिनट तक नीचे कटें तो मन्दी, मंगला चौथ ता. १६ अप्रैल को जानें। यहां गुड़, हल्दी, सरसों तेल, मैंथा में एकसार लाईन चलेगी पर कौपर, मैंथा, बोरी, बारदाना तथा खांड, किराना, बादाम आदि फ्रूट में लाइन विपरीत चलने की संभावना है। मंगला चौथ के बाद ता. १७ अप्रैल से अलसी में ३ दिन के अंदर ही तेजी के झटके और सोंठ में १ चांस तेजी का भी जोरदार आयेगा। मैंथा, बच, गुड़, हल्दी में अगर आज शनिवार के ऊंचे भाव क्रौंस हों तो शर्तिया ही तेजी ४ दिन में जोरदार जानें। पर न कटें तो मंदी की लाईन जानें। तमाम खुसबूदार सुगंधित वस्तु तेजी पर जायेंगे। ता. २५ के बाद सभी पदार्थों में तेजी आयेगी पर नोट विशेष है काश २६-४-२००२ को १२ बजकर ४० से तेजी न चले तो मार्केट में सुस्ती सी रहेगी। ता. १३, १६, २०, २४, २६ में चन्द्र वर्गोत्तम के असर से श्वेत वस्तु तथा चांदी में मंदी आने पर खरीद से ही लाभ होगा। इन तारीखों में तेजी १०० तो मंदी ४० लगाने से अवश्य लाभ होगा।

वैशाख सं. २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस महीने में ५ रविवार हैं। ता. २८-४-२००२ से शुरू होकर ता. २६ मई को समाप्त होगा। उत्तर भारत में मई जून माह नामी ग्रीष्म का है। वर्गोत्तम काल में सूर्य के अधिकारी वस्तुओं में भारी या विशेष स्टेडीपन रहेगा पर वर्गोत्तम बाद एकदम मंदी सूर्य के अधिकार की वस्तु में नहीं बल्कि चना, मटर और इस माह में उत्पन्न होने वाले पदार्थों में मन्दी जोरदार चलेगी। शेयर तेज और मैंथा भी तेज होगा। बदि पक्ष में सुगंधित पदार्थों में तेजी। बदि ६ से १५ दिन का तेजी का चांस साथ ही महीन कपड़ा भी तेजी पर जायेगा। इम्पोर्ट की वृद्धि होगी। बैशाख बदी १ की क्षय अनाजों की तेजी को ब्रैक लगा देगी, परन्तु आज २८-४ को आर्द्रा ४ गुरु पीली वस्तुओं को जैसे सुवर्ण, पंसारट की पीली वस्तु गुड़ में बैशाख बदि ३ सोमवार ता. २९-४-२००२ से नई लाईन १ बजे तक चलेगी। ये लाईन ५ दिन चलेगी। काश विपरीत मार्केट चले तो सौदा डबल करें। शेयर तेज होंगे, चांदी, स्टील मंदी आने पर लेना। बैशाख बदि ८ शुक्रवार ता. ४ मई को दिन निकलने से पूर्व ही बुध रोहिणी में होने से समस्त हरी वस्तु में तथा वायदे तैयारी में मांग बढ़ने से ४ या ७ दिन में तेजी बनेगी। इस ग्रह के अपोजिट रोहिणी ४ चरणे शनि ता. ४ की रात्रि को लगने से ता. ५ मई की चालू लाईन सरसों, सींगदाना, मेंथी तथा मैंथा नें सीधी लाइन साथ ही चांदी भी चन्द्रदर्शन तक चलेगी। बैशाख शुदि २ भौमवार को वक्री बुध ४४ घड़ी रात्रि को धातुओं में तेजी कारक पर इसी दिन वृष संक्रांति ५१ घड़ी पर लगने से धान्यादि में समता या मंदी पन कारक १ माह की संक्रांति का संक्रमण होता है। पर दीप्तांश में सूर्य १५ ही दिन रहता है। ऐसा ज्योतिष शास्त्र का कथन है। १५ दिन बाद सूर्य का प्रभाव नहीं रहता है। इसलिए यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए। परन्तु दीप्तांशक मध्य भी अन्य ग्रहों के आने से असर समाप्त हो जाता है। वैशाख शुदि का क्षय तेजी का योग बनाता है। फसल की भरपूर आगमन से भी तेजी को प्रोत्साहन मिलेगा और शनि अस्त ता. २२ मई को होने से मैटीरियल पदार्थ लोहे तथा स्टील में तेजी ५ दिवसीय आकर मार्केट ठप्प हो जायेगा। इस माह में १४ व २२ मई को तेजी मंदी की बोली लगानी लाभप्रद होगी।

जेठ सं. २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

जेठ २०५९ में ५ सोमवार हैं और इन्फीरियर लाइन यानि भगवान भास्कर का रथ बुध देव से आगे चलेगा। बुध व्यापार पति ज्योति शास्त्र में कहलाते हैं इसलिए व्यापारी माल के स्टोक में लगेंगे और चना, गेहूं तथा मोटे अनाजों का स्टाक करने । **चलत अंगारको वृष्टि** ऐसा ज्योतिष शास्त्र का लेख है, शुभ ग्रहों के उदय अस्त में भी वर्षा के योग बन जाते हैं। इसलिए ता. २९ मई को आर्द्रा भौम, ता. ५ जून को पूर्व में बुधोदय, ९ जून को कर्के शुक्र यानि जल राशि में शुक्र देव का पदार्पण होना, ता. १२ जून को पुष्य का शुक्र, ता. १८ जून को पुनर्वसु नक्षत्र में भौम का संक्रमण बार-बार मौसम गीला करेंगे। इस माह में बदि १ से अष्टमी तक पूर्व माह के अनुसार घटाबढ़ी चलती रहेगी तथा गुड़, खांड, चीनी, खंडसारी, घी में दशमी कृष्ण पक्ष से शुदि ५ तक तेजी की प्रक्रिया चलती रहेगी। चांदी, सोना में मावस से तेजी १ हफ्ते की

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अच्छी चलती रहेगी। सरसों में शुदि जेठ का पक्ष तेजी कारक रहेगा क्योंकि जेठ शुदि में पंचमी शनिवार ता. १५ जून को ८ घड़ी पर मिथुन संक्रांति १५ मुहूर्ती लगने से धान्यादि में तेजी सूचक और चांदी सोना भी हर मंदी की झोंकी में खरीदना। इस माह पीतल, जस्ता, तांबा बदि १ से ५ तक घटाबढ़ी रहेगी पर छट से एक सप्ताह तक अच्छी तेजी चलेगी बाद मार्किट ऊंचे भावों में घूमेगा और शुदि ५ से १० दिन में जोरदार तेजी आयेगी। जूट, पाट, बारदाना में लगते माह १ हफ्ता तेजी जोरदार आकर मावस तक भाव पड़े रहेंगे। मावस बाद संक्रांति लगने तक रियक्शन आयेगा पर बाद संक्रांति पंचमी के पूर्ण १ सप्ताह तेजी का विशेष बोलबाला होगा। इस माह घी में तेजी बदस्तूर चलेगी। अरहर और अन्य दालों में तेजी बनी रहेगी। गुड़ में १ चांस तेजी का या मंदी का जोरदार नोट करें। ता. १८ को मंगल के दिन अगर पिछले शुक्र के ऊंचे भाव कटें तो तेजी ५ दिवसीय बनेगी। नीचे के कटें तो मार्किट में धीमी चाल से मन्दी आयेगी। आलू बदि १ से ६ घटबढ़, बदि ७ से १३ तेजी, बदि १४ से शुदि २ मंदी, तृतीया से नौमी तेजी, बाद स्टेडीपन तो रहेगा पर ऊंची तेजी और नहीं आयेगी।

आषाढ़ सं. २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आषाढ़ सं. विक्रम २०५९ में ५ बार भौम के ५ ही बार बुध के पड़ रहे हैं। इस वास्ते ही नहीं बल्कि शनि उदय और गुरु ग्रह अस्त साथ ही बुधास्त १ ही साथ २ बड़े ग्रहों का असर भिन्न-भिन्न पड़ रहा होने से जोरदार तेजी किसी वस्तु में जोरदार मंदी इन्फीरियर लाइन भी चलने से भारी घटाबढ़ी के सूचक ग्रह हैं। आषाढ़ में शनि उदय ता. २७ की रात २५ घड़ी पर होने से गत माह की चालू लाइनें ज्यों की त्यों चलती रहेंगी। ता. २८ जून को शुक्रके दिन गत भौमवार के बने ऊंचे भाव क्रॉस हों तो तेजी आ धमकेगी। काश पिछले भौमवार के बने नीचे भाव १ पैसा भी नीचे को क्रॉस हों तो मंदी १ सप्ताह भर की चलेगी। बस इतना ध्यान रखकर ही स्टील, लोहेतर धातु, मोटे अनाजों तथा जूट, पाट, बोरी, बारदाना में तेथा मैटिरियल और पंसारट की मैली काली रंग की वस्तु, सोयाबीन में इस ग्रह का असर माना गया है। शीरे जैसे गीले पदार्थों में भी शनि तमाम काली वस्तु में भी असर करता है। यह विचार कर ही गुड़, सरसों, अरंडा, सींगदाना, मूंगफली, बीजों के, मैंथा का बेधड़क १ तर्फा लाइन का व्यापार पूर्ण १ सप्ताह करना पश्चिम की वस्तुओं की भी खरीद करना। उपरोक्त ग्रह के अलावा ५ बुध, ५ भौम होने से चूंकि शनि व्यापारपति बुध के वर्गोत्तम में बड़े शनि ग्रह जब आजाद होकर व्यापार पति बुध के वर्गोत्तम में घूमता है तो आई टी एवं इंटरनेट की शक्ति पर हिन्दुस्तान की विकास दर में तेज वृद्धि संभव हो जाती है और एस्सार शिंग का शुद्ध मुनाफा ५० से १०० प्रतिशत बढ़े, यह भी ग्रह शक्ति से ज्ञात होता है। जून ता. २६ की रात को चंद्र वर्गोत्तम होने से ता. २६ को धातु पदार्थ चांदी, स्टील में २७ को खुलते-खुलते तेजी आने पर नफा पक्की करना। ता. १ जुलाई को भी मध्यान्ह में लेकर उसी दिन या ता. २ के खुलते-खुलते एक दो घंटे में ही लाभ उठना। ता. ४ जुलाई मिथुने बुध, कर्क भौम साथ ही कर्के गुरु एक साथ तीन ग्रहों का परिभ्रमण होना सभी वस्तुओं में दुतर्फा चाल डालेंगे और व्यापारी हैरत में पड़ेंगे। इसलिये जब तक बुधास्त न होगा लाइन नहीं बनेगी। ता. १० जुलाई से बुधास्त का पूर्ण असर होगा। अतः जिस वस्तु में मंगल शुक्र के नये भाव बनेंगे वही लाइन सीधी तमाम उसी ओर की गुड़, तिलहन तथा पंसारट में पूर्ण आषाढ़ महीने में बनेगी और ता. ९, १२, १७, २३ जुलाई में बराबर गली तेजी मंदी डाल कर लाभ उठाना चाहिए।

श्रावण सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

श्रावण सं. २०५९ में पांच गुरुवार हैं और सुपीरियर लाइन यानि बुध व्यापार पति सूर्य से आगे-आगे चलते रहेंगे। जब व्यापार पति आगे चलता है। तब व्यापार में चहल-पहल, नये सट्टे, नये निर्यात व आयात विदेशों से भी बढ़ा करते हैं। इसलिए हम यह दावे से कहते हैं कि इस महीने में जब शुक्रवार या मंगलवार आये और चलती लाईनों में नये भाव बनें तब वो नये भाव पुरानी लाईन का ही संकेत दिया करते हैं। भगवान सूर्य नारायण अपने दीप्तांशक में श्रावण बदि सप्तमी बुधवार तक रहेंगे। सूर्य हमेशा अपनी वस्तुओं में तेजी किया करते हैं। सूर्य की तमाम वस्तु गुड़, खांड, तेल, तिलहन, मेंथा, लाल रंग की दालें, चना, सोना आदि में तेजी के योग हैं। यद्यपि ५ गुरुवार इस माह में मन्दी कारक हैं। लेकिन अश्लेषा में बुध ता. २६ जुलाई की रात्रि को चौंतीस घटि तक प्रवेश हो जायेंगे इसलिए ता. २७ जुलाई को यह देखना चाहिए कि पिछले बुधवार के ऊंचे भाव क्रॉस हों तब तेजी और नीचे बने भाव क्रॉस हों तब मन्दी जोरदार दो चार दिन में ही आ जाएगी। इसके बाद ता. १ अगस्त तक मार्किट पड़े रहेंगे। ता. २ अगस्त को सिंहे बुध जोरदार तेजी कारक और इसी दिन बुध का उदय पश्चिम में जोरदार मन्दी कारक है। जब दो ग्रह भिन्न-भिन्न प्रभावकारी चला करते हैं तब लाईन का अनुसरण करना बहुत ही मुश्किल हो जाया करता है। व्यापारपति बुध का उदय पश्चिम दिशा में ता. २ अगस्त को शाम ३० घटि पर हो रहा है। जिसका असर ता. ३ अगस्त को घंटी खुलने के ४५ मिनट में हो जाएगा। इस टाईम पर जो लाईन चले वही लाईन अच्छी चाल से ६ अगस्त तक चलेगी। हमारा विचार चीनी खांडसारी पर विशेष रूप से तेजी का है। आलू सट्टे में घटने पर खरीदो। हाथों-हाथ लाभ उठाओ। इसी श्रावण माह में बदि त्रयोदशी टूट गई है। जो किसी-किसी वस्तु में भारी मन्दी का ऐलान करती है। खास तौर से हाजिर में पंसारठ और रंगदार वस्तुओं में कालीमिर्च कोचीन में व्यापार का असर विशेष होगा। यहां की चालू लाईन नाग पंचमी ता. १३ अगस्त तक चलेगी। अरन्डा, सींगदाना, मूंगफली, मेंथा खरीदें। श्रावण शुदि में सप्तमी तिथि का टूटना तेजी कारक माना जाता है। तिथि टूटने के २ रोज के बाद ही सिंह की संक्रांति पन्द्रह मुहूर्त्ती महर्घता सूचक है। ता. १९ अगस्त को सिंह का मंगल और आगे रक्षा बन्धन आने से सूती वस्त्रों और महीन वस्त्रों तथा शृंगार की वस्तुओं में तेजी आयेगी।

भाद्रपद सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

भाद्रपद २०५९ में ५ शुक्रवार, ५ ही शनिवार हैं। दोयज ता. २४ अग. २००२ में चित्रा शुक्र और इसी दिन राहु केतु के नक्षत्र संक्रमण हो रहे हैं। कभी-कभी ऐसे योगों में सोना, चांदी में प्रथक-प्रथक लाइनें चल जाती हैं तथा प्रमुख शेयरों में बिकवाली, दबाव से सेंसेक्स ११ से १४ या १६ अंक गिरने की संभावना होगी। बजाज आटो और ए.सी.सी. संलग्न कुछ बड़ी-बड़ी कम्पनियों के शेयरों में बिकवाली का जोर रहने से लगातार दो-तीन दिन गिरावट होगी। किराना बाजार में कालीमिर्च, बड़ी इलायची, छोटी इलायची में चली पूर्व रंगत भी कल से रुख पलट देंगी। ता. २७ को मृग. ४ शनि के भ्रमण से लोहेतर धातु स्टील में मंदी, मूंगफली, बिनौला मंदी होकर तेजी १ बजे से प्रारम्भ होने का योग बनता है। गुड़, आलू, सरसों, अरंडा की १ बजकर १० मिनट की लाइन पूर्ण रूप से जन्माष्टमी तक चले ऐसी पूर्ण सम्भावना है। जन्माष्टमी बाद तुला शुक्र का असर तमाम श्वेत दाल, श्वेत वस्तुओं में मंदी। चांदी, रुई, सूत साथ ही भारतीय उद्यम पर यामहा का पूर्ण स्वामित्व १० से १८ फीसदी मार्किट पर कब्जे की तैयारी का योग भी बनता है। ता. ३ सितं. को चन्द्र वर्गोत्तम लास्ट में है। अतः मन्दी आने पर खरीदो। फ्राइबर कर्वरेट में ही चांदी, सोना आभूषणों के व्यापार ता. ३ सितं. के लास्ट तक या ४ सितं. को मार्किट खुलने से २ घंटे में ही लाभ उठाना अच्छा रहेगा। बाद तमाम अन्य मार्किटों में मंगल की चालू लाइनें ही ता. ९ सितं. ११ से १ बजे तक मार्किट बदस्तूर ज्यों के त्यों चलते रहेंगे। ता. ८ सितं. रात स्वात्यां शुक्र ता. ९ को ५० घड़ी पर पू.फा. भौम आने से किशमिश, इंडियन पीली हरी बादाम, पिस्ता, छुआरे में गिरे भाव सुधरेंगे। खास तौर से आलू, गुड़, सट्टों में तथा सोयाबीन में भी तेजी का संचार होने लगेगा। ता. १३ को उ.फा. सूर्य तेजी कारक है परन्तु बुध वक्री मंदी कारक है । इस वास्ते ता. १३

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

को १ बजे की बनी चालू लाईन ही आलू, गुड़, सरसों, सोंगदाना, बारदाना, चांदी, सोना तथा जवाहरातों में संक्रांति ता. १७ सितं. भौमवार तक चलेगी। तदंतर संक्रांति असर से समर्घता का बिगुल बजेगा। परन्तु सैंट्रो की कीमत २ से ४ या ६ फीसदी बढ़ेगी। गेहूं, चना, बेझड़, मटर, कुछ दालों के भाव भी इस तमाम माह भाद्रपद ता. २१ सितं. तक जानें। व्यापार खुला ही करें। तेजी मंदी का प्रचलन सट्टे वायदों में है। पर यहां सदा तेजी मंदी का व्यापार विफल रहेगा।

आश्विन सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

आश्विन सं. २०५९ में ५ रविवार तेजो कारक हैं पर ५ ही सोमवार मंदी कारक हैं। साथ ही हस्ते रवि ता. २७ सितं. सन् २००२ में और २८ सितं. को शनि वक्री और ता. ५ अक्टू. को बुधोदय होकर दूसरे ही दिन ता. ६ अक्टू. को रात में बुध मार्गी होगा। आशोज वदि श्राद्धों में व्यापार पति बुध से आगे-आगे चलना यानि इन्फीरियर गति से चलना और बदि पक्ष में एकादशी का टूटना व्यापार की गति को खराब हालात में डालता है। ऐसे योगों में विश्व बैंक का नजरिया कोई भी ऐलान कर सकता है। और तेजी से विकास संभव का योग बने ऐसी भी धारणा इन महीनों में मुमकिन है। और सीमेंट की बिक्री में कुछ प्रतिशत की वृद्धि हो ऐसी भी धारणा महीने के लास्ट में संभव है। चुनिंदा शेयरों में तेजी से सेंसेक्स भी १० से २५ अंक लास्ट माह में चढ़े ऐसी पूर्ण उम्मीद बनती है क्योंकि आश्विन सुदि में द्वितीया टूटी है और वक्री शुक्र भी व्यापार में असर दायक है। ये ग्रह अशौज शुदि ४ ता. ९ अक्टू. में हो रहा है और तुला के सूर्य ता. १७ अक्टू. को मु. १५ हैं जो धान्यादि भावे महर्घता सूचक हैं। इस माह में ता. २३ सितं. सोमवार को गुड़ या सरसों में गत गुरुवार के नीचे भाव जिस वस्तु में भी क्रॉस होंगे उसी में मंदी ५ दिन चलेगी और गेहूं में मध्य प्रदेश की मांग बढ़ेगी। चना, जौ, मटर के भाव स्थिर रहेंगे। ता. २७ सितं. से दालों में जैसे मूंग, उड़द, अरहर में तेजी के योग १ सप्ताह के बनेंगे। पर तिलहनों में ता. ३० सितं. पर शनि प्रभाव से तेजी योग बने ऐसी धारणा है। क्योंकि शनि वक्री का प्रभाव ता. ३० सितं. से होने लगेगा। अगर ता. १ अक्टु. को ११ बजे से १ घंटे में तेजी न चले तो एकदम मंदी का ऐलान समझें। इसी तारीख से आगे तेल, सरसों, अरंडी, अलसी का भी एक सप्ताह का चांस जानें। ता. ५ अक्टु. को १ बजे की लाइन गुड़,, खांड, चीनी तथा पंसारट की वस्तुओं में खास तौर से यहां की लाइन १५ दिन की सीधी चलेगी। ता. ७ से २१ अक्टू. में हर घटे भाव मेवे सूखे खरीदें। गेहूं, चना और बेझड़ में भाव स्थिर रहेंगे तथा तिल भी अवश्य ही लेना। किराना बाजार और चांदी में भी तेजी का योग जानें। स्टील में भी एक हफ्ता पूर्व से तांबा आदि तेल पदार्थों में तेजी का योग बनेगा।

कार्तिक सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

कार्तिक माह में पांच मंगलवार हैं। यह महीना २२ अक्टूबर से शुरू होकर ता. २० नवम्बर को समाप्त होगा। महीने के शुरू में ही बुध ग्रह और शुक्र भी अस्त होंगे। इसलिए इस माह में विशेष रूप से गुड़, खांडसारी, चीनी आदि के स्टाक को निकालना चाहिए। क्योंकि आगे मन्दी जोरदार बोल रही है। शुरू माह में ही इन्फीरियर लाईन चलती रहेगी। ये सभी ग्रह चीनी, गुड़, खांडसारी में मन्दी कारक हैं और बुधास्त शुक्रास्त ये सभी ग्रह वायु के वेग के साथ वर्षा कारक माने गये हैं। विशेषतया महाराष्ट्र गुजरात आदि से इस माह की सोमवती अमावस्या के बाद मांग निकलने की सम्भावना है। तमाम सट्टे वायदों में ता. २२ अक्टूबर पर मंगलवार होने से और मेष के चन्द्रमा का योग बन जाने से सोना, चांदी, लोहा, शीशा, तांबा, स्टील, कांसा आदि धातुओं के भावों में तेजी का योग बनता है। ता. २३ अक्टूबर को अगर मार्किट खिलाफ चलें तब फौरन सौदा बदल दें। ता. २४ अक्टूबर को प्रा: ५ घटी पर ही स्वात्याम् रवि और २५ अक्टूबर को रोहिणी के दूसरे चरण में राहु का संचरण होने से गेहूं, जौ, चना, मटर, गुवार, बाजरा मक्का के भावों में मंदी का योग बनेगा। लेकिन सूत, रुई, ऊनी वस्त्रों में तेजी की धारणा यहां से बनती है। इसलिए ता. २५ अक्टूबर को पिछले मंगलवार के ऊंचे भाव क्रोस हो जाएं तब जोरदार तेजी आयेगी। अगर भाव क्रास न हों तब मंदी का विशेष चांस जानें। महालक्ष्मी पूजन सोमवती अमावस्या को होने से मजीठ, लाख, चपड़ा, केशर, कस्तूरी, इमारती लकड़ी के भावों में तेजी आएगी। आलू, प्याज, लहसुन में मंदी का योग बनेगा। सिर्फ हल्दी, जीरा, लौंग, इलायची में तेजी के योग बनते हैं और गुड़, खांडसारी में तेयारी की मांग गुजरात आदि प्रान्तों की निकलेगी। अन्नकूट गोवर्धन पूजा ता. ५ नवं. को होने के बाद ता. ६ को चन्द्रदर्शन बुधवारी और सात को शुक्र उदय होने से साथ ही एक दिन बाद रमजान के व्यापार पति बुध चित्रा नक्षत्र में आने से गेहूं, जौ, चना, मटर, गुवार, जुवार, मक्का आदि में तेजी को बल मिलेगा। लेकिन गुड़ वायदे में होशियारी से व्यापार करें। ता. ८ नवं. को १ बजे से मन्दी चली तो जोरदार मन्दी पूर्ण सप्ताह चलेगी। ता. १६ नवं. कार्तिक शुदि द्वादशी शनिवार को वृश्चिक संक्रांति आने से तथा अनुराधा नक्षत्र में बुध के संचरण होने से ता. १८ नवं. को १२ बजकर ३० मिनट से तिलहन, गुड़, चांदी व सोने में जो लाईन चलेगी। वही लाईन तमाम माह चलेगी और खास तौर से रुई कपास, बिनौला में तेजी की चमक आयेगी।

मार्गशीर्ष सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष २०५९ में ५ शुक्रवार हैं और यह महीना ता. २१ नवम्बर को शुरू होकर ता. १९ दिसं. २००२ को समाप्त होगा। इस माह में ता. २१ नवं. ११ बजे से चना, मटर, गेहूं में रियक्शन आयेगा पर लेकर बेचना। घी, बेजीटेबिल बेचना, रुई, सूत, लेना, उड़द, मसूर, मूंग हर मंदे में लेना तथा चांदी, सोना, बेचा हुआ लेना। मैंथा बेचना, शेयर लेना, आलू बेचना, गन्दुनी और लाल रंग की वस्तु लेना, गुड़ बेचना, चीनी, खंडसारी में ता. २३ नवं. को विशेष रिमार्क है। अगर आज १ बजे तक पिछले बुध के भाव नीचे के कटें तो बेचना और ऊंचे के कटें तो लेना। ४ दिवसीय यह मोटा चांस है। जो ७ से १२ या १६ रु. तक चलेगा। अगर मार्केट पड़ा रह जाए तो यह चांस ४ दिन आगे को बढ़ जाएगा। मंगशिर बदी नौमी का क्षय होना इस योग में सहायक है। ता. २ दिसं. तक इस ग्रह का असर गुवार, बाजरा, मक्का में भी पड़ेगा। ता. २ दिसं. को ज्येष्ठा रवि होने से सूर्य के अधिकार की वस्तु जैसे सोना, चांदी तथा शेयर और पेपर्स में तेजी के योग बनेंगे। सूर्यमुखी, सूखे मेवों में तेजी बढ़ेगी। तिलहन, आयल में अगर ता. ४ दिसं. १२ बजे से तेजी न चले तो बदनी सट्टे के सौदों को निकाल दें पर स्टील और शेयर बाजारों का रुख जिधर का भी ता. ४ दिसं. एक बजे से जिधर का बनेगा वही लाइन ५ या ७ दिन में एकतरफा चलेगी। मंगशिर शुदि में चन्द्रदर्शन के बाद ता. ६ दिसं. की रात को वक्री गुरु भयंकार मंदी कारक गुड़ में विशेष रूप से सोना में भी कारक है और पीले तमाम पदार्थों में असर गुरु ग्रह करता है पर इस ग्रह के अपोजिट अगले ही दिन व्यापार पति बुध पश्चिमोदय में होने से तेजी कारक है। यहां आगे पीछे २ ग्रह एक मंदीकारक और दूसरा तेजी कारक सभी वस्तुओं पर व्यापार पर हाजिर हो या बदनी सट्टा असर कारक है। ता. ९ दिसं. से खुलासा लाईन बनेगी। ता. १५ दिसं. पर धनु संक्रांति से आगे तमाम माह ता. १९ को पूर्णिमा मंगशिर की समाप्ति पर धान्यादि भावों पर महर्घता का असर पड़ेगा और कभी-कभी ऐसे योगों पर इसी अवधि में साफ्टवेयर निर्यात १० से २५ प्रतिशत बढ़ने की आशा बनती है। अमेरिकी शेयर बाजारों में गिरावट के योग बनेंगे। सोना, चांदी में भाव बढ़ने से रुक जायेंगे। गुड़ में मंदी का चांस सम्पन्न होगा। इसलिए ऊंचा भाव आने पर तारुणी करना लाभदायक रहेगा। ता. २२ नवम्बर, २६ नवम्बर और दिसम्बर में ता. ३, ६, ७, १७ को दुतर्फी गली लगाना लाभदायक रहने का योग बनता है। नोट—इस माह में घी, आलू स्टॉक नहीं करना।

पौष सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में ५ शुक्र मंदी कारक हैं। पर ५ शनिवार भी इस वास्ते दुतर्फी घटाबढ़ी होगी। माह में संक्रांति पौष शुदि एकादशी को

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

४५ मुहूर्ती होने से भारी मन्दी कारक है। इस माह में लाइन चलने पर लाइन के नये भाव ता. २०, २४, २७, ३१ दिसं. हैं। इस के अलावा जनवरी सन् २००३ में ता. ३, ७, १०, १४, १७ जनवरी विशेष हैं। विशेष रूप से पौष वदि प्रतिपदा शुक्रवार ता. २० दिसं. २००२ की रात्रि को ४४ घटि २९ पर पर विशाखा नक्षत्र में शुक्र का संचरण होगा। शुक्रदेव के अधिकार की वस्तु जैसे कपड़ा, रस पदार्थ, तरल पदार्थ, मैंथा और शादी की श्रृंगार की वस्तु इन सभी में, साथ ही गुड़, खांड, घी में मन्दी का योग बनता है। इसलिए ता. २१ पौष वदि दोज शनिवार को चालू लाइन ही बदस्तूर ता. २६ दिसम्बर तक चलेगी। हीरा, जवाहरात, चांदी, रुई, ग्वार, मटर, सरसों में भी इस ग्रह का प्रभाव होता है। व्यापार पति बुध ता. २५ दिसं. को २६ घटि पर मकर राशि में प्रवेश इसके असर से चालू पूर्व लाईन तमाम वस्तुओं की या तो एकदम पलटा खायेगी या ज्यों की त्यों चलेगी। विशेषतया घी देशी में अच्छी मन्दी के योग बनते हैं। अपोजिट में शेयर मार्किट चल सकते हैं। यहां की चालू लाईन सभी वस्तुओं की एक जनवरी सन् २००३ तक चलेगी। नये सन् के प्रारम्भ में ता. २ जनवरी को गुरुवारी अमावस्या है। यह ग्रह विशेष रूप से आलू आदि जड़मूल वाली वस्तुओं तथा खांडसारी, चीनी इत्यादि में जोरदार मन्दी की सूचक है। लेकिन ता. ३ जनवरी की रात्रि में २३ घटी पर बक्री बुध होने से कुछ तेजी का योग बनता है। ता. ५ जनवरी सन् २००३ को रविवार के दिन रात्रि में पच्चीस घटी पर बुधास्त होने से सभी पंसारठ की वस्तु खासतौर से इस माह में उत्पन्न होने वाली वस्तुओं में खरीद करने से आगे एक माह में ही अच्छे लाभ का योग बनता है। चांदी, सोना, तिलहन आदि के सभी मार्किट ता. ६ जनवरी को लाईन के नवीन भाव बनाएंगे और ता. ७ जन. को पूर्ण हो जायेंगे। ता. ८ जनवरी को बक्री मृगशिरा के द्वितीय चरण यानि वृष राशि पर शनि देव का प्रभाव तमाम ऊंचे शेयरों में तेजी लेकिन अन्य तमाम वस्तुओं में मन्दी का धमाका आयेगा। आगे ता. १४ जनवरी २००३ को मकर संक्रांति मंगलवारी लगने से कुछ वस्तुओं में तेजी का योग बनेगा। इसलिए पंसारट की तमाम वस्तु हल्दी, मेवे आदि रुई, चांदी, सूत, सूती वस्त्रों में खरीदकर हाथों हाथ लाभ उठाना। इस माह में ता. २४ दिसम्बर ता. २७ दिसं. में दुतर्फा तेजी मन्दी लगाना। इस माह में स्टील, तांबा की मन्दी आने पर खरीदकर लेना क्योंकि आगे तेजी आयेगी।

माघ सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

माघ सं. २०५९ में ५ रविवार हैं। इस माह में धान्यों में गेहूं, चना, बेझड़, रस पदार्थ तेज हों। व्यापार पति बुध माघ बदि ५ गुरुवार ता. २३ जनवरी २००३ को रात्रि में ५२ घटी पर मार्गी बुध ता. २४ जनवरी को प्रारम्भ में होगा और ता. २४ को दिन में श्रवण रवि १३ दिन चढ़ होने से इनमें एक ग्रह भयंकर तेजी कारक दूसरा मंदा कारक लग रहे हैं। एक ग्रह दूसरे ग्रह के अपोजिट हैं। इनमें भारी संशय होने से यह सिद्ध होता है। एक वस्तु तेजी पर दूसरी वस्तु मंदी पर चले ऐसा खेल सट्टे में चल सकता है। विचार से लगते माह २० जन. से २४ जनवरी तक हर वस्तुओं में पूर्व माह की ही लाईन चांदी, सोना, शेयर, मैंथा, स्टील, गेहूं, चना, मटर तथा गुड़, सरसों, मक्का, बारदाना में चलेगी। ता. २४ को नये भाव लाइन के बनकर लाइन पलट खायेगी। पूर्व तेजी रही हो तो मन्दी चलेगी। काश ता. २५ को शनिवार के दिन गत बुधवार के नीचे भाव न कटें तो तेजी जोरदार आयेगी वर्ना मंदी आयेगी। यहां की चालू लाइन ता. ३१ जनवरी शुक्रवार को जनवरी में समाप्त होगी। विशेषतया जीरा, हल्दी, शुष्क मेवे तेजी पर जायेंगे। पृथ्वी पति भौम ता. २ फरवरी रविवार को ज्येष्ठा नक्षत्र में प्रवेश होने से और ता. ३ फरवरी ११ बजे से सोना, चांदी, मैटिरियल, मैंथा, स्टील, मेंथी, तमाम लाल वस्तु में तेजी का योग बनेगा। गिरे भाव खरीदो और सुर्ख तमाम वस्तु गहने ज्वैलरी में तेजी के साथ माणिक्य नग तेज होगा। हीरा भी तेजी पर ज्योति जगावे ऐसी धारणा है।

फाल्गुन सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

इस माह में ५ सोमवार, ५ ही मंगल हैं। यह महीना ता. १७ फरवरी से शुरू होकर ता. १८ मार्च को समाप्त होगा। इस महीने में ५ सोमवार बहुत मंदी कारक हैं लेकिन वायदे सट्टों में ५ मंगल तेजी कारक हैं। इसलिए हर सट्टे वायदे के चांस पूर्व माह के चालू हुए बदस्तूर ता. २१ तक ज्यों के त्यों चलते रहेंगे और चांदी, सोना, गुड़, आलू, सरसों तथा तिलहनों में भी इस लाईन का प्रभाव ता. २१ को लाईन के अनुसार नये भाव बनाकर समाप्त होंगे। इस महीने में ही कुम्भ संक्रांति जो पन्द्रह मुहूर्त्ती चालू हो चुकी है उसके असर से चावल, गेहूं, जौ, चना, मक्का, बाजरा, रुई, कपास, बारदाना, गुड़, तेल और सोना, चांदी, जूट, पाट, बारदाना तथा शेयरों में नई चालू लाईन ता. २२ फरवरी से चालू होगी। आगे ता. २४ फरवरी को सोमवार के दिन सरकारी आकड़ों की भी व्यापारियों को प्रतीक्षा होगी। ता. २५ फरवरी मंगलवार को लाईन के नीचे भाव कटें। तब मंदी आयेगी अगर न कटें तब तेजी का योग बन जायेगा। फाल्गुन वदी त्रयोदशी शुक्रवार ता. २८ फरवरी को तिथि टूटी हुई है। अतः १ मार्च शनिवार को बाद से दिल्ली शेयर तथा मुम्बई शेयरों तथा धातु पदार्थों में अगर पिछले बुधवार के बनें ऊंचे भाव कटें तब तेजी मानना-वरना मत मानना। यह हमारा खास संकेत है। दलहन, तिलहन, मसूर, अरहर, लोबिया, बासमती तथा कच्चा व सेला चावल, मूंगफली, किराना बाजार में ता.४ मार्च को चन्द्रमा मीन राशि पर आने से और चन्द्रदर्शन भी होने से लास्ट मन्दी के योग बनते हैं। क्योंकि ता. ५ मार्च को श्रवणे शुक्र मन्दी कारक है। लेकिन शतभिषा नक्षत्र में बुध तेजी कारक है। विशेषतया चावल, मैंथा, मूंगफली आदि का स्टाक करें लेकिन आलू और तिलहन में अभी रुक जाएं। यहां की चालू लाईन सीधी होलाष्टक ता. ११ मार्च तक हर वस्तु में ज्यों की त्यों चलेगी। इसके बाद मार्किटों में कोई खास लाइन हमें नहीं जंचती है। क्योंकि मीन की संक्रांति फाल्गुन शुदि एकादशी शुक्रवार को ३० मुहूर्ती मार्किटों में समता और घटबढ़ ही होली तक होगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष सं २०५९ का सामूहिक व्यापार भविष्य

चैत्र के कृष्ण पक्ष के पन्द्रह दिनों के अन्दर इंफीरियर लाईन समाप्त होकर सुपीरियर लाइन चालू होगी। इस वास्ते इस माह के चार दिन बाद ही कुम्भ का शुक्र ता. २२ मार्च को रात्रि में ३५ घटी पर लगेगा। इसका प्रभाव ता. २४ मार्च सोमवार से प्रारम्भ होगा। इसलिए ध्यान रखिये कि ता. २३ मार्च को कबरिट में जिधर भी मार्किट चले तब वही लाईन संवत् २०५९ से आखिर अमावस्या यानि ता. १ अप्रैल तक चलने की संभावना है। बीच में ता. २६ मार्च को वर्गोत्तम चन्द्रमा का और ता. ३१ सन् २००३ मार्च को भी एक सी लाईन चलने की संभावना है। रसायन वस्तुओं में तेजी और ऐशियाई मार्किटों में उड़ती अफवाहें सोने में गिरावट का रुख पैदा करेंगे। क्योंकि पहली अप्रैल को मार्गी गुरु रात्रि को हो रहा है। यह पहले पांच दिनों में ही समस्त धातु पदार्थ तथा सोना, चांदी, शेयरों में जोरदार मंदी समाप्त करता है। क्योंकि मार्गी गुरु नये वर्ष में आगे गुड़, मूंगफली, चांदी, स्टील, मैंथा में तेजी के योग बनाते हैं। इसलिए ता. १ अप्रैल से पहले-पहले मन्दी का व्यापार करें। लेकिन बाद में अच्छी तेजी गुरु के अधिकार की वस्तु जैसे हल्दी, सोना, केसर आदि पीली वस्तुओं में तेजी का योग बनाते हैं। जिसका प्रभाव संवत् २०६० में होगा।

अनमोल चांस मंगाईये

अनमोल क्यों लिखा क्योंकि हम चांस ग्रहों के आधार पर तो हर दैवज्ञ की भांति देते ही हैं पर ग्राफिकल भी हिसाब लगाकर चांस बनाने के साथ ही ऊंचे नीचे क्रौसिंग भाव देना ही चांस की विशेषता होती है। हाजिर या सट्टा वायदा वस्तु के हर वस्तु के चांस चांदी, शेयर, मैंथा, गुड़, आलू, तेल, तिलहन, पंसारट आदि हर एक वस्तु के चांस हाजिर वायदे सट्टे के मंगाइये। फीस १ वर्ष ५५१ रु., ६ माह ३५१ रु., तीन माह की २५१ रु. है। सट्टा वायदा फीस एक माह २५१ रु., सम्पूर्ण वर्ष की २५५१ रु. सभी चांस हस्त लिखित होंगे।

'शांडिल्य व्यापार भविष्य' छपा हुआ विक्रम सं. का मूल्य ८५ रु., प्रान्तीय समाचार मासिक पत्र मूल्य १२५ रु.।

नोट--रुपया पेशगी भेजें। वी.पी. का नियम नहीं है।

पता--ओंकाराश्रम--ओंकार दैवज्ञ विश्वबंधु एम.काम., एल.एल.बी., आयुर्वेद रत्न, २१/२२, बह्मणान, पो. हापुड़, जिला-गाजियाबाद (उ.प्र.)

फोन नं. : ३१२२२३८, ३१७९२९ हैं।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

चन्द्र शृंगोन्नतः व्यापार वाणी सं. २०५९ वि.

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड़ ''शंभु कवि'' दूरा (आगरा), उ.प्र.

चैत्र शुक्ल पक्ष

रक्तवर्ण — दक्षिण भृंग

दिनांक १३ अप्रैल सन् २००२ सं. २०५९ वि. चैत्र शुक्ल २ रविवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण भृंग से रक्तवर्ण से होगा। जिसका फल राष्ट्र तथा संसार में अशांति होती है। गेहूं, चना, जौ, मटर,उड़द, मोंठ, मसूर, हल्दी, काली मिर्च, सोना, चांदी, पीतल, स्टील पर घोर तेजी आती है। जूट, पाट, बारदाने के भाव भी ऊंचे जाते हैं।

वैशाख शुक्ल पक्ष

रक्त वर्ण — सम भृंग

सं २०५९ वि. वैशाख शुक्ल १ चन्द्रवार को चन्द्रदर्शन समभृंग रक्तवर्ण से होगा। गेहूं, चना, मटर, जौ, उड़द, मोंठ, मसूर, घी, तेल, सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील के भाव कुछ तेजी पर जाते हैं। जर्मन, अरब राष्ट्रों में जनधन का विनाश होता है। जूट, पाट, बारदाना, किराना वस्तुओं के भाव कुछ गिर जाते हैं। व्यापारी वर्ग को संग्रह करने की राय समय देता है। अंधड़ तूफानादि का भय, अग्निकाण्ड का भय दिखलाई देता है।

ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — उत्तर भृंग

सं. २०५९ वि. ज्येष्ठ शुक्ल १ भौमवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग पीत वर्ण से होगा। भौमवार को चन्द्रदर्शन पश्चिमी देशों में विग्रह, उत्पात, युद्ध की स्थिति बनाते हैं। किसी भीषण रोग का प्रादुर्भाव विश्व में होता है। केन्द्र तथा प्रान्त में राजनैतिक उथल पुथल होती है। गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का, उड़द, ज्वार, बाजरा, गुवार पर एकदम सस्तापन होता है। दाख, किशमिश, जीरा, धनियां, हल्दी, काली मिर्च, चिरौंजी, मखाने पर घोर तेजी आती है। वायु संचार के साथ खण्ड वृष्टि के प्रायः योग हैं। साम्प्रदायिक उपद्रव एकदम भड़क सकते हैं।

आषाढ शुक्ल पक्ष

श्वेत वर्ण — उत्तर भृंग

संवत् २०५९ वि. आषाढ़ शुक्ला १ गुरुवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग श्वेत वर्ण से होगा। गुरुवार को चन्द्रदर्शन सुभिक्ष का संचार करता है तथा कार्तिकी फसल अच्छी होती है। ऐसा फल दिखलाई देता है। पाक में प्राकृतिक-प्रकोप से जनधन का भारी विनाश होता है। ऐसा भारतीय विज्ञान से स्पष्ट है। गेहूं, चना, जौ, मटर, मक्का, चावल, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ में कुछ सस्तापन होता है। जीरा, धनियां, हल्दी, किशमिश, दाख, हींग, मखाने में अच्छी तेजी आती है। जूट, पाट, बारदाने के भाव गिर जाते हैं। वर्षा के योग सामान्य में अच्छे बनते हैं।

श्रावण शुक्ल पक्ष

रक्तवर्ण — उत्तर भृंग

संवत् २०५९ वि. श्रावण शुक्ल १ शुक्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग से रक्तवर्ण संयुक्त होगा। इस मास में पृथ्वी के पूर्वी भागों में प्राकृतिक प्रकोप, भूकम्प, भूस्खलन होने की पूर्ण संभावना है। जापान, जर्मन, हालैण्ड, आस्ट्रेलिया, लन्दन आदि के उपद्रव सत्ता के विरुद्ध विरोध, तोड़फोड़, सरकारी सम्पत्ति का भारी नुकसान होता है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, पीतल, स्टील, गेहूं, चना, मटर, चावल, मूंग, मसूर, उड़द के भाव कुछ गिर जाते हैं। कागज स्टेशनरी के सामान में अच्छी तेजी आती है। केन्द्रिय मंत्रिमंडल में आकस्मिक परिवर्तन होता है।

भाद्रपद शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — उत्तर भृंग

संवत् २०५९ वि. भाद्रपद शुक्ल २ रविवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग से पीतवर्ण सह दिखाई देगा। इस चन्द्रदर्शन से भ्रष्टाचार, पापाचार, हत्याकाण्ड, लूटपाट से जन जीवन त्रस्त रहेगा। राजस्थान, मध्य प्रदेश, पंजाब, हरियाणा में घोर वर्षा, बाढ़ प्रकोप की संभावना है। उत्तर प्रदेश, कुछ राजस्थान, मध्य प्रदेश के भाग में समयानुकूल वर्षा होती है। गेहूं, चना, जौ, चावल, लोहा, चांदी, सोना, ताम्बा में अच्छी तेजी आती है। काली मिर्च, दाख, किशमिश, जीरा, धनियां के भाव गिर जाते हैं। सुपारी, कत्था, गूगल, इलायची, लौंग के भाव चढ़ जाते हैं।

आश्विन शुक्ल पक्ष

श्वेत वर्ण — उत्तर भृंग

संवत् २०५९ वि. आश्विन शुक्ल २ भौमवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग से श्वेत वर्ण दिखलाई देगा। इस मास में गेहूं, चना, जौ, मटर, मूंग, मोंठ, उड़द, हींग, जीरा, धनियां, सुपारी, कालीमिर्च, गुगल, इलायची, कवलगट्टा, मखानों पर एकदम तेजी बनती है। दूध, दही, शहद, फल, फूल, घास, तृणादि पर सस्तापन आता है। अमेरिका में राजनैतिक उथल-पुथल से विशेष अशांति हो सकती है। भारत सरकार द्वारा अमेरिका से कुछ आर्थिक सहयोग लेना पड़े तो कोई आश्चर्य न होगा। धातुवाने, जूट-पाट, बारदाने के भाव एकदम गिर जाते हैं।

कार्तिक शुक्ल पक्ष

श्वेत वर्ण — उत्तर भृंग

संवत् २०५९ वि. कार्तिक सुक्ल २ बुधवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग श्वेत वर्ण से होगा। उत्तर भारत में प्राकृतिक प्रकोप से हानि होगी। नवीन विधान सभाओं में नए विधान पारित होंगे। जनता सरकार में खुशी की लहर दौड़े। सुख-शांति का अच्छा समय दिखलाई दे रहा है। गेहूं, चना, जौ, मटर, चावल, सरसों, तिल, प्रियंगू के भाव गिर कर चढ़ सकते हैं। घी, तेल, दाख, किशमिश, जीरा, धनियां, मखाने, हींग के भाव विशेष ऊंचे जा सकते हैं। राजनैतिक पार्टियों की दरार दिखलाई देती है। सत्ता के विरुद्ध अभियान छेड़ा जा सकता है। पश्चिमी देशों में रक्तपात की पूर्ण सम्भावना है।

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — उत्तर भृंग

संवत् २०५९ वि. मार्गशीर्ष शुक्ल २ शुक्रवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग पीत वर्ण से होगा। सुख शांति का द्योतक है। राम मंदिर, बाबरी मस्जिद का मामला फिर एक बार उभर कर आ सकता है। जिसमें सरकार चुप्पी साधे रहेगी। परन्तु कोई भी सही हल न निकल पायेगा। गेहूं, चना, जौ, चावल, उड़द, मूंग, मोंठ, मसूर, सोना, चांदी, ताम्बा, स्टील पर अच्छी तेजी आती है। उत्तर पूर्व में जातीय संघर्ष, उपद्रव, आन्दोलन, तोड़-फोड़ हो सकती है। राजनैतिक पार्टियों में मतभेद उत्पन्न हो सकता है। सीमा पर जबर्दस्त आक्रमण होकर जनधन हानि होगी।

पौष शुक्ल पक्ष

श्याम वर्ण — उत्तर भृंग

संवत् २०५९ वि. पौष शुक्ल २ शनिवार को चन्द्रदर्शन उत्तर भृंग से श्याम वर्ण से होगा। दक्षिण में उपद्रव, अशान्ति पैदा हो। गेहूं, चना, जौ, चावल, उड़द, मूंग, मसूर, किशमिश, गूगल, काली मिर्च, दाख, हींग, हल्दी, ज्वार, गुवार, मखाने के भाव तेजी पर जा सकते हैं। भूकम्प से पश्चिमी राष्ट्रों में लाखों लोग बेघर हो जावेंगे। सोना, चांदी,ताम्बा,लोहा, स्टील, काष्ठ, कोयला, मिट्टी का तेल, डीजल, पेट्रोल के भावों में अच्छी तेजी आ सकती है।

माघ शुक्ल पक्ष

श्याम वर्ण — सम भृंग

संवत् २०५९ वि. माघ शुक्ल २ चन्द्रवार को चन्द्रदर्शन समभृंग से श्याम वर्ण से होगा। जर्मन, ब्रिटेन, रूस, अमेरिका में अशांति होगी। भारत में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। पूर्व में युद्ध की पूर्ण संभावना है। गेहूं, चना, जौ, चावल, उड़द, मूंग, मसूर, मोंठ पर अच्छी तेजी होती है। सोना, चांदी, ताम्बा, लोहा, स्टील के भाव गिर जाते हैं। किशमिश, जीरा, धनियां, कालीमिर्च, जूट, पाट, बारदाने के भाव विशेष तेजी पर जाते हैं।

फाल्गुन शुक्ल पक्ष

पीत वर्ण — दक्षिण भृंग

संवत् २०५९ वि. फाल्गुन शुक्ल २ भौमवार को चन्द्रदर्शन दक्षिण भृंग से पीत वर्ण वाला हो रहा है। इसका फल दुर्भिक्षकारक है। उपलवृष्टि, खण्ड वृष्टि से खड़ी फसल में हानि होगी। गेहूं, चना, मक्का, मटर, चावल, शक्कर, गुड़, सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, स्टील में अच्छी तेजी होती है। तेल, रुई, कपास, ऊन, काष्ठ कोयला के भाव कुछ गिर जाते हैं।

सन् २००२-२००३ ई. में सरसों स्पेशल चांस

खरीदना	बेचना	खरीदना	बेचना
मार्च—१६ से २० तक	२५ से २९ तक	अप्रैल—२ से १० तक	१८ से २५ तक
मई—८ से १६ तक	१८ से २८ तक	जून—१० से १६ तक	१८ से ३० तक
जुलाई—८ से १४ तक	१६ से २५ तक	अग.—४ से १४ तक	१७ से २८ तक
सित.—२ से १२ तक	१४ से २५ तक	अक्टू.—४ से १० तक	१४ से २९ तक
नवं.—३ से ११ तक	१५ से २८ तक	दिसं.—२ से १५ तक	१८ से ३० तक
जन.—४ से १४ तक	१९ से २७ तक	फर.—३ से ११ तक	२० से २८ तक
मार्च—५ से १८ तक	२१ से ३० तक		

सन् २००२-२००३ ई. में जीरा स्पेशल चांस

खरीदना	बेचना	खरीदना	बेचना
मार्च—१७ से २५ तक	२६ से ३० तक	अप्रैल— ४ से ८ तक	१० से २५ तक
मई—१० से १८ तक	१९ से २८ तक	जून—१२ से २० तक	२२ से ३० तक
जुलाई-१० से २५ तक	२६ से ३० तक	अग.—५ से १८ तक	२० से २७ तक
सित.—३ से २० तक	२२ से ३० तक	अक्टू.—५ से २८ तक	२९ से ३० तक
नवं.—२ से ८ तक	१० से १६ तक	दिसं.—१ से १४ तक	१६ से २० तक
जन.—२ से ८ तक	१० से २० तक	फर.—५ से १४ तक	१६ से २५ तक
मार्च—३ से १८ तक	२० से २८ तक		

विशेष सूचना-तेजी-मंदी की हस्तलिखित रिपोर्ट मंगायें। फीस निम्न है। वार्षिक २००१.०० षट्मासिक १००१.००, त्रैमासिक ५०१.००, मासिक २५१.०० डाक व्यय ५०.००

ब्रह्मर्षि ज्योतिषाचार्य पं. शंकरलाल गौड़ ''शंभु कवि'' ब्रज बाबा पथ, दूरा (आगरा), (उ.प्र.) पिन २८३११०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

व्यापार भविष्य फल २००२ ई.

लेखक-श्री रामावतार गुप्ता ''व्यापार भूषण'' फोन-०१२७४-२३९८७
राम उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड,नजदीक नई सब्जी मण्डी (रेवाड़ी)-१२३४०१ (हरि)

पौष मास २०५८ विक्रमी

जनवरी मास-इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें १-३-५-१५-१९-२२-२९ एवं मंदी की प्रमुख तारीखें ७-१७-३१ हैं। पौष में पांच सोमवार उत्तम फलदायक हैं। अनाजों में प्राय: जनरल लाईन मन्दी रहेगी। पौष सुदी से माघ कृष्ण पक्ष तक रुई में अच्छी मन्दी आ सकती है। बदी पक्ष में प्राय: अन्य व्यापारिक वस्तुएं मन्दी तो सुदी पक्ष में प्राय: वस्तुओं में जनरल लाईन तेज रहेगी। ता. ६ जन. श्रवणे बुध दिन १० के अन्दर कहीं वर्षा पानी, ओलों आदि से फसलों को नुकसान की सम्भावना रहे तथा गुड़, अलसी, चना में तेजी लायेगा। यदि आज दिन में वर्षा न हो तो आगे आर्द्रा के सूर्य में (२२ जून से ५ जुलाई तक) भरपूर वर्षा होगी। ता. १० जन. मीने मंगल घास,चारा, पशु, इमारती, लकड़ी, सूत, रुई, सोना, चांदी में तेजी की लाईन बनायेगा। यहाँ शनि भी वक्री चल रहा है।

''वृष वृश्चिक धनु मीन में, मंगल करे निवास।
शनि वक्री होकर चले पशु मनुजों का नाश॥''

दुर्भिक्षकारी भी है। ता. १३ जन. रविवारी मावस-३ से ५ दिन के अन्दर रुई, चांदी, बारदाना में मन्दी के झटके तथा घी में तेजी के उछाले लाएगी। श्रावणी फसल के भावों में तेजी। यथा-

''पौषी मावस के दिना भौम सूर शनिवार।
भय उपजै महंगे बिके, जुवार बाजरा गुवार॥''

पौष शुक्ल-इस पक्ष में प्राय: वस्तएं प्रथम तेज रहकर पक्ष के अंत में मन्दी होंगी। ता. १४ जन. मकर राशि में सूर्य-शुक्र योग दिन २५ के अन्दर फसलों में प्राकृतिक कारणों से नुकसान। यहां शुक्र अस्त चल रहा है। यदि वर्षा पानी हो जाता है तो प्राय: वस्तुओं में मन्दी की चाल बन जायेगी। विशेषकर सरसों, मटर, अरहर, गुवार आदि में, वायदा बाजारों में भी मन्दी के योग बन जायेंगे। अन्यथा इस योग से बाजारों में तेजी। मकर संक्रान्ति जनरल तौर पर अनाजों में मन्दी तो तिलहन तथा अन्य वस्तुओं में तेजी कारक है। विशेष प्रभाव ३।२ से ११।२ तक रहेगा। ता. १९ जन. छट शनिवारी, चावलों में एक मास जनरल लाईन तेज रहे। वक्री बुध रस पदार्थों,तिलहन, गल्ला माल में तेजी कारक है तथा प्रमुख शेयर्स,सोना, चांदी के बाजार भी तेज होंगे तथा आगे चांदी में विशेष तेजी के झटके भी आयेंगे। सोमवारी सप्तमी पौष सुदी पक्ष में कभी भी सरसों, बिनौला में अच्छी तेजी के झटके लायेंगी। ता. २३ जनवरी श्रवणे शुक्र, दलहन में मन्दी कारक है। परन्तु श्रवण पर सूर्य-शुक्र तेजी कारक। यहाँ प्राय: तेजी को ही बल मिलेगा। यथा-

''श्रवण नखत पर कोई ग्रह हो क्रूर।
अन्न भाव महंगा रहे, गेहूं तेज जरूर॥''

गेहूँ अनाज के अलावा रुई, सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड, अलसी, सुपारी, लोंग आदि के भावों में भी वृद्धि होगी। ता. २८ जनवरी पूनम का क्षय दिन १५ में रुई के भावों में गिरावट तो अन्य वस्तुओं में तेजी रहेगी तथा दिन २ के अन्दर सोना, चांदी, पारा में विशेष तेजी के झटके भी संभव हों।

माघ मास-इस मास में ५ मंगलवार-५ ही बुधवार हैं। प्रजा में भय का वातावरण, चोर, डाकू, तस्करों आदि का जोर रहेगा। मास में प्राय: खाद्य सामग्री, दलहन,घी, मसाले, सब्जियां, रस पदार्थों में तेजी का जोर रहेगा। कृष्ण पक्ष में कुछ अच्छी तेजी के झटके घी में आ सकते हैं। सुदी पक्ष में प्राय: वस्तुओं में काफी तेजी का जोर रहेगा।

फरवरी मास-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. २-१२-१६-१९-२५-२६ तथा मन्दी की ४-११-२१ फरवरी हैं। ता.१ फरवरी को यदि वर्षा अच्छी हो तो आगे नारियल में तेजी आ जायेगी। ता. २ फरवरी रेवती का मंगल अनाजों में मन्दी कारक तथा दिन १५ के अन्दर चांदी में अच्छी तेजी कारक है। पूर्व में बुधोदय भी अनाजों, रस पदार्थ तथा सोना भी मन्दा हो जायेगा। आगे अनाज की पैदावार काफी होगी। ता. ७ फर. कुंभे शुक्र, सफेद रंग की वस्तुएं, रुई, चांदी, चीनी तथा अनाजों में मन्दी को सपोर्ट करता है। रात को शुक्रोदय तेजी कारक। किसी श्रेष्ठ पुरुष का अभाव। नारियल, पंचवर्ण, रेशमी, सूत में भारी तेजी कारक। ता. ९ फर. बुध मार्गी तथा शनि भी साथ मार्गी हुआ है। यहाँ सप्ताह दस दिन बाजार की पोजिशन घट-बढ़ से चलेगी। प्राय: वस्तुओं के भाव स्थिर नहीं रहेंगे। कई वस्तुओं में व्यापक घटबढ़ चल सकती है। रुख देखकर काम करें। ता. १२ फर. मंगलवारी मावस तेजी को सपोर्ट करेगी। रात्रि २३।४६ बजे कुंभ संक्रान्ति खर्पर योग युक्त है। अनाज सहित अन्य व्यापारिक वस्तुओं के भाव बढ़ेंगे। जस्ता, तांबा में भारी घटबढ़ हो सकती है। यदि आज वर्षा हो तो लाल रंग की जो भी वस्तुएं मन्दी चल रही हों स्टाक करके चार मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ होगा। संक्रान्ति तांबा, गेहूँ, चन्दन, मजीठ, लाल रंग की प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी कारक है। इस संक्रान्ति का विशेष प्रभाव १३ से २२ फरवरी तक होगा। माघ की मावस मंगलवारी होने से-दुर्भिक्ष' तेजी कारक है।

''माघी मावस पूर्णिमा जो मंगल शनिवार।
शोक लोक में परस्पर राजाओं में तकरार॥''

ता. १३ फरवरी को यदि वर्षा हो जोर की वायु चले तो घी, तेलों में दिन प्रतिदिन तेजी होती जायेगी। सुदी एकम् बुधवारी है। सुदी पक्ष में सप्ताह दस दिन अनाज, घी, गुड़ तेज। चांदी में विशेष मन्दी के झटके आकर तेजी। तिलहन, रस पदार्थ, किराना आदि में पक्ष में तेजी का जोर रहेगा।

''पड़वा आठै पूर्णिमा जो बुधवारी आय।
सभी वस्तु व्यापार की महंगे भाव बिकाय॥''

ता. १६ फर. सुदी ४ शनिवारी-महा दुर्भिक्षकारी है।

''माघ मास में चतुर्थी को आवै शनिवार।
चोर अग्नि भय, धान्य क्षय अति दुर्भिक्ष विचार॥''

वृष राशि में राहु का प्रवेश शनि के साथ राशि योग बनायेगा।

''राहु शनैश्चर का बनै जब इकठौर मिलाप।
महंगाई हो अन्न में राजा को सन्ताप॥''
वृष राशि पर हो कभी शनि राहु का वास।
काल पड़ै, जग पश्चिमे राजाओं का नाश॥

महा दुर्भिक्षकारी योग है। बहुत सी वस्तुओं में विशेष तेजी लायेगा। ता. १९ फर. सुदी ७ भरणी नक्षत्र युक्त होने से आगे अच्छी फसल का संकेत देती है। लोक भाषा में कहा गया है-

''माघ सुदी जो सप्तमी भौमवार को होय।
तो भड्डर जोशी कहे, नाज किराना लोय॥''

ता. २१ फर. मेषे मंगल-अनाजों के भावों में गिरावट लायेगा। मूंगा तेज होगा। सर्दी बढ़ेगी। सोना-चांदी, रत्न, रुई, पाट, बारदाना, गुड़, खाण्ड में तेजी कारक। दिन १५ में विशेष तेजी के झटके। अनाज, दलहन प्राय: मन्दा ही रहेगा। ता. २३ फर. पू.भा. शुक्र दिन ८ में कहीं वर्षा, आकाश में बादल छाएं। रुई में तेजी तो अनाज के भावों में गिरावट लायेगा। ता. २७ फर. बुधवारी पूनम एक सप्ताह के अन्दर अलसी में विशेष तेजी के झटके लायेगी।

''माघी पूनम को कभी बादल छवै आकाश।
संग्रह करो अनाज का लाभ सातवें मास॥''

फाल्गुन मास-ता. २८ फर. बदी एकम गुरु मार्गी होंगे। पांच दिन पहले से ही सोना, गुड़, सरसों, मूंगफली, रुई, कपास आदि में एक तेजी की लहर परन्तु एक सप्ताह पीछे मन्दी चल पड़ेगी। यहां घी में तेजी बनी रहेगी। फागुन मास में पांच गुरुवार उत्तम फलदायक हैं। अनाज की पैदावार उत्तम हो तथा अनाजों में मन्दी रहे। इस मास में प्राय: वस्तुओं में मन्दी चलेगी। परन्तु धातुएं तेज रहेंगी।

मार्च मास-इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें २-५-९-१६-१९-२६ एवं ३० तथा मन्दी की ४-७-८-१८-२२ हैं। उपरोक्त तारीखों में प्राय: व्यापार की प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी मन्दी के झटके आ

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सकते है। ता. ३ मार्च मीने शुक्र सुख सुभिक्षकारी है। पृथ्वी पर सुख-शान्ति में बढ़ोत्तरी हो। रुई, चांदी, घी, अनाज, सरसों, तिलहन, गुड़, खाण्ड आदि के भावों में गिरावट चल कर मावस बाद बाजार में कुछ सुधार होगा। ता. ५ मार्च उ.भा. शुक्र मन्दीकारक तथा दिन ८ के अन्दर सफेद वस्तुओं चावल, चांदी, कपूर, रुई आदि पर मन्दी का विशेष प्रभाव रखता है। परन्तु साग-सब्जियों में तेजी लायेगा। ता. ७ मार्च को यदि आकाश बादलों से ढंक जाए तो आगे आसौज बदी सप्तमी को भारी वर्षा हो। दिन में बादल हों रात्रि में बादल हों तो दिन में वर्षा होगी। ता. ११ मार्च भरणी मंगल, दो सप्ताह के अन्दर रुई, सोना, चांदी के भावों में तेजी। अनाजों में तेजी बनाए रखने की कोशिश करेगा। ता. १२ मार्च शते बुध एक सप्ताह के अन्दर सोना, चांदी, धातुओं में अच्छी मन्दी का चांस है। प्रा. १४ मार्च मावस की वृद्धि मीन संक्रान्ति खर्पर योग युक्त है। इस संक्रान्ति काल में जो भी वस्तुएं मन्दे स्तर पर हों। स्टाक करके अगली संक्रान्ति काल में बेचने से अच्छा लाभ हो। यदि आज वर्षा हो तो भी, तेल, कपास, हींग का स्टाक करके चार मास पश्चात् बेचने से अच्छा लाभ हो। ता. १५ मार्च चन्द्रदर्शन से व्यापारिक वस्तुएं मन्दी चलेंगी। ता. १९ मार्च को यदि आकाश में बादल गर्जें, बिजली चमके तो समझना चाहिए कि वैशाख में अनाज मन्दा हो। ता. २४ मार्च बुधास्त पूर्व घटबढ़ से रुई, सोना, चांदी में तेजी का तूफान मालूम दे। इसी प्रकार प्राय: उदय तक लाईन चले। गेहूँ में कुछ मजबूती लायेगा। ता. २६ मार्च मीने बुध बिनौला तेज होगा। ता. २७ मार्च मेषे शुक्र रस, तिलहन पदार्थ, अनाज, धातुओं के भावों में बढ़ोत्तरी करके कुछ अच्छी तेजी के उछाले भी लायेगा। मंगल-शुक्र योग आगे मूल पदार्थों में भारी तेजी ला सकता है। सावधान! ता. २८ मार्च गुरुवारी पूनम-सुदी १४ का क्षय तेजी को बल मिलेगा तथा पूनम उ.फा. नक्षत्र युक्त होने से दुर्भिक्षकारी है।

"पूरण जब उ.फा. रहे, पूनम फागुन मास।
रस पदार्थ, गुड़, खाण्ड तिल तिलहन धान्य विनाश।"

उपरोक्त वस्तुओं के भावों में बढ़ोत्तरी होगी।

चैत्र कृष्ण पक्ष-ता. ३० मार्च कृतिका मंगल दिन १५ के अन्दर प्राय: सभी प्रमुख वस्तुओं के भावों में तेजी की लाईन बनायेगा। इस चैत्र मास में पांच शुक्र तथा पांच ही शनिवार तेजी के प्रतीक हैं। यथा

"चैत्र मास में आ पड़ें, पांच शुक्र शनिवार।
प्रजा नाश दुर्भिक्ष दुख दिन-दिन तेज बाजार॥"

मास तेजी प्रधान रहे तथा कई प्रमुख वस्तुओं में अच्छी तेजी चलेगी। मास में वृष राशि पर क्रूर ग्रहों का जमावड़ा भी तेजी, दुर्भिक्ष का संकेत देता है। यथा-

"वृष राशि पर साथ हो, राहू शनि मंगल तीन।
तेजी पीड़ा युद्ध भय, पृथ्वी वर्षा हीन॥"

कुल मिलाकर यह मास तेजी कारक सिद्ध होगा।

अप्रैल मास-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. २-६-१६-१७-२३-३० तथा मन्दी की ३-४-५-११-१२-१५-१८-१९ हैं। ता. २ अप्रैल बदी ५ मंगलवार तेजी कारक है।

"चैत्र बदी पांचै दिना मंगल या बुधवार।
गेहूँ एवं घी में, तेजी चले बाजार॥"

उपरोक्त वस्तुओं में चैत्र बदी पक्ष में तेजी चले तथा आर्द्रा ३ गुरु तथा रोहिणी ३ शनि-रस पदार्थ, तिलहन, धातुएं तेज करेगा। ता. ३ अप्रैल को यदि आकाश बादलों से ढ़ंक जाए तो लाल रंग की वस्तुएं निसन्देह मन्दी हो जाएंगी। ता. ४ अप्रैल वृषे मंगल अनाज, लाल रंग की प्रमुख वस्तुएं सोना, चांदी आदि धातुएं प्रमुख शेयर्स आदि में तेजी कारक है। इसके साथ-साथ मसाले, मटर, अरहर के भावों में भी तेजी चमकेगी। मंगल+शनि+राहु का साथ आगे एक डेढ़ मास में भारी तेजी भी ला सकता है। सावधान।

चैत्र शुक्ल पक्ष-२०५९ वि. ता. १३ अप्रैल को नवीन संवत् २०५९ का शुभारंभ होगा। संवत् का राजा शनि तथा मन्त्री एवं मेघपति भी शनिदेव होंगे। इस संवत् की मेन पावर शनि महाराज के पास है। संवत् में व्यापारिक वस्तुओं में तेजी का बोलबाला रहेगा तथा कई एक वस्तुओं के टॉप भाव बनेंगे। ता. १४ अप्रैल मेष राशि में सूर्य-बुध शुक्र योग तेजी कारक है।

"एक राशि पर होय जब बुध-शुक्र और सूर।
वर्षा को कमती करे, तेजी हो भरपूर॥"

इन तीनों की मेष राशि पर एक सप्ताह तक मीटिंग चलेगी तथा प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में तेजी के ही बिल पास होंगे। ता. १७ या १८ अप्रैल को यदि दक्षिण-पूर्व की पवन चलें तथा वर्षा भी हो तो आगे भाद्रपद मास में अनाजों में भारी तेजी चलेगी। ता. २१ अप्रैल वृषे शुक्र-मंगल+शनि राहु के साथ राशि बनायेगा। तीन सप्ताह यह योग रहेगा। इस दौरान मंहगाई का जोर रहेगा।

"शुक्र भौम शनि राहु जिस समय रहे इक ठौर।
अग्निकाण्ड दुर्भिक्ष भय, महंगाई का जोर॥"

ता. २५ अप्रैल से पांच ग्रह वृष राशि में भ्रमण करेंगे। कहीं युद्ध अथवा कहीं भारी वर्षा से जन-धन की हानि हो।

"चार पांच ग्रहों का बनै, एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा युद्ध से, दुख पावें सब लोग॥"

ता. २८ अप्रैल रोहिणी शुक्र दिन १० में धातुओं, तिलहन, रस पदार्थ, सुपारी, नारियल के भावों में घटबढ़ से गिरावट लायेगा।

वैशाख मास-इस मास में पांच शनि तथा रविवार दुर्भिक्षकारी हैं। मास तेजी कारक रहे। मन्दी के झटके अस्थाई तौर पर आयें। वैशाख सुदी पक्ष से ज्येष्ठ मावस तक कभी भी अनाजों में अच्छी मन्दी चल सकती है। स्टाक करके दो मास पश्चात् बेचें। यह एक चांस है।

मई मास-इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ४-११-१४-१८-२१-२८-३० एवं मन्दी की २-९-१५-१६-२३ हैं। ता. ४ मई मंगल+शनि युति से रुई में विशेष तेजी के झटके कुछ दिन पूर्व से बाद तक आयेंगे। ता. ७ मई को यदि आकाश प्रबल बादलों से ढंका रहे तो अनाज का स्टाक निकाल देना चाहिए। ता. ९ मई मृगे, रुई, चांदी में अच्छी तेजी कारक है। यहां मंगल+राहु की युति भी होगी। अन्य व्यापारिक वस्तुओं में भी तेजी का संचार होगा। यथा-

"मंगल राहु साथ में इक नखत इक रास।
अनावृष्टि दुर्भिक्ष दु:ख हो खेती का नाश॥"

ता. ११ मई बदी १४ शनिवारी—इस मास (वैशाख मास) में कभी भी रुई, पाट, बारदाना में भारी तेजी आ सकती है। सावधान। रविवारी मावस अनाज स्टाक करने की राय देती है। मन्दी में खरीदें। ता. १४ मई क्रूरवारी संक्रान्ति तेजी कारक है।

"बदी बाढ़ै सुदी घटे, क्रूरवार संक्रान्ति।
छत्र भंग अरु अवर्षण, पीड़ित प्रजा नितान्त॥"

यदि आज वर्षा हो तो अनाज तथा किराने की जो भी वस्तुएं मन्दी हों स्टाक करके चार मास पश्चात् बेचने से उत्तम लाभ हो। ता. १५ मई वृष राशि पर पंचग्रही योग महा दुर्भिक्षकारी है। यथा-

"रवि मंगल बुध राहु शनि इकट्ठे हों इकठौर।
नग्न नृत्य विध्वंशता का दक्षिण की ओर॥"

बाजारों का रुझान अच्छी तेजी की ओर अग्रसर होगा। यहाँ मिथुन राशि में शुक्र प्रवेश से गुरु के साथ राशि योग भी बनायेगा। दुर्भिक्षकारी है। **"एक जगह गुरु शुक्र हो, बनै युद्ध आसार।**
अनावृष्टि अति वृष्टि से दुख पावै संसार॥"

ता. १६ मई सुदी ४ गुरुवारी आगे आषाढ़ मास में रुई में तेजी लायेगी। नोट कर लें। सावधान! भारी तेजी भी ला सकती है। ता. १७ मई को यदि सूर्योदय से सूर्यास्त पर्यन्त पूर्व (पुरवा) पवन चले तो अनाज का स्टाक करना चाहिए। आगे तेजी से काफी लाभ हो। ता. १९ मई मिथुने मंगल लाल रंग की वस्तुओं में अच्छी तेजी कारक है। क्योंकि यहां मंगल-गुरु+शुक्र के साथ राशि योग बनायेगा तथा अनाजों में मन्दी का संकेत देता है। स्टाक करें। यथा-

"भौम भार्गव गुरु बसै एक राशि पर तीन।
अन्न भाव मन्दा रहे, संग्रह करो प्रवीन॥
सुर गुरु मंगल शुक्र का एक नखत पर बास।
अन्न भाव मन्दा रहे, लाभ तीसरे मास॥"

तथा चांदी, रुई में दिन ८ के अन्दर अच्छी मन्दी के झटके भी आयेंगे। सावधान! ता. २६ मई रविवारी पूनम बक्री बुध की सूर्य से युति तिलहन, बिनौला में अच्छी तेजी। ५ दिन पूर्व से बाद तक कभी भी आ सकती है।

ज्येष्ठ मास-इस मास में घटबढ़ से आवरेज तेजी रहेगी। मास में सुदी पक्ष के अन्त में मंगलास्त होने से बाजार मन्दे हो जाएंगे अथवा तेजी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

रुक जायेगी। ता. २७ मई बदी एकम् सोमवारी महा वर्षा कारक है। परन्तु यह योग २ मास पश्चात् बाजारों में तेजी लाता है। ता. २९ मई आर्द्रा का मंगल दिन २० के अन्दर मूंगफली, तिलहन, एरण्डा, सरसों आदि में अच्छी तेजी आने वाली है। यह एक चांस है तथा रुई में काफी तेजी मन्दी का संकेत मिलता है। हमारे हिसाब से रुई में काफी तेजी आनी चाहिए।

जून मास-इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें १-८-११-१८-२२-२४ २५ तथा मन्दी की ६-१२-१३-२० हैं। ता. ४ जून पुन. २ गुरु घटबढ़ कारक है। दिन १० में अनाज के भावों में तेजी चमकेगी। ता. ८ जून-सूर्य+शनि+राहु की युति होगी। इनसे सम्बन्धित वस्तुओं के भावों में तेजी तथा कई एक वस्तुओं में भारी तेजी। सोमवती मावस मन्दी कारक है तथा बुधदेव भी मार्गी होंगे। अत: सप्ताह दस दिन घटबढ़ से प्राय: बाजार गिरेंगे। यहाँ वृष राशि में पांच ग्रहों का योग आगे तेजी को बढ़ावा ही देगा।

"जेठ मास में सूर्य सह पांच ग्रह इक संग।
सावन सूखा जायेगा, मन्त्रीमण्डल भंग॥"

ता. ११ जून ज्येष्ठ सुदी एवम् मंगलवारी पक्ष में रुई, घी में भारी तेजी के झटके तथा तीन दिन के लिए तिलहन पदार्थों सहित अन्य वस्तुओं में नि:सन्देह मन्दी चलकर अच्छी मन्दी के झटके संभव। पुष्य शुक्र दिन ७ में लाख, चपड़ा, गुड़, सोना में अच्छी मन्दी के झटके देगा। ता. १५ जून को मिथुने संक्रान्ति १५ मुहूर्ती, क्रूरवारी बैठी स्थिती में होने से अनाजादि तथा अन्य वस्तुओं में तेजी का संचार करेगी। विशेष प्रभाव जुलाई दूसरा सप्ताह में होगा। ता. १७ जून मंगल अस्त मन्दी कारक है। अत: चलती तेजी में ब्रेक लगेगा। ता. २३ जून आश्लेषा शुक्र दिन १० के अन्तर्गत रुई, अरहर, चावल, चांदी, मोठ, चना में मन्दी कारक है। ता. २४ जून सोमवारी पूनम, मूल नखत युक्त है। शुभ योग-

"पूर्ण मासी जेठ की मूल नखत शुभ योग।
सुख सम्पत्ति आनन्दमय सुखी रहें सब लोग॥
जेठी पूनम स्वच्छ नभ सुख सुभिक्ष शुभ मान्य।
कुण्डल, वर्षा घटा हो, संग्रह करिए धान्य॥"

आषाढ़ मास-ग्रह योगों के अनुसार मास में रुई, सोना, चांदी में काफी तेजी अथवा मन्दी चलेगी। मास में सिंहे शुक्र+गुरु+मंगल योग वर्षा में विशेष रुकावट पैदा कर रहे हैं। यथा-

"वर्षा ऋतु में भौम: गुरु आन बसै इक गेह।
साथ रहें जब तक न हो, वर्षा ऋतु में मेह॥"

मास के अन्त में शनि मिथुन राशि में प्रवेश से राहु का साथ छोड़ देगा। यहा से सर्राफा बाजार में मन्दे का प्रभाव शुरू हो जायेगा। परन्तु शनि के अपने अढ़ाई साल के भोगकाल में तिलहन, सरसों, सोना, चांदी में रिकार्ड तेजी लायेगा। इस मास में लाल रंग की कुछ प्रमुख वस्तुओं में भारी तेजी आ सकती है। ता. २७ जून आषाढ़ बदी ३ गुरु श्रवण नखत युक्त है। अनाज स्टाक करने की राय देता है। यथा-

"पड़वा दोयज तीज तक प्रथम पक्ष आषाढ़
श्रवण धनिष्ठा होय तो अन्न संग्रहो गाढ़॥"

आज रात को शनि उदय रुई, अनाज मन्दा तो लहसुन, चावल, फर्नीचर तेज करेगा। ता. ३० जून रविवारी छट अनाजों में अच्छी तेजी के झटके। आषाढ़ बदी पक्ष में कभी भी अस्थाई तौर पर लायेगी।

जुलाई मास-इस मास में तेजी की ता. २-५-६-९-२०-२३-२७ एवं मन्दी की ता. १-११-१५-२२ हैं। ता. १ जुलाई बदी छट की वृद्धि रुई के भावों में गिरावट लायेगी। ता.४ जुलाई को यदि सूर्योदय समय या दोपहर में या अस्त होते समय सूर्य के चारों तरफ बादल दिखाई दें तो यह गल्ला माल में तेजी आने का सूचक है। मिथुने-बुध, दिन १६ में हवाएं तूफानी गति से चले। रुई, सोना, चांदी, तिलहन के भावों में गिरावट। ता.५ जुलाई मघा सिंहे शुक्र-लाल रंग की प्रमुख वस्तुओं सोना, तांबा, घी, रसादि पदार्थ तेज करेगा। ता.७ जुलाई आर्द्रा बुध दिन ८ में दलहन पदार्थों में मन्दी कारक है। सोना, चांदी में घटबढ़ से अच्छी तेजी के झटके घटाबढ़ी से संभव हों। ता. ११ जुलाई आज का चन्द्रदर्शन तिलहन में तेजी कारक, गुड़, खाण्ड, धातुओं में मन्दी कारक। ता. १२ आषाढ़ सुदी २ शुक्रवारी तथा आगे सुदी ९ गुरुवारी है।

शुभ योग-**"दोयज नौमी साढ़ सुदी सोम गुरो भृगुवार।**
उत्तम वर्षा अन्न का मन्दा रहे बाजार॥"

कहीं-कहीं अच्छी वर्षा तथा अनाजों के भाव मन्दी की ओर झुकेंगे। ता. १४ जुलाई को यदि पश्चिमी वायु चले, बादल गर्जे, वर्षा हो या इन्द्र धनुष दिखाई दें तो अनाज का स्टाक करके कार्तिक में बेचने से अच्छा लाभ हो। पुनर्वसु बुध दिन ८ में चांदी, रुई, सूत, बारदाना, बिनौला में अच्छी मन्दी अचानक चलेगी। ता. १६ जुलाई कर्क संक्रान्ति ३० मुहूर्त्ती बैठी अवस्था में क्रूरवारी है। ता. १९ जुला. कर्के बुध सोना, चांदी, रुई, बिनौला, मूंगफली में कोई बड़ा उतार-चढ़ाव संभव हो। ता. २० जुलाई सुदी ११ शनिवारी तथा आगे कार्तिक सुदी पंचमी भी शनिवारी है। यह दोनों काफी दुर्भिक्षकारी हैं। अत: अनाजों में तेजी कारक। ता.२३ जुलाई शनि का बुध के घर मिथुन में प्रवेश होगा। तिलहन की फसल को खराब करेगा।

"बुध वृहस्पति के घैर, जब-जब हो शनिवार।
राजाओं में युद्ध हो, बहै खून की धार॥"

श्रावण मास-इस मास में पांच गुरुवार दुर्भिक्षकारी हैं। यथा-

"चैत्र श्रावण मासे पंच जीवो यदा भवेत।
दुर्भिक्षं रौरव घोर छत्र भंगं न शंसये॥"

बदी पक्ष के अन्त में पिछली आई हुई तेजी का रंग उत्तर जायेगा। अर्थात् मन्दी हो जायेगी। परन्तु सुदी पक्ष में प्राय: प्रमुख व्यापारिक वस्तुओं में तेजी रहे। राई में भादव बदी पक्ष में अच्छी मन्दी भी चल सकती है। ता. २५ जुलाई श्रावण बदी एकम् गुरुवारी है।-

"सावन कृष्णा प्रतिपदा जो होवे गुरुवार।
उर्द मूंग तिल तेल का महंगा चले बाजार॥"

के अनुसार दलहन पदार्थ, तिलहन पदार्थों में मास में जनरल लाईन तेज रहेगी। ता. २९ जुलाई आश्लेषा मंगल दिन २० में अनाजों में तेजी कारक तथा चांदी, रुई में मन्दी कारक है। चांदी में अच्छी मन्दी लगभग (१३ से १९ अगस्त) के झटके लायेगा। सावधान।

अगस्त मास-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. ३-४-६-१०-१५-२३-२४-३१ एवं मन्दी की ८-१२-२१-२२-२६ हैं। ता. १ अगस्त आज बुध+शुक्र दोनों राशि परिवर्तन करेंगे तथा गुरु देव उदय होंगे। सोना, चांदी, सरसों, तिलहन, मूंगफली आदि में दिन १० बाजार तेज रहकर गिरेंगे। चावलों में विशेष तेजी चमकेगी। श्रावण में गुरु का उदय अनाजों में मन्दी का कारण बनेगा। श्रावण बदी पक्ष के शुरू से सूर्य के आगे मंगल तथा गुरु के आगे सूर्य चल रहा है।

"गुरु के आगे सूर्य तो वर्षा हो चहुँ ओर।" तथा
"श्रावण में आगे चले रवि रथ से कुंज राय।
कहीं-कहीं वर्षा खैंच हो, कहीं-कहीं प्रलय दिखाय॥"

ता. ३ अगस्त बदी ९ शनिवारी नेष्ट फलकारी है।

"नौमी सावन बदी में शनिवारी सन्ताप।
मन्त्री मण्डल भंग हो, कार्तिक आपै आप॥"

आश्लेषा में सूर्य+मंगल योग गेहूँ, चणा, अलसी, गुड़, शेयरों के भाव बढ़ेंगे। ता. ४ बदी १० रोहिणी नक्षत्र युक्त है।

"सावन पहले पाख में दशमी रोहिणी होय।
महंगा नाज रू, अल्प जल बिरला बिलसै कोय॥"

ता. ५ बदी ११ मृगशिर नखत युक्त है। दुर्भिक्षकारी है।

"सावन बदी एकादशी रोहिणी संवत् जान।
मृगशिर में दुर्भिक्ष का सब लक्षण अनुमान॥"

यह योग घोर तेजी कारक है। प्राय: व्यापारिक वस्तुओं के भावों में वृद्धि होगी। ता. ६ अगस्त को यदि वर्षा हो तो भाद्रपद में अनाज तेज हो जायेगा। ता. ८ अगस्त को यदि वर्षा अच्छी हो जाए तो अनाजों में तुरन्त मन्दी का प्रभाव होगा। गुरुवारी मावस वर्षाकारी है तथा बदी प्रतिपदा भी गुरुवारी मास नक्षत्र से युक्त थी।

"मावस्या गुरुवार या गुरु दिन मास नक्षत्र।
ज्योतिष का सिद्धान्त है वर्षा हो सर्वत्र॥"

ता. १० अगस्त शनिवारा चन्द्रदर्शन प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में तेजी को सपोर्ट करता है। सोना, चांदी, तिलहन, गुड़, खाण्ड में कुछ अच्छी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

तेजी के झटके आ सकते हैं। ता. ११ अगस्त हस्ते शुक्र दिन १३ के अन्दर जो वस्तुएं तेजी में चल रही हों। बेचकर नफा लें। मन्दी में चल रही हों। स्टाक लाभदायक रहे। ता. १६ अगस्त सिंह संक्रान्ति वर्षा में रुकावट पैदा करेगी। तेजी को बढ़ावा मिलेगा। अनाज, तिलहन, अरहर आदि में अच्छी तेजी कारक है। ता. १९ अग. सिंहे मंगल- धातुएं, रस पदार्थ, लाल रंग की वस्तुओं, अरहर में तेजी कारक है। एक डेढ़ मास के अन्दर कई एक वस्तुओं में भड़कती तेजी संभव। परन्तु बीच में ता. २१ अगस्त से कन्या राशि में बुध+शुक्र के प्रभाव से प्रमुख वस्तुओं में मन्दी होगी। यहां जिन वस्तुओं में मन्दी चल रही हो उसमें अच्छी मन्दी तथा तेजी में चल रही वस्तुओं में ब्रेक लगेंगे। ता. २२ अगस्त को यदि आकाश निर्मल रहे तो श्रेष्ठ है। बादल आदि हों तो आगे घी, तेल का व्यापार लाभकारी रहेगा।

भाद्रपद मास-इस मास में पांच शुक्र+शनिवार हैं तथा कृष्ण पक्ष में तिथि वृद्धि तथा सुदी पक्ष में क्षय होना भी तेजी कारक है।

''कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़े,शुक्ल पक्ष घट जाए।
सभी वस्तुएं तेज हों, सस्तापन हट जाएं॥''

के अनुसार मास में प्राय: व्यापारिक वस्तुओं में घटबढ़ से जनरल लाईन तेज रहेगी। बदी ८ शनिवारी रोहिणी युक्त है। सो कई व्यापारिक वस्तुओं का स्टाक करने की राय देती है तथा कई एक वस्तुओं में भारी तेजी भी आयेगी। रुई में मन्दी कारक। यहाँ एक अन्य पोजिशन भी बन रही है। यथा-

''भृगु चित्रा, मंगल मघा, राहु रोहिणी निवास।
धान्य भाव महंगा रहे, हो खेती का नाश॥''

सितम्बर मास-इस मास में तेजी का प्रमुख ता. ३-७-१३-१४-२०-२१-२८-३० एवं मन्दी की ता. ४-५-९-१६-१८ हैं। ता. ५ सित. को यदि आकाश में बादल छा जाए तो आगे फागुन मास में अनाज तेज बिकेगा। ता. ७ सित. तेल, तिलहन पदार्थों में शीघ्र तेजी के झटके तथा दिन ४ के अन्दर चांदी, प्रमुख शेयर्स, गुड़, रस पदार्थों में घटबढ़ से अच्छी तेजी के झटके आयेंगे। ता. ८ सित. भादव सुदी एकम् का क्षय तेजी कारक है। आज का चन्द्र दर्शन तेजी कारक है। प्राय: सभी वस्तुओं में तेजी लायेगा। परन्तु अनाज मन्दा करेगा। यदि अनाज मन्दा हो तो स्टाक करके २ मास में बेचने से अच्छा लाभ हो। ता. १२ सित. सुदी छट को अनुराधा नखत सुख सुभिक्षकारी है।

''षष्ठी भादव सुदी में अनुराधा नक्षत्र।
अन्य दोष मिट जाए सब हो सुभिक्ष सर्वत्र॥''
''भादों की छट चांदनी जो अनुराधा होय।
ऊबड़-खाबड़ बोय दे अन्न घनेरा होय॥''

ता. १३ सित. बक्री बुध सोना, चांदी, रुई, रस पदार्थ, तिलहन पदार्थ आदि के भावों में वृद्धि करेगा। आगे अस्त होने पर चांदी, गल्ला, माल में अत्यधिक तेजी भी लायेगा। ता. १४ सित. को यदि दिन रात आकाश निर्मल रहे तो बिनौला, रुई, सोना, चांदी, घी, गुड़, नमक, दुधारू पशु तेज हो जाएंगे। इसके अलावा मूंग, बाजारा, कांगनी, गुवार, मटर, चणा, उर्द, चावल आदि अनाज, दलहन पदार्थों में आगे चार-पांच मास जनरल लाईन तेज रहेगी। ता. १६ सित. कन्या संक्रान्ति सोमवारी ४५ मुहूर्ती सुख सुभिक्ष मन्दीकारी है। अनाजों तथा अन्य वस्तुओं में गिरावट आयेगी। विशेष प्रभाव २७।९ से ६।१० तक रहेगा। ता. १७ सित. सुदी एकादशी-''एकादशी वर्षे अगर सस्ता हो सब माल।'' के अनुसार यदि आज वर्षा हो तो आगे प्राय: वस्तुओं में मन्दी की चाल बन जायेगी। चाहे ग्रह योग आगे तेजी के ही क्यों ना हों? ता. २१ सित. शनिवारी पूनम रुई के अलावा प्रत्येक वस्तुओं में तेजी के झटके लायेगी। प्रमुख शेयरों में इसे ५ दिन के अन्दर विशेष तेजी के झटके आ सकते हैं।

आसौज मास-बदी पक्ष में सरसों, बिनौला, तिलहन पदार्थों में भड़कती तेजी के झटके अस्थाई तौर पर आ सकते हैं। परन्तु अनाज जनरल तौर पर मन्दा रहे। सुदी पक्ष में राई का बाजार तेज रहे तथा कार्तिक सुदी पक्ष तक राई में कुछ भड़कती तेजी संभव। लाल रंग की वस्तुएं घी, रुई के भाव भी इस सुदी पक्ष में बढ़ेंगे।

आसौज का शकुन-

''आश्विन में संध्या समय जो बादल घन होय।
तो तुम अब जान लो निश्चय बरखा होय॥''
''तीज बदी आसौज में, मंगल या शनिवार।
अग्निकाण्ड भयभीत जग मंहगा चले बाजार॥''

ता. २४ सित. बदी ३ मंगलवारी-तेजी को बढ़ावा मिलेगा। ता. २८ सित. शनि वक्री, दुर्भिक्षकारी है। अपने बक्र काल में फसलों को व्यापक नुकसान हो। सभी नशीले पदार्थ, धातु, अनाज, तिलहन के भावों में वृद्धि करेगा। ता. ३० सित. मंगल का उदय तथा उ.फा. मंगल रस पदार्थों, धातुएं, तिलहन, बिनौला, सूत, बारदाना, गुड़, चावलों में आगे विशेष तेजी के झटके अस्थाई तौर पर लायेगा।

अक्टूबर मास-इस मास में तेजी का प्रमुख तारीखें ४-११-१२-१९-२२-२५-२६-३१ एवं मन्दी की २-९-१४-१७-२८-३० हैं। ता. ४ अक्टू. को यदि आकाश में बादल दिखाई दे तो नव रात्रों में वर्षा होगी। तथा कार्तिक में रुई, कपास तेज होंगे। ता. ५ अक्टू. बुधोदय पूर्व सुख सुभिक्षकारी है। अनाज के भाव गिरेंगे। परन्तु कपास, चणा, लाल मिर्च, घी के भाव तेज करेगा। ता. ६ अक्टू. कन्या मंगल लाल रंग की वस्तुएं, अलसी, सरसों, राई, रुई, रेशम, सोना आदि में तेजी कारक। अपने भोग काल में धीरे-धीरे या अचानक अच्छी तेजी भी ला देगा। यहां सूर्य-बुध के राशि योग बनायेगा। अच्छी वर्षा कारक भी है। यथा-

''बुध के आगे सूर्य हो,पीछे मंगल जान।
सुख सुभिक्ष संसार में सुन्दर वर्षा मान॥''

ता. ९ अक्टू. सुदी ४ का क्षय दलहन, घी में (आसौज सुदी पक्ष) तेजी कारक है।

''किसी मास में तीज या सुदी चौथ घट जाए।
ग्राहक मांगे मूंग घी, विक्रेता नट जायें।''

शुक्रदेव वक्री होंगे- रुई, चांदी, सोना, घी, मजीठ में तेजी कारक है। परन्तु पूर्वार्ध तेजी एवं उत्तरार्ध मन्दी करेगा। ता. ११ अक्टू. चित्रा का सूर्य दिन १३ के अन्दर अनाज, अरहर, रुई, लाख, चपड़ा के भाव बढ़ेंगे। ता. १५ अक्टू. को यदि आकाश में बिजली बादल वर्षा हो तो दलहन, तिलहन में विशेष तेजी आ जायेगी। ता. १५ अक्टू. सुदी १० मंगलवारी अनेक रोगों की उत्पत्ति में सहायक है। पीले रंग की वस्तुएं तेज तो अनाजों में मन्दी के झटके आयेंगे। ता. १७ अक्टू. तुला संक्रान्ति १५ मुहूर्ती बैठी स्थिति, शतभिषा नक्षत्र में होने से अनाजों में तेजी को बढ़ावा देगी।

''हानी हाथी हेम की तुला राशि गत सूर।
सभी तरह के धान्य में तेजी हो भरपूर॥''

इस संक्रान्ति का विशेष प्रभाव २७।१० से ५।११ तक होगा। ता. २१ अक्टू. स्वाति शुक्र दिन १० के अन्दर घी, गुड़, खाण्ड, अनाजादि वस्तुओं में तेजी का संचार होगा।

कार्तिक मास-मास में शुक्रास्त तथा उदय तेजी कारक है। घी, तेलों, अनाज, रुई, तिलहन पदार्थों में घटबढ़ से जनरल लाईन तेज रहे। मास के अन्त में पूनम की वृद्धि से एक दफे प्राय: सभी चीजों में मन्दापन आयेगा। मास के प्रमुख शकुन-

''कार्तिक गर्जे मेघ तो उत्तम पैदावार।
किन्तु धान्य का रोज ही महंगा चले बाजार।
कार्तिक मंगसिर कोई दिवस दिनकर बदले रास।
उस दिन वर्षे तो पौष में, सस्ता अन्न कपास॥''

ता. २७ अक्टू. कार्तिक बदी छट रविवारी आर्द्रा नखत युक्त है। ''कार्तिक आर्द्रा वार रवि राजा युद्ध विरोध॥'' के अनुसार राजाओं में युद्ध की भावना बढ़े तथा अनाजों में तेजी कारक। ता. २८ अक्टू. तुला का बुध सूर्य+शुक्र के साथ राशि योग बनायेगा।

''एक राशि पर होय जब बुध शुक्र और सूर।
वर्षा को कमती करे, तेजी हो भरपूर॥''

के अनुसार प्राय: व्यापारिक वस्तुओं के भावों में तेजी का संचार होगा।

नवम्बर मास-इस मास में तेजी की प्रमुख ता. १-२-५-८-९-१६-२३-३० तथा मन्दी की ११-१४-१८-२५ हैं। ता. १ नव. सूर्य-बुध-शुक्र एक विशेष पोजीशन में चल रहे हैं। तेजी कारक।

''आगे सूरज बीच बुध पीछे भृगु की चाल।
गल्ला रुई, उर्द तिल तेजी तिलहन माल॥''

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

परन्तु यहां शुक्र वक्री होने से कुछ घटबढ़ चल सकती है। रुख देखें? ता. २ नव. को यदि आकाश में बादल गर्जे, बिजली चमके तो अनाजों में तुरन्त तेजी आकर मन्दी आयेगी। ता.३ नव. कार्तिक बदी १३ रविवारी—

''कार्तिक लागत त्रियोदशी जो आवै रविवार।
तो जौ गेहूँ में चले, तेजी बारम्बरा॥''

करवा चौथ अथवा धन तेरस या दीपावली के दिन से जो भी मार्केट की चाल (तेजी-मन्दी) निकलेगी वह प्रायः पौषी मावस तक चलती है। दीपावली सुख सुभिक्षकारी है। यह सोमवती मावस व्यापारियों के हक में अच्छी नहीं है। यथा-

''सोमवती तीनऊ बुरी सावन कार्तिक माघ।
गुण करती अवगुण करें सुन लो तुम यों साह॥''

ता. ५ नव. कार्तिक सुदी एकम् मंगलवारी घी, रुई में अच्छी तेजी के झटके इस पक्ष में संभव हों। फागुन सुदी तक रुई में भयंकर तेजी आने के योग हैं। परन्तु आगे शनि+गुरु साथ-साथ वक्री चलेंगे। यह मन्दी कारक योग है। ता. ९ नव.सुदी ५ को धनु चन्द्रमा+स्टे. टा. १५.११ बजे बाद शूल योग है। अतः इस योग में रुई खरीदने से आगे भारी लाभ की संभावना रहे। अभी दिन ८ के अन्दर रुई में कुछ अच्छी मन्दी के झटके संभव। ता. १६ नव. वृश्चिक संक्रान्ति लाल रंग की वस्तुएं मन्दी तथा अन्य तेज करेगी। तिलहन में घटबढ़। वृश्चिक-धनु-मकर यह तीन संक्रान्तियां क्रमशः शनि-रवि-मंगलवार में होने से दुर्भिक्षकारी हैं। घोर खर्पर योग बन गया है।

''शनिवारी संक्रान्ति फिर दूजी हो रविवार।
तीजी मंगलवार को खर्पर योग विचार॥''

ता. २० नव. पूनम की वृद्धि आगे एक दफे प्रायः व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी आयेगी।

मार्गशीर्ष मास-बदी पक्ष में सावनी फसल के मालों में मन्दी चलेगी। तथा अनाजों में प्रायः मन्दी चलेगी। सुदी पक्ष के शुरू में गुरुदेव वक्री होंगे। गुड़, तिलहन में घटबढ़ से भारी तेजी आ सकती है। रुई में घटबढ़ चलेगी तथा अनाजों में तेजी चलेगी। ता. २१ नव. तुला में मंगल, दलहन, रुई, अनाजों में तेजी कारक है। मंगल-शुक्र योग से मूल पदार्थों में भारी तेजी चल सकती है। मार्गी शुक्र दिन ५ तक घटबढ़ से बाजार गिर कर तेज होंगे। सोना,चांदी, सरसों, अलसी आदि मन्दी होकर तेज। चावल, घी में एक मास के अन्दर अच्छी तेजी लायेगा। शकुन-

''शुक्र साथ में चन्द्रमा अथवा मंगल संग।
जो नभ में बादल छवे वर्षा होय उमंग॥''

यह योग ३१ दिस. तक है। इस दौरान जब भी आकाश में बादल छाए तो वर्षा अवश्य होगी। ता. २३ नव. बदी ३ आर्द्रा नक्षत्र युक्त है। शुभ योग। **''मंगसिर लागत तीज को पुनर्वसु आर्द्रा आय।**
राजा प्रजा सुखी रहे, मन्दा धान्य बिकाय॥''

ता. २९ नव. बदी १० नौमी का क्षय जनता में आपसी मन-मुटाव, दंगे, झगड़े आदि में बढ़ोत्तरी होगी-

''मंगसिर पहले पाख में कोई तिथि घट जाए।
झगड़ा और फिसाद नित लोगों में अधिकाए॥''

दिसम्बर मास-इस मास में तेजी की प्रमुख तारीखें ३-६-७-१४-१६-१७-२०-२१-२४ तथा मन्दी की २-९-२३-२६-३० हैं। ता. २ दिस. स्वाती मंगल दिन २० के अन्दर रुई, गेहूँ, तिल, सरसों, राई, मूंगफली आदि में बीच-बीच में अच्छी तेजी के झटके लाता रहेगा। ता. ३ एवं ४ दिस. को यदि आकाश में घटा छा जाए तो अनाज, पशुओं के चारा में तेजी आ जाएगी। परन्तु आगे फसल पर अनाज मन्दा बिकेगा। ता. ७ दिस. पश्चिमे बुद्धोदय, रुई, घास, चारा, तिलहन, चावल, चांदी, गुड़, बिनौला में तेजी कारक।

''मंगसिर में बुध का उदय अथवा भृगु का अस्त।
तृण चारा कमती मिले बेचो पशु समस्त॥''

ता. ८ दिस. सुदी ४ का क्षय पक्ष में घी, दलहन आदि में जनरल लाईन तेज रहे। ता. १२ दिस. पू.षा. बुध दिन ८ में जनता में कोई खास बीमारी चले। सोना,चांदी में अच्छी मन्दी के झटके तो बिनौला तेज होगा। ता. १५ दिस. मूल धनु संक्रान्ति १५ मुहूर्ती बैठी स्थिति क्रूरवारी, खर्पर योग युक्त है। भारी तेजी कारक। इस संक्रान्ति काल में अनाज, गुड़, रस पदार्थ, लाल रंग की वस्तुएं आदि अन्य वस्तुओं में अच्छी तेजी चलने के योग हैं। तथा इस संक्रान्ति काल में कहीं भारी अग्निकाण्ड भी संभव है। संक्रान्ति का विशेष प्रभाव काल ४ से १३ जनवरी तक होगा। ता. ९ दिस. गुरुवारी पूनम-यदि आज रात को चन्द्रमा साफ दिखाई दे। अर्थात् बादल आदि न हों तो अनाज का स्टाक जार, निःसन्देह आगे लाभ दे।

पौष कृष्ण पक्ष-ता. २० दिस. विशाखा शुक्र रुई, चांदी, सरसों, चावल, सोना,में घटबढ़ से मन्दी के झटके दिन ८ में आयेंगे। ता. २४ दिस. बदी ५ मंगलवारी आज वर्षा होना शुभ संकेत है।

''मंगलवारी पंचमी पौष सदी बरसाय।
उत्तम वर्षा, उपज अति मन्दा धान्य बिकाय॥''

यदि वर्षा हो जाती है तब वैशाख महीने धान्य मन्दा बिके। ता. २८ दिस. बदी ९ शनिवारी-

''पौषी नौमी शनैश्चर का यदि जुरे समाज।
आर्द्रायां रवि तक संग्रहे करो अनाज॥''

के अनुसार आर्द्रा के सूर्य तक (२१ जून २००३ तक) जब भी अनाजों में मन्दी चले। स्टाक करके आगे बेचें। लाभ होगा।

आवश्यक सूचना-यह लेख ग्रहों के दृष्टि सम्बन्ध राशि परिवर्तन, वक्री-मार्गी, उदयास्त तिथि वार, नक्षत्र, योग, ग्रहों के नक्षत्र चरण परिवर्तन आदि अन्य महत्वपूर्ण योगों के आधार पर लिखा गया है। एक ही समय में एक योग तेजी का दूसरा योग मन्दी का हो तो संदेह में न पड़ें। बाजार रुख देखते हुए काम करना चाहिए। लाभ-हानि में हमारी कोई भी जिम्मेदारी नहीं रहेगी।

यह लेख बहुत ही संक्षेप में लिखा गया है। पूरा ब्यौरा, सिलसिलेवार पूरे वर्ष का जानने के लिए हमारे द्वारा प्रकाशित पुस्तक'' भविष्य फल सन् २००२ ई.'' को मंगाकर लाभ उठाएं। यह संवत् भारी उथल-पुथल वाला है। भारी लाभ देने वाले कई महत्वपूर्ण योग हैं। अतः व्यापार की उन्नति के लिए यह पुस्तक अवश्य मंगाकर पढ़ें। प्रकाशित हो चुकी है।

ज्योतिष शास्त्र के आधार पर बाजार भावों की तेजी-मन्दी के बारे में विश्लेषण एवं पूर्वानुमान से सम्बन्धित यह पुस्तक गत ५३ सालों से लगातार प्रकाशित की जा रही है। इस पुस्तक में वर्ष भर की दैनिक तेजी-मन्दी 'मासिक विश्लेषण' माल स्टाक करने के उचित मौके, माल खरीदने-बेचने की महत्वपूर्ण तारीखें (प्रत्येक मास की) अनाज, दलहन, बाजार, तिलहन बाजार, सरसों, सोना, चांदी सर्व धातुएं, शेयर्स, गुड़, खाण्ड, घी, रस पदार्थ, आलू, प्याज, लहसुन, हल्दी, रुई, पाट, बारदाना आदि वस्तुओं के स्पेशल चांस (वर्ष भर की लाइनें) महत्वपूर्ण कट लाईन लेख चांस आदि इस एक ही पुस्तक में अलग-अलग चैप्टर देकर प्रकाशित किया गया है। मूल्य १२५/- प्रति कॉपी तथा २५/- डाक खर्च व्यय अलग १५०/- होगा। रुपया मनीआर्डर पोस्टल आर्डर द्वारा ही भिजवाएं। समय पूर्व मंगा लें। ताकि उचित अवसर पर स्टाक आदि कर सकें।

हमारी दूसरी पुस्तक'' भविष्य भारती'' अर्धकाण्ड सम्बन्धी अद्भुत कविता पुस्तक (टीका सहित) जो कि हिन्दी दोहों के रूप में है। इस पुस्तक में ज्योतिष के योगा-योग (फार्मूले) आदि दिए गए हैं। मूल्य ४५/-डाक व्यय १५/- अलग होगा। पुस्तक वी.पी. से मंगाने के लिए ५०/- का मनीआर्डर भेजना आवश्यक है। दोनों पुस्तकों के लिए १७५/-का एम.ओ. भेजने पर डाक खर्च फ्री। १. भविष्यफल प्रकाश पुस्तक के लिए १२५/-का मनीआर्डर अग्रिम भेजने पर रु. १०/- की वी.पी. से पुस्तक भेजी जाएगी। यानी १५/-की बचत होगी। अपना पता साफ हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी भाषा में पिन कोड सहित लिखें। पत्र, मनीआर्डर केवल हमारे नए पते पर ही भेजें।

स्पेशल चांसों के लिए सम्पर्क करें। एक वस्तु की एक वर्ष की फीस रु. १५००/- होगी। अधिक जानकारी के लिए टेलिफोन नं. ०१२७४-२३९४७ पर सम्पर्क करें। त्रैमासिक या अर्धवार्षिक स्पेशल चांस नहीं भेजे जायेंगे। स्पेशल चांसों में सिर्फ महत्वपूर्ण अच्छी तेजी-मन्दी की लाईन ही दी जायेगी। दिन-प्रतिदिन की तेजी-मन्दी चाहने वाले स्पेशल चांस नहीं मंगाएं। इसके लिए पुस्तक'' भविष्य फल प्रकाश २००२ ई.'' का मंगाकर लाभ उठाना चाहिए।

लेखक-**श्रीरामावतार गुप्ता ''व्यापार भूषण''** राम उमराव सिंह मार्केट, आर्य समाज रोड,नजदीक नई सब्जी मण्डी (रेवाड़ी)-१२३४०१ (हरि.) फोन-०१२७४-२३९४७

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

संवत् २०५९ वि. तदनुसार सन् २००२-२००३ ई. में चन्द्र दर्शन का व्यापार पर प्रभाव

निर्देशन—डॉ. बसन्त लाल व्यास (ज्योतिष सम्राट) लेखक—पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा) सम्पर्क सूत्र-(०५६५) ८३३३५३, ८३३४९२

"शशिनि खलु कलंकः कंटक पद्मनालम्" अर्थात् चन्द्रमा में भी कलंक है। कमल की नाल में भी काँटे हैं। समुद्र अथाह है लेकिन जल खारा है। विद्वान जितना अधिक है, उतना ही निर्धन है। रत्नों में भी अनेक दोष देखे जाते हैं। यह तो विधाता का विधान है। निर्दोष तो भगवान शंकर पाये गये हैं। प्रिय सज्जनों मेरी अल्पबुद्धि से निर्णय किये "लघु ग्रन्थ" में दूषण होना जरूरी है। फिर भी विद्वानजनों से प्रार्थना है कि अगर आपको कोई दोष दिखाई दे तो मुझे सूचना अवश्य कर दें, जिससे सुधार हो सके। चन्द्रोदय का प्रभाव सिर्फ एक मास रहता है।

चैत्र—श्री संवत् २०५९ का नवीन व प्रथम चन्द्रदर्शन चैत्र शुक्ला द्वितीया रविवार को हो रहा है। यह चन्द्रोदय ३० मुहुर्ती है व उदित समय इसकी दक्षिण नौंक ऊंची होगी जो कि प्रत्येक जिन्स में तेजी कारक है व चन्द्रोदय अश्वनी नक्षत्र को हो रहा है। यदि चन्द्रमा पर रात्रि को कुण्डल (मण्डल) की आकृति हो तो अन्न का संग्रह करने पर लाभ होगा। शेयर बाजार में घटाबढ़ी से मन्दी का रुख रहेगा। लेकिन गुड़, तेल, सोना, चांदी में तेजी होगी, रुई के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी होगी व अनाज गेहूँ, जौ, बाजरा, दलहनों में मन्दी का रुख देखने को मिलेगा। तुष, धान्य वृद्धि, सरसों, अलसी, तिलहन, चीनी के भावों में तेजी होगी। शेयर बाजार मास प्रथम तेजी बनाकर मन्दी बनायेंगे। प्रजा में सुख, आरोग्यता का वातावरण बनेगा। राजनीति में परस्पर वाद-विवाद व प्राकृतिक प्रकोप से धन जन की हानि होगी। शीत के कोप में भी वृद्धि होगी, राजनेताओं में परस्पर क्लेश व जातिवाद, भाई, भतीजावाद व धर्मावाद जैसे कहीं-कहीं दंगे व बन्द, आन्दोलन, हिंसा, प्रदर्शन को विशेष बलदायक है। सोयाबीन, घी, सूत, वस्त्र, खाण्ड, शक्कर सर्पमुखी चाल से तेजी बनायेंगे।

वैशाख—वैशाख शुक्ला का नवीन चन्द्रमा १३ मई सन् २००२ सोमवार को हो रहा है, यह चन्द्रदर्शन कृतिका नक्षत्र व वृष राशि पर है अतः इसकी दक्षिण की नौंक ऊंची होगी "वृषेमासतिला" से सभी प्रकार के धान्य मूंग, उड़द, मोंठ, तिल, तेल, लोहा, गेहूँ, जौ, चना के भाव सर्पमुखी चाल से तेजी बनायेंगे व किसी-किसी जिन्स में विशेष चमक भी बनेगी। अफीम, सरसों, गुड़, खाण्ड के भाव भी तेज रहेंगे। यह चन्द्रोदय सोमवार को हो रहा है। जो वस्त्र, रुई, सूत, सोना, रंगों में तेजी व रुई के भाव घटाबढ़ी से मन्दे होंगे व चन्द्रदर्शन व्यापारियों को अन्न संग्रह का भी निर्देशन देता है अतः अन्न के भावों में मन्दी आयेगी, व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें व चन्द्रोदय अल्प वर्षा, प्राकृतिक प्रकोप का भी निर्देशन दे रहा है। प्रजा में सुख-दुख की समानता व किसी बड़े यातायात व अग्नि, बमकांड से जन-धन की क्षतिकारक भी है।

ज्येष्ठ—२२ जून सन् २००२ ई. बुधवार को ज्येष्ठ मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। उदित समय इसके दोनों शृंग शूल (नौंक) के समान होंगे "व्याधि चोरभयं शूले" से व चन्द्रदर्शन मृगशिर नक्षत्र, बुध योग से यह भी तेजी कारक है। चांदी, सोना, सूत, सूती, रेशमी, ऊनी वस्त्र, सरसों, घी, तेल के भाव तेज परन्तु सोना, चांदी, खाण्ड, गुड़ के भाव घटाबढ़ी लेते रहेंगे। गेहूँ, जौ, चना, उड़द, अरहर, बाजरा के भावों में गिरावट बनेगी। यदि उस दिन सूर्यास्त के बिन्दु से उत्तर की ओर नया चन्द्र अस्त हो तो वर्षा उत्तम, धान्य मन्दे, प्रजा में सुख, दक्षिण की ओर हो तो वर्षा का अभाव, दुर्भिक्ष, प्रजा को बेहद कष्ट और यदि मध्य में हो तो वर्षा मध्यम रूप से होगी (अर्घमार्तण्ड) से। चोर, तस्करों, आतंकी गतिविधियों में वृद्धि, गर्म हवा, चेचक, हैजा, खसरा, ज्वर आदि का प्रकोप भी देखने को मिलेगा। यदि चन्द्र की कुंडल की आकृति का रंग सफेद हो तो वर्षा व रक्त वर्ण हो तो वर्षा में कमी कारक है चौपाये पशुओं को कष्ट, जायफल, लौंग, दालचीनी के भावों में मन्दी व शेयर बाजार में भी विशेष उतार चढ़ाव, रसायन पदार्थों में तेजी राज्य व केन्द्र में आंशिक फेरबदल, पदत्याग आदि घटनायें घटित होंगी।

आषाढ़—११ जुलाई सन् २००२ को आषाढ़ शुक्ला का चन्द्रदर्शन हो रहा है। चन्द्रदर्शन गुरुवार पुष्य नक्षत्र में हो रहा है जो दो या तीन के अन्दर वर्षाकारी होता है। चन्द्रदर्शन के समय इसका रंग पीत और दोनों शृंग समान होंगे "अनावृष्टि कर्क राशी" से अनावृष्टि कारक भी है। अतः रुई, सूत, सूती व ऊनी, रेशमी वस्त्रों, सरसों, घी, तेल, दूध, दही, चीनी के भाव तेज रहेंगे। सोना, चांदी, गुड़, खाण्ड के भाव बीच में तेजी का झटका लेकर स्थिर रहेंगे व "पुष्य नक्षत्रे" संयोग से यह अनाजों के भावों में मन्दी कारक भी है व वर्षा कारक है परन्तु कहीं-कहीं वर्षा की अधिकता से हानि, राजनीतिज्ञों में आरोप, प्रत्यारोप, प्रजा में बन्द, आन्दोलन व बिजली, जल, समस्याओं में वृद्धि बने "सगुन" उदित समय यदि कुण्डल की एक नौंक दूर हो तो वर्षा में वृद्धि कारक है।

श्रावण—१० अगस्त सन् २००२ को श्रावण मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन मघा नक्षत्र, शनिवार व सिंह राशि गत हो रहा है। उदित समय वर्ण पीत व आकृति कुण्डल के समान होगी। अतः चौपाये पशुओं को कष्ट, गेहूँ, जौ, चना के भावों में तेजी बनेगी, कुछ खाद की जिन्सों, अफीम के भावों में तेजी बनेगी। दालवाना के भाव भी चमक बनाकर स्थिरता को बल देंगे। शनिवार योग से रुई, सूत, वस्त्र, सरसों, मूंगफली, घी, तेल के भावों में भी तेजी को बल मिलेगा। शेयर, सरसों, तिलहन, शेयर, गोला, गुड़, खाण्ड, चीनी, मैदा, सूजी, खाण्ड व फलों के भाव भी घटाबढ़ी से तेजी बनायेंगे। विशेष—कार्यालय से रिपोर्ट मँगाकर जानकारी लें।

भाद्रपद—८ सितम्बर सन् २००२ ई. सोमवार को भाद्रपद मास का नवीन चन्द्रमा उदय हो रहा है। यह चन्द्रदर्शन रविवार, उत्तरफाल्गुनी, कन्या राशि गत हो रहा है, जो कि प्रत्येक व्यापारिक जिन्सों में तेजी कारक है। लेकिन ओवरेज के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी, वस्त्र, रुई, सोना, सूत के भावों में तेजी बनेगी। जौ के भावों में गिरावट बने लेकिन गेहूँ, ज्वार, बाजरा, उड़द, चना, मूँग, मटर, गुड़, खाण्ड, चीनी के भाव तेजी बनाकर स्थिरता को बल देंगे लेकिन रुई के भावों में अच्छी घटाबढ़ी का योग है। अतः व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें। चन्द्रदर्शन वर्षा में वृद्धि कारक है व प्रजा में धार्मिक व मांगलिक कार्यों में वृद्धि होगी लेकिन "चतुष्पदा" से यह चन्द्रदर्शन रोग, उपद्रव, आन्दोलन व नित्य नयी समस्याओं को भी वृद्धि कारक है।

आश्विन—८ अक्टूबर सन् २००२ मंगलवार को आश्विन मास का नवीन चन्द्रदर्शन हो रहा है। यह चन्द्रोदय स्वाति नक्षत्र तुला राशिगत हो रहा है, उदित समय वर्ण श्वेत व दोनों शृंग समान होंगे। अतः यह सभी व्यापारिक जिन्सों के भाव आंशिक घटाबढ़ी लेकर स्थिरता को मान करेंगे। चन्द्रदर्शन मंगल संयोग से गेहूँ, जौ, चना, उड़द, मूंग, मसूर, जौ, बाजरा के भावों में तेजी का रुख रहेगा। बीच में भावों में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी, लेकिन स्थिर नहीं। रुई प्रथम मन्दी बनाकर तेजी बना लेगी। सोना, चांदी घटाबढ़ी से तेजी, गुड़, सरसों, मूंगफली के भावों में तेजी रहेगी। लवणादि, क्षार वस्तु, तिल, तेल, सरसों, रुई, चांदी तेज व चना, जौ, गेहूँ में मन्दी का झटका लगेगा। घी, तेल भी तेज रहेंगे। प्रजा में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। मौसम में परिवर्तन, पशु-पक्षी, विप्र वर्ग व शिक्षक, उपासकों को कष्ट का सामना करना पड़ेगा।

कार्तिक—१५ नवम्बर सन् २००२ ई. को कार्तिक मास के नवीन चन्द्रमा के दर्शन होंगे। उदित समय वर्ण श्वेत व आकृति टेड़ी व उत्तर की ओर की नोंक ऊंची होगी जो कि व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी कारक है। यह चन्द्रदर्शन अनुराधा नक्षत्र और बुधवार वृश्चिक राशिगत हो रहा है अतः गुड़, खांड व अनाजों के भावों में मन्दी कारक है। चांदी, सोना, रुई, सूत, ऊनी वस्त्र, तिल, लौंग, जायफल, सन, बारदाना, जूट, खाण्ड के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी का रुख देखने को मिलेगा। अलसी, सरसों, सोयाबीन, तिलहन के भावों में भी आंशिक घटाबढ़ी चलेगी। अरहर, इत्र, तेल व किराना, बारदाना के भावों में भी गिरावट का योग है।

मार्गशीर्ष—६ दिसम्बर सन् २००२ को मार्गशीर्ष (अगहन) मास के नवीन चन्द्रमा के दर्शन होंगे। उस दिन गुरु भी वक्री हो रहे हैं व चन्द्रदर्शन शुक्रवार व मघा नक्षत्र में हो रहा है। अतः आकृति टेड़ी, वर्ण श्वेत होगा "धनुर्मकर्या" से चन्द्रदर्शन शुभ है जो कि सरसों, तिल, तेल, गेहूँ, चावल, उड़द, ककुनी, चना, ऊनी

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

वस्त्र, ऊन में मन्दी का रुख बनायेगा। शेयर, सोना, चांदी के भाव घटाबढ़ी से चलेंगे व अन्त में तेजी का रुख देखने को मिलेगा। अफीम, भांग, चरस, तम्बाकू, सिगरेट के भाव तेज व अन्नों के भावों में मन्दी होगी।

पौष—४ जनवरी सन् २००३ को पौष मास के नवीन चन्द्रदर्शन होंगे। यह चन्द्रदर्शन उ.षा. नक्षत्रगत व शनिवार को हो रहा है अत: अफीम, किराना, घोड़ा, खच्चर, सोना, चांदी, लोहा, आयरन, शेयर, रसायन पदार्थ, मटर, मूंग, मेवा, घी के भाव प्रथम मंदी का झटका लेकर तेजी का मान करेंगे, रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, चना, सरसों, मूंगफली, गेहूँ, जौ, ज्वार, बाजरा में तेजी, किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी का रुख देखने को मिलेगा व उदित समय वर्ण श्याम (काला) व दोनों शृंग सम होंगे।

माघ—३ फरवरी सन् २००३ सोमवार को माघ मास के नवीन चन्द्रमा के दर्शन होंगे। यह चन्द्रदर्शन शतभिषा नक्षत्र व सोमवार को है। अत: रंग काला, शृंग समान होंगे जो कि प्रत्येक वस्तु में घटाबढ़ी लेकर भावों में समानता को बल देते हैं। वस्त्र, रुई, सूत, सोना, रंग में तेजी व चांदी, रुई में घटाबढ़ी से मन्दी, अन्नों व शेयरों के भावों में भी मन्दी का रुख होगा, पश्मीना ऊन, रुई, कपास में तेजी, प्रजा में सुख-दुख की समानता रहेगी।

फाल्गुन—१३ मार्च सन् २००३ को फाल्गुन मास के नवीन चन्द्रमा के दर्शन होंगे। यह चन्द्रदर्शन बुधवार पू. भाद्र नक्षत्र में हो रहा है। जो कि चांदी, रुई, गुड़, घी, तेल, सरसों में तेजी कारक है। अनाजों के व शेयरों के भावों में भी घटाबढ़ी से तेजी बनेगी। बारदाना, जूट, सूती वस्त्र, सन में मन्दी का रुख रहेगा। शासक वर्ग प्रजा के हित में नवीन योजनायें लागू करेगा। दूध, दही उत्पादन में वृद्धि कारक है।

विशेष—आप अपने नगर गाँव में द्वितीय चन्द्रमा उदयकाल में स्वयं देखें और ज्योतिष की देन का लाभ उठाकर औरों को लाभ दें। उदयकाल चन्द्रमा का भौम उच्च हो, चन्द्रमा नाव के समान हो तो नाविकों को पीड़ा, समुद्रीय दुर्घटनायें हों, चन्द्रमा का सींग आधा उठा हो तो किसानों को कष्ट, फसलों में हानि, भ्रष्टाचारी, चोर, शासनकर्त्ताओं को सुख प्राप्त हो। दक्षिण सिंग आधा ऊंचा हो तो पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, कश्मीर में उत्पात, पुलिस द्वारा जनता को कष्ट हो। चन्द्रमा समान भाव में उदय हो तो सुभिक्ष, अच्छी वर्षा, सुख प्राप्त हो। चन्द्रमा दण्ड के समान उदय हो तो गाय, बैल, पशुओं को रोग, शासन द्वारा जनहित की उपेक्षा, स्वार्थ बल मिले। धनुष के आकार का चन्द्रमा उदय हो तो जनता को कष्ट, ग्रह भय हो, सिंहयादि दक्षिण को फैला हो तो ऐसे चन्द्रमा से भूचाल, प्राकृतिक प्रकोप हानि। यदि सिंग दक्षिण को ऊँचा हो तो व्यापारी को कष्ट, वर्षा का अभाव हो जाता है। चन्द्रमा सींग नीचे को मुँह वाला हो, उपज पशुचारा के विनाश, पशुओं को कष्ट रोग हो। चन्द्रमा के चारों ओर गोलाकार रेखा हो तो शासन में परेशानी, मंत्रियों में परिवर्तन, राष्ट्रपति शासन हो, यदि उत्तर सींग ऊंचा हो तो प्रजा को सुख, चन्द्रमा को सुख। चन्द्रमा एक सींग वाला, चीते के शृंग वाला, सींग रहित हो तो महान पुरुष की मृत्यु, पद त्याग होता है। चन्द्रमा छोटा हो तो दुर्भिक्ष, मध्यम हो तो प्राणियों को कष्ट, बड़ा चन्द्रमा हो तो सुभिक्ष, मुद्रक (ढोलक) के समान हो तो सुभिक्ष कारक, अत्यन्त विशाल हो तो शासक जनता से सुख, सुन्दर चन्द्रमा उदय हो, धन धान्य की उत्तम पैदावार, भावों में मन्दी बने।

विशेष—व्यापार भविष्य चन्द्रोदयगत है, पर्व में प्रत्येक वस्तु का स्टाक तेजी, मन्दी व्यापार रुख, अंक जाल से लाटरी लगाना, ग्रह दशा, व्यापार भविष्य ८१/-रु. प्रत्येक वस्तु के मासिक चांस ८१/-रु. एक वस्तु तीन मास अथवा तीन वस्तु एक मास २५१/-रु., छ: मास ५५१/-रु., वर्ष के लिए १००१/-रु., अंक जाल से सप्ताह के भाग्योदय अंक ५०/-रु., एक मास ५१/-रु., तेजी-मन्दी दीपिका ५१/-रु., आपके परिवार के सभी व्यक्तियों के वर्ष का राशिफल ५१/-रु., राशि का यंत्र अथवा राशि मंत्र अथवा राशि यंत्र की अंगूठी ५१/-रु., गोमेद, नीलम, मूंगा की अंगूठी रत्न भाग २०६/-रु., दक्षिणी शंख लक्ष्मी साधना २५५/-रु., छ: इंच ७००/-रु., एकमुखी तथा सभी मुखी रुद्राक्ष प्राप्त कर धन, यश मान तथा सुख प्राप्त करें। सभी पत्र आज ही मुफ्त मंगायें। रकम पेशगी भेजें।

पता—श्री अम्बा व्यापार भविष्य कार्यालय, राया मथुरा (उ.प्र.) दूरभाष—(0565) 833353, 833492

सन् २००२ ई. का वार्षिक भविष्य

व्यापारिक जिन्सों की तेजी-मन्दी लाईनों का ब्यौरा

निर्देशन—डॉ. वसन्त लाल व्यास (ज्योतिष सम्राट) ले. पं. अनिल कुमार व्यास,
श्री अम्बा ज्योतिषपीठ, राया (मथुरा) उ.प्र.-२८१२०४
सम्पर्क सूत्र—(०५६५) ८३३३५३, ८३३४९२

जनवरी—यह मास पौष कृष्ण ३ बुधवार से प्रारंभ होकर माघ कृष्ण ३ गुरुवार तक रहेगा। ता. २ जन. आर्द्रा गुरु वक्री हो रहे हैं। किराने की वस्तु, पीतल, सोना, चांदी, आयरन शेयरों में तेजी का मान होगा। पशुओं के मूल्यों में आठ महीने तक तेजी का योग है। ता. ६ बुध श्रवण नक्षत्र में प्रवेश कर रहे हैं जो दस दिन के अन्दर गुड़, खांड, अलसी, चना, चावल, चांदी में तेजी का मान करेंगे। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी का योग, ता. १० उ.षा. के सूर्य उड़द, मूंग, चावल, चना, गेहूं, गुड़, खांड, लाल शक्कर, चमड़ा, सरसों, मूंग के भावों में तेजी का योग है। इसी दिन मंगल भी मीन राशि में प्रवेश कर रहे हैं। जो चांदी में घटाबढ़ी से तेजी लायेगा। सोना, लकड़ी, फर्नीचर, तृण, रुई, काष्ठ में तेजी। चौपाये पशु तेज। सर्दी का प्रकोप, हिमपात, कोहरा व बर्फ से फसलों में भारी हानि। वृद्ध जनों को कष्ट। ता. १४ जन. को सूर्य ९।५४ पर मकर राशि में प्रवेश कर रहे हैं जो घी, तेल, अलसी, गुड़, शक्कर, गेहूं में घटाबढ़ी से मन्दी। चांदी, जौ, चना, चावल, अलसी, मैथी, केसर, पोस्त व कपास में तेजी। मिर्च, गेहूं, गुड़, ऊनी व सूती वस्त्रों में मन्दी का योग, कोयला, लकड़ी, पत्थर के भावों में प्रथम तेजी व बाद में मन्दी। ज्वार, बाजरा, मक्का, मसूर, अरहर के भाव घटाबढ़ी के साथ स्थिरता को बल देंगे जो व्यापारी बैल, गाय, भैंस, घोड़ा, पहले महीने खरीदकर बाद में बेचें तो अच्छा लाभ मिले। ता. २२ को शुक्रदेव श्रवण नक्षत्र में प्रवेश कर रहे हैं। जो रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी से तेजी। अनाजों के भावों में गिरावट, तिल, तेल, जौ, चावल, सूत, सन, सोना, लौंग, सुपाड़ी, नारियल में १४ दिनों के अन्दर घटाबढ़ी से भावों में चमक बनें। किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी शेयरों के भावों में भी घटाबढ़ी से तेजी बनेगी। अत: रुख देखकर कार्य करें। ता. ३० जननवरी बुध वक्री हो रहे हैं जो घी, गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी का योग व गेहूँ, जौ, चना, उड़द व किराना के भावों में घटाबढ़ी से आंशिक गिरावट का योग है। विशेष—कार्यालय से रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

फरवरी—यह मास माघ कृष्ण ४ शुक्रवार से प्रारंभ होकर फाल्गुन कृष्ण १ गुरुवार तक रहेगा। माघ मास में पांच मंगलवार हैं अत: फल सुख-दुख के साथ-साथ मिला जुला रहेगा। अग्निकांड, रेलयान दुर्घटना का भी योग है। शीतलहरों का प्रकोप रहेगा व झगड़ों, फसाद, आन्दोलन, बन्द, प्रदर्शनों को बल मिलेगा। ता. १ शुक्र देव धनिष्ठा में पदार्पण कर रहे हैं। जो चावल, मूँग, मोंठ, बाजरा, चांदी, सोना, रुई, कपास में तेजी को बल देंगे, गेहूँ के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी। ता. ७ कुम्भ में शुक्र व ८ को शनि मार्गी व ९ को बुधदेव मार्गी हो रहे हैं जो रुई, चांदी, गुड़, शक्कर, गेहूँ, जौ, चना, मूँग, बाजरा, शेयरों के भावों में घटाबढ़ी से भावों में गिरावट को बल देंगे व सरसों में भी मन्दी का योग, रुई, चांदी, घी में प्रथम भाव में तेजी बनकर मन्दी की ओर झुकाव रहेगा। अत: व्यापारी वर्ग बुद्धि विवेक व बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. १२ को सूर्य देव कुंभ राशि में प्रवेश करके गेहूँ, चावल, मटर, उड़द, मूंग, लकड़ी, कोयला, सूत, कपास में तेजी। घी, मक्का, ज्वार, बाजरा, अरहर, लोबिया, रमास, मसूंठ, ऊन, रेशम के भावों में गिरावट। तिल, तेल, जीरा, अलसी, सरसों, लाल पदार्थ, लौंग, जीरा, काली मिर्च, इलाईची के भावों में समता को बल मिलेगा। ता. २० मेष के मंगल योग से गेहूँ व प्रत्येक अनाजों की जिन्सों में मन्दी का मान होगा। सोना, चांदी, शेयर, मूंगा, मोती, रत्न, ऊन, रुई, कपास, बारदाना, गुड़, रसादि पदार्थों में तेजी का योग। किसी-किसी जिन्स में दो सप्ताह तक विशेष चमक बनेगी। ता. २८ को गुरु मार्गी हो रहे हैं जो प्रजा में सुभिक्ष व अनाजों के भावों में मन्दी का योग।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

मार्च—यह मास फाल्गुन कृष्ण २ शुक्रवार से प्रारंभ होकर चैत्र कृष्ण ३ रविवार तक रहेगा व फाल्गुन मास में पंच गुरु योग से मास फल उत्तम है। ता. ३ मार्च शुक्र मीन राशि में प्रवेश कर रहे हैं।'मीन राशि गते शुक्रे' से सुभिक्षकारी योग है। अनाज, सरसों, तिल, तिलहन, अलसी, गुड़, खांड, अरण्डी आदि में मन्दी कारक है। जनरल लाईनों में गिरावट बनेगी व बाजार रुख में मासान्त तक करीब-करीब व्यापारिक वस्तुओं में मन्दी की ओर ही झुकाव रहेगा व ता. ७ को बुध कुंभ राशि में योग से अलसी, राई, चांदी में मन्दी का मान होगा परन्तु, गुड़, खांड, सोना, अनाजों के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. १४ मीन संक्रान्ति से गेहूँ, जौ, चना भाव प्रथम तेजी बनाकर मन्दी का मान करेंगे। ज्वार, बाजरा, गेरू, राई, सरसों, इलायची, नीला थोथा के भाव सम रहेंगे। घी, उड़द, मूंग, मटर, नमक, मिर्च, हल्दी, धनियां, तिल, तेल, अलसी, कपास, ताम्बा, पीतल, लोहा के भावों में तेजी का मान होगा, सोना, चांदी, नारियल, केसर, खोपरा, छुआरा, मेवा, जायफल, बैल, बकरी के भावों में मन्दी। इस संक्रान्ति में जो व्यापारी गिरे भावों में माल खरीदकर अगली संक्रान्ति में बेचें तो लाभ। ता. २० मार्च पू. भा. के बुध योग से, सोना, चांदी, आयरन, शेयर, अनाजों व रुई के भावों में घटाबढ़ी का मान होगा। ता. २६ को बुध मीन राशि में प्रवेश कर शुक्र के साथ संयोग बनायेंगे। अत: बाजार रुख में मन्दी का मान। शेयरों के भावों में भी मन्दी का मान होगा। कुछ अच्छी मन्दी के झटके भी लग सकते हैं। व दस दिन के अन्दर, अलसी मन्दी, गुड़, खांड, सोना, चांदी, तेल, सरसों, सोंठ, धातुवाना, जौ, चना, उड़द, मूंग, मोंठ में मन्दी। किसी-किसी में अच्छी मन्दी के झटके। अत: बुद्धि चातुर्य से कार्य करें। ता. ३० मार्च गेहूँ, मूंग, चावल, राई, सूती वस्त्र में प्रथम भाव में तेजी आकर मन्दी का मान होगा।

अप्रैल—यह मास चैत्र कृष्ण ४ सोमवार से प्रारंभ होकर वैशाख कृष्ण ४ मंगलवार तक रहेगा तथा मास फल साधारण है। मास के प्रथम कहीं-कहीं हिमपात, ओलाबारी का भय व परिणाम स्वरूप फसलों में हानि। ता. ४ वृष राशि में मंगल का प्रवेश सूर्य साथ योग भी तेजी को सपोर्ट करेगा। गुड़, गेहूँ, जौ, अनाज, मूंग, मोंठ, अलसी, तिल, तेल, वारदाना, सरसों, लाल मिर्च, सोना, चांदी, धातु व प्रमुख शेयर में तेजी। सूर्य योग से एक मास के अन्तर्गत अच्छी तेजी का संचार होगा। ता. १० दूध, घी, मोंठ, चांदी में मन्दी का झटका, गेहूँ, जौ, चना, शेयर, तिल, तेल, गुड़ में मन्दी, पशु महंगे। ता. ३ नूतन संवत्सर २०५९ सभी व्यापारिक भाईयों को शुभ मंगलमय हो व मेष संक्रान्ति भी इसी दिन है। अत: जौ, धान्य, हाथी दांत, लाख, मोम, मजीठ, सिन्दूर, केसर के भावों में तेजी का संचार होगा। ता. १७ कृति. शुक्र योग से जौ, चावल, हींग, तिल तेल, तिलहन, तेल सरसों, रुई, सूत, वस्त्र, चांदी, सोना हीरा, जवाहरात के भावों में मन्दी का संचार होगा। ता. २१ शुक्र वृष राशि में प्रवेश कर रहे हैं। ''भृगुपुत्रे वृष स्थित्वा सुभिक्ष'' से रुई, कपास, वारदाना, सोना, चांदी, अनाजों में मन्दी का मान होगा। मंगल+शुक्र योग से मन्दी की अपेक्षा तेजी की सम्भावना अधिक रहती है। अत: व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. २५ अप्रैल वृष बुध योग से सभी व्यापारिक जिन्सों में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। गेहूँ, जौ, चना, चावल, मटर, कपास, सूत, अफीम, तिल तेल के भावों में तेजी का योग। ता. २८ रोहिणी शुक्र योग से सोना, चांदी, शेयर, अरण्ड, दाख, छुआरा, सुपाड़ी, ऊन, नारियल में मन्दी। अफीम, गांजा के भावों में तेजी व सोना, सभी धातुयें, तिल तेल तेज व कर्क राशि में गुरु प्रथम भावों में अनाज संग्रह से लाभ। गुड़, खांड, घी के भावों में तेजी।

मई—यह मास वैशाख कृष्ण ५ बुधवार से प्रारंभ होकर ज्येष्ठ कृष्ण ५ शुक्रवार तक रहेगा व मास में वृष राशि पर बुध+शनि व मंगल+राहू+शुक्र योग से ''एक राशौ यदा यादि चत्वार पंच खेचरा:'' से पृथ्वी पर भयंकर वर्षा, युद्ध, जन संहार से भारी कष्ट। पशुओं का व्यापक संहार हो। ता. ४ मई रुई, सूत, वस्त्र, सोना, चांदी, ताम्बा, जस्ता, पीतल, शेयर के भावों में मन्दी। राई, गुआर, सन, ऊनी वस्त्र, चावल, चांदी में घटाबढ़ी, रुई प्रथम भाव गिरकर उठे। ता. ९ मई को मृग. में शनि मंगल का प्रवेश से तिल, चाँदी में तेजी अन्य व्यापारिक वस्तुओं का झुकाव मन्दी की ओर रहेगा। रुई, सोना में घटाबढ़ी चले। ता. १४ गेहूँ, धान्य, फल, मेवा, रुई, सूत वस्त्र, गुड़, खांड, घी, मजीठ, कुसंभा व किराने के भावों में तेजी। ता. १५ मिथुन राशि में शुक्र योग से ''मिथुने च यदा शुक्रो'' के अनुसार गेहूँ, जौ, चना, चावल आदि में तेजी। कुछ विशेष तेजी के झटके भी आ सकते हैं। किन्तु रुई, सूत, कपास, पाट, वारदाना, अरण्डी, तिल तेल, अरहर, गुयार आदि में मन्दी कारक है। अत: दस दिन तक बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. १९ को शुक्र मंगल का राशि योग भी बन रहा है। अत: अनाज, घी, तिलहन, पदार्थों में तेजी के झटके आयेंगे। ता. २२ को शनि अस्त हो रहे हैं जो कि व्यापारिक जिन्सों में घटाबढ़ी का योग बनायेंगे व गेहूँ व अन्य अनाजों के भावों में अकस्मात् मन्दी का वातावरण बनेगा। अत: व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें व लाभ के लिये तेजी मंदी की मासिक रिर्पोर्ट मंगाकर लाभ लें। ता. २८ रुई मन्दी, सोना, चांदी में घटाबढ़ी, खाद्य पदार्थों में तेजी, सुगन्धित द्रव पदार्थों व रसीले पदार्थों दूध, दही, घी के भावों में तेजी का मान होगा। सोना, चांदी, रत्न पदार्थ, नारियल, लौंग, मोती के भावों में घटाबढ़ी से तेजी का संचार होगा।

जून—यह मास ज्येष्ठ कृष्ण ६ शनिवार से प्रारंभ होकर आषाढ़ कृष्ण ५ रविवार तक रहेगा व फल उत्तम है। एकादशी रवियोग खण्डवृष्टि कारक है। अत: मास में सूर्य के ताप में अधिकता बनेगी, गर्म हवा, लू, गर्मी आदि का प्रकोप रहेगा। चौपाये पशुओं को कष्टदायक है। ता. ३ जून रुई में मन्दी व अनाजों के भावों में तेजी का योग है। ता. ५ बुध उदय से अतिवृष्टि व प्रजा में भय व बीमारियों का प्रकोप बढ़ेगा। ता. ९ शुक्रदेव कर्क राशि में प्रवेश कर रहे हैं। ''दैत्य गुरुर्यदा कर्के रसानां'' के अनुसार रस पदार्थ घी, सोना, चांदी, रुई, सूत, पाट, वारदाना, अनाज, चना, मटर, अरहर, अलसी में तेजी कारक है। तिलों का नाशकारक है। ता. १५ जून गेहूँ, जौ, चना, मटर, उड़द व अन्य अनाजों के भावों में घटाबढ़ी से तेजी। ता. १७ सप्ताह के अन्दर कपास, रुई, सूत, सोना, चांदी, तिल तेल, चावल, नमक, गुड़, खांड में तेजी का योग बनेगा। राई, टुआर, सन, ऊनी व रेशमी वस्त्रों के भावों में मन्दी का योग। नमक, रुई, घटाबढ़ी से चमक बनायेंगे। ता. २२ जून को सूर्यनारायण आर्द्रा नक्षत्र में प्रवेश कर रहे हैं जो रुई, सूत, कपास, खल, अलसी, अरंड, मोती, गेहूँ, चावल, चना, जौ, चांदी के भावों में तेजी बनेगी। सोने के भावों में घटाबढ़ी अधिक चलेगी। लेकिन आर्द्रा, शुक्र योग से अनाज के भावों में मन्दी का अकस्मात् झटका भी लगेगा। अत: व्यापारी वर्ग बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. २६ रुई, सोना, चांदी, कपास, शेयर के भावों में घटाबढ़ी का योग, कपास व अनाजों के गिरे भाव सुधार की मांग करेंगे। ता. २७ को शनि उदय हो रहे हैं। जो गुड़, खांड, शक्कर, अनाज, घास, लकड़ी, हरी सब्जियों के भावों में तेजी बनेगी व मासान्त में चांदी, गेहूँ, तिल, सरसों, उड़द में घटाबढ़ी से मन्दी बने।

जुलाई—यह मास आषाढ़ कृष्ण ६ से प्रारंभ होकर श्रावण कृष्ण ७ बुधवार तक रहेगा। ता. ४ बुध मिथुन राशि में व मंगल कर्क राशि में प्रवेश कर रहे हैं ''भूमि पुत्रो यदा कर्कों'' से गेहूँ, अनाज, गुड़, शक्कर, खांड में तेजी, रुई, सोना, सरसों, तारामीरा में घटाबढ़ी से मन्दी बनेगी। सरसों, अरण्ड, अलसी के भावों में मन्दी बनेगी। ता. ९ सोने में अच्छी तेजी। चांदी में घटाबढ़ी चौपाये पशुओं के भावों में तेजी, रुई, सोना, चांदी, गुड़, खांड, शक्कर, कपास, बिनौला, सरसों, लाख, देवदार, तिल, ज्वार, मोंठ, बाजरा, उड़द, नमक, सुपारी, नारियल, सोंठ, गुग्गल, सुगन्धित पदार्थों के भावों में तेजी बनेगी। ता. १६ गेहूँ, जौ, चावल, शेयर, अन्न व गुड़, तेल, घी के भावों में तेजी बनेगी। ता. १९ जुलाई रुई में करीब १५ टके की मन्दी, चांदी में घटाबढ़ी से २ टके की तेजी। रसीले पदार्थ, गुड़, दूध, मूंगफली, घी, सरसों, सोना प्रथम तेजी लाकर मन्दी बना लेंगे। सफेद वस्त्रों के भावों में मन्दी। गेहूँ, जौ, अनाज, किराना, दालवाना के भाव सम रहेंगे। ता. २३ रुई, सूत, रेशम, सन, कपूर, कस्तूरी, चन्दन, सोना, चांदी, उड़द, मूंग, मोंठ, चना, बाजरा, अलसी, जलोत्पन्न पदार्थ नारियल, सिंघाड़ा आदि के भावों में व सभी फलों के भावों में तेजी बनेगी। ता. २६ से १५ दिन के अन्दर तिल, तेल, सरसों, गुड़, खांड, उड़द, मूंग, मूंगफली के भावों में सुधार होकर तेजी बनेगी। ता. २९ जुलाई गेहूँ, जौ, चना व दलहनों के भावों में सुधार बनकर तेजी का मान होगा व सोना, चांदी के भावों में घटाबढ़ी चले। विशेष—रिर्पोर्ट मंगाकर लाभ लें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अगस्त— यह मास श्रावण कृष्ण ८ गुरुवार से प्रारंभ होकर भाद्रपद कृष्ण ८ शनिवार तक रहेगा। ता. १ अगस्त को बुध सिंह राशि में व शुक्र कन्या राशि में प्रवेश कर रहे हैं "सिंहे राशो बुधौ" व "कन्या राशि गते शुक्रे" से नारियल, मजीठ, कुसुम्भा, लाल द्रव्य, तिल तेल, अरण्डी आदि तिलहन पदार्थों में तेजी बनेगी। चावल, शाल, गुड़, रेशम, चांदी में विशेष तेजी के झटके "श्रावण मासे पंच जीवां यदा भवेत्" से जनता में रोग की वृद्धि, राजनीति में परस्पर फूट व कलह का वातावरण बनेगा। ता. ३ दो सप्ताहंत तक सोना, चांदी, रुई, बिनौला, गेहूँ, चावल, उड़द, चना, गुड़, शक्कर, घी, तेल, सरसों, अरण्ड, अलसी, मिर्च, मजीठ, नील के भावों में तेजी, किसी-किसी जिन्स में विशेष तेजी के झटके आयेंगे। ता. १० गुड़, खांड, गेहूँ, अनाज के भावों में आंशिक मन्दी के झटके लगेंगे, अन्न के संग्रह से लाभ, सोना, चांदी के भाव तेज, गुड़, शक्कर, चीनी, चावल में विशेष घटाबढ़ी चले। ता. १६ अगस्त "सिंहगते दिनपतौ" से गुड़, खांड, शक्कर, तेल, सरसों, अंडी के बीज, रत्न, शेयर में तेजी व शुक्र योग से घटाबढ़ी से तेजी बनेगी। गेहूँ, जौ, चना व अनाजों के भावों में गिरावट का योग है। अतः व्यापारी बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. २१ रुई, चांदी के भावों में मन्दी। गेहूँ, जौ, चना, गुड़, खांड, शक्कर, हल्दी के गिरे भाव सुधार बना लेंगे। ता. २४ अगस्त सोना, चांदी व अनाजों के भाव घटाबढ़ी से स्थिरता को बल देंगे। ता. २६ रुई, सोना, चांदी में घटाबढ़ी, अनाज में मन्दी। गुड़, शक्कर, नमक, तेल, घी के भाव में तेजी। ता. २९ अगस्त अनाज के भावों में गिरावट व सप्ताहंत तक रेशम, सोना, चांदी, गेहूँ, जौ, चना, उड़द, चावल, ज्वार, बाजरा, सरसों, तिल, तेल, नमक, गुड़, खांड, पीपलामूल, शेयर, रुई के भावों में तेजी बनेगी। विशेष रिपोर्ट मंगाकर लाभ लें।

सितम्बर— यह मास भाद्रपद कृष्ण ९ रविवार से प्रारंभ होकर आश्विन कृष्ण ८ सोमवार तक रहेगा। मास प्रारंभ १ महीने के अन्दर रुई, चांदी, अफीम तेजी लेकर मन्दी बना लेंगे। सोने में १ टका तेजी। चांदी में २-३ की घटाबढ़ी, गुड़, खांड, शक्कर में भी तेजी का वातावरण बनेगा व अनाज, दालवाना, धान्य, शेयर के भावों में घटाबढ़ी से तेजी बनेगी। ता. ४ सभी व्यापारिक जिन्सों व शेयरों व धातुवाने में तेजी का वातावरण देखने को मिलेगा। ता. ८ सितम्बर १ सप्ताह तक गुड़, खांड, शक्कर में तेजी व अनाजों के भावों में गिरावट बनेगी। ता. १३ रुई, कपास, रेशम, सूत, सोना, लोहा, घी, तेल, अलसी, घी, तेल, बांस, सरसों, अरण्ड, चावल, उड़द, ज्वार, सुपारी, नारियल, मूंज, बांस, नील में तेजी, किसी-किसी जिन्स में विशेष चमक बने। अतः बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. १६ सितंबर चांदी, शेयरों के भावों में मन्दी, गेहूँ, जौ, चना, ज्वार, बाजरा, मक्का, उड़द, लकड़ी, जूट, सन, पोस्त, तिल तेल, मूंगफली, अलसी, लोहा, ताम्बा, जस्ता, पीतल, आयरन शेयर, कोयला में तेजी। नारियल, लाल रंग, हल्दी, मजीठ, लौंग, रुई, जायफल, गाय, चांदी के भावों में गिरावट, दूध के भावों में बिक्री तेज रहेगी। ता. २१ सितम्बर घी, तेल व अधिकतर व्यापारिक जिन्सों व शेयरों में तेजी का वातावरण बनेगा। ता. २७ सितम्बर गेहूं, जौ, ज्वार, गुड़, कपास, रुई, सूत, घास, लकड़ी, नमक, धनियाँ, हल्दी, सन, क्षार में घटाबढ़ी व मासान्त तक तेजी का योग है। ता. ३० अनाजों के भावों में गिरावट, गुड़, खांड, शक्कर, दालवाना तेज रहे।

अक्टूबर— यह मास आश्विन कृष्ण ९ मंगलवार से प्रारंभ होकर कार्तिक कृष्ण १० गुरुवार तक रहेगा। मास उत्तम है। प्रजा में मंगल कार्यों की अधिकता, धान्यों के भावों में घटाबढ़ी से स्थिरता को बल। ता. ४ बुध उदय हो रहे हैं जो अच्छी वर्षा के संकेत भी दे रहे हैं। लेकिन कहीं-कहीं वर्षा की अधिकता से जन धन हानि, रुई के भावों में मन्दी व मास प्रथम तक सभी धातुओं के भावों में तेजी देखने को मिलेगी व ता. ६ भौम कन्या राशि में प्रवेश कर "कन्या राशि गते भौमे चन्दन पट्ट वस्त्रकम्" से रुई, चांदी में तेजी। ऊन, लाल रंग के वस्त्र, मिर्च, गुड़, अलसी, गेहूँ, पाट, बारदाना, रेशम, सरसों, तिल, तेल पदार्थों में तेजी को बढ़ावा मिलेगा। विशेषकर लाल रंग की वस्तुओं पर विशेष तेजी देखने को मिलेगी। ता. ११ चित्रा के सूर्य १५ दिनों के अन्दर रुई, सूत, सोना, चांदी, मोती आदि रत्नों, गुड़, खांड, शक्कर, अरहर, गेहूँ, तिल, नारियल, सन, केसर, कपूर, लाल कपड़ों में तेजी का मान करायेंगे। अतः व्यापारी वर्ग रुख देखकर कार्य करें। ता. १७ को तुला संक्रान्ति सोना, रुई, मजीठ, सुपाड़ी, नारियल में तेजी कारक, घी, तेल, सरसों, अलसी के भावों में घटाबढ़ी से मन्दी व गुरु योग व्यापारी को सलाह देता है कि मार्ग-पौष जो खाद्य वस्तु संग्रह कर चैत्र में बेचें तो लाभ की प्राप्ति रसीले पदार्थ, गुड़, खांड, शक्कर का संग्रह कर चौमासे में बेचने से अच्छा लाभ, जनता में प्रायः सुभिक्ष, चोरी, डकैती, बन्द, हत्या, प्रदर्शन आदि को बल मिलेगा। ता. २१ अक्टूबर शुक्र धान्य, घी, गुड़, खांड, नमक में तेजी। चांदी में घटाबढ़ी से तेजी के उछाले। ता. २५ सूत, सन, रेशम, कपड़ा, सोना, चांदी, गुड़, शक्कर, बिनौला, सुपाड़ी, मिर्च, अलसी, राई, हींग, गूगल में तेजी। ता. २८ अक्टूबर रुई, गुड़, खाण्ड, सोना, अफीम के भावों में तेजी का योग, चांदी, अलसी, सरसों, अरण्ड, बिनौला, मूंगफली के भावों में गिरावट बनेगी। मासान्त तक शेयरों के भाव तेजी मन्दी के उछाले लेकर तेजी बना लेंगे।

नवम्बर— यह मास कार्तिक कृष्ण ११ शुक्रवार से प्रारंभ होकर मार्गशीर्ष कृष्ण १२ रविवार तक रहेगा। मास प्रारंभ में तुला राशि पर बुध, सूर्य, शुक्र तीनों का राशि योग चल रहा है "एक राशि पर होय जब बुध शुक्र व सूर" अर्थात् वर्षा में कमी व अधिकतर व्यापारिक जिन्सों, शेयरों के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. ६ नवम्बर जौ, चावल, गेहूँ, मसूर, गुड़, खाण्ड, रुई, सरसों, सूत, तिल, अरण्ड, अफीम के भावों में तेजी को बल मिलेगा। अलसी आलस्य त्याग तेजी का मान करेगी। चांदी में घटाबढ़ी से तेजी का योग है। ता. ११ गेहूँ, चावल, चना, सोना, चाँदी, पीतल के भावों में तेजी को बल मिलेगा। ता. १६ वृश्चिक संक्रान्ति लाल मिर्च, गेरू के भावों में मन्दी। सोना, चांदी, लौंग, इलाइची, कोयला, लकड़ी, पत्थर के भावों में गिरावट, रुई, सूत, जस्ता, लोहा, आयरन, शेयर, मक्का, पीतल, ज्वार, बाजरा के भाव में तेजी। गेहूँ, जौ, चना के भाव घटाबढ़ी से मन्दे। तिल, तेल, अलसी, घी के भाव स्थिरता को बल देंगे। ता. १९ को पूर्णिमा अश्वनी नक्षत्र योग है "अश्वनी भरणी का बने पूनम से संयोग," ज्वार, मकई, मटर मंहगाई और रोग अर्थात् प्रजा में रोग कष्ट की वृद्धि व व्यापारिक जिन्सों में तेजी को बल मिले। ता. २२ मंगल तुला राशि में प्रवेश कर रहे हैं व शुक्र मार्गी हो रहे हैं जो रुई, कपास, रेशम, सूत, सन, पाट, बारदाना, मूँगफली, गुड़, खाण्ड, गेहूँ, उड़द, मूंग आदि अनाजों में तेजी को बल देंगे। शुक्र मार्गी योग से सूत, घी, चावल, चांदी, हाथी दाँत की वस्तुओं में मास प्रथम गिरावट व मासान्त तक तेजी का योग। ता. ८ को शनि वक्री होकर गेहूँ, घी, शाल, मूँगा के भावों में तेजी को बल देंगे। ता. २८ अन्न के भावों में मन्दी। गुड़, खाण्ड, शक्कर में तेजी। ता. २९ नवमी क्षय है "खार, मृगसिर पहले पाख में कोई तिथि घट जाये" से लड़ाई, झगड़े, दंगे आन्दोलनों को बल मिलेगा व प्रायः सभी जिन्सों में तेजी को विशेष बल मिलेगा।

दिसम्बर— यह मास मार्गशीर्ष कृष्ण १२ रविवार से प्रारंभ होकर पौष कृष्ण १३ बुधवार तक रहेगा। ता. १ चांदी के भावों में गिरावट, रुई में घटाबढ़ी व अफीम के भावों में तेजी बनेगी। ऊनी वस्त्र, गेहूँ, ऊन, गेरू, तिल, तेल तेज, सोने के भावों में आंशिक गिरावट बनेगी। ता. ४ अनाजों के भावों में घटाबढ़ी, चांदी में मन्दी। घी, तेल, सरसों, रुई के भावों में घटाबढ़ी से भावों को स्थिरता को बल मिलेगा। ता. ६ को गुरु वक्री व ७ को बुध उदय हो रहे हैं। अर्थात् रसीले पदार्थ घी, तेल, शक्कर, कपास, रुई में तेजी स्टॉक बेचने से अच्छा लाभ। सात, महीने तक धान्य के भावों में तेजी को बल मिलेगा। अतः बुद्धि चातुर्य से कार्य करें, रुई में विशेष तेजी का योग भी बन रहा है। ता. १५ दिसम्बर गेहूँ, जौ, चना, मटर, चावल, ज्वार, बाजरा, घी, तेल में तेजी, दालवाना के भाव समता पर रहेंगे। ता. २० विशाखा शुक्र योग से रुई व अनाज के भावों में गिरावट बनेगी। ता. २५ रुई, सोना, चांदी सभी तरह के अनाजों व दालवाना में स्थिरता को बल मिलेगा। ता. २९ दिसम्बर तिल, तेल, सरसों, बिनौला, गुड़, खांड, हल्दी, गुग्गल, चमड़ा, कपूर, ऊनी, वस्त्र, चांदी के भावों में तेजी। ता. ३१ रुई, चांदी में दो दिन के अन्तर्गत विशेष तेजी। अन्य जिन्सों पर भी तेजी का वातावरण मिलेगा। नूतन वर्ष २००३ का वार्षिक भविष्य शीघ्र बुक करायें व लाभ लें इसी सहयोग के साथ।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००२ में ग्रहों का शेयर मार्केट पर प्रभाव

निर्देशन—डॉ. वसन्त लाल व्यास (ज्योतिष सम्राट) लेखक- पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिषपीठ, राया (मथुरा) उ.प्र.-२८१२०४ सम्पर्क सूत्र—(०५६५) ८३३३५३, ८३३४९२

जनवरी—प्रथम मासान्त सप्ताह भावों में तेजी रहेगी। ता. ३ से ७ तक भारी तेजी के योग हैं। ता. ११ तक भावों में घटाबढ़ी चले परन्तु आवरेज तेजी रहेगी। ता. १४ से १९ तक घटाबढ़ी से भावों में गिरावट बनेगी। इस दौरान मन्दी का रुख रहेगा। लेकिन कोई विशेष परिवर्तन नहीं। ता. २० भावों में तेजी के उछाले आयेंगे। ता. २१, २२ को भावों में मन्दी रहेगी। ता. २३, २४ से भारी तेजी, ता. २७ सर्दी की वृद्धि के साथ साथ भावों में भी चमक बनेगी।

फरवरी—ता. ३ से ७ निसंदेह मन्दा रहकर कुछ अच्छी मन्दी के झटके भी आयेंगे। ता. ४ भावों में सुधार। ता. ७ चलते भाव भी तेजी की माँग करेंगे। कुछ अच्छी तेजी के योग भी हैं। ता. ११ भावों में तेजी का मान, ता. १३ भाव टूटकर उठ जायेंगे। ता. १६ वर्षा हो तो मन्दी अन्यथा तेजी। ता. १७ भावों में आंशिक मन्दी। ता. २६ से १ तक अच्छी तेजी का झटका अत: व्यापारी वर्ग रुख देखकर कार्य करें।

मार्च—ता. २ से बाजार तेज रहकर ता. ७ से १० तक अच्छी तेजी बना लेंगे। लेकिन ता. ६ व ९ को मन्दी का विशेष झटका लग सकता है। ता. ११ से १३ आवरेज में घटाबढ़ी से तेजी रहेगी। ता. १९ प्रथम तेजी व मन्दी में सूचकांक बन्द हो। ता. २२ दोपहर तक घटाबढ़ी व अच्छी लिवाली से मन्दी। ता. २४ व २९ अच्छी तेजी के उछाले व मासान्त तक भावों में घटाबढ़ी, लेकिन आवरेज तेज रहेगा।

अप्रैल—ता. २ से ४ भावों में मन्दी व कुछ अच्छी मन्दी के झटके अत: बाजार रुख देखकर कार्य करें। ता. ९ बाजार भावों में घटाबढ़ी लेकिन समान्यत: मन्दी। ता. १२ से १६ अच्छी तेजी के चान्स विशेष लाभ के लिये रिपोर्ट मंगावें। परन्तु १५ को आंशिक घटाबढ़ी से मन्दी, ता. १९ सर्पमुखी चाल से गिरावट, ता. २६ प्रमुख शेयरों में तेजी व कुछ भारी मन्दी का मान करेंगे। ता. २७ घटाबढ़ी अधिक चले। ता. २९ भाव तेजी बनाकर स्थिरता को बल देंगे।

मई—ता. २ शेयर बाजार में तेजी। ता. ६ बाजार भाव सर्पमुखी चाल से सुधार लें। ता. १० भावों में घटाबढ़ी से मन्दी। ता. १३ भावों में तेजी, ता. १५ अच्छी घटाबढ़ी चले। ता. १९ नये शेयर भी बाजार में मन्दी का मान करें। ता. २० सर्पमुखी चाल से मन्दी। ता. २३ गर्मी में वृद्धि, शेयरों में घटाबढ़ी से स्थिरता को बल। ता. २५ भावों में सुधार। ता. २९ चलते भावों में परिवर्तन, तेजी को बल।

जून—ता. २ बाजार भावों में मन्दी। ता. ५ घटाबढ़ी के साथ भावों में चमक। ता. ९ भावों में मन्दी छायी रहे। ता. १६ से १८ जून विशेष मन्दी के झटके। ता. २१ भावों में सुधार व २७ जून भावों में तेजी को बल मिले। अन्तिम सप्ताह में भाव पलट कर तेजी बनायें। अत: सतर्कता से कार्य करें।

जुलाई—ता. २ से ता. ६ बाजार भाव सामान्य चलेंगे। ९ से २० तक तेजी रहेगी। बीच में १३ से १९ को अच्छी तेजी के योग। ता. २० भावों में प्रथम तेजी आकर सायं तक मन्दी में बन्द। ता. २४ सर्पमुखी चाल से सुधार। ता. २६ भावों में तेजी का मान हो। ता. २७ भावों में मन्दी का योग, २९ चलते भावों में परिवर्तन, भाव पलटा लेकर मासान्त तक तेजी छायी रहेगी।

अगस्त—ता. ३ भावों में माँग के साथ वृद्धि हो। ता. ६ भावों में मन्दी का प्रभाव, ता. ८ प्रमुख शेयरों में तेजी का मान। कॉटन शेयर गिरकर उठें। ता. ११ भावों में तेजी का मान होकर मन्दी चले। ता. १४ सर्पमुखी चाल में सुधार। ता. १६ भावों में मन्दी। ता. १७ भावों में तेजी को बल मिले। ता. २० चलते भावों में वृद्धि। ता. २७ भावों में गिरावट बने। ता. ३० शेयरों में स्वर्ण व धातु व आयरन शेयरों में चमक।

सितम्बर—ता. १-२ को बाजार अच्छा तेज रहकर ३-४ को सामान्य रहकर ५-६ में बाजार तेज रहेगा। ७-८ को सामान्य तेजी। ता. ९ से ११ तक भावों में घटाबढ़ी अधिक बने। लेकिन कोई विशेष परिवर्तन नहीं। ता. १२ से १८ बाजार भाव तेज रहकर एक दो उछाले अच्छी तेजी को व ता. १९-२१ को मन्दी का विशेष दौर चले। ता. २५ भावों में घटाबढ़ी। ता. २९ भावों में गिरावट बनी रहे। सतर्कता से कार्य करें।

अक्टूबर—ता. ७ शेयर बाजार में तीन सप्ताह तक तेजी। भाव तेज होकर गिरें। ता. १० चलती लाईन में सुधार। ता. १२ सर्पमुखी चाल में शेयरों में तेजी। ता. १६ भावों में मन्दी। ता. १८ प्रमुख शेयरों में आंशिक मन्दी का झटका। ता. २१ नये शेयर माँग के साथ उठें। ता. २७ भावों में सुधार। ता. २९ भावों में घटाबढ़ी से स्थिरता को बल मिले। ता. ३० हिमपात व भावों में गर्मी, वार्षिक रिपोर्ट से लाभ लें।

नवम्बर—प्रथम सप्ताह घटाबढ़ी से तेजी। ता. ३ तेजी को बल। ता. ५ तेजी लेकर भावों में गिरावट। ता. ११ बाजार भावों में स्थिरता को बल देकर मन्दी की ओर चलेंगे। ता. १५ सर्पमुखी चाल से तेजी। ता. २३ भावों में सुधार। ता. २७ शेयर बाजार में हलचल व मासान्त तक आंशिक घटाबढ़ी। मन्दी लेकिन आवरेज तेज रहेगा।

दिसम्बर—ता. १ से ४ बाजार तेज रहकर ५ दिन तक सामान्य घटाबढ़ी। ९ से १४ बाजार सामान्य लेकिन कोई विशेष परिवर्तन नहीं। बीच में १४ व १५ से १८ तक भावों में सुधार हो। १९ से २२ अच्छी घटाबढ़ी चले। अच्छी तेजी के झटके भी आ सकते हैं। ता. २७ भावों में चमक, २९ से ३१ अच्छी तेजी के उछाले आयेंगे।

वार्षिक रिपोर्ट—सन् २००२ की १००० रु. में मंगावें।

विशेष नोट—शेयर बाजार की जानकारी ग्रहों के आधार पर है परन्तु शेयर बाजार में कुछ अन्य ग्रह भी हैं जिनका असर इस मार्किट पर होता है। राजनैतिक परिवर्तन व अस्थिरता, मौसम के परिवर्तन का प्रभाव ज्योतिष गणना से अधिक होता है। एक विशेष ग्रह शेयर ब्रोकर (सटोरिया शेयर दलाल) जो हर समय इस बाजार पर प्रभाव रखता है। अत: आप सभी पर दृष्टि रखें। व्यापार लाभ के लिए वर्ष २००२ का भविष्य फल २०१/-, तेजी मन्दी दर्पण अंक गाइड २५१/-, एक मास की रिपोर्ट १००/-, एक वर्ष के लिए १०००/- रु., पंजीकृत डाक या शीघ्र सेवा के लिए २५०/- पृथक लगेंगे। प्रत्येक शेयर के नाम से मासिक रिपोर्ट व भविष्य फीस ७१/-।

कैरियर सर्विस चार्ज—२५/- प्रतिमाह व पृथक-पृथक शेयर का भविष्य ८१/- प्रति शेयर।

फोन पर बातचीत व शेयर रिपोर्ट जानने के लिए ४००/- रु. प्रतिमाह पंजीकृत शुल्क १०१/-।

नोट—कृपया असुविधा व परेशानी से बचने के लिए सम्पर्क रात्रि ९ बजे बाद करें व आने से पहले समय लें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

शनि की साढ़ेसाती, ढैय्या व गुरु, राहू विचार व कष्ट निवारणार्थ उपाय

१. भारतीय ज्योतिषाचार्यों व महर्षि जैमनी ने शनि को विशेष प्रभावशाली ग्रह माना है। शनिदेव जितने कष्टदायक हैं व हानिकारक हैं उतने ही यश और सम्मान दिलाने वाले हैं। ६ जून सन् २००० को शनिदेव वृष राशि पर प्रवेश कर २२ जुलाई सन् २००२ तक वृष राशि में भ्रमण करेंगे। २३ जुलाई सन् २००२ ई. आषाढ़ शुक्ला १३ सोमवार संवत् २०५९ को शनि देव मिथुन राशि में पदार्पण करेंगे।

२. शनि के वक्री, मार्गी, उदय, अस्त रूप में अधिक सामाजिक व राजनैतिक परिवर्तन का विवरण जो गत वर्ष दिया था उसकी सत्यता से जनता व जन्त्री प्रेमी पाठकों ने देखा व हमें प्रशंसा के पत्र भी लिखे, भारतीय ज्योतिष का यह उज्जवल व जीवन्त प्रमाण है।

३. शनि वर्ष प्रारंभ मिथुन राशि में है व २२ जुलाई सन् २००२ ई. को १८।५२ पर मिथुन राशि में प्रवेश करेंगे, ८ फरवरी सन् २००२ को शनि मार्गी व २२ मई सन् २००२ को शनि अस्त व २७ जून सन् २००२ को शनि उदय व २७ नवम्बर सन् २००२ को शनि वक्री हो रहे हैं।

वृष के शनि का फल निम्न प्रकार है—

वृष सौरियर्दा याति विनश्यन्ति चतुष्पदा।
सप्तधान्य महर्घ न च नृयाणाम विग्रहो भवेत॥

अर्थात् मनुष्यों में वैर भावना में वृद्धि, धान्यों के उत्पादन में कमी, राजनेताओं में आपसी वाद-विवाद, बन्द, प्रदर्शन, हत्या व आन्दोलनों को बल मिले। गुड़, खांड, तृण, रुई, पाट, वारदाना, सोना, चांदी, ताम्बा, पीतल, तिल, तेल, सरसों व सभी प्रकार के तिलहनों के भावों में तेजी व प्रान्तीय सरकारों व केन्द्र सरकार में आपसी मदभेद, पद त्याग, बन्द, आन्दोलन, हत्या व आंशिक फेरबदल, सीमा पर युद्ध, तनाव जैसी स्थिति, प्रजा में विग्रह, असन्तोष की भावना व नित्य नवीन समस्याओं से सरकारें प्रभावित होंगी।

मिथुन के शनि—

आघं कार्पासलोहल तिल गुडाः सर्व देशेमहर्घां।
मजिष्ठा हेमतारे वृष महयगजं सर्वधान्यं समर्घम्॥
सप्तदीपे समुद्रे सुखि जन सहिते सर्व सौख्यं नरेन्द्रा।
सर्वत्रयान्ति मेघाः सकल मुनिमतं मैथुने सूर्यपुत्रे॥

सप्तदीपों निवासियों को सुख, वर्षा सर्वत्र अच्छी, मन्त्री परिषदों को सुख, रुई में तेजी, चांदी में मन्दी, नमक, तिलहन, तेल, खाण्ड, गुड़ तेज, लोहा, आयरन, शेयर, मजीठ, बैल, हाथी, घोड़ों के भाव घटाबढ़ी से तेज, मुस्लिम राष्ट्रों से विग्रह व तनाव, सैन्य बलों का प्रदर्शन, भ्रष्टाचार, दुर्घटनाओं में वृद्धि।

३. वृष के शनि से वृष को रजतपाद, मिथुन को लौहपाद, तुला को लौहपाद व कुंभ को लौहपाद से ढैय्या चलेगी अर्थात् मेष, कन्या, मकर रजतपाद, वृष, कर्क, धनु को स्वर्णपाद, मिथुन, तुला, कुंभ को लौहपाद।

४. मिथुन के शनि से मिथुन को रजतपाद, कर्क को लौहपाद, वृश्चिक को लौहपाद व मीन को स्वर्णपाद, कर्क, वृश्चिक, मीन को लौहपाद, वृष, तुला, मिथुन को रजतपाद, मिथुन, सिंह, मकर को स्वर्णपाद, रजतपाद वालों को धन लाभ, जमीन, वाहन, मकान की खरीद फरोख्त, स्वर्णपाद वालों को आय कम व्यय अधिक, अनचाही यात्रायें, परेशानी, रोग, लौहपाद वालों को शरीर कष्ट व घर परिवार से क्लेश, कलह, पत्नी से क्लेश व घर परिवार में हानि हो।

५. शनि की लघु ढैय्या का विचार चन्द्र राशि अथवा व्यवहार नाम से करना चाहिये। चंद्र कुण्डली में जिनका चन्द्रमा शनि से प्रभावित हो अथवा दृष्ट हो तो परेशानियों का सामना करना पड़ता है, शनि की चाल जब-जब परिवर्तित होती है उसी रूप शनि अधिक कष्ट व परेशानियाँ दिया करते हैं।

गुरु संचार व्यवस्था और फल

सभी शुभ कार्यों की कल्पना देव गुरु वृहस्पति (गुरु) जी की कृपा से होती है और कार्य की सफलता में गुरु की कृपा की अनुकूलता विशेष प्रधान होती है। १५ जून सन् २००१ को गुरुदेव ने मिथुन राशि पर आगमन किया था। दिनांक ४ जुलाई सन् २००२ ई. आषाढ़ कृष्ण ९ गुरुवार को १९।३४ पर कर्क राशि पर आयेंगे। दि. २ जनवरी को गुरु वक्री, २८ फरवरी सन् २००२ को गुरु मार्गी होंगे।

मिथुन के गुरु —कर्क, कन्या, कुंभ को ताम्रपाद।
कर्क के गुरु —सिंह, तुला, मीन को ताम्रपाद।

१. मिथुन के गुरु से कर्क को आय के नवीन स्रोत प्राप्त हों, सिंह स्वजनों से मतभेद, आय में रुकावट, वृश्चिक स्थानान्तरण, धनु को सुखप्रदायक, मकर को सिर व्यथा, उलझनें, मिथुन, कर्क को व्यय की अधिकता देंगे।

२. **कर्क के गुरु**—कन्या आय में सुधार, धनु जमीन की खरीद फरोख्त, व्यर्थ की उलझनों में धन का अपव्यय, कुंभ को स्वजनों से कष्टदायक व कर्क, सिंह, व्यय की अधिकता, व्यर्थ यात्रा, कर्जा आदि जैसी स्थितियों से सामना करना पड़ सकता है।

राहू केतु गणना फल

राहु व केतु दोनों ही छाया ग्रह हैं, दोनों ही ग्रह सामान्य रूप से एक राशि पर छः महीने भ्रमण किया करते हैं। वर्ष प्रारंभ में राहु, मिथुन व केतु धन राशि पर विराजमान हैं। ता. १६ फरवरी सन् २००२ ई. को १५।४ पर राहू वृष राशि पर व केतु का मिथुन राशि पर आगमन होगा।

वृष के राहू—मेष २, वृष १, मिथुन १२, कर्क ११, सिंह १०, कन्या ९, तुला ८, वृश्चिक ७, धनु ६, मकर ५, कुंभ ४, मीन ३, २, ४, ५, ७, ८, १२वें राहू विशेष परेशानी व उलझनें व कष्ट दिया करते हैं।

वृश्चिक के केतु—मेष ८, वृष ७, मिथुन ६, कर्क ५, सिंह ४, कन्या ३, तुला २, वृश्चिक १, धनु १२, मकर ११, कुम्भ १०, मीन ९, केतु २, ४, ५, ७, ८, १२वें भाव में हों तो सिर में पीड़ा, व्यर्थ के झगड़े, झंझट, पैरों में कष्ट, दुर्घटना व व्यर्थ की भागदौड़ व परेशानी दिया करते हैं।

अनिष्ट ग्रह कष्ट निवारक (उपाय)

गुरु कृत् अनिष्ट निवारण के हेतु गुरुवार का व्रत, केले के वृक्ष की पूजा, गुरु मंत्र का जाप, जपानुष्ठान, पुखराज, सुनैला, पीला हकीक, गुरु यन्त्र की अंगूठी व गुरु यन्त्र का धारण करना शुभप्रद है। गुरुवार के दिन पीत वस्त्र, चना की दाल तथा हल्दी का ब्राह्मण को दान, खड़ी हल्दी की अक्षत गांठ धारण करें। हल्दी की माला पर गुरु मंत्र का जाप शुभ है।

राहु के लिये नाव लोहे की मुद्रिका, गोमेद, लाजवर्त, केट आई, राहु यन्त्र का धारण, श्री रामनाम की आटे की गोली बनाकर बुधवार के दिन मछलियों को खिलावें। राहु मंत्र का जपानुष्ठान, राहु कृत वस्तुओं का दान श्रेयष्कर है।

केतु के अनिष्ट निवारण हेतु वैदुर्यमणि, टायगर स्टोन, केतु यंत्र की अंगूठी, केतु का यन्त्र तथा जपानुष्ठान शुभकर रहेगा। एक गोला में भुना आटा, चीनी मिलाकर भरें। ऊपर ढक्कन रखकर चिकनी मिट्टी आदि से बन्द कर केतु पीड़ित व्यक्ति पर २१ बार उतार कर ऊंचे स्थान पर गड्ढा खोद कर गाड़ दें तो केतु की पीड़ा का शमन होगा व लाभ का मार्ग बनेगा।

विशेष मार्गदर्शन एवं जपानुष्ठान हेतु सम्पर्क करें।

पं. अनिल कुमार व्यास
श्री अम्बा ज्योतिष पीठ, राया (मथुरा), उ.प्र.

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

महाशिवरात्रि पर्व

निर्देशन—ज्योतिषी पं. बसन्त लाल व्यास, राया (मथुरा)

शिवरात्रि पर्व के विषय में पंचांगकारों में मतभेद हैं। कुछ पंचागकार १२ मार्च को तो कुछ १३ मार्च को तो कुछ ने दोनों में शिवरात्रि का व्रत लिखा है। विद्वानजनों में पंचागों की भिन्नता वश मतभेद होना स्वाभाविक है। ऐसे समय वेद, पुराण, वेदांग तथा धर्मशास्त्रीय निर्णय ग्रंथों को आधार मानकर निर्णय कर आपसी मतभेदों को भुलाकर जनता जनार्दन, राष्ट्र, समाज तथा स्वयं के हित में निर्णय है। अभ्युदय की प्राप्ति में भी शास्त्र निर्णायक है और अभ्युदय की प्राप्ति शास्त्र मार्ग से ही तो है।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को शिवरात्रि होती है। इसी भूत भावन भक्त भय हरण, आडर दानी आदि देव महादेव शिवलिंग के स्वरूप में प्रादुर्भूत हुये थे, अतएव शिवरात्रि व्रत में उस समय व्याप्त तिथि को ग्रहण करनी चाहिये।

अर्ध रात्रि युता यत्र, माघ कृष्ण चतुर्दशी।
शिवरात्रि व्रत तत्र सौश्व मेघ फल लभेत्॥ (नारद संहिता)
शिवलिंग तयोदभुतः कोटि सूर्य सम प्रभुः।
तत्काल व्यापिनी ग्रहया शिवरात्रि तिथि रीति॥ (ईसान संहिता)
अर्ध राभादधश्योर्ध्व युक्ता चतुर्दशी।
लत्तिथा वेवक कुर्वीत शिवरात्रि व्रतं व्रतो॥ (स्कन्द पुराण)

आदि आर्ष वचनों से सिद्ध होता है, शिवरात्रि का व्रत अर्धरात्रि व्यापिनी चतुर्दशी में करना चाहिये। जिस दिन अर्धरात्रि के समय चतुर्दशी न हो उस दिन शिवरात्रि व्रत नहीं करना चाहिये।

नार्ध रात्रादर्ध श्योर्ध्व युक्ता यत्र चतुर्दशी॥
नैव तत्र व्रतं कुर्यादाय रैश्वयं हानित॥ (निर्णय सिन्धु)

अर्ध रात्रि के समय चतुर्दशी न हो उस दिन चतुर्दशी व्रत नहीं करना चाहिये। यदि व्रत किया जावे तो व्रती के धन, आयु, यश को हानि होती है।

शिवरात्रि का व्रत सर्व पापों का नाशक तथा सभी कामनाओं और ऐश्वर्य, यश का प्रदायक है, यह किसी वर्ग जाति विशेष का व्रत नहीं है, इस व्रत को ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र ही नहीं चाण्डाल भी कर सकते हैं, चाण्डाल किसी जाति विशेष का नहीं होता है, वह सभी जातियों में होता है और हो सकता है।

शिवरात्रि व्रतं नाम सर्वपाप प्रणाशनम्।
आ चाण्डाल मनुष्याणा मुक्ति मुक्ति दायकम्॥ (शिव रहस्य)

सभी स्त्री, पुरुष, बाल, वृद्ध, युवा सभी इस व्रत को कर सकते हैं और सभी को यह व्रत करना चाहिये।

शिवरात्रि व्रत के सम्बन्ध में आयु पुराण का मत है।

त्रयोदशीयास्तगे सूर्य चतसृष्वेच नाडिषु।
भुत विद्धा तुया तत्र शिवरात्रि व्रतं चरेत्॥ (वायु पुराण)

सूर्य अस्त के समय त्रयोदशी हो बाद में चतुर्दशी हो उस तिथि में शिवरात्री व्रत करना चाहिये।

अर्द्ध रात्रि में शिव पूजा के सम्बन्ध में स्कन्द पुराण का मत है।

निशि भ्रमन्ति भूतानि शक्तयः शूलमृद यतः॥
अत सास्यां चतर्दश्या सत्यां तत्पूजन भवेत्॥ (स्कन्द पुराण)

रात्रि के समय भगवान् भूत भावन, भूतेश्वर स्वयं शिव, भूत, प्रेत, पिशाच आदि शक्तियों के साथ भ्रमण करते हैं। अतः रात्रि के समय भगवान शिव की पूजा करनी चाहिये। यदि इस समय इनकी पूजा की जाती है तो इनके द्वारा जनित सर्व पापों का समन होता है।

माघ फाल्गुन योर्मध्ये असिवाया चतुर्दशी।
अनगेन समायुक्ता कर्त्त व्यासासदा तिथि रिति॥ (नागर खण्ड)
महाशिव रात्रि वन्निशोथ व्यापिन्यव ग्राह्या॥ (धर्म सिन्धु)
शिवरात्रि व्रतं तत्र कुर्याजाकरण तये त्यादि महा निशावे थोपि ग्राह्यः॥ निर्णया मृत॥
पाद्ये अर्ध रात्रत परस्ताच्चेज्जया योगोदा भवेत॥
पूर्व विद्धेवकर्तव्या शिव रात्रि शिव प्रियै रिति॥ (स्कन्द पुराण)
शिव रात्रि व्रते बहुरात्र व्यापिनी ग्राह्ये॥ हेमाद्रि॥

आर्ध वाक्यों से ८ मार्च रविवार को महाशिव रात्री सिद्ध है। इसमें एक विशेष बात है।

रवि भौम वारे शिवयोगे वाचि प्रशस्ता॥

व्रतराज व्रत परिचय।

शिवरात्रि के दिन रविवार या मंगलवार हो तो शिवयोग बन रहा है, यह और भी उत्तम है। व्रत की समाप्ति पर वृतान्ते पारणम् का विधान है। यह निम्न प्रकार से होता है।

१. वृतान्ते पारणम् २. तिथ्यन्ये पारणम् ३. तिथि भान्ते च पारणम् का विधान है, किन्तु शिवरात्रि के व्रत में विशेषता है।

शिवरात्रि व्रतिभिस्तु चतुर्दश्यामेव पारण कर्तव्या॥ (धर्म सिन्धु॥)
तिथिनामेव सर्वासामुपवास व्रतादिषु। तिथ्यन्ते पारण कुर्याद बिना शिव चतुर्दशीम्॥ (पद्म पुराण॥)

शिवरात्रि व्रत का पुराण शिव चतुर्दशी में ही करना चाहिये, यह तब ही सम्भव है पूर्व विधा चतुर्दशी में व्रत किया जावे, प्रदोष निशौथी भय व्यापिनी चतुर्दशी अर्थात् ८ मार्च १९८६ को व्रत किया जावे।

शिवरात्रि के व्रत प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ प्रहर पूजा करनी चाहिये। यह पूजा पच्चोपचार, षोडशोपचार अथवा राजोपचार जिस विधि से भी बन सके उस रूप में समान रूप से करनी चाहिये। रुद्र पाठादि, भगवान् शिव के नामों का कीर्तन, कथा, जागरण, उपवास सभी प्रकार सम्पन्न हो सकते हैं। पूजा की समाप्ति पर नोराजन पुष्पान्जलि अर्घ्य परिक्रमा करें।

भगवान् शिव विद्वान्, मूर्ख, धनी, निर्धन सभी पर कृपा करते हैं। वह तो गाजर, मूली, बेर, सर्व सुलभ फल-फूल की पूजा से प्रसन्न हो जाते हैं और साधक की सर्व कामनाओं को पूर्ण कर दिया करते हैं। स्वयं ब्रह्माजी माँ पार्वती से अपना दुखड़ा रोते हुये कहते हैं—

बावरी रावरी नाह भवानी।

जिनके भाल लिखी लिपि मेरी सुख की नांहि निशानी। तिन रंकन को नाक संवारत हो आयो नकबानी॥
शिव की दई सम्पदा देखत श्री शारदा सिहाहीं। दीनदयाल देइ बोई भावई या जस जाहि सुहाही॥

१२ मार्च २००२ ई. को भगवान् भूत भावन ओघड़ दानी सदा शिव की प्रसन्नता हेतु शिवरात्रि व्रत करना श्रेयकर है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००२ में शेयर बाजार की तेजी-मंदी की समीक्षा

ज्योतिषाचार्य : आचार्य पंडित दुनदुन शास्त्री, करौन्दी, पो. सरांव (नटवार) रोहतास (बिहार)-८०२२१८, दूरभाष : ०६१८५, ४६४८०, ४६५७५
(ज्यो. विशारद : ज्योतिष वाचस्पति, डी.लिट, डॉ. ऑफ ऐस्ट्रलॉजी मानद) अन्तर्राष्ट्रीय स्वर्णपदक प्राप्त एवं नेपाल राष्ट्र द्वारा ज्यो. पराशर सम्मान से सम्मानित

शेयर बाजार की गतिविधियों के लिए हम विगत कई वर्षों से ज्योतिषीय दृष्टि कोण से विशेष अनुसंधान में लगे हुए हैं। इससे जो निचोड़ प्राप्त होता है। उस अनुसंधान पर आधारित तथा गतिविधीय आधार पर शेयर बाजार की गतिविधियों पर आधारित यह आलेख आप सबके बीच समर्पित है। मुझे आशा है यह आलेख शेयर ब्रोकर निवेशकों को ज्यादा से ज्यादा मार्गदर्शन करने में सहायक साबित होगा।

जनवरी— यह मास मंगलवार दूज तिथि, पुष्य नक्षत्र, वैधृति योग, कर्क राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारंभ में प्लूटो वृश्चिक में, केतु-शुक्र-सूर्य धनु में, नेपच्यून-बुध-हर्शल मकर में, मंगल मीन में, शनि वृष में, राहु-गुरु मिथुन में भ्रमणशील रहेगा। ता. १० को मंगल मीन में, ता. १४ को सूर्य मकर में, इसी ता. को शुक्र भी मकर में, ता. १९ को बुध वक्री होगा। ता. २१ को बुध पुनः पश्चिम में अस्त होगा। ता. २८ को हर्शल कुम्भ में संचरण करेगा। फलतः ता. १ से ४ तक शेयर बाजार में ज्यादा तौर पर रिलायंस समूह, मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कं., सत्यम कम्प्यूटर, रोल्टा, पेंटाफोर साफ्टवेयर, डी.एस.क्यू सॉफ्ट. फार्मा, वित्तीय संस्थाओं तथा सीमेन्ट, ऑयरन आदि के शेयरों में मध्यम स्तर की तेजी से वर्ष के शुरूआत में सूचकांक ऊपर उठेगा। ता. ७ को चित्रा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता. ७ से ११ तक शेयर बाजार में रिलायंस, कम्प्यूटर, साफ्टवेयर, फार्मा, पेट्रोरसायन, पावर, दूर संचार-मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कं., हिन्दुस्तान लीवर तथा पुरानी अर्थ व्यवस्था के शेयरों में उतार चढ़ाव के मध्य लम्बी तेजी की लाईन मिल सकती है। अतः बाजार का रुख देखते हुए सौदा करना बुद्धिमानी होगा। ता. १४ को उ.षा. नक्षत्र में बाजार खुलेगा। उस दिन सूर्य शुक्र दोनों मकर राशि में भ्रमणशील रहेंगे। फलतः ता. १४ से १८ तक में भी टैक्नोलॉजी, साफ्टवेयर कम्प्यूटर, इंटरनेट, कुछ नए किस्म के शेयर सीमेन्ट, पेट्रोरसायन, पावर, भारी इंजीनियरिंग, वाहन निर्माता कंपनियों तथा अर्थ व्यवस्था सम्बन्धी शेयरों में तेजी के चांस हैं। यह ध्यान रखें। ता. १७ को शेयर बाजार आंधी के आम की तरह गिर सकता है। कुल मिला कर यह सप्ताह का सूचकांक ऊपर उठेगा। ता. २१ को रेवती नक्षत्र में बाजार खुलेगा। इसी दिन बुध अस्त होगा। जिससे बाजार खुलते ही उतार चढ़ाव का सिलसिला जारी रहेगा। यह प्रक्रिया २१ से २५ तक जारी रहेगी। ज्यादा तौर कम्प्यूटर, साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनी, फार्मा वित्तीय संस्थाओं आदि के शेयर में काफी उतार जारी रहेगा। सीमेन्ट, पेट्रो रसायन, पावर, वाहन, भारी इंजीनियरिंग आदि शेयरों में कमी का लक्षण तेजी से नजर आएगा। परन्तु ठीक नहीं पाएगा। अतः सावधानी अपेक्षित है। ता. २८ को पुनर्वसु नक्षत्र में बाजार खुलेगा। इसी दिन हर्शल कुम्भ में प्रवेश करेगा। फलतः ता. २८ से ३१ तक हिमाचल फ्यू., सिल्वर लाईन, रोल्टा, विप्रो, रिलायंस, इनफोसिस आई.टी.सी. ग्लोबल टेलीकम, जी.टी.वी., पेंटाफोर, इनफोटेक, साफ्टवेयर, एल.एण्ड टी. फार्मा आदि के शेयरों में तेजी की लम्बी लाईन मिल सकती है। अतः बाजार के अनुरूप सौदा करें।

फरवरी— यह माह शुक्रवार, चौथ तिथि, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र, धृति योग, कन्या राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में शनि-वृष में, राहु-गुरु मिथुन में, प्लूटो वृश्चिक में, केतु धनु में, सूर्य-बुध-नेपच्यून मकर में, हर्शल-शुक्र कुम्भ में, मंगल मीन में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. २ को बुध पूरब में उदय होगा। ता. ७ को शुक्र कुम्भ में, इसी ता. को शुक्र पश्चिम में उदय होगा। ता. ८ को शनि मार्गी होगा। ता. १२ को सूर्य कुम्भ में, ता. १६ को राहू वृष में, इसी ता. में केतु वृश्चिक में, ता. २१ को मंगल मेष में, ता. २८ को गुरु मार्गी होगा। फलतः ता. १ को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। इस दिन चार बजे शाम के बाद एकाएक कम्प्यूटर, फार्मा, पेट्रोरसायन, हिन्दुस्तान लीवर, पुरानी अर्थ व्यवस्था आदि के शेयरों में तेजी के चांस हैं। ता. ४ को स्वाती नक्षत्र में बाजार खुलेगा। उस दिन शुक्र धनिष्ठा में १७ घंटा ५३ मिनट पर प्रवेश करेगा। फलतः ता. ४ से ८ तक रिलायंस समूह, जेपी इंड., ग्लोबल टेलीकम, पेन्टाफोर, डी.एस.क्यू., साफ्ट., इनफोसिस टेक्नॉलोजी, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कं., सत्यम कम्प्यूटर, रोल्टा, टीस्को, टेल्को आदि के शेयरों में उतार चढ़ाव के मध्य तेजी की लाईन मिल सकती है। परन्तु ता. ८ को शनि मार्गी होने से आयरन, पावर, पेट्रोरसायन, वाहन आदि के शेयर के साथ ही चुनिंदा शेयरों का भाव एकाएक गिर सकता है। ता. ११ को श्रवण नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलते ही शेयर बाजार गिर जाएगा। यह सिलसिला ता. १५ तक जारी रह सकता है। इसे आप मंदी की लम्बी लाईन समझें। ता. १८ को अश्विनी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। कभी तेजी तो कभी मंदी का दौर जारी रहेगा। बाजार की स्थिति अनियंत्रित रहेगी। यह सिलसिला १८ से २२ तक क्रमशः जारी रहेगी। ता. २५ को पुष्य नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता. २५ से २७ तक धीमा गति से उतार चढ़ाव के मध्य कम्प्यूटर, सीमेन्ट, आयरन, पुरानी अर्थव्यवस्था, इंटरनेट, पेट्रोरसायन, पावर आदि के शेयरों में कभी-कभी जोरदार तेजी का भी चांस है। जबकि ता. २८ को बाजार गिर जाएगा।

मार्च— यह मास शुक्रवार, दूज तिथि, हस्त नक्षत्र, शूल योग, कन्या राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में शुक्र मीन में, मंगल मेष में, शनि-राहु वृष में, गुरु मिथुन में, केतु-प्लूटो वृश्चिक में, नेपच्यून मकर में, हर्शल-बुध-सूर्य कुम्भ में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. ३ को शुक्र मीन में, ता. ७ को बुध कुम्भ में, ता. १४ को सूर्य मीन में, ता. २४ को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. २६ को बुध मीन में, ता. २७ को शुक्र मेष में परिवर्तनशील रहेगा। फलतः ता. १ को हस्त नक्षत्र में बाजार खुलेगा। बाजार खुलते ही लगभग सभी चुनिंदा शेयरों का भाव आंधी के आम की तरह गिर जाएंगे। ता. ४ को विशाखा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता. ४ से ८ तक में दूर संचार-मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कं., कम्प्यूटर, इनफोसिस टेक्नॉलोजी, पेट्रोरसायन, भारी इंजीनियरिंग, रिलायंस समूह आदि के शेयरों में उतार चढ़ाव जारी रहेगा। क्षणिक तेजी में ही सौदा काट कर लाभ अर्जित किया जा सकता है। ता. ११ को श्रवण नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता. ११ से १५ तक में भी पुरानी अर्थव्यवस्था, हिन्दुस्तान लीवर, सीमेन्ट, आई.टी.सी., दूरसंचार, फार्मा, पेट्रोरसायन दो पहिया वाहन निर्माता कं., इनफोसिस टेक्नोलॉजी, विप्रो. रोल्टा, हिमाचल फ्यू, सिल्वर लाईन, ग्लोबल टेलीकम, साफ्टवेयर आदि शेयरों में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। फिर भी क्षणिक देर का निवेश लाभकारी साबित होगा। तेजी आते ही सौदा काट लें। ता. १८ को भरणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता. १८ से २२ तक में दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कं., कम्प्यूटर, इंटरनेट, कुछ नए किस्म के शेयर, फार्मा, हिन्दुस्तान लीवर, रिलायंस समूह, टाटा समूह, आई.टी.सी., साफ्टवेयर, टेक्नालॉजी आदि के शेयरों में लम्बी तेजी का चान्स मिल सकता है। ता. २५ को अश्लेषा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः ता. २५ से २८ तक शेयर बाजार में ज्यादा तौर पर कम्प्यूटर, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं, इनफोसिस, साफ्टवेयर आदि के शेयरों में मंदी का दौरा जारी रहेगा। इस वर्ष होली में निवेशकगण लाभ अर्जित नहीं कर पाएंगे। ता. २९ को शेयर बाजार में एक जोरदार तेजी का चान्स बाजार में देखने को मिलेगा।

अप्रैल— यह मास सोमवार, विशाखा नक्षत्र, वज्र योग, चौथ तिथि, वृश्चिक राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य-बुध मीन में, शुक्र मेष में, मंगल-शनि-राहु वृष में, गुरु मिथुन में, केतु वृश्चिक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

में विचरण करता रहेगा तथा ४ अप्रैल को मंगल वृष में, ता. १० को बुध मेष में, ता. १३ को सूर्य मेष में, ता. १९ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. २१ को शुक्र वृष में, ता. २५ को बुध वृष में पुन: प्रवेश करेगा। फलत: ता. १ को विशाखा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. १ से ५ तक राजनीतिक अस्थिरता के बावजूद भी विदेशी निवेशकों का शेयर बाजार में स्थान बढ़ेगा। जिसमें सीमेन्ट, वित्तीय संस्थाओं, रिलायंस समूह, टिस्को, टेल्को, हिमाचल फ्यू., सत्यम कम्प्यूटर, सिल्वर लाईन, हिन्दुस्तान लीवर, लार्सन एण्ड टर्बो, रोल्टा, विप्रो, इनफोटेक, इनफोसिस टेक्नॉलोजी, साफ्टवेयर, पेट्रोरसायन आदि के शेयरों में उतार चढ़ाव के मध्य सूचकांक का ग्राफ ऊपर उठेगा। ता. ८ को धनिष्ठा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. ८ से १२ तक भी शेयर बाजार में काफी ऊंच-नीच की स्थिति में सूचकांक का ग्राफ रहेगा। ता. ४ अप्रैल को मगंल वृष राशि में प्रवेश कर गया है। जो ४५ दिनों तक शनि-राहु से योग बनाएगा। इससे शेयर बाजार का सूचकांक कभी-कभी काफी नीचे आ जाएगा। ता. १५ को भरणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: १५ से २२ तक शेयर बाजार में तेजी की लम्बी लाईन मिल सकती है। दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनियों, ग्लोबल टेलीकॉम, सत्यम कम्प्यूटर, पेंटाफोर साफ्टवेयर, डी.एस.क्यू., साफ्टवेयर, फार्मा, वित्तीय संस्थाओं, पेट्रोरसायन, इनफोसिस, भारी इंजनियरिंग आदि कं. के शेयरों में विदेशी निवेशकों के स्थान से सूचकांक का ग्राफ ऊपर उठेगा। अत: मुनाफे का सौदा शीघ्र काट लें। ता. २२ को अश्लेषा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. २२ से २६ तक उतार चढ़ाव के मध्य पेट्रोरसायन, दूर संचार मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनियों, पेन्टाफोर, ग्लोबल टेलीकम, रोल्टा, विप्रो, रिलायंस समूह, हिमाचल फ्यू., टाटा इनफोसिस, सीमेन्ट, हिन्दुस्तान लीवर आदि के शेयरों में क्षणिक तेजी लाकर अच्छा लाभ दिला सकता है। ता. २९ को अनुराधा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: २९ से ३० तक शेयर बाजार में असमंजस की स्थिती रहेगी।

मई—यह माह बुधवार, पंचमी तिथि, मूल नक्षत्र, हवाजा योग, धनु राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य मेष में, मंगल, बुध, शुक्र, शनि, राहु, वृष में, वृहस्पति मिथुन में, केतु वृश्चिक में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. १४ को बुध वक्री होगा। इसी ता. को सूर्य वृष में, ता. १५ को शुक्र मिथुन में, ता. १७ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. १९ को मंगल, मिथुन में, ता. २२ को शनि अस्त होगा। फलत: १ से ३ तक शेयर बाजार में काफी ऊँच नीच की स्थिति में बाजार देखने को मिलेगा। विदेशी निवेशकों का दव-दवा होने से १० तक अफवाहों से बाजार कुछ ऊँचा उठकर पुन: गिर जाएगा। बाजार में गरमी आते ही सौदा को काटने के लिए तैयार रहें। शनि, राहु ने थोड़ा भी समर्थन दिया तो तेजी लम्बी लाइन में परिवर्तित हो सकती है। ता. १३ को कृत्तिका नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. १३ से १७ तक बाजार निश्चित ऊँचाई की ओर बढ़ेगा। जिसमें दूरसंचार मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनियां, ग्लोबल टेलीकम, पेन्टाफोर, फार्मा, रोल्टा, विप्रोस्टार लाईट, हिमाचल फ्यू., सिल्वर लाईन, डी.एस.फ्यू. साफ्ट, इनफोसिस टेक्नोलॉजी, वाहन निर्माता कं., भारी इंजीनियरिंग, पावर तथा पेट्रोरसायन आदि के शेयरों में साधारण से भारी उछाल की सम्भावना है। जब कि ता. १७ को बाजार आँधी के आम की तरह गिर सकता है। ता. २० को मघा नक्षत्र में बाजार खुलेगी। फलत: ता. २० से २४ तक बाजार की स्थिति डांवाडोल रहेगी। बाजार काफी गिरता चला जाएगा। यह प्रक्रिया ता. ३१ तक जारी रह सकती है।

जून—यह मास शनिवार, षष्ठी तिथि, धनिष्ठा नक्षत्र, प्रवर्ध योग, कुम्भ राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य, बुध, शनि, राहु, वृष में, मंगल, वृहस्पति, शुक्र, मिथुन में, केतु वृश्चिक में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. ५ को बुध पूरब में उदय होगा। ता. ९ को शुक्र कर्क में, ता. १० को बुध मार्गी होगा। ता. १५ को सूर्य मिथुन में, ता. १७ को मंगल अस्त होगा। ता. २७ को शनि उदय होगा। फलत: ता. ३ को पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. ३ से ७ तक बाजार में उतार चढ़ाव जारी रहेगा। ता. १० को रोहिणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. १० से १४ तक शेयर बाजार में ज्यादा तौर पर वित्तीय संस्थाओं, कम्प्यूटर फार्मा, इंटरनेट, पेट्रोरसायन, आयरन पावर, रिलायंस समूह, हिन्दुस्तान लीवर आदि के शेयरों में धीरे-धीरे तेजी का माहौल लम्बी लाईन दे सकता है। ता. १७ को पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. १७ से २१ तक शेयर बाजार में ज्यादा तौर पर पेट्रोरसायन, इनफोसिस टेक्नॉलोजी, कम्प्यूटर, दूरसंचार, पुरानी अर्थ व्यवस्थाओं के शेयरों में असमंजस की स्थिति रहते हुए भी सूचकांक का ग्राफ तेजी से ऊपर की ओर बढ़ेगा। परन्तु यह ध्यान रखें मंगल अस्त होने से इस अवधि में बाजार कुछ प्रभावित भी हो सकता है। अत: बाजार का रुख देखते हुए सौदा करें। ता. २४ को ज्येष्ठा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. २४ से २८ तक शेयर बाजार में ज्यादा तौर पर तेजी का वातावरण कायम रहेगा। सत्यम कम्प्यूटर, रोल्टा, विप्रो, सिल्वर लाईन, हिमाचल फ्यू., टिस्को, टेल्को, ऑटोबजाज, भारी इंजीनियरिंग, सीमेन्ट इण्डस्ट्रीज, इनफोसिस, इंटरनेट, आई.टी.सी., हिन्दुस्तान आदि के शेयरों में तेजी की लम्बी लाईन का आसार है।

जुलाई—यह मास सोमवार सप्तमी तिथि, पूर्वाभाद्रपद नक्षत्र, कुम्भ राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में बुध, सूर्य, मिथुन में, मंगल, वृहस्पति कर्क में, शुक्र सिंह में, केतु वृश्चिक में, राहु-शनि वृष में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. ४ को मंगल कर्क में, गुरु कर्क में, बुध मिथुन में, ता. ५ को शुक्र सिंह में, ता. ९ को गुरु अस्त होगा। इसी ता. को बुध भी पूरब में अस्त होगा। ता. १६ को सूर्य कर्क में, ता. १९ को बुध कर्क में, ता. २३ को मिथुन शनि में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। फलत: ता. १ से ५ तक शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव जारी रहेगा। फिर भी वाहन निर्माता कंपनियां, भारी इंजीनियरिंग, पावर, पेट्रोरसायन, कम्प्यूटर, फार्मा आदि के शेयरों में तेजी क्षण काल के लिए लाभकारी होगा। ता. ८ को रोहिणी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ८ से १२ तक शेयर बाजार में गुरु, बुध अस्त होने से यह सभी बाजार को अनिश्चय की ओर ले चलेंगे और मंदी का झटका लगना प्रारम्भ हो जाएगा तथा रह-रहकर सूचकांक नीचे की ओर जाता रहेगा। मन्दीकारक ग्रहों का जोर बढ़ता जाएगा। ता. १५ को उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. १५ से १९ तक विश्व के अधिकांश शेयर बाजारों में अच्छी घटा-बढ़ी होगी। ता. २२ को मूल नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. २२ से २६ तक कम्प्यूटर, पेट्रोरसायन, वित्तीय संस्थाओं, रिलायंस समूह, पावर मीडिया तथा फार्मों के शेयरों में धीरे-धीरे तेजी जोर पकड़ सकती है। ता. २९ को उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. २९ से ३१ तक शेयर बाजार में अधिकांश तेजी का माहौल रहेगा।

अगस्त—यह मास गुरुवार अष्टमी तिथि, अश्विनी नक्षत्र, शूल योग, मेष राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य, वृहस्पति, मंगल, कर्क में, बुध सिंह में, शुक्र कन्या में, केतु वृश्चिक में, राहु वृष में, शनि मिथुन में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. १ को शुक्र कन्या में, इसी ता. को गुरु उदय होगा, इसी ता. को बुध सिंह में, ता. २ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. १६ को सूर्य सिंह में, ता. १९ को मंगल सिंह में, ता. २१ को बुध कन्या में, ता. ३१ को शुक्र तुला में स्थान परिवर्तन के साथ भ्रमणशील रहेगा। फलत: ता. १ से २ तक बाजार तेजी के साथ खुलेगा। विदेशी निवेशकों का स्थान बढ़ेगा। ता. ५ को मृगशिरा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलत: ता. ५ से ९ तक में बाजार धीमे-धीमे ऊपर की ओर बढ़ने या संभलने की ओर रहेगा। बाजार में तेजी धीरे-धीरे जोर पकड़ने लगेगी। यदि इस जगह बाजार में तेजी दिखे तो बिना भय के खरीदकर चलना चाहिए। एक बार फिर दूर संचार-मीडिया, सूचना पोद्यौगिकी क्षेत्र की कं., नई अर्थव्यवस्था के शेयर, साफ्टवेयर, इनफोसिस, टेक्नोलॉजी, सीमेन्ट, भारी इंजीनियरिंग, पेट्रोरसायन आदि के शेयर चलना प्रारम्भ कर देंगे और यह कम समय में ही अच्छा भाव बना लेंगे। ता. १९ के बाद शेयर बाजार में तेजी का रुख और तेज हो जाने के आसार हैं। ता. २०

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

से ३० तक फार्मा, कम्प्यूटर, इंटरनेट, फर्टीलाइजर्स, रिलायंस समूह, हिन्दुस्तान लीवर, भारी इंजीनियरिंग, पावर, इनफोसिस टेक्नोलॉजी, टेलीकॉम, साफ्टवेयर, पुरानी अर्थव्यवस्था, नई अर्थ व्यवस्था, सीमेन्ट तथा वाहन निर्माता कंपनियों, मीडिया आदि के शेयरों में भी विदेशी निवेशकों के रुझान से तेजी एक तरफा बरकरार रहेगी।

सितम्बर— यह मास रविवार, नवमी तिथि, मृगशिरा, नक्षत्र, वज्र योग, मिथुन राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य, मंगल, सिंह में, बुध कन्या में, शुक्र तुला में, केतु वृश्चिक में, राहु वृष में, शनि मिथुन में, वृहस्पति कर्क राशि में भ्रमणशील रहेगा, जबकि ता. १६ को सूर्य कन्या में, ता. २१ को बुध पश्चिम में अस्त होगा। ता. २८ को शनि वक्री होगा। ता. ३० को मंगल उदय होगा। फलतः ता. २ को आर्द्रा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. २ से ६ तक शेयर बाजार में पेट्रोरसायन, हिन्दुस्तान लीवर, सत्यम् कम्प्यूटर, विप्रो, स्टार लाइट, हिमाचल फ्यू., रिलायंस समूह, वित्तीय संस्थाओं, टेल्को, टिस्को, बजाज आटो, अशोक लीलैण्ड, ए.सी.सी. आई.टी.सी. गुजरात अंबुजा सीमेन्ट, साफ्टवेयर, दूरसंचार आदि के शेयरो में थोड़ा उतार चढ़ाव के मध्य सूचकांक का ग्राफ ऊपर उठेगा। इसे तेजी की लाइन ही समझें। ता. ९ से २० तक भी बाजार काफी अच्छा होने का चांस बन रहा है। किसी नए क्षेत्र के शेयर में तेजी का रुख बने या कम्प्यूटर, पेट्रोरसायन, आयरन, भारी इंजीनियरिंग, साफ्टवेयर मीडिया आदि के शेयरों में विशेष तेजी होने का प्रबल योग बन रहा है। ता. २३ से २७ तक कम्प्यूटर, इंटरनेट, वित्तीय संस्थाओं, फार्मा, इनफोसिस, साफ्टवेयर आदि कंपनियों के शेयर टूटना प्रारम्भ हो जाएगा। ता. ३० को आर्द्रा नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. २८ को शनि वक्री होने से तथा ३० को मंगल का उदय होने से बाजार का गिरना शनि और मंगल रोकना प्रारम्भ कर देंगे। जिससे मंदी में कमी आना प्रारम्भ हो जाएगा और भारी इंजीनियरिंग, पेट्रोरसायन, सीमेन्ट, पावर, वाहन इण्डस्ट्रीज आदि के शेयरों में कम समय में अच्छा बाजार बना लेगा। महीने के अंत तक बाजार कुल मिलाकर तेजी में रहेगा। इस तेजी की अवधि में अगस्त, सितम्बर में सूचकांक काफी ऊंचाई की ओर रहेगा।

अक्टूबर— यह मास मंगलवार, नवमी तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, शिवयोग, कर्क राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य, बुध, कन्या में, शुक्र तुला में, केतु वृश्चिक में, राहु वृष में, शनि मिथुन में, बृहस्पति कर्क में, मंगल सिंह में भ्रमणशील रहेगा। जब कि ता. ५ को बुध पूरब में उदय होगा। ता. ६ को मंगल कन्या में, इसी ता. को बुध मार्गी होगा। ता. ९ को शुक्र वक्री होगा। ता. १७ को सूर्य तुला में, ता. २२ को शुक्र पश्चिम में अस्त होगा। इसी ता. को बुध पूरब में अस्त होगा। ता. २८ को बुध तुला में स्थानान्तर के साथ भ्रमणशील होगा। फलतः ता. १ को पुनर्वसु नक्षत्र में बाजार खुलेगा। ता. ४ से ११ तक के बीच तेजी का वातावरण एक तरफा रहना चाहिए। इन समयों में भारी इंजीनियरिंग, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनियों, साफ्टवेयर, कम्प्यूटर पेट्रोरसायन, कैमिकल्स, पावर, रिलायंस समूह, टाटा समूह, कम्पनियों के शेयर जो तेज चाल वाले हैं उनके ऊपर विशेष अनुकूल असर पड़ेगा। धीमे-धीमे इनका भाव ऊपर बढ़ता रहेगा। ता. १४ से १८ तक भी असमंजस की स्थिति में तेजी बहुत धीमे-धीमे बनेगी, परन्तु मंदी अचानक आएगी। बाजार में अचानक मंदी का वातावरण कायम होगा। तेजी देखते ही सौदा काट लें। ता. २१ से ३१ तक में बुध, शुक्र दोनों अस्त होने से बाजार की मुसीबत शुरू हो जाएगी। कुछ दिन पहले बाजार में थोड़ा बहुत सुधार आया था वह भी विदेशी निवेशकों के दबाव से जोरदार टूटना शुरू हो जाएगा।

नवम्बर— यह मास दिन शुक्रवार, एकादशी तिथि, पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, ऐन्द्र योग, कन्या राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में सूर्य, शुक्र, बुध, तुला में, केतु वृश्चिक में, राहु वृष में, शनि मिथुन में, वृहस्पति कर्क में, मंगल कन्या में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. ६ को शुक्र पूरब में उदय होगा। ता. १५ को बुध वृश्चिक में, ता. १६ को सूर्य वृश्चिक में, ता. २२ को मंगल तुला में, इसी ता. को शुक्र मार्गी होगा। फलतः ता. १ से ५ तक इस अवधि में पुरानी अर्थव्यवस्था, साफ्टवेयर, कम्प्यूटर, पेट्रोरसायन, रिलायंस समूह आदि के शेयरों में अचानक उतार-चढ़ाव का वातावरण यह बनाये रखेगा। अधिकतर समय बाजार दुतरफा रुख लिए ही रहेगा। ऐसे ज्यादा चान्स मंदी के ही बनने चाहिए। ता. ६ को अनुराधा नक्षत्र में बाजार खुलेगा फलतः ६ से १६ तक सूर्य, बुध, शुक्र का योग धीरे-धीरे सुधरना शुरूआत करेगा। ज्यादा तौर पर सत्यम कम्प्यूटर, विप्रो, रोल्टा, सिव्र लाइन, हिन्दुस्तान लीवर, लार्सन एण्ड टुब्रो, हिमाचल फ्यू, आई.टी.सी., ए.सी.सी., गुजरात अंबुजा सीमेन्ट, डी.एस.क्यू. साफ्टवेयर, पेन्टाफोर, ग्लोबल, टेलीकॉम तथा मीडिया सूचना क्षेत्र की कंपनियों के शेयरों में विदेशी निवेशकों के रुझान से उतार चढ़ाव के मध्य अनिश्चित रुख लेकर धीमे-धीमे ऊपर की ओर बढ़ता रहेगा। ता. १८ से २९ तक मंगल तुला में तथा शुक्र मार्गी होने से सभी शेयर बाजारों में उतार चढ़ाव तथा अनिश्चितता का क्रम बना रहेगा। इस समय में एक प्रमुख योग एक ओर बन रहा है। जिसमें यदि बाजार ऊँचाई की ओर बढ़ा तो लगातार तेजी में ही बाजार बना रहेगा। शुक्र मार्गी होने से कुछ अप्रिय घटना शेयर बाजार में उत्पन्न कर सकता है। जो शेयर बाजार के लिए अनुकूल नहीं है।

दिसम्बर— यह मास रविवार, द्वादशी तिथि, चित्रा नक्षत्र, सौभाग्य योग, तुला राशि में प्रारम्भ हो रहा है। मासारम्भ में केतु, बुध, वृश्चिक में, राहु वृष में, शनि मिथुन में, वृहस्पति कर्क में, मंगल, शुक्र तुला में भ्रमणशील रहेगा। जबकि ता. ४ को बुध धनु में, ता. ६ को गुरु वक्री होगा। ता. ७ को बुध पश्चिम में उदय होगा। ता. १५ को सूर्य धनु मे, ता. २५ को बुध मकर में स्थान परिवर्तन के साथ ता. २ को स्वाती नक्षत्र में बाजार खुलेगा। फलतः २ से ६ तक गुरु वक्री होने से बाजार का गिरना रुकेगा और धीरे-धीरे संभलेगा। पुरानी अर्थव्यवस्था, हिन्दुस्तान लीवर, पेट्रोरसायन, चाय, रबर, टेलीकम, ऑयल आदि के शेयरों में तेजी जोर पकड़ सकती है। जब कि ता. ९ से २० तक साफ्टवेयर, दूरसंचार, मीडिया, सूचना प्रोद्यौगिकी क्षेत्र की कंपनियां, कम्प्यूटर, इंटरनेट, वित्तीय संस्थानों, सीमेन्ट, फर्टीलाइजर्स, पेट्रो प्रोडक्टर, उपभोक्ता सामान की कंपनियां, फार्मा आदि के शेयर में तेजी बनने से बाजार तेजी में आ जाएगा। विदेशी निवेशकों के रुझान आशा के अनुरूप से अधिक होने से तथा सभी योग कारक ग्रहों के होने से तेजी का रुख लगातार बना रहेगा। ऐसे तो तेजी पूरे महीना रहने की संभावना है। परन्तु यह ध्यान रखें कर्क राशिगत गुरु वक्री होने से राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय घटना चक्र को प्रभावित कर सकता है।

नोट— उपरोक्त आलेख ग्रहों के गोचर, संचार के आधार पर लिखा गया है। होना न होना ईश्वर के अधीन है। निवेशकगण, स्टॉक एक्सचेंज, शेयर ब्रोकर इसे भली प्रकार पढ़कर अपनी सुझबूझ से सौदा करें। इसमें लाभ-हानि कि हमारी किसी भी प्रकार की कोई जिम्मेवारी नहीं है। यदि आप चाहें तो शेयर बाजार की दैनिक तेजी मंदी के साथ मासिक स्पेशल रिपोर्ट हमारे यहाँ से प्राप्त कर सकते हैं। जिसका शुल्क इस प्रकार है-एक साथ चार माह का १८५० रु., ६ माह का एक साथ २६०० रु., एक वर्ष का शुल्क ५००० रु. निर्धारित है। यह ध्यान रखें चार माह से कम की रिपोर्ट नहीं भेजी जाती। शुल्क आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, सासाराम (रोहतास), बिहार अथवा सेन्ट्रल बैंक ऑफ इण्डिया, सासाराम (रोहतास), बिहार के नाम से ड्राफ्ट भेज कर स्पेशल रिपोर्ट प्राप्त की जा सकती है। जन्म पत्रिका 'आधुनिक साफ्टवेयर कम्प्यूटर' द्वारा निर्मित कर शंका समाधान स्वयं लिखित किया जाता है। जिसका शुल्क इस प्रकार है। साधारण ५५१ रु., मध्यम ७५० रु., स्पेशल ११५१ रु. दक्षिणा निर्धारित है। जन्म पत्रिका विचार अथवा हस्तरेखा विचार शुल्क समाधान १५१ रु. निर्धारित है। साक्षात्कार के लिए दिन में दो बजे से ५ बजे शाम तक उपरोक्त फोन नम्बर पर वार्ता कर लें तो बेहतर है।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हस्त रेखाएं बताती हैं आपका कैरियर

हस्त सामुद्रिक शास्त्र में व्यक्तित्व के आधार पर नर नारी के विषय में जानकारी देने वाले अनेक तथ्य प्रचलित किए गए हैं। रेखाएं, चिन्ह, रंग, आभा आदि की बनावट का गम्भीरता पूर्वक निरीक्षण करके ज्योतिष शास्त्रियों ने जो सिद्धान्त प्रतिपादित किये हैं वे आज भी अकाट्य हैं। जिसने हस्त सामुद्रिक विधीवत अध्ययन किया हो ऐसे ज्योतिष शास्त्री सुगमता से किसी के सम्बन्ध में शुभाशुभ भविष्यवाणी प्रस्तुत कर सकते हैं।

यहाँ प्रसंगत: कुछ विशेष प्रकार की नौकरी, पद, वृत्तिवाले लोगों के विषय में ज्ञात तथ्य प्रस्तुत किए जा रहे हैं। यह तथ्य किसी एक रेखा पर आधारित न होकर हथेलियों में अंकित विभिन्न चिह्नों का सामुहिक रूप हैं। आगे कुछ विशेष वृत्ति का संकेत देने वाले चिह्नों का जिक्र किया जा रहा है। जिसकी हथेलियां में ऐसे चिह्न पाए जाएं, तो समझना चाहिए कि ऐसी रेखा धारक मानव इन लक्षणों के आधार ऐसी वृत्ति और स्वभाव, व्यवहार वाला होगा। हथेलियों में अंकित चिह्नों के द्वारा मनुष्य के एक विशेष व्यक्तित्व और जीवन क्षेत्र का निर्माण करते हैं। अत: युवावर्ग को मेरी यही सलाह है कि कैरियर के चयन में हस्त सामुद्रिक शास्त्र प्राचीन विद्याओं की सहायता अवश्य लेनी चाहिए। इससे आपको कैरियर में असफलताओं का सामना नहीं करना पड़ेगा। प्रस्तुत आलेख में हस्तरेखाओं के अद्‌भुत चिह्न, रंग, आभा, प्रकाश, युग्म स्थिती, योग के आधार पर विभिन्न कैरियरों के सम्बन्ध में कुछ मौलिक योग आप विद्वान् पाठकों के बीच विवेचित हैं। यथा–

सुरक्षाकर्मी बनने का योग—वैसे अपना शरीर, घर, परिवार और संपत्ति की रक्षा के प्रति तो सभी सजग रहते हैं परन्तु कुछ नर-नारियों को वृत्ति के रूप में सुरक्षा कर्म अपनाना पड़ता है। मामूली चकुदार से लेकर पुलिस, दरोगा, कप्तान, सेना, कर्नल, कैप्टन, मेजर, ब्रिगेडियर और जनरल तक सब सुरक्षाकर्मी कहे जाते हैं। सामान्य रूप से सुरक्षाकर्म से सम्बन्धित जुड़े व्यक्तियों की हथेलियों में विशिष्ट चिह्न अंकित होता है। ऐसे पेशादार मनुष्यों की हथेलियों में मंगल पर्वत पूर्ण रूप से विकसित, मनोहर और उठावदार होता है। ऐसे धारक मनुष्यों में भाग्य रेखा की शुद्ध स्थिती और मंगल पर्वत का क्षेत्र पूर्ण विकसित होना, मंगल पर नक्षत्र का चिह्न, यह लक्षण भी सुरक्षाकर्मी बनाने में बहुत सहायक होता है। लम्बा,मोटा, मजबूत, अंगूठा भी सुरक्षाकर्मी वृत्ति का सूचक माना जाता है। मंगल पर्वत निर्दोष हो तथा सूर्य रेखा भी दोषरहित हो और भाग्य रेखा कुछ दुर्बल हो तो मानव सेना में मेजर, ब्रिगेडियर, जनरल तथा पुलिस में आरक्षी अधीक्षक से लेकर पुलिस महानिदेशक तक पद सुशोभित करते हैं। अंगूठा टेढ़ा-मेढ़ा, हथेलियां का चमड़ा रूखा, कुछ कठोर हो मानस रेखा मंगल पर्वत तक सीधे गया हो तो जातक सुरक्षाकर्मी, चकुदार से लेकर दरोगा तक होते देखा गया है। परन्तु मानस रेखा सीधे मंगल पर्वत को पार कर जाए तथा भाग्य रेखा भी शनि पर्वत को पार कर जाए तो सुरक्षाकर्मी एक ना एक दिन अवश्य ही शहीद हो जाते हैं। यह अति अशुभ सूचक चिह्न हैं। शुभ या अशुभ रेखा धारक सुरक्षाकर्मी आजीवन मूंगा ६ रत्ती और श्री पंचमुखी हनुमान कवच यंत्र एक साथ किसी मंगलवार को धारणीय हैं। सम्भव हों तो श्री मारुतीनन्दन की पूजा अर्चना भी आपके लिए लाभदायक मानी जाती है।

चिकित्सक बनने का योग—रोग व्याधि की पीड़ा से मुक्ति दिलाने का जो कार्य करता है उसे चिकित्सक कहा जाता हैं। चिकित्सा कि अनेक पद्धतियाँ हैं। अपने आप में वे सभी लाभकारी हैं। देश की सबसे प्राचीन बहु चर्चित चिकित्सा पद्धति आयुर्वेद शास्त्र है। वैसे तो यूनानी, होमियोपैथिक, एलोपैथिक आदि कई पद्धतियाँ सफलता पूर्वक प्रचलित हैं। अस्तु वैद्य, हकीम अथवा चिकित्सक, उपचारक कहे जाते हैं। हस्त सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार एक सफल चिकित्सक की हथेलियां में मंगल पर्वत अविकसित हो परन्तु गुरु पर्वत उभरा हुआ स्पष्ट और निर्दोष हो, उस पर स्टार (तारा) का चिह्न बना हो तो ऐसे जातक एलोपैथिक हृदय रोग के विशेषज्ञ चिकित्सक होते हैं। यदि गुरु पर्वत पर त्रिशूल का चिह्न हो तो मनोरोग विशेषज्ञ, यदि गुरु पर्वत पर वर्गाकार चिह्न बना हो तो नर-नारी शल्य चिकित्सक होते देखे गए हैं। भाग्य रेखा मणिबंध संधि से उठकर मानस रेखा तक पहुँची हो और सूर्य रेखा अविकसित हो तो जातक आयुर्वेद ग्रन्थ के काया चिकित्सक होते हैं। यदि सूर्य रेखा पर एक लम्बी लकीर हो तो जातक होम्योपैथिक पद्धति के कुशल चिकित्सक होते हैं। बुध पर्वत सम्पूर्ण विकसित हो, कनिष्ठा अंगुली पर्याप्त लम्बी हो उसका सिरा अनामिका के तीसरे छोर को छूता हो तो नर-नारी रती रोग अथवा चर्म रोग के विशेषज्ञ होते हैं। परन्तु ऐसे रेखा धारक नर-नारी को कन्या की संतति तो होती हैं पर उन्हें पुत्र रत्न की प्राप्ति नहीं होती। भाग्य रेखा से कोई रेखा उठकर कनिष्ठा अंगुली के पास हृदय रेखा तक पहुँचे तो जातक हड्डी अथवा मांसपेशियों के सफल चिकित्सक होते हैं। भाग्यरेखा चंद्र स्थान से उठकर हृदय रेखा तक पहुँची हो तथा सूर्य रेखा पूर्ण विकसित हो तो नर-नारी आँख, नाक, गला रोग के विशेषज्ञ होते हैं। बुद्ध पर्वत उठावदार मनोहर हो तथा गुरु पर्वत भी विकसित हो तथा भाग्य रेखा दुर्बल हो तो जातक कैंसर, दमा, सुराइसिस, नस-नाड़ियां तथा साईनेक्स जैसे गम्भीर रोगों के प्रख्यात चिकित्सक होते हैं। यदि इस कार्य के प्रवेश में बाधा आ रही हो अथवा चिकित्सा कार्य में भी बाधाएँ उत्पन्न हो रही हों तो जातक दस महाविद्या से प्राण-प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न लॉकेट, पन्ना मरगज की माला तथा श्री काशी विशेश्वर कवच यंत्र एक जाय अवश्य धारण करें।

इंजीनियर बनने के योग—गृह, मंदिर, पुल, सड़कें, कम्प्यूटर, साफ्टवेयर तथा अन्य प्रकार के भौतिक निर्माण कार्यों में हर नर-नारी जानकारी नहीं रखता। इसके लिए विशेष शिक्षा प्राप्त नर-नारी ही सफल माने जाते हैं। इन्हें अभियन्ता अथवा इंजीनियर कहते हैं। वे अपने विषय के विशेषज्ञ होते हैं और भौतिक प्रगति, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में इनका योगदान अपेक्षित होता हैं। हस्त सामुद्रिक शास्त्र में हथेलियों के कुछ ऐसे चिह्नों की ओर इंगित किया गया है जिसकी उपस्थिति उस नर-नारी के अभयांत्रिकी ज्ञान की सूचना देती हैं। मानस रेखा पूरे तौर पर निर्दोष हो, शनि रेखा भी विकसित हो, चंद्र पर्वत उभरा हो और उस पर चंद्रमा की रेखा भी विद्यमान हो तो ऐसे नर-नारी प्राय: वायुयानों में यांत्रिक कार्य करते हैं। यदि भाग्य रेखा निर्दोष हो और शुक्र पर्वत विकसित हो, उठावदार हो तो नर-नारी कम्प्यूटर, इंटरनेट, साफ्टवेयर आदि के कुशल इंजीनियर होते हैं। गुरु पर्वत अपेक्षाकृत निर्बल हो परन्तु शुक्र पर्वत उठावदार मनोहर हो, भाग्य रेखा चंद्र स्थान से उठकर शनि स्थान तक पहुँचे तो जातक विख्यात पुल, वास्तुशास्त्र अथवा भारी इंजीनियरिंग में मर्मज्ञ वैज्ञानिक होते हैं। शनि रेखा, मानस रेखा स्पष्ट और दोष रहित हो साथ ही चंद्रमा रेखा पूर्ण विकसित हो तथा शुक्र पर्वत प्रकाश किरण की भाँति प्रकाश पुंज जैसी हो तो ऐसी रेखा धारक व्यक्ति निश्चित ही इंजीनियर होता है। यदि अंगूठा लम्बा हो, भाग्यरेखा प्रबल हो, बुध पर्वत भी विकसित हो तथा इस पर्वत पर एक लम्बी लकीर हो तो जलयान अथवा आधुनिक साफ्टवेयर के प्रख्यात ऐसे जातक इंजीनियर होते हैं। बुध पर्वत और गुरु पर्वत दोनों ही सामान्य भाव में पूर्ण विकसित हों तो जातक रोड अथवा निर्माण विभाग में कुशल इंजीनियर होते हैं। परन्तु ऐसी रेखा धारक जातक का विवाह काफी विलम्ब के बाद होता है। इस कार्य प्रवेश में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों अथवा पूर्ण सफलता में बाधा हो तो जातक नवारण मंत्र से प्राण प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न लॉकिट, स्फटिक माला तथा श्री दुर्गा कवच लॉकिट एक साथ धारणीय हैं।

अधिवक्ता बनने का योग—भाग्य रेखा से कोई रेखा उठकर बुध पर्वत को स्पर्श करे तथा सूर्य रेखा पूर्ण विकसित हो तो नर-नारी सिविल का वकील होते हैं। जबकि सूर्य रेखा अविकसित हो तो नर-नारी अपराध जगत के प्रख्यात अधिवक्ता होते हैं। शनि रेखा और मंगल पर्वत अविकसित हो परन्तु गुरु पर्वत उठावदार मनोहर हो तो जातक वित्त जगत के कुशल अधिवक्ता होते हैं। मानस रेखा के अन्त में दो भागों में विभक्त होकर बुद्ध और चन्द्र पर्वत की ओर जाती है तो ऐसे नर-नारी सेलटैक्स, इनकमटैक्स के अधिकारी होते हैं। गुरु पर्वत, सूर्य, पर्वत और चंद्र पर्वत उठावदार मनोहर हों तो जातक सफल अधिवक्ता होते हैं। शनि पर्वत भग्न हो, बुध पर्वत और सूर्य पर्वत उठावदार हो तो जातक अधिवक्ता तो बन जाते हैं परन्तु जीविकोपार्जन में कठिनाई होती है। यदि इस कार्य में सफलता न मिल पा रही हो तो श्री यंत्र युक्त नवरत्न लॉकिट, चिकनी स्फटिक माला तथा सर्व विघ्न नाशक श्री आदित्य हृदय स्तोत्र कवच यंत्र एक साथ धारण करें।

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri Funding by MoE-IKS

उच्चाधिकारी बनने का योग—प्रशासनिक अधिकारियों को वर्तमान समय में प्रशासन सम्बन्धी विशेष दक्षता प्राप्त करना अपेक्षित होता है। इसके लिए वे लम्बे समय तक विषय विशेष में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। तदुपरान्त सैद्धान्तिक और व्यवहारिक रूप में स्वयं अनुभवी बनकर राज्यसेवा में सम्मिलित होते हैं। आई.ए.एस. इस देश की सर्वोच्च प्रशासनिक योग्यता है। हजारों शिक्षितों में अनेक गुणों और अर्हताओं से सम्पन्न होने के बावजूद भाग्यशाली प्रत्याशी ही इन उच्चतम पदों को प्राप्त कर पाते हैं। सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार उच्चाधिकारी पदों पर पहुँच सकने वाले स्त्री पुरुषों की हथेलियों में भाग्यशाली, भाग्य वर्धक चिह्न अंकित होते हैं। यदि भाग्यरेखा मणिबंध से प्रारम्भ होकर ठीक शनि पर्वत के नीचे अपने पथ से विचलित होकर गुरु पर्वत की ओर जाती हो और अंत में त्रिशूल का चिह्न बनाती हो तो ऐसे नर-नारी चिह्नों से युक्त हों तो निश्चित ही उच्चाधिकारी होते हैं। यदि कनिष्ठ, अनामिका के नाखून तक पहुँचती है और सूर्य रेखा तथा भाग्य रेखा स्पष्ट एवं निर्दोष हो तो ऐसे नर-नारी उच्च पदाधिकारी होते हैं। गुरु पर्वत विकसित हो तथा उस पर कोई चिह्न नहीं हो एवं तर्जनी अंगुली अनामिका अंगुली से लम्बी हो तो नर-नारी छोटे स्तर की नौकरी से कुछ समय के बाद अपने साहस, पुरुषार्थ एवं सत्य प्रयत्न से एक ना एक दिन जिलाधिकारी अवश्य होते हैं। सूर्य पर्वत और गुरु पर्वत पूर्ण विकसित हो तथा भाग्यरेखा चंद्र स्थान से उठकर मानस रेखा पर समाप्त हो रहा हो तो जातक निश्चित ही किसी विभाग के प्रबन्धक अथवा निदेशक होते हैं। ऐसे जातक प्रायः अपने माता-पिता के इकलौती संतान होते हैं। इनमें साहस, पुरुषार्थ, सहनशीलता और गम्भीरता विशेष होती है। इनमें प्रतिनिधित्व करने की भी पूर्ण क्षमता बचपन से ही प्रदर्शित होती है।

राजनीतिज्ञ बनने का योग—दोनों हथेलियों में शनि, सूर्य, शुक्र और बुध पर्वत विकसित हो तथा भाग्य रेखा दुर्बल हो तो जातक ३५ वर्ष से ३७ वर्ष के बीच निश्चित ही विधायक अथवा सांसद बन जाते हैं। यदि शनि पर्वत अविकसित हो, सूर्य पर्वत उठावदार मनोहर हो तो जातक ग्राम प्रधान, मुखिया अथवा जिला परिषद के अध्यक्ष होते हैं। यदि सूर्य पर्वत अविकसित हो, भाग्यरेखा मणिबंध संधी से उठकर शनि पर्वत तक पहुँच गया हो तथा गुरु पर्वत पर मन्दिर अथवा डमरू का चिह्न हो तो जातक राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, राज्यपाल अथवा मुख्यमंत्री होते हैं। यह शुभ युग्म चिह्न बहुत भाग्यशाली मनुष्यों के हाथों में ही परलक्षित होता है। यह एकाएक प्रबल राजयोग कारक चिह्न माना जाता है। गुरु पर्वत भग्न हो, सूर्य रेखा उठावदार, मनोहर हो, भाग्य रेखा भी प्रबल हो तो जातक किसी निगम का अध्यक्ष अथवा मंत्री होते हैं। यदि सूर्य रेखा स्पष्ट, निर्दोष एवं लालिमा युक्त हो साथ ही भाग्य रेखा भी स्पष्ट एवं निर्दोष हो और बुध पर्वत पर त्रिभुज का चिह्न हो तो ऐसे नर-नारी एक ना एक दिन सूचना प्रसारण विभाग या दूरसंचार विभागमें मंत्री पद प्राप्त करते हैं। ऐसे रेखा धारक जातकों का शुरूआती जीवन दुःखमय होता है। जीवन में मान-सम्मान, यश, लाभ हेतु नवग्रहों से प्राण प्रतिष्ठायुक्त, नवरत्न लकिट, पावरफुल स्फटिक माला, गोमेद ७ रत्ती तथा सर्वविघ्न नाशक विसा कवच लॉकिट एक साथ आजीवन धारणीय हैं। हमारे यहाँ शोध पूरक आधुनिक साफ्टवेयर मशीन द्वारा अपनी देख-रेख में जन्मपत्रिका निर्माण कराया जाता है। जिसका शुल्क इस प्रकार है—साधारण ४५१ रु., मध्यम ६५१ रु., स्पेशल ७५१ रु., सर्वोत्कृष्ट ११५१ रु., निर्धारित हैं। शेयर बाजार की तेजी मन्दी गतिविधियों पर आधारित स्पेशल रिपोर्ट भी प्राप्त की जा सकती है। एक साथ चार माह का शुल्क १८५० रु., ६ माह का शुल्क २६५० रु., १ वर्ष का शुल्क ५००० रु. निर्धारित हैं। दुर्लभ योगों में कवच यंत्रों का भी निर्माण किया जाता है।

पाठकों की समस्याएं और ज्योतिषीय समाधान

संसार में समय की सर्वोपरि शक्ति के रूप में मान्यता प्राप्त है। ये शक्तियां प्रायः चुकती, बनती और बदलती रहती हैं। पर एक मात्र काल ही ऐसी शक्ति है जिसका कभी विनाश नहीं होता पर उसका प्रभाव प्रत्येक नर-नारी पर अलग-अलग पड़ता है। इस परिवर्तन के कारण ही मानव जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। उसी समय परिवर्तन के कारण ही मानव जीवन में आए भूचाल से मनुष्य टूटा सा, हारा सा, हताश, परेशान, अनेक विडम्बनाओं से दुःखी रहता है। लाचार होकर शांति की खोज में इधर-उधर भटकने लगता है। ऐसे ही अनेक समस्याओं से ग्रस्त पाठकों की समस्याओं का समाधान लिखने का प्रयास कर रहा हूँ। मेरे इस प्रयास से किसी भी पाठकों को कुछ भी लाभ हुआ तो मैं अपना प्रयास और परिश्रम सार्थक समझूँगा। आशा है आप विद्व पाठकों को इस स्तम्भ से अवश्य संतोष प्राप्त होगा।

(१) हमेशा ऋणभार से ग्रस्त रहता है। इससे मुक्ति का उपाय?—आज के भाग-दौड़ के युग में ही नहीं, बल्कि सामाजिक जीवन में धन की प्रमुखता प्रधान है। धन के अभाव में अनर्थ हो जाता है। कारण कि प्रायः समस्त सांसारिक कार्यों के निवारण हेतु धन की आवश्यकता सर्वोपरि है। धन के रहते मनुष्य को किसी भी प्रकार का अभाव अथवा कष्ट नहीं होता। इसीलिए संसार में धन को प्रधानता दी गई है। धन-संपत्ति की स्वामिनी श्री लक्ष्मी जी हैं जो भगवान विष्णु की धर्मपत्नी हैं। इनकी कृपा प्राप्ति के लिए मनुष्य भली-भाँति श्रद्धा विश्वासपूर्वक उपाय व जप-तप करते हैं। इन क्रियाओं के करने से पर-परिवार में प्रचुर धन की प्राप्ति होने लगती है। घर में पूजा स्थल पर श्री कनकधारा कवच यंत्र तथा श्री कुबेर कवच यंत्र के फोटो को मढ़वाकर रख लें तथा किसी माह के शुक्ल पक्ष में पुष्य नक्षत्र में संध्या समय स्नान करके घी का दीपक जलाकर लक्ष्मी जी की पूजा अर्चना करके लाल चंदन अथवा मूंगे की माला से ५१ बार "अरुण कमल संस्था तद्रजः पुञ्जवर्णा, कर कमल धृतेष्टा भीतियुग्माम्बुजाता। मणिमुकुट विचित्राऽलंकृता काप्या जाले, सकल भुवन माता सन्ततः श्री श्रियै नः॥" इस मंत्र का जाप करें। यदि संस्कृत में इस मंत्र का जप करना संभव न हो तो श्रद्धा विश्वास पूर्वक "जिमि सरिता सागर महुं जाही। यद्यपि ताहि कामना नाही॥ तिमि सुख सम्पति बिनहिं बोलाएं। धरमसील पहिं जाहि सुभाएं।" इस श्लोक का तीन माला जप करने से ऋणग्रस्तता धीरे-धीरे गिर जाती है तथा घर में प्रचुर धन की प्राप्ति होने लगती है।

(२) प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता हेतु परीक्षित एवं प्रमाणित उपाय—हजारों शिक्षित अनेक गुणों और अर्हताओं से सम्पन्न होने के बावजूद भी भाग्यशाली प्रत्याशी ही इन उच्चतम पदों की परीक्षा में सफल हो पाते हैं। असफलताओं की स्थिति में परीक्षार्थियों में हताशा और निराशा उत्पन्न हो जाती है। ऐसी स्थिति में सूर्योदय कैसे होगा? आत्मबल बनाकर सतत् प्रयास जारी रखें। किसी कारण वश बाधा आ रही हो तो श्री यंत्रयुक्त नवरत्न लॉकिट, स्फटिक माला, मैसूरी माणिक्य चार रत्ती तथा सूर्य विघ्ननाशक श्री काशी विशेश्वर कवच यंत्र किसी शुक्ल पक्ष में पुष्य नक्षत्र में इसे धारण कर रक्त चन्दन की माला से पवित्र मन से घी का दीपक जलाकर "ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वागवादिनी भगवती अर्हन्मुख निवासिनी सरस्वती ममास्ये प्रकाशं कुरु कुरु स्वाहा ऐं नमः। मंत्र का जप नियमित एक माला करें। यदि संभव न हो तो 'गुरु गृह गए पढ़न रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई॥' श्लोक का एक माला जाप प्रत्येक दिन करें तो विद्या, ज्ञान, प्रतिभा तथा प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त होती है। यह परीक्षित एवं अनुभव सिद्ध तथ्य है।

(३) उद्योग-व्यवसाय में बाधाएं दूर करने के उपाय—भय मुक्त होकर शांति संतोष से कार्य करें, डरें नहीं। शक्ति से ज्यादा, निरर्थक प्रदर्शन न करें। सीमा के अन्दर कार्य करें। लापरवाही, आलस्य पास न आने दें। नगद कारोबार करें। फिर भी बाधाएं आप अनुभव कर रहे हों तो श्री यंत्र लॉकिट, दश महाविद्या से प्राण प्रतिष्ठा युक्त नवरत्न लॉकेट, पन्ना, मरगज की माला धारण कर किसी योग्य विद्वान से सर्व बाधा मंत्र से संपुट पाठ अवश्य करवा दें। यदि संभव न हो तो कमलगट्टा की माला से "ॐ ऐं ह्रीं श्री क्लीं ह्स सौः जगत्प्रसूत्यै नमः" मंत्र का जाप तीन माला घी के दीपक जलाकर करने से वस्तुतः आर्थिक उन्नति, भौतिक सुख, व्यापार वृद्धि एवं अन्य समस्त सुखोपभोग के लिए भी इस मंत्र का अनुष्ठान विशेष महत्वपूर्ण माना गया है। परन्तु प्रत्येक उपासना की सिद्धि में गुरुदीक्षा एवं प्रयोग रहस्य की पूरी जानकारी आवश्यक है।" ॐ ह्रीं महापक्षमयै च विद्महे

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

विष्णुपत्न्यै च धीमहि। तन्नो लक्ष्मी प्रचोदयात्।' मंत्र का जाप भी २१ माला करने का विधान है। इस मंत्र के जाप से पहले किसी योग्य विद्वान से गुरु दीक्षा अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए।

(४) गृहस्थ जीवन की बाधाएं दूर करने तथा शांति संतोष प्राप्ति के लिए उपाय—पुत्र तथा पुत्री के विवाह में बाधाएं उत्पन्न हो रही हों, गृहस्थ जीवन में पत्नी, पुत्र आदि द्वारा इच्छित सुख-शांति प्राप्ति हेतु नवग्रह मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा युक्त नवरत्न लॉकेट, स्फटिक माला, सर्वविघ्न नाशक श्री पंचमुखी हनुमान कवच यंत्र पुष्य नक्षत्र में धारण कर पूजा स्थल पर दुर्गा कवच यंत्र फोटो मढ़वाकर लाल पुष्प नैवेद्य वगैरह चढ़ाकर घी के दीपक जलाकर रक्त चन्दन की माला से किसी शुक्रवार से 'मातङ्गी मंत्र—ॐ ह्रीं क्लीं हूं मातङ्ग्यै फट् स्वाहा. मंत्र का कम से कम तीन माला जप करें। यदि संभव न हो तो "भुवन चारिदस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर बिआहू॥" स्तुति कर १२१ बार जप करने से गृहस्थ जीवन की बाधाएं दूर होकर मनोनुकूल फल की प्राप्ति होती है।

(५) क्या आप सदैव शत्रु से परेशान रहते हैं, शत्रु जान मारने का प्रयास कर रहा है, आप अज्ञात पीड़ा से भयभीत हैं? इससे मुक्ति का उपाय—आप किसी भी तरह के शत्रु से परेशान हों तो डरें नहीं, उलझें नहीं, मौन रहें, बुद्धि से काम लें। शत्रु प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष, आप सदैव केस-मुकदमा में भी परेशान रहते हों, या शत्रु आक्रमण से आप सदैव भयभीत हों तो शत्रुदमन, विवाद विजय, विरोध, नाश आदि के लिए माता बंगलामुखी देवी के मंत्र का शरण लेते हैं। बगलामुखी मन्त्र का अनुष्ठान शत्रुओं पर विजय प्राप्ति करने एवं समाप्त विघ्न बाधाओं की निवृत्ति के लिए विश्व विख्यात हैं। किन्तु इसके अनुष्ठान में पूर्ण सतर्कता आवश्यक है। इस मंत्र को विधि-विधानपूर्वक सवा लाख जप एवं चम्पा के पुष्प द्वारा हवन करने से न्यायालय में विजय और प्रबल शत्रु भी परास्त होकर दास बन जाते हैं। इसमें कोई संशय नहीं। मंत्र जप से पहले दस-महाविद्या से प्राण-प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न लॉकेट, छोटा रुद्राक्ष माला, मलयागिरी चंदन का माला तथा श्री बगलामुखी कवच लॉकेट किसी योग्य मुहूर्त में धारण कर रक्त चंदन की माला से "ॐ ह्रीं बंगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं नाशय ह्रीं ॐ स्वाहा।" जप करें। यदि संभव न हो सके तो किसी योग्य विद्वान से भी कराया जा सकता है। सम्भव हो तो स्वयं प्रत्येक दिन सुबह-शाम 'बयरु न कर काहू सन कोई। राम प्रताप विषमता खोई॥' इस श्लोक का जप तीन माला करें तो शत्रुओं से मुक्ति संभव है। उपरोक्त प्रयोग परीक्षित एवं अनुभव सिद्ध तथ्य हैं।

(६) असाध्य रोग से पीड़ित हो या औषधि सेवन के बाद भी कोई लाभ नहीं होता हो, बीमारी जानलेवा हो? जीवनदान के लिए अचूक उपाय—रोग किसी भी तरह का हो तो घबड़ाएं नहीं, आत्मविश्वास बनाए रखें। योग्य चिकित्सकों की देख-रेख में औषधि लेते रहें तथा किसी योग्य विद्वान से श्री महामृत्युंजय जप सवा लाख कराने का विधान है। जप से पहले पीड़ित को लघु मृत्युंजय मंत्र से प्राण प्रतिष्ठा युक्त नवरत्न का लॉकेट, मलयागिरी चंदन की माला, श्री महामृत्युंजय कवच लॉकेट धारण कराकर किसी माह के शुक्ल पक्ष के पुष्य नक्षत्र में यह अनुष्ठान प्रारम्भ कराना चाहिए। "ॐ ह्रौं जूँ स: भूर्भुव: स्व: त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टि वर्द्धनम्। ऊर्वारुकमिव बन्धनान् मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुव: स्व: जूँ स: ह्रौं ॐ॥" यह महामंत्र अकाल, मृत्यु, अल्पायु, शत्रु भय, रोग भय, दुर्घटना, युद्ध भय, ज्ञात-अज्ञात भय, आक्रमण और संकटों के निवारण हेतु परम कल्याणकारी और जीवनदायिनी मृत संजीवनी माना जाता है। यदि यह अनुष्ठान किसी कारण वश संभव न हो सका तो स्वयं रुद्राक्ष की माला से "ॐ ह्रौं जूँ स: मंत्र का जप अथवा "ॐ नम: शिवाय" मंत्र का जप ११ माला करने से भी शांति, संतोष प्राप्त होता है। भगवान शिव के मंत्रों में मृत्युंजय मंत्र को रोग, जरा और मृत्यु का निवारक कहा गया है।

(७) सभी तरह के प्रयास से आप निराश हो गए हों, संतान प्राप्ति की जिज्ञासा प्रबल हो तो पुत्र प्राप्ति के लिए कुछ अलौकिक उपाय—सर्वप्रथम पती-पत्नी अपनी-अपनी जन्मपत्रिकाएं किसी योग्य विद्वान से जाँच करवा लें। यदि जन्म-पत्रिका न हो तो जानकार हस्त रेखा विशारद से अपनी-अपनी हस्त परीक्षण करवा लें। यदि जीवन काल सर्प योग से ग्रसित हो अथवा पुत्र बन्धया योग हो तो किसी योग्य विद्वान से पितृ पक्ष में नारायण बली विधी पूर्वक करवा दें। तथा पंचम, सप्तम तथा द्वादश भाव में विराजमान अशुभ ग्रहों का अथवा हस्तरेखा में विराजमान अशुभ ग्रहों का पुराचरण बीज मंत्र से जप विधि पूर्वक करा देना चाहिए। ऐसे तो संसार में मानव के लिए जीवनोपयोगी सुविधाओं, साधनों की आवश्यकता सर्व स्वीकृत है। उनमें अन्न, जल, वस्त्र, निवास प्रमुख हैं। इसी प्रकार पारिवारिक सुख-सुविधा के लिए संतान का होना अनिवार्य माना गया है। दम्पति चाहे जितना सम्पन्न हो परन्तु बिना संतान के एकांकी-एकांगी और शून्यतायुक्त रहता है। यदि आपकी उम्र ज्यादा हो रही हो तो पती-पत्नी लघु मृत्युंजय मन्त्र से प्राण प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न लॉकेट, स्फटिक माला तथा श्री संतान गोपाल कवच यंत्र एक साथ किसी शुक्ल पक्ष में शुभ मुहूर्त में धारण कर किसी योग्य विद्वान से किसी ज्योतिर्लिंग में हरिवंश पुराण श्रवण करें तो निश्चित संतान की प्राप्ति संभव है और स्वयं पती-पत्नी प्रत्येक दिन घी के दीपक जलाकर मलयागिरी चंदन की माला से श्रद्धा विश्वासपूर्वक "प्रेम मगन कौशल्या, निसि दिन जात न जान। सुख स्नेह बस माता बालचरित कर गान॥" श्री रामचरितमानस का यह श्लोक कम से कम १०८ बार करने से संतान की प्राप्ति होती है।

(८) जिन कन्याओं के विवाह में अक्सर बाधाएं उत्पन्न हो रही हों, चाहे कन्या माङ्गलिक हो अथवा कालसर्प योग से ग्रसित हो तो अनुभव सिद्ध उपाय—किसी योग्य विद्वान से कन्या की जन्मपत्रिका का अवलोकन कराकर पाप ग्रहों का पुरा चरण बीज मंत्र से जाप करवा दें तथा कन्या को नवारण मंत्र से प्राण प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न लॉकेट संग मितारा माला तथा श्री महामृत्युंजय कवच यंत्र एक साथ गुरु पुष्य अमृत योग में इसे धारण करावें। स्वयं कन्या प्रत्येक दिन रक्त चन्दन की माला से घी के दीपक जलाकर माता दुर्गा को स्मरण करते हुए "ॐ श्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं।" मंत्र का जप तीन माला करें। यदि यह संभव न हो तो 'तब जनक पाई वसिष्ठ आयसु ब्याह साज सवारि कें। माण्डवी श्रुति कीरति उर्मिला कुअँरि लईं हंकारी कै॥' श्री रामचरित मानस के पवित्र श्लोक का जप १०८ बार करने से शीघ्र विवाह संपादन हो जाता है। यदि स्वयं संभव न हो सके तो कोई योग्य विद्वान से ३१ हजार महामृत्युंजय जप करवा देना चाहिए।

(९) क्या आप निरन्तर मानसिक रूप से स्वयं थका हुआ। उदास, बेचैन तथा कार्य करने में असमर्थता अनुभव करते हैं। अनेक प्रयास कर चुके हैं फिर भी दरिद्रता समाप्त नहीं होती। नौकरी में विघ्न-बाधाएं उत्पन्न होती हैं। नौकरी में पदोन्नति चाहते हैं। दाम्पत्य जीवन में भी असंतुष्टि अनुभव कर रहे हों तो इन समस्याओं का निदान—आप पवित्र मन से प्रात: काल स्नान करके सफेद वस्त्र धारण कर भगवान शिव की प्रतिमा के सामने अथवा श्री महामृत्युंजय कवच यंत्र फोटो मढ़वाकर घी के दीपक जलाकर रुद्राक्ष की माला से 'ॐ ह्रौं जूँ स:' मंत्र से या 'ॐ नम: शिवाय' मंत्र का जप ग्यारह माला प्रत्येक दिन करें। जप करने से पहले नवग्रह बीज मंत्र से प्राण प्रतिष्ठायुक्त नवरत्न लॉकेट, मलयागिरि चंदन की माला, स्फटिक माला, श्री सर्वकामना पूरक आदित्य हृदय स्तोत्र कवच यंत्र किसी रविवार को धारणीय है। उपरोक्त जप उपरान्त 'श्री ह्रीं क्लीं ऐं वज्रवैरोचनीये हूं हूं फट् स्वाहा।' मंत्र का एक माला जप करने से समस्त अशुभता दूर होकर शांती संतोष प्राप्त होता है।

हमारे यहाँ आधुनिक साफ्टवेयर मशीन द्वारा अपनी देख रेख में तथा प्राचीन भृगु संहिता पर आधारित पूरे जीवन का फला-फल जन्मपत्रिका निर्माण किया जाता है। जिसकी दक्षिणा इस प्रकार है: साधारण ४५१, मध्यम ६५१, स्पेशल ९५१, सर्वोत्कृष्ट १२५१ रु. निर्धारित है। विभिन्न सिद्धि योगों में अचूक, अबोध, फलदायी कवच यंत्रों का भी निर्माण किया जाता है। जिसकी दक्षिणा एक प्रति यंत्र का साधारण २५१, मध्यम ५५१, स्पेशल १०५१ रु. निर्धारित हैं। सभी कवच यंत्र पूर्णतया विशुद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त शास्त्रोक्त विधि द्वारा ही दुर्लभ योगों में निर्माण किया जाता है। पत्राचार के लिए जवाबी लिफाफा अवश्य भेजें। अस्तु॥

ज्योतिषाचार्य—आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, करौन्दी, पो. सरांव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार)-८०२२१८ (भारत) ज्योतिष विशारद, ज्योतिषवाचस्पति, डॉ० ऑफ ऐस्ट्रालॉजी, डी. लिट् मानद, अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक एवम् नेपाल राष्ट्र द्वारा सम्मानित। दूरभाष-०६१८५-४६४८०, ४६४७५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection
आर्यभट्ट पंचाङ्गम्

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

सन् २००२ ई. के लिए नूतन संवत्सर में राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय हालात

विश्व के समस्त राष्ट्रों में भारत का अपना विशिष्ट स्थान प्राप्त है। विश्व के प्रत्येक राष्ट्र में वर्ष का शुभारम्भ उनकी काल गणना के आधार पर होता है। भारत में नूतनवर्ष का शुभारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा, अश्विनी नक्षत्र, मेष राशि तथा धनु लग्न में ता. १३ अप्रैल २००२, शनिवार को होगा। तत्कालिक चन्द्रमा सूर्य के साथ मीन राशि में शुक्र-बुध मेष में, शनि-मंगल-राहु वृष राशि में गुरु मिथुन राशि में तथा केतु वृश्चिक राशि में पूरा वर्ष भ्रमणशील रहेगा। वर्ष लग्नेश गुरु सप्तम भाव में शत्रु बुध के भाव में पड़ा है जबकि विदेशी संबंधों का स्वामी शनि मंगल राहु के साथ छठे भाव में विराजमान है। जिसकी दृष्टि द्वादश भाव पर पड़ रहा है। फलत: इस वर्ष विभिन्न विरोधी राष्ट्रों के बीच युद्ध एवं टकराव की स्थिति जगह-जगह दृष्टिगोचर होगी। पूर्वी राष्ट्र [illegible], इराक, जापान, नेपाल आदि अफगानिस्तान [illegible], गृह युद्ध, आर्थिक उथल-पुथल, प्राकृतिक उपद्रव [illegible] जनता-जनार्दन विशेष त्रस्त एवं परेशान दिख पड़ेंगे। इस वर्ष कुण्डली के ग्रह स्थिति के अनुसार धनु-मीन-वृष-मिथुन-कर्क-सिंह और वृश्चिक राशि वाले जातकों-प्रशासकों एवं राष्ट्र नायकों के लिए यह वर्ष विशेष चुनौती पूर्ण परिस्थितियाँ लेकर उपस्थित होंगे। फलत: अमेरिका, आयरलैण्ड, वियतनाम, बंगलादेश, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, चीन, रूस, कनाडा, जापान, ग्रीनलैण्ड, अलास्का, मैक्सिको, बल्गेरिया तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में राजनैतिक उठा-पटक, अनाचार, अत्याचार, शासन में पद परिवर्तन, गृह युद्ध, बलात्कार, अपहरण जैसी कुकृत घटनाएं विशेष घटित होंगी। जिससे राष्ट्र नायक विशेष प्रभावित होंगे। विश्व के समग्रत: राष्ट्राध्यक्षों में एकाधिकार एवं प्रमुख की भावना अधिक प्रबल होगी। बाह्य तौर पर शान्ति समझौते होने पर भी चीन, अमेरिका, जापान अपनी कूटनीति का प्रयोग जारी रखें। अपने सैनिक अड्डे कायम करने के लिए पाक आदि मुस्लिम राष्ट्रों को अस्त्र-शस्त्र की आपूर्ति अप्रत्यक्ष जारी रखेंगे। एक बार फिर व्यापक परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर करने के लिए भारत एवं पाकिस्तान पर विशेष दबाव अमेरिका डालता रहेगा। परन्तु यह मनसूबा किसी भी हालत में सफल नहीं हो पाएगा। आर्थिक संकट के कारण पाकिस्तान काफी परेशान रहेगा। यहां के प्रशासक जनरल परवेज मुशर्रफ राष्ट्रपति पद से कभी भी पदमुक्त हो सकते हैं। पाक में जगह-जगह गृह-युद्ध जैसी स्थितियां भयावह रूप धारण करेंगी। परवेज मुशर्रफ सरकार को गंभीर राजनैतिक एवं आर्थिक संकटों का सामना रहेगा और आर्थिक प्रतिबंधों को सहन नहीं कर सकेंगे। धार्मिक एवं सांप्रदायिक-कट्टरवादी नीतियों के कारण पाक के उदारवादी अमन पसंद नागरिक भयभीत रहेंगे। मजहबी फिसाद एवं अत्याचार घटनाएं घटित होंगी। राष्ट्रपति की दुराग्रह नीतियों के कारण अपने ही देश में राजनैतिक चुनौतियां एवं टकराव का सामना करना पड़ेगा। जम्मू-काश्मीर में भारत के विरोध प्रशिक्षित आतंकवादी अप्रत्यक्ष रूप से भेजता रहेगा। औपचारिक तौर पर भारतीय राष्ट्रनायकों के साथ संधि वार्ताओं का प्रयास चलता रहेगा। परन्तु कोई ठोस परिणाम नहीं निकलेगा। कभी-कभी भारत-पाक सीमाओं पर सीधे युद्ध की स्थिति तो नहीं बनेगी। किन्तु परिस्थितियां तदनुरूप ही रहेंगी। अमेरिका भारत-पाकिस्तान आदि राष्ट्रों में अपना प्रभुत्व बढ़ाने के लिए कुटिल राजनीति का अनुसरण जारी रखेगा। परन्तु भारत के साथ अमेरिका का संबंध कुछ सुधरेगा। अमेरिका में राजनीतिक उठा पटक हिंसक वारदातों में बेतहाशा वृद्धि होगी। प्राकृतिक उपद्रव आदि से जनधन की हानि होगी। कम्प्यूटर, इंटरनेट, सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त होगी। भारत के साथ मैत्री पूर्ण संबंध बनेंगे। नेपाल में राजनीतिक उठा-पटक, शासन-प्रशासन में फेर-बदल तथा नरसंहार, प्राकृतिक उपद्रव आदि से व्यापक जन-धन की हानि होगी। नए नरेश के लिए यह नूतन वर्ष शुभकारक नहीं है। इनका जीवन कभी भी खतरे में पड़ सकता है।

अत: इनके लिए सावधानी अपेक्षित है। नए प्रधानमंत्री के [illegible] यह नूतन वर्ष शुभकारक नहीं है। राजनीतिक टकराव [illegible] परिवर्तन, हिंसक एवं विस्फोटक घटनाओं [illegible] किसी भी समय अपने पद से मुक्ति [illegible]। भूस्खलन-प्राकृतिक प्रकोपों तथा नरसंहार आदि कुकृत्य के घटनाओं से जन-जीवन प्रभावित होंगे। यहां कभी भी गृह-युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है। भारत के मैत्री पूर्व संबंधों में कटुता आने की आशंका है। चुनावों के मद्दे नजर कई विभिन्न विचारों वाले बल सत्ता लोलुपता के कारण एक मंच पर आएंगे। किन्तु उन्हें लक्ष्य प्राप्त कर पाना संभव नहीं होगा। राजनीतिक स्थिति अनिश्चित तथा अशांत बनी रहेगी।

इस वर्ष कुण्डली में राजा और मंत्री परिषद के ग्रहगण आपस में मित्र नहीं है। इस वर्ष के राजा शनि है। इस ग्रह मंडल में विधान सभा के विभाजन में चार स्थान सौम्य ग्रहों का और छ: स्थान पाप ग्रहों का इस वर्ष में प्राप्त है। फिर भी लग्नेष गुरु शुभ भाव के स्वामी होने के कारण उच्च प्रशासकीय प्रबंधतंत्र में वैचारिक-वैमनस्यता के बाद भी प्रजा हित के निर्णयों को कार्यान्वित करने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष पाप ग्रह एवं शुभ ग्रहों का मिला-जुला प्रभाव रहेगा। अनावृष्टि से किसान परेशान रहेंगे। मांगलिक कार्य विशेष संपादित होंगे। मानवीय मूल्यों में व्यापक गिरावट परलक्षित होगी। नेता लोग कमीशन खोरी एवं रिश्वत खोरी में संलग्न रहेंगे। मध्यम वर्गों के संचित धन कोष रिक्त होने के कगार पर पहुंच जाएंगे। दुर्घटना इत्यादि अन्य प्राकृतिक उपद्रवों तथा उग्रवादी क्रिया-कलापों के कारण व्यापक जन-धन की हानि होगी। लोकतांत्रिक मूल्यों का ह्रास होगा। कृषक वर्ग एवं मजदूर वर्ग मंहगाई के मार से हताश को प्राप्त होंगे। जिसके कारण कृषि उत्पादन में गिरावट दर्ज होगी। विदेशी पूंजी निवेश कर रही कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की स्वार्थपरता के कारण आम जनता सुधारवादी कार्यक्रम एवं वीतीय नीति के प्रति खिन्नता प्रदर्शित करेंगे। शनि-मंगल के प्रभाव से आतंकवाद पर प्रभावी नियंत्रण हेतु कठोर कार्यवाही होगी और विश्व के समग्रत: राष्ट्र इस दिशा में सार्थक प्रयास करेंगे। जो हद तक सफल दिख पड़ेगा। राजनीति का स्वरूप घटिया रूप में जन सामान्य की आकांक्षाओं को कुचलता रहेगा। राजनेताओं द्वारा एक दूसरे का चरित्र हनन सामान्य बात होगी। देश की विकास की गति का नाम देकर जनता-जनार्दन को लूट मचाए रहने की खुली छूट मिलेगी। पंचमभाव में शुक्र-बुध मेष राशिगत होनेसे इस वर्ष कार्य पालिका न्यायपालिका के कार्यों में रुकावट डालता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में विकास के नाम पर अन्तर्राष्ट्रीय दबाव बढ़ेगा। गरीब-मजदूर एवं कृषक वर्ग मंहगाई की मार से विशेष प्रभावित एवं त्रस्त रहेंगे। केन्द्रीय सत्ता से जुड़े गठबंधन दलों में यदाकदा तीव्र वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे। जिसका सहज समाधान भी संभव नहीं लगता। कभी-कभी तो सरकार आया राम गया राम जैसी स्थिति में दिख पड़ेगा। केन्द्रीय मंत्रीमंडल में भारी फेरबदल की भी संभावना है। केन्द्रीय मंत्री परिषद में महत्वपूर्ण पद पर आसीन कुछ मंत्रीगण को पद त्याग हेतु बाध्य होना पड़ेगा। घोटाले पर घोटालों का पर्दाफाश होता जाएगा। जिससे सत्तारूढ़ पार्टी की छवि धूमिल होगी। अस्तित्व खतरे में भी पड़ सकता है। घोटाले को लेकर सरकार में तीव्र मतभेद उत्पन्न होंगे। जिससे गंठबंधन सरकार कभी भी विघटित हो सकती है। बिहार, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, उड़ीसा, झारखंड, आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र आदि राज्यों में राजनीतिक उठा-पटक, नरसंहार, बलात्कार जैसी घटनाएं विशेष घटित होंगी। जिससे राज्य के नायक विशेष प्रभावित होंगे। भारत के कुछ राज्यों में सरकारी रवैया ढुलमुल होने के कारण ठोस रचनात्मक कार्य नहीं होंगे। राजनीतिक स्थिति अनिश्चित तथा अशांत रहेगी। शिक्षा का स्तर गिरेगा। सरकारी उद्योगों में सुधार का प्रयास निजीकरण [illegible] ही सीमित रहेगा। केन्द्रीय सत्तारूढ़ नेतृत्व के ढीले पड़ने के [illegible] आंतरिक एवं विदेशी मामलों में कई जगह असफलता का सामना करना पड़ेगा। भारत के कई प्रान्तों में मुख्य मंत्रियों तथा राज्यपालों के पद परिवर्तन अथवा इनके स्थायित्व पर काले बादल मंडरायेंगे। बिहार, झारखंड, उ.प्र., कर्नाटक, उड़ीसा, नागालैण्ड, म.प्र., हिमाचल प्रदेश, मणिपुर, तमिलनाडु आदि राज्यों में अप्रैल से जुलाई तक नरसंहार, दुर्घटना, प्राकृतिक उपद्रव आदि से व्यापक जन-धन की हानि की संभावना बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बढ़ते दबाव के कारण देशी उद्योगों का काफी नुकसान होगी जिसका कुप्रभाव भारत की अर्थ व्यवस्था पर निश्चित पड़ेगा। शेयर बाजार मंदी की लाईन से संपूर्ण नहीं निकल पाएगा। कभी तेजी ऊंचाई पकड़ने की कोशिश भी करेगी तो मंदियों के प्रभाव बढ़ने से बाजार गिरता जाएगा। सूचकांक 3 हजार से 4 हजार के बीच उतार-चढ़ाव से लटका रहेगा। शेयर बाजार में घाटोले पर घोटाले होने का समाचार मिलता रहेगा। इस घोटाले में कई महत्वपूर्ण हस्तियों की जीवन शैली प्रभावित होगी। अथवा पद त्याग की स्थिति उत्पन्न होगी। जिसका कुप्रभाव भारत के अर्थ तंत्र पर निश्चित पड़ेगा। कई महत्वपूर्ण मंत्रालय के मंत्रियों के भी पद त्याग की स्थिति उत्पन्न होगी। अप्रैल से सितम्बर तक शेयर बाजार में कुछ अलोक प्रिय निर्णय शेयर बाजार केलिए संजीवनी बनेगा। जो तेजी की लम्बी लाईन दे सकता है। जिससे विदेशी निवेशकों का रुझान बढ़ेगा। फार्मा-सॉफ्टवेयर, दूरसंचार मिडिया, सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की कंपनियां तथा पेट्रो रसायन-पावर आदि में संवेदी सूचकांक ३५०० से ४००० के बीच उतार-चढ़ाव के मध्य चलता रहेगा। फिर भी अर्थ जगत में भारती उथल-पुथल की संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता है। प्रधानमंत्री जी के स्वास्थ्य से पूर्ण संतुष्टी नहीं रहेगी। मई से जुलाई तक स्वास्थ्य बाधित होने की संभावना है। अत: स्वास्थ्य पर ध्यान देना अपेक्षित है। इस वर्ष भी काश्मीर समस्या का प्रश्न पुन: भारत-पाक के राजनीतिक पटल पर छाया रहेगा। काश्मीर की समस्या विक्षुब्ध तथा अशांत बना रहेगा। वार्षिक बजट से मंहगाई रोकने का मिथ्या प्रयास दृष्टिगोचर होगा। जबकि नए-नए करों की वृद्धि से आम व्यापारी एवं जनता त्रस्त होगी। रसोई गैस, पैट्रोलियम, सीमेंट, लोहा-लक्कड़, कोयला अन्य खनिज पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि से परिवहन शुल्क और मंहगा होने से समस्त वस्तुओं के मूल्यों में भारी वृद्धि होगी। चावल, गेहूं अन्य खाद्य-पदार्थ प्राय: सस्ते रहेंगे। तेल, चीनी, सोना, चांदी, पार्ट, पुर्जा, वाहन, कम्प्यूटर, टेलीविजन, दूर संचार व्यवस्था मंहगी होगी। कृषक वर्ग इस वर्ष विशेष प्रभावित होंगे। जीवन उपयोगी सामग्रियों के मूल्यों में बेतहाशा वृद्धि होने से आम जनता-जनार्दन त्राहि-त्राहि करेगी। जगह-जगह जन प्रदर्शन होंगे। कई महत्वपूर्ण व्यक्तियों की जघन्य हत्या अथवा दुर्घटना में मृत्यु होगी। यातायात के साधनों में विशेष दुर्घटना होने से व्यापक धन-जन की हानि होगी। स्वास्थ्य विज्ञान एवं अंतरिक्ष विज्ञान के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धि प्राप्त होगी। कुल मिलाकर किसान इस वर्ष विशेष प्रभावित होंगे। कभी अनावृष्टि तो कभी अतिवृष्टि से किसान उदासीन बने रहेंगे।

ज्योतिषाचार्य— आचार्य पंडित टुनटुन शास्त्री, करौन्दी, पो. सराव (नटवार) जिला-रोहतास (बिहार) ८०२२१८ (भारत), (ज्योतिष विशारद, ज्योतिष वाचस्पति, डी लिट, मानद), अंतर्राष्ट्रीय स्वर्ण पदक प्राप्त एवम् नेपाल राष्ट्र द्वारा ख्याति लब्ध सम्मान से सम्मानित दूरभाष-०६१८५, ०६४८०, ०६५७५

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

अथ सम्वत् २०५९ वि. की ग्रह स्थिति के आधार पर व्यापारिक उतार-चढ़ाव के विचार

लेखक एवं सम्पादक-चौ. पं. महेन्द्र कुमार जैन, सह संपादक-पं. गजेन्द्र जैन
उत्तराधिकारी- आयुर्वेद मार्तण्ड ज्योतिष रत्न पं. जैनी जीया लाल शिखर चन्द चौधरी राज वैद्य
ज्योतिष रत्न कार्यालय :— पो. फर्रुख नगर-१२२५०६, गुड़गाँव (हरियाणा)
फोन न. — निवास: ०१२४-६३७५२१८, कार्यालय: ०१२४-६३७५३७७

मेरे बाबाजी (स्व. पं. जैनी जीयालाल जी चौधरी) ने १२६ वर्ष पूर्व असली पञ्चांग के नाम से एक पंचांग प्रकाशित किया था तभी से इस तेजी मन्दी के विषय पर मेरे बाबाजी व पिताजी लिखते रहे हैं और समय-समय पर तेजी मंदी पर अनेकों शास्त्र (पुस्तकें), व्यापार विज्ञान, योग रत्नाकर, वार्षिक व्यापार भविष्य फल आदि लिख कर आप लोगों के सम्मुख प्रस्तुत कीं। अब मैं पं. महेन्द्रकुमार जैन एवं मेरा पुत्र चि. पं. गजेन्द्र जैन अपने पूर्वजों के बताये मार्ग का अनुसरण करते हुए प्रत्येक पक्षों, महीनों में आने वाले प्रबल ग्रह, योग, तिथि, वार, नक्षत्र संयोग, संक्रांति का फैसला। चन्द्र दर्शन, ग्रह आदि योगों को ध्यान में रखकर जो तेजी मन्दी के अपने विचार लिखते हैं वह वायदा और हाजिर का व्यापार करने वाले व्यापारियों के लिए वरदान रूप में सिद्ध होते रहे हैं।

इस लेख में हमने जो विचार लिखे हैं उसमें कई बार एक ही स्थान पर एक ही वस्तु की तेजी के साथ मन्दी भी लिखी है तो घबराना नहीं ऐसे समय पर व्यापार का रुख देखकर कार्य करें। क्योंकि एक दिन में एक ग्रह जो तेजी कारक व दूसरा मन्दी का हो तो बाजार में तेजी की जगह मन्दी या इसके विपरीत भी हो जाता है और तेजी-मन्दी हमने लिखी है व एक दिन पहले व बाद में भी आ सकती है। कारण ग्रह का परिवर्तन दिन के शुरू व दिन अन्त समय में होने से ऐसा होता है। अतः लेख के साथ-साथ मार्केट को भी भली प्रकार समझ कर व्यापार करें तो विशेष लाभ उठाएंगे।

अथ चैत्र शुक्ल पक्ष फल विचार

वि. सं. २०५९ का शुभारंभ शनिवार से हो रहा है। चन्द्रदर्शन रवि का व पूर्णिमा शनिवार की है। संक्रांति मेष धापी [illegible] बैठी है। सूर्य बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया पूर्णिमा में मास नक्षत्र भी [illegible] पंचायत भी बनी है। उपद्रव कराएगा। अतः कपास, सूत, वस्त्र, रस [illegible] में सरसों आदि में तेजी चतुष्पद पशुओं को पीड़ा, प्रजा में कई स्थानों पर उपद्रव, रोगोत्पत्ति और राजनीति में भारी उठा-पटक मचेगी।

शुक्ल पक्ष १ शनि-सूर्य मेष में आकर चन्द्र बुध शुक्र के साथ होकर चार ग्रहों का योग बना रहा है। गेहूं, जौ, चना, रुई, तिल, सरसों तेलादि पदार्थों में तेजी तथा प्रजा में बेचैनी भय पैदा कराएगा। सीमा पर तनाव बढ़ेगा। कहीं प्राकृतिक विपदा, कहीं वाहन दुर्घटना, जातीय संघर्ष बनेगा। शु. ३ मंगल-भरणी में बुध गेहूं, चनादि अनाजों में घटबढ़ से तेजी बनेगी। शु. ६ शुक्र-रोहिणी में मंगल आने वाले २१ दिनों में सूत, कपड़ा, गुड़, खाण्ड, रेशम, हींग, मिर्च, सण आदि में तेजी करेगा। इस समय प्रजा बीमार रहेगी। इसी दिन बुध उदय रुई, चांदी, सोना, सूत, सण, गुड़, गेहूं में मन्दा करेगा। शु. ७ शनि-वृषे शुक्र सभी अन्न में तेजी, लेकिन रुई, चावल, चांदी, घी आदि में आगे २५ दिनों में मन्दी बनाएगा। इसी दिन मृगशिर में राहु घोड़े, बैल, हाथी, लोहा, धातु, सार पदार्थ, घी, सोना, मूंग, उड़द, नारियल, सुपारी, मोती, मणि व सभी किराना माल को प्रभावित करेगा। व्यापार का रुख देख कर कार्य करें वैसे हमारी राय तेजी की है। शु. ११ मंगल-कृतिका बुध ब्राह्मणों को पीड़ादायक है। कहीं-कहीं वर्षा हो सकती है। रुई, चांदी में अच्छी घटाबढ़ी चलेगी। शु. १४ शुक्र-वृष में बुध, पांच ग्रहों का जमाव वर्षा, बिमारी, सरकारी अत्याचार से प्रजा में त्राहि-त्राहि का वातावरण पैदा होगा। पश्चिम देशों में भयंकर उपद्रव होंगे। प्रजा में असन्तोष पनपेगा। वस्तुओं में भारी फेरबदल से तेजी बनेगी। शु. १५ शनि-भरणी का सूर्य चांदी, सोना, लोहा, तांबा, चावल, सभी अनाज, अलसी, गुड़, घी, चना, मोठ महिंगे होंगे।

विशेष योग

श्वेत एकम भानु सुत नहिं उपजे तृण घास।
नृपति महा संकट सहैं विग्रह विपत विनाश॥
शनिवारी संक्रांति हो तिलहन तेज अनाज।
होय युद्ध भय रोग से जग में अमित अकाज॥
चार पांच ग्रहों का बना एक राशि पर योग।
वर्षा अथवा अत्याचार से दुःखी रहैं सब लोग॥
राहु मंगल और शनि तीनों का मिलाप।
युद्ध मचे लहु बहे धान तेज जल नाश॥

अथ वैशाख मास फल विचार

इस मास में पांच रवि हैं। कृष्ण पक्ष में तिथि बढ़कर घटी है। शुक्ल में तिथि की हानि हुई है। सूर्य मंगल बुध शुक्र ने राशि परिवर्तन किया है। बुधास्त पश्चिम व शनि अस्त हुआ है। अमावस पूर्णिमा रविवारी और संक्रांति वृष धापी ३० मु. राशि सञ्चारी है। चन्द्र दर्शन सोम का और ४ से ७ ग्रह एक को भरणी और पूर्णिमा का अनुराधा, रोहिणी नहीं है। अमावस को कष्ट, राजनीति में बदलाव व भारी खलबली। प्रजा प्राकृतिक आपदा, यान, वाहन दुर्घटना, तेज वायु, आंधी तूफान से जन हानि संभव है। दक्षिण दिशा में विशेष पीड़ा का योग बना है। बहुत सी वस्तुओं में घटाबढ़ी से व्यापारियों में तीन बार खलबली मचेगी। इस मास के योगों का कुप्रभाव आगामी मासों में भी सामने आएगा।

कृ.२ रवि-आर्द्रा में गुरु, रोहिणी का शुक्र-चांदी, सोना, सूत, रुई, चावल आदि के भावों को प्रभावित करेगा। प्रजा में व्यभिचार बढ़ेगा। रुई, चांदी तेज, दाख, छुवारे, सुपारी, श्रीफल, सरसों, सूत, सण आदि में मन्दा बनेगा। कृ. ३ सोम-वक्री ज्येष्ठा २ में प्लूटो वस्तुओं की लाईन में बदलाव लाएगा। कृ. ७ शुक्र-रोहिणी का बुध-रुई, सूत, कपास, सोना आदि में पहले तेजी फिर मन्दा यह प्रभाव आगे ८ दिन तक रह सकता है। कृ. ८ शनि-रोहिणी ४ में शनि-रोहिणी पर शुक्र शनि मंगल बुध की युति सभी बाजारों में विशेष प्रभाव करेगी। बाजार का रुख देख कर कार्य करें। कृ. १२ गुरु-मृगशिर का मंगल व शुक्र, रुई, सूत, कपास में भयंकर घटाबढ़ी से तेजी बनाएगा। रस पदार्थ भी तेज होंगे। बाजार में बड़े भारी परिवर्तन होंगे। चांदी में तेजी बनेगी। प्रजा में घबराहट फैलेगी। कृ. १४ शनि-कृत्तिका पर सूर्य-गेहूं, गुड़, चावल, सरसों, अनाजों में तेजी बनाएगा। नाई, ज्योतिषी, मन्त्री, शास्त्री, अग्निहोत्री व कुम्हारों को पीड़ा का सामना करना पड़ेगा। कुछ स्थानों पर वर्षा भी हो सकती है। कृ. ३० रवि-भरणी का होना प्रजा व देश हित में नहीं, आगे दुर्भिक्ष पड़ेगा।

शुक्ल पक्ष-शु. १ सोम-चन्द्रदर्शन व नेपच्युन वक्री-सभी व्यापार में खलबली करेगा। हमारे विचार से व्यापार का रुख देख कर व्यापार करने में लाभ रहेगा। चांदी में घटबढ़, रुई, रंग व सोना में तेजी बनेगी। शु. २ मंगल-सूर्य वृष में व बुध वक्री-प्रजा में कलह बनेगा। गेहूं, गुड़ में अच्छी तेजी, कपास, फल, शक्कर, मजीठ, रुई, चांदी, सोना, गुड़, खाण्ड के भाव में तेजी बनेगी। इस समय सौदा सुधार कर माल बढ़ाना चाहिए। शु. ३ बुध-मिथुने शुक्र होने से गुरु-शुक्र की युति से देश में युद्ध का माहौल या अनावृष्टि से प्रजा नाना प्रकार की व्याधियों से ग्रस्त व दुःखी रहेगी। रुई, घी में मन्दी का तूफान और रस पदार्थ, रुई, बारदाना, सोमदाना, कपास, सूत, कपड़ा, सरसों में मन्दा रहेगा। शु. ५ शुक्र-बुधास्त पश्चिम-राजस्थान में वर्षा योग, रुई, सूत में तेजी को ब्रेक लगेगा, रुई, चांदी, शेयर, हैसियन, बारदाना में मन्दा, चौपाए पशुओं को पीड़ा होगी। शु. ७ रवि-मिथुने मंगल व पुनर्वसु में गुरु-गुरु-शुक्र-मंगल की युति सभी अनाज व तिलहन बाजारों में मन्दी का बड़ा झटका देगी इस झटके में माल लेने से ३ मास में विशेष लाभ उठाओगे। वर्षा की खींच व चांदी में भी मन्दा बनेगा। मिथुन का मंगल सभी खाद्य सामग्री में मन्दा व अन्न में तेजी करता है। व्यापार का रुख अवश्य देखें। शु. ९ मंगल-आर्द्रा का शुक्र-तेज आंधी के साथ वर्षा करेगा। हर वस्तु मात्र चांदी, रुई में मन्दी का वातावरण रहेगा। शु. १० बुध-शनि अस्त-रुई, सूत, कपास, अलसी, सरसों, पाट, सण, बारदाना, फलफूल में तेजी। चतुष्पदों में रोगों की वृद्धि। सोना, रुई के व्यापारी मार्किट रुख जरूर देखें। शु. १४ शनि-रोहिणी सूर्य-सूत, रुई, अनाजों में तेजी व गुड़, सूत, सण के भावों में वृद्धि करेगा। राजा, सेठ साहूकारों व ड्राइवरों को कष्ट होगा। शु. १५ रवि-पूर्णिमा में मास नक्षत्र का अभाव अन्न में तेजी व शासक-प्रजा को शुभ नहीं होगा।

विशेष योग

मास नखत [illegible] तेज बिकै सब अन्न।
चन्द्रदर्शन खलबली करे [illegible] मत नहीं भिन्न॥
पांच रवि वैशाख में करे मुलक [illegible] हरन।
नृपति पीड़ा होवसी अन्न मोहँगा पहचान॥
सूर गुरु मंगल शुक्र एक राशि पर वास।
अन्न भाव मन्दा चले लाभ तीसरे मास॥
एक जगह गुरु शुक्र हो बने युद्ध आसार।
अनावृष्टि अति वृष्टि से दुःखी रहे संसार॥
किसी राशि पर संक्रमण करे भौम दिन सूर।
तो महंगा होवे रस नमक घी तेल कपूर॥

अथ ज्येष्ठ मास फल विचार

इस मास में पांच सोम हैं। अमावस पूर्णिमा सोम की, चन्द्रदर्शन बुध का, संक्रांति मिथुन शनिवारी १५ मु. भूखी बैठी है। शुक्ल में तिथि की हानि और दुर्मुख नाम सम्वत्सर का प्रवेश, सूर्य-शुक्र का राशि परिवर्तन, बुधोदय पूर्व में व मार्गी, हर्षल वक्री, मंगल अस्त हुआ है। पांच चन्द्र शुभ अच्छी पैदावार की घोषणा करते हैं। पर ज्येष्ठ सुदी २ को आर्द्रा दुर्भिक्षकारक है। कृ. ११ को रेवती खण्ड वर्षा करे। शनिवारी संक्रांति भूखी बैठी है। यह भी तेजी करेगी। मास में ५ ग्रहों का एक राशि में बैठना दक्षिण दिशा में प्राकृतिक-उत्पात को उत्पन्न करेगा। वर्षा की कमी, मन्त्री मण्डल में भारी फेर बदल या भंग तक हो सकता है। सूर्य, गुरु, शनि का मेल नारी जाति पर अत्याचार कराएगा। चन्द्रदर्शन रसकस में तेजी करेगा।

कृष्ण पक्ष—कृ. ३ बुध-आर्द्रा में मंगल जोरदार वर्षा कर सकता है। जान माल की हानि कई स्थानों पर हो सकती है। चांदी, नमक में मन्दा, सभी अनाज, रुई पदार्थ, सरसों, अरण्डी आदि तेल पदार्थ व सोंठ में तेजी बनेगी। कृ. ४ गुरु-वक्री कृत्तिका में बुध, मृगशिरा १ में शनि-चांदी में घटबढ़, धान्य भाव मन्दे; घी तेज। ब्राह्मणों को पीड़ा, मनुष्यों में आपसी प्रेम वृद्धि, गाय, भैसों का नाश हो। कृ. ६ शनि-पुनर्वसु में शुक्र-चांदी, रुई, सूत, सरसों, सोना, चांदी में मन्दा। प्रजा में भय उत्पन्न हो। कहीं-कहीं वर्षा होगी। कृ. ८ सोम-दुर्मुख नाम संवत्सर प्रवेश का फल पंचांग में अन्यत्र विस्तार पूर्वक से लिखा है। वक्री हर्षल-यह बाजारों में भारी परिवर्तन करेगा। इसका प्रभाव लम्बा चलेगा। बाजार का भली प्रकार निरीक्षण कर कार्य करें। कृ. ९ मंगल-पुनर्वसु २ गुरु-वर्षा की कमी, सभी धान्यों में तेजी पर रुई पदार्थ व चांदी में मन्दी लाएगा। कृ. १० बुध-बुधोदय पूर्व-देश में कहीं न कहीं उत्पात जरूर होगा। रुई, चांदी, सोना, सूत, सन, गुड़, गेहूं आदि पदार्थों में तेजी बनेगी। अलसी, अरण्डी, तेल, तिल, सरसों के भावों में भी गर्मी बनेगी। कृ. १३ शनि-सूर्य मृगशिर में, बुध मार्गी-भावों में घटाबढ़ी चले। इस समय नजराना खाना उत्तम है। जलोत्पन्न पदार्थ, चांदी, सोना, रुई, रेशम, सूत, सन, कपूर, धान्य पदार्थों में तेजी और चतुष्पदों को कष्ट उठाना पड़ेगा। यदि आज तेज हवा चले तो समझो समय उत्तम आएगा। कृ. १४ रवि-कर्के शुक्र-घी, तेल, गोला, गुड़, शक्कर, सभी रस पदार्थ, सूत, बारदाना के भावों में वृद्धि तथा रुई व अन्नों में मन्दी बनेगी। बंगाल व पंजाब की प्रजा के लिए कष्ट का समय है। किसी झगड़े विशेष के कारण खून खराबा होगा। कृ. ३० सोम-चांदी आदि सफेद वस्तुओं में मन्दा बनेगा।

शुक्ल पक्ष—शु. २ बुध-चन्द्रदर्शन पुष्य शुक्र-रुई, रस पदार्थ, गुड़ आदि में घटा-बढ़ी, सोना, लाख, चपड़ा आदि में मन्दा, किसी बड़े नामी व्यापारी या राजनेता की धर-पकड़ से बाजारों में हलचल मचेगी। शु. ५ शनि-मिथुने सूर्य-सूर्य-मंगल-गुरु का योग देश में काल का जन्म देगा। देश में नाई जाति पर जुल्म होंगे। संसार में पाप की वृद्धि होगी। अग्नि काण्ड, विस्फोट, रोगों की वृद्धि से प्रजा में भय फैलेगा। सभी प्रकार का अन्न, कन्दमूल, कपास, सभी तिलहन पदार्थों में एक तरफा तेजी। यह तेजी स्थाई है। शु. ६ रवि-रोहिणी बुध-रुई, सूत, कपास, सोना, चांदी में पहले तेजी, पीछे मन्दा चलेगा। यह प्रभाव ८ दिन तक

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

लाभकारी नवग्रह यंत्र

अथ नव ग्रह-शान्ति स्तोत्रम्

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरु भाषितम्। ग्रह शांति प्रवक्ष्यामि लोकानां सुखहेतवे॥
जिनेन्द्राः खेचरा ज्ञेया, पूजनीया विधिक्रमात्। पुष्पैर्विलेपनेधूपैर्नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्डश्चन्द्रप्रभस्य च। वासुपूज्यस्य भूपुत्रो, बुधश्चाष्टजिनेशिनां॥
विमलानन्त धर्मेश, शांति कुन्थुनमेस्तथा। वर्धमानजिनेन्द्रस्य, पादपद्मंबुधोनमेत्॥
ऋषभाजितसुपार्श्वाः साभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः सम्भवस्वामी, श्रेयांसेषु बृहस्पतिः॥
सुविधिः कथितः शुक्रे, सुव्रतश्च शनिश्चरे। नेमनाथो भवेद्राहोः केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः।
जन्म लग्नं च राशि च, यदि पीडयति खेचराः। तदा संपूजयेत् धीमान्, खेचरान् सह तान्जिनान्॥
आदित्य सोममंगल, बुधगुरु शुक्रे शनिः (?) राहु केतु मेरवाग्रे या जिन पूजाविधायकः।
जिनान नमोग्न तपोहि, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे। नमस्कारशतं भक्त या जपेद्दष्टोत्तरशतं॥
भद्रबाहुगुरुर्वाग्मी, पंचमः श्रुत केवली। विद्याप्रसादतः पूर्व, ग्रह शांति विधिः कृता॥
यः पठेत् प्रातरुत्थाय, शुचिर्भूत्वा समाहितः। विपत्तितो भवेच्छांतिः, क्षेमं तस्य पदे पदे॥

नवग्रहों के जाप्य

१. सूर्य महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमो भगवते श्रीमते पद्मप्रभु तीर्थंकराय कुसुलयक्ष मनोवेगा यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: आदित्यमहाग्रह (मम कुटुंब वर्ग) सर्व दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं कुरु कुरु सर्व शांति कुरु कुरु सर्व समृद्ध कुरु-कुरु इष्ट संपदा कुरु कुरु अनिष्ट निवारणं कुरु कुरु धन धान्य समृद्धि कुरु कुरु काम मांगल्योत्सवं कुरु कुरु हूं फट्॥७००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्र:-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं सूर्यग्रहारिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ जाप्य ७०००॥

३. लघु मंत्र:-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

२. सोम महाग्रह मन्त्र

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते चन्द्रप्रभु तीर्थंकराय विजय यक्ष ज्वालामालिनी यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: सोम महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ ११००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्र:-ॐ ह्रीं क्रों श्रीं क्लीं चन्द्रारिष्टनिवारक श्री चन्द्रप्रभुजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. लघु मंत्र:-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ जाप्य १००००॥

३. मंगल महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते वासुपूज्य तीर्थंकराय षण्मुखयक्ष गांधारीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: कुंज महाग्रह ममदुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु हूं फट्॥ १०००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्र:-ॐ आँ क्रों ह्रीं श्रीं क्लीं भौमारिष्ट निवारक श्री वासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ १०००० जाप्य॥

३. लघु मंत्र:-ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं॥ १०००० जाप्य॥

४. बुध महाग्रह मंत्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मल्ली तीर्थंकराय कुवेरयक्ष अपराजिता यक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: बुधमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ १४००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्र:-ॐ ह्रीं क्रों आँ श्रीं बुधग्रहारिष्ट निवारक श्री विमल अनंतधर्म शांति कुन्थअरह नमिवर्धमान अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ८००० जाप्य॥

३. लघु मन्त्र:-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

५. गुरु महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते वर्धमान तीर्थंकराय मातंगयक्ष सिद्धायिनीयक्षी सहिताय ॐ क्रों ह्रीं ह: गुरु महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ १९००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्र:-ॐ आँ क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं गुरु अरिष्ट निवारक ऋषभ अजितसंभवअभिनंदन सुमति सुपार्श्वशीतल श्रेयांस अष्टजिनेंद्रेभ्यो नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥१९००० जाप्य॥

३. लघु मन्त्र:-ॐ ह्रीं णमो उवज्झायाणं॥ १०००० जाप्य॥

६. शुक्र महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पुष्पदंत तीर्थंकराय अजितयक्ष महाकालीक्षी सहिताय ॐ आँ क्रों ह्रीं ह: शुक्र महाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं, फट्॥१६००० जाप्य॥

२. मध्यम मन्त्र:-ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं शुक्र अरिष्ट निवारक श्रीपुष्पदन्त जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ११००० जाप्य॥

३. लघु मंत्र:-ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं॥ १०००० जाप्य॥

७. शनि महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते मुनि सुव्रतीर्थंकराय वरुण यक्ष बहुरूपिणीयक्षी सहिताय ॐ आं क्रों ह्रीं: ह: शनिमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारण सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ २३००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्र:-ॐ ह्रीं क्रों ह: श्रीं शनिग्रहारिष्ट निवारक श्री मुनि सुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ २३००० जाप्य॥

३. लघु मंत्र:-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

८. राहु महाग्रह मंत्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते नेमितीर्थ कराय सर्वाण्हयक्ष कुष्मांडीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं: ह: राहुमहाग्रह मम दुष्ट ग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांति च कुरु कुरु हूं फट्॥ १८००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्र:-ॐ ह्रीं क्लीं श्रीं ह राहुग्रहारिष्ट निवारक श्री नेमिनाथ जिनेंद्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा ॥ १८००० जाप्य॥

३. लघु मंत्र:-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

९. केतु महाग्रह मन्त्र:

१. ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पार्श्वतीर्थंकराय धरणेंद्रयक्ष पद्मावतीयक्षी सहिताय ॐ आँ क्रौं ह्रीं ह: केतुमहाग्रह मम दुष्टग्रह रोग कष्ट निवारणं सर्व शांतिं च कुरु कुरु फट् ॥ ७००० जाप्य॥

२. मध्यम मंत्र:-ॐ ह्रीं क्लीं ऐं केतु अरिष्ट निवारक श्री मल्लिनाथ जिनेंद्राय नमः शांतिं कुरु कुरु स्वाहा॥ ७००० जाप्य॥

३. लघु मंत्र:-ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं॥ १०००० जाप्य॥

नोट:- जो सज्जन समय अभाव के कारण जप आदि में समर्थ नहीं, वे हमारे कार्यालय से ग्रह शान्ति के अलग-अलग ताम्र यंत्र मंगवा कर लाभ उठावें। जिन सज्जनों ने इन यंत्रों को मंगवाया उनके प्रशंसा पत्र हमें समय-समय पर प्राप्त हुए और यंत्र धारकों ने इसे भविष्य में देते रहने का अनुरोध भी किया। अपने पाठकों की रुचि व अनुरोध को ध्यान में रखते हुए हम कुछ सीमित यंत्रों को दीपावली व होली केपवित्र पर्वों पर तैयार करते हैं। आप जल्द ही समय के रहते इन यंत्रों को मंगवाने के लिये जवाबी पत्र द्वारा सम्पर्क करें अन्यथा साल भर इन्तजार करना पड़ेगा।

कीमत तांबे के सिद्ध यन्त्र

सिद्ध यन्त्र	५५१/-	छोटे सिद्ध यन्त्र ३५१/-
शनि साढ़सती यन्त्र	५५१/-	छोटा शनि साढ़सती यन्त्र ३५१/-
अति स्पेशल	७५१/-	डाकखर्च अलग

पता :— धर्मरत्न प्रकाशन
2596, नई सड़क, दिल्ली-110 006 फोन : 3285234, 3264986

शास्त्रीय विधि-विधान द्वारा शुभ मुहूर्त में निर्मित लाभ यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र

शास्त्रीय विधि-विधान द्वारा शुभ मुहूर्त में निर्मित ताम्र यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र की साधना मानव जीवन में बहुत ही चमत्कारी व अमूल्य परिवर्तनकारी होती है। पूर्व कर्मों के अशुभ फल, अभिशाप, संकटों का समाधान, अशुभ ग्रहों को शान्ति एवं सुख-सौभाग्य की वृद्धि कर जीवन में सुख-समृद्धि को देने वाले ये सिद्ध चमत्कारी यंत्र होते हैं। यंत्रों की प्राण प्रतिष्ठा और जप आदि विधिवत् करने पर ही ये पूर्ण फलकारी होते हैं। अन्यथा नहीं। आजकल भोली-भाली जनता को बगैर सिद्ध किये हुये यंत्रों को सिद्ध यंत्र बताकर धोखा दे रहे हैं। मेरे विद्या गुरु महाराज ने मुझे ज्योतिष विद्या के साथ-साथ यंत्रों का ज्ञान भी दिया और मेरे पूज्य बाबा व पिता जी (पं. जैनी जीयालाल शिखरचन्द जी) ने भी मुझे इनका अभ्यास कराया। अब मैं और मेरा पुत्र चि. गजेन्द्र जैन इस कार्य को कर रहे हैं; साधकों की सुविधा हेतु हम उत्तम मुहूर्तों में शास्त्रीय विधि-विधान से ताम्र पत्रों पर इन अमूल्य यंत्रों का निर्माण करते हैं और आर्डर मिलने पर सप्लाई करते हैं; हम इस कार्य को पिछले १२५ वर्षों से कर रहे हैं। इन ताम्र यंत्रों का मूल्य ३५१/- (५"×५" आकार) तथा ५५१/- (७" × ७" आकार), डाकखर्च १५ रु. सहित अग्रिम भेजें।
नोट: इन यंत्रों को वी.पी.पी. नहीं भेजी जाती। जिन सज्जनों को [illegible]

यंत्र सूची

१. श्री सूर्य यन्त्र	१०. श्री लाभ यन्त्र	१९. श्री कार्य सिद्धि यन्त्र
२. श्री चन्द्र यन्त्र	११. श्री महालक्ष्मी यन्त्र	२०. श्री कुबेर यन्त्र
३. श्री मंगल यंत्र	१२. श्री दुर्गा बीसा यन्त्र	२१. श्री सरस्वती यन्त्र
४. श्री बुध यन्त्र	१३. श्री नव दुर्गा यन्त्र	२२. श्री व्यापार वृद्धि यन्त्र
५. श्री बृहस्पति यन्त्र	१४. श्री नवग्रह यन्त्र	२३. श्री गुरु प्रसाद यन्त्र ताबीज में
६. श्री शुक्र यन्त्र	१५. श्री महामृत्युंजय यन्त्र	२४. श्री नवग्रह युक्त बीसा यन्त्र
७. श्री शनि यन्त्र	१६. श्री सुख-समृद्धि यन्त्र	२५. श्री पंद्रहिया यन्त्र
८. श्री राहु यन्त्र	१७. श्री कनकधारा यन्त्र	२६. श्री गोपाल यन्त्र
९. श्री केतु यन्त्र	१८. श्री भैरों यन्त्र	२७. श्री मनोकामना पूर्ण यन्त्र

एक यन्त्र का मूल्य इस प्रकार है, सिद्ध यन्त्र=३५१/-, पावरफुल स्पेशल ७५१/-, डाक खर्च अलग।
पता:— धर्मरत्न प्रकाशन, 2596, नई सड़क, दिल्ली-110 006 फोन : 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

हमारे कार्यालय से हाथ द्वारा अपनी शुद्ध जन्म-पत्रिका बनवाकर लाभ उठाए

हमारे यहां जन्म-पत्रिकाएं एवं वर्षफल शुद्ध गणित से बनाये जाते हैं। जिसमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से प्रकाश डाला जाता है। जैसे—शिक्षा, सरकारी, नौकरी, निजी व्यवसाय, विदेश यात्रा का योग, भाग्योदय तथा दाम्पत्य जीवन कैसा रहेगा। प्रश्नों के उत्तर सरल भाषा में विस्तार से लिखे होते हैं।

जन्म-पत्रिकाओं के विभिन्न प्रकार व उनकी फीस

१. **टेवा (टिपड़ा)**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशि चक्र, लग्न कुण्डली का विस्तार से वर्णन होता है। रु. ५१/-

२. **वर-वधू-जन्म पत्रिका (कुण्डली)**—मिलान शास्त्रोक्त विधि से किया जाता है। रु. ५१/-

३. **जन्माक्षर पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण (तिथि, नक्षत्र, योग इत्यादि) राशिचक्र, लग्न कुण्डली, चन्द्र-कुण्डली के साथ विंशोत्तरी महादशा व अति संक्षिप्त फल का वर्णन होता है। रु. १०१/-

४. **जन्माङ्क पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशि चक्र, लग्नकुण्डली, चन्द्र कुण्डली के साथ सूर्यादि स्पष्ट ग्रह, विंशोत्तरी महादशा के साथ-साथ अन्तर्दशा और साधारण भविष्य फल का विस्तार से वर्णन होता है। रु. २०१/-

५. **षट्वर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियां, तत्कालीन ग्रह स्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि षट्वर्ग, विंशोत्तरी महादशा तथा अन्तर्दशा एवं विस्तार से भविष्यफल का वर्णन होता है। रु. ३५१/-

६. **सप्तवर्गीय जन्म-पत्रिका**—जिसमें जन्म विवरण, राशिचक्र, घातचक्र, लग्न चन्द्र व चलित कुण्डलियां, तत्कालीन ग्रह स्पष्ट, होरा, द्रेष्काण आदि कुण्डलियां, पंचधामैत्रि कोष्टक आदि विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा, योगिनी दशा तथा अधिक विस्तार से भविष्यफल लिखा जाता है। रु. ५५१/-

७. **वर्षफल**—हमारे यहां वर्षफल विस्तार से बनाये जाते हैं। जिसमें महीनों के क्रम से फलादेश हाथ से लिखा होता है। वर्षफल की फीस रु. २५१/-

परेशानियों से छुटकारा पाइये

- **साढ़ेसाती नाशक यन्त्र**—जिन बन्धुओं पर शनि की साढ़ेसाती ढैया चल रही हो वे हमारे कार्यालय द्वारा विधि पूर्वक तैयार किए इस यंत्र को धारण करें। अत्यन्त लाभदायक सिद्ध होगा। चालीस दिन के शनि के कुप्रभाव से राहत मिलेगी।
- **नवग्रह शान्ति यन्त्र**—यह यन्त्र नवग्रहों को शान्ति लिए तत्काल प्रभावी सिद्ध होगा। इसको धारण करने से सब परेशानियों से छुटकारा मिलेगा। इस यत्र की दक्षिणा है— १५१/-
- **सर्वकार्य सिद्धि यन्त्र**—इसके धारण करने से मुकद्दमा, परीक्षा, व्यापार, नौकरी आदि सब कार्यों में आशातीत सफलता प्राप्त होती है। दक्षिणा है— ५०१/-
- **लक्ष्मी सिद्धि यन्त्र**—इस यंत्र के धारण करने से व्यापार में सफलता, नौकरी में उन्नति तथा धन की कमी दूर होती है। दक्षिणा है— १५१/-

नोट—कृपया यन्त्र मंगवाने वालों से अनुरोध है कि वे हमें पूरी राशि अग्रिम भेजें अन्यथा उत्तर नहीं दिया जावेगा।

धर्मशन प्रकाशन

2596, नई सड़क, दिल्ली-110006
दूरभाष : 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

॥दुर्लभ प्राचीन भृगु संहिता॥

प्राचीन भारतीय ज्योतिष विज्ञान का ग्रंथरत्न-

जिसकी प्रति किसी-किसी विद्वान के पास ही उपलब्ध होती थी, उसे लगभग २५० वर्ष पहले-जब भारत में मुद्रण कला का प्रारंभ हुआ तब कुछ खोजी विद्वानों ने संग्रह करके प्रकाशित किया। परन्तु पिछले प्रायः १५० वर्षों से वह भी अनुपलब्ध हो चुकी है। हमने बहुत परिश्रम और व्यय करके, अनेक विद्वानों के सहयोग से उसकी एक प्रति लगभग पूर्ण रूप में प्राप्त की है, जोकि गुणग्राहक सज्जनों को यथावत् फोटो-प्रिंट के रूप में उपलब्ध हो सकती है।

फुल स्केप आकार के लगभग १२०० पृष्ठों की इलेक्ट्रोस्टेट प्रति का लागत मूल्य मात्र १७५०/-रूपये देकर आप इसे प्राप्त कर सकते हैं। डाक व्यय + रजिस्ट्री आदि देय होगा।

अपना आदेश भेजें।

पता: धर्मसान प्रकाशन

२५९६-९७, नई सड़क, दिल्ली-110006

☎ 3285234, 3264986

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation, Delhi and eGangotri.Funding by MoE-IKS

आर्यभट्ट अनुसंधान केन्द्र की अनुपम एवं उत्कृष्ट भेंट-
सन् १९०० ई. से २००० तक का सम्पूर्ण पंचांग

गत कई वर्षों से भारत के प्रमुख ज्योतिर्विदों द्वारा कड़े परिश्रम से तैयार किया गया उपरोक्त ग्रंथ ज्योतिष प्रेमियों के लिए अत्यन्त उपयोगी है। इसका सम्पादन कई ज्योतिष सम्बन्धी पुस्तकों के रचियता पं. लक्ष्मी नारायण शर्मा, बी. ए., प्रभाकर साहित्य-रत्न, ज्योतिष वाचस्पति ने अपनी देखरेख में बड़े सुन्दर और सुचारु ढंग से किया है।

विशेषताएं: — महादशा सारिणी, अन्तर्दशा सारिणी, प्रत्यन्तर दशा सारिणी व सूक्ष्मदशा सारिणी सहित विशिष्ट संस्करण सन् १९०० से २००० ई. तक के सूर्य-मंगल-बुध-गुरु-शुक्र-शनि के साप्ताहिक स्पष्ट तथा चन्द्रमा की दैनिक स्पष्ट, राहु, हर्षल, नेपच्यून, प्लूटो के मासिक स्पष्ट, वक्री-मार्गी, चन्द्र ग्रहण सूर्य ग्रहण, संक्रांति, पूर्णिमा, अमावस्या, लघुरिक्त गणित, ० से ६३ उत्तर एवं ० से २५ दक्षिण अक्षांश पर प्रति ६ दिन का सूर्योदय तथा सूर्यास्त का समय, भारत के प्रमुख नगरों के सूर्योदय-सूर्यास्त का समय, चन्द्रमा के राशि-अंशों से विंशोत्तरी दशा का भोग्य निकालना, १९, २१, २३, २५, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२ अक्षांशों की लग्न सारिणी, भारतीय पद्धति से तिथि-योग-वार-करण-सन्-सम्वत्-मास-पक्ष एवं नक्षत्र का ज्ञान व मान निकालना, सूर्य व चन्द्र स्पष्ट करने की सारिणी, सांपातिक काल का सम्पूर्ण गणित-जिसकी सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है-८ उदाहरण सहित।

इस अमूल्य ज्योतिष ग्रन्थ की सहायता से विश्व के किसी भी स्थान का लग्न सरलता से स्पष्ट किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त जन्म-कुण्डली बनाने के लिये ज्योतिषियों को जिन बातों की आवश्यकता होती है, वे सभी इसमें उपलब्ध हैं। इस संस्करण में सूक्ष्म दशा सारिणी को १६ पेजों में बहुत सुन्दर ढंग से दिया गया है। इस ग्रन्थ में कुछ और विषय बढ़ाकर बहुत उपयोगी बना दिया है। इसके चतुर्थ संस्करण को बढ़िया कागज पर अति सुन्दर और सुचारु रूप से छापा गया है।

आवश्यक नोट — ४०१/- रु. की राशि अग्रिम भेजने पर डाक व्यय नहीं लगेगा जोकि लगभग ३५/- रु. होता है। अतः लगभग ३५/- रु. की छूट रहेगी।

प्रकाशकः **धर्मसन प्रकाशन** २५९६, नई सड़क, दिल्ली-११०००६ दूरभाष : ३२६४९८६, ३२८५२३४

CC-0 In Public Domain. Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection